तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (3)

(पारा 11 से 15 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर
"अ़ल्लामा इब्ने कसीर" रहमतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम.ए. अलीग.)

http://salfibooks.blogspot.com

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

इस्लामी दुनिया की निहायत मोतबर क़ुरआनी तफ़सीर। मुस्लिम उलेमा इस पर एकमत हैं कि इसके बाद की तमाम क़ुरआनी तफ़सीरों में इससे मदद ली गयी है।

Maktab E Ashraf

तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (3)

(पारा 11 से 15 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर

"अ़ल्लामा इब्ने कसीर" रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अलीग.)

रीडर अल्लामा इकबाल यूनानी मेडिकल कॉलेज, मुज़फ्फ़र नगर (उ.प्र.)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

http://salfibooks.blogspot.com

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित हैं।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि अथवा अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

तफ़सीर इब्ने कसीर - जिल्द (३)

(पारा 11 से 15 तक)

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी एम.ए. (अलीग.)

ISBN 81-7231-983-5

प्रथम संस्करण - 2011

पुनः प्रकाशन - 2015

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

1511-12, पटौदी हाउस, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)

फोन : +91-11-23244556, 23253514, 23269050, 23286551

e-mail: info@ibsbookstore.com

Website: www.ibsbookstore.com

OUR ASSOCIATES

- Angel Book House FZE, Sharjah (U.A.E.)
- Azhar Academy Ltd., London (United Kingdom)
- Lautan Lestari (Lestari Books), Jakarata (Indonesia)
- Husami Book Depot, Hyderabad (India)

Printed in India

Maktab E Ashraf

समर्पित

✿ अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला के कलाम क़ुरआन मजीद के प्रथम व्याख्यापक, हादी-ए-आ़लम, आख़िरी पैग़म्बर, तमाम नबियों में अफ़ज़ल **हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम** के नाम, जिनका एक-एक क़ौल व अ़मल कलामे रब्बानी और मन्शा-ए-इलाही की अ़मली तफ़सीर था।

✿ **दारुल-उलूम देवबन्द** के नाम, जो क़ुरआन मजीद और उसकी तफ़सीर (हदीसे पाक) की अ़ज़ीमुश्शान ख़िदमत और दीनी रहनुमाई के सबब पूरी इस्लामी दुनिया में एक मिसाली संस्था है। जिसके इल्मी फ़ैज़ से मुस्तफ़ीद (लाभान्वित) होने के सबब इस नाचीज़ को इल्मी समझ और क़ुरआन मजीद की इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ नसीब हुई।

✿ वालिदे मोहतरम **जनाब मुहम्मद दीन त्यागी मरहूम** के नाम, जिनकी जिद्दोजहद, मेहनत भरी ज़िन्दगी और बहाया हुआ पसीना मेरी रग व जाँ में ख़ून के क़तरे बनकर दौड़ रहा है, जो मेरी जिस्मानी और इल्मी ऊर्जा का ज़ाहिरी सबब है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktaba Ashraf

दिल की गहराईयों से शुक्रिया

❁ मोहतरम जनाब अ़ब्दुस्समी साहिब (मालिक समी पब्लिकेशंस/इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) का, जिनकी मुहब्बतों, इनायतों, क़द्रदानियों और मुझे अपने इदारे से जोड़े रखने के सबब क़ुरआन मजीद की यह अहम ख़िदमत अन्जाम पा सकी।

❁ मोहरतम जनाब हाजी मुहम्मद शाहिद अख़्लाक़ साहिब (पूर्व मेयर/सांसद लोक सभा, मेरठ शहर) का, जिनकी नवाज़िशों, मुहब्बत व इनायत, ख़ास तवज्जोह, हौसला-अफ़ज़ाई, दुआ़ओं, उलेमा नवाज़ी और हर तरह की मदद ने शौक़ व जज़्बात में नई उमंगें पैदा कीं, जिससे इस काम के पूरा करने में बड़ी मदद मिली।

❁ जनाब मौलाना मुफ़्ती निसार अहमद शम्सुल-हुसैनी साहिब का, जिन्होंने मेरी इस कोशिश को आंशिक रूप से मुलाहिज़ा फ़रमाकर मेरी और इसका प्रकाशन करने वाले इदारे की सराहना की।

अल्लाह तआ़ला इन सब हज़रात और इनके अ़लावा मेरे दूसरे सहयोगियों, सलाह मश्विरा देने वालों, शुभ-चिन्तकों और हौसला बढ़ाने वाले हज़रात को भी अपनी तरफ़ से ख़ास जज़ा और बदला इनायत फ़रमाये जो क़दम-क़दम पर मेरी हिम्मत बढ़ाते और मेरी मामूली कोशिशों को सराहते हैं। आमीन या रब्बल्-अ़लमीन।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktab E Ashraf

प्रकाशक की ओर से

अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन का बेहद करम व एहसान है कि उसने मुझे और मेरे इदारे (समी पब्लिकेशंस/ इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) को इस्लामी किताबों के प्रकाशन के ज़रिये अपने दीन की अदना ख़िदमत की तौफ़ीक़ से नवाज़ा।

माशा-अल्लाह हमारे इदारे से क़ुरआन पाक, हदीस मुबारक और दीनी विषयों पर अनेक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। बल्कि मुझे कहना चाहिये कि ख़िदमत का एक मैदान ऐसा है जिसको पूरा करने में इस्लामिक बुक सर्विस के हिस्से में जो दीनी ख़िदमत आई है देहली की दूसरी प्रकाशन-संस्थाओं को वह मक़ाम नहीं मिल सका। मेरी मुराद अंग्रेज़ी भाषा में इस्लामिक किताबों का मेयारी प्रकाशन और अमेरिकी व यूरोपीय देशों में इस्लामी तालीमात से वाक़फ़ियत तलब करने वालों तक इस्लामिक लिट्रेचर का पहुँचाना है। अल्लाह का करम व फ़ज़्ल है कि इस्लामिक बुक सर्विस के द्वारा प्रकाशित क़ुरआन पाक के अ़रबी और इंग्लिश तर्जुमे पूरी दुनिया में फैले हुए और मक़बूल हैं।

सन् 2003 में हमने हिन्दी भाषा में अनुवादित क़ुरआन करीम प्रकाशित किया। यह **हकीमुल-उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह.** के तर्जुमे (यानी 81 नम्बर क़ुरआन पाक) का हिन्दी संस्करण था। जिसको इस्लामिक बुक सर्विस की दरख़्वास्त पर एक मुआ़हदे के तहत **जनाब मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी साहिब** ने हिन्दी ज़बान में तर्जुमा किया था। अल्लाह का शुक्र है कि इस तर्जुमे को उर्दू की तरह हिन्दी भाषा में भी बहुत ज़्यादा मक़बूलियत हासिल हुई और हिन्दी में क़ुरआन पाक का तर्जुमा पढ़ने वालों ने इसे हाथों-हाथ लिया।

बहुत दिनों से मेरे दिल में यह बात खटकती थी कि हिन्दी भाषा में क़ुरआन पाक की कोई ऐसी तफ़सीर नहीं है जो हर तब्क़े के लिये क़ाबिले क़ुबूल हो। मैंने इसका ज़िक्र **मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी** से किया। उन्होंने बताया कि मेरा इरादा "तफ़सीर इब्ने कसीर" पर काम करने का है, और इस बारे में वह काम का एक ख़ाका भी तैयार कर चुके हैं। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! यह तो बहुत ही अच्छी बात है। और उनसे समी पब्लिकेशंस नई दिल्ली के लिये इस तफ़सीर को हिन्दी में तैयार करने का आग्रह किया। उन्होंने इसको मन्ज़ूर कर लिया और इस तरह मौजूदा ज़माने की एक अहम ज़रूरत की तकमील का सामान मुहैया हो गया।

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी की हिन्दी और उर्दू में दर्जनों किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। वह लेखक भी हैं और अनुवादक भी। उनकी लिखी और अनुवाद की हुई पचास से ज़ायद किताबें मार्केट में मौजूद हैं। वह अपने तर्जुमे में न तो अ़रबी और फ़ारसी के अलफ़ाज़ को ज्यों का त्यों बाक़ी रहने देते हैं और न ही मुश्किल और कठिन हिन्दी शब्दों को इस्तेमाल करते हैं। एक आ़म हिन्दुस्तानी ज़बान, जो ख़ास तौर पर मुस्लिमों में बोली और समझी जाती है, उसका इस्तेमाल करते हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह क़ुरआनी ख़िदमत की हिन्दी ज़बान में यह अहम कड़ी आपके सामने है। उम्मीद है कि आपको पसन्द आयेगी और क़ुरआन पाक के पैग़ाम को समझने और उसको आ़म करने में एक अहम रोल अदा करेगी।

हमने इस तफ़सीर को पाँच-पाँच पारों पर तक़सीम किया है। इस तरह मुकम्मल तफ़सीर छह जिल्दों में है। जो चार हज़ार से ज़्यादा पृष्ठों पर मुश्तमिल है।

मैं अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ होने पर सरे नियाज़ झुकाता हूँ और उस पाक ज़ात का बेहद शुक्र अदा करता हूँ। अल्लाह तआ़ला क़ुरआन पाक की इस ख़िदमत को आक़ा-ए-नामदार नबी-ए-रहमत, हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये, आपकी आले पाक और अहले-बैत के लिये, आपके सहाबा किराम के लिये, तमाम बुज़ुर्गाने दीन और उलेमा-ए-किराम के लिये, मेरे और मेरे माँ-बाप, अहले ख़ानदान, अहल व अ़याल और मेरे इदारे से जुड़े तमाम हज़रात के लिये मग़फ़िरत व रहमत और ख़ैर व बरकत का ज़रिया बनाये। आमीन

अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार
अ़ब्दुस्समी
चेयरमैन
समी पब्लिकेशंस/ इस्लामिक बुक सर्विस, नई दिल्ली

Maktaba Ashraf

Maktab E Ashraf

फ़ेहरिस्ते उनवानात

पारा नम्बर 11-15

उनवान	पेज
समर्पित	3
दिल की गहराईयों से शुक्रिया	4
प्रकाशक की ओर से	5
पारा नम्बर ग्यारह	
गुनाह करके बातें बनाना और भी बुरा है	17
अ़रब के देहाती	18
मुहाजिरीन से उनका ख़ुदा राज़ी है	20
मुनाफ़िक़ों के बारे में इत्तिला	22
नदामत, तौबा और मग़फ़िरत का वादा	25
पाक करने की एक सूरत	26
अल्लाह पाक सब कुछ देख रहा है	28
इन्तिज़ार	30
मस्जिदे ज़िरार का वाक़िआ़	31
बहुत बड़ा फ़र्क़ है	36
बदला और वह भी जन्नतुल-फ़िरदौस	37
तौबा, इबादत और अल्लाह की तारीफ़ व सना वग़ैरह	39
'सियाहत' से क्या मुराद है?	40
मुश्रिकों के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ क़तई नापसन्दीदा है	41
हिदायत के बाद गुमराह होना ख़ुदा तआ़ला को नापसन्द है	46
तबूक का वाक़िआ़	47
एक सबक़ लेने वाला वाक़िआ़	49
हर क़दम अज्र व सवाब का सबब है	54
अच्छे काम का अच्छा बदला	55
दीन की तलाश में सफ़र करना	56
अल्लाह तआ़ला किसके साथ है?	58
इन आयतों का नुज़ूल और काफ़िरों का बेजा एतिराज़	61
फ़ितनों की भट्टी	62
नबी करीम सल्ल. कितने शफ़ीक़ व मेहरबान हैं	63
सूरः यूनुस	
हैरानी और ताज्जुब क्यों?	67
कायनात का रब	69
कायनात उलट-पुलट हो जायेगी	70
चाँद और सूरज	71
दुनियावी ज़िन्दगी पर क़नाअ़त	72
अच्छा अन्जाम	73
मस्लेहत रोक और बाधा है	75
इनसान का भी अ़जीब हाल है	75
तबाह व बरबाद होने वाली क़ौमें	76
कैसा ग़लत मुतालबा	78
फिर अब तो जुर्म और भी बढ़ गया	79
ग़लत-फ़हमी, शफ़ाअ़त का ग़लत तसव्वुर और एकता के बाद अनेकता	82
इन्तिज़ार	83

Maktab-e-Ashraf

उनवान	पेज
● इनसान और इसकी मुख़्तलिफ़ हालतें	85
● दुनिया की मिसाल	87
● नेक कामों का अच्छा बदला	89
● बुराई की सज़ा	90
● क़ियामत के दिन जिन्नात व इनसानों की हाज़िरी और मुश्रिकों से एक सवाल	91
● खुदा तआ़ला का एक होना	92
● ज़रा तुलना तो करो	94
● क़ुरआन हर शक व शुब्हे से ऊपर है	96
● नफ़रत और बेताल्लुक़ी का ऐलान	98
● क़ियामत और दुनिया एक मुख़्तसर घड़ी	99
● फ़ैसले	100
● कैसा बेहूदा मुतालबा	101
● खुदा की क़सम यही हक़ है	102
● सब कुछ खुदा का है	103
● शिफ़ा का नुस्ख़ा	104
● तुम्हारी अपनी उपज	104
● ज़र्रे-ज़र्रे का इल्म	106
● कहाँ का ख़ौफ़, कैसा रंज?	107
● खुदा तआ़ला हर चीज़ पर ग़ालिब है	109
● बड़ी बेहूदा बात	110
● हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम का क़िस्सा	112
● रसूल और मोजिज़े	113
● हर फ़िरऔ़न के लिये एक मूसा है	115
● जादूगरों का वाक़िआ़	116
● इनसान का ख़ौफ़	117

उनवान	पेज
● खुदा तआ़ला पर भरोसा और यक़ीन	119
● बनी इस्राईल और मुल्के मिस्र	119
● पैग़म्बर की बद्दुआ़	121
● फ़िरऔ़न और उसकी बदबख़्ती फ़ौज मौजों की भेंट	122
● बनी इस्राईल पर खुदा के इनामात और उनकी नाशुक्री	125
● अहले किताब की दुश्मनी और बैर	127
● उम्मतों ने नबियों का हमेशा इनकार किया	127
● हर हाल में खुदा ही का हुक्म	129
● इबरत की निगाह तो डालो	130
● झूठे दीन से बेज़ारी	131
● हक़ क़ायम हो चुका	132

सूरः हूद

उनवान	पेज
● मज़ामीन के एतिबार से क़ुरआन की तक़सीम	134
● खुदा तआ़ला सब कुछ जानता है	135

पारा नम्बर बारह

उनवान	पेज
● खुदा तआ़ला सब का राज़िक़ है	136
● खुदा तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है	137
● इनसान नाशुक्री करता और इतराता है	140
● आप अपना काम किये जायें	141
● दुनिया की तलब करने वाले आख़िरत से मेहरूम हैं	142
● मोमिनों की ख़ुसूसियात	143

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
इससे बढ़कर कौनसा ज़ुल्म होगा	146
एक मिसाल	147
लगातार तब्लीग़	149
हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का जवाब	150
एक हक़ीक़त	151
कुछ और वास्तविकतायें	151
बदबख़्ती की इन्तिहा और बदक़िस्मती का ख़ौफ़नाक प्रदर्शन	152
जवाब	153
बड़ा तूफ़ान	154
उत्साह और जोश	155
ईमान के नतीजे में ख़ुशगवार अमन	157
ज़ालिम व सरकश क़ौम की तबाही व ख़ात्मा	158
नबी से रिश्तेदारी भी अल्लाह के अ़ज़ाब से न बचा सकी	161
अल्लाह की सलामती में	162
इल्मे ग़ैब की नफ़ी	163
हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा	163
क़ौमे हूद की सरकशी	164
बुरा दिन	166
हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम	167
हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम का जवाब	167
अल्लाह के फ़रिश्तों से हज़रत इब्राहीम की एक मुलाक़ात	169
इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का इसरार	170
क़ौमे लूत अ़ज़ाब के जाल में	171
क़ौमे लूत तबाही के शिकंजे में	173

उनवान	पेज
आख़िरकार दुनिया इस नापाक क़ौम के वजूद से पाक हो गई	175
एक और बद-क़िस्मत क़ौम	176
लाजवाब नसीहतें	176
कैसी बेहूदा बात	177
बेज़ारी का ऐलान	177
चेतावनी	179
बेवक़ूफ़ी का प्रदर्शन	180
फिर वह वक़्त आ पहुँचा	180
फ़िरऔ़न और मिस्र वालों की सरकशी	181
कोई काम न आया	182
एक ही क़ानून	182
इबरत का सामान	183
जहन्नम की डरावनी आवाज़ें	183
जन्नतुल-फ़िरदौस	184
मुश्रिकों की सरकशी को नज़र में न लाईये	185
हक़ पर मज़बूती के साथ क़ायम रहिये	186
नेकियाँ बुराईयों के असरात से सुरक्षित रखती हैं	186
नेक लोग ख़ुदा के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ हैं	189
अल्लाह तआ़ला हर बात पर क़ादिर है	190
मक़सद	191
इन्तिज़ार	191
ग़ैब का जानने वाला	192
सूरः यूसुफ़	
एक दिलचस्प और सबक़ लेने वाला वाक़िआ़	192

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का ख़्वाब	195
बाप की बेटे को नसीहत	196
ख़्वाब की ताबीर	197
हसद और ईर्ष्या का प्रदर्शन	198
साज़िश	199
जो आशंका थी वह होकर रहा	200
मुसीबत का पेश आना	200
झूठ का घरौंदा	202
अल्लाह की तदबीर	203
अगर अल्लाह फ़ज़्ल करे तो दुश्मन क्या कर सकता है	205
हुस्न व पाकदामनी की कश्मकश	206
हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की हिफ़ाज़त	206
पाकदामन यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम	208
मुसीबत पर मुसीबत	211
क़ैद लेकिन हज़ारों आज़ादियों से बेहतर	213
रिहाई के इन्तिज़ामात	214
ख़्वाब की ताबीर	215
दीने इस्लाम और सीधे रास्ते की व्याख्या	217
ख़्वाब की ताबीर	218
एक कोशिश	218
बादशाह का ख़्वाब, उसकी ताबीर और ज़रूरी व्यवस्था का मश्विरा	220
क़ुदरत का करिश्मा, यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की रिहाई और ज़ुलेख़ा का अपनी ग़लती स्वीकार करना	222

पारा नम्बर तेरह

उनवान	पेज
ज़ुलेख़ा का अपनी ग़लती मानना	224
अ़ज़ीज़े मिस्र की हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर मेहरबानियाँ	225
यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को दुनिया में भी हमने बड़ाई और तरक़्क़ी अ़ता की	226
भाईयों का हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के दरबार में आना	227
बाप के लिये एक और आज़माईश	229
बेटों का अ़हद	230
बेटों को बाप की हिदायत	231
हज़रत यूसुफ़ का ख़ुद को ज़ाहिर करना	232
भाई को रोकने की एक तदबीर	232
हज़रत यूसुफ़ के भाईयों का इनकार	233
हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का संयम	234
माज़िरत और ख़ुशामदें	235
परेशानी और घबराहट	236
याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का बेमिसाल सब्र	237
ख़ुदा से मायूसी कुफ़्र है	239
दास्तान का समापन	240
बूढ़े बाप का इलाज और देखभाल	241
अपनी ग़लती और जुर्म का इक़रार	242
लम्बी मुद्दत के बाद ख़्वाब की ताबीर	243
अल्लाह की नेमतों का शुक्र	246
एक हक़ीक़त	249
ये किस बात का इन्तिज़ार कर रहे हैं?	250
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पसन्दीदा रास्ता	253

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
● चल-फिरकर देखो दुनिया एक इबरत की जगह है	254
● वक़्त पर मदद	256
● सबक़ लेने वाले वाक़िआत	258
सूरः रअ्द	
● सच्ची किताब	259
● अल्लाह की निशानियों में से आसमान को देखो	260
● कुछ और दलीलें	262
● काफ़िरों की बेहूदा बातें	263
● ये जल्दबाज़ी न करें	264
● हर क़ौम में सही राह दिखाने वाले पैदा हुए	265
● आ़लिमुल-ग़ैब	266
● अल्लाह सब कुछ जानता है	268
● हर चीज़ पर अल्लाह की हुक्मरानी है	271
● सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला को पुकारो	274
● ख़ुदा की बड़ाई के सामने पूरी कायनात झुकी हुई है	275
● ख़ुदा के इनकारी ना-समझ हैं	275
● सच और झूठ की एक मिसाल	277
● नेकों और बुरों का अन्जाम	279
● फिर कौन फ़ायदा उठायेगा?	279
● नेकबख़्त और कामयाब कौन हैं?	280
● ख़ुदा की लानत	282
● दुनिया की ज़िन्दगी	283
● बेहतरीन ठिकाना	284
● अल्लाह का इनकार करने वाले	288
● वह वक़्त आने वाला है	289
● अल्लाह के नबियों से मज़ाक़	291
● हर चीज़ का निगराँ	292
● अ़ज़ाब के ऊपर अ़ज़ाब	293
● दो फ़िर्क़े	296
● उम्मुल-किताब (लौहे महफ़ूज़)	297
● सिर्फ़ अहकाम की तब्लीग़	299
● ख़ुफ़िया तदबीरें और उनका बदला	300
● आसमानी किताब का इल्म	301
सूरः इब्राहीम	
● अल्लाह की तरफ़ से उतरी हुई किताब	303
● रसूल और उसकी ज़बान	304
● अल्लाह तआ़ला के एहसानात	305
● नेमतों का शुक्र	306
● मुख़ालफ़त भरा रवैया	308
● ख़ुदा तआ़ला की ज़ात हर शक व शुब्हे से ऊपर है	309
● काफ़िरों की सरकशी और उन पर ख़ुदाई अ़ज़ाब	311
● बड़ी नाकामी	314
● यह कुछ कठिन नहीं	314
● सबसे बड़ी अ़दालत	315
● शैतान मलऊन की ग़द्दारी	317
● एक अछूती मिसाल	319
● इस्तिक़लाल और जमाव	321
● एक बुरा ठिकाना	330
● एक अ़जीब व ग़रीब दिन	332
● कैसी-कैसी निशानियाँ	333
● हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की एक मक़बूल दुआ़	334

उनवान	पेज
गै़र-उपजाऊ ज़मीन	335
नेमत का शुक्र	337
परेशान दिल	337
बेकार की तमन्नायें	338
ख़ुदा-ए-वाहिद की अ़दालत	340
हिसाब व किताब	342
पूरी नसीहत	343
सूरः हिज्र	
बेवक़्त हसरत	344
पारा नम्बर चौदह	
निर्धारित वक़्त	346
क़ुरआन की हिफ़ाज़त	346
यह दस्तूर पहले से चला आता है	347
दुश्मनी और बैर का कोई इलाज नहीं	348
अल्लाह तआ़ला की अपार क़ुदरत की चन्द निशानियाँ	348
हर चीज़ का मालिक, हर तरह की ख़बर रखने वाला	350
इनसान और जिन्नात की पैदाईश	352
शैतान का आदम अ़लैहिस्सलाम को सज्दे से इनकार	352
शैतान पर हमेशा के लिये अल्लाह तआ़ला की फटकार	353
शैतानी असरात से सुरक्षित	354
जन्नत में	355
इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनके मेहमान	358
मुजरिम लोग	358
लूत अ़लैहिस्सलाम की परेशानी	359
मुकम्मल बरबादी	359
गुनाहों में डूबी क़ौम	360
सिर्फ़ एक चिंघाड़	361
एक और बद-क़िस्मत क़ौम	362
हिज्र वाले	362
इस क़ौम का भी हिसाब व किताब होगा	363
एक बड़ी नेमत जिसके मुक़ाबले में तमाम नेमतें मामूली हैं	364
आसमानी किताबें उद्देश्यों के हासिल करने का ज़रिया	266
आ़म ऐलान कर दीजिए	368
सूरः नहल	
ख़ुदा का हुक्म	371
रिसालत एक ख़ुदाई अ़तीया है	372
ज़मीन व आसमान को ख़ुदा ही ने पैदा किया	372
तरह-तरह के जानवर	373
बहुत से फ़ायदे	374
सीधा और सही रास्ता	376
पानी कितनी बड़ी नेमत है	377
बेशुमार दलीलें	377
ख़ुश्की की नेमतों के बाद पानी के इनामों का तज़किरा	378
ख़ालिस बेवक़ूफ़ी	380
ग़ुरूर और घमंड शोभा नहीं देता	381
काफ़िरों की बकवास	381
पिछली उम्मतें	382
काफ़िर लोग और मौत के वक़्त उनकी हालत	383

Maktab-E-Ashraf

उनवान	पेज
मोमिन और उसकी मौत की हालत	384
इन्तिज़ार और किस चीज़ का इन्तिज़ार!	386
एक मुकम्मल उज़्र	387
क़ियामत और दोबारा ज़िन्दा होने का इनकार	389
हिजरत और उसका बेइन्तिहा अज्र	390
यह सिलसिला पहले से चला आता है	391
क्या ये लोग बेफ़िक्र हो गये?	393
सारी मख़्लूक़ अल्लाह के सामने सज्दे में है	394
एक ख़ुदा	395
कितनी बड़ी गुस्ताख़ी	396
शाने रहमत के तक़ाज़े	397
शैतान मर्दूद की साज़िशें	398
क़ुदरत की निशानियों को देखो	399
एक मक्खी और उसका बड़ा कारनामा	400
बुढ़ापे का ज़माना	403
यह फ़र्क़ क्यों?	403
अल्लाह का एक और इनाम और फिर नेमत की नाशुक्री	405
एक मिसाल	406
दूसरी मिसाल	406
क़ियामत बहुत क़रीब है	407
एहसानों की एक मुख़्तसर सूची	409
क़ियामत और उस दिन के अ़ज़ाब	411
हर उम्मत में एक नबी	413
बुराईयों से रोकिये	414
अ़हद और वादे का पूरा करना	416
एक उम्मत	419
पाकीज़ा ज़िन्दगी	420
ख़ुदा की पनाह	421
एक बोहतान	422
यह कितनी बेहूदा और ग़लत बात है	422
ये लोग झूठे हैं	423
यही नुक़सान में रहेंगे	424
वह दिन भी आने वाला है	427
एक मिसाल	428
खाओ पियो	430
यहूदियों की गुमराही	431
हज़रत इब्राहीम की सिफ़तें और ख़ूबियाँ	432
हफ़्ते का दिन	433
दावत व तब्लीग़ करो लेकिन सलीक़े के साथ	434
सब्र क्या ही अच्छी चीज़ है	435

पारा नम्बर पन्द्रह

सूरः बनी इस्राईल

उनवान	पेज
सूरः बनी इस्राईल के फ़ज़ाईल	438
नबी करीम सल्ल. की तरक़्क़ी व बुलन्दी की इन्तिहा	439
हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा	466
एक फ़ैसला और तक़दीरी मामलात	468
यह क़ुरआन बेहतरीन रहनुमा है	470
इनसान का अ़जीब हाल है	470
दो निशानियाँ	471
आमाल का दफ़्तर	472
नफ़ा और नुक़सान	473
अ़य्याशी दुनिया की तबाही की निशानी	481

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
पहली उम्मतों की तबाही	481
दुनिया की लज़्ज़तें या आख़िरत की नेमतें	482
आख़िरत के जहान के क्या कहने	483
शिर्क मत करो	483
कुछ और अहकाम	484
अल्लाह तआ़ला सब कुछ जानता है	486
हुक़ूक़ का ख़्याल रखिये	487
कन्जूसी और हाथ रोक लेने की निंदा	488
औलाद को क़त्ल मत करो	489
सामाजिक ज़िन्दगी का एक रिस्ता हुआ नासूर	490
किसी को क़त्ल करना	491
यतीम का माल और नाप-तौल	492
बग़ैर तहक़ीक़ के कुछ मत कहो	493
अकड़ और घमंड	494
क़ीमती बातें	495
ख़ालिस बेवक़ूफ़ी	495
हक़ से नफ़रत	496
जवाब दो	496
एक ही इबादत	497
एक पर्दा और रोक	499
गुमराही	500
बाज़ शुब्हात और उनके जवाबात	501
इनसान का दुश्मन	503
अम्बिया की जमाअ़त	503
सब ख़ुदा तआ़ला के मोहताज हैं	505
क़ियामत से पहले	505
अल्लाह की आयतों और निशानियों का इनकार	506
बुरा और नापसन्दीदा पेड़	508
शैतान की सरकशी	509
ख़ुदा तआ़ला का जवाब	510
क़ुदरत की शान	511
मुश्किलों को हल करने वाला	511
अल्लाह का इख़्तियार हर जगह है	512
ऐसा भी हो सकता है	512
इनसान की बरतरी	513
क़ियामत का दिन	514
अल्लाह का फ़ज़्ल व करम	516
अल्लाह के तरीक़े में कोई तब्दीली नहीं	516
नमाज़ की पाबन्दी और एहतिमाम	517
मदीना की तरफ़ हिजरत	522
शिफ़ा व रहमत	526
अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है	526
रूह क्या है?	527
आप पर भी बस रहमत है	530
बेवक़ूफ़ी के मुतालबे	531
हिदायत	535
रसूल अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कहता	536
वह जिसको चाहे हिदायत दे	537
हैरानी का इज़हार	538
तंगदिली	539
नौ निशानियाँ	539
सच्ची किताब	542
ईमान लाओ या न लाओ	543
अल्लाह के पाक नाम	544

Mahtab E Ashraf

उनवान	पेज
सूरः कहफ़	
सूरः कहफ़ की फ़ज़ीलत का बयान	546
हिदायत की किताब	548
क्या आप उनको हिदायत के रास्ते पर ले आयेंगे?	549
अस्हाब-ए-कहफ़ का क़िस्सा	550
वाक़िए की तफ़सील	552
खोह की आश्चर्य में डालने वाली बातें	555
क़ुदरत के नमूने	556
कुछ मस्लेहतें और हिक्मतें	557
क़ियामत यक़ीनी चीज़ है	559
बेकार की बहसें	561
एक तंबीह	562
अस्हाब-ए-कहफ़ के ग़ार में ठहरने की मुद्दत	564
अल्लाह के पैग़ाम का प्रचार व प्रसार	565
अब तुम जो चाहो करो	567
अच्छे अ़मल का अच्छा नतीजा	568
एक वाक़िआ़	569
मोमिन की तंबीह	570
अल्लाह के अ़ज़ाब की तबाही	572
दुनिया की मिसाल	573
क़ियामत के दिन का ज़िक्र	577
हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और शैतान का क़िस्सा	579
किसी से इमदाद नहीं ली	581
आज के दिन रोना और फ़रियाद करना बेकार है	582
हर तरह की कोशिश	583
पहले लोगों का तरीक़ा	584
आयतों से मुँह फेर लेना	585
हज़रत मूसा व ख़ज़िर अ़लैहिमस्सलाम का क़िस्सा	586
हज़रत मूसा व ख़िज़र अ़लैहिमस्सलाम की गुफ़्तगू	592
पहली भूल	593
दूसरी चूक	594

❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁

Maktab E Ashraf

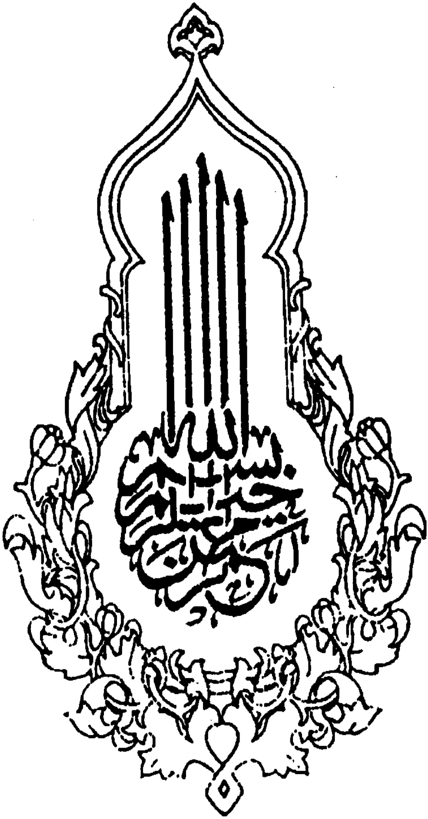

Mahtab E Ashraf

पारा नम्बर ग्यारह

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۫ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ○ يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ○	ये लोग तुम्हारे (सबके) सामने उज़्र पेश करेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे। (सो ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) आप (सबकी तरफ़ से साफ़) कह दीजिए कि (यह) उज़्र पेश मत करो, हम कभी तुमको सच्चा न समझेंगे, अल्लाह तआ़ला हमको तुम्हारी (असली हालत की) ख़बर दे चुके हैं। और आगे भी अल्लाह तआ़ला और उसका रसूल तुम्हारी कारगुज़ारी देख लेंगे। फिर ऐसे के पास लौटाए जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सबका जानने वाला है। फिर वह तुमको बतला देगा जो-जो कुछ तुम करते थे। (94) (हाँ) वे अब तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खा जाएँगे (कि हम माज़ूर थे) जब तुम उनके पास वापस जाओगे, ताकि तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो। सो तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो, वे लोग बिल्कुल गन्दे हैं, और (आख़ीर में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, उन कामों के बदले में जो कुछ वे (निफ़ाक़ व मुख़ालफ़त वग़ैरह) किया करते थे। (95) ये इसलिए क़समें खाएँगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ। सो अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओ तो (उनको क्या नफ़ा, क्योंकि) अल्लाह तआ़ला तो ऐसे शरीर लोगों से राज़ी नहीं होता। (96)

गुनाह करके बातें बनाना और भी बुरा है

अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ों के बारे में यह इत्तिला दे दी है कि जब तुम मदीना वापस होगे तो तुम्हारे सामने अपने उज़्र (बहाने और मजबूरियाँ) पेश करेंगे लेकिन तुम उनसे कह दो कि तुम्हें ये ख़िलाफ़े अ़क़्ल माज़िरतें पेश करने की कोई ज़रूरत नहीं, हम तुम्हारी बात को कभी सच न मानेंगे। अल्लाह पाक ने हमें तुम्हारे हालात मालूम करा दिये हैं, जल्द ही अल्लाह पाक तुम्हारे आमाल दुनिया में लोगों के सामने ज़ाहिर फ़रमा देगा और तुम्हें तुम्हारे अच्छे-बुरे सारे आमाल की ख़बर दे देगा, और फिर अपने आमाल का नतीजा भी देखना पड़ेगा। फिर उनसे मुताल्लिक़ और ख़बर दी गई कि वे क़समें खा-खाकर बयान करेंगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र और चश्मपोशी (यानी उनकी माज़िरत क़बूल) कर लो। यह उस वक़्त होगा जब

तुम मदीना वापस हो जाओगे लेकिन तुम हरगिज़ उनकी तस्दीक़ न करना और उनसे मुँह फेर लेना ताकि उनकी इस ग़लत रविश को ज़ाहिर किया जा सके। उनमें नफ़्स की गन्दगी है, उनके बातिन और उनके एतिक़ाद नजिस (नापाक और गन्दे) हैं, आख़िरत में उनका ठिकाना दोज़ख़ है और यह उनके आमाल का यानी ख़ताकारियों का सही बदला है। और यह भी बतला दिया कि अगर तुम उनसे उनकी क़समें खाने के सबब राज़ी हो भी जाओ तो अल्लाह तआ़ला तो उन लोगों से राज़ी न होगा, जो ख़ुदा की ताअ़त और रसूलुल्लाह सल्ल. की फ़रमाँबरदारी से बाहर हो गये हैं, वे लोग फ़ासिक़ (बदकार व गुनाहगार) हैं और 'फ़िस्क़' के लुग़वी मायने बाहर निकलने के हैं (बदकार व गुनाहगार आदमी चूँकि अल्लाह व रसूल की तय की हुई हदों से बाहर निकल जाता है इसलिये उसको 'फ़ासिक़' कहते हैं)।

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَاۗىِٕرَ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ۭ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۭ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝	(उन मुनाफ़िक़ों में जो) देहाती लोग (हैं वे) कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त लोग हैं, और उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको उन अहकाम का इल्म न हो जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाए हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (97) और उन देहातियों में से बाज़-बाज़ ऐसा है कि जो कुछ वह ख़र्च करता है उसको जुर्माना समझता है, और तुम मुसलमानों के वास्ते (ज़माने की) गर्दिशों का मुन्तज़िर रहता है, बुरा वक़्त उन ही (मुनाफ़िक़ों) पर (पड़ने वाला) है, और अल्लाह तआ़ला सुनते हैं, जानते हैं। (98) और बाज़े देहात वाले ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं, और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह के पास क़ुर्ब "यानी निकटता" हासिल होने का ज़रिया और रसूल की दुआ़ का ज़रिया बनाते हैं, याद रखो कि (उनका) यह (ख़र्च करना) बेशक उनके लिए निकटता का सबब है, ज़रूर उनको अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में दाख़िल कर लेंगे, अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (99)

ع ۱۱

अ़रब के देहाती

अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि आराब (देहातियों) में कुफ़्फ़ार भी होते हैं और मोमिन भी, और

Maktab E Ashraf

उनका कुफ़्र और उनका निफ़ाक़ दूसरों की तुलना में बहुत ज़्यादा सख़्त होता है, और वे इसी बात के हक़दार हैं कि अल्लाह पाक ने अपने रसूल पर जो अहकाम की सीमायें नाज़िल फ़रमायी हैं उनसे बेख़बर रहें। जैसे कि आमश ने इब्राहीम से रिवायत की है कि एक देहाती बदवी ज़ैद बिन सोहान के पास बैठा हुआ था, वह अपने साथियों से बातें कर रहे थे, और जंगे नहावन्द में उनका हाथ कट गया था। देहाती उनसे कहने लगा कि तुम्हारी बातें तो बड़ी प्यारी हैं और तुम बड़े अच्छे आदमी मालूम होते हो, लेकिन यह तुम्हारा हाथ कटा हुआ मुझे तुम्हारे बारे में शक पैदा करता है। ज़ैद ने कहा कि मेरे कटे हुए हाथ से तुम्हें शक क्यों होता है? यह तो बायाँ हाथ है, देहाती ने कहा कि ख़ुदा की क़सम मैं नहीं जानता कि चोरी में बायाँ हाथ काटते हैं या दाहिना हाथ? तो ज़ैद बिन सोहान बोल उठे कि अल्लाह ने सच फ़रमाया थाः

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ.

यानी ये देहाती कुफ़्फ़ार इसी के हक़दार और पात्र हैं कि अल्लाह की हदों से नावाक़िफ़ रहें।

इमाम अहमद रह. ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की सनद से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जो जंगल में रहना-सहना इख़्तियार करे वह गोया जिला-वतन है, और शिकार के पीछे दौड़ा-दौड़ा फिरता है, बड़ा ही बेसमझ है। और जिसने किसी बादशाह की निकटता इख़्तियार की वह फ़ितने (इम्तिहान व आज़माईश और परेशानी) से दोचार हो गया। अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी सुफ़ियान सौरी रह. से यह हदीस मरवी है। इमाम तिर्मिज़ी ने इसे हसन ग़रीब बताया है। सौरी से रिवायत के सिवा और किसी से रिवायत का हमें इल्म नहीं। देहातियों में चूँकि बद-मिज़ाजी, उजड-पन और बदतमीज़ी होती है इसलिये अल्लाह तआ़ला ने उनमें से अपना रसूल पैदा नहीं किया। नुबुव्वत व रिसालात का सिलसिला हमेशा शहरी और मुहज़्ज़ब लोगों में जारी रहा। जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमाया हैः

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى.

यानी हमने तुमसे पहले भी जितने रसूलों को इनसानों की तरफ़ भेजा वे सब शहरी और सभ्य थे।

एक बार एक देहाती ने अपना हदिया रसूलुल्लाह सल्ल. की तरफ़ भेजा तो उस वक़्त तक उसका दिल ख़ुश न हुआ जब तक कि उससे कई गुना ज़्यादा आपने उसके पास न भेज दिया। आपने फ़रमाया कि अब मैंने इरादा कर लिया है कि क़ुरैशी, सक़फ़ी, अन्सारी और दौसी के सिवा और किसी का हदिया क़बूल न करूँगा, क्योंकि ये लोग सभ्य और तहज़ीब-याफ़्ता शहरी हैं। मक्का, ताईफ़, मदीना और यमन में रहते हैं। अख़्लाक़ (स्वभाव) में ये देहातियों और जंगलों में रहने वालों से बहुत अच्छे होते हैं, क्योंकि देहाती बहुत उजड होते हैं।

मुस्लिम में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की एक रिवायत है कि चन्द देहाती रसूलुल्लाह सल्ल. के पास हाज़िर हुए और कहने लगे क्या तुम अपने बच्चों को चूमते हो? सहाबा रज़ि. ने कहा हाँ। उन्होंने कहा लेकिन ख़ुदा की क़सम हम नहीं चूमते, तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से मुहब्बत और रहम को निकाल दिया है तो क्या मैं इसका ज़िम्मेदार हूँ? और अल्लाह ख़ूब वाक़िफ़ है उन लोगों से जो इस बात के मुस्तहिक़ हैं कि उन्हें इल्म और ईमान की तौफ़ीक़ दी जाये और उसने अपने बन्दों में इल्म, जहल, ईमान कुफ़्र और निफ़ाक़ की तक़सीम बड़ी दानाई से की है और वह अपनी हिक्मत और इल्म की बिना पर जो कुछ करता है कौन उस पर उंगली उठा सकता है? अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि उन्हीं में ऐसे भी हैं कि ख़ुदा की राह में अगर वे कुछ ख़र्च करते हैं तो उसको तावान (जुर्माना) और

Maktaba Ashraf

ख़सारा समझ बैठते हैं और तुम पर आफ़तों व हादसों के मुन्तज़िर रहते हैं, लेकिन ये आफ़तें उन्हीं पर पड़ेंगी और घूम-फिरकर उन्हीं पर नाज़िल होंगी, अल्लाह अपने बन्दों की पुकार को सुनने वाला है और इस बात को जानता है कि नाकामी और नामुरादी का कौन मुस्तहिक़ है और फ़तह व कामयाबी का कौन हक़दार है।

और देहातियों में के कुछ लोग तारीफ़ के हक़दार हैं, ये वे लोग हैं जो ख़ुदा की राह में अगर कुछ ख़र्च करते हैं तो उसको अल्लाह के पास निकटता और उसकी रज़ामन्दी का एक ज़रिया समझते हैं और चाहते हैं कि उसके सबब अपने लिये रसूल की दुआ-ए-ख़ैर हासिल करें। हाँ यक़ीनन यह ख़र्च करना उनके लिये अल्लाह की निकटता का सबब होगा और अल्लाह पाक उनको अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमायेगा। अल्लाह बड़ा ग़फ़ूर व रहीम (माफ़ करने वाला और रहम करने वाला) है।

और जो मुहाजिरीन और अन्सार (ईमान लाने में सबसे) पहले और मुक़द्दम हैं, और (बक़िया उम्मत में) जितने इख़्लास के साथ उनके पैरोकार हैं, अल्लाह उन सबसे राज़ी हुआ और वे सब उससे (यानी अल्लाह से) राज़ी हुए, और उसने (यानी अल्लाह ने) उनके लिए ऐसे बाग़ मुहैया कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) यह बड़ी कामयाबी है। (100)	وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ لا رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ط ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ o

मुहाजिरीन से उनका ख़ुदा राज़ी है

अल्लाह तआला ख़बर दे रहा है कि मैं उन मुहाजिरों और उनकी पैरवी करने वालों से राज़ी हूँ जिन्होंने मेरी रज़ामन्दी और ख़ुशनूदी हासिल करने में सब्क़त की है और मेरा राज़ी व ख़ुश होना यह है कि मैंने उनके लिये जन्नतें तैयार कर रखी हैं। शअ़बी कहते हैं कि मुहाजिरीन व अन्सार में से साबिक़ीन व अव्वलीन (पहल करने वाले और सबसे पहले) वे हैं जिन्होंने जंगे हुदैबिया में बैअ़ते रिज़्वान का शर्फ़ (सम्मान) हासिल किया है। और शअ़बी, हज़रत अबू मूसा अश्अ़री, सईद बिन मुसैयब, मुहम्मद बिन सीरीन, हसन और क़तादा ने कहा- ये वे लोग हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ क़िब्लतैन (दोनों क़िब्लों) की तरफ़ नमाज़ पढ़ी।

मुहम्मद बिन कअ़ब क़रज़ी कहते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. किसी के क़रीब से गुज़रे, उस वक़्त वह यह आयत पढ़ रहा थाः

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ.

(यानी यही आयत जिसका बयान चल रहा है) तो उमर रज़ि. ने उसका हाथ थाम लिया और पूछा कि किसने तुम्हें यह पढ़ाया है? वह कहने लगा- उबई बिन कअ़ब ने। इस पर आपने फ़रमाया अच्छा चलो मैं तुम्हें उबई के पास ले चलता हूँ ताकि पूछ लूँ और जब हज़रत उबई के पास पहुँचे तो पूछा क्या तुमने इस

Maktab E Ashraf

आयत को इस तरह पढ़ना बताया है? उबई बिन कअ़ब रज़ि. ने कहा हाँ। आपने पूछा क्या तुमने रसूलुल्लाह सल्ल. से इसी तरह सुना है? कहा हाँ। तो उमर रज़ि. कहने लगे- मैं देख रहा हूँ कि हमने वह बुलन्द व ऊँचा दर्जा पा लिया है कि हमारे बाद कोई दूसरा यह रुतबा हासिल नहीं कर सकता, तो उबई कहने लगे इस आयत की तस्दीक़ सूरः जुमा के शुरू में भी है, यानीः

وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ.

(सूरः जुमा आयत 3) और सूरः हश्र में भी हैः

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْا مِنْ بَعْدِهِمْ .... الخ

(सूरः हश्र आयत 10) और सूरः अनफ़ाल में भी हैः

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا مَعَكُمْ.

(सूरः अनफ़ाल आयत 75) इब्ने जरीर रह. ने इसकी रिवायत की है और कहा है कि हसन बसरी 'वल्-अन्सारु' के लफ़्ज़ को पेश से पढ़ते थे और 'वस्साबिक़ूनल्-अव्वलून' पर अ़त्फ़ क़रार देते थे, गोया इबारत यूँ हुई कि मुहाजिरीन में से सबसे पहले क़दम बढ़ाने वाले और अन्सार और उनके पीछे चलने वालों से ख़ुदा राज़ी है।

अफ़सोस क्या कमबख़्ती है उन लोगों की जो इन सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से बुग़्ज़ रखते हैं, इन्हें गालियाँ देते हैं, या सहाबा रज़ि. को बुरा-भला कहते हैं, ख़ासकर वह सहाबी जो तमाम सहाबा का सरदार है, पैग़म्बर का जानशीन (उत्तराधिकारी) है, रसूल के बाद उसी का दर्जा है, जिसको तमाम सहाबा में अफ़ज़ल होने का दर्जा हासिल है यानी सिद्दीक़े अकबर और ख़लीफ़ा-ए-आज़म अबू बक्र बिन क़ुहाफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु। यह राफ़ज़ियों (शियों) का नामुराद फ़िर्क़ा है जो हज़रत अबू बक्र रज़ि. से दुश्मनी रखता है, उन्हें गालियाँ देता है, ऐसी हरकतों से ख़ुदा की पनाह।

यह चीज़ इस बात पर दलालत करती है कि ये अ़क़्ल से कोरे हैं, अगर वे कमबख़्त उन लोगों को गालियाँ दें जिनसे ख़ुदा राज़ी हो चुका है और क़ुरआने करीम में अपनी रज़ामन्दी की उन्हें सनद दे दी है तो फिर किस मुँह से वे क़ुरआन पर ईमान लाने का दावा करते हैं? अब क़ुरआन पर ईमान ही कहाँ रहा और अहले सुन्नत उन लोगों (यानी सहाबा) की क़द्र करते हैं और उनसे राज़ी हैं जिनसे कि अल्लाह तआ़ला राज़ी है। और ये अहले सुन्नत बुरा-भला कहते हैं तो उनको जिन्हें ख़ुद ख़ुदा और रसूल ने बुरा कहा है, और उन लोगों को दोस्त रखते हैं जिनको अल्लाह दोस्त रखता है, और उनके मुख़ालिफ़ हैं जिनका ख़ुदा ख़ुद मुख़ालिफ़ है। ये हिदायत की पैरवी करते हैं, बिदअ़ती नहीं हैं, नबी सल्ल. की इत्तिबा करते हैं और मज़हब व एतिक़ादों में नये-नये नज़रिये और शोशे नहीं निकालते, फ़लाह पाने वाले और मोमिन बन्दों की जमाअ़त यही है।

और कुछ तुम्हारे आस-पास वाले देहातियों में और कुछ मदीना वालों में ऐसे मुनाफ़िक़ हैं, कि निफ़ाक़ की आख़िरी हद को पहुँचे हुए हैं, कि आप (भी) उनको नहीं जानते (कि ये मुनाफ़िक़ हैं, बस) उनको हम ही जानते हैं। हम उनको	وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۖ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۣ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۖ

سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝	(यानी मुनाफ़िक़ों को आख़िरत से पहले भी) दोहरी सज़ा देंगे (एक निफ़ाक़ की दूसरे निफ़ाक़ में हद से बढ़ने की) फिर (आख़िरत में) वे बड़े भारी अज़ाब की तरफ़ भेजे जाएँगे। (101)

Maktaba Ashraf

मुनाफ़िक़ों के बारे में इत्तिला

अल्लाह पाक अपने रसूल सल्ल. को ख़बर दे रहा है कि अ़रब के क़बीलों में से जो मदीना के आस-पास में रहते हैं बाज़े मुनाफ़िक़ हैं और ख़ुद मदीने के रहने वाले बाज़ मुसलमान भी वास्तव में मुनाफ़िक़ हैं कि अपने निफ़ाक़ को लिये चल रहे हैं और मुनाफ़क़त से बाज़ नहीं आते।

अल्लाह का क़ौलः

لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ

(यानी सूरः तौबा की आयत 101) ख़ुदा के इस क़ौलः

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ.

(सूरः मुहम्मद आयत 30) के ख़िलाफ़ और विपरीत नहीं है, यानी तुम उन्हें नहीं पहचानते हम उन्हें ख़ूब जानते हैं। और यह क़ौल कि अगर हम चाहें तो हम बतला देंगे कि वे कैसे हैं तो फिर तुम उन्हें जान जाओगे उनकी सूरत देखते ही और उन्हें पहचान लोगे उनकी बेतुकी बातों से।

ये दोनों आयतें आपस में ज़िद (एक दूसरे के उलट और आपस में टकराव रखने वाली) नहीं, इसलिये कि यह इस क़िस्म की चीज़ है कि इसके ज़रिये उनकी सिफ़ात की निशानदेही की गई है ताकि वे पहचान लिये जा सकें। यह बात नहीं कि तुम तमाम ही मुनाफ़िक़ों को मुतैयन तौर पर जानते हो। आप मदीना वालों में से सिर्फ़ उन बाज़ मुनाफ़िक़ों को जानते थे जो रात-दिन मिलते-जुलते रहते थे और जिन्हें आप सुबह व शाम देखते थे, सही तौर पर इसकी तस्दीक़ उस रिवायत से भी होती है जो इमाम अहमद रह. ने जुबैर बिन मुतइ़म रज़ि. से नक़ल की गयी है। जुबैर फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वे लोग गुमान करते हैं कि मक्का में हमें कोई अज्र नहीं मिला, तो आपने फ़रमाया कि ऐ जुबैर! तुम लोगों का अज्र तुम्हें ज़रूर दिया जायेगा चाहे तुम लोग मक्का में नहीं लोमड़ी के भट (बिल और सुराख़) में ही क्यों न हो। फिर आपने मेरी तरफ़ सर झुकाकर राज़दारी के अन्दाज़ में फ़रमाया कि मेरे साथियों में बाज़े मुनाफ़िक़ भी हैं, मतलब यह है कि बाज़ मुनाफ़िक़ लोग ऐसी बेतुकी बातें करते रहते हैं जिनमें कोई सदाक़त (सच्चाई) नहीं होती, चुनाँचे यह भी एक इसी क़िस्म का कलाम था जिसको जुबैर बिन मुतइ़म ने सुना था।

'व हम्मू बिमा लम् यनालू' की तफ़सीर में यह बात बयान की जा चुकी है कि नबी सल्ल. ने हज़रत हुज़ैफ़ा को इसकी इत्तिला दे दी थी कि चौदह पन्द्रह मुतैयन शख़्स ऐसे हैं जो हक़ीक़त में मुनाफ़िक़ हैं, और यह कुछ लोगों को ख़ास करके बता देना इस बात को नहीं दर्शाता कि आप उन तमाम के नाम जानते थे और उनकी पहचान व हक़ीक़त आप पर ज़ाहिर थी। वल्लाहु आलम

हाफ़िज़ इब्ने असाकिर 'तर्जुमा अबू उमर अल-बैरूनी' में सनद के हवाले के साथ रिवायत करते हैं कि एक आदमी जिसका नाम हिर्मला था, नबी सल्ल. के पास आया और कहा कि ईमान तो यहाँ है, और

Maktab E Ashraf

इशारा किया अपनी ज़बान की तरफ़, और निफ़ाक़ यहाँ होता है और इशारा अपने हाथ से अपने दिल की तरफ़ किया, और ख़ुदा का नाम भी लिया तो बहुत मामूली सा। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि ऐ ख़ुदा! तू इसकी ज़बान को ज़ाकिर (ज़िक्र करने वाली) बना दे और दिल को शाकिर (शुक्र करने वाला) बना दे और इसको मेरी मुहब्बत अ़ता फ़रमा और मुझसे मुहब्बत करने वालों की मुहब्बत अ़ता फ़रमा, और इसके सारे मामलात ख़ैर की तरफ़ फेर दे। अब उसकी सारी मुनाफ़क़त दूर हो गई और कहने लगा या रसूलल्लाह! मेरे अक्सर साथी मुनाफ़िक़ हैं और मैं उन सब का सरदार था, क्या उन सबको मैं आपके पास पकड़ कर न लाऊँ? आपने फ़रमाया कि जो ख़ुद ही मेरे पास आ जायेगा तो मैं उसके लिये ख़ुदा से मग़फ़िरत (माफ़ करने) को चाहूँगा और जो निफ़ाक़ पर ज़िद किये (यानी अड़ा) रहेगा अल्लाह उसको देख लेगा, तुम किसी का राज़ फ़ाश न करो। ऐसी ही रिवायत अबू अहमद हाकिम ने भी की है।

इस आयत के बारे में क़तादा रह. ने कहा है कि उन लोगों को क्या हो गया जो बेतकल्लुफ़ लोगों के बारे में अपना यह इल्म व यक़ीन ज़ाहिर करते रहते हैं कि फ़ुलाँ जन्नती है, फ़ुलाँ दोज़ख़ी है। अगर ख़ुद उनसे पूछा जाये कि तुम बताओ तुम कौन हो, जन्नती या दोज़ख़ी? तो कहते हैं मैं नहीं जानता हालाँकि आदमी अपने मुताल्लिक़ ज़्यादा बेहतर तरीक़े से जान सकता है, जो दूसरों के बारे में जानता है कि दोज़ख़ी हैं या जन्नती, वे तो ऐसी बात का दावा कर बैठते हैं जिसका दावा अम्बिया ने भी नहीं किया।

अल्लाह के नबी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कहा थाः

وَمَا عِلْمِى بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ.

यानी मैं नहीं जानता कि वे क्या करते हैं। और अल्लाह के नबी हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया थाः

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ.

अल्लाह तआ़ला के पास तुम्हारे लिये ख़ैर है अगर तुम मोमिन हो, और मैं तुम पर कोई निगराँ व ज़िम्मेदार तो नहीं। और अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. के लिये फ़रमायाः

لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ.

यानी तुम उनको नहीं जानते, हम जानते हैं।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इस आयत के बारे में नक़ल है कि नबी सल्ल. एक रोज़ जुमे का ख़ुतबा देने के लिये खड़े हुए और फ़रमाया कि ऐ फ़ुलाँ-फ़ुलाँ लोगो! तुम मस्जिद से चले जाओ कि तुम मुनाफ़िक़ लोग हो। चुनाँचे बड़ी रुस्वाई के साथ वे मस्जिद से निकाले गये, वे मस्जिद से निकल रहे थे और उमर रज़ि. मस्जिद की तरफ़ आ रहे थे। हज़रत उमर रज़ि. यह देखकर कि लोग वापस घर को जा रहे हैं शायद नमाज़े जुमा हो चुकी है, शर्मा गये और शर्म के मारे उन लोगों से अपने को छुपाने लगे और ये लोग भी अपने को उमर रज़ि. से छुपाने लगे, यह समझ कर कि उमर को भी हमारे इस निफ़ाक़ का इल्म हो गया होगा। ग़र्ज़ जब हज़रत उमर रज़ि. मस्जिद में आये तो मालूम हुआ कि अभी नमाज़ नहीं हुई। एक मुसलमान ने उन्हें इत्तिला दी और कहा ऐ उमर! ख़ुश हो जाओ कि आज मुनाफ़िक़ों को अल्लाह तआ़ला ने रुस्वा कर दिया है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि यह मस्जिद से निकाला जाना पहला अ़ज़ाब है और दूसरा क़ब्र का अ़ज़ाब होगा।

Mahtab E Ashraf

सुफ़ियान सौरी रह. ने भी सनद के साथ यही कहा है। मुजाहिद रह. ने अल्लाह तआ़ला के क़ौलः

سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ.

(यानी हम मुनाफ़िक़ों को दोहरी सज़ा देंगे) के बारे में कहा है कि इससे मुराद क़त्ल और क़ैद है। एक दूसरी रिवायत में भूख और अ़ज़ाबे क़ब्र से इसको ताबीर किया गया है। फिर वे बड़े अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाये जायेंगे। इब्ने जुरैज का क़ौल है कि अ़ज़ाबे दुनिया व अ़ज़ाबे क़ब्र मुराद है, फिर वे अ़ज़ाबे अ़ज़ीम यानी अ़ज़ाबे दोज़ख़ में मुब्तला किये जायेंगे। हसन बसरी रह. ने कहा है कि दुनिया और क़ब्र का अ़ज़ाब मुराद है। अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद कहते हैं कि दुनिया का अ़ज़ाब माल व औलाद के फ़ितने का अ़ज़ाब है। फिर अल्लाह तआ़ला का यह क़ौल पढ़कर सुनायाः

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا.

यानी इन काफ़िरों के माल और औलाद तुमको हसद (ईर्ष्या) में मुब्तला न कर दें, अल्लाह का मंशा यह है कि इन चीज़ों के ज़रिये दुनिया की ज़िन्दगी में ही अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे, क्योंकि ये मुसीबतें इनके लिये अ़ज़ाब हैं, लेकिन मोमिनों के लिये अज्र का सबब हैं। और आख़िरत के अ़ज़ाब से मुराद दोज़ख़ का अ़ज़ाब है। मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा है कि पहले अ़ज़ाब से तो वह अ़ज़ाब मुराद है जो इस्लाम के फैल जाने से उन्हें पहुँचा है, जिसकी वजह से बेइन्तिहा रंज व अफ़सोस उनको हुआ है। दूसरा अ़ज़ाब क़ब्र का अ़ज़ाब है और अ़ज़ाबे अ़ज़ीम वह है जो आख़िरत में उन्हें मिलेगा और हमेशा-हमेशा का होगा।

सईद ने क़तादा रह. से रिवायत करते हुए कहा है कि नबी सल्ल. ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. के कान में कहा कि बारह मुनाफ़िक़ हैं, उनमें से छह को 'दबीला' काफ़ी है, यह जहन्नम की आग का एक शोला है, जो उनके कंधे पर लगेगा तो सीने तक पहुँचेगा। यानी पेट के दर्द, अन्दरूनी बीमारियों और दुंबलों से मरेंगे, और बाक़ी छह अपनी मौत से मर जायेंगे। सईद ने हमसे बयान किया है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. जब कोई मरता और वह उनकी नज़र में हमेशा संदिग्ध होता तो हज़रत हुज़ैफ़ा की तरफ़ देखते, अगर वह उस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ते तो ख़ुद भी पढ़ते, यह यक़ीन करके कि यह मय्यित उन बारह मुनाफ़िक़ों में से नहीं है, और हज़रत हुज़ैफ़ा अगर न पढ़ते तो फिर ख़ुद भी न पढ़ते। मालूम हुआ है कि उमर रज़ि. ने हज़रत हुज़ैफ़ा से यह भी पूछा था कि ख़ुदा की क़सम बता दो कि मैं उन बारह में से तो नहीं हूँ? तो हुज़ैफ़ा ने कहा कि तुम नहीं हो, लेकिन तुम्हारे सिवा मैं किसी और की ज़िम्मेदारी नहीं लेता।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ○

और कुछ और लोग हैं जो अपनी ख़ता के इक़रारी हो गए। जिन्होंने मिले-जुले अ़मल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे, (सो) अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि उन (के हाल) पर रहमत के साथ तवज्जोह फ़रमाएँ, (यानी तौबा क़बूल कर लें) बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (102)

Maktab E Ashraf

नदामत, तौबा और मग़फ़िरत का वादा

जब अल्लाह तआ़ला उन मुनाफ़िक़ों का हाल बयान कर चुका जो मुसलमानों के साथ जिहाद में शरीक होने से रुक गये थे और जंग में शरीक होने से बेरग़बती, झुठलाने और शक का प्रदर्शन करते थे तो फिर उन गुनाहगारों का ज़िक्र शुरू करता है जो जिहाद में शरीक होने से रुके रहे, जिसकी वजह सिर्फ़ सुस्ती और आराम-तलबी थी, हालाँकि उन्हें हक़ की तस्दीक़ और ईमान हासिल था। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उन मुनाफ़िक़ों के अ़लावा और दूसरे लोग जो जिहाद से रुके रहे उन्होंने अपने क़सूर को स्वीकार कर लिया लेकिन ये ऐसे लोग हैं कि इनके दूसरे नेक आमाल भी हैं और उन नेक आमाल के साथ अपनी बाज़ ख़ताओं जैसे जिहाद में शामिल न होना भी उन्होंने शामिल कर दिया है, लेकिन उनकी इस ख़ता और ग़लती को अल्लाह पाक ने माफ़ फ़रमा दिया है, और उन मुनाफ़िक़ों की ख़ता को वह माफ़ नहीं करेगा और उनके कोई नेक आमाल हैं भी नहीं।

यह आयत अगरचे चन्द ख़ास शख़्सों के बारे में नाज़िल हुई है लेकिन सारे नेक और सही अ़क़ीदा रखने वाले ख़ताकारों और गुनाहगारों का भी यही हुक्म है। मुजाहिद रह. का क़ौल है कि यह अबू लुबाबा के बारे में नाज़िल हुई है, जबकि उन्होंने बनी क़ुरैज़ा से कहा था कि यह ज़िबह की जगह है और हाथ से अपने हलक़ की तरफ़ इशारा किया था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि 'व आख़रू-न' (कुछ और लोगों) से मुराद अबू लुबाबा और उनके साथी हैं जो तबूक की लड़ाई में शिर्कत से रुके हुए थे। बाज़ ने कहा है कि अबू लुबाबा के साथ पाँच आदमी और थे या सात थे या नौ थे, और जब रसूलुल्लाह सल्ल. तबूक की लड़ाई से वापस हुए तो उन लोगों ने अपने को मस्जिद के सुतूनों से बाँध दिया और क़सम खा ली थी कि जब तक रसूलुल्लाह सल्ल. ख़ुद हमको न खोलेंगे हमको न खोला जाये, और जब आयतः

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ.

नाज़िल हुई (कि कुछ और लोग हैं जो अपनी ख़ता और ग़लती के इक़रारी हो गये) तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने उन्हें खोल दिया और उनके जिहाद में शरीक न होने का क़सूर माफ़ कर दिया। बुख़ारी रह. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- आजकी रात दो आदमी मेरे पास आये और मुझे एक ऐसे शहर तक ले आये जो चाँदी और सोने की ईंटों से बना हुआ था। वहाँ हमें कुछ ऐसे आदमी दिखाई दिये कि उनके जिस्म का आधा हिस्सा तो बहुत ही अच्छा दिखाई दे रहा था और जिस्म का दूसरा आधा हिस्सा बहुत ही बदसूरत, कि देखने को जी नहीं चाहे। मेरे उन साथियों ने उनसे कहा कि तुम इस नहर में ग़ोता लगाओ, वे ग़ोता लगाकर जब बाहर निकले तो उनका यह ऐब (कमी और नुक़्स) जाता रहा और उनके जिस्म सबके सब हसीन दिखाई देने लगे। मेरे साथियों ने मुझसे कहा कि "यह जन्नते अ़दन है, और यही तुम्हारी मन्ज़िल है" और कहा कि वे लोग जिनका आधा जिस्म ख़ूबसूरत था और आधा जिस्म बहुत ही बदसूरत है, इसकी वजह यह है कि उन्होंने नेक आमाल के साथ बुरे आमाल भी मिला रखे थे, और ख़ुदा की हदों से निकल गये थे। इस आयत की तफ़सीर में इमाम बुख़ारी रह. ने मुख़्तसर तौर पर इसी तरह रिवायत की है।

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ○ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○	आप उनके मालों में से सदक़ा (जिसको ये लाए हैं) ले लीजिए, जिसके (लेने के) ज़रिये से आप उनको (गुनाह के आसार से) पाक व साफ़ कर देंगे। और उनके लिए दुआ़ कीजिए, बेशक आपकी दुआ़ उनके लिए (दिल के) इत्मीनान का सबब है, और अल्लाह तआ़ला (उनके मान लेने को) ख़ूब सुनते हैं (और उनकी शर्मिन्दगी को) ख़ूब जानते हैं। (103) क्या उनको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआ़ला ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और वही सदक़ों को क़बूल फ़रमाता है, (और क्या उनको ख़बर नहीं कि) अल्लाह तआ़ला ही तौबा क़बूल करने (की सिफ़त में, और) रहमत करने (की सिफ़त) में कामिल हैं। (104)

Maktaba Ashraf

पाक करने की एक सूरत

अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह सल्ल. को हुक्म दिया कि उनके मालों से ज़कात वसूल कर लिया करो, यह (यानी ज़कात) माले ज़कात को पाक और साफ़-सुथरा बनायेगा। अगरचे बाज़ लोगों ने लफ़्ज़ 'उनके' से मुराद उन लोगों को लिया है जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया था और अच्छे व बुरे दोनों क़िस्म के आमाल किये थे, लेकिन दर हक़ीक़त यह हुक्म ख़ास नहीं बल्कि आ़म है। इसी लिये अ़रब के क़बीलों में से बाज़ ज़कात को रोकने वालों ने यह एतिक़ाद कर लिया था कि इमाम को ज़कात लेने का हक़ नहीं, और यह बात रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ ख़ास थी, और इसी लिये उन्होंने आयतः

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً.

(आप उनके मालों में से सदक़ा ले लीजिये) से दलील ली है और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. और तमाम सहाबा ने उनकी इस राय को नकार दिया और उनसे जंग की, तब कहीं उन्होंने ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को ज़कात अदा की, जैसा कि वे नबी सल्ल. को अदा किया करते थे, यहाँ तक कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. ने फ़रमाया था कि "अगर वे ऊँटनी का एक बच्चा या रस्सी का एक टुकड़ा भी माले ज़कात का रोक लेंगे जो नबी सल्ल. को अदा करते थे तो ज़कात रोकने पर मैं उनसे क़िताल (जंग) करूँगा।"

अल्लाह तआ़ला का क़ौल है 'इन्-न सलात-क स-कनुल्-लहुम' यानी उनके लिये दुआ़ करो और मग़फ़िरत की दुआ़ माँगो। जैसा कि सही मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा से रिवायत है कि जब किसी के पास से ज़कात का माल आता था तो नबी सल्ल. अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ उसके लिये दुआ़ करते थे। चुनाँचे जब मेरे बाप ने माले ज़कात पेश किया तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया "ऐ अल्लाह! अबी औफ़ा की आल पर रहम फ़रमा"। एक दूसरी हदीस में है कि एक औरत ने कहा- या रसूलुल्लाह! मेरे और मेरे शौहर के लिये दुआ़ फ़रमाईये, तो कहा कि ख़ुदा तेरे और तेरे शौहर पर रहम व करम फ़रमाये। अल्लाह

Maktab E Ashraf

तआ़ला का फ़रमान है:

اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ.

कि तुम्हारी दुआ़ उनके दिली सुकून का सबब है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा है कि सुकून के मायने रहमत के हैं, और क़तादा रह. ने कहा है कि इसके मायने हैं वक़ार।

'वल्लाहु समीउन् अ़लीम' यानी ऐ नबी! अल्लाह तुम्हारी दुआ़ओं को सुनने वाला है और सब कुछ जानने वाला है, कि कौन तुम्हारी दुआ़ का मुस्तहिक़ है। इमाम अहमद रह. कहते हैं कि इमाम वकी ने सनद के साथ रिवायत की है कि नबी सल्ल. जब किसी के लिये दुआ़ फ़रमाते थे तो वह उसके और उसके बेटों व पोतों के हक़ में क़बूल हो जाती थी। फिर अबू नईम से सनद के साथ रिवायत है कि नबी सल्ल. की दुआ़ किसी आदमी और उसके बेटों व पोतों के हक़ में ज़रूर क़बूल हो जाती थी।

अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ.

यानी क्या उन्हें इसका इल्म नहीं कि अल्लाह तआ़ला बन्दों की नेकियों को लेता और तौबा को क़बूल फ़रमाता है।

इससे मक़सद तौबा और सदक़े पर लोगों को आमादा करना है, क्योंकि यही दोनों चीज़ें गुनाहों को इनसान से छुड़ा देती हैं, और गुनाहों व नाफ़रमानियों को मिटा देती हैं। अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि जो उसके पास तौबा पेश करे वह बन्दे की तौबा क़बूल कर लेता है, और जो हलाल कमाई का एक टुकड़ा भी सदक़ा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसको अपने सीधे हाथ से ले लेता है, फिर वह सदक़ा देने वाले के लिये उस सदक़े की परवरिश करता जाता है और उसको छोटे से बड़ा बनाता है, यहाँ तक कि सदक़े की वह एक खजूर उहुद पहाड़ के जैसी हो जाती है, जैसा कि इसी हदीस में रसूलुल्लाह सल्ल. से नक़ल किया गया है और जैसा कि इमाम वकी ने भी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की सनद से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला सदक़ा क़बूल फ़रमाता है और उसको अपने सीधे हाथ में लेता है, और उसको बढ़ाता और पालता है, जैसे कि तुम अपने घोड़े के बच्चे को पाल कर बड़ा करते हो। यहाँ तक कि सदक़े का एक लुक़मा भी उहुद पहाड़ बन जाता है। इसकी तस्दीक़ किताबुल्लाह (क़ुरआन पाक) से भी होती है कि "क्या उन्हें इल्म नहीं कि ख़ुदा अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और ज़कात व सदक़ात को ले लेता है"। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ.

यानी अल्लाह तआ़ला सूद के नफ़े को बरबाद कर देता है और सदक़ों को कई गुना बढ़ाता रहता है।

हज़रत सुफ़ियान सौरी ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की सनद से रिवायत की है कि सदक़े का माल माँगने वाले के हाथ में पड़ने से पहले अल्लाह के हाथ में पड़ता है, फिर अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. ने यह आयत पढ़ी:

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ.

Maktaba E Ashraf

यानी क्या उन्हें इस बात का इल्म नहीं कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और उनके सदक़ों को लेता है।

इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में अ़ब्दुल्लाह बिन शायर सस्की के संदर्भ में (जो दमिश्क़ी थे लेकिन असल वतन हिमस था, और दीन के आ़लिमों में से थे) बयान किया है कि हज़रत मुआ़विया रज़ि. के ज़माने में लोगों ने जिहाद किया, जिनके सरदार अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद थे। तो एक मुसलमान ने माले ग़नीमत में से 100 रूमी दीनार ग़बन कर लिये। जब लश्कर वापस हो गया और लोग घरों को चले गये तो उसको नदामत (पछतावे) ने आ घेरा, उसने ये दीनार अब अमीरे लश्कर के पास पहुँचा दिये, उसने उनके लेने से इनकार दिया कि वे सब लोग तो अपने-अपने घरों को चले गये जिनमें ये तक़सीम किया जा सकता था, अब मैं तो इसको ले नहीं सकता। अब तुम क़ियामत के रोज़ इसको ख़ुदा के सामने पेश कर देना। अब यह आदमी सहाबा में से हर एक से पूछता रहा लेकिन सब यही कहते रहे, फिर वह दमिश्क़ आया और हज़रत मुआ़विया को क़बूल करने के लिये कहा, लेकिन उन्होंने भी इनकार कर दिया और वहाँ से अपनी हालत पर रोता हुआ निकला और अ़ब्दुल्लाह इब्ने शायर के पास से गुज़रा। उसने पूछा क्यों रोते हो? इसने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया कि कोई अमीर भी इनको नहीं लेता। तो अ़ब्दुल्लाह ने कहा क्या तुम मेरी बात सुनोगे? उसने कहा ज़रूर। कहा तुम मुआ़विया के पास जाओ और कहो कि पाँचवाँ हिस्सा जो बैतुल-माल का हक़ है ले लो। चुनाँचे बीस दीनार उनके हवाले कर दो और बाक़ी अस्सी दीनार उन लश्करियों की तरफ़ से ख़ैरात कर दो जो इनके हक़दार हो सकते थे, क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला उनके नामों और मक़ामात वग़ैरह से भी वाक़िफ़ है, वह उन्हें इसका सवाब पहुँचा देगा। उस आदमी ने ऐसा ही किया तो हज़रत मुआ़विया ने कहा कि अगर मैंने उसको ऐसा फ़तवा दिया होता तो मुझे यह बात अपनी पूरी हुकूमत से ज़्यादा महबूब थी, उसने बहुत अच्छी तदबीर बताई है।

और आप कह दीजिए कि (जो चाहो) अ़मल किए जाओ, सो अभी देखे लेता है अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले तुम्हारे अ़मल को, और ज़रूर तुमको ऐसे के पास जाना है जो तमाम छुपी और खुली चीज़ों को जानने वाला है। सो वह तुमको तुम्हारा सब किया हुआ बतला देगा। (105)	وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला सब कुछ देख रहा है

मुजाहिद रह. का क़ौल है कि यह अल्लाह के हुक्म की मुख़ालफ़त करने वालों के लिये अल्लाह की तरफ़ से वईद (धमकी और डाँट) है कि उनके आमाल ख़ुदा तबारक व तआ़ला के सामने पेश किये जायेंगे और रसूलुल्लाह सल्ल. और मोमिनों में भी उनके आमाल ज़ाहिर किये जायेंगे और क़ियामत के रोज़ यह ज़रूर होना है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

Maktab E Ashraf

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ.

यानी कियामत के दिन तुम्हारे आमाल पेश होंगे और कोई ढकी-छुपी बात भी पोशीदा न रह सकेगी। और फ़रमाया अल्लाह तआ़ला नेः

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ.

यानी उस दिन दिलों के छुपे हुए भेद ज़ाहिर हो जायेंगे। और फ़रमायाः

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ.

यानी दिलों में जो कुछ है वह ज़ाहिर हो जायेगा और दुनिया के लोग उससे वाकिफ़ हो जायेंगे। जैसा कि इमाम अहमद रह. ने कहा है कि हसन बिन मूसा ने मरफ़ूअ़ सनद से रसूलुल्लाह सल्ल. से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अगर तुम में से कोई सख़्त पत्थर के अन्दर भी समा जाये जिसमें न कोई सुराख़ बाक़ी रहे न दरवाज़ा और उसके अन्दर भी छुपकर कोई अ़मल करे तो अल्लाह तआ़ला उसको भी लोगों पर ऐसे ज़ाहिर कर देगा गोया यह उनके सामने हुआ है। एक और हदीस में है कि ज़िन्दों के आमाल उन मुर्दों पर पेश किये जाते हैं जो उनके क़रीबी और रिश्तेदार हैं या उनके क़बीले के हैं। और जो इस वक़्त आ़लमे-बर्ज़ख़ (दुनिया और आख़िरत के बीच की मन्ज़िल) में हैं। जैसा कि इमाम अबू दाऊद तयालिसी ने कहा है।

सलत बिन दीनार ने हदीस बयान की कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- तुम्हारे आमाल तुम्हारे मुर्दा रिश्तेदारों और क़बीले वालों पर उनकी क़ब्रों में पेश किये जाते हैं। अगर नेक और अच्छे आमाल होते हैं तो वे ख़ुश हो जाते हैं और अगर बुरे हों तो दुआ़ करते हैं कि ऐ ख़ुदा! तू अपनी फ़रमाँबरदारी की उन्हें तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। इमाम अहमद कहते हैं कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने हमें ख़बर दी कि सुफ़ियान ने एक शख़्स को कहते सुना कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते थे कि तुम्हारे आमाल तुम्हारे मुर्दा रिश्तेदारों और क़बीले वालों पर पेश किये जाते हैं, अगर वे अच्छे अ़मल हों तो मुर्दे ख़ुश होते हैं और अच्छे न हों तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तू उन्हें मौत न दे जब तक तू उन्हें ऐसी हिदायत न दे जैसी तूने हमें दी थी।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया- जब किसी मुसलमान का कोई नेक अ़मल तुम्हें पसन्द आये तो कहो 'किये जाओ' अल्लाह तुम्हारे अ़मल को देख रहा है, और उसका रसूल और मोमिन लोग भी इससे वाकिफ़ हो रहे हैं। इसी क़िस्म की एक और हदीस में है, इमाम अहमद ने कहा कि हज़रत अनस रज़ि. की सनद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- किसी के अच्छे अ़मल को देखकर ख़ुश न हो जाओ, इन्तिज़ार करो कि उसका ख़ात्मा भी उस नेक अ़मल पर होता है या नहीं। इसलिये कि इनसान एक ज़माने तक नेक अ़मल करता रहता है और वह उस नेक अ़मल पर मर जाये तो जन्नत में दाख़िल हो जाये, लेकिन अचानक उसके हालात बदल जाते हैं और वह बुरे आमाल करने लगता है। और एक ऐसा बन्दा होता है कि एक ज़माने तक बुरे आमाल करता रहता है अगर उसी पर मर जाये तो दोज़ख़ में चला जाये लेकिन अचानक तक़दीर का लिखा हुआ सामने आता है और वह नेक अ़मल करने लगता है। अल्लाह जब अपने किसी बन्दे के साथ ख़ैर का इरादा फ़रमाये तो मौत से पहले उसको नेकी की तौफ़ीक़ दे देता है और वह नेकी पर मरता है। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! यह कैसे होता है? फ़रमाया कि रूह क़ब्ज़ होने के वक़्त वह नेक अ़मल के साथ (यानी अच्छे अ़मल करने वाला) होता है।

और कुछ और लोग हैं जिनका मामला ख़ुदा का हुक्म आने तक मुल्तवी 'यानी स्थगित' है कि उनको सज़ा देगा या उनकी तौबा क़बूल कर लेगा, और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। (106)	وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

इन्तिज़ार

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि., मुजाहिद, इक्रिमा और ज़ह्हाक रह. वग़ैरह ने कहा है कि ये तीन शख़्स थे जिनकी तौबा की क़बूलियत बाक़ी रह गई थी और वे मुरारा बिन रबीअ़, कअ़ब बिन मालिक और हिलाल बिन उमैया थे। तबूक की लड़ाई में ये भी उन लोगों के साथ रुके रह गये थे जिन्होंने जंग में शिर्कत नहीं की थी, जिसका कारण सुस्ती और आराम-तलबी था। और इस सबब से कि उनके बाग़ात में फल पकने का मौसम था, खेती तैयार खड़ी थी, साये और बहार के लुत्फ़ उठाने का ज़माना था। जंग से यह कोताही शक और मुनाफ़क़त की बिना पर नहीं थी, चुनाँचे उनमें चन्द लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने को सुतूनों से बाँध रखा था जैसे कि अबू लुबाबा और उनके साथी। दूसरे चन्द लोगों ने ऐसा न किया और यह ऊपर ज़िक्र हुए तीन शख़्स थे, अबू लुबाबा और उनके साथियों की तौबा तो इन लोगों से पहले ही क़बूल हो चुकी थी और इन लोगों की तौबा की क़बूलियत अधर में पड़ गई थी (यानी इनसे मुसलमानों ने ताल्लुक़ तोड़ लिया था जब तक कि इनके बारे में अल्लाह का कोई फ़ैसला न आ जाये) यहाँ तक कि यह आयत नाज़िल हुई:

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ..... الخ

और

وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ..... الخ

यानी अल्लाह ने नबी और मुहाजिरीन व अन्सार की तौबा क़बूल कर ली.... (आख़िर आयत तक)। और उन तीन शख़्सों की तौबा भी क़बूल कर ली जो जंग से पीछे रह गये थे यहाँ तक कि इतनी बड़ी दुनिया भी उन पर बेहद तंग हो गई थी और कहीं उन्हें पनाह नहीं मिल सकती थी, जैसा कि कअ़ब बिन मालिक की हदीस में इसका बयान आने वाला है। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ.

यानी वे अल्लाह की माफ़ी के तहत हैं, अगर वह चाहे तो उनसे ऐसा बर्ताव करे और अगर चाहे तो वैसा। लेकिन अल्लाह की रहमत तो उसके ग़ज़ब पर सब्क़त रखती है, और अल्लाह तो माफ़ी व मग़फ़िरत के हक़दार को जानता है कि कौन माफ़ी का मुस्तहिक़ है और वह अपने क़ौल व अ़मल में हकीम है, उसके सिवा कोई ख़ुदा और कोई रब नहीं।

और (बाज़े ऐसे हैं कि) जिन्होंने (इन ग़रज़ों के लिए) मस्जिद बनाई है कि (इस्लाम को) नुक़सान पहुँचाएँ और (उसमें बैठ-बैठकर)	وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ

حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ○ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ○	कुफ़्र की बातें करें, और ईमान वालों में फूट डालें, और उस शख़्स के ठहरने का सामान करें जो पहले से ही ख़ुदा और रसूल का मुख़ालिफ़ है। और क़समें खा जाएँगे कि सिवाय भलाई के हमारी और कुछ नीयत नहीं, और अल्लाह गवाह है कि वे बिल्कुल झूठे हैं। (107) आप उसमें कभी (नमाज़ के लिए) खड़े न हों, अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अव्वल दिन से तक़्वे पर रखी गई है। (मुराद मस्जिदे क़ुबा है) वह (वाक़ई) इस लायक़ है कि आप उसमें (नमाज़ के लिए) खड़े हों। उसमें ऐसे आदमी हैं कि वे ख़ूब पाक होने को पसन्द करते हैं, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब पाक होने वालों को पसन्द करता है। (108)

मस्जिदे ज़िरार का वाक़िआ

इन आयतों का सबबे नुज़ूल यह है कि रसूलुल्लाह सल्ल. के मदीना तशरीफ़ लाने से पहले मदीने में क़बीला-ए-ख़ज़रज का एक आदमी रहता था, जिसका नाम अबू आ़मिर राहिब था। यह जाहिलीयत (इस्लाम ज़ाहिर होने से पहले ज़माने) में ईसाई हो गया था और अहले किताब का इल्म हासिल कर चुका था। यह एक इबादत करने वाला शख़्स था, अपने क़बीले में इसको बड़ी शोहरत हासिल थी। जब नबी सल्ल. हिजरत फ़रमाकर मदीना तशरीफ़ लाये और मुसलमानों का आपके पास इज्तिमा (जमावड़ा) होने लगा, इस्लाम का बोल-बाला हो गया और बदर की लड़ाई में भी अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को ग़ालिब रखा तो अबू आ़मिर पर यह बात बहुत भारी गुज़री, खुल्लम-खुल्ला दुश्मनी ज़ाहिर करने लगा और मदीने से भागकर मक्का के काफ़िरों और मुश्रिकों से जा मिला और उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल. से जंग करने पर उभारा करता था। अब अ़रब के सारे क़बीले इकट्ठे हो गये और जंगे उहुद के लिये आगे बढ़े, परिणाम स्वरूप मुसलमानों को जो नुक़सान पहुँचा, अल्लाह तआ़ला ने इस जंग में मुसलमानों का इम्तिहान लिया, दुनिया न सही लेकिन आ़क़िबत (आख़िरत) तो परहेज़गारों के लिये ही है। उस फ़ासिक़ ने दोनों तरफ़ की सफ़ों के दरमियान कई गड्ढे खोद रखे थे, उनमें से एक में रसूलुल्लाह सल्ल. गिर पड़े और आपको उससे तकलीफ़ पहुँची, चेहरा ज़ख़्मी हो गया, नीचे की तरफ़ से सामने के चार दाँत टूट गये, नबी करीम सल्ल. का सर भी ज़ख़्मी हो गया।

अबू आ़मिर ने जंग के शुरू में अपनी क़ौम अन्सार की तरफ़ बढ़कर उन्हें मुख़ातब किया और उन्हें अपनी मदद और अपनी मुवाफ़क़त की दावत दी। जब अन्सार ने अबू आ़मिर की यह हरकत देखी तो कहने लगे कि ऐ बदकार! ऐ अल्लाह के दुश्मन! ख़ुदा तुझे बरबाद करे, उसको बुरा-भला कहा और ज़लील किया। अब वह यह कहता हुआ वापस हो गया कि मेरे बाद मेरी क़ौम तो और बिगड़ गई।

नबी सल्ल. ने उसके फ़रार होने से पहले उसको इस्लाम की दावत दी थी और क़ुरआन उसे सुनाया था, लेकिन इस्लाम लाने से उसने इनकार किया और सरकशी इख़्तियार की तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने उसके हक़ में बद्दुआ की, कि कमबख़्त जिला-वतनी और परदेस की मौत मर जाये, चुनाँचे यह बद्दुआ इस तरह ज़ाहिर हुई कि लोग जब जंगे-उहुद से फ़ारिग़ हुए और उसने देखा कि नबी सल्ल. का तो बोल-बाला हो रहा है, इस्लाम बढ़ता जा रहा है तो वह मुल्के रोम हिरक़्ल के पास गया, उससे नबी सल्ल. के ख़िलाफ़ मदद माँगी। उसने वादा किया, उसने अपनी उम्मीदें कामयाब होती देखीं तो हिरक़्ल के पास ठहर गया और अपनी क़ौम अन्सार में से उन लोगों को मक्का भेजा जो मुनाफ़िक़ थे कि मैं लश्कर लेकर आ रहा हूँ मुहम्मद से ख़ूब जंग होगी। उन पर ग़ालिब आ जाऊँगा और उन्हें अपने इस्लाम से पहले की हालत पर आना पड़ेगा और उन मुनाफ़िक़ों को हुक्म भेजा कि उसके लिये पनाह की जगह बनाये रखो और मेरे अहकाम और पत्र व पैग़ाम जो लेकर आया करें उनके लिये ठहरने और अमन की जगह और व्यवस्था बनाये रखो, ताकि जब वह ख़ुद आये तो उसके लिये ठिकाने और पनाह-गाह का काम दे। चुनाँचे उन मुनाफ़िक़ों ने मस्जिदे क़ुबा के क़रीब ही एक और मस्जिद बना डाली, उसकी तामीर कर दी, उसको पुख़्ता कर दिया और रसूलुल्लाह सल्ल. के तबूक के लिये निकलने से पहले इस काम से फ़ारिग़ भी हो गये और रसूलुल्लाह सल्ल. के पास यह दरख़्वास्त लेकर आये कि आप हमारे पास आईये, हमारी मस्जिद में नमाज़ पढ़िये ताकि इस बात की सनद हो सके कि यह मस्जिद अपनी जगह बाक़ी व क़ायम रहने के क़ाबिल है, और आपके सामने यह बयान किया कि ज़ईफ़ों और कमज़ोरों की ख़ातिर यह मस्जिद बनाई गई है, और सर्दी की रातों में जो बीमार लोग दूर की मस्जिद में नहीं जा सकते उनके लिये आसानी की ग़र्ज़ से है। लेकिन अल्लाह तआ़ला तो अपने नबी सल्ल. को उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बचाना चाहता था, चुनाँचे आपने फ़रमाया कि हमें इस वक़्त सफ़र दरपेश है, जब हम वापस होंगे और ख़ुदा ने चाहा तो देखा जायेगा।

जब नबी सल्ल. जंगे तबूक से फ़ारिग़ होकर मदीने की तरफ़ वापस हुए और मदीने की दूरी जब एक दिन या इससे कुछ कम रह गई तो जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मस्जिदे ज़िरार की ख़बर लिये हुए आ पहुँचे और मुनाफ़िक़ों के इस राज़ को ज़ाहिर कर दिया कि मस्जिदे क़ुबा के क़रीब एक और मस्जिद बनाने से मुसलमानों की जमाअ़त में तफ़रीक़ (फूट) पैदा करने का मक़सद उन काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों ने पेशे नज़र रखा है। वह मस्जिदे क़ुबा है जिसकी बुनियाद पहले दिन से तक़वे पर उठाई गई है।

इसके बाद नबी सल्ल. ने अपने मदीने पहुँचने से पहले ही चन्द लोगों को मस्जिदे ज़िरार की तरफ़ भेज दिया कि उसको गिरा और ढहा दिया जाये जैसा कि अ़ली बिन अबी तल्हा ने इस आयत की तफ़सीर में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत करते हुए कहा है कि वे अन्सार के लोग थे जिन्होंने एक मस्जिद बनाई थी और अबू आ़मिर ने उनसे कहा कि तुम एक मस्जिद बनाओ और जिस क़द्र भी तुमसे मुम्किन हो उसमें हथियार और जंग का सामान छुपाये रखो और उसको अपनी पनाह की जगह बना लो, क्योंकि मैं रोम के बादशाह की तरफ़ जा रहा हूँ रोम से लश्कर लेकर आऊँगा और मुहम्मद और उनके साथियों को मदीना से निकाल दूँगा। चुनाँचे ये मुनाफ़िक़ लोग जब मस्जिदे ज़िरार बनाकर फ़ारिग़ हो गये तो नबी सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दरख़्वास्त की- हम यह दिली ख़्वाहिश रखते हैं कि एक बार आप उस मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ लें और उसमें हमारे लिये बरकत की दुआ़ करें, तो अल्लाह तआ़ला ने यह 'वही' नाज़िल फ़रमा दी कि:

Maktab E Ashraf

لَاتَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ....وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ.

यानी हरगिज़ उसमें नमाज़ न पढ़ना, यक़ीनन वह मस्जिद जिसकी बुनियाद पहले दिन से तक़वे (परहेज़गारी और नेकी) पर रखी गई है ज़्यादा हक़दार है इस बात की कि तुम उसी में नमाज़ पढ़ो। उसमें ऐसे पाकीज़ा लोग हैं जो यह चाहते हैं कि पाक दिल रहें और अल्लाह तआ़ला ऐसे ही पाकीज़ा दिलों को पसन्द करता है।

सईद बिन जुबैर रज़ि. ने भी सनद के साथ यही रिवायत की है और मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने भी सनद के साथ यही रिवायत की है कि नबी सल्ल. तबूक की लड़ाई से वापस हुए और मक़ामे ज़ी-रवान में उतरे। मदीना यहाँ से चन्द घन्टों की दूरी पर है, अब मस्जिदे ज़िरार वाले आपके पास आये, उस वक़्त आप तबूक की तरफ़ जाने की तैयारी में मसरूफ़ थे और कहा या रसूलल्लाह! हमने बीमारों, हाजतमन्दों और बारिश और सर्दी की रातों में आने वाली मुसलमानों की जमाअ़त की ख़ातिर एक मस्जिद बनाई है। हम चाहते हैं कि आप उसमें तशरीफ़ लायें और हमें उसमें नमाज़ पढ़ायें। आपने फ़रमाया इस वक़्त तो सफ़र सामने है और मैं बहुत मसरूफ़ (व्यस्त) हूँ। या रसूलुल्लाह सल्ल. ने यूँ फ़रमाया कि अगर हम वापस आये तो इन्शा-अल्लाह हम तुम्हारे पास आयेंगे और तुम्हें नमाज़ पढ़ायेंगे। चुनाँचे जब आप ज़ी-रवान में उतरे तो उस मस्जिदे ज़िरार की ख़बर अल्लाह की तरफ़ से आपको मिल गई। आपने बनी सालिम के भाई मालिक बिन दख़्शम और मअ़न बिन अ़दी या उसके भाई आ़मिर बिन अ़दी दोनों को बुलाया और फ़रमाया कि तुम दोनों इन ज़ालिमों की मस्जिद की तरफ़ जाओ और उसको गिरा दो और जला डालो। ये दोनों फ़ौरन गये और बनी सालिम बिन औ़फ़ के पास आये, यह मालिक बिन दख़्शम के क़बीले के लोग थे, अब मालिक ने मअ़न से कहा ठहरो मैं अपने लोगों में से किसी के पास से आग ले आता हूँ। मालिक अपने लोगों में आये, दरख़्त की एक बड़ी सी लकड़ी ली, उसको सुलगाया और फ़ौरन निकल खड़े हुए। अब ये दोनों मस्जिद पहुँचे, मस्जिद में ये कुफ़्फ़ार मौजूद थे, इन दोनों ने मस्जिद को जला दिया और उसको गिरा दिया। लोग वहाँ से भाग खड़े हुए और क़ुरआन की यह आयत उन मुनाफ़िक़ों के बारे में नाज़िल हुईः

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا...... الخ

ये लोग जिन्होंने यह मस्जिद बनाई बारह अफ़राद थे 'हिज़ाम बिन ख़ालिद' इसी के घर से मस्जिदे शिक़ाक़ की राह निकलती है, 'सालबा बिन हातिब', बनी उमैया के ख़ादिम और 'मअ़तब् बिन क़ुशैर', 'अबू हबीबा बिन अज़्अ़र' और अबू लुबाबा के क़बीले के ख़ादिम। वे लोग जिन्होंने उसको बनाया वे क़समें खाकर कह रहे थे कि हमने तो नेक इरादे से इसकी बुनियाद डाली है, हमारे पेशे-नज़र तो सिर्फ़ लोगों की ख़ैरख़्वाही (हमदर्दी) थी, लेकिन अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ.

अल्लाह गवाही देता है कि ये लोग झूठ बोलते हैं।

यानी जो इन्होंने इरादा किया और नीयत कर रखी है उसमें ये झूठे हैं। महज़ इस मक़सद से मस्जिद बनाई है कि मस्जिदे क़ुबा को नुक़सान पहुँचायें और कुफ़्र की इशाअ़त (प्रचार) करें। मुसलमानों में फूट डाल दें, ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल से लड़ने की ख़ातिर एक अड्डा बनाये रखें, जहाँ इनके मश्विरे हुआ करें। वह शख़्स है अबू आ़मिर वह फ़ासिक़ जिसको राहिब (नेक आदमी) समझा जाता है, ख़ुदा उस पर लानत करे।

अल्लाह तआला का कौल है 'ला तक़ुम फ़ीहि अ-बदन्'। नबी सल्ल. को उसमें नमाज़ पढ़ने से मनाही फ़रमा दी। नमाज़ न पढ़ने में उनके ताबे उनकी उम्मत भी है, चुनाँचे मुसलमानों को भी ताकीद है कि कभी उसमें नमाज़ न पढ़ें। फिर मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने की तरग़ीब दी कि मस्जिदे क़ुबा की बुनियाद शुरू ही से तक़वे पर डाली गई है, तक़वा अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त व फ़रमाँरदारी को कहते हैं। यहाँ मुसलमान मिल बैठते हैं, दीनी मश्विरे करते हैं और यह इस्लाम और मुसलमानों की पनाह की जगह है, और इसी लिये अल्लाह तआला फ़रमाता है:

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ.

यानी जिस मस्जिद की बुनियाद पहले दिन से परहेज़गारी पर रखी गयी है वह वाक़ई इस लायक़ है कि आप उसमें नमाज़ के लिये खड़े हों।

और आयत का मज़मून मस्जिदे क़ुबा से मुताल्लिक़ है। इसी लिये सही हदीस में है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया कि मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ना एक उमरे के सवाब के बराबर है। सही हदीस में है कि नबी सल्ल. मस्जिदे क़ुबा की तरफ़ कभी सवार होकर तशरीफ़ लाते थे और कभी पैदल। रसूलुल्लाह सल्ल. ने जब उसे बनाया तो आपका सबसे पहले तशरीफ़ लाना बनी अ़मर बिन औ़फ़ के पास था, और क़िब्ले का रुख़ जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने मुक़र्रर किया था। वल्लाहु आलम

अबू दाऊद में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की सनद से रिवायत की है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया- यह आयत क़ुबा वालों के बारे में नाज़िल हुई है:

فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا......

कि उसमें ऐसे आदमी हैं जो ख़ूब पाक होने को पसन्द करते हैं।

आपने फ़रमाया कि वे पानी से तहारत करते थे, चुनाँचे उनकी तारीफ़ में यह आयत उतरी है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि जब उपरोक्त आयत उतरी तो आप उवैम बिन सअ़दा के पास पहुँचे और पूछा कि तुम्हारी वह कौनसी तहारत (पाकी) है कि अल्लाह ने तुम्हारी तारीफ़ की है? तो अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह! हम में से जब कोई मर्द या औ़रत हाजत (पाख़ाने की ज़रूरत) से फ़ारिग़ होता है तो पानी से ख़ूब अच्छी तरह इस्तिन्जा पाक करता है और इस्तिन्जे की जगह को अच्छी तरह धो लेता है, तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि हाँ यही बात है।

इमाम अहमद रह. ने बयान किया है कि नबी सल्ल. मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ लाये और कहा कि नमाज़ के लिये तुम्हारी तहारत की अल्लाह पाक ने बड़े अच्छे अलफ़ाज़ में तारीफ़ की है, सो वह तुम्हारी कौनसी तहारत (पाकी) है? उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! हमको तो इसके सिवा कोई इल्म नहीं कि यहूदी हमारे पड़ोसी हैं और वे हाजत (शौच) से फ़ारिग़ होने के बाद पानी से धोते हैं, चुनाँचे हमने भी यही तरीक़ा इख़्तियार कर रखा है। इब्ने ख़ुज़ैमा ने अपनी हदीस की किताब में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने उवैम बिन सअ़दा से पूछा कि तुम्हारी किस तहारत की तारीफ़ अल्लाह पाक ने की है? कहा कि हम तहारत करने में पानी इस्तेमाल करते हैं। इब्ने जरीर ने कहा कि यह आयत:

فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ.

जो उतरी है वह हाजत के बाद पानी से धोने वालों की शान में है।

इमाम अहमद बिन हम्बल रह. (सनद के साथ) रिवायत करते हैं कि नबी सल्ल. मस्जिदे क़ुबा में आये और कहा कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी तहारत की बहुत तारीफ़ की है, वह क्या है? कहा या रसूलल्लाह! हमने तो आयत में पानी से तहारत के अहकाम पाये हैं (इसमें एक रावी अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम थे जो अहले तौरात थे)। हदीसे सही में है कि मदीने के अन्दर जो मस्जिदे नबवी है यही वह मस्जिद है जिसके लिये कहा गया कि तक़्वे (परहेज़गारी) पर इसकी बुनियाद उठी हुई है, और यही सही बात है। इस आयत और उस आयत में कोई मुनाफ़ात (टकराव) नहीं, क्योंकि जब क़ुबा की बुनियाद पहले दिन से तक़्वे पर है तो मस्जिदे नबवी को यह ख़ुसूसियत और भी ज़्यादा हासिल होनी चाहिये, इसी लिये इमाम अहमद बिन हम्बल रह. ने अपनी मुस्नद में बयान किया है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया- जो मस्जिद तक़्वे की बुनियाद रखती है वह मेरी यह मस्जिद है।

इमाम अहमद रह. ने फिर (सनद के साथ) रिवायत की है कि नबी सल्ल. के ज़माने में दो आदमियों ने इस बारे में इख़्तिलाफ़ (झगड़ा) किया कि इस ख़ुसूसियत की मालिक मस्जिद कौनसी है? तो एक ने कहा कि वह मस्जिदे नबवी है और दूसरे ने कहा कि वह मस्जिदे क़ुबा है। ये दोनों नबी सल्ल. के पास आये और आपसे तहक़ीक़ की तो आपने फ़रमाया कि इससे यही मेरी मस्जिद मुराद है।

इमाम अहमद रह. ने फिर (सनद के साथ) रिवायत की कि दो आदमी इस ख़ुसूसियत वाली मस्जिद के बारे में मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) राय रखते थे, एक मस्जिदे क़ुबा को और दूसरा मस्जिदे नबवी को बता रहा था तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि मस्जिदे तक़्वा यह मेरी मस्जिद है। फिर इसके बाद कई हदीसें इसी मज़मून की वारिद हैं। चुनाँचे हमीद ख़र्रात मदनी ने अबू सलमा से पूछा कि तुमने अपने बाप से मस्जिदे तक़्वा के बारे में क्या सुना? कहा कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और पूछा या नबी! मस्जिदे तक़्वा कौनसी है? आपने मुट्ठी भर कंकरियाँ ज़मीन से उठाईं और उन्हें ज़मीन पर मारकर कहा कि वह यही मस्जिद है, उस वक़्त आप मस्जिद के सेहन के सामने अपनी पाक बीवियों में से किसी के हुजरे में तशरीफ़ रखते थे। फिर वह कहते हैं (इसको मुस्लिम ने हमीद ख़र्रात की सनद से रिवायत किया है) कि पहले और बाद के उलेमा व बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त इसी बात की क़ायल है कि वह मस्जिदे नबवी है और उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. और अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से भी यही रिवायत है और 'ल-मस्जिदुन् उस्सि-स अ़लत्तक़्वा' वाली आयत इस बात की दलील है कि पुरानी मस्जिदों में जिनकी पहली बुनियाद अल्लाह की इबादत पर उठाई गई है, नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है, और इस मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) होने की भी दलील है कि अल्लाह के इबादत करने वाले बन्दों और नेक लोगों की जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ी जाये और वुज़ू बाक़ायदा तौर पर मुकम्मल किया जाये और नमाज़ में मैले या गन्दे कपड़ों से बिल्कुल पाक रहें।

इमाम अहमद रह. ने (सनद के साथ) रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने सुबह की नमाज़ पढ़ाई और उसमें सूरः रूम पढ़ी। पढ़ने में आपको कुछ शक सा हो गया, आप जब वापस हुए तो फ़रमाया क़ुरआन पढ़ने में कुछ गड़बड़ हो जाती है, देखो तुम में बाज़ लोग ऐसे हैं जो हमारे साथ नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन वुज़ू अच्छी तरह नहीं करते, पस जो हमारे साथ नमाज़ पढ़ना चाहे उसको चाहिये कि वुज़ू कामिल किया करे, वुज़ू में कोई ख़राबी न होने पाये। ज़ुलकला से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्ल. के साथ नमाज़ पढ़ी तो आपने यह हिदायत फ़रमाई थी। यह चीज़ इस बात पर दलालत करती है कि तहारत और पाकी को अच्छी तरह हासिल करना इबादत की अदायेगी में आसानी पैदा करता है, और इबादत के पूरा और मुकम्मल करने में मददगार साबित होता है। अबुल-आ़लिया ने अल्लाह के क़ौल 'वल्लाहु युहिब्बुल-

मुत्तह्हिरीन' के बारे में कहा कि पानी से तहारत करना बेशक बहुत अच्छी बात है लेकिन जिनकी तहारत की ख़ुदा तआ़ला तारीफ़ फ़रमा रहा है वे गुनाहों से अपने को पाक रखने वाले लोग हैं।

इमाम आमश कहते हैं कि इस तहारत (पाकी) से मुराद गुनाहों से तौबा और शिर्क से पाकीज़गी है। हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने क़ुबा वालों से कहा कि अल्लाह ने जो तुम्हारी तहारत की तारीफ़ की है वह कैसी तहारत है? कहा कि हम पानी से इस्तिन्जा करते हैं। हाफ़िज़ अबू बक्र बज़्ज़ार ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास की सनद से रिवायत की है कि यह आयत क़ुबा वालों के बारे में उतरी है, और जब आपने उनसे सवाल किया था तो कहा था कि हम पहले ढेले लेते हैं फिर पानी से धोते हैं, इसको बज़्ज़ार ने रिवायत किया है। इसको सिर्फ़ मुहम्मद बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ ने और उनसे उनके बेटे ने रिवायत की है, मैंने यहाँ यह वज़ाहत इसलिये कर दी कि यह चीज़ अगरचे फ़ुक़हा में मशहूर है लेकिन अक्सर बाद के मुहद्दिसीन इसको मारूफ़ तस्लीम नहीं करते। वल्लाहु आलम

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى
شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ لَا
يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ
اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۝ ع ١٣ ٢

फिर क्या ऐसा शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत (यानी मस्जिद) की बुनियाद अल्लाह तआ़ला से डरने पर और उसकी रिज़ा पर रखी हो, या वह शख़्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी घाटी (यानी गुफा) के किनारे पर रखी हो जो कि गिरने ही को हो, फिर वह (इमारत) उस (बनाने वाले) को लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़े, और अल्लाह तआ़ला ऐसे ज़ालिमों को (दीन की) समझ नहीं देता। (109) उनकी (यह) इमारत जो उन्होंने बनाई है (हमेशा) उनके दिलों में (काँटा-सा) खटकती रहेगी, (हाँ) मगर उनके (वे) दिल ही (अगर) फ़ना हो जाएँ तो ख़ैर, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (110)

बहुत बड़ा फ़र्क़ है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि वे लोग जिन्होंने मस्जिद की बुनियाद तक़्वे और रज़ा-ए-इलाही पर रखी है, और वे लोग जिन्होंने मस्जिदे ज़िरार और मस्जिदे कुफ़्र बनाई और मोमिनों में फूट और बिखराव पैदा करने की कोशिश की, और ख़ुदा व उसके रसूल से लड़ने के लिये उसको पनाह की जगह क़रार दिया, क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? उन लोगों ने तो इस मस्जिदे ज़िरार की बुनियाद गोया एक गड्ढे के ढलते हुए किनारे पर रखी जो उसे जहन्नम की आग में ले गिरी, और हदों से आगे बढ़ने वालों को अल्लाह तआ़ला हिदायत नहीं फ़रमाता है, यानी ख़राबी और बिगाड़ पैदा करने वालों के अ़मल को सुधार के लायक़ नहीं बनाता। जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. कहते हैं कि मस्जिदे ज़िरार को मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. के फ़रमान के मुताबिक़ जब उसमें आग लगा दी गई तो उसमें धुआँ निकल रहा था। इब्ने जुरैज कहते हैं कि

Maktab E Ashraf

हमें मालूम हुआ कि बाज़ लोगों ने एक जगह गड्ढ़ा खोदा तो उसमें से धुआँ निकलता हुआ पाया। क़तादा रह. ने भी इसी तरह कहा है। ख़लफ़ बिन यासीन कूफ़ी कहते हैं कि मैंने मुनाफ़िक़ों की उस मस्जिद को देखा जिसका ज़िक्र अल्लाह पाक ने क़ुरआन में फ़रमाया है, यह देखा कि उसमें एक सुराख़ है जिसमें से धुआँ निकल रहा है और आज के दिन वह जगह गन्दगी फेंकने की जगह बनी हुई है। इब्ने जरीर रह. ने इसको रिवायत किया। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ

यानी उनकी बनाई हुई यह इमारत तो हमेशा उनके दिलों में शक व शुब्हे का कारण ही रहेगी, और इस बुरे अ़मल का क़दम उठाने और शुरूआ़त करने की वजह से उनके दिलों में निफ़ाक़ का बीज बोती रहेगी। जैसा कि गौसाला परस्तों (बछड़े को पूजने वालों) के दिल में गौसाले की मुहब्बत पड़ी हुई थी। हाँ मगर उस सूरत में उन मुनाफ़िक़ों की जड़ कट सकती है जबकि इस मस्जिद को ही ख़त्म करके उनके दिलों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें। अल्लाह अपने बन्दों के आमाल को ख़ूब जानता है और ख़ैर व शर (भलाई व बुराई) का बदला देने में बड़ा हकीम है।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ○

बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों से उनकी जानों और उनके मालों को इस बात के बदले ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी। वे लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, (जिसमें) क़त्ल करते हैं और क़त्ल किए जाते हैं, इस पर सच्चा वायदा (किया गया) है तौरात में (भी) और इन्जील में (भी) और क़ुरआन में (भी) और (यह मुसल्लम है कि) अल्लाह से ज़्यादा अपने अ़हद को कौन पूरा करने वाला है। तो तुम लोग अपने इस बेचने पर जिसका तुमने उस से (यानी अल्लाह पाक से) मामला ठहराया है ख़ुशी मनाओ और यह बड़ी कामयाबी है। (111)

बदला और वह भी जन्नतुल-फ़िरदौस

इस आयत के ज़रिये अल्लाह तआ़ला ख़बर दे रहा है कि उसने अपने मोमिन बन्दों की जानों और मालों के बदले में जिनको उन्होंने ख़ुदा की राह में ख़र्च कर दिया है, जन्नत का मुआ़वज़ा (बदला) दे दिया है, और यह मुआ़वज़ा मुआ़वज़ा नहीं बल्कि उसका फ़ज़्ल व करम और एहसान है। क्योंकि बन्दों की क़ुदरत में जो कुछ था वह उन्होंने किया, अब अपने फ़रमाँबरदार बन्दों के लिये ख़ुदा पाक भी कोई मुआ़वज़ा दे तो जन्नत ही देगा। इसी लिये हसन बसरी और क़तादा रह. ने कहा है कि जब अल्लाह तआ़ला ने उनसे ख़रीद व फ़रोख़्त की तो उनकी ख़िदमत की बड़ी ही ज़बरदस्त क़ीमत दी है, और शमुर बिन अ़तिया ने क[illegible]

कि कोई ऐसा मुसलमान नहीं जिसकी गर्दन में ख़ुदा का अ़हद व पैमान न हो, जिस पर उसकी मौत आई हुई हो और उसका पाबन्द होते हुए उसने जान दी हो, फिर उपरोक्त आयत तिलावत की। इसी लिये कहा जाता है कि जो ख़ुदा की राह में जिहाद की ख़ातिर निकल खड़ा हो गोया उसने अल्लाह से सौदा कर लिया और अल्लाह ने भी उसके साथ यह मामला क़बूल फ़रमा लिया और इसको पूरा फ़रमा दिया।

मुहम्मद बिन कअ़ब क़रज़ी वग़ैरह कहते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. ने अ़क़बा वाली रात में बैअ़त के वक़्त कहा कि या रसूलल्लाह! आप ख़ुदा के लिये और ख़ुद अपने लिये भी जो शर्त चाहें हमसे मनवा सकते हैं। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि-

"ख़ुदा से मुताल्लिक़ तो मैं तुमसे यह शर्त लेता हूँ कि उसके सच्चे बन्दे बने रहो, उसकी इबादत किया करो और किसी को उसका शरीक न करो। और अपने मुताल्लिक़ तुम पर यह शर्त क़रार देता हूँ कि जिन बातों से तुम अपनी जानों और अपने मालों को बचाते हो मेरे भी इसी तरह ख़ैरख़्वाह (भला चाहने वाले) बने रहो।"

पूछा गया फिर हमें क्या मिलेगा? तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- इसका बदला है जन्नत। पूछने वालों ने कहा कि यह सौदा बड़े नफ़े का है, न हम अ़हद तोड़ेंगे न हमसे अ़हद तोड़ा जायेगा, तो यह आयत उतरीः

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ.

और अल्लाह तआ़ला का क़ौलः

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ.

यानी वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं, पस क़त्ल भी करते हैं और क़त्ल भी होते हैं, दोनों बातें बराबर की सवाब वाली हैं, चाहे वे क़त्ल करके ग़ाज़ी (मुजाहिद) बनें या शहीद हों, हर सूरत में जन्नत उनके लिये वाजिब है। इसी लिये बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में आया है कि जो ख़ुदा की राह में निकला और उस निकलने से उसकी ग़र्ज़ सिवाय इसके और कुछ न हो कि मेरी राह में जिहाद करे या मेरे रसूलों की तस्दीक़ करे, यहाँ तक कि उसे मौत आ जाये तो ख़ुदा इस बात का ज़िम्मेदार है कि उसको जन्नत में दाख़िल करे। और अगर न मरे तो ख़ुदा के ज़िम्मे है कि जहाँ से वह चला है उसे वहाँ पहुँचाये और अज्र (बदला) माले ग़नीमत के साथ कामयाबी को पहुँचाये।

आगे अल्लाह तआ़ला का क़ौल हैः

وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ.....

यह अपने अ़हद की ताकीद के तौर पर है। और यह बतलाया जा रहा है कि उसने अपनी ज़ाते पाक पर इस चीज़ को फ़र्ज़ कर लिया है और अपने रसूलों पर इस वादे की 'वही' भी भेज दी है जो मूसा अ़लैहिस्सलाम पर उतरी हुई तौरात में दर्ज है और ईसा अ़लैहिस्सलाम की इन्जील में भी है और नबी सल्ल. पर उतरे हुए क़ुरआन में भी लिखा हुआ है। इन सब पर अल्लाह तआ़ला की बेशुमार रहमतें नाज़िल हों।

आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ......

और अल्लाह से ज़्यादा अपने वादे को पूरा करने वाला और कौन हो सकता है? क्योंकि वह ख़िलाफ़े अ़हद कभी नहीं करता। जैसा कि एक दूसरी जगह फ़रमाता हैः

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا.

और

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا.

कि अल्लाह से ज़्यादा अपनी बात में सच्चा और कौन हो सकता है।

और इसी लिये इरशाद होता है कि ख़ुदा से तुमने जो सौदा किया है उस पर ख़ुश हो जाओ, और यह कामयाबी बड़ी ज़बरदस्त कामयाबी है, बशर्तेकि तुमने भी अपना अ़हद पूरा कर लिया हो।

वे ऐसे हैं जो (गुनाहों से) तौबा करने वाले हैं (और अल्लाह की) इबादत करने वाले (और) तारीफ़ करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकूअ़ करने वाले, (और) सज्दा करने वाले, नेक बातों की तालीम करने वाले, और बुरी बातों से रोकने वाले, और अल्लाह की हदों का (यानी उसके अहकाम का) ख़्याल रखने वाले (हैं), और ऐसे मोमिनीन कि (जिनमें जिहाद और ये सिफ़तें हैं) आप ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। (112)	اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ٥

तौबा, इबादत और अल्लाह की तारीफ़ व सना वग़ैरह

यह आयते पाक उन मोमिनों की तारीफ़ में है कि अल्लाह ने जिनकी जानें और जिनके माल उनकी इन उम्दा सिफ़ात के बदले में ख़रीद लिये हैं। वे तमाम गुनाहों और सारी गन्दगियों व बुराईयों से बाज़ रहते हैं और अपने रब की इबादत पर क़ायम हैं। अपने अक़वाल व अफ़आ़ल पर बहुत कड़ी नज़र (यानी निगरानी) रखते हैं। अक़वाल (ज़बान से कहने) में सबसे ख़ास चीज़ तो ख़ुदा की हम्द (तारीफ़ व प्रशंसा) है। इसी लिये फ़रमाया 'अल-हामिदून' (यानी अल्लाह की तारीफ़ बयान करने वाले) और अफ़आ़ल व आमाल के एतिबार से सबसे अफ़ज़ल अ़मल रोज़ा है, रोज़ा कहते हैं खाने पीने और सोहबत करने से बाज़ रहने को, और 'सियाहत' से यही रोज़ा मुराद है। इसी लिये फ़रमाया 'अस्साईहून' (रोज़ा रखने वाले) जैसा कि अल्लाह तआ़ला के क़ौल 'साईहात' में नबी सल्ल. की पाक बीवियों की तारीफ़ फ़रमाई गई और इस "साईहात" से मुराद "साईमात" (यानी रोज़ा रखने वालियाँ) हैं। इसी तरह रुकूअ़ व सुजूद से नमाज़ मुराद है, चुनाँचे कहा गया 'अर्राकिअ़ूनस्साजिदून' (यानी वे रुकूअ़ करने वाले और सज्दा करने वाले हैं), वे इबादतें करके अपना ही फ़ायदा देखते हैं बल्कि अल्लाह के दूसरे बन्दों को भी सही रास्ते की रहनुमाई करके, अच्छी बातों का हुक्म करके और बुरी बातों से रोक कर फ़ायदा पहुँचाते हैं, और बताते हैं कि कौनसा काम करना मुनासिब है और कौनसे कामों को छोड़ना ज़रूरी है, और इल्म व अ़मल दोनों से हलाल व हराम के बारे में ख़ुदा की हदों की हिफ़ाज़त पेशे नज़र रहती है। चुनाँचे वे बज़ाते ख़ुद अल्लाह की इबादत और मख़्लूक़ की हमदर्दी दोनों तरह की इबादत के झंडा उठाये हुए होते हैं, इसी लिये फ़रमाया कि मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दो क्योंकि ईमान इन दोनों बातों के जमा होने का नाम है और मुकम्मल नेकबख़्ती तो उसी को हासिल है

जो इन दोनों बातों को अपने अन्दर रखता हो।

Mahtab E Ashraf

'सियाहत' से क्या मुराद है?

हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. का ख़्याल है कि "साईहून" के मायने "साईमून" (रोज़ेदारों) हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में जहाँ कहीं 'सियाहत' का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है वहाँ 'सियाम' (रोज़ा रखना) ही मुराद है। ज़ह्हाक रह. भी यही कहते हैं। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि इस उम्मत की सियाहत है रमज़ान के रोज़े रखना। मुजाहिद, अ़ता, सईद, अ़ब्दुर्रहमान, ज़ह्हाक और सुफ़ियान बिन उयैना सब का यही ख़्याल है। 'साईहून' से मुराद रोज़ेदार हैं। हसन बसरी रह. कहते हैं कि साईहून से रमज़ान के रोज़ेदार मुराद हैं। अबू अ़मर अ़ब्दी भी यही कहते हैं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यही है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया- 'साईहून' रोज़ेदार लोगों को कहते हैं। यह हदीस मौक़ूफ़ ज़्यादा सही है। उबैद बिन उमैर कहते हैं कि सवाल करने पर नबी सल्ल. ने फ़रमाया- "साईमीन" (रोज़ेदारों) को कहते हैं। यह हदीस मुर्सल, उम्दा और तमाम अक़्वाल में ज़्यादा सही है। और यूँ भी कहा गया है कि सियाहत से जिहाद मुराद है। अबू दाऊद ने अपनी किताब सुन्नत में अबू उमामा की हदीस बयान की कि या रसूलल्लाह! मुझे सियाहत की इजाज़त दीजिये तो आपने फ़रमाया कि मेरी उम्मत की सियाहत अल्लाह के रास्ते में जिहाद है।

अ़म्मारा बिन ग़ज़िया से रिवायत है कि नबी सल्ल. के सामने सियाहत का ज़िक्र आया तो आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये अपने रास्ते में जिहाद को और बुलन्दियों पर तकबीर (अल्लाहु अकबर) बोलते हुए चढ़ने को सियाहत बनाया है। हज़रत इक्रिमा का ख़्याल है कि इससे इल्म के तलबा मुराद हैं और अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद ने कहा है कि मुहाजिर (अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने वाले) मुराद हैं, ये दोनों बातें इब्ने अबी हातिम से मन्क़ूल हैं।

यहाँ यह ख़्याल रहना ज़रूरी है कि यहाँ सियाहत से मुराद वह मफ़हूम नहीं है जो बाज़ आ़बिद व राहिब क़िस्म के लोग समझे हुए हैं कि इससे केवल दुनिया में इधर-उधर घूमते फिरते रहना मुराद है और वे लोग मुराद हैं जो पहाड़ों, गुफ़ाओं और जंगलों में फिरते रहते हैं, और बस्ती से भागते रहते हैं, इसलिये कि ऐसा करना शरीअ़त ने नहीं बताया है, हाँ जब फ़ितने का ज़माना हो और दीन पर जमे रहना मुश्किल हो जाये क़दम लड़खड़ाने लगें तो किसी एक कोने में पड़कर अपने दीन को बचाया जाये। यह हदीस सही बुख़ारी में अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जल्द ही वह ज़माना आने वाला है जबकि किसी का बेहतरीन माल उसकी बकरियाँ होंगी जिनको वह पहाड़ों में और बारिश होने वाले स्थानों में हाँकने के लिये फिरता होगा, और फ़ितनों (आज़माईशों और बेदीनी की फ़िज़ा) से बचने के लिये अपने दीन को लिये भागता होगा।

'अल्लाह की हदों का ख़्याल रखने वालों' से मुराद अल्लाह तआ़ला की इताअ़त पर क़ायम रहने वाले लोग हैं। और हसन बसरी रह. से रिवायत है कि अल्लाह के अहकाम और फ़राईज़ को अन्जाम देने वाले और अल्लाह के अहकाम पर क़ायम रहने वाले लोग मुराद हैं।

Maktab E Ashraf

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ
يَّسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي
قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ
أَصْحَٰبُ الْجَحِيمِ ○ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ
إِبْرَٰهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَا
إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ
مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ○

पैग़म्बर को और दूसरे मुसलमानों को जायज़ नहीं कि मुश्रिकों के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ माँगें, अगरचे वे रिश्तेदार ही (क्यों न) हों, इस (बात) के उन पर ज़ाहिर हो जाने के बाद कि ये लोग दोज़ख़ी हैं। (113) और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ माँगना, वह (भी) सिर्फ़ वायदे के सबब था, जो उन्होंने उससे वायदा कर लिया था। फिर जब उन पर यह बात ज़ाहिर हो गई कि वह ख़ुदा का दुश्मन है (यानी काफ़िर होकर मरा) तो वह उससे बिल्कुल बेताल्लुक़ हो गये, वाक़ई इब्राहीम बड़े रहम मिज़ाज वाले, तबीयत के हलीम थे। (114)

मुश्रिकों के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ क़तई नापसन्दीदा है

मुस्नद अहमद में इब्ने मुसैयब से रिवायत है कि अबू तालिब जब मौत के बिस्तर पर थे तो नबी सल्ल. तशरीफ़ लाये। उनके पास अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमैया बैठे हुए थे। आपने अबू तालिब से फ़रमाया कि चचा आप 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कह दीजिये, मैं इसी एक जुमले को हुज्जत बनाकर ख़ुदा के पास आपकी बख़्शिश के लिये जिद्दोजहद करूँगा, तो अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमैया ने कहा कि ऐ अबू तालिब! क्या तुम अ़ब्दुल-मुत्तलिब के तरीक़े से मुँह मोड़ लोगे? अबू तालिब ने कहा कि मैं वाक़ई अ़ब्दुल-मुत्तलिब के तरीक़े और दीन पर जान दूँगा। नबी सल्ल. ने फ़रमाया कि मैं उस वक़्त तक आपकी मग़फ़िरत की दुआ़ करता रहूँगा जब तक कि ख़ुदा मुझे मना न कर दे, चुनाँचे यह आयत नाज़िल हुईः

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا.....

(यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) यानी नबी और ईमान वालों को यह शोभा ही नहीं कि मुश्रिकों के लिये इस्तिग़फ़ार करें......। और यह आयत भी इसी से मुताल्लिक़ नाज़िल हुईः

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ........ الخ

यानी तुम जिसको दोस्त रखते हो उसको हिदायत नहीं कर सकते, अल्लाह जिसको चाहे हिदायत करे।

हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि मैंने एक आदमी को देखा कि वह अपने मुश्रिक माँ-बाप के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ कर रहा है, तो मैंने उससे कहा कि मुश्रिकों के लिये तुम इस्तिग़फ़ार कर रहे हो? उसने कहा- क्या इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने मुश्रिक बाप के लिये इस्तिग़फ़ार नहीं किया था? मैंने यह वाक़िआ़ नबी सल्ल. से ज़िक्र किया, चुनाँचे उपरोक्त आयत नाज़िल हुई।

मुस्नद अहमद में है, बरीदा ने रिवायत की कि हम नबी सल्ल. के साथ सफ़र में थे कि एक जगह

उतरे और हम तक़रीबन एक हज़ार सवार थे, आपने यहाँ दो रक्अतें पढ़ीं, फिर हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए तो हमने देखा कि आपकी आँखों से आँसू बह रहे हैं। उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. आपके पास आये और कहा या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान, आप क्यों रो रहे हैं? आपने फ़रमाया मैंने ख़ुदा से दरख़्वास्त की थी कि मेरी माँ के लिये इस्तिग़फ़ार की इजाज़त मुझे दे लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इजाज़त नहीं दी, तो आग के ख़ौफ़ से माँ पर मेरा दिल बड़ा दुखा और मेरी आँखें नम हो गईं। मैंने इससे पहले तुमको तीन बातों से मना किया था- क़ब्रों की ज़ियारत से, लेकिन अब क़ब्रों की ज़ियारत कर सकते हो, सिर्फ़ इस ग़र्ज़ से कि क़ब्रिस्तान जाने से तुम्हें अपनी मौत याद आ जाये, और तुम नेकियों की तरफ़ माईल होने लगो। मैंने क़ुरबानी का गोश्त तीन दिन से ज़्यादा उठा रखने पर मना किया था, अब चाहे जितना खाओ और जितना ज़ख़ीरा रखो, और बरतनों से पीने के बारे में मेरी मनाही थी अब चाहे जिस बरतन से पियो, लेकिन कोई नशे वाली चीज़ न पीना। बरीदा से रिवायत है कि नबी सल्ल. जब मक्का की तरफ़ आने लगे तो रास्ते में एक क़ब्र के पास बैठ गये और क़ब्र को ख़िताब फ़रमाने लगे, फिर रोते हुए उठ खड़े हुए तो हमने कहा या रसूलल्लाह! हमने आपकी मसरूफ़ियत देखी है, आप फ़रमाने लगे कि मैंने अपनी माँ की क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त अल्लाह से तलब की थी तो मुझे इजाज़त मिल गई। फिर मैंने अपनी वालिदा के लिये इस्तिग़फ़ार (यानी उनकी बख़्शिश की दुआ़) की इजाज़त चाही तो मुझे इजाज़त नहीं मिली, आप उस रोज़ इतना रोये कि कभी इतना नहीं रोये थे।

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि एक दिन नबी सल्ल. क़ब्रिस्तान की तरफ़ निकल खड़े हुए। हम भी आपके पीछे हो लिये, आप एक क़ब्र के पास बैठ गये फिर बहुत देर तक मुनाजात (अल्लाह से दुआ़) में मसरूफ़ रहे, फिर आप रोने लगे। आपको देखकर हम भी रोने लगे। अब उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. आपकी तरफ़ गये, आपने हज़रत उमर को और हमें बुलाया और पूछा तुम क्यों रोये? हमने कहा कि आपको रोते हुए देखकर हमें भी रोना आ गया। कहने लगे कि यह क़ब्र जहाँ मैं बैठा था आमना की क़ब्र है, मैंने इस क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त ख़ुदा से चाही थी तो मुझे इजाज़त दे दी गई। इस हदीस को एक दूसरी तरह भी बयान किया गया है, फिर इब्ने मसऊद रज़ि. की हदीस भी तक़रीबन यूँ ही है लेकिन उसमें यह भी है कि आमना के लिये दुआ़ की इजाज़त ख़ुदा से माँगी थी लेकिन इजाज़त नहीं मिली और ऊपर ज़िक्र हुई आयत नाज़िल हुई, यानीः

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا........

चुनाँचे अपने बाप के लिये एक औलाद का दिल जैसे दुख सकता है मेरा भी दिल दुखा, मैंने तुमको क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया था, अब ज़ियारत किया करो। यह चीज़ आख़िरत को याद दिलायेगी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. जब तबूक की लड़ाई से वापस हुए और उमरे की नीयत बाँधी और जब अ़स्फ़ान की घाटी से उतरे तो आपने सहाबा को हुक्म दिया कि तुम लोग अ़क़बा में आराम से बैठो मैं अभी वापस आता हूँ। आप गये, अपनी माँ की क़ब्र के पास ठहरे और ख़ुदा तआ़ला से बड़ी देर तक मुनाजात की, फिर आप रोने लगे और बहुत रोये, आपको देखकर और लोग भी रोने लगे और कहा यहाँ रसूले ख़ुदा को किस चीज़ ने रुलाया? क्या ऐसी कोई नई बात तो उम्मत में पैदा नहीं हो गई जिसको आप बरदाश्त नहीं कर सकते थे? आप यह देखकर उनकी तरफ़ आये और कहा तुम क्यों रोते हो? कहा या रसूलल्लाह! आपको रोता देखकर हम भी रो पड़े हैं, हमने ख़्याल किया कि उम्मत में कोई नया हादसा

Maktab E Ashraf

तो नहीं हो गया जिसको आप बरदाश्त नहीं कर सके? फ़रमाया नहीं! एक मामूली सी बात थी। वाक़िआ यह है कि मैं माँ की क़ब्र के पास ठहरा था और क़ियामत के रोज़ अल्लाह तआ़ला से उनकी शफ़ाअ़त के लिये इजाज़त चाही थी, सो अल्लाह ने इजाज़त देने से इनकार कर दिया, मुझ पर बहुत रिक़्क़त तारी हुई क्योंकि वह मेरी माँ थीं। फिर जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम नाज़िल हुए और कहा कि "इब्राहीम का अपने बाप के लिये इस्तिग़फ़ार करना सिर्फ़ इस बिना पर था कि बाप से उन्होंने वादा कर रखा था कि दुआ़ करूँगा, लेकिन जब अल्लाह के हुक्म के ज़रिये मालूम हो गया कि वह ख़ुदा का दुश्मन है तो फिर उससे किनारा इख़्तियार किया। पस ऐ नबी! आप भी अपनी माँ से इब्राहीम की तरह अलग हो जाईये। वह मेरी माँ थीं मेरा दिल कैसे न कुढ़ता, मैंने ख़ुदा से दुआ़ की थी कि मेरी उम्मत से चार चीज़ों का बोझ उठा ले, तो अल्लाह ने दो अ़ज़ाब उठा लिये और दो अ़ज़ाब बाक़ी रखे। मैंने दुआ़ की थी कि आसमान से संगबारी (पत्थरों का बरसना) मेरी उम्मत पर न हो, जैसे दूसरी उम्मतों पर हुई है, और अ़ज़ाब के तौर पर ज़मीन में वे न धंसा दिये जायें, और उनका तब्क़ा उलट न जाये, और यह कि उनमें फूट, गिरोह-बन्दी और फ़िर्क़ा-वारियत न हो और उनमें आपस में जंग न हो, तो अल्लाह पाक ने आसमान से संगबारी और ज़मीन में धंस जाने से मुताल्लिक़ तो दुआ़ क़बूल फ़रमा ली और जंग व फूट से मुताल्लिक़ दुआ़ क़बूल नहीं की।

आप रास्ता काटकर अपनी माँ की क़ब्र की तरफ़ गये थे, क्योंकि आमना एक टीले के नीचे दफ़न थीं। यह हदीस ग़रीब है, इसका मज़मून अ़जीब है और इससे भी ज़्यादा अ़जीब और क़ाबिले इनकार बात तो वह रिवायत है जो ख़तीब बग़दादी ने किताब 'अस्साबिक़ वल्लाहिक़' में मजहूल सनद के साथ बयान की है। और हज़रत आयशा रज़ि. से उसकी सनद जोड़ी है। यह कहानी यूँ है कि अल्लाह ने नबी करीम की माँ आमना को ज़िन्दा किया था, ज़िन्दा होकर वह ईमान ले आईं, फिर मर गईं। सुहैली ने भी 'अरौज़' में मजहूल लोगों की एक जमाअ़त से सनद लेते हुए कहा है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत सल्ल. के माँ-बाप को ज़िन्दा कर दिया था और वे ईमान ले आये थे। हाफ़िज़ बिन वहया कहते हैं कि यह हदीस झूठी है क़ुरआन और इजमा दोनों इसको रद्द करते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद क़ुरआन में फ़रमाया है:

وَالَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ.

न वे लोग बख़्शे जायेंगे जो कुफ़्र की हालत में मर गये।

अबू अ़ब्दुल्लाह क़ुर्तुबी कहते हैं कि इस हदीस के तक़ाज़े और मतलब पर ग़ौर करो और अबू अ़ब्दुल्लाह ने बड़ा तीर मारकर यह दलील पेश की है कि यह नई ज़िन्दगी बिल्कुल इस तरह हो सकती है जैसे अ़सर का वक़्त गुज़र जाने पर हुज़ूर सल्ल. के मोजिज़े से सूरज फिर डूबने के बाद निकल आया और आपने नमाज़े अ़सर पढ़ ली थी। इस इस्तिदलाल (दलील पकड़ने) के ज़रिये इब्ने वहया की तरदीद की है। इमाम तहावी कहते हैं कि सूरज वाली हदीस साबित है। क़ुर्तुबी कहते हैं कि हज़रत सल्ल. के वालिदैन (माँ-बाप) का ज़िन्दा हो जाना न तो अ़क़्ली तौर पर मुहाल और नामुम्किन और न शरई तौर पर, मैंने तो सुना है कि अल्लाह तआ़ला ने आपके चचा अबू तालिब को भी ज़िन्दा किया था और वह ईमान ले आये थे। मैं कहता हूँ कि यह सब हदीस के सही होने पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है, अगर हदीस सही है तो कोई रुकावट नहीं, और हदीस ही सही न हो तो कोई झगड़ा ही नहीं। वल्लाहु आलम

नोटः रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माँ-बाप के ईमान के बारे में उलेमा के दरमियान काफ़ी मतभेद हैं, इस विषय पर बहुत से हज़रात ने काफ़ी बड़े मज़ामीन भी लिखे हैं, लेकिन एक ईमान वाले के लिये इस सिलसिले में बेहतर और एहतियाती बात यह है कि अपनी ज़बान को ख़ामोश रखे और अपने दिल को इस तरह के वस्वसों से पाक रखे। अल्लाह सब कुछ जानने वाला है। वह अपने महबूब के दिल की हालत भी जानता है, वह उनके बारे में क्या फ़ैसला फ़रमायेगा वही जानता है। उसके हुक्म और इख़्तियार में किसी का दख़्ल नहीं। हमारे लिये ज़रूरी है कि उनका नाम और ज़िक्र अदब व सम्मान से करें। किसी मुसलमान से क़ब्र या हश्र में इस मसले के मुताल्लिक़ सवाल नहीं होगा, इसलिये ऐसे नाज़ुक मसले में राय-ज़नी करना ख़ुद को हलाकत में डालना है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

औफ़ी ने इब्ने अ़ब्बास से रिवायत की है कि नबी सल्ल. ने अपनी माँ के लिये इस्तिग़फ़ार का इरादा किया था तो अल्लाह तआ़ला ने रोक दिया। आपने फ़रमाया कि इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने अपने बाप के लिये इस्तिग़फ़ार किया था तो यह 'व मा कानस्तिग़्फ़ारु.....' वाली आयत उतरी।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इस आयत के बारे में रिवायत है कि लोग अपने मुर्दों के लिये इस्तिग़फ़ार करते थे तो हज़रत इब्राहीम की इस्तिग़फ़ार वाली आयत नाज़िल हुई थी, चुनाँचे लोग इस नाजायज़ इस्तिग़फ़ार से बाज़ आ गये, लेकिन मुसलमान अपने ज़िन्दा मुश्रिक रिश्तेदारों के लिये दुआ़-ए-मग़फ़िरत करने से नहीं रोके गये हैं। क़तादा रह. ने इस आयत के बारे में कहा है कि नबी सल्ल. के बाज़ सहाबा ने कहा- ऐ अल्लाह के नबी! हमारे बाप-दादा बड़े नेक लोग थे, पड़ोस के साथ अच्छा बर्ताव करते थे, सिला-रहमी के आ़दी थे, क़ैदियों को छुड़ा देने और लोगों को तावान अदा करने के लिये रक़में देते, क्या हम उन मुर्दों के लिये इस्तिग़फ़ार न करें? आपने फ़रमाया क्यों नहीं, ख़ुदा की क़सम मैं भी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तरह अपने बाप के लिये इस्तिग़फ़ार करूँगा, चुनाँचे फ़ौरन यह आयत उतरी कि नबी और मुसलमानों को मुश्रिक मुर्दों के लिये दुआ़ करना जायज़ नहीं।

फिर अल्लाह तआ़ला इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के इस्तिग़फ़ार (यानी अपने बाप के लिये मग़फ़िरत की दुआ़) की वजह ज़िक्र फ़रमाता है कि इब्राहीम का इस्तिग़फ़ार तो महज़ वादे की वजह से था। फिर आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने चन्द कलिमे मेरे दिल में डाले हैं जो मेरे कानों में गूँज रहे हैं और मेरे दिल में जम गये हैं। मुझे हुक्म हुआ है कि शिर्क की हालत में मरने वाले के लिये मग़फ़िरत तलब न करूँ और जिसने अपनी ज़रूरत से बचा हुआ माल सदक़ा कर दिया वह उसके लिये बड़ी ख़ैर का सबब है, और जिसने रोक रखा वह उसके लिये शर (बुराई) का सबब होगा, और ज़रूरत के मुताबिक़ खाने और ख़र्च करने पर अल्लाह का कोई एतिराज़ नहीं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि एक यहूदी मर गया, उसका बेटा मुसलमान था। वह उसके कफ़न-दफ़न के लिये आया तक नहीं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. को इल्म हुआ तो कहा कि बेटे को चाहिये था कि जाकर बाप का कफ़न-दफ़न करता और ज़िन्दा रहने तक उसकी ख़ैर व फ़लाह के लिये दुआ़ करता, और मर जाने पर उसको उसके हवाले कर देता, और उसके लिये दुआ़ न करता। इस रिवायत के सही होने की गवाही उस रिवायत से मिलती है जो हज़रत अ़ली रज़ि. से नक़ल की गयी है कि जब अबू तालिब मर गये तो मैंने कहा या रसूलल्लाह! आपके गुमराह चचा मर गये हैं। आपने फ़रमाया जाओ उन्हें दफ़ना दो और कुछ न करना, मेरे पास आ जाना। फिर पूरी हदीस बयान की। एक और रिवायत में है कि नबी सल्ल. के सामने से जब अबू तालिब का जनाज़ा गुज़रा तो आपने फ़रमाया चचा! मैंने तो सिला-रहमी (रिश्ते) का हक़ अदा कर दिया। और अ़ता बिन अबी रबाह कहते हैं कि मैं किसी अहले क़िब्ला (यानी

ईमान वाले) की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से न रोकूँगा चाहे वह नाजायज़ हमल (गर्भ) वाली कोई हब्शा की औरत ही क्यों न हो। इसलिये कि जनाज़े की नमाज़ दुआ है, और मुश्रिकों के सिवा किसी के लिये दुआ करने से ख़ुदा ने नहीं रोका है।

इब्ने जरीर से रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. कहते थे- अल्लाह उस आदमी पर रहम करे जो अबू हुरैरह और उसकी माँ के लिये दुआ-ए-मग़फ़िरत करे। मैंने कहा और बाप के लिये? तो अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया नहीं! मेरा बाप मुश्रिक मर गया था। और अल्लाह तआ़ला के क़ौलः

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ.

(कि फिर जब उन पर यह बात ज़ाहिर हो गयी कि वह ख़ुदा का दुश्मन है.........) के बारे में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बाप के मरने तक इस्तिग़फ़ार की दुआ़ करते रहे और मर जाने के बाद जब मालूम हुआ कि वह अल्लाह का दुश्मन था तो उससे अलग हो गये। और सईद बिन जुबैर से नक़ल है कि क़ियामत के दिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम जब बाप से मिलेंगे तो उनसे अ़लैहदगी और किनारा कर लेंगे। बाप बदहवास और परेशान होगा और कहेगा कि ऐ इब्राहीम! मैंने तेरी नहीं सुनी, लेकिन आज तेरा ख़िलाफ़ न करूँगा (यानी जो तू कहेगा मैं मानूँगा) तो इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम कहेंगे ऐ रब! क्या तूने मुझसे वादा नहीं किया है कि क़ियामत के रोज़ मुझे रुस्वा न करेगा? पस आज के रोज़ इस रुस्वाई से बढ़कर और कौनसी रुस्वाई हो सकती है? कहा जायेगा कि तुम पीछे पलट कर तो देखो। देखते हैं कि एक अधमरा जानवर लुथड़ा पड़ा है और एक बिज्जू की शक्ल में (बिगड़ी हुई शक्ल) है जिसकी टाँगें खींचकर दोज़ख़ की तरफ़ ले जाया जा रहा है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

إِنَّ إِبْرٰهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ.

वाक़ई इब्राहीम बड़े ही रहम-दिल, नर्म मिज़ाज और बुर्दबार थे।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं कि 'अव्वाह' के मायने हैं बहुत दुआ़ व ज़ारी करने वाला। इब्ने हाद से रिवायत है कि नबी सल्ल. बैठे हुए थे कि एक आदमी ने पूछा- या रसूलल्लाह! "अव्वाह" के क्या मायने हैं? फ़रमाया बहुत रोने-गिड़गिड़ाने वाला। इब्ने मसऊद रज़ि. ने इसके मायने रहीम के बताये हैं। क़तादा वग़ैरह ने अल्लाह के बन्दों के साथ नर्मी और करम का मामला करने वाला कहा है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इसके मायने मोमिन बताते हैं। अ़ली बिन अबू तल्हा तौबा करने वाले मोमिन के बताते हैं।

हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर से रिवायत है कि ज़ुल-बजादीन नाम के एक शख़्स के बारे में हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि यह "अव्वाह" है। जहाँ कहीं क़ुरआन में अल्लाह का नाम आ जाता तो यह शख़्स दुआ़ का एक नारा बुलन्द करता। अबू दर्दा रज़ि. से मन्क़ूल है कि सुबह के वक़्त तस्बीह की जो पाबन्दी करता है उसको अव्वाह कहते हैं। अबू अय्यूब कहते हैं कि "अव्वाह" वह है जो अपनी ख़ताओं को याद करके इस्तिग़फ़ार करता है। मुस्लिम बिन बयान कहते हैं कि एक आदमी बहुत ज़्यादा ज़िक्र व तस्बीह करता था तो नबी सल्ल. ने उसको "अव्वाह" कहा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने एक शख़्स को दफ़न करने के बाद कहा ख़ुदा तुझ पर रहम करे, तू एक अव्वाह आदमी था। आपकी मुराद थी कि क़ुरआन की बहुत तिलावत करने वाला था।

एक शख़्स काबा शरीफ़ का तवाफ़ करते हुए दुआ़ के वक़्त आह-आह करता था, हुज़ूर सल्ल. के

सामने ज़िक्र हुआ तो आपने फ़रमाया वह "अव्वाह" है। अबूज़र रज़ि. कहते हैं कि एक रात में बाहर निकला तो देखा कि नबी सल्ल. उसी शख़्स को चिराग़ लिये दफ़न कर रहे हैं। यह हदीस ग़रीब है, इसको इब्ने जरीर ने रिवायत किया है, सबसे अच्छा क़ौल तो यह है कि इसके मायने दुआ़ के हैं और यह मज़मून के मुनासिब भी है। यानी अल्लाह पाक ने जब ज़िक्र किया कि इब्राहीम का इस्तिग़फ़ार वादे की बिना पर था और हज़रत इब्राहीम बहुत ज़्यादा दुआ़ करने वाले थे, ग़लत और नामुनासिब बर्ताव करने वाले के साथ हलीम (बुर्दबार और सयंम बरतने वाले) थे, और इसी लिये तो बाप के तकलीफ़ पहुँचाने के बावजूद उसके लिये इस्तिगफ़ार करते थे जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इसकी तफ़सील बयान फ़रमायी है:

اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِیْ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ٥ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ٥ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ سَاَسْتَغْفِرُلَكَ رَبِّیْ. اِنَّهٗ كَانَ بِیْ حَفِیًّا٥

यानी ऐ इब्राहीम! क्या तू मेरे ख़ुदाओं से मुँह मोड़ता है? देख अगर तू बाज़ न आयेगा तो मैं पत्थर से तुझे मार दूँगा, मुझसे बाज़ रह। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा सलामु अ़लैक जाता हूँ लेकिन आपके लिये अपने ख़ुदा से ज़रूर दुआ़ करता रहूँगा, वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है।

ग़र्ज़ यह कि बाप के तकलीफ़ पहुँचाने पर भी इब्राहीम ने बुर्दबारी इख़्तियार की, बाप के लिये दुआ़ और इस्तिग़फ़ार किया, चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने आपको हलीम का ख़िताब दिया।

और अल्लाह तआ़ला ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे जब तक कि उन चीज़ों को साफ़-साफ़ न बतला दे जिनसे वे बचते रहें। बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। (115) (और) बेशक अल्लाह ही की हुकूमत है, आसमानों और ज़मीन की, वही जिलाता है और मारता है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवा न कोई यार है और न मददगार। (116)	وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِیُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى یُبَیِّنَ لَهُمْ مَّا یَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ٥ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ ؕ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ٥

हिदायत के बाद गुमराह होना ख़ुदा तआ़ला को नापसन्द है

अल्लाह तआ़ला अपनी करीम ज़ात और हिक्मते आ़दिला से मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाता है कि जब तक ख़ुदा किसी क़ौम की तरफ़ पैग़म्बर भेजकर हुज्जत (दलील) पूरी नहीं कर लेता उसको गुमराही के लिये छोड़ नहीं देता। जैसा कि दूसरी जगह फ़रमाया है कि समूद वालों को हमने हिदायत दी। मुजाहिद रह. ने अल्लाह तआ़ला के क़ौल "और अल्लाह तआ़ला ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे............" के बारे में कहा कि अल्लाह तआ़ला का यह बयान मोमिनों से मुश्रिकों के लिये इस्तिग़फ़ार के छोड़ देने के बारे में ख़ास है, और वैसे मोमिनों के लिये ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी और नाफ़रमानी का फ़ेल आ़म है। यानी तुम अपनी मर्ज़ी के मालिक हो, अपनी मर्ज़ी से नेकी और फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करो या नाफ़रमानी इख़्तियार करो। छोड़ना चाहते हो तो छोड़ दो लेकिन इस्तिग़फ़ार के छोड़ने का

Maktab E Ashraf

बयान उमूमी नहीं बल्कि ख़ुसूसी है।

इब्ने जरीर कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला कहता है- अगर तुम अपने मुश्रिक मुर्दों के लिये इस्तिग़फ़ार किया करो तो क्या ज़रूरी है कि अल्लाह तुम्हें गुमराह क़रार दे, जबकि उसने तुमको ज़ाती हद तक हिदायत की तौफ़ीक़ दे दी और ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने की इ़ज़्ज़त बख़्शी, यहाँ तक कि तुमको बुरे कामों और गुनाहों से रोक दिया और तुम उससे बाज़ रहे, लेकिन इससे पहले कि वह उन बुराईयों की कराहत (बुरा होना) और मनाही बयान फ़रमाये और तुम उन मना की हुई बातों की तरफ़ झुक पड़ो। वह क्यों तुम पर गुमराही का हुक्म लगाये, इसलिये कि फ़रमाँबरदारी व नाफ़रमानी तो हुक्म और मनाही से ताल्लुक़ रखते हैं, लेकिन जो ईमान ही न लाया हो और न वह बाज़ रहा हो तो उसको हुक्म की अन्जामदेही से मुताल्लिक़ बात मानने वाला और फ़रमाँबरदार, तथा मना की हुई चीज़ों के करने से गुनाहगार व नाफ़रमान कह ही नहीं सकते। अल्लाह का यह क़ौल कि वह मालिकुल-मुल्क है, ज़िन्दा भी करता है और मारता भी है। यह अल्लाह की तरफ़ से अपने मोमिन बन्दों के लिये मुश्रिकों और काफ़िरों से जंग करने पर उभारना है, और यह कि उन्हें अल्लाह की मदद का भरोसा रखना चाहिये और ख़ुदा के दुश्मनों से डरना नहीं चाहिये, क्योंकि उन्होंने ख़ुदा को छोड़ दिया तो फिर उनका न कोई वली है न मददगार।

हकीम बिन हिज़ाम से मन्क़ूल है कि हम रसूलुल्लाह सल्ल. के पास बैठे हुए थे कि आपने फ़रमाया- क्या तुम वह सुनते हो जो मैं सुनता हूँ? लोगों ने कहा कि हम तो कुछ नहीं सुन रहे हैं। नबी सल्ल. ने फ़रमाया मैं आसमान का चरचराना सुन रहा हूँ और वह बोझ से क्यों न दबे और क्यों न चरचराये आसमान में बालिश्त भर जगह भी तो ऐसी नहीं जहाँ कोई न कोई फ़रिश्ता सज्दे या क़ियाम में मौजूद न हो। कअ़बे अहबार कहते हैं कि सूई की नोक के बराबर भी कोई जगह ज़मीन में ऐसी नहीं जहाँ कोई फ़रिश्ता अल्लाह की तस्बीह में मसरूफ़ न हो, और आसमान के फ़रिश्ते ज़मीन के ज़र्रों से ज़्यादा तादाद में हैं और अ़र्श के हामिल (उठाने वाले) फ़रिश्तों के टख़्ने से पिंडली तक एक सौ बरस की दूरी और फ़ासला है।

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ ۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۙ○	अल्लाह ने पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हाल) पर तवज्जोह फ़रमाई, और मुहाजिरीन और अन्सार (के हाल) पर भी, जिन्होंने (ऐसी) तंगी के वक़्त में पैग़म्बर का साथ दिया, इसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिलों में कुछ हलचल हो चली थी, फिर उसने (यानी अल्लाह ने) उन (के हाल) पर तवज्जोह फ़रमाई। बेशक अल्लाह उन सब पर बहुत ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान है। (117)

तबूक का वाक़िआ़

मुजाहिद वग़ैरह ने बयान किया है कि यह आयत ग़ज़वा-ए-तबूक से मुताल्लिक़ है। यानी लोग जब ग़ज़वा-ए-तबूक (तबूक की लड़ाई) के लिये निकले तो बड़ी सख़्त गर्मी थी, सख़्त क़हत-साली थी, पानी और

सफ़र की ज़रूरतों की भी सख़्त तंगी थी। क़तादा कहते हैं कि जंगे तबूक के लिये जब चल खड़े हुए तो बड़ी सख़्त गर्मी थी, अल्लाह ही जानता है कि कैसी सख़्त मुसीबतें मुजाहिदों को पहुँचीं, यहाँ तक कि कहा जाता है कि एक खजूर के दो टुकड़े करके दो आदमियों में बाँट दिया जाता था, खजूर हाथ-दर-हाथ बढ़ाई जाती। एक उसको थोड़ा सा चूसता फिर पानी पी लेता, फिर दूसरा चूसता और पानी पीकर तसल्ली हासिल कर लेता। फिर अल्लाह ने उनकी सुन ली, लड़ाई से वे वापस हुए। अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से तंगदस्ती की कैफ़ियत पूछी गई तो कहा कि हम जंगे तबूक के लिये नबी सल्ल. के साथ निकले, सख़्त गर्मी का मौसम था। हमने एक जगह क़ियाम किया वहाँ ऐसी ज़बरदस्त प्यास से हमें साबक़ा पड़ा कि हमने गुमान कर लिया कि हमारा दम ही निकल जायेगा। अगर कोई आदमी पानी की तलाश में जाता तो वह यक़ीन कर लेता कि वापस होने से पहले उसको मौत आ जायेगी। लोग ऊँटों को ज़िबह करते, उनके मेदों (पेटों) में एक मक़ाम पर पिये हुए पानी का ज़ख़ीरा जमा रहता था, उसको निकाल लेते और पी लेते, और बचा हुआ कुछ हिस्सा अपने जिगर पर बाँध लेते तो अबू बक्र रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने आपकी दुआ़ को क़बूलियत का शर्फ़ बख़्शा है, हमारे लिये दुआ़ फ़रमाईये। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- क्या तुम ऐसा चाहते हो? सिद्दीक़ रज़ि. ने कहा हाँ। आपने अपने दोनों हाथ दुआ़ के लिये उठाये। अभी दुआ़ ख़त्म भी नहीं हुई थी कि बादल छा गये और मूसलाधार बारिश होने लगी, फिर थोड़ी देर बाद पानी थम गया। लोगों ने अपने बरतन भर लिये, अब हम लश्कर के पड़ाव से बाहर निकले तो देखा कि छावनी से आगे कहीं पानी नहीं बरसा है।

इब्ने जरीर रह. अल्लाह तआ़ला के क़ौलः

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ........ الخ

के बारे में कहते हैं कि इस आयत में 'उस्रत' (तंगी) से मुराद सफ़र की ज़रूरतों (खाने के सामान) और पानी की तंगी है। उसके बाद फ़रमान है कि उसके बाद उनके दिल बदगुमानी और शक से टेढ़े होने लगे थे। जो मशक़्क़त और शिद्दत व मुसीबत इस सफ़र में पड़ी उससे लोगों के दिल रसूलुल्लाह के दीन से शक में पड़ गये थे। अब अल्लाह तआ़ला ने उन पर रहम किया, अपनी तरफ़ रुजू होने की तौफ़ीक़ बख़्शी और दीन पर जमे रहने की इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई। वह तो बड़ा मेहरबान और रहीम है।

और उन तीन शख़्सों (के हाल) पर भी (तवज्जोह फ़रमाई) जिनका मामला मुल्तवी "यानी स्थगित" छोड़ दिया गया था, यहाँ तक कि जब (उनकी परेशानी की यह नौबत पहुँची कि) ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के उनपर तंगी करने लगी और वे ख़ुद अपनी जान से तंग आ गए, और उन्होंने समझ लिया कि ख़ुदा (की गिरफ़्त) से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाय इसके कि उसी की तरफ़ रुजू किया जाए। (उस	وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ۭ حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ۭ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ

لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ۝	वक़्त वे ख़ास तवज्जोह के क़ाबिल हुए), फिर उन (के हाल) पर (भी ख़ास) तवज्जोह फ़रमाई, ताकि वे (आइन्दा भी) रुजू (रहा) करें, बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत तवज्जोह फ़रमाने वाले, बड़े रहम करने वाले हैं। (118) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और (अ़मल में) सच्चों के साथ रहो। (119)

Maktab E Ashraf

एक सबक़ लेने वाला वाक़िआ

हज़रत इब्ने कअ़ब रज़ि. से रिवायत है कि तबूक की लड़ाई में अपने शरीक न होने की दास्तान और हुज़ूर सल्ल. का साथ न देने का वाक़िआ कअ़ब बिन मालिक रज़ि. यूँ बयान करते हैं कि मैं तबूक की लड़ाई के सिवा और किसी जंग में हुज़ूर सल्ल. के साथ से मेहरूम नहीं रहा, अलबत्ता जंगे बदर में भी मैं शिर्कत से आ़जिज़ था, लेकिन उन शिर्कत न करने वालों पर कोई इताब (अल्लाह की नाराज़गी और ग़ुस्सा) नहीं हुआ था। बात यह थी कि रसूलुल्लाह सल्ल. उस वक़्त क़ुरैश के एक क़ाफ़िले की ख़ातिर मदीना से बाहर निकले थे, वहाँ अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ अल्लाह के दुश्मनों से मुठभेड़ हो गयी। पहले से ऐसा कोई प्रोग्राम भी नहीं था। मैं अ़क़बा वाली रात में नबी सल्ल. के साथ था, जबकि इस्लाम पर हमने पैमान बाँधा था, और मेरे लिये तो अ़क़बा की रात में हाज़िरी बदर की लड़ाई की हाज़िरी से भी कहीं ज़्यादा पसन्दीदा थी, अगरचे बदर की शोहरत लोगों में बहुत ज़्यादा है।

तबूक की लड़ाई में हुज़ूर सल्ल. के साथ शिर्कत से मेहरूम रहने का मेरा वाक़िआ यह है कि जिस ज़माने में मैं तबूक में साथ शरीक रहने से पीछे रह गया उस वक़्त मैं बहुत ज़्यादा ख़ुशहाल और मालदार था। उससे पहले दो सवारियाँ मेरे पास कभी नहीं हुई थीं, और उस जंग में तो दो सवारियाँ भी रख सकता था। रसूलुल्लाह सल्ल. जब किसी जंग का इरादा फ़रमाते तो आ़म तौर पर उस ख़बर को फैलने न देते। जब यह जंग हुई तो बड़ी सख़्त गर्मी का ज़माना था, दूर-दराज़ और जंगलों का सफ़र दरपेश था और बड़ी तादाद वाले दुश्मन से सामना था। नबी सल्ल. ने अपने मामलात में मुसलमानों को आज़ाद रखा था कि जिस तरह चाहें दुश्मन के मुक़ाबले की तैयारी कर लें और अपना इरादा मुसलमानों पर ज़ाहिर फ़रमा दिया था। मुसलमान नबी करीम सल्ल. के साथ इतनी बड़ी संख्या में थे कि सबके नाम भी न लिखे जा सके थे।

हज़रत कअ़ब कहते हैं कि बहुत कम ऐसे लोग होंगे कि जिनकी ग़ैर-हाज़िरी का हुज़ूर सल्ल. को इल्म हो सकेगा, बल्कि गुमान थां कि लश्कर के अधिक संख्या में होने की वजह से ग़ायब रहने वाले का आपको इल्म न हो सकेगा, जब तक कि ख़ुदा ही की तरफ़ से 'वही' के ज़रिये इल्म न हो जाये।

यह लड़ाई जिस वक़्त सामने आई थी वह ज़माना फलों के पकने का था। दूर तक ठंडे साये फैले हुए थे, डालियाँ फलों से लदी पड़ी थीं और मौसम बहुत ठंडा था। ऐसे ज़माने में मेरी तबीयत आराम-तलबी और राहत हासिल करने की तरफ़ माईल हो गई। रसूलुल्लाह सल्ल. और मुसलमानों ने तैयारियाँ शुरू कर दीं मैं सुबह उठकर जिहाद की तैयारी के लिये बाहर निकलता लेकिन ख़ाली वापस होता, तैयारी और सफ़र के सामान की ख़रीदारी वग़ैरह कुछ न करता, दिल बहला लेता कि जब मैं चाहूँगा दम भर में तैयारी कर लूँगा।

Maktab E Ashraf

दिन गुज़रते चले गये, लोगों ने तैयारियाँ मुकम्मल कर लीं, यहाँ तक कि नबी सल्ल. और उनके साथ दीगर मुसलमान चल खड़े हुए। जिहाद के लिये रवाना हो गये। मैंने दिल में कहा कि एक दो दिन बाद तैयारी करके मैं भी इनमें मिल जाऊँगा। इस अरसे में मुसलमानों का लश्कर बहुत दूर जा चुका, मैं तैयारी के लिये बाहर निकला लेकिन फिर वापस आ गया यहाँ तक कि हर रोज़ यही होता रहा। दिन निकल गये, लश्कर जंग करने लगा, अब मैंने कूच का इरादा कर लिया कि जल्दी से पहुँचकर शामिल हो जाऊँ। काश अब भी कूच कर जाता। लेकिन आख़िरकार यह भी न हो सका। अब हुज़ूर सल्ल. के तशरीफ़ ले जाने के बाद जब कभी मैं बाज़ार निकलता तो मुझे यह देखकर बड़ा दुख होता कि जो मुसलमान नज़र आता है उस पर या तो निफ़ाक़ की फटकार नज़र आती है या ऐसे मुसलमान दिखाई देते हैं जो वाक़ई ख़ुदा की तरफ़ से माज़ूर और लंगड़े-लूले हैं। जब हुज़ूर सल्ल. तबूक पहुँच चुके तो मुझे याद फ़रमाया और पूछा कअ़ब बिन मालिक क्या कर रहा है? बनी सलमा के एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! उसकी आराम-तलबी और राहत व आराम ने उसे मदीने में ही रोक लिया है, तो मुआ़ज़ बिन जबल ने कहा तुमने ग़लत ख़्याल क़ायम किया, या रसूलल्लाह! उसे तो भलाई और नेकी के सिवा कुछ नहीं आता। रसूलुल्लाह सल्ल. यह सुनकर ख़ामोश हो रहे और जब आप तबूक से वापस तशरीफ़ लाने लगे तो मैं सख़्त परेशान था कि अब क्या करूँ? मैं ग़लत हीले (बहाने) सोचने लगा ताकि आपके गुस्से और नाराज़गी से महफ़ूज़ रह सकूँ। चुनाँचे हर एक से राय लेने लगा और जब मालूम हुआ कि आप तशरीफ़ ला चुके हैं तो अब ग़लत सोच-विचार से मैं अलग और दूर हो गया। मैंने अच्छी तरह मालूम कर लिया कि मैं किसी हीले से भी बच नहीं सकता, चुनाँचे मैंने सच-सच कहने का इरादा कर लिया।

नबी सल्ल. जब सफ़र से वापस आये तो सबसे पहले मस्जिद गये, दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी, फिर लोगों के साथ मज्लिस की। अब जंग में शरीक न रहने वाले आ-आकर माज़िरत करने लगे और क़समें खाने लगे। ऐसे लोगों की तादाद अस्सी से कुछ ऊपर थी। नबी सल्ल. ज़ाहिर पर हुक्म लगाते हुए उनकी बात क़बूल किये जा रहे थे और उनकी कोताहियों के लिये अल्लाह से मग़फ़िरत तलब कर रहे थे, लेकिन उनके दिलों के भेदों को ख़ुदा के हवाले कर रहे थे। मेरी बारी आई, मैंने आकर सलाम अ़र्ज़ किया, आपने नाराज़गी के साथ तबस्सुम फ़रमाया। फिर मुझसे कहा यहाँ आओ, मैं सामने जा बैठा, मुझसे फ़रमाया तुम क्यों रुके रहे? क्या तुमने जिहाद की तैयारी में ख़रीदारी नहीं कर ली थी? मैंने कहा या रसूलल्लाह! अगर मैं इस वक़्त आपके सिवा किसी और से बोलता तो ऐसे माक़ूल उज़्र (बहाने और मजबूरी) पेश कर सकता था कि उनको क़बूल करना ही पड़ता, क्योंकि मुझे बहस व तकरार और माज़िरत करना ख़ूब आता है। लेकिन ख़ुदा की क़सम! मैं जानता हूँ कि इस वक़्त तो झूठी बात बनाकर मैं आपको राज़ी कर लूँगा लेकिन बहुत जल्द ही अल्लाह आपको मुझसे नाराज़ बना देगा। और अगर मैंने सच-सच कह दिया तो अन्जाम के अच्छा होने की मुझे ख़ुदा की तरफ़ से उम्मीद हो सकती है। ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह की क़सम मैं कोई माक़ूल उज़्र (बहाना और मजबूरी) नहीं रखता था, मेरे पास जिहाद में शिर्कत न करने का दर हक़ीक़त कोई हीला नहीं। तो आपने फ़रमाया हाँ यह सच कहता है। अच्छा तो अब चले जाओ और इन्तिज़ार करो कि अल्लाह तुम्हारे बारे में क्या हुक्म नाज़िल फ़रमाता है। चुनाँचे मैं चला गया। बनी सलमा के लोग भी मेरे साथ उठे और साथ हो लिये, और कहने लगे ख़ुदा की क़सम हमने तुम्हें पहले कभी कोई ख़ता करते नहीं देखा है, दूसरे लोगों ने जैसे उज़्र पेश किये तुमने हुज़ूर सल्ल. के सामने कुछ भी उज़्र नहीं किया, वरना नबी सल्ल. ने दूसरों के लिये जैसे इस्तिग़फ़ार किया था तुम्हारे लिये भी हज़रत का यह इस्तिग़फ़ार काफ़ी होता।

Maktab E Ashraf

ग़र्ज़ यह कि लोगों ने इस बात पर इस क़द्र ज़ोर दिया कि मैंने एक बार यह इरादा कर ही लिया था कि फिर वापस जाऊँ और कोई उज़्र बनाकर पेश कर दूँ लेकिन मैंने उन लोगों से पूछा कि मेरी तरह क्या किसी और का भी ऐसा मामला है? कहा हाँ तुम्हारी तरह और दो आदमी हैं कि सच-सच कह दिया है। मैंने पूछा वे कौन हैं? कहा गया मुरारा बिन रबीअ़ आ़मिरी और हिलाल बिन उमैया। कहा गया कि ये दोनों नेक आदमी हैं, बदर में शरीक थे, अब मेरे सामने उनका नक़्शे-क़दम (अ़मल का नमूना) था, इसलिये मैं दोबारा हुज़ूर सल्ल. के पास न गया। फिर मालूम हुआ कि आपने हम तीनों से सलाम-कलाम करने से लोगों को मना कर दिया है, लोगों ने हमारा बायकाट कर दिया है और हमसे ऐसे बदल गये हैं कि ज़मीन पर रहना हमें बोझ मालूम होने लगा। हम पर इस ताल्लुक़ात के तोड़ने के पचास दिन गुज़र गये। उन दोनों ने तो मुँह छुपाकर एक कोने में रहना इख़्तियार कर लिया, बैठे रहते, रोते रहते। मैं ज़रा सख़्त-मिज़ाज था, बरदाश्त की क़ुव्वत थी, जाकर जमाअ़त के साथ बराबर नमाज़ पढ़ता था, बाज़ारों में घूमता था, लेकिन मुझसे कोई बोलता न था। हुज़ूर सल्ल. के पास आता, आप तशरीफ़ फ़रमा रहते, मैं सलाम करता और देखता कि सलाम के जवाब के लिये आपके होंठ हिलते हैं कि नहीं। फिर आपके क़रीब ही नमाज़ पढ़ लेता कन-अंखियों से आपको देखता, मैं नमाज़ पढ़ने लगता तो आप मुझे देखते, मैं आपकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाता तो नज़र फेर लेते।

जब इस बायकाट की मुद्दत लम्बी ही होती गई तो मैं अबू क़तादा के घर की दीवार फाँदकर उनके यहाँ गया, वह मेरे चचाज़ाद भाई थे। मैं उन्हें बहुत चाहता था, सलाम किया तो ख़ुदा की क़सम! उन्होंने जवाब न दिया। मैंने कहा ऐ अबू क़तादा! तुम्हें ख़ुदा की क़सम क्या तुम नहीं जानते कि मैं ख़ुदा और रसूले ख़ुदा को दोस्त रखता हूँ। वह सुनकर ख़ामोश हो गए। मैंने ख़ुदा की क़सम देकर बात की, फिर कुछ न बोले, मैंने फिर क़सम दी कुछ भी न कहा लेकिन अन्जाने पन से बोले ख़ुदा को और रसूले ख़ुदा को इल्म है। मैं फूट-फूटकर रोने लगा। फिर दीवार फाँदकर वापस हो गया।

एक दिन मैं मदीना के बाज़ार में घूम रहा था कि शाम का एक क़िबती जो मदीने के बाज़ार में खाने की कुछ चीज़ें बेच रहा था, लोगों से कहने लगा कि कअ़ब बिन मालिक का कोई पता दे दो। आदमियों ने मेरी तरफ़ इशारा कर दिया। वह मेरे पास आया और ग़स्सान के बादशाह का एक पत्र मेरे हवाले किया। मैं चूँकि पढ़ा लिखा था, पढ़ा तो लिखा था-

"हमें इत्तिला मिली है कि तुम्हारे आक़ा ने तुम पर सख़्ती की है, अल्लाह ने तुम्हें कोई मामूली आदमी तो नहीं बनाया है, तुम कोई गिरे पड़े नहीं हो, तुम हमारे पास आ जाओ हम तुम्हें नवाज़ेंगे।"

मैंने यह पढ़कर कहा पड़ गई, और यह कैसी मेरे अल्लाह, यह तो नई मुसीबत आ पड़ी। मैंने उस ख़त (पत्र) को आग में झोंक दिया और जब पचास में से चालीस दिन गुज़र गये तो हुज़ूर सल्ल. का एक क़ासिद मेरे पास आया और कहा हुज़ूर सल्ल. ने हुक्म दिया है कि अपनी औ़रत (बीवी) से भी अलग रहो। मैंने पूछा क्या यह हुक्म है कि तलाक़ दे दूँ? कहा नहीं! सिर्फ़ अलग रहो, पास न जाना। और कहा कि दूसरे दोनों के बारे में भी यही हुक्म हुआ है। चुनाँचे मैंने अपनी औ़रत से कह दिया कि अपने मैके चली जाओ, यहाँ तक कि ख़ुदा का कोई और हुक्म पहुँचे।

हिलाल बिन उमैया की औ़रत (बीवी) नबी सल्ल. के पास आई और अ़र्ज़ करने लगी या रसूलल्लाह! हिलाल एक बूढ़ा कमज़ोर आदमी है, उसकी ख़िदमत के लिये कोई आदमी नहीं। अगर मैं उनकी ख़िदमत में लगी रहूँ तो आप नामन्ज़ूर तो न करेंगे? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया अच्छा ठीक है, लेकिन वह तुमसे नज़दीकी

(यानी सोहबत) न करे। कहने लगी उस ग़रीब को तो हिलना मुश्किल हो गया है, आपकी नाराज़ी के दिन से आज तक लगातार रोता रहता है।

मेरे घर वालों में से एक ने कहा तुम भी रसूलुल्लाह सल्ल. से अपनी औरत (बीवी) से ख़िदमत लेने की इजाज़त हासिल कर लो, जैसे कि हिलाल को इजाज़त मिल गई। मैंने कहा ख़ुदा की क़सम मैं इस बात की हुज़ूर सल्ल. से दरख़्वास्त न करूँगा, न मालूम हज़रत क्या फ़रमायें। मैं तो जवान आदमी हूँ मुझे किसी से ख़िदमत लेने की ज़रूरत नहीं। अब हमने और दस दिन गुज़ारे और लोगों के इस क़ता-ताल्लुक़ी को पचास दिन गुज़र गये। पचासवें दिन की सुबह अपने घर की छत पर सुबह की नमाज़ पढ़कर मैं इस हाल में बैठा हुआ था जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने अपने कलाम मजीद में फ़रमाया है, यानी मेरी जान मुझ पर भारी मालूम हो रही थी, यह लम्बी-चौड़ी दुनिया मुझे तंग महसूस हो रही थी कि सलअ़ पहाड़ी पर से एक पुकारने वाले की आवाज़ मेरे कान में पड़ी, वह बुलन्द आवाज़ में चीख़ रहा था कि "ऐ कअ़ब बिन मालिक! ख़ुश हो जा" मैं यह सुनते ही सज्दे में गिर पड़ा और समझ गया कि ख़ुदा ने अब मेरी तौबा क़बूल कर ली, मुसीबत का ज़माना गुज़र गया। सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद रसूलुल्लाह सल्ल. ने इत्तिला सुना दी कि अल्लाह ने इन तीनों की तौबा क़बूल कर ली है। लोग हमें ख़ुशख़बरी देने के लिये दौड़े। उन दोनों के पास भी गये और मेरे पास भी एक सवार तेज़-तेज़ घोड़ा दौड़ाता हुआ आया, लेकिन पहाड़ी पर चढ़कर आवाज़ देने वाला ज़्यादा कामयाब रहा कि उससे ज़्यादा जल्दी मुझे ख़बर मिल गई, क्योंकि घोड़े की रफ़्तार से आवाज़ की रफ़्तार तेज़ होती है। चुनाँचे जब यह शख़्स मुझसे मिला जिसकी आवाज़ मैंने सुनी थी तो इस ख़ुशख़बरी देने के सिले में अपने कपड़े उतारकर मैंने उसे पहना दिये, ख़ुदा की क़सम मेरे पास उस वक़्त दूसरा जोड़ा नहीं था, मैंने अपने लिये माँगे हुए कपड़े लेकर पहन लिये। मैं आपके पास जाने के इरादे से निकला, लोग मुझसे राह में गुट के गुट मिलते और मुझे मुबारकबाद देते जाते।

मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो नबी सल्ल. लोगों के दरमियान बैठे हुए थे। मुझे देखते ही तल्हा बिन अ़ब्दुल्लाह दौड़ पड़े। मुझसे मुसाफ़ा करके मुबारकबाद दी। मुहाजिरों में से किसी ने उनके सिवा यह इक़्दाम नहीं किया था। कअ़ब ने तल्हा के इस ख़ुलूस को कभी नहीं भुलाया। मैंने आकर रसूलुल्लाह सल्ल. को सलाम किया, उस वक़्त आपके चेहरा-ए-अनवर पर ख़ुशी के आसार नुमायाँ थे। आपने फ़रमाया- मुबारक हो, जबसे तुम पैदा हुए ऐसी ख़ुशी का दिन तुम पर न आया होगा। मैंने पूछा या रसूलल्लाह! यह ख़ुशख़बरी आपकी तरफ़ से है या ख़ुदा की तरफ़ से? आपने फ़रमाया ख़ुदा की तरफ़ से। नबी सल्ल. जब ख़ुश होते तो आपका चेहरा चमक उठता था, गोया चाँद का टुकड़ा है, और आपकी ख़ुशनूदी आपके चेहरे ही से ज़ाहिर हो जाती। मैंने आपसे अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी तौबा की क़बूलियत की यह बरकत होनी चाहिये कि मैं अपना सारा माल व सामान ख़ुदा और रसूले ख़ुदा की राह में लुटा दूँ। आपने फ़रमाया ऐसा नहीं, कुछ रखो और कुछ सदक़ा कर दो, यही बेहतर सूरत है।

मैंने कहा कि ख़ैबर से जो हिस्सा मुझे मिला था वह मैं अपने लिये रख लेता हूँ। या रसूलल्लाह! सच्चाई की बरकतों के सबब अल्लाह ने मुझे निजात बख़्शी, ख़ुदा की क़सम मैंने जबसे आप से सच बोलने का अ़हद किया फिर कभी झूठ न बोला। ख़ुदा से दुआ़ है कि वह आईन्दा भी कभी मुझसे झूठ न बुलवाये।

अल्लाह तआ़ला के क़ौलः

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ........ (الى اخره)

Maktaba Ashraf

के बारे में कअ़ब कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम जबसे मैंने इस्लाम क़बूल किया है ख़ुदा की इससे बड़ी नेमत मुझ पर और क्या हो सकती है कि उसने मुझे हुज़ूर सल्ल. के सामने सच-सच कह देने की तौफ़ीक़ बख़्शी, वरना मैं भी ऐसे ही हलाक हो जाता जैसे कि हुज़ूर सल्ल. के सामने दूसरे झूठ बोलने वाले आख़िरत की ज़िन्दगी के लिहाज़ से तबाह हो गये। ऐसे लोगों के बारे में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है:

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ ....الخ

यानी जब तुम उनकी तरफ़ वापस हुए तो क़समें खा-खाकर ये लोग तुमसे कहते हैं ताकि तुम इनसे नज़र फेर लो, हाँ मुँह फेर लो, इनके दिल नापाक हैं, इनका ठिकाना दोज़ख़ है, क्योंकि इन्होंने किया है ऐसा। क़समें खाते हैं ताकि तुमको राज़ी कर लें, अगर तुम इनसे धोखा खाकर राज़ी हो गये तो क्या हुआ, अल्लाह तो इन बदकारों से राज़ी न होगा।

यह आयत पढ़ने के बाद हज़रत कअ़ब कहते हैं कि हम तीन लोगों का फ़ैसला उन लोगों से पीछे डाल दिया गया था जिन्होंने झूठी क़समें खा ली थीं और हुज़ूर सल्ल. को बज़ाहिर मानकर उनकी बैअ़त क़बूल कर लेनी पड़ी थी, और उनके लिये इस्तिग़फ़ार भी किया था, लेकिन हमारा फ़ैसला आपने रोक दिया था यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई:

وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا........

यह हमें पीछे डाल देना इससे मुराद हमारा फ़ैसला पीछे डाल देना है, न यह कि हम जंग में शरीक होने से पीछे डाल दिये गये थे। यही हदीस सही और साबित है और इसी पर इत्तिफ़ाक़ है। बुख़ारी और मुस्लिम ने भी हदीस ज़ोहरी से इसी तरह रिवायत की है। यह हदीस इस आयते करीमा की पूरी तरह तफ़सीर कर रही है। पहले उलेमा में से तक़रीबन सब ने इसी तरह तफ़सीर की है। चुनाँचे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. का भी इस आयत से मुताल्लिक़ यही क़ौल है कि यह कअ़ब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मुरारा बिन रबीअ़ हैं। ये सब अन्सारी थे। और यही कहा है मुजाहिद, ज़ह्हाक, क़तादा और सुद्दी वग़ैरह ने, सबने मुरारा बिन रबीआ़ कहा है, और मुस्लिम में भी इब्ने रबीआ़ ही लिखा है, लेकिन बाज़ नुस्ख़ों में रबीअ़ बिन मुरारा है। बुख़ारी व मुस्लिम में मुरारा बिन रबीआ़ लिखा है, और रिवायत भी यही है। और यह जो कहा गया है कि दूसरे दोनों बदर में शरीक थे यह इमाम ज़ोहरी की ग़लती समझी गई है, इसलिये कि इन तीनों में से कोई भी बदर की लड़ाई में शरीक न था। वल्लाहु आलम

जब अल्लाह तआ़ला ने इन तीनों की बन्दिश का ज़िक्र फ़रमाया जिसमें इन्होंने मुसलमानों के बायकाट के पचास दिन गुज़ारे थे और इनकी जानें और इनकी दुनिया इन पर तंग हो गई थी। बाहर आना-जाना तक इनका ख़त्म हो गया था, इनकी समझ में नहीं आता था कि क्या करें सिवाय इसके कि सब्र करें और अपनी ज़िल्लत व रुस्वाई पर राज़ी रहें, लेकिन हुज़ूर सल्ल. के सामने सच बोलने के सबब और कोई उज़्र पेश न करने के सबब अल्लाह ने इन पर अपनी रहमत के दरवाज़े खोले और कुछ अ़रसे तक इन्हें अज़ाब में मुब्तला रखने के बाद इनकी तौबा क़बूल फ़रमाई। इसी लिये फ़रमाया:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ.

यानी ऐ ईमान वालो! सच को लाज़िम क़रार दे लो, तो तबाह करने वाली मुसीबतों से बच जाओगे।

इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- सच बोला करो, क्योंकि सच नेकी है

Maktab E Ashraf

और नेकी जन्नत तक पहुँचाती है। जो आदमी सच बोलता रहता है वह ख़ुदा के दफ़्तर में सच्चा लिख दिया जाता है। झूठ से बिल्कुल दूर रहो, झूठ गुनाह व बुराई की तरफ़ ले जाता है और बुराई दोज़ख़ में पहुँचाती है। आदमी जब झूठ ही झूठ बोलता रहता है तो ख़ुदा के दफ़्तर में झूठा लिख दिया जाता है।

यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में मौजूद है। इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि झूठ न संजीदगी के तौर पर बोल सकते हैं न दिल्लगी के तौर पर, चाहते हो तो पढ़ोः

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ.

फिर कहा क्या तुम समझ सकते हो कि कोई भी इस हुक्म से अलग और बाहर हो सकता है? अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. कहते हैं कि 'सच्चों के साथ' से मुराद मुहम्मद सल्ल. और उनके सहाबा हैं। ज़ह्हाक कहते हैं कि अबू बक्र और उमर रज़ि. मुराद हैं। हसन बसरी रह. कहते हैं कि तुम सादिक़ीन (सच्चों) के साथ होना चाहते हो तो दुनिया से किनारा और बेताल्लुक़ी इख़्तियार करो, और लोगों से मेल-जोल कम करो।

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ط ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝	मदीना के रहने वालों को और जो देहाती उनके आस-पास में (रहते) हैं उनको यह मुनासिब न था कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का साथ न दें, और न यह (चाहिए था) कि अपनी जान को उनकी जान से ज़्यादा प्यारा समझें। (और) यह (साथ जाने का ज़रूरी होना) इस सबब से है कि उनको (यानी रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ जाने वालों को) अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो थकान पहुँची और जो भूख लगी और जो चलना चले, जो काफ़िरों के लिए नाराज़गी और गुस्से का सबब हुआ हो, और दुश्मनों की जो कुछ ख़बर ली, उन सब पर उनके नाम एक-एक नेक काम लिखा गया (अगर ये साथ जाते तो इनके नाम भी लिखा जाता), यक़ीनन अल्लाह तआ़ला मुख़्लिसीन का अज्र ज़ाया नहीं करते। (120)

हर क़दम अज्र व सवाब का सबब है

तबूक की लड़ाई में मदीना वालों के जो अ़रब क़बीले जिहाद में शरीक होने से रुके रहे थे और जो मशक़्क़त जंग की नबी सल्ल. को पहुँची थी उसमें हमदर्दी और साथ देने के बजाय आराम-तलबी इख़्तियार की थी, उन पर अल्लाह पाक इताब (गुस्सा और नाराज़गी का इज़हार) फ़रमाता है कि उन्होंने अज्र से अपने को मेहरूम कर दिया। उन्होंने न प्यास की तकलीफ़ उठाई न रंज व थकन पहुँचा, न भूख से साबक़ा पड़ा

और न उस मक़ाम में आये कि काफ़िरों को ख़ौफ़ज़दा कर दें और न काफ़िरों पर ग़लबा और कामयाबी का शर्फ़ हासिल किया, लेकिन जिन्होंने ये सख़्तियाँ झेलीं वे अपने इरादे और ज़ाती अ़मल की बिना पर थीं, फ़ितरी और जबरी नहीं थीं, इसलिये अल्लाह ऐसे नेक काम करने वालों के अज्र को कभी ज़ाया नहीं होने देगा। जैसा कि फ़रमायाः

إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا.

कि बेशक अल्लाह तआ़ला नेक अ़मल करने वालों का अज्र व सवाब ज़ाया और बरबाद नहीं करता।

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ○	और (यह भी कि) जो कुछ छोटा-बड़ा उन्होंने ख़र्च किया और जितने मैदान उनको तय करने पड़े, यह सब भी उनके नाम (नेकियों में) लिखा गया ताकि अल्लाह उनको उनके (उन सब) कामों का अच्छे-से-अच्छा बदला दे। (121)

अच्छे काम का अच्छा बदला

इरशाद होता है कि ये ग़ाज़ी (अल्लाह के रास्ते में लड़ने और जिहाद करने वाले) लोग ख़ुदा की राह में थोड़ा बहुत ख़र्च भी करते हैं और कुफ़्फ़ार से जंग के लिये जंगल का थोड़ा सा रास्ता भी तय करते हैं तो तो इसका अज्र उन्हें ज़रूर मिलता है।

हज़रत अमीरुल-मोमिनीन उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. ने इस आयते करीमा से एक बहुत बड़ा हिस्सा अज्र व सवाब का हासिल किया, क्योंकि इस ग़ज़वा-ए-तबूक में उन्होंने लश्कर को अपनी तरफ़ से बहुत बड़ी रक़म और जिहाद का सामान इनायत किया था। इब्ने हुबाब सुलमी से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. ने ख़ुतबा दिया और तंगदस्त इस्लामी लश्कर की मदद करने के लिये क़ौम को तवज्जोह दिलाई तो हज़रत उस्मान रज़ि. ने कहा- मेरे ज़िम्मे सौ ऊँट मय उनके कजावों और दूसरे सामानों के। हुज़ूर सल्ल. ने दोबारा क़ौम से चन्दा माँगा तो उस्मान रज़ि. ने कहा और सौ ऊँट मय पालान व कजावे वग़ैरह के। नबी सल्ल. ने मिम्बर पर से एक सीढ़ी उतरकर फ़रमाया कि ऐ लोगो! और मदद की ज़रूरत है। उस्मान रज़ि. ने कहा और सौ ऊँट मय साज़ो-सामान के। तो मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को देखा कि आप ख़ुशी से अपने हाथ को यूँ हिला रहे हैं (अ़ब्दुस्समद हदीस के आख़िरी रावी ने यह कहते हुए अपने हाथ हिलाये) और आपने फ़रमाया कि अब उस्मान पर कोई आँच नहीं, चाहे जो अ़मल करे। फिर उस्मान रज़ि. हुज़ूर सल्ल. के पास एक हज़ार अशरफ़ियों की थैली लेकर आये कि तंगदस्त लश्कर की इससे तैयारी फ़रमाईये और आपकी गोद में यह रक़म डाल दी। नबी सल्ल. उन अशरफ़ियों को हरकत दे रहे थे और फ़रमा रहे थे कि आज से उस्मान को उसका कोई अ़मल नुक़सान नहीं पहुँचायेगा, यही एक अ़मल उसकी निजात के लिये काफ़ी है, और आप ख़ुशी से बार-बार उस रक़म को हिला रहे थे। क़तादा रह. ने अल्लाह तआ़ला के क़ौल 'व ला यक़्तऊ-न वादियन्' (यानी मैदानों के तय करने) के बारे में कहा है कि राहे ख़ुदा में सफ़र करते हुए लोग जितना दूर होते जाते हैं उतने ही अल्लाह की क़ुर्बत (नज़दीकी) में बढ़ते जाते हैं।

Mahtab E Ashraf

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ط فَلَوْ لَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ع	और (हमेशा के लिये) मुसलमानों को यह (भी) न चाहिए कि (जिहाद के लिये) सब-के-सब (ही) निकल खड़े हों। सो ऐसा क्यों न किया जाए कि उनकी हर बड़ी जमाअ़त में से एक छोटी जमाअ़त (जिहाद में) जाया करे ताकि बाक़ी रहने वाले लोग दीन की समझ-बूझ हासिल करते रहें, और ताकि ये लोग अपनी (उस) क़ौम को जबकि वे उनके पास वापस आएँ, डराएँ। ताकि वे (उनसे दीन की बातें सुनकर बुरे कामों से) एहतियात रखें। (122)

दीन की तलाश में सफ़र करना

इस आयत में इस बात का ज़िक्र है कि ग़ज़वा-ए-तबूक में नबी सल्ल. के साथ कूच करने का जब लोगों ने इरादा किया तो पहले बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त का यह ख़्याल हुआ कि रसूलुल्लाह सल्ल. जब जंग के लिये निकलें तो हर मुसलमान पर कूच करना वाजिब है और यही वजह है कि अल्लाह तआ़ला ने कहा:

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا.

यानी हल्के और लदे हुए निकल पड़ो।

और यह भी अल्लाह ने फ़रमाया कि मदीना वालों को कोई हक़ नहीं कि जिहाद में रसूलुल्लाह के पीछे रह जायें (आख़िर तक)। और हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि इस आयत के ज़रिये ऊपर वाली आयत मन्सूख़ हो गई है। और कहा जाता है कि तमाम क़बीलों के सफ़र करने या किसी क़बीले में से बाज़ के सफ़र करने से जबकि सब न निकलें, अल्लाह की मुराद यह है कि सफ़र पर न जाकर नबी सल्ल. के साथ रहने वाले हर उतरने वाली 'वही' को लिख लें, याद रख लें और जंग करके वापस आने वाले लोगों को अल्लाह के अहकाम बतायें और सफ़र से वापस आने वाले यह बतायें कि दुश्मन के साथ कैसी गुज़री और कुफ़्फ़ार के क्या हालात थे। अब इस निर्धारित सफ़र में दो बातें जमा हो गईं- एक विशेष सफ़र उन लोगों का जो जिहाद पर जा रहे हैं, दूसरे उन लोगों का क़ियाम जो दीन में समझ हासिल करने की ग़र्ज़ से हुज़ूर सल्ल. के पास ठहर गये हैं। इसलिये कि ये दोनों काम फ़र्ज़े किफ़ाया हैं। चन्द लोग न करें तो चन्द लोगों का करना ज़रूरी और फ़र्ज़ है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने बताया है कि:

مَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً.

की आयत में अल्लाह पाक फ़रमाता है कि मोमिनों को नहीं चाहिये कि सबके सब नबी सल्ल. के पास से चले जायें और नबी को तन्हा छोड़ दें। और ऐसा क्यों न हो कि हर जमाअ़त में से कुछ लोग जायें ताकि बाक़ी आपके पास दीन की समझ-बूझ हासिल करें। और जब वापस लौटें तो अपनी क़ौम के पास जाकर उन्हें आगाह करें और ख़ुदा से डरायें। और जब तक हज़रत सफ़र की इजाज़त न दें, न जायें। और उन जमाअ़तों की अनुपस्थिति के ज़माने में जो क़ुरआन उतरा है उनको हज़रत के पास रह जाने वाले लोग

वाक़िफ़ करा दें और कहें कि अल्लाह ने नबी पर यह क़ुरआन नाज़िल किया था, हमने सीख लिया, अब तुम सफ़र से वापस आये हो तुम भी सीख लो, और फिर दोबारा दूसरी जमाअ़तें भेजी जायें ताकि वे अपना बचाव कर सकें।

मुजाहिद रह. कहते हैं कि यह आयत नबी-ए-पाक के सहाबा में से उन लोगों के बारे में उतरी है जो दीन सीखकर अपने देहात में चले गये। वहाँ लोगों से फ़ायदे हुए, राहत व आराम मिला। माल भी कमाया और लोगों में दीन की तब्लीग़ भी की, लेकिन लोग उनसे कहने लगे कि तुमने नबी और आपके सहाबा का साथ छोड़ दिया, हमारे पास आ गये, नबी सल्ल. की सोहबत से हट गये, तो वे अपने दिलों में दुख और पीड़ा महसूस करने लगे। वे सब देहात से नबी सल्ल. के पास आये। इसी चीज़ की सफ़ाई में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है कि क्या हर्ज है अगर एक जमाअ़त चल खड़ी हो, राहत व आराम और माली फ़राग़त भी हासिल करे, नबी सल्ल. के साथ रहकर हदीस और अल्लाह की 'वही' भी सुने और देहात में जाकर लोगों को ख़ुदा से डराये भी। क्या अ़जब है कि उनकी हिदायत हो जाये।

क़तादा रह. कहते हैं कि यह आयत उस मौक़े पर उतरी है जबकि हुज़ूर सल्ल. ने लश्कर चढ़ाने के लिये फ़ौज भेजी थी। अल्लाह ने उन्हें इस बात का पाबन्द किया कि नबी सल्ल. के साथ रहकर लड़ें, लेकिन दूसरी जमाअ़त रसूल सल्ल. के साथ रहे ताकि दीन में समझ-बूझ हासिल करे, और एक दूसरी जमाअ़त अपने क़बीले ख़ानदान में देहात की तरफ़ चली जाये और अल्लाह के अ़ज़ाब से उन्हें डराये, वह अ़ज़ाब जो कि उनसे पहली क़ौमों पर नाज़िल हुआ था।

इमाम ज़ह्हाक कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. जब बज़ाते ख़ुद जंग के लिये निकलें तो जो वाक़ई किसी मजबूरी से घिरे हों उनके सिवा किसी को इजाज़त नहीं कि पीछे रह जाये। और अगर आप बज़ाते ख़ुद न जायें बल्कि लश्कर भेज दें तो अब आपकी इजाज़त के बग़ैर कोई लश्कर में शरीक नहीं हो सकता। जब कोई आपके भेजे हुए लश्कर के साथ चला जाये और उसकी ग़ैर-मौजूदगी में जो 'वही' उतरी हो और नबी सल्ल. ने अपने पास के लोगों को सुना दी हो तो जब जंग से यह लश्कर वापस आ जाये तो ठहरे हुए उन्हें सुना दें कि तुम्हारे जाने के बाद यह 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) उतरी है और उन्हें भी दीन में समझ-बूझ पैदा करा दें। सब के सब न चले जाने का हुक्म उस सूरत में है जबकि रसूलुल्लाह सल्ल. ने लश्कर भेज दिया हो और ख़ुद रुक गये हों। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि यह आयत (जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) जिहाद के बारे में नहीं है, बल्कि जब रसूलुल्लाह सल्ल. ने क़बीला मुज़र पर क़हत (सूखे और अकाल) की बददुआ़ फ़रमाई और सब क़हत से ग्रस्त हो गये तो सब मदीना आकर क़ियाम करने लगे, और ग़लत-सलत अपने को मुसलमान बताने लगे। रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा पर उनकी मेहमानदारी एक बोझ होने लगी तो अल्लाह तआ़ला ने 'वही' के ज़रिये रसूल को आगाह फ़रमा दिया कि ये दर हक़ीक़त मुसलमान नहीं हैं, तो हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें अपने-अपने क़बीलों में वापस कर दिया और दोबारा ऐसा करने के बारे में तंबीह फ़रमा दी। चुनाँचे फ़रमायाः

وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ. الى اخره

(और ताकि ये लोग अपनी उस क़ौम को जबकि वे उनके पास आयें डरायें ताकि वे इनसे दीन की बातें सुनकर बुरे कामों से बचें)

इस आयत के बारे में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि अ़रब के हर क़बीले से लोग गिरोह के

Maktaba-E-Ashraf

गिरोह हुज़ूर सल्ल. के पास आने लगे, ये लोग आपसे दीन की बातें पूछते, मसाईल का इल्म हासिल करना चाहते और हुज़ूरे पाक सल्ल. से पूछते कि हमें क्या ख़िदमत अन्जाम देने का हुक्म होता है, और कहिये कि हम अपने क़बीलों में जायें तो क्या करें? नबी करीम सल्ल. उन्हें अल्लाह और रसूल की फ़रमाँबरदारी की तलक़ीन करते और कहते कि अपने लोगों में जाकर नमाज़ और ज़कात को फैलाओ। वे अपनी क़ौम में आकर साफ़ कह देते कि अगर इस्लाम लाते हो तो हम तुम्हारे साथ हैं वरना नहीं, और उन्हें ख़ुदा से डराते यहाँ तक कि ऐसा हिदायत पाने वाला शख़्स अपने माँ बाप से भी क़ता-ताल्लुक़ कर लेता और नबी सल्ल. उनको आगाह करते, ख़ुदा से डराते और वे लोग जब अपने लोगों में वापस जाते तो उन्हें दीने इस्लाम की तरफ़ बुलाते, दोज़ख़ की आग से डराते और जन्नत की ख़ुशख़बरियाँ देते।

हज़रत इक्रिमा कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो मुनाफ़िक़ लोग कहने लगे कि अब तो वे देहाती मुसलमान हलाक हो गये जो हुज़ूर सल्ल. के साथ जिहाद के लिये नहीं निकले थे और पीछे रह गये थे, हालाँकि वे लोग तो नबी करीम सल्ल. के सहाबा में से थे, जो अपनी क़ौम को दीन सिखाने के लिये गये हुए थे और जंग में शरीक न होने का सबब यह मक़सद बना हुआ था। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि यही लोग जंग के लिये क्यों जायें? बाज़ लोग दूसरों को दीन सिखाने के लिये क्यों न रह जायें? और यह आयत नाज़िल हुई।

وَالَّذِيْنَ يُحَاجُّوْنَ فِى اللّٰهِ....... الخ

और जो लोग अल्लाह के दीन के बारे में मुसलमानों से झगड़े निकालते हैं इसके बाद कि वह मान लिया गया, उन लोगों की हुज्जत उनके रब के नज़दीक बातिल है, और उन पर ग़ज़ब वाक़े होने वाला है और उन में क़ियामत को सख़्त अ़ज़ाब होने वाला है। (सूरः शूरा आयत 16)

हज़रत हसन बसरी रह. कहते हैं कि इस आयत का मक़सद यह था कि वे लोग जो जंग के लिये गये हैं, जब अपने लोगों में वापस आयें तो जंग के नतीजे में उन्होंने कुफ़्फ़ार पर जो अपना ग़लबा देखा और इस्लाम की शानदार फ़तह देखी है, उससे लोगों को आगाह करें।

ऐ ईमान वालो! उन कुफ़्फ़ार से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास (रहते) हैं, और उनको तुम्हारे अन्दर सख़्ती पाना चाहिए, और यह यक़ीन रखो कि अल्लाह की (इमदाद) मुत्तक़ी लोगों के साथ है। (123)	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला किसके साथ है?

अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को हुक्म दिया है कि काफ़िरों से लड़ो तो पहले उन लोगों से लड़ो जो इस्लाम के मर्कज़ से ज़्यादा क़रीब हैं (क्योंकि उनसे ज़्यादा ख़तरा है)। इसी लिये हुज़ूर सल्ल. ने मुश्रिकों से जंग शुरू की तो अ़रब के इलाक़े से शुरूआत की। यहाँ से फ़ारिग़ होकर मक्का, मदीना, ताईफ़, यमन, यमामा, हिज्र, ख़ैबर, हज़रे-मौत ग़र्ज़ यह कि अ़रब के इलाक़े और दूसरे राज्यों को पहले फ़तह किया और मुसलमान बना लिया, और अ़रब के क़बीले दीने इस्लाम में गिरोह के गिरोह (यानी भारी संख्या में) शामिल

होने लगे, तो अब अहले किताब से जंगें शुरू होने लगीं और रोम से जंग का इरादा हो गया। ये लोग अरब के इलाके से करीब रहने वाले हैं और इस बात की ज़रूरत है कि दावते इस्लाम की सबसे पहले इन्हीं से शुरूआत हो, और इसलिये भी कि वे अहले किताब हैं। लेकिन तबूक तक पहुँचकर आगे न बढ़े, वापस हो गये, क्योंकि लोगों में तंगहाली, क़हत, हालात की नामुवाफ़क़त थी। यह सन् 9 हिजरी का वाक़िआ है। सन् 15 हिजरी में नबी सल्ल. आख़िरी हज की मसरूफ़ियत रखते थे और हज्जतुल-विदा से इक्यासी दिन बाद नबी सल्ल. का विसाल (इन्तिक़ाल) हो गया। आपके बाद आपके क़ायम-मुक़ाम (उत्तराधिकारी) आपके वज़ीर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुए। इस इन्क़िलाब और मुश्किल के वक़्त दीन में एक लड़खड़ाहट सी आ गयी थी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने सिद्दीक़े अकबर रज़ि. के ज़रिये दीन को फिर मज़बूती अ़ता फ़रमाई। आपने दीन को मज़बूत कर दिया, इसकी चुनौतियाँ फिर साबित हो गयीं और मुर्तद (दीन इस्लाम से फिर जाने वाले) लोगों को फिर दीन की तरफ़ वापस ले आये। जिन्होंने ज़कात देने से इनकार किया था उनको ज़कात अदा करनी पड़ी, और जो दीन के मसाईल से नावाक़िफ़ हो गये थे उनको वाक़िफ़ कर दिया गया और रसूलुल्लाह सल्ल. से मुताल्लिक़ जो फ़राईज़ थे उनको पूरा किया। फिर इस्लामी लश्कर को रोम की तरफ़ भेजा जो सलीब-परस्त थे और ईरान वालों की तरफ़ भी जो आतिश-परस्त (आग को पूजने वाले) थे, अल्लाह तआ़ला ने आपकी बरकत से इन मुल्कों पर फ़तह बख़्शी और किसरा, क़ैसर और उनके मज़हबों को ज़िल्लत उठाना पड़ी। इन दोनों मुल्कों ने जो ख़ज़ाने जमा कर रखे थे उनको ख़ुदा की राह में ख़र्च किया जैसा कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इससे पहले ख़बर दे दी थी। चुनाँचे यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) आपके वसी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के हाथों पूरी हुई।

फिर सिद्दीक़े अकबर रज़ि. के जानशीन (जगह लेने वाले) उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने इसको पूरा किया। उमर रज़ि. के ज़रिये उन कुफ़्फ़ार बेदीनों को बड़ी ज़िल्लत पहुँची। उमर रज़ि. ने मुनाफ़िक़ों और सरकशों का ख़ात्मा (सर्वनाश) किया और पूरब से लेकर पश्चिम तक उनकी सारी सल्तनतों पर ग़ालिब आ गये और क़रीब व दूर के तमाम मुल्कों के ख़ज़ाने व माल इस्लाम के मर्कज़ (केन्द्र) में खिंच आये, और यह सारी दौलत शरीअ़त के हुक्म के मुताबिक़ मुस्तहिक़ लोगों में और सही जगहों पर ख़र्च की गई।

हज़रत उमर रज़ि. ज़िन्दा रहे तो नेक-नाम रहे और जब आपकी वफ़ात हुई तो शहीद थे। अब मुहाजिर व अन्सार हज़रात ने सर्वसम्मति से अमीरुल-मोमिनीन उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. को ख़लीफ़ा बनाया। उस्मान रज़ि. के ज़माने में इस्लाम को बड़ी तरक़्क़ी व नेक-नामी हासिल रही और तमाम दुनिया के इनसानों पर इस्लाम की हुज्जत ग़ालिब आ गई। उन्हीं के ज़माने में पूरब व पश्चिम में सब जगह इस्लाम का बोल-बोला हुआ। अल्लाह के कलिमे का रौब हर जगह के इनसानों पर छा गया और मिल्लते हनीफ़ा (यानी ईमान वालों) ने ख़ुदा के दुश्मनों पर पूर्ण ग़लबा हासिल कर लिया। कभी किसी क़ौम पर मुसल्लत हुए और कभी किसी और पर। या ऐसी क़ौम पर जो उन काफ़िरों और सरकशों से जोड़-तोड़ (संगठन और संबन्ध) रखती है। यह ख़ुदा के इस फ़रमान के तहत था कि:

يَـٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ.

कि ऐ ईमान वालो! उन काफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास रहते हैं और उनको तुम्हारे अन्दर सख़्ती पाना चाहिये और यक़ीन रखो कि अल्लाह तआ़ला की इमदाद मुत्तक़ी लोगों के साथ है।

(सूरः तौबा आयत 123)

Maktab E Ashraf

यानी काफ़िरों से जंग में निहायत सख़्ती से बर्ताव करो। इसलिये कि पूरा मोमिन वह है जो अपनों पर शफ़ीक़ (मेहरबान) हो और काफ़िरों पर सख़्ती से पेश आने वाला हो। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि:

سَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗ....... الخ

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाये तो अल्लाह तआ़ला बहुत जल्द ऐसी क़ौम पैदा कर देगा जिससे उसको (यानी अल्लाह तआ़ला को) मुहब्बत होगी और उनको उससे (यानी अल्लाह तआ़ला से) मुहब्बत होगी, मेहरबान होंगे वे मुसलमानों पर और तेज़ होंगे काफ़िरों पर, जिहाद करते होंगे अल्लाह की राह में और वे लोग किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे और यह अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है जिसको चाहे अ़ता फ़रमायें, और अल्लाह तआ़ला बड़े वुस्अ़त वाले हैं बड़े इल्म वाले हैं। (सूरः मायदा आयत 54) और अल्लाह तआ़ला का क़ौलः

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ.

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग और आपके सोहबत पाये हुए (यानी आपके सहाबी) हैं वे काफ़िरों के मुक़ाबले में तेज़ हैं और आपस में मेहरबान हैं....। (सूरः फ़तह आयत 29) और अल्लाह तआ़ला का क़ौलः

يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ.

ऐ नबी! काफ़िरों से (तलवार से) और मुनाफ़िक़ों से (ज़बान से) जिहाद कीजिये और उन पर सख़्ती कीजिये (ये दुनिया में तो इसके मुस्तहिक़ हैं) और आख़िरत में इनका ठिकाना दोज़ख़ है। (सूरः तौबा आयत 73)

और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मैं नर्मी और मुहब्बत से पेश आने वाला भी हूँ और क़िताल (जंग) करने वाला भी हूँ। यानी दोस्तों के लिये ख़ुश-मिज़ाज और दुश्मनों के साथ जंगजू। अल्लाह ने फ़रमाया है कि काफ़िरों से क़िताल (जंग) करो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और यक़ीन रखो कि अगर तुम ख़ुदा से डरे और उसकी इताअ़त की तो ख़ुदा हर वक़्त तुम्हारे साथ है। यह चीज़ 'क़ुरूने सलासा' (इस्लाम के पहले तीन दौर यानी नबी पाक सल्ल., सहाबा और ताबिईन के दौर) में जो इस उम्मत का बेहतरीन ज़माना गुज़रा है, दीन में निहायत पुख़्ता और मज़बूत थी और यह ज़माना अल्लाह की इताअ़त व फ़रमाँबरदारी के क़ायम करने का था। मुसलमान हमेशा काफ़िरों पर ग़ालिब रहे, हमेशा फ़ुतूहात (उपलब्धियाँ) होती रहीं, दुश्मन हमेशा ख़सारे और ज़िल्लत में रहे।

और जब बादशाहों के दरमियान फ़ितने और इख़्तिलाफ़ात (विवाद और झगड़े) बढ़ गये तो दुश्मनों ने आस-पास के शहरों और इलाक़ों पर नज़रें डालना शुरू कर दीं। इस्लामी मुल्कों की तरफ़ बढ़ने लगे और दुश्मन हुक्मराँ एक दूसरे के साथ गठजोड़ करने लगे। फिर एक दूसरे की मदद से इस्लामी मुल्कों की सीमाओं पर चढ़ आये और मुसलमानों के बहुत से मुल्कों पर क़ब्ज़ा कर लिया। लेकिन जिस किसी इस्लामी बादशाह ने अल्लाह के अहकाम की इताअ़त की, ख़ुदा पर भरोसा किया तो अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़रूर फ़ुतूहात (विजय) इनायत फ़रमाईं और खोये हुए मुल्क और इलाक़े दोबारा हासिल किये जा सके। ख़ुदा से उम्मीद है कि वह मुसलमानों को फिर ग़लबा देगा और सारी दुनिया में तौहीद (इस्लाम) का कलिमा बुलन्द होगा। अल्लाह तो फ़य्याज़ और करीम है।

Maktaba E Ashraf

وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ
اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ
وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝

(पस उनसे डरो मत) और जब कोई (नई) सूरः नाज़िल की जाती है तो उन (मुनाफ़िक़ों) में से बाज़ ऐसे हैं जो (ग़रीब मुसलमानों से मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर) कहते हैं कि (कहो) इस (सूरः) ने तुममें से किसके ईमान में तरक़्क़ी दी। सो (सुनो) जो लोग ईमान वाले हैं उस (सूरः) ने उनके (तो) ईमान में तरक़्क़ी दी है और वे (उस तरक़्क़ी के पाने से) ख़ुश हो रहे हैं। (124) और जिनके दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है, उस (सूरः) ने उनमें उनकी (पहली) गन्दगी के साथ और (नई) गन्दगी बढ़ा दी, और वे कुफ़्र ही की हालत में मर गए। (125)

इन आयतों का नुज़ूल और काफ़िरों का बेजा एतिराज़

ये आयतें उतरीं तो मुनाफ़िक़ लोग आपस में बातें बनाने लगे कि इस सूरः ने भला इन मुसलमानों के अन्दर कौनसी ईमान की ज़्यादती और ख़ूबी व कमाल पैदा कर दिया। अल्लाह पाक फ़रमाता है कि हाँ यह ईमान की ज़्यादती मुसलमानों के अन्दर यक़ीनन पैदा हुई है और वे इससे ख़ुश भी हैं। यह आयत उन बड़ी दलीलों में से है कि ईमान कम भी होता है और ज़्यादा भी होता है, जैसा कि पहले और बाद के अक्सर उलेमा का मज़हब है। बल्कि अक्सर का क़ौल यह है कि इस एतिक़ाद पर उम्मत की सर्वसम्मति है, और हमारी किताब शरह बुख़ारी के शुरू में इस मसले पर तफ़सीली और लम्बी बहस हो चुकी है। लेकिन जिन के दिलों में रोग है उनमें तो इस आयत से और शक ही के अन्दर इज़ाफ़ा होता जायेगा। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ...... الخ

यानी क़ुरआन तो मोमिनों के दिलों को शिफ़ा बख़्शता है। एक और जगह अल्लाह का फ़रमान है:

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ. وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ.

यानी ईमान वालों के लिये क़ुरआन हिदायत और शिफ़ा है, काफ़िरों के कान तो क़ुरआन की तरफ़ से बहरे हैं। उनकी आँखें अन्धी हैं, गोया कि वे बहुत ही दूर से पुकारे जा रहे हैं कि सुन ही नहीं सकते।

यह कितनी बड़ी बदबख़्ती की बात है कि जो चीज़ दिलों को हिदायत करने (यानी उनकी सही रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करने) की सलाहियत रखती है वह उनकी गुमराही व हलाकत का सबब बन जाये। जैसे कि बीमार को अच्छी ग़िज़ा भी दी जाये तो नुक़सान ही पहुँचता है।

اَوَلَا يَـرَوْنَ اَنَّهُـمْ يُـفْتَنُوْنَ فِىْ كُلِّ عَامٍ مَّـرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ٥ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ٥	और क्या उनको नहीं दिखाई देता कि ये लोग हर साल में एक बार या दो बार किसी न किसी आफ़त में फँसे रहते हैं (मगर) फिर भी (अपनी बुरी हरकतों से) बाज़ नहीं आते, और न वे कुछ समझते हैं (जिससे आईन्दा बाज़ आने की उम्मीद हो)। (126) और जब कोई (नई) सूरः नाज़िल की जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं (और इशारे से बातें करते हैं) कि तुमको कोई (मुसलमान) देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। (ये लोग हुज़ूरे पाक की मज्लिस से क्या फिरे) ख़ुदा तआ़ला ने उनका दिल (ही ईमान से) फेर दिया है, इस वजह से कि वे बिल्कुल बे-समझ लोग हैं (कि अपने नफ़े से भागते हैं)। (127)

फ़ितनों की भट्टी

ये मुनाफ़िक़ लोग क्या इतना भी नहीं समझते कि वे साल भर में एक बार या दो बार फ़ितनों में मुब्तला किये जा रहे हैं, फिर भी अपने पिछले गुनाहों से बाज़ नहीं आते, और इस सिलसिले में आईन्दा जो इन पर गुज़रने वाला है उससे नहीं डरते। मुजाहिद रह. कहते हैं कि मुनाफ़िक़ लोग भूख और क़हत-साली (सूखे) के फ़ितनों (आज़माईशों) में मुब्तला किये जाते थे। क़तादा रह. कहते हैं कि जंग की आफ़त उनके सर पर पड़ी थी। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कहते हैं कि हम हर साल कोई न कोई झूठी अफ़वाह सुनते रहते जिससे अक्सर लोग भटक जाते थे। हज़रत अनस रज़ि. से मन्क़ूल है कि सख़्ती का ज़माना बढ़ता जा रहा है, तंगदिली और कम-हिम्मती ज़्यादा हो रही है, हर साल पिछले साल से बदतर (ख़राब और बुरा) आता जा रहा है।

ऊपर बयान हुई आयत मुनाफ़िक़ों के बारे में है कि जब कोई सूरत (क़ुरआन का हिस्सा) नबी सल्ल. पर नाज़िल की जाती है तो वे एक दूसरे को देखकर कहने लगते हैं कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं था, फिर वे हक़ से मुँह फेर लेते हैं। दुनिया में इन मुनाफ़िक़ों का यह हाल है कि न तो हक़ बात के सामने आते हैं न उसको समझते हैं। जैसा कि फ़रमाने ख़ुदा है:

فَمَالَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ...... الخ

(सूरः मुद्दस्सिर आयत 49) और जैसा कि एक और जगह अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ...... الخ

यानी इन लोगों को क्या हुआ कि हक़ बात से मुँह मोड़ते हैं, गोया कि वे जंगली जानवर हैं कि शेरों से भागते हैं, दायें बायें खिसक जाते हैं, हक़ से बातिल की तरफ़ झुक जाते हैं। अल्लाह तआ़ला ने इनके दिलों

को फेर दिया है कि न अल्लाह के ख़िताब को समझते हैं और न समझने की कोशिश करते हैं।

(ऐ लोगो!) तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाए हैं जो तुम्हारी जिन्स (बशर) से हैं, जिनको तुम्हारी नुक़सान की बात निहायत भारी गुज़रती है, जो तुम्हारे फ़ायदे के बड़े इच्छुक रहते हैं, (यह हालत तो सबके साथ है, ख़ास तौर पर) ईमान वालों के साथ बड़े ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान हैं। (128) फिर अगर ये मुँह मोड़ें तो आप कह दीजिए (मेरा क्या नुक़सान है) कि मेरे लिए (तो) अल्लाह (हिफ़ाज़त करने वाला और मदद करने वाला) काफ़ी है, उसके सिवा कोई माबूद होने के लायक़ नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और वह बड़े भारी अ़र्श का मालिक है। (129)	لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ○ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۣلَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ○ ع

नबी करीम सल्ल. कितने शफ़ीक़ व मेहरबान हैं

इस आयत में अल्लाह तआ़ला मोमिनों पर अपना एहसान ज़ाहिर फ़रमाता है कि हमने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से एक रसूल भेजा है, जैसा कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ माँगी थी कि:

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ........الخ

(सूरः ब-क़रह आयत 129) और

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ....... الخ

(सूरः आले इमरान आयत 164) और

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ........

(सूरः तौबा आयत 128)

जाफ़र बिन अबी तालिब ने नज्जाशी (हब्शा के बादशाह) से और मुग़ीरा रज़ि. ने किसरा (ईरान के बादशाह) के दूत से कहा था कि अल्लाह ने हम में हमारी क़ौम ही का एक रसूल भेजा है, जिसके नसब (ख़ानदान) से हम वाक़िफ़ हैं। जिसकी सिफ़ात हम जानते हैं, जिसके उठने-बैठने आने-जाने सच्चाई व अमानत सब ही बातों से वाक़िफ़ हैं। इस्लाम से पहले के ज़माने से भी जिसके ख़ानदान पर कोई धब्बा नहीं। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि मेरा सारा नसब निकाह की बुनियाद पर रहा, कहीं किसी ज़िना का शायबा (यानी मामूली सा शुब्हा या तोहमत भी) नहीं। आदम के ज़माने से अब तक मेरे बाप-दादा में कोई बग़ैर निकाह के पैदा नहीं हुआ। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ........

यानी उम्मत पर कोई तकलीफ़ उसके लिये बहुत ही शाक़ (भारी) है। हदीस में है किः

بعثتُ بالحنيفيّةِ السمحة.

यानी मैं आसान दीन लेकर आया हूँ।

सही हदीस में है कि यह शरीअ़त बहुत आसान है। अल्लाह ने बहुत आसान करके भेजा है। उन्हें (यानी नबी पाक सल्ल. को) बड़ी तमन्ना रहती है कि तुम हिदायत पा जाओ और दुनिया व आख़िरत की कामयाबी हासिल करो। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कहते थे कि हुज़ूर सल्ल. ने हमें इस क़द्र मालूमात का भंडार दिया है कि फ़र्ज़ करो कि कोई परिन्दा जो आसमान पर उड़ता है उसके बारे में भी मालूमात बख़्शीं। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि जन्नत से क़रीब करने वाली और दोज़ख़ से दूर करने वाली कोई बात ऐसी बाक़ी न रही जो मैंने तुम्हें न बता दी हो। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि अल्लाह पाक ने हर हराम और नाजायज़ चीज़ के मुताल्लिक़ मुकम्मल तौर पर तुम्हें समझा दिया है। अगर तुम उसके बयान की हुई नाजायज़ और हराम बातों से दूर न रहोगे तो मैं तुम्हें बतला देता हूँ कि दोज़ख़ के शोलों में ऐसे गिरोगे जैसे परवाना (पतंगा) शमा पर गिरता है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. के पास दो फ़रिश्ते आये, उस वक़्त आप सो रहे थे। एक पायेंती पर बैठ गया और एक सिरहाने। पायंती वाले फ़रिश्ते ने सिरहाने वाले से कहा कि इनके और इनकी उम्मत के ऊपर फ़िट बैठने वाली कोई मिसाल बयान करो। वह कहता है कि आपकी मिसाल उम्मत के साथ ऐसी है जैसे लोग सफ़र करते हुए एक सुनसान जगह, वीराने और जंगल में पहुँच गये हों। खाने-पीने वग़ैरह का कुछ भी सामान बाक़ी न रहा हो, न आगे सफ़र जारी रख सकते हैं न ही वापस होने की कोई सूरत है। ऐसे में अच्छे लिबास और अच्छी हालत वाला एक आदमी उनके पास आता है और कहता है कि क्या मैं तुम्हें यहाँ से निकाल कर ऐसे बाग़ों में ले चलूँ जो हरे-भरे हों, नहरें और हौज़ हों। क्या मेरे साथ चलोगे? वे बड़ी ख़ुशी से राज़ी हो जाते हैं, वह उन्हें ले चलता है, वह उन्हें हरे-भरे बाग़ में ले आता है, वे ख़ूब मेवे खाते हैं, पानी से सैराब होते हैं और ख़ूब फलते फूलते हैं। फिर उनसे कहता है क्या मैंने तुम्हारे साथ ख़ैरख़्वाही (भलाई और हमदर्दी) का हक़ अदा नहीं किया और क्या तुम्हें ऐसी हरी-भरी और बेहतरीन जगह पर नहीं पहुँचाया? अब सुनो! आगे और बाग़ात ऐसे हैं जो इससे भी ज़्यादा बहार वाले हैं, इससे भी कहीं ज़्यादा अच्छे हौज़ हैं, आओ तुम्हें अब वहाँ ले चलूँ। तो बाज़ ने कहा तुमने पहले भी सच कहा था और अब भी सच कह रहे हो, हम ज़रूर तुम्हारे साथ हैं। और बाज़ ने कहा हम तो यहीं अच्छे हैं, हमें यही काफ़ी है, और राहतों की ज़रूरत नहीं। ये वे लोग हैं जो दुनिया के पीछे ही दीवाने हो गये हैं आ़क़िबत (आख़िरत और अन्जाम) की ख़बर नहीं लेते। हालाँकि यहाँ से कहीं ज़्यादा वहाँ राहत व ऐश मयस्सर है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि एक देहाती नबी सल्ल. के पास आया और आपसे माली (आर्थिक) मदद माँगी। इक्रिमा कहते हैं- मैं समझता हूँ कि ख़ून-बहा अदा करने के लिये मदद चाही थी। आपने उसको कुछ दिया और फ़रमाया लो मैंने तुम्हारा काम निकाल दिया और तुम्हारे साथ सुलूक (यानी अच्छा व्यवहार) किया। उसने कहा नहीं! कोई एहसान नहीं किया। यह सुनकर बाज़ सहाबा सख़्त गुस्से में आ गये और उस पर हाथ छोड़ने का इरादा किया। हज़रत रसूले पाक सल्ल. ने इशारे से उन्हें मना कर दिया। आप उठकर अपनी मन्ज़िल (ठिकाने और मकान) पर तशरीफ़ ले गये और देहाती को बुला भेजा।

फ़रमाया तुमने माँगा और मैंने दिया, और ख़ैर तुमने जो कहा सो कहा, अच्छा यह और भी लो, और फिर पूछा अब भी मेरा सुलूक तुम्हारे साथ अच्छा रहा या नहीं? देहाती ने कहा हाँ! अल्लाह आपको जज़ा-ए-ख़ैर दे। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया मेरे साथी तुम्हारी तरफ़ से बरगश्ता हो गये हैं, अब तुम उनके सामने जाओ तो इस वक़्त तुमने मुझसे जो कहा है उनके सामने भी तस्दीक़ कर दो ताकि उनके दिल की ख़लिश (चुभन) निकल जाये। कहा अच्छा। पस जब देहाती आया तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि इसने आकर सवाल किया था मैंने दिया लेकिन इसने जो कहा था तुम जानते हो मैंने इसे बुलाकर और दिया है, अब यह राज़ी है, क्यों ऐ बदवी! यह बात ठीक है? बदवी ने कहा हाँ! ख़ुदा आपको बेहतरीन बदला दे।

नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेरी और बदवी (देहाती) की मिसाल ऐसी है जैसे किसी की ऊँटनी हो। वह बिदक गई, लोग उसके पीछे दौड़े, ऊँटनी और भी भाग खड़ी हुई, तो ऊँटनी वाले ने कहा तुम इसको पकड़ने और क़ब्ज़े में करने का मामला मुझ पर छोड़ दो। मैं इसके अन्दाज़ से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ मैं इसको नर्म कर लूँगा। फिर उसने घास ली और उसे बुलाया, वह आ गई, उसको घास खिलाकर पकड़ लिया और उस पर पालान डाल दिया। अगर उसकी बदतमीज़ी की बात करने पर मैं भी तुम्हारी तरह नाराज़ हो जाता तो वह दोज़ख़ी बन जाता। लेकिन यह हदीस ज़ईफ़ है। वल्लाहु आलम

अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ.

कि वह (नबी पाक) ईमान वालों के साथ बड़े ही शफ़ीक़ व मेहरबान हैं।

चुनाँचे इस आयते करीमा में भी यही हुक्म होता है कि जो पाक शरीअ़त तुम लाये हो अगर ये लोग उससे पीठ फेरें तो कह दो कि मुझे अल्लाह काफ़ी है, मैं तुम पर नहीं उस पर भरोसा रखता हूँ। ख़ुदा हर चीज़ का मालिक और ख़ालिक़ है, और वह अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है। उसका अ़र्शे अ़ज़ीम मख़्लूक़ात के लिये छत बना हुआ है। ज़मीन व आसमान की सारी मख़्लूक़ उसके अ़र्श के नीचे है, सारी मख़्लूक़ उसके क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में है, उसका इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है।

हज़रत उबई इब्ने कअ़ब कहते हैं कि क़ुरआने करीम की आख़िरी आयत:

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ......

है (यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है) और यह कि क़ुरआन की तमाम आयतें और सूरतें हज़रत अबू बक्र रज़ि. की ख़िलाफ़त में तरतीब के साथ क़ुरआन की शक्ल में जमा की गईं। लोग लिखते जाते थे और उबई बिन कअ़ब लिखवाते जाते थे। जब सूरः बराअत (इस सूरत का दूसरा नाम सूरः तौबा भी है) की इस आयत पर पहुँचे:

ثُمَّ انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم.

(सूरः तौबा की आयत 127) तो यह गुमान किया गया कि यह क़ुरआन की आख़िरी आयत है, तो उबई बिन कअ़ब ने उनसे कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इसके बाद मुझे ये दो आयतें भी सुनाई थीं:

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ..........

यानी सूरत की यही दो आख़िरी आयतें जिनकी तफ़सीर चल रही है।

Maktab E Ashraf

और कहा कि यह क़ुरआन की आख़िरी आयत है और इसी पर ख़त्म है, जिससे शुरूआ़त हुई थी। यानी उस ख़ुदा के नाम पर जिसके सिवा और कोई ख़ुदा नहीं, इसी के बारे में अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ.

और हमने आपसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसके पास हमने यह 'वही' न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई माबूद होने के लायक़ नहीं पस मेरी ही इबादत किया करो। (सूरः अम्बिया आयत 25)

अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि. के पास हारिस बिन ख़ुज़ैमा ने ये दो आयतें पेश की थीं जो सूरः बराअत के आख़िर की हैं। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया कि इस 'वही' की गवाही और कौन दे सकता है? हारिस ने कहा यह तो मुझे इल्म नहीं कि और कौन इसको जानता है, लेकिन ख़ुदा की क़सम मैंने ख़ुद इसको नबी सल्ल. से सुना है और इसको ख़ूब याद रखा है। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मैंने इसे रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है। फिर फ़रमाया कि अगर ये कम से कम तीन आयतें होतीं तो मैं इनको एक अलग सूरत क़रार दे देता। तुम इसे क़ुरआन में कहीं रख दो। चुनाँचे इसको सूरः बराअत (सूरः तौबा) के आख़िर में रख दिया गया।

नोटः इस जगह हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कश्मीरी रह. ने लिखा है कि 'कहीं रख दो' का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि जहाँ जी चाहे रख दो, बल्कि मतलब यह है कि जब ये आयात हैं तो सहाबा से मालूम करो कि ये कहाँ की आयतें हैं और उनके बताने के मुताबिक़ इनको क़ुरआन में शामिल कर दो। याद रखना चाहिये कि क़ुरआन की सूरतों और आयतों की पूरी तरतीब भी अल्लाह की तरफ़ से क़ायम की हुई है, इसमें किसी की अ़क़्ली कार्रवाई का कोई दख़ल नहीं। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

यह बात पहले गुज़र चुकी है कि उमर बिन ख़त्ताब ही ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. को मश्विरा दिया था कि क़ुरआन की सारी आयतों को तलाश करके एक जगह जमा कर लेना बेहतर और वक़्त की ज़रूरत है। चुनाँचे हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने ज़ैद बिन साबित रज़ि. को क़ुरआन के जमा करने का हुक्म दिया। वह क़ुरआन को जमा और तरतीब करते जाते थे और हज़रत उमर भी वहाँ मौजूद होते। सही हदीस में है कि हज़रत ज़ैद रज़ि. ने कहा कि सूरः बराअत का आख़िरी हिस्सा मैंने ख़ुज़ैमा बिन साबित या अबी ख़ुज़ैमा के पास देखा है और यह भी हमने बयान कर दिया कि सहाबा रज़ि. की एक जमाअ़त ने इसका ज़िक्र नबी सल्ल. के सामने किया जैसा कि ख़ुज़ैमा बिन साबित ने कहा था। वल्लाहु आलम

हज़रत अबू दर्दा रज़ि. बयान करते हैं कि इसको जो सुबह शाम सात बार पढ़ लिया करेः

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ.

हस्बियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अ़लैहि तवक्कल्तु व हु-व रब्बुल-अ़र्शिल् अ़ज़ीम।

तो अल्लाह तआ़ला उसके सारे काम बना देगा और जो इरादा कर रहा हो उसको पूरा करेगा।

एक रिवायत में है कि सच्चे दिल से पढ़ा हो या नहीं। लेकिन इस जुमले का बढ़ाना ग़रीब है। एक मरफ़ूअ़ रिवायत में भी इस तरह मज़कूर है लेकिन यह भी नाक़ाबिले तस्लीम है। वल्लाहु आलम

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः बराअत (यानी सूरः तौबा) की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः यूनुस

सूरः यूनुस मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 109 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ○ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ○	ये हिक्मत से भरी किताब (यानी क़ुरआन) की आयतें हैं। (1) क्या उन (मक्का के) लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हमने उनमें से एक शख़्स के पास 'वही' भेज दी कि (ख़ुदा तआ़ला के अहकाम के ख़िलाफ़ करने पर) सब आदमियों को डराइये, और जो ईमान ले आएँ उनको यह ख़ुशख़बरी सुनाइये कि उनके रब के पास (पहुँचकर) उनको पूरा मर्तबा मिलेगा। काफ़िर कहने लगे (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) कि यह शख़्स तो बिला शुब्हा खुला जादूगर है। (2)

हैरानी और ताज्जुब क्यों?

हुरूफ़े मुक़त्तआ़त जो सूरतों के शुरू में हुआ करते हैं इन पर कलाम पहले गुज़र चुका है, और सूरः ब-क़रह के शुरू में इस पर काफ़ी लम्बी और विस्तृत गुफ़्तगू हो चुकी है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि 'अलिफ़ लाम रा' से 'अनल्लाहु अरा' मुराद है, यानी मैं ख़ुदा हूँ और सब कुछ देख रहा हूँ। इमाम ज़ुहाक वग़ैरह ने भी ऐसा ही कहा है। यह क़ुरआने मोहकम व मुबीन की आयतें हैं। मुजाहिद का भी यही क़ौल है। हज़रत हसन रह. कहते हैं कि किताब से मुराद तौरात व ज़बूर हैं। क़तादा रह. का ख़्याल है कि किताब से मुराद वे तमाम इल्हामी (अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुई) किताबें हैं जो क़ुरआन से पहले थीं। लेकिन यह ख़्याल ज़्यादा सही नहीं है। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا.

काफ़िर लोग तो ताज्जुब करते हैं। इस पर अल्लाह पाक फ़रमाता है कि इसमें ताज्जुब की कौनसी बात है कि पैग़म्बर एक बशर और आदमियों में से हों। जैसा कि अल्लाह पाक ने पहले ज़मानों के काफ़िरों का क़ौल नक़्ल फ़रमाया है कि:

اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا.......

यानी क्या कोई बशर (इनसान) हमें हिदायत करेगा?

Maktab-e-Ashraf

यहाँ काफ़िरों की मुराद हूद या सालेह अ़लैहिमस्सलाम से थी। हूद अ़लैहिस्सलाम कहते हैं- इसमें ताज्जुब की क्या बात है कि अगर तुम्हीं में से किसी पर 'वही' भेजी गई और उसे पैग़म्बर बनाया गया? चुनाँचे क़ुरैश के काफ़िरों से मुताल्लिक़ अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- काफ़िर कहते हैं कि मुहम्मद ने तो सारे ख़ुदाओं का एक ख़ुदा बना दिया, और यह बड़ी ही अ़जीब बात है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब अल्लाह ने मुहम्मद सल्ल. को रसूल बनाकर भेजा तो अ़रब वालों ने इनकार कर दिया और कहने लगे कि अल्लाह की शान तो इससे बड़ी है कि मुहम्मद जैसे शख़्स को रसूल बनाकर भेजे, तो अल्लाह ने फ़रमाया कि इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं।

अल्लाह के क़ौल 'अन्-न लहुम क़-द-म सिद्क़िन्' के बारे में मतभेद है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि 'क़-द-म सिद्क़िन्' से मुराद यह है कि पहले ही बयान पर तस्दीक़ करना और सआ़दत हासिल कर लेना, और अपने आमाल का अच्छा बदला पाना है। यह बिल्कुल ख़ुदा के इस क़ौल की तरह है:

لِيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا.

'ताकि उन्हें जंग और सख़्त अ़ज़ाब से डराये'

'क़-द-म सिद्क़िन्' के बारे में मुजाहिद कहते हैं कि इससे नेक आमाल मुराद हैं, जैसे नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, तस्बीह और पैग़म्बर की शफ़ाअ़त। क़तादा रह. 'सलफ़े सिदक़' मुराद लेते हैं। इब्ने जरीर रह. ने मुजाहिद की ताईद करते हुए नेक आमाल मुराद लिया है, जैसा कि कहा जाता है:

لَهٗ قَدم صِدْقٍ فِى الْاِسْلَام.

यानी इस्लाम में आने के बाद उसके आमाल अच्छे हो गये। हज़रत हस्सान रज़ि. का शे'र है:

لنا القدم العليا اليك وخلفنا ☆ لاولنا فى طاعة الله تابع

"हमारे आमाल और हमारे तौर-तरीक़े तुम्हारे साथ सच्चे हैं और अल्लाह की इताअ़त के बारे में हमारे बाद वाले अपने पहले वालों के ताबे हैं"

ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि इसके बावजूद हमने उन्हीं में से एक शख़्स को बशीर (ख़ुशख़बरी देने वाला) और नज़ीर (डराने वाला) बनाकर भेजा, फिर भी ये काफ़िर कहते हैं कि तू यक़ीनन जादूगर है। ये काफ़िर बिल्कुल झूठे हैं।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ط مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ط ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ط اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ٥	बेशक तुम्हारा (हक़ीक़ी) रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को छह दिन (की मात्रा) में पैदा कर दिया, फिर अ़र्श (यानी तख़्ते शाही) पर क़ायम हुआ, वह हर काम की (मुनासिब) तदबीर करता है, (उसके सामने) कोई सिफ़ारिश करने वाला (सिफ़ारिश) नहीं (कर सकता) बिना उसकी इजाज़त के। ऐसा अल्लाह तुम्हारा (हक़ीक़ी) रब है, सो तुम उसकी इबादत करो (और शिर्क मत करो), क्या तुम (इन दलीलों के सुनने के बाद) फिर भी नहीं समझते। (3)

Maktab E Ashraf

कायनात का रब

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि अल्लाह तमाम आ़लम का परवर्दिगार है, उसने ज़मीनों और आसमानों को छह दिन में पैदा किया (यह गोया बन्दों के लिये एक तालीम थी कि वे जल्दबाज़ी से काम न लें, वरना अल्लाह तआ़ला पलक-झपकने से भी कम में सारे जहान के पैदा करने पर क़ादिर है)। कहा गया है कि ये दिन हमारे दिनों जैसे थे, और यह भी कहा गया है कि हज़ार साल का एक दिन था, जिसका बयान आगे आयेगा। फिर वह अ़र्शे अ़ज़ीम पर (अपनी शान के मुताबिक़) क़ायम हो गया और अ़र्श सब मख़्लूक़ात में बड़ी मख़्लूक़ है। वह सुर्ख़ याक़ूत का बना हुआ है, या यह कि वह भी ख़ुदा का एक नूर है। ख़ुदा तआ़ला सारी मख़्लूक़ात का इन्तिज़ाम करने वाला, सरपरस्त और कफ़ील है। उसकी निगरानी व इल्म से ज़मीन व आसमानों का एक ज़र्रा भी बचा या छूटा नहीं। एक तरफ़ तवज्जोह उसको दूसरी तरफ़ की तवज्जोह से नहीं रोक सकती, उसके लिये कोई बात भी ग़लत तौर पर बाक़ी नहीं रह सकती। पहाड़ों, समुद्रों, आबादियों और जंगलों में कहीं भी कोई बड़ी तदबीर (इन्तिज़ाम व व्यवस्था) छोटी चीज़ की तरफ़ से उसका ध्यान नहीं हटा सकती। कोई जानदार भी दुनिया में ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ ख़ुदा के ज़िम्मे न हो। एक चीज़ भी हरकत करती है, एक पत्ता भी गिरता है तो वह उसका इल्म रखता है। ज़मीन की अंधेरियों में कोई ज़र्रा ऐसा नहीं और न कोई तर व ख़ुश्क ऐसा है जो उसकी लौहे-महफ़ूज़ यानी इल्म की किताब में न हो।

जिस वक़्त यह आयत उतरीः

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ.

(यानी जिस आयत की तफ़सीर चल रही है) तो मुसलमानों को एक बड़ा क़ाफ़िला आता दिखाई मालूम हो रहा था, कि देहाती लोग हैं। लोगों ने पूछा तुम कौन लोग हो? कहा हम जिन्न हैं। इस आयत के सबब हम शहर से निकल पड़े हैं। और अल्लाह तआ़ला का क़ौलः

مَامِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْ بَعْدِ اِذْنِهٖ.

यानी कोई उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी की शफ़ाअ़त न कर सकेगा। यह क़ौल ख़ुदा तआ़ला के इस क़ौल के मुताबिक़ हैः

مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ.

यानी कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी जनाब में किसी की सिफ़ारिश कर सके।

और

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ....... الخ

यानी उन लोगों ने इबादत के लिये ख़ुदा ही की ज़ात को ख़ास कर लिया है। और ऐ मुश्रिको! तुम इबादत में अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदाओं को भी शरीक कर लेते हो हालाँकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि पैदा करने वाला ख़ुदा एक ही है, उसके सिवा किसी की इबादत नहीं हो सकती। ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि अगर तुम उनसे पूछो कि तुम्हें किसने पैदा किया? तो स्वीकार कर लेंगे कि अल्लाह ने। और अगर पूछो कि अ़र्शे अ़ज़ीम और सातों आसमानों का ख़ुदा कौन है? तो फ़ौरन बोल उठेंगे कि अल्लाह है।

तो उनसे पूछो कि फिर उस ख़ुदा से डरते क्यों नहीं हो? और शिर्क क्यों करते हो?

तुम सबको उसी के (यानी अल्लाह ही के) पास जाना है, अल्लाह ने (इसका) सच्चा वायदा कर रखा है। बेशक वही पहली बार भी पैदा करता है फिर (क़ियामत में) वही दोबारा भी पैदा करेगा, ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, इन्साफ़ के साथ (पूरा-पूरा) बदला दे। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके वास्ते (आख़िरत में) पीने को खौलता हुआ पानी मिलेगा और दर्दनाक अ़ज़ाब होगा, उनके कुफ़्र की वजह से। (4)	اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ○

कायनात उलट-पुलट हो जायेगी

अल्लाह पाक ख़बर देता है कि क़ियामत के दिन मख़्लूक़ का लौटना उसकी तरफ़ होगा। हर जानदार जिसको उसी ने पैदा किया है वह फिर ज़रूर उसकी तरफ़ लौटाया भी जायेगा। क्योंकि जैसे पहले किया था दोबारा भी उसी को पैदा कर सकता है, और नेक आमाल की जज़ा (बदला) अ़दल (इन्साफ़) के साथ देगा, कम न करेगा। और काफ़िरों को उनके कुफ़्र के सबब क़ियामत में विभिन्न और अनेक अ़ज़ाब दिये जायेंगे। जैसे गर्म हवायें, खौलता हुआ पानी और इसी तरह के दूसरे सख़्त अ़ज़ाब। यह जहन्नम जिसे ये काफ़िर झुठला रहे हैं इसी में दिन-रात इनका ठिकाना होगा, और गर्म पिघले हुए ताँबे की तरह का पानी पीने को मिलेगा।

वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चाँद को (भी) नूरानी बनाया, और उस (की चाल) के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं, ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। अल्लाह तआ़ला ने ये चीज़ें बेफ़ायदा पैदा नहीं कीं। वह ये दलीलें उन लोगों को साफ़-साफ़ बतला रहे हैं जो समझ रखते हैं। (5) बेशक रात और दिन के एक के बाद एक के आने में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उन सबमें उन लोगों के वास्ते (तौहीद की) दलीलें हैं जो डर मानते हैं। (6)	هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ○ اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ○

Maktab E Ashraf

चाँद और सूरज

अल्लाह पाक इस बात की ख़बर दे रहा है कि अल्लाह तआ़ला ने कैसी-कैसी निशानियाँ क़ायम कीं जिनसे उसकी कमाले क़ुदरत, बड़ाई और अ़ज़ीम बादशाहत पर दलालत होती है। सूरज के अन्दर से निकलने वाली किरनों को उसने तुम्हारे लिये रोशनी बनाया और चाँद की रोशनी को तुम्हारे लिये नूर बनाया। सूरज की रोशनी अलग क़िस्म की है और चाँद की रोशनी अलग तरह की है। रोशनी एक ही है फिर भी दोनों में बड़ा फ़र्क़ है, कि एक रोशनी दूसरी से मेल नहीं खाती। दिन में सूरज की बादशाहत है तो रात में चाँद की, दोनों आसमानी जिस्म और चीज़ें हैं लेकिन सूरज की मन्ज़िलें (घटना-बढ़ना) मुक़र्रर नहीं कीं और चाँद की मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं। पहली तारीख़ को चाँद निकलता है तो बहुत ही छोटा होता है, फिर उसकी रोशनी भी बढ़ती जाती है, और आकार भी बढ़ता जाता है, यहाँ तक कि कामिल (पूरा) हो जाता है, गोल दायरा बन जाता है। उसके बाद फिर घटना शुरू होता है और पूरे एक महीने बाद फिर अपनी पहली हालत पर आ जाता है। जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमायाः

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ..... الخ

चाँद के लिये हमने घटने और बढ़ने की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दी हैं कि वह घट-घटकर पुरानी सूखी टहनी की तरह हो जाता है, न तो सूरज चाँद को जा पकड़ता है और न रात ही दिन से आगे बढ़ जाती है। हर एक अपने अपने ज़ाब्ते (नियम) और क़ानून के हिसाब से अपने अपने मदार (घूमने की जगह और दायरे) पर घूम रहा है। एक और जगह अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا.

सूरज और चाँद का अपना अपना हिसाब है। इस आयते करीमा में बताया गया है कि सूरज के ज़रिये दिन पहचाने जाते हैं और चाँद की गर्दिश से महीनों और सालों का हिसाब लगता है। अल्लाह तआ़ला ने इनको बेकार पैदा नहीं किया है, बल्कि दुनिया की हर मख़्लूक़ में अल्लाह की एक विशाल हिक्मत छुपी हुई है और उसकी क़ुदरत पर एक बड़ी हुज्जत है। जैसा कि फ़रमायाः

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا. الخ

यानी हमने आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है उसको बेकार पैदा नहीं किया। यह काफ़िरों का गुमान है, काफ़िरों पर दोज़ख़ की हलाकत है। एक और जगह अल्लाह का क़ौल है:

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ..... الخ

क्या तुम यह समझते हो कि हमने तुमको बेकार पैदा कर दिया, यूँही बेकार पैदा होकर तुम यूँही बेकार मर गये और फिर हमारी तरफ़ लौटाये नहीं जाओगे? अल्लाह की ज़ात बुलन्द व बाला है, वह ख़ुदा-ए-वाहिद बड़ी शान वाले अ़र्श का रब है।

आयतों का मतलब यह है कि हम हुज्जत और दलीलें खोल-खोलकर बयान करते हैं ताकि समझने वाले समझ जायें। रात व दिन का एक दूसरे से अलग (और भिन्न) होने का मतलब यह है कि दिन जाता है तो रात आती है, और रात जाती है तो दिन आता है। एक दूसरे पर ग़ालिब आकर एक ही जगह ठहर नहीं जाता। जैसा कि एक जगह अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

Maktab E Ashraf

يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا.

रात दिन पर छा जाती है और दिन रात पर छा जाता है, मगर क्या मजाल कि सूरज चाँद से जा मिले। एक और जगह अल्लाह फ़रमाता है:

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا.

सुबह को पौ फूटती है और रात सुकून से गुज़रती है। ख़ुदा ने आसमान व ज़मीन में जो कुछ पैदा किया है वे इस बात की निशानियाँ हैं कि उसकी क़ुदरत कितनी अज़ीम है। जैसा कि अल्लाह का क़ौल है:

وَكَأَيِّنْ مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ.

ज़मीन व आसमान में ख़ुदा की कितनी ही निशानियाँ भरी पड़ी हैं। एक और जगह फ़रमाया:

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي الْآيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ.... الخ

ग़ौर करो कि आसमान व ज़मीन में क्या कुछ निशानियाँ हैं, और काफ़िरों को तंबीह और सचेत करने वाली क्या-क्या दलीलें नहीं? तथा अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वे आसमान व ज़मीन पर इधर-उधर अपने आगे और पीछे नज़र नहीं डालते, ये निशानियाँ अ़क्ल वालों के लिये और ख़ुदा के अ़ज़ाब व सज़ा से बचने वालों के लिये हैं।

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ○	जिन लोगों को हमारे पास आने का खटका नहीं है और वे दुनियावी ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए हैं (आख़िरत की तलब बिल्कुल नहीं करते) और उसमें जी लगा बैठे हैं (आईन्दा की कुछ ख़बर नहीं), और जो लोग हमारी आयतों से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं (7) ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से दोज़ख़ है। (8)

दुनियावी ज़िन्दगी पर क़नाअ़त

जो बदबख़्त लोग क़ियामत के दिन अल्लाह से मिलने का इनकार करते हैं और अल्लाह के दीदार का ज़रा भी यक़ीन नहीं, सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी के तालिब हैं और इसी दुनिया से वे ख़ुश हैं, इस आयत में उन्हीं से मुताल्लिक़ ख़बर दी गई है। हसन रह. कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम! इन काफ़िरों ने दुनियावी ज़िन्दगी को न तो संवारा न इसको ऊँचा उठाया और फिर इस ज़िन्दगी से राज़ी भी हो गये, वे ख़ुदा की निशानियों से बड़े ही ग़ाफ़िल हैं, ज़रा भी अपनी ज़िन्दगी पर सोच-विचार नहीं करते। क़ियामत के दिन उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और यह ठीक बदला है उनके दुनियावी आमाल का। क्योंकि ख़ुदा, रसूले ख़ुदा और आख़िरत के दिन से उन्होंने जो इनकार किया और जो गुनाह, नाफ़रमानी और बुराईयाँ कीं, उनका तक़ाज़ा यही था।

Maktab E Ashraf

(और) यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, उनका रब उनके मोमिन होने की वजह से उनके मक़सद (यानी जन्नत) तक पहुँचा देगा। उनके (ठिकाने के) नीचे नहरें जारी होंगी, चैन के बाग़ों में। (9) उनके मुँह से यह बात निकलेगी कि सुब्हानल्लाह! और उनका आपस में सलाम उसमें यह होगा, अस्सलामु अ़लैकुम! और उनकी (उस वक़्त की उन बातों में) आख़िरी बात यह होगी, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन। (10)	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ○ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

ع

अच्छा अन्जाम

यहाँ उन ख़ुशनसीबों की ख़बर दी जा रही है जो ईमान लाये और पैग़म्बरों की तस्दीक़ की, अल्लाह व रसूल के हुक्म माने, नेक अ़मल किये, और यह वादा किया गया कि उनके नेक आमाल की बिना पर उन्हें हिदायत बख़्शी जाये। यहाँ 'बि-ईमानिहिम' का 'ब' सबब के लिये हो सकता है, यानी दुनिया में उनके ईमान लाने के सबब क़ियामत के रोज़ अल्लाह तआ़ला उन्हें सीधे रास्ते पर क़ायम रखेगा, यहाँ तक कि वे उसको तय कर लेंगे और जन्नत तक जा पहुँचेंगे। और यह भी हो सकता है कि यह 'ब' मदद के लिये हो, जैसा कि मुजाहिद रह. ने कहा है और मतलब यह है कि उनके साथ एक नूर होगा जिसकी मदद से वे रास्ता चलेंगे। और इब्ने जरीर का क़ौल है कि उनके आमाल एक अच्छी प्रतिमा और ख़ुशबूदार हवा की शक्ल में होंगे और जब क़ब्र से उठेंगे तो ये ख़ूबसूरत शक्लें (प्रतिमायें) उनके आगे-आगे चलेंगी और उन्हें हर तरह की ख़ैर और भलाई की ख़ुशख़बरी देती रहेंगी, और जब वह नेक काम करने वाला पूछेगा कि तुम कौन हो? तो वे कहेंगी हम तुम्हारे नेक आमाल हैं। अब वे शक्लें और मुजस्समे उसके सामने नूर बनकर चलते रहेंगे और जन्नत तक उसे ला छोड़ेंगे। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने कहा है:

يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ.

यानी उनका रब उनको उनके मोमिन होने की वजह से उनके मक़सद यानी जन्नत तक पहुँचा देगा।

और काफ़िर के आमाल निहायत बदसूरत शक्ल में होंगे और निहायत बदबूदार हवा का जिस्म इख़्तियार करेंगे। वे अपने साथी के साथ चलते रहेंगे और दोज़ख़ में ला गिरायेंगे। क़तादा रह. का भी यही क़ौल है। वल्लाहु आलम

जन्नत वालों का यह हाल होगा कि उनकी ज़बान पर 'सुब्हानकल्लाहुम्-म' होगा। इब्ने जुरैज कहते हैं कि जब उनके पास से कोई परिन्दा उड़ता हुआ गुज़रेगा जिसकी ख़्वाहिश उन्हें पैदा होगी तो उपरोक्त कलिमा ज़बान पर लायेंगे, यही उनका बुलावा होगा। तो एक फ़रिश्ता उनकी पसन्दीदा चीज़ें लेकर हाज़िर हो जायेगा, सलाम करेगा, वे सलाम का जवाब देंगे। चुनाँचे फ़रमाया:

تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ

वे जब खा चुकेंगे तो अल्लाह का शुक्र और तारीफ़ किया करेंगे। इसी लिये कहाः

وَاٰخِرُ دَعْوٰهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

यानी उनकी उस वक़्त की बातों में आख़िरी बात यह होगी 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन' यानी तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जो तमाम जहानों का रब है।

मुक़ातिल बिन हय्यान कहते हैं कि जब जन्नत वाले कोई खाने की चीज़ मंगवाना चाहेंगे तो 'सुब्हानकल्लाहुम्-म' कहेंगे, तो उसके पास दस हज़ार ख़ादिम सोने के ख़्वान (तश्तरी) लिये हाज़िर हो जायेंगे, हर ख़्वान में एक ताज़ा-ताज़ा खाना होगा। वह हर एक में से कुछ न कुछ खायेगा। सुफ़ियान सौरी कहते हैं कि जब कोई शख़्स कोई चीज़ माँगेगा तो 'सुब्हान-क' कहेगा और यह आयतः

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلَامٌ

वाली आयत के जैसी है। एक और जगह अल्लाह का क़ौल हैः

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا.

(और) न वहाँ बक-बक सुनेंगे और न कोई और बेहूदा बात, बस हर तरफ़ से सलाम ही सलाम की आवाज़ आयेगी। (सूरः वाक़िआ़ आयत 25-26) वग़ैरह।

ये सब इस बात पर दलालत करते हैं कि अल्लाह पाक हमेशा हमेशा महमूद (क़ाबिले तारीफ़) है और हमेशा का माबूद है, इसी लिये चीज़ों के पैदा करने के शुरू में भी उसने अपनी ज़ात की तारीफ़ फ़रमाई और ज़माने के गुज़रने में भी। क़ुरआन के प्रारंभ में भी और इसके नाज़िल होने की शुरूआ़त में भी, जैसा कि फ़रमायाः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ...... الخ.

जिसकी तफ़सील बहुत लम्बी और विस्तृत है। वह अव्वल व आख़िर महमूद (क़ाबिले तारीफ़) है, चाहे दुनिया हो या दीन हो, इसी लिये हदीस में है कि जन्नत वालों को तस्बीह व तहमीद (यानी अल्लाह की पाकी और तारीफ़ बयान करना) सिखाई गई है जैसा कि नफ़्स की ख़्वाहिशें भी उन्हें दी गई हैं, और जैसे जैसे अल्लाह की नेमतें उन पर बढ़ती जायेंगी यह तहमीद व तस्बीह भी और ज़्यादा होती जायेगी, न इसका अंत होगा न बीच में इसका सिलसिला टूटेगा। ख़ुदा के सिवा कोई और ख़ुदा पालने वाला नहीं है।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۭ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ○	**और अगर अल्लाह तआ़ला लोगों पर (उनके जल्दी मचाने के मुवाफ़िक़) जल्दी से नुक़सान डाल दिया करता, जिस तरह वे फ़ायदे के लिए जल्दी मचाते हैं तो उनका (अ़ज़ाब का) वायदा कभी का पूरा हो चुका होता। सो (इसलिए) हम उन लोगों को जिनको हमारे पास आने का खटका नहीं है, उनके हाल पर (बिना अ़ज़ाब चन्द दिन) छोड़े रखते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें। (11)**

Maktab E Ashraf

मस्लेहत रोक और बाधा है

अल्लाह तआला अपने बन्दों पर लुत्फ़ व संयम की ख़बर दे रहा है कि इनसान अगर अपनी तंगदिली और गुस्से के सबब अपनी जान, माल और औलाद को कोसता है तो अल्लाह तआला उसकी बद्दुआ को क़बूल नहीं करता। क्योंकि वह जानता है कि यह बद्दुआ दिली इरादे से नहीं की गई है। यह ख़ुदा की ऐन रहमत व करम का मामला था, लेकिन वह दुआ क़बूल कर लेता है अगर वह अपने नफ़्सों और माल व औलाद के लिये करें और इसी लिये फ़रमाया कि अल्लाह तआला उन्हें मुसीबत पहुँचाने में भी ऐसी जल्दी करे जैसे कि इनसान अपनी ख़ैर (भलाई) के लिये जल्दी करता है, तो इसके लिये न आती मौत आ जाये। लेकिन इनसान के लिये यह हरगिज़ ज़ेबा (मुनासिब) नहीं कि बार-बार ऐसा कहने लगे और बद्दुआयें देने की आदत ही डाल ले, जैसे कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि अपने को कोसा न करो और न अपनी औलाद और मालों को बद्दुआयें दो, क्योंकि कोई-कोई घड़ी दुआ की क़बूलियत की होती है, अगर उस वक़्त बद्दुआ ज़बान से निकल गई तो कारगर होकर ही रहेगी। मुजाहिद रह. ने इस आयत की तफ़सीर में कहा है कि यह बद्दुआ इनसान का क़ौल है जो गुस्से के वक़्त अपने या अपने माल व औलाद के लिये करता है, ऐसी सूरत में चाहिये कि आदमी फ़ौरन यह कह ले कि 'अल्लाहुम्-म ला तबार-क फ़ीहि' यानी ऐ ख़ुदा! इस बात में बरकत न दे, वरना उसकी बात क़बूल हो जायेगी तो उसका तो नास ही हो जायेगा।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○	और जब इनसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारने लगता है, लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी, फिर जब हम उसकी वह तकलीफ़ उससे हटा देते हैं तो फिर अपनी पहली हालत पर आ जाता है कि गोया जो तकलीफ़ उसको पहुँची थी उसके (हटाने) के लिए कभी हमको पुकारा ही न था। उन हद से निकलने वालों के (बुरे) आमाल उनको इसी तरह अच्छे मालूम होते हैं (जिस तरह हमने अभी बयान किया है)। (12)

इनसान का भी अजीब हाल है

इस आयत के ज़रिये अल्लाह पाक ख़बर देता है कि जब इनसान को किसी मुसीबत का सामना होता है जैसा कि फ़रमाया:

وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ.

यानी मुसीबत पड़ती है तो बड़ी लम्बी-चौड़ी दुआयें माँगने लगता है।

पहले वाली आयत और यह आयत दोनों एक ही मायने रखती हैं, क्योंकि जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो बेताब और बेसब्र हो जाता है। उठते-बैठते सोते-जागते मुसीबतों के बादल हट जाने की दुआयें माँगने

लगता है, और जब अल्लाह उसको परेशानियों और मुसीबतों से निजात देता है तो वह अब मुँह फेर लेता है, किनारा करता है, जैसे कभी उस पर मुसीबत आई ही न थी। अल्लाह तआ़ला इस तरीक़े और आ़दत की निन्दा फ़रमाते हुए कहता है कि यह बात तो गुनाहगारों और बदकारों ही को शोभा देती है, और अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें हिदायत व तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई है वे इससे अलग हैं। जैसा कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि मोमिन का मामला भी बड़ा अ़जीब है जो कुछ अल्लाह की तरफ़ से उस पर वाक़े होता है उसके लिये ख़ैर ही बन जाता है। तकलीफ़ व नुक़सान पहुँचा और उसने सब्र किया तो अज्र मिला, राहत व ख़ुशी पहुँची और शुक्र किया तो अज्र मिला, यह नवाज़िश तो सिर्फ़ मोमिन ही के साथ मख़्सूस है।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝	और हमने तुमसे पहले बहुत-से गिरोहों को (तरह-तरह के अ़ज़ाब से) हलाक कर दिया है, जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया (यानी कुफ़्र व शिर्क) हालाँकि उनके पास उनके पैग़म्बर दलीलें लेकर आए, और वे (अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी के सबब) ऐसे कब थे कि ईमान ले आते, हम मुज्रिम लोगों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (जैसा कि हमने अभी बयान किया है)। (13) फिर उनके बाद दुनिया में उनकी जगह हमने तुमको आबाद किया ताकि ज़ाहिरी तौर पर हम देख लें कि तुम किस तरह काम करते हो। (14)

तबाह व बरबाद होने वाली क़ौमें

अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि पहले अम्बिया और रसूल जब उन काफ़िरों के पास स्पष्ट और खुली दलीलें लेकर आये थे और उन्होंने रसूलों को झुठलाया था तो हलाक कर दिये गये थे। फिर अल्लाह पाक ने उनके बाद इस क़ौम को पैदा किया है और इनके पास अपना एक रसूल भेजा है, और देखना चाहा है कि ये भी अपने वक़्त के रसूल की बात सुनते हैं या नहीं।

हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि दुनिया बड़ी शीरीं (मीठी) और बड़ी हरी-भरी है। अब अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में तुमको पहली क़ौम का जानशीन (जगह लेने वाला) बनाया है ताकि देखे कि तुम कैसा अ़मल करते हो। चाहिये कि दुनिया की नाजायज़ ख़्वाहिशों से अलग-थलग ही रहो और बड़ी बात यह है कि औ़रतों से बहुत एहतियात करो (यानी उनको उनका जायज़ मक़ाम दो, न तो उनको बिल्कुल ही ग़ुलाम और बेहैसियत समझो, और न यह कि उन्हें अपना सरदार ही बना लो, इस्लाम की तालीम एक दरमियानी तालीम है), क्योंकि पहला फ़ितना जो बनी इस्राईल पर आया वह औ़रतों का फ़ितना था।

एक बार औ़फ़ बिन मालिक रज़ि. ने हज़रत अबू बक्र रज़ि. से अपना ख़्वाब बयान किया कि गोया एक रस्सी आसमान से लटकी हुई है। रसूलुल्लाह सल्ल. ने उसको खींच लिया, फिर वह आसमान से लग गई, तो अब अबू बक्र रज़ि. ने खींच लिया, फिर लोग मिम्बर के आस-पास उसको नापने लगे और उमर रज़ि. के नाप में वह मिम्बर से तीन हाथ लम्बी निकल आई।

वहाँ हज़रत उमर रज़ि. भी थे, उमर रज़ि. ने सुनकर कहा "अरे तुम्हारा ख़्वाब छोड़ो भी, कहाँ का ख़्वाब और हमें इससे क्या वास्ता।" लेकिन जब हज़रत उमर ख़लीफ़ा हुए तो औफ़ से कहने लगे औफ़! अपना ख़्वाब तो सुनाओ। औफ़ ने कहा अब ख़्वाब की क्या पड़ी है? तुमने तो मुझे उसके सुनाने पर झिड़क दिया था? उमर रज़ि. ने कहा ख़ुदा तुम्हारा भला करे मैं हरगिज़ यह नहीं चाहता था कि तुम हज़रत सिद्दीक़े अकबर ख़लीफ़ा-ए-रसूल की मौत की ख़बर सुनाओ। फिर औफ़ ने ख़्वाब बयान किया यहाँ तक कि जब यहाँ पहुँचे कि लोग मिम्बर तक तीन-तीन हाथ उसे नापने लगे तो उमर रज़ि. ने कहा कि एक तो उन तीन में से ख़लीफ़ा था यानी अबू बक्र, दूसरा वह जो ख़ुदा के मामले में किसी की मलामत व नाराज़ी की परवाह नहीं करता (यानी ख़ुद हज़रत उमर) और तीसरे हाथ पर ख़त्म होने का मतलब यह है कि वह शहीद होगा। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा कि अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِی الْاَرْضِ مِنْ ۢبَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ.

अब हम तुमको ख़लीफ़ा बनाते हैं और देखते हैं कि तुम कैसे अ़मल करते हो।

चुनाँचे ऐ उमर! अब तू ख़लीफ़ा बना है और करते वक़्त सोच कि क्या कर रहा है। लोगों के बुरा-भला कहने से न डरने का ज़िक्र जो हज़रत उमर रज़ि. ने किया वह अल्लाह के अहकाम के बारे में था और लफ़्ज़ 'शहीद' से हज़रत उमर रज़ि. की मुराद यह थी कि मेरे लिये शहादत मुक़द्दर है और उस वक़्त सारे लोग मेरे फ़रमाँबरदार (बात मानने वाले) होंगे।

وَاِذَا تُتْلٰی عَلَیْهِمْ اٰیَاتُنَا بَیِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَیْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا یَكُوْنُ لِیْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِیْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا یُوْحٰٓی اِلَیَّ ۚ اِنِّیْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ○ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَیْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۫ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِیْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ○

और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिल्कुल साफ़-साफ़ हैं तो ये लोग जिनको हमारे पास आने का खटका नहीं है, (आपसे यूँ) कहते हैं कि इसके सिवा कोई (पूरा) दूसरा क़ुरआन (ही) लाईए, या (कम-से-कम) इसमें कुछ तरमीम कर दीजिए। आप (यूँ) कह दीजिए कि मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी तरफ़ से इसमें तरमीम कर दूँ। बस मैं तो उसी का इत्तिबा करूँगा जो मेरे पास 'वही' के ज़रिये से पहुँचा है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं एक बड़े भारी दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा रखता हूँ। (15) आप (यूँ) कह दीजिए कि अगर ख़ुदा तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो न तो मैं तुमको यह (कलाम) पढ़कर सुनाता, और न वह (यानी अल्लाह तआ़ला) तुमको इसकी इत्तिला देता, क्योंकि इससे पहले भी तो मैं उम्र के एक बड़े हिस्से तक तुममें रह चुका हूँ। फिर क्या तुम इतनी अ़क्ल नहीं रखते। (16)

Maktaba E Ashraf

कैसा ग़लत मुतालबा

क़ुरैश के मुश्रिकों में जो नाफ़रमान काफ़िर थे और जो हर बात से इनकार और ऐराज़ करते थे, उनके बारे में इरशाद होता है कि रसूलुल्लाह सल्ल. जब अल्लाह की किताब उन्हें सुनाते हैं और खुली दलीलें पेश करते हैं तो वे कहते हैं कि इस क़ुरआन के सिवा कोई दूसरा क़ुरआन लाओ जो दूसरे ढंग से लिखा हुआ हो। अब अल्लाह पाक अपने नबी से इरशाद फ़रमाता है कि उनसे कह दो कि भला मुझे क्या हक़ है कि मैं अपनी तरफ़ से क़ुरआन को बदल दूँ। मैं तो सिर्फ़ बन्दा-ए-मामूर हूँ और ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाने वाला एक क़ासिद हूँ, यह जो कुछ मैंने तुम्हें पेश किया है यह ख़ुदा ही की मर्ज़ी और इरादे से हुआ है, मैं तो वही कहता हूँ जो मुझ पर 'वही' उतरती है। अगर मैं ख़ुदा की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे क़ियामत के अ़ज़ाब का सख़्त ख़ौफ़ है।

और इस बात की दलील कि ये मेरी तरफ़ से बनाई हुई बातें नहीं हैं यह है कि अगर मैं बना सकता तो तुम भी बना सकते। हालाँकि तुम भी इसके बनाने से आ़जिज़ हो, तो फिर मैं कैसे आ़जिज़ न होता। ज़ाहिर है कि यह ख़ुदा के सिवा और किसी का कलाम नहीं हो सकता। और फिर यह कि तुम मेरी सच्चाई और ईमानदारी को उस वक़्त से जानते हो जब से मैं तुम्हारी क़ौम में पैदा हुआ हूँ और अब भी मेरी सच्चाई को जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूँ। तुम मेरी सच्चाई व ईमानदारी पर कोई उंगली नहीं उठा सकते।

इसलिये अल्लाह पाक ने फ़रमाया- कह दो कि मैंने तो एक लम्बी ज़िन्दगी तुम्हारे साथ गुज़ारी है, अरे क्या तुमको इतनी भी समझ नहीं कि हक़ और बातिल को अलग-अलग कर सको? इसी लिये जब हिरक़्ल रोम के बादशाह ने अबू सुफ़ियान और उनके साथियों से नये नबी के हालात दरियाफ़्त किये और अबू सुफ़ियान से पूछा कि क्या कभी उसका झूठ तुम पर साबित हुआ है? तो अबू सुफ़ियान ने कहा नहीं! अबू सुफ़ियान तो उस ज़माने में काफ़िरों के सरदार और मुश्रिकों के नेता थे, लेकिन बावजूद इसके हक़ बात का उन्हें इक़रार करना पड़ा। जादू वह जो सर चढ़कर बोले। हिरक़्ल ने उनसे कहा कि जिस शख़्स ने कभी इनसानों के मामले में झूठ न कहा हो वह ख़ुदा के मामले में कैसे झूठ कहेगा? और जाफ़र बिन अबी तालिब ने हब्शा मुल्क के बादशाह नज्जाशी से कहा था कि अल्लाह ने हमारे पास एक रसूल भेजा है, जिसकी ज़ाती सच्चाई और नसब (ख़ानदान व नस्ल) की ख़ूबी और अमानत से हम ख़ूब वाक़िफ़ हैं, और नुबुव्वत से पहले आपका क़ियाम (रहना-सहना) हमारे साथ चालीस बरस तक रहा है। सईद इब्ने मुसैयब रह. 43 बरस तक कहते हैं, और ज़्यादा सही क़ौल पहला है।

सो उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झूठा बतला दे। यक़ीनन ऐसे मुजरिमों को हरगिज़ फ़लाह न होगी, (बल्कि हमेशा के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे)। (17)	فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ۝

फिर अब तो जुर्म और भी बढ़ गया

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उससे बढ़कर सरकश और नाफ़रमान और कौन हो सकता है जो अल्लाह पर बोहतान बाँधता है, ख़ुदा के बारे में झूठी बातें बनाता है और झूठ-मूट यह दावा कर बैठता है कि वह ख़ुदा का भेजा हुआ है। उससे बढ़कर कोई मुजरिम और गुनाहगार नहीं हो सकता। यह बात तो किसी कम-ज़ेहन और बुद्धू से भी छुपी ढकी नहीं तो अ़क़्लमन्दों और अम्बिया से कैसे पोशीदा रह सकती है? जो नुबुव्वत का दावा करे चाहे वह झूठा हो या सच्चा, अल्लाह तआ़ला उसकी नेकोकारी और बदकारी पर दलीलें क़ायम कर देता है जो बिल्कुल स्पष्ट होती हैं। चुनाँचे मुहम्मद सल्ल. और मुसैलमा कज़्ज़ाब दोनों को जिसने देखा है वह दोनों का फ़र्क़ बिल्कुल इस तरह पहचान सकता है जैसे कोई दिन चढ़े की रोशनी और आधी रात की अंधेरी में फ़र्क़ कर लेता है। दोनों की ख़स्लतों, अफ़आ़ल और कलाम की तुलना करो तो साफ़ तौर पर मालूम हो जायेगा कि मुहम्मद सल्ल. के क़ौल व फ़ेल में किस क़द्र सच्चाई है, और मुसैलमा कज़्ज़ाब और सजाह और अस्वद अ़नसी में किस क़द्र झूठ व बेईमानी है।

अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. जब मदीना तशरीफ़ लाये तो लोग आपके आने पर बड़े ख़ुश थे। ख़ुश होने वालों में मैं भी था। मैंने पहली बार आपको देखा तो दिल ने गवाही दी कि यह नूरानी चेहरा तो किसी झूठे शख़्स का हो ही नहीं सकता। मैंने आपकी ज़बान से सबसे पहले जो बात सुनी वह यह कि-

"ऐ लोगो! आपस में एक दूसरे को सलाम करो, फ़लाह (कामयाबी) की ख़ुदा से दुआ़ माँगो, ग़रीबों और भूखों का पेट भरो, रिश्तेदारों के साथ सिला-रहमी करो, रातों में नमाज़ पढ़ो जबकि सब लोग सोये हुए हों, तुम बिला खटके जन्नत में जा पहुँचोगे।"

ज़माम बिन सालबा अपनी क़ौम बनी सअ़द बिन बकर की तरफ़ से जब नबी सल्ल. के पास आया तो आपसे कहा कि अच्छा बताईये कि यह आसमान किसने इस क़द्र बुलन्द बनाया? आपने फ़रमाया अल्लाह ने। फिर कहा ये पहाड़ किसने ज़मीन के अन्दर क़ायम कर दिये हैं? आपने फ़रमाया अल्लाह ने। फिर पूछा यह ज़मीन किसने बिछा दी है? फ़रमाया अल्लाह ने। फिर कहा कि क़सम है तुम्हें उसी की जिसने यह ऊँचा आसमान बनाया, ये बड़े-बड़े पहाड़ ज़मीन में गाड़े और इतनी बड़ी विशाल ज़मीन को फैला रखा है, क्या उसी ने तुमको सब इनसानों की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा है? आपने फ़रमाया हाँ, उसी ख़ुदा की क़सम कि उसी ने मुझे भेजा है। फिर आपसे नमाज़, ज़कात, हज और रोज़े के बारे में हर एक से मुताल्लिक़ क़समें दे-देकर पूछा और आप उसी ख़ुदा की क़समें खा-खाकर जवाब दे रहे थे, तो उसने कहा फिर तो तुम सच्चे हो। जिस ज़ाते ख़ुदावन्दी ने तुम्हें सच्चा नबी बनाकर भेजा है मैं उसी को गवाह बनाता हूँ कि मैं इन चारों अरकान पर न ज़्यादा करूँगा न कम, सही तौर पर अ़मल करूँगा। चुनाँचे इस क़द्र तामील (अ़मल करना) उसके लिये काफ़ी होगी, और वह नबी सल्ल. की सच्चाई पर ईमान ले आया, क्योंकि उसने दलीलें और शहादतें पा ली थीं।

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि. कहते हैं:

لولم تکن فیہ ایات مبینۃ ☆ کانت بدیھیۃ تاتیك بالخبر

यानी दलीलें अगर आपके पास न भी होतीं तो आपके चेहरे की पाकीज़गी, सादगी और मासूमियत ख़ुद

आपकी सच्चाई व हक़्क़ानियत की दलील थी।

लेकिन मुसैलमा कज़्ज़ाब (यह नुबुव्वत का एक झूठा दावेदार था) को अ़क्ल व समझ रखने वालों में से जिस किसी ने देखा वह उसकी घटिया बातों, भद्दी गुफ़्तगू, ग़ैर-मेयारी कलाम, बुरे आमाल और उसके झूठे और अपनी तरफ़ से गढ़े हुए क़ुरआन को देखकर जो उसको दोज़ख़ में लेजाकर छोड़ेगा, यह नतीजा निकाल लेगा कि वह कैसा झूठा नुबुव्वत का दावेदार था, और अल्लाह तआ़ला के इस क़ौलः

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ. اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ....الی اخرہ

(यानी आयतुल-कुर्सी)

और मुसैलमा के क़ौलः

یا ضفدع بنت ضفدعین. نقی کم تنقین. لا الماء تکدرین ولا الشارب تمنعین.

ऐ मेंढकों की औलाद मेंढक टर्रा कितना टर्राती है, तेरे टर्राने से न पानी गदला होगा न पीने वाले बाज़ रहेंगे।

उस ज़ालिम की एक 'वही' यह है किः

لقد انعم اللّٰه علی الحبلی. اذاخرج منهانسمة تسعی من بین صفاق وحشی.

कि अल्लाह ने बड़ा ही एहसान किया है गर्भवती औ़रत पर कि एक ज़िन्दा रूह को उसकी झिल्ली और आँतों के अन्दर से निकाल बाहर किया।

और एक कलाम उसका यह हैः

الفیل ومالفیل وما ادراك مالفیل له زنب قصیر وخرطوم طویل.

कि हाथी, हाथी यानी कैसा, क्या तुम समझे कि हाथी कैसा होता है। उसकी दुम छोटी होती है और सूँड लम्बी होती है।

और एक कलाम उसने यह पेश कियाः

والعاجنات عجناوالخابزات خبزا واللاقمات لقمااهالة وسمنا ان قریشا قوم یعتدون.

क़सम है आटा गूँधने वालियों की, रोटी पकाने वालियों की, सालन और घी में लुक़मे चूर-चूरकर खाने वालियों की कि क़ुरैश बड़ी ही ज़ालिम क़ौम है।

अब हुज़ूर सल्ल. की पाक 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से उतरे हुए कलाम) और इस झूठे की ख़ुराफ़ात व बकवास दोनों पर ग़ौर करो कि बच्चे भी उसके कलाम का मज़ाक़ उड़ायेंगे। इसी लिये अल्लाह ने उसको ज़लील कर दिया और हदीक़ा के दिन में उसको हलाक कर दिया। उसकी जमाअ़त बिखर गई, उसके साथियों पर लानत बरसी। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के पास उसके लोग तौबा करते हुए आये और अल्लाह के दीन में दाख़िल होने लगे तो ख़लीफ़ा-ए-रसूल सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने उनसे कहा कि मुसैलमा का कोई क़ुरआन तो सुनाओ? उन्होंने माफ़ी माँगी, हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. ने इसरार किया और कहा ज़रूर सुनाना होगा, ताकि और लोग भी सुनें और उन्हें हिदायत व इल्म वाली जो 'वही' पहुँची है उसकी फ़ज़ीलत व अहमियत को उसके कलाम के साथ तुलना करके पहचान सकें। चुनाँचे हमने जो कुछ नक़ल किया है वह सुनाया, सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने उनसे कहा कमबख़्तो! तुम्हारी अ़क़्लें किधर गई थीं, ख़ुदा की क़सम

यह तो किसी बेवक़ूफ़ की ज़बान से भी न निकलेगा।

कहते हैं कि अ़मर बिन आ़स रज़ि. मुसैलमा के पास आये, ज़माना-ए-जाहिलीयत में वह उसके दोस्त थे। अब तक अ़मर बिन आ़स इस्लाम नहीं लाये थे, तो उनसे मुसैलमा ने कहा कि ऐ अ़मर! तुम्हारे आदमी (नबी सल्ल.) पर आजकल क्या 'वही' उतरी है? इब्ने आ़स ने कहा कि मैंने उनके साथियों को एक बड़ी ही ज़बरदस्त लेकिन बहुत ही मुख़्तसर सूरत पढ़ते हुए सुना है। पूछा वह क्या? अ़मर ने कहा:

وَالْعَصْرِ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ...... الخ

मुसैलमा ने थोड़ी देर सोचा और कहने लगा मुझ पर भी एक ऐसी ही 'वही' (ख़ुदा का कलाम) उतरी है। अ़मर ने पूछा वह क्या है? कहा:

یاوبری اوبر انما انت اذنان وصدروسائرك حقر ونقر.

यानी ऐ वबर ऐ वबर (जानवर) तेरे दो कान और उभरा हुआ सीना ही नुमायाँ दिखाई देते हैं, बाक़ी तमाम जिस्म बहुत मामूली है।

फिर कहने लगा क्यों अ़मर! 'वही' कैसी रही? अ़मर बिन आ़स ने कहा ख़ुदा की क़सम तुम ख़ुद जानते हो कि मुझे तुम्हारी 'वही' के झूठी होने का यक़ीन है। जब एक मुश्रिक का यह हाल हो कि नबी सल्ल. की सच्चाई और मुसैलमा का झूठ उस पर भी छुपा नहीं रह सका तो जिनको अल्लाह ने दीनी समझ दी है उन पर यह बात कब छुपी रह सकती है। इसी लिये अल्लाह पाक फ़रमाता है:

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا اَوْقَالَ اُوْحِیَ اِلَیَّ وَلَمْ یُوْحَ اِلَیْہِ شَیْءٌ...... الخ

उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बाँधता है और कहता है कि मुझ पर 'वही' (यानी अल्लाह का कलाम) उतरती है, हालाँकि उस पर 'वही' नहीं उतरती है। या यह कहता है कि पैग़म्बर की तरह मैं भी पैग़म्बर हूँ। और ऐसे ही वह शख़्स भी बड़ा झूठा है जो पैग़म्बर की पेश की हुई 'वही' को झुठलाये, जिस पर कि ख़ुदा की दलीलें क़ायम हो चुकी हैं, जैसा कि हदीस में है कि वह बड़ा ही कमबख़्त और ज़ालिम है जिसने नबी को क़त्ल किया या किसी नबी ने उसको क़त्ल कर दिया हो।

وَیَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ مَا لَا یَضُرُّھُمْ وَلَا یَنْفَعُھُمْ وَیَقُوْلُوْنَ ھٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰہِ ۭ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰہَ بِمَا لَا یَعْلَمُ فِی السَّمٰوٰتِ وَلَا فِی الْاَرْضِ ۭ سُبْحٰنَہٗ وَتَعٰلٰی عَمَّا یُشْرِکُوْنَ ○ وَمَا کَانَ	और ये लोग अल्लाह (की तौहीद) को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको नुक़सान पहुँचा सकें और न उनको नफ़ा पहुँचा सकें। और कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिश करने वाले हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम ख़ुदा तआ़ला को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो जो ख़ुदा तआ़ला को मालूम नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से। (18) और तमाम आदमी एक ही तरीक़े के थे,

Maktab e Ashraf

النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ط وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ○	फिर (अपनी ग़लत राय से) उन्होंने इख़्तिलाफ़ पैदा कर लिया। और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले तय हो चुकी है तो जिस चीज़ में ये लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उनका क़तई फ़ैसला (दुनिया ही में) हो चुका होता। (19)

ग़लत-फ़हमी, शफ़ाअ़त का ग़लत तसव्वुर और एकता के बाद अनेकता

अल्लाह तआ़ला तंबीह कर रहा और डाँट रहा है उन मुश्रिकों को जो ख़ुदा को छोड़कर उन झूठे माबूदों की पूजा करते हैं, जो न ख़ुदा के पास सिफ़ारिश कर सकते हैं (जैसा कि इन मुश्रिकों का ख़्याल है) न नुक़सान पहुँचा सकते हैं, न नफ़ा पहुँचा सकते हैं, न किसी चीज़ के मालिक हैं और न वे जो चाहते हैं वह कर सकते हैं। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

قُلْ اَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ......

यानी क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जो चीज़ न आसमानों में है न ज़मीन में है।

फिर शिर्क और कुफ़्र से अपनी पाक ज़ात को बरी फ़रमाते हुए इरशाद होता है:

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ.

यानी अल्लाह तआ़ला उससे पाक और बुलन्द है जो ये शिर्क करते हैं।

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि शिर्क लोगों में पैदा हो गया। इसका वजूद नहीं था लेकिन हो गया, सब लोग एक दीन पर थे और वह शुरू ही से इस्लाम था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि आदम और नूह अ़लैहिमस्सलाम के बीच दस ज़माने गुज़रे, ये सब लोग आदम अ़लैहिस्सलाम के सच्चे दीन पर थे। फिर लोगों में इख़्तिलाफ़ (भिन्नता) हो गया और जिसने दलील को ले लिया वह सलामत बच गया।

अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ........

यानी अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से तय हो चुकी है.........।

अल्लाह तआ़ला किसी को अ़ज़ाब नहीं देता जब तक कि पैग़म्बरों को भेजकर उस पर दलील व हुज्जत न क़ायम कर दे। अल्लाह तआ़ला तो मख़्लूक़ को एक निर्धारित वक़्त तक ज़िन्दा रखता है, फिर मार देता है। और जिसके बारे में वे आपस में इख़्तिलाफ़ (मतभेद और विवाद) रखते थे, क़ियामत के दिन उसका फ़ैसला कर देगा। मोमिन लोग कामयाब रहेंगे और काफ़िर ज़लील रहेंगे।

और ये लोग (यूँ) कहते हैं कि उनके रब की तरफ़ से उनपर कोई मोजिज़ा क्यों नाज़िल नहीं हुआ। सो आप फ़रमा दीजिए कि ग़ैब की ख़बर सिर्फ़ ख़ुदा को है (मुझको नहीं), सो तुम भी मुन्तज़िर रहो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ। (20)	وَيَقُولُونَ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ ءَايَةٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا ٱلْغَيْبُ لِلَّهِ فَٱنتَظِرُوٓا۟ ۖ إِنِّى مَعَكُم مِّنَ ٱلْمُنتَظِرِينَ ٥

Maktab E Ashraf

इन्तिज़ार

ये काफ़िर कहते हैं कि मुहम्मद सल्ल. को भी नुबुव्वत की ऐसी दलील क्यों न मिली जैसे सालेह (अ़लैहिस्सलाम) को ऊँटनी मिली, या यह कि सफ़ा पहाड़ सोना क्यों नहीं बन गया, या मक्का के पहाड़ मक्का से हटकर उसकी जगह बाग़ और नहरें क्यों नहीं बन गईं। जब ख़ुदा क़ादिर है तो ऐसा होना चाहिये था, लेकिन सच्ची बात तो यह है कि ख़ुदा अपने कामों में बड़ा ही क़ादिर और हिक्मत वाला है। जैसा कि फ़रमायाः

تَبَارَكَ ٱلَّذِىٓ إِن شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ...... الخ

अल्लाह तआ़ला की पाक ज़ात अगर चाहे तो तुम्हारे लिये उससे भी अच्छे बाग़ात पैदा कर दे, जिनके नीचे नहरें बह रही हों, और उनके अन्दर महल हों। लेकिन उन्होंने तो क़ियामत का इनकार कर दिया और क़ियामत का इनकार करने वाले के लिये तो हमने दोज़ख़ की आग भड़का रखी है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मख़्लूक़ के बारे में मेरा उसूल यह है कि वे जो मोजिज़े माँगते हैं मैं देता हूँ। अब वे मोजिज़े देखकर ईमान ले आये तो बेहतर, वरना बहुत जल्द उन पर अ़ज़ाब नाज़िल कर देता हूँ। फिर क़ियामत की मोहलत नहीं देता। इसी लिये जब अल्लाह पाक ने नबी सल्ल. को इख़्तियार दिया कि इन दो बातों में से कोई इख़्तियार कर लो, कि इनकी तलब के मुताबिक़ मोजिज़ा दूँ। वे ईमान लाये तो ठीक वरना फ़ौरी तौर पर अ़ज़ाब दे दिये जायेंगे। और दूसरी बात यह कि मैं उन्हें मरते दम तक मोहलत दूँ कि वे ख़ुद को सही रास्ते पर ले आयें। तो हुज़ूर सल्ल. ने उम्मत के बारे में दूसरी बात को इख़्तियार फ़रमाया जैसा कि बीसियों बार नबी सल्ल. का संयम व बरदाश्त इन काफ़िरों के साथ साबित हो चुका है।

अल्लाह पाक नबी सल्ल. से फ़रमाता है- यह कह दो कि हर चीज़ ख़ुदा के इख़्तियार में है, तमाम मामलात के अन्जाम और नतीजे को वही जानता है, अगर तुम अपनी आँखों से देखे बग़ैर ईमान नहीं लाना चाहते हो तो मेरे और अपने बारे में ख़ुदा के हुक्म का इन्तिज़ार करो। हालाँकि उन्होंने नबी सल्ल. के बाज़ ऐसे मोजिज़े भी देखे जो उनके तलब किये गये मोजिज़ों से कहीं बढ़-चढ़कर थे। यानी हुज़ूर सल्ल. ने उनकी आँखों के सामने चौदहवीं के चाँद को उंगली से इशारा कर दिया और उसके दो टुकड़े हो गये। एक पहाड़ के इस तरफ़ और दूसरा पहाड़ के दूसरी तरफ़ हो गया। यह तो ज़मीन पर उत्पन्न होने वाले मोजिज़ों से भी बड़ा मोजिज़ा था। और उनकी तरफ़ से तलब की गयी और न तलब की गयी निशानी से अफ़ज़ल था। अब भी अगर ख़ुदा के इल्म में होता कि ये कोई भी मोजिज़ा हिदायत व ईमान की तलब के जज़्बे के तहत

Maktab E Ashraf

तलब कर रहे हैं तो ख़ुदा ज़रूर कबूल कर लेता, लेकिन वे दुश्मनी व बैर और मुख़ालफ़त के तौर पर तलब कर रहे थे, इसलिये उनकी दरख़्वास्त रद्द कर दी गई। ख़ुदा को इल्म था कि अब भी वे ईमान न लायेंगे। जैसा कि फ़रमाता है:

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَةُ رَبِّكَ...... الخ

उन पर ख़ुदा की दलील साबित हो चुकी है, चाहे कैसी ही निशानी क्यों न पेश की जाये वे ईमान न लायेंगे। एक और जगह अल्लाह का कौल है:

وَلَوْاَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى...... الخ

कि अगर हम उनके पास फ़रिश्ते भी लाकर खड़े कर दें और मुर्दे भी उनसे बात करने लगें और हर चीज़ उनके पास जमा कर दी जाये, हर मोजिज़ा बता दिया जाये तो भी ये कभी ईमान न लायेंगे, क्योंकि इनका मक़सद सिर्फ़ हठधर्मी, तकब्बुर और ज़िद करना है। जैसा कि फ़रमाया:

وَلَوْفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًامِّنَ السَّمَآءِ......

और

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًامِّنَ السَّمَآءِ...... الخ

और

وَلَوْنَزَّلْنَاعَلَيْكَ قِرْطَاسًا......الخ

अगर हम उन पर आसमानों का दरवाज़ा भी खोल दें और वे आसमान का एक टुकड़ा गिरता हुआ भी देख लें और उन पर कोई आसमानी किताब भी नाज़िल की जाये जो काग़ज़ों का दफ़्तर हो जिसको वे अपने हाथों से भी छू सकते हों, फिर भी ये काफ़िर यही कहेंगे कि अरे यह तो खुला जादू है। फिर इनके मुतालबे कबूल करने से हासिल ही क्या? इसलिये कि इनके मुतालबे तो दुश्मनी व बैर और मुख़ालफ़त की बुनियाद पर हैं, इसी लिये फ़रमाया कि मैं इन्तिज़ार करता हूँ तुम भी इन्तिज़ार करो।

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ۝ هُوَ الَّذِىْ يُسَيِّرُكُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِى الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ	और जब हम लोगों को इसके बाद कि उनपर कोई मुसीबत पड़ चुकी हो, किसी नेमत का मज़ा चखा देते हैं तो फ़ौरन ही हमारी आयतों के बारे में शरारत करने लगते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला (इस शरारत की) सज़ा बहुत जल्द देगा। यक़ीनन हमारे भेजे हुए (यानी फ़रिश्ते) तुम्हारी सब शरारतों को लिख रहे हैं। (21) वह (अल्लाह) ऐसा है कि तुमको ख़ुश्की और दरिया में लिए-लिए फिरता है, यहाँ तक कि कई बार जब तुम कश्ती में सवार होते हो और वे (कश्तियाँ) लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के ज़रिये से लेकर चलती हैं और

Maktab-e-Ashraf

طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ○ فَلَمَّآ اَنْجٰهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○

वे लोग उन (की रफ़्तार) से ख़ुश होते हैं, (उस हालत में अचानक) उन पर (मुख़ालिफ़) हवा का एक झोंका आता है, और हर तरफ़ से उन पर लहरें (उठी चली) आती हैं, और वे समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे, (उस वक़्त) सच्चा एतिक़ाद करके सब अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं (कि ऐ अल्लाह) अगर आप हमको इस (मुसीबत) से बचा लें तो हम ज़रूर हक़ को पहचानने वाले (तौहीद के इक़रारी) बन जाएँ। (22) फिर जब अल्लाह तआ़ला उनको (उस तबाही से) बचा लेता है तो फ़ौरन ही वे (चारों तरफ़) ज़मीन में नाहक़ की सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगो! (सुन लो) यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए वबाल (-ए-जान) होने वाली है, (बस) दुनियावी ज़िन्दगी में (उससे थोड़ा-सा) फ़ायदा उठा रहे हो, फिर हमारे पास तुम सबको आना है, फिर हम तुम्हारा किया हुआ सब कुछ तुमको जतला देंगे (और उसकी सज़ा देंगे)। (23)

इनसान और इसकी मुख़्तलिफ़ हालतें

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मुसीबतों का मज़ा चखने के बाद जब इनसान को हमारी रहमतों से साबक़ा पड़ता है जैसे तंगदस्ती और ग़रीबी के बाद ख़ुशहाली, क़हत के बाद बेहतरीन पैदावार और बारिश वग़ैरह तो वह झुठलाने और मज़ाक़ उड़ाने पर उतर आता है। और जब इनसान को मुसीबतें आ घेरती हैं तो वह उठते बैठते सोते जागते दुआ़ओं की भरमार शुरू कर देता है।

नबी सल्ल. ने एक दिन सुबह की नमाज़ पढ़ाई, वह बरसात की रात थी, फिर आप फ़रमाने लगे क्या तुम जानते हो कि आजकी रात ख़ुदा तआ़ला ने क्या फ़रमाया है? सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया ख़ुदा और ख़ुदा का रसूल बेहतर जानते हैं। फ़रमाया कि ख़ुदा इरशाद फ़रमाता है- आज मेरे मोमिन बन्दे भी सुबह उठे और काफ़िर बन्दे भी, लेकिन जिसने कहा कि यह बारिश ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहमत के सबब है तो वह मुझ पर ईमान लाया है, और सितारों के असरात का मुन्किर है, और जो यह अ़क़ीदा रखता है कि यह बारिश सितारों के असरात के सबब होती है तो वह मुझसे तो कुफ़्र कर रहा है और सितारों पर ईमान ला रह है। कह दो ऐ पैग़म्बर! मेरी रणनीति बड़ी कारगर होती है, ऐसे मुजरिम गुमान करते हैं कि हमको कुफ़्र की बिना पर कोई अ़ज़ाब नहीं दिया गया लेकिन दर हक़ीक़त उनके साथ ढील का मामला किया जा रहा है, और जब वे अपनी ग़फ़लत की आख़िरी सीमा में आ जायेंगे तो एक दम से धर लिये जायेंगे। हमारे फ़रिश्ते उनके आमाल लिख रहे हैं, फिर वे आ़लिमुल-ग़ैब (यानी अल्लाह तआ़ला) के पास पेश कर दिये

जाते हैं, फिर वे हर बड़े और छोटे गुनाह की सज़ा पाते हैं।

फिर इरशाद होता है कि ख़ुश्की और पानी के सफ़र के लिये उसने तुम्हारे लिये आसानियाँ पैदा कर दीं और पानी के अन्दर भी उसने तुम्हें अपनी पनाह और हिफ़ाज़त में ले लिया। जब तुम कश्तियों में होते हो, हवायें उन कश्तियों को चलाने लगती हैं तो उनकी हल्की या तेज़ रफ़्तार पर ख़ुश होते हो, ऐन ख़ुशी के आलम में उन कश्तियों को तेज़ व सख़्त आँधी आ घेरती है और हर तरफ़ से मौजें लिपट पड़ती हैं तो तुम्हें यक़ीन हो जाता है कि अब तो हलाक हो गये, अब ज़ार-ज़ार (यानी रो-रोकर) ख़ुदा से दुआयें माँगने लगते हो। उस वक़्त तुमको न कोई बुत याद आता है न लात व हुबल, बल्कि हमीं को पुकारते हो। पस समुद्र के अन्दर जब ख़ुदा तुमको सही सलामत किनारे पर पहुँचा देता है तो फिर हमसे मुँह फेर लेते हो। इनसान बड़ा ही नाशुक्रा है। यहाँ कहा गया है किः

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ. لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا...... الخ

यानी बड़े मुख़्लिस (ख़ालिस नीयत वाले) होकर पुकारने लगते हैं कि अगर तू हमको इस मुसीबत से निजात दे दे तो हम बड़े शुक्रगुज़ार बन जायेंगे। और जब वह उनको निजात दे देता है तो मुल्क में वे नाहक़ शरारत करने लगते हैं, गोया कभी उन पर मुसीबत आई ही न थी। फिर इरशाद होता है किः

يٰاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ......

ऐ लोगो! तुम्हारी बग़ावत का वबाल तुम्हीं पर पड़ेगा, ख़ूब याद रखो कि किसी और को इसका नुक़सान नहीं। जैसा कि हदीस में है कि ख़ुदा तआ़ला से बग़ावत और रिश्ते का तोड़ना ये दो ऐसे गुनाह हैं कि आख़िरत में तो अ़ज़ाब होगा ही लेकिन दुनिया में भी बहुत जल्द इसकी सज़ा मिल जाती है। इस फ़ानी दुनिया की ज़िन्दगी में तुम्हारे लिये चन्द रोज़ का फ़ायदा उठाना है फिर तुम्हारी वापसी हमारी तरफ़ है, और जब हमारी तरफ़ लौट आओगे तो हम तुम्हारे सब आमाल तुमको समझा देंगे, और इसकी पूरी पूरी जज़ा (बदला) देंगे, जिसको अच्छी जज़ा मिली हो तो वह ख़ुदा का शुक्र अदा करे और जिसको सज़ा मिली हो वह अपने नफ़्स पर मलामत करे।

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ	बस दुनियावी ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस (पानी) से ज़मीन के पेड़-पौधे जिनको आदमी और चौपाए खाते हैं ख़ूब घने होकर निकले, यहाँ तक कि जब वह ज़मीन अपनी रौनक़ का (पूरा हिस्सा) ले चुकी और उसकी ख़ूब ज़ेबाइश "यानी सँवरना" हो गई और उस के मालिकों ने समझ लिया कि अब हम इसपर बिल्कुल क़ाबिज़ हो चुके, तो (ऐसी हालत में) दिन में या रात में हमारी तरफ़ से कोई हादसा आ पड़ा (जैसे पाला या सूखा या और कुछ) सो

हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया गोया कल वह (यहाँ) मौजूद ही न थी। हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान करते हैं, ऐसे लोगों के लिए जो सोचते हैं। (24) और अल्लाह तआ़ला दारुल-बक़ा "यानी आख़िरत" की तरफ़ तुमको बुलाता है, और जिसको चाहता है सही रास्ते (पर चलने) की तौफ़ीक़ दे देता है। (25)	تَغْنَ بِالْاَمْسِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۭ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

Maktab E Ashraf

दुनिया की मिसाल

दुनिया की ज़ाहिरी ज़ीनत, सरसब्ज़ी व शादाबी (यानी चमक-दमक और रौनक़), फिर इसके फ़ना हो जाने की मिसाल अल्लाह पाक चीज़ों के उगने से दे रहा है, जिनको आसमान से पानी बरसाकर अल्लाह ने ज़मीन से निकाला, जिनको इनसान खाते हैं जैसे अनाज ग़ल्ला विभिन्न और अनेक तरह के फल फुलवारी जो न सिर्फ़ इनसान की ग़िज़ा बल्कि मवेशी (पशु) भी उनके डंठल और ठुड खाते हैं। और जब ज़मीन की ज़ीनत (रौनक़ और हरियाली) बहार पर होती है और विभिन्न शक्लों की बहुत से रंगों की सब्ज़ियाँ अपनी तरोताज़गी और हरे-भरे पन पर आती हैं तो ज़मीनदार काश्तकार गुमान करते हैं कि अब खेत काट लेंगे, फल उतार लेंगे कि अचानक ऐसी बिजली या आँधी आ पड़ती है कि दरख़्तों के सारे पत्ते सूख जाते हैं, जल जाते हैं, फल फूल नष्ट हो जाते हैं और उनके हरा-भरा होने और शादाबी के बाद वह एक सूखा सा ढेर बन जाता है, गोया कि कभी ये हरे-भरे थे ही नहीं, और कभी यह नेमत ज़मीनदार को दी ही नहीं गई थी। इसी लिये हदीस में है कि दुनिया वाले को नेमतें दी जाती हैं फिर उसे आग में झोंका जाता है और पूछा जाता है कि कभी तुमको राहत मिली भी थी तो वह कहता है कि हरगिज़ नहीं।

एक और शख़्स होता है जो दुनिया में बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें उठाया हुआ होता है, फिर वह जन्नत में भेजा जाता है और पूछा जाता है- क्या कभी तुम्हें किसी क़िस्म की तकलीफ़ पहुँची थी? वह कहता है कभी नहीं। अल्लाह पाक उन हलाक होने वालों के बारे में कहता है कि वे अपने घरों में ऐसे वीरान हो गये गोया कभी बसे ही नहीं थे। फिर इरशाद होता है:

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ.

यानी हम इसी तरह बात को खोल-खोलकर दलीलों और हुज्जत के साथ पेश करते हैं, ताकि लोग इस बात की इबरत (नसीहत और सीख) हासिल करें कि दुनिया बड़ी तेज़ी से ख़ात्मे और पतन की ओर है, दुनिया पर क़ादिर होने के बावजूद वह उनके साथ दग़ा करती है, जो इसकी तरफ़ बढ़ता है उससे भागती है और जो इससे भागता है उसके पैरों पर आ गिरती है। अल्लाह पाक ने दुनिया की मिसाल ज़मीन में पैदा होने वाली सब्ज़ी और उगने वाली चीज़ों से सूरः कहफ़ की दूसरी आयतों में भी दी है। इरशाद होता है:

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاۗءٍ...... الخ

दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल नाज़िल होने वाली बारिश की तरह है, जो नबातात (पेड़ पौधों और घास वग़ैरह) से पहले तो आ मिला, फिर उसके हरा-भरा हो चुकने के बाद एक वक़्त ऐसा आया कि वे नबातात

Maktaba E Ashraf

सूखी घास बनकर रह गये, जिसको हवायें इधर-उधर लिये उड़ती हैं। अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है। सूरः ज़ुमर और हदीस में ऐसा ही बयान किया गया है। ख़लीफ़ा मरवान बिन हकम मिम्बर पर पढ़ते हुए देखे गये कि ज़मीन जब शादाब (हरी-भरी) हो गई और काश्तकार समझे कि अब फ़सल काट लेंगे, लेकिन सारी खेती बरबाद हो जाती है और यह सारी हलाकत उनके गुनाहों और बग़ावत के सबब होती है।

आगे अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है:

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ.

जब अल्लाह तआ़ला दुनिया के फ़ानी होने और जन्नत की तरग़ीब का ज़िक्र कर चुका तो अब जन्नत की तरफ़ बुलाता है, और जन्नत को दारुस्सलाम (अमन व सलामती की जगह) कहता है। यानी वह हर आफ़त व नुकसान और हर तरह की परेशानी व नागवारी से पनाह की जगह है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि मुझसे कहा गया कि तुम्हारी आँखें तो बज़ाहिर सोती रहें लेकिन दिल तुम्हारा जागता रहे और कान तुम्हारे सुनते रहें। चुनाँचे मेरी आँखें तो सचमुच सो ही गईं लेकिन दिल होशियार था, कान खुले थे, फिर मुझसे कहा गया कि एक दौलतमन्द ने एक घर बनाया, लोगों की दावत की, बुलावे भेजे तो जिसने दावत क़बूल की वह तो आया, जी भरकर खाया, बुलाने वाला भी ख़ुश हुआ। और जिसने दावत क़बूल न की, न वह आया न कुछ खा सका, और न दावत देने वाला ख़ुश हुआ। अल्लाह ही वह दाओ़ी (दावत देने वाला) है और वह घर इस्लाम है, और दस्तरख़्वान जन्नत है, और पैग़ाम लाने वाले मुहम्मद सल्ल. हैं।

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. हमारे पास तशरीफ़ लाये और फ़रमाया- मैंने सोते हुए देखा कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मेरे सर के पास हैं और मीकाईल मेरे पैरों के पास। एक अपने दूसरे साथी से कह रहा है कि इस सोने वाले की कोई मिसाल दो, दूसरे ने कहा ऐ सोने वाले तेरे कान सुनते हैं, तेरा दिल जागता है, तेरी और तेरी उम्मत की मिसाल ऐसी है जैसे किसी बादशाह ने कोई घर बनाया और उसमें बड़ा सा कमरा है और उसमें ख़्वान चुन दिया गया। फिर क़ासिद को भेजकर लोगों को खाने के लिये बुलाया गया, कोई आया और कोई नहीं। चुनाँचे वह बादशाह तो अल्लाह है और घर इस्लाम है, और कमरा जन्नत है, और ऐ मुहम्मद तुम वह क़ासिद (बुलाने वाले) हो। जो आया वह इस्लाम में दाख़िल हुआ और जो इस्लाम में दाख़िल हुआ वह जन्नत में दाख़िल हुआ, और जन्नत में दाख़िल होने वाला शख़्स दावत से फ़ैज़याब (लाभान्वित) रहा।

हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि जब सूरज निकलता है तो उसके दोनों तरफ़ फ़रिश्ते होते हैं और आवाज़ देते हैं, जिन्नात व इनसानों के सिवा सब उसको सुनते हैं। वे कहते हैं कि ऐ लोगो! ख़ुदा की तरफ़ आओ, कम मिले और काफ़ी हो जाये तो वह अच्छा है उस ज़्यादा से जो ख़ुदा से ग़ाफ़िल कर दे।

जिन लोगों ने नेकी की है उनके वास्ते ख़ूबी (जन्नत) है, और उस पर और ज़्यादा यह (यानी ख़ुदा का दीदार) भी, और उनके चेहरों पर न (ग़म की) कदूरत छाएगी और न ज़िल्लत, ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (26)	لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۭ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ○

नेक कामों का अच्छा बदला

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि जिसने नेक अ़मल किये उसको आख़िरत में अच्छी जज़ा (बदला और सवाब) मिलेगी, क्योंकि नेकी का बदला नेकी ही है, बल्कि कुछ और ज़्यादा भी है। यानी कम से कम दस गुना, यहाँ तक कि सात सौ गुना ज़्यादा, बल्कि इससे भी कुछ और बढ़कर। जो अल्लाह की दूसरी अ़ताओं पर मुश्तमिल है जैसे जन्नत में हूर व महल्लात और ख़ुदा की रज़ामन्दी और ऐसा दिली सुकून व ख़ुशी जो उसे अब तक हासिल न था। लेकिन इन सबसे बढ़कर ख़ुदा-ए-पाक का दीदार है, यह सारे लुत्फ़ व करम से बढ़कर करम होगा, वे अपने अ़मल के सबब इसके मुस्तहिक़ नहीं होंगे बल्कि महज़ उसके फ़ज़्ल व रहमत की बिना पर दीदारे ख़ुदावन्दी के हक़दार होंगे।

हज़रत सुहैब रज़ि. से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. ने यह आयत (जिसकी तफ़सीर चल रही है) तिलावत फ़रमाई, कि जब जन्नती और दोज़ख़ी अपने-अपने ठिकाने में चले जायेंगे तो एक मुनादी पुकार करेगा कि ऐ जन्नत वालो! तुमसे ख़ुदा का वादा है वह पूरा करना चाहता है। वे कहेंगे अब और कौनसा वादा है? तराज़ू में हमारे वज़न भारी बने, हमारे चेहरे रोशन कर दिये गये, हमें दोज़ख़ से निजात बख़्शी गई। तो अचानक उन पर से पर्दा उठा दिया जायेगा और उनकी नज़र ख़ुदा पर पड़ जायेगी। ख़ुदा की क़सम इससे बड़ी और कोई अ़ता जन्नतियों के लिये न होगी। यह आँखों की ठंडक और दिल की तस्कीन के लिये सबसे बड़ी चीज़ होगी। ग़र्ज़ मुख़्तलिफ़ हदीसों में है कि "ज़ियादतुन" से मुराद अल्लाह तआ़ला का दीदार है। अल्लाह पाक फ़रमाता है किः

لَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ......

यानी हश्र की मुद्दत में उनके चेहरे बेरौनक़ न रहेंगे, न फटकार होगी, न सियाही जैसा कि काफ़िरों के चेहरे सियाह ग़ुबार से भरे होंगे, फटकार बरसती होगी। और न जन्नतियों को ज़ाहिरी व अन्दरूनी किसी क़िस्म की ज़िल्लत का सामना होगा, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने उनके हक़ में फ़रमाया हैः

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ...... الخ

यानी अल्लाह तआ़ला उनको उस दिन के शर (बुराई और ख़राबी) से बचा लेगा और उनके चेहरे चमकते और उनके दिल ख़ुश रहेंगे। अल्लाह पाक अपने फ़ज़्ल व रहमत से हमें ऐसे ही लोगों में से उठाये। आमीन।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ ۢ
بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ
اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ
وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ○

और जिन लोगों ने बुरे काम किए उनकी बदी की सज़ा उसके बराबर मिलेगी, और उनको ज़िल्लत घेर लेगी, उनको अल्लाह तआ़ला (के अ़ज़ाब) से कोई न बचा सकेगा। (उनके चेहरों की कदूरत की ऐसी हालत होगी कि) गोया उनके चेहरों पर अन्धेरी रात के परत-के-परत लपेट दिए गए हैं। ये लोग दोज़ख़ (में रहने) वाले हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (27)

Maktab E Ashraf

बुराई की सज़ा

जब अल्लाह तआला ने उन नेकबख़्तों के मुताल्लिक़ ख़बर दी कि उनकी नेकियों की जज़ा (बदला) दोगुनी चौगुनी होती चली जायेगी, तो अब बदबख़्त गुनाहगारों और मुश्रिकों का हाल बयान फ़रमाता है कि उनके साथ अ़दल (इन्साफ़) किया जायेगा, उनके गुनाहों की सज़ा दोगुनी चौगुनी नहीं होगी, बल्कि बराबर होगी। उन पर उनके गुनाहों की ज़िल्लत छाई हुई रहेगी। फ़रमाता है- जबकि वे होंगे तो तुम उनको शर्मिन्दा व ज़लील देखोगे। और यह न समझना कि ख़ुदा उन ज़ालिमों के आमाल से ग़ाफ़िल है, क़ियामत के दिन तक के लिये उनके अ़ज़ाब में ताख़ीर कर दी गई (यानी अ़ज़ाब को टाल दिया गया) है। उनको अल्लाह से बचाने और सिफ़ारिश करने वाला कोई नहीं। उस दिन इनसान कहेगा कि भाग ही कहाँ सकते हैं, वे हरगिज़ नहीं छोड़े जायेंगे, ख़ुदा के सामने उन्हें आना पड़ेगा, उनके चेहरे इस क़द्र काले होंगे गोया अंधेरी रात की चादर उनके चेहरों पर चढ़ा दी गई है। उस दिन बाज़ चेहरे तो रोशन होंगे और बाज़ स्याह। जिनके चेहरे स्याह होंगे उनसे कहा जायेगा- अरे क्या ईमान ला चुकने के बाद भी तुमने कुफ़्र किया था? लो अब अपने कुफ़्र का मज़ा चखो। और जिनके चेहरे रोशन होंगे वे ख़ुदा की रहमत में रहेंगे और हमेशा-हमेशा रहेंगे। बाज़ के चेहरे रोशन और हंसते हुए ख़ुश-ख़ुश होंगे और बाज़ के चेहरों पर उदासी और स्याही रहेगी।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ
أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ
فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۖ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ
إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ○ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ○
هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَا أَسْلَفَتْ ۚ وَ
رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۖ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ○ ع

और (वह दिन भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जिस दिन हम उन सब (मख़्लूक़ात) को (क़ियामत के मैदान में) जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी जगह ठहरो। फिर हम उन (इबादत करने वालों और उनके माबूदों) के दरमियान में फूट डालेंगे, और उनके वे शुरका (उनसे ख़िताब करके) कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। (28) सो हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह काफ़ी गवाह है कि हमको तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न थी। (29) उस मक़ाम पर हर शख़्स अपने अगले किए हुए कामों का इम्तिहान कर लेगा, और ये लोग अल्लाह (के अ़ज़ाब) की तरफ़ जो उनका मालिके हक़ीक़ी है लौटाये जाएँगे और जो कुछ (माबूद) उन्होंने घड़ रखे थे सब उनसे ग़ायब (और गुम) हो जाएँगे। (कोई भी तो काम न आएगा) (30)

Maktab E Ashraf

कियामत के दिन जिन्नात व इनसानों की हाज़िरी और मुश्रिकों से एक सवाल

अल्लाह तआला का क़ौल है कि जिन्नात व इनसान, नेक व बद सब ही को हम क़ियामत के दिन हाज़िर करेंगे, कोई भी नहीं छोड़ा जायेगा, और मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शुरका अपनी-अपनी जगह ठहरे रहो, और मोमिनों से अलग हो जाओ। जिस दिन क़ियामत का दिन होगा ये दोनों क़िस्म के लोग अलग-अलग रहेंगे। यह उस वक़्त होगा जबकि अल्लाह तआला मुक़द्दमों के फ़ैसले का इरादा फ़रमायेगा, और इसी लिये कहा गया है कि मोमिन हज़रात अल्लाह तआला से दरख़्वास्त करेंगे कि जल्दी से मुक़द्दमों का फ़ैसला फ़रमाये और हमें इस इन्तिज़ार की घड़ी से निजात बख़्शे। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन हम लोग दूसरे सब लोगों से ऊँची जगह पर होंगे। अल्लाह फ़रमायेगा कि ऐ मुश्रिको! तुम और तुम्हारे शुरका जिनकी तुम इबादत करने लगे थे, सब अपनी-अपनी जगह अलग-अलग रहो। उन पहले शरीकों ने इस बात से इनकार कर दिया कि वे उनसे अपनी इबादत कराते थे।

अल्लाह फ़रमाता है कि जिन बुज़ुर्गों की ये पैरवी करते थे और इसी बिना पर उन्हें ख़ुदा का शरीक समझ कर शुरका बना लिया था, अब यही शुरका इनसे बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे। अल्लाह तआला का क़ौल है कि उससे बढ़कर और कौन गुमराह होगा जो ऐसे शुरका को पुकारता है जो क़ियामत तक उसकी पुकार का जवाब नहीं दे सकते, और उसकी दुआ को सुन ही नहीं सकते। और जब लोग क़ियामत में उठाये जायेंगे तो वे ख़ुद अपनी परस्तिश (पूजा और इबादत) करने वालों के दुश्मन होंगे और कहेंगे कि हमें तो इनकी परस्तिश का कोई इल्म नहीं। तुम हमारी इबादत करते होगे लेकिन हम जानते तक नहीं, और इसका गवाह ख़ुदा है। हमने तो तुम्हें कभी कहा ही नहीं था कि हमारी परस्तिश (पूजा) करो।

इस तरह मुश्रिकों का मुँह बन्द कर दिया गया है कि जो न सुनते हैं न देखते हैं, न किसी काम आ सकते हैं, उन्हें तुमने क्यों पूजा था? इनकी न तो मर्ज़ी थी न इरादा था, तुमने अल्लाह तआला की इबादत छोड़ दी जो हर बात का आ़लिम और हर चीज़ पर क़ादिर है, जिसने अपने रसूल और अपनी किताबें सिर्फ़ इस ग़र्ज़ से भेजी हैं कि सिर्फ़ उसी की परस्तिश (इबादत और पूजा) की जाये। जैसा कि फ़रमाया कि हर क़ौम के अन्दर हमारा रसूल हमारी इबादत की तरग़ीब देने और बातिल की परस्तिश छुड़ाने आया है। अब जिसने हिदायत पा ली सो पा ली, और जो गुमराह हो गया सो गुमराह हो गया। तुमसे पहले भी हमने जितने रसूल भेजे सबकी तरफ़ यही 'वही' भेजी थी कि ख़ुदा सिर्फ़ मैं हूँ, सिर्फ़ मेरी ही इबादत कराई जाये। चुनाँचे हम अपने रसूलों से पूछेंगे कि क्या तुमने हमारे सिवा किसी और की परस्तिश (इबादत और पूजा) करने का हुक्म दिया था?

मुश्रिकों की बहुत सी क़िस्में हैं, अल्लाह तआला ने अपनी किताब में उनका ज़िक्र किया है और उनके अक़वाल (बातें) व अहवाल (हालात) बयान करके उनकी तरदीद की है। हुक्म होता है कि क़ियामत के दिन हिसाब के लिये खड़े होने की जगह में हर शख़्स की आज़माईश होगी और अच्छा बुरा जो भी अ़मल किया है सामने लाया जायेगा। उस रोज़ सारे भेद ज़ाहिर हो जायेंगे और इनसान को अपने अगले पिछले सारे गुनाह ज़ाहिर कर देने पड़ेंगे। क़ियामत के दिन उनका आमाल-नामा सामने लाया जायेगा और कहा जायेगा कि अपना आमाल-नामा पढ़ लो, इस वक़्त तुम अपने आप अपना हिसाब करने के लिये काफ़ी हो।

Maktaba E Ashraf

बहरहाल हर आदमी अपने अच्छे बुरे आमाल का बदला पायेगा।

हदीस में है कि हर उम्मत अपने-अपने माबूद के पीछे रहेगी। सूरज को पूजने वाले सूरज के पीछे, चाँद को पूजने वाले चाँद के पीछे और बुतों को पूजने वाले बुतों के पीछे। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَرُدُّوْآ اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰهُمُ الْحَقِّ.

वे अपने मौला ख़ुदा की तरफ़ फेर दिये जायेंगे।

वे क्या सब ही मामलात ख़ुदा की तरफ़ फेर दिये जायेंगे, चुनाँचे वह फ़ैसला करके जन्नतियों को जन्नत में और दोज़ख़ियों को दोज़ख़ की तरफ़ भेजेगा। अब इन गुमराहों ने अपनी तरफ़ से जो झूठ-मूठ माबूद बना रखे थे, सब हवा की तरह उड़ जायेंगे।

आप (उन मुश्रिकों से) कहिये कि (बतलाओ) वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन में रिज़्क़ पहुँचाता है, या (यह बतलाओ कि) वह कौन है जो (तुम्हारे) कानों और आँखों पर पूरा इख़्तियार रखता है। और वह कौन है जो जानदार (चीज़) को बेजान (चीज़ से) निकालता है, और बेजान (चीज़) को जानदार से निकालता है, और वह कौन है जो तमाम कामों की तदबीर करता है? सो (इन सवालों के जवाब में) वे (ज़रूर यही) कहेंगे (कि इन सब कामों का करने वाला) अल्लाह (है), तो उनसे कहिए कि फिर (शिर्क से) क्यों परहेज़ नहीं करते। (31) सो यह है अल्लाह जो तुम्हारा हक़ीक़ी रब है, (और जब हक़ मामला साबित हो गया) फिर हक़ (मामले) के बाद और क्या रह गया, सिवाय गुमराही के, फिर (हक़ को छोड़कर बातिल की तरफ़) कहाँ फिरे जाते हो। (32) इसी तरह आपके रब की यह (तक़दीरी) बात कि ये ईमान न लाएँगे, तमाम नाफ़रमान लोगों के हक़ में साबित हो चुकी है। (33)	قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ○ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ○ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○

ख़ुदा तआ़ला का एक होना

मुश्रिकों पर अल्लाह तआ़ला हुज्जत (दलील) पेश करता है कि ख़ुदा के एक होने और उसी के रब होने का एतिराफ़ (इक़रार) करना पड़ेगा। यानी ऐ नबी! पूछो कि वह कौन है जो आसमान से बारिश बरसाता है और अपनी क़ुदरत से ज़मीन को चीरता है, जिसके अन्दर से दाने अंगूर, नेशकर, ज़ैतून, खजूर,

Maktab-E-Ashraf

घने-घने बाग़ और ख़ोशेदार मेवे पैदा करता है। क्या उसके साथ कोई और ख़ुदा हो सकता है? तो उन्हें मानना पड़ेगा कि ये ख़ुदा ही के काम हैं। अगर वह अपना रिज़्क़ रोक ले तो कौन है कि खोल दे? और जिसने यह सुनने वाली क़ुव्वत या देखने वाली क़ुव्वत दी है अगर चाहे तो छीन ले। तुम ख़ुद कह दो कि यह समाअ़त व बसारत (यानी सुनने और देखने की क़ुव्वत) और सारी इनसानी क़ुव्वतें अल्लाह ही ने पैदा की हैं। क्या तुम उसको नाराज़ करके पसन्द करोगे कि वह तुम्हारी देखने और सुनने की ताक़त व सलाहियत छीन ले? जो अपनी अ़ज़ीम क़ुदरत से मय्यित को ज़िन्दा पैदा करता है और ज़िन्दा से मय्यित को निकालता है।

इस आयत के बारे में मतभेद पहले गुज़र चुका है और इस आयत का मफ़हूम सब पर आ़म और हावी है, और कौन सारी कायनात का इन्तिज़ाम अपने हाथ में लिये हुए है? कि जो कुछ करता है उसकी मर्ज़ी और मन्सूबे से होता है। सब को वह पनाह देता है। उसके ख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता, वह सब पर क़ब्ज़ा व इख़्तियार रखता है, वह हाकिम है, उसके हुक्म के बाद किसी का हुक्म कोई चीज़ नहीं। वह जिसे चाहे पूछे, लेकिन उससे कौन पूछ सकता है?

आसमान व ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात उसकी मोहताज हैं। उसकी हर वक़्त निराली शान है, आसमान व ज़मीन की सारी बादशाहत उसी की है। फ़रिश्ते, इनसान और जिन्नात सब उसके मोहताज हैं, उसके गुलाम हैं, सबका जवाब उनके पास यही है कि ख़ुदा ही में यह सारी क़ुदरत है। काफ़िर व मुश्रिक लोग इन सारी बातों को जानते हैं और इक़रार भी करते हैं, फिर तुम उनसे पूछो कि अच्छा फिर उससे डरते क्यों नहीं हो? अपने घमंड और जहालत से उसको छोड़कर किसी और की पूजा और इबादत क्यों करते हो? सच्चा ख़ुदा तो यही ख़ुदा है जिसका तुमको ख़ुद ही इक़रार है। फिर तो तन्हा वही इबादत का हक़दार हुआ। हक़ बात को समझ लेने के बाद फिर यह गुमराही कैसी? हर माबूद उसके सिवा बातिल है, तुम इबादते हक़ को छोड़कर उसके ग़ैर की इबादत की तरफ़ किधर भटके जा रहे हो?

इन सारी दलीलों के बाद ख़ुदा की बात साबित हो चुकी। यानी जिस तरह इन मुश्रिकों ने कुफ़्र किया और कुफ़्र पर क़ायम रहे, इसी तरह इन्होंने इस बात का इक़रार भी किया है कि वही पाक परवर्दिगार ख़ालिक़ व राज़िक़ है, सारी कायनात में सिर्फ़ वही क़ब्ज़े व इख़्तियार का मालिक है, उसी ने अपने पैग़म्बरों को तौहीद (ईमान और अल्लाह को एक मानने) का दाअ़ी (दावत देने वाला) बनाकर भेजा है। यह मुसल्लम है कि ये बदबख़्त दोज़ख़ी हैं।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ط قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ط قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ط اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى	आप (उनसे यूँ भी) कहिए कि क्या तुम्हारे (तजवीज़ किए हुए) शरीकों में कोई ऐसा है जो पहली बार भी मख़्लूक़ को पैदा करे, फिर (क़ियामत में) दोबारा भी पैदा करे। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला ही पहली बार भी पैदा करता है, फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा, सो फिर तुम (हक़ से) कहाँ फिरे जाते हो। (34) (और) आप (उनसे यूँ भी) कहिए कि क्या तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि हक़ (मामले)

الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّیْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰی ۚ فَمَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ○ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِیْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ○	का रास्ता बतलाता हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही हक़ (मामले) का रास्ता (भी) बतलाता है। तो फिर आया जो शख़्स हक़ (मामले) का रास्ता बतलाता हो वह ज़्यादा इत्तिबा के लायक़ है या वह शख़्स जिसको बिना बतलाए ख़ुद ही रास्ता न सूझे। तो (ऐ मुश्रिको!) तुमको क्या हो गया, तुम कैसी तजवीज़ें करते हो। (35) और उनमें से अक्सर लोग सिर्फ़ बेअसल ख़्यालात पर चल रहे हैं, (और) यक़ीनन बेअसल ख़्यालात हक़ (मामले) से मुस्तग़नी करने (या उसके साबित करने) में ज़रा भी मुफ़ीद नहीं। (ख़ैर) ये जो कुछ कर रहे हैं यक़ीनन अल्लाह को सब ख़बर है, (वक़्त पर सज़ा देगा)। (36)

ज़रा तुलना तो करो

मुश्रिकों ने जो अल्लाह के दर्जे में ग़ैरुल्लाह को ला खड़ा किया और बुतों व औसान को पूजने लगे उनके इस दावे को ग़लत क़रार दिया जा रहा है कि ऐ नबी! उनसे पूछो कि क्या तुम्हारे बनाये हुए शुरका में कोई है जिसने इन आसमानों और ज़मीन को पैदा किया हो, फिर इसमें जो मख़्लूक़ात हैं उन्हें वजूद में लाया हो, या आसमान के जुस्से (वजूद व जिस्म) को अपनी जगह से हटाये या उन्हें बदल दे या उन्हें फ़ना करके फिर नये सिरे से दूसरी मख़्लूक़ पैदा कर सके। कह दो कि तुम किसी को नहीं पेश कर सकोगे। ये तो ख़ुदा ही के काम हैं, फिर तुम सही रास्ते को छोड़कर बातिल की तरफ़ क्यों झुके हो? क्या कोई है कि हक़ की तरफ़ रहनुमाई कर सके? ऐसी रहनुमाई तो ख़ुदा ही कर सकता है।

इस बात को तुम ख़ुद जानते हो कि तुम्हारे शुरका (यानी जिनको तुम ख़ुदा तआ़ला का शरीक बनाते हो) एक भी गुमराह को सीधी राह पर नहीं ला सकते। अल्लाह पाक ही ऐसे हैरान व गुमराह को हिदायत करता है और गुमराही से हिदायत की तरफ़ इनसानों के दिल फेर सकता है, कोई बन्दा जो हक़ की तरफ़ रुजू करने वाले की इत्तिबा करे और पूरा यक़ीन व समझ रखता हो यह अच्छा है या वह जो कुछ भी हिदायत नहीं कर सकता बल्कि अपने अंधेपन के सबब इस बात का मोहताज है कि उसी का हाथ पकड़कर कोई ले चले?

इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा था कि ऐ बाबा! तुम अंधे बहरे माबूद की परस्तिश (पूजा और इबादत) क्यों करते हो? जो बिल्कुल भी तुम्हारे काम का नहीं। और अपनी क़ौम से भी फ़रमाया था कि तुम लोग अपनी ही बनाई हुई चीज़ों की ख़ुद ही इबादत करते हो हालाँकि तुमको और तुम्हारे माबूदों सब को अल्लाह ही ने पैदा किया है, तुम्हारी राय कितनी ग़लत है, तुम्हारी अ़क़्लें जाती रहीं, तुमने अल्लाह और अल्लाह की मख़्लूक़ दोनों को बराबर-बराबर कैसे बना दिया? उसको भी मानते हो इसको भी मानते हो। फिर ख़ुदा को

Maktaba E Ashraf

छोड़कर शुरका की तरफ़ क्यों झुकते हो। ख़ुदा तआ़ला (जो तमाम जहान का ख़ालिक़ और रब है) ही को इबादत के लिये तुमने ख़ास क्यों न कर लिया, कि उसकी इबादत करके गुमराहियों से निकल आते। और दुआयें ख़ासकर ख़ुदा ही से क्यों नहीं माँगते। ये लोग किसी दलील को काम में नहीं लाते, बल्कि इस बुत-परस्ती की बुनियाद किसी यक़ीन के बजाय गुमान और अंधविश्वास पर उठी हुई है। मगर इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा, अल्लाह पाक उनके हर फ़ेल को ख़ूब जानता है। यह उन काफ़िरों के लिये डाँट और सख़्त धमकी है, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ख़बर दे रहा है कि जल्द ही उनकी इन हिमाक़तों (बेवक़ूफ़ियों) की उन्हें सज़ा मिल जायेगी।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ
يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ
رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰهُ ؕ قُلْ
فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ بَلْ
كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا
يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ
مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ
بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝ ع

और यह क़ुरआन अल्लाह के सिवा किसी और का घड़ा हुआ नहीं है, (कि उनसे सादिर हुआ हो) बल्कि यह तो उन (किताबों) की तस्दीक़ (करने वाला) है जो इससे पहले (नाज़िल) हो चुकी हैं। और किताब (यानी अल्लाह के ज़रूरी अहकाम) की तफ़सील (बयान करने वाला) है, (और) इसमें कोई (बात) शक (व शुब्हे की) नहीं कि (वह) रब्बुल आलमीन की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है। (37) क्या ये लोग (यूँ) कहते हैं कि आपने इसको घड़ लिया है, आप कह दीजिए कि फिर तुम इसके जैसी एक ही सूरः (बना) लाओ, और (अकेले नहीं बल्कि) जिन-जिनको अल्लाह के सिवा बुला सको (उनको मदद के लिए) बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। (38) बल्कि ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसके (यानी उसके सही और ग़ैर-सही होने) को अपने इल्मी घेरे में नहीं लाए। "यानी उन्हें ख़ुद उसके बारे में कुछ इल्म नहीं" और अभी उनको इस (क़ुरआन के झुठलाने) का आख़िरी नतीजा नहीं मिला। जो लोग (उनसे पहले) हुए हैं इसी तरह उन्होंने भी (हक़ चीज़ों को) झुठलाया था, सो देख लीजिए कि उन ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ, (इसी तरह उनका होगा)। (39) और उनमें से बाज़े ऐसे हैं जो इस (क़ुरआन) पर ईमान ले आएँगे और बाज़े ऐसे हैं कि इस पर ईमान न लाएँगे, और आपका रब (उन) मुफ़सिदों को ख़ूब जानता है। (40)

क़ुरआन हर शक व शुब्हे से ऊपर है

इन आयतों में क़ुरआन के बेजोड़ और ख़ुदाई कलाम होने पर रोशनी डाली गई है, कि कोई बशर भी इसकी सलाहियत नहीं रखता कि इस जैसा क़ुरआन पेश कर सके। नहीं! बल्कि इस पर भी क़ादिर नहीं कि इसकी एक सूरः जैसी ही कोई सूरः बना लाये। यह उसकी फ़न्नी ख़ूबी और साहित्य से भरपूर होने के दावे की बिना पर है। क़ुरआन का कम अलफ़ाज़ में बड़े और ऊँचे मज़ामीन का बयान, इसकी मिठास और दुनिया और आख़िरत के लिये नफ़ा देने वाली लाखों चीज़ों पर मुश्तमिल होना, इन चीज़ों को कोई दूसरी किताब पेश नहीं कर सकती। क्योंकि यह ख़ुदा की किताब है। वह ख़ुदा जो अपनी ज़ात व सिफ़ात और अपने कामों व बातों में वाहिद व यकता (अकेला और बेमिसाल) है, मख़्लूक़ का कलाम उसके कलाम के साथ क्योंकर मुशाबह (उसके जैसा) हो सकता है?

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि इस जैसी तहरीर ख़ुदा के सिवा किसी और की हो ही नहीं सकती। बशर (इनसान) का कलाम ज़रा भी इससे मेल नहीं खा सकता, और फिर यह कि क़ुरआन वही कहता है जो इससे पहली आसमानी किताबें कहती हैं। अलबत्ता पहली आसमानी किताबों में जो रद्दोबदल हुई है उसको उजागर कर दिया गया है और हलाल व हराम के अहकाम को काफ़ी और शाफ़ी तौर पर बयान किया गया है। इसके ख़ुदा रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से होने में ज़रा भी शुब्हा नहीं किया जा सकता। इसमें गुज़रे ज़माने की ख़बरें भी हैं और आने वाले ज़माने की पेशीनगोईयाँ भी हैं। अतीत और भविष्य की सब बातों पर रोशनी डाली गई है, और लोगों को इस रास्ते पर चलाया गया है जो बिल्कुल सही और ख़ुदा का पसन्दीदा हो सकता है। और अगर तुमको इसके अल्लाह की तरफ़ से होने में ज़रा भी शक हो और यह ग़लत ख़्याल तुम्हारे दिल में बैठा हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने इसे ख़ुद बना लिया है, तो मुहम्मद भी तो तुम्हारे ही जैसे बशर (इनसान) हैं, अगर वह ऐसा क़ुरआन बना सकते हैं तो तुम में से जो बहुत क़ाबिल आदमी हो वह क्यों नहीं बना सकता? लिहाज़ा अपने दावे को साबित करने के लिये इस जैसी बस एक ही सूरः पेश करो जो क़ुरआन जैसी स्पष्टता, संक्षिप्ता और ऊँचे मज़ामीन पर आधारित हो। मुहम्मद तो अकेले थे अब तुम दुनिया भर के इनसान और जिन्नात सभी मिलकर कोशिश करके देखो, इस तरह ख़ुदा तआ़ला गोया उन्हें चुनौती देता है कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो कि यह मुहम्मद का बनाया हुआ है तो आओ इस चुनौती को क़बूल करो, तन्हा नहीं बल्कि सैंकड़ों हज़ारों मिलकर।

इसके बाद एक दूसरा दावा इससे भी ज़बरदस्त है कि यह सुन रखो कि तुम कभी इस पर क़ादिर न हो सकोगे। यह बात भी हम अभी से कहे देते हैं कि तमाम जिन्नात व इनसान भी अगर जमा (एकत्र) हो जायें कि ऐसा ही कोई क़ुरआन बना सकें तो हरगिज़ नहीं बना सकते, चाहे अपने कितने ही मददगार क्यों न बना लें। फिर इस दावे को दस सूरतों तक सीमित करके कहा गया जिसका ज़िक्र सूरः हूद के शुरू में है, कि क्या वे कहते हैं कि मुहम्मद ने इसको बना लिया है? अच्छा तो फिर इस जैसी दस ही सूरतें तुम बनाकर ले आओ। पूरा क़ुरआन न सही इतना ही सही। ख़ुदा को तुमने छोड़ दिया तो दूसरे सब की तुम मदद ले सकते हो, सच्चे हो तो सामने क्यों नहीं आते?

फिर इससे भी नीचे उतरकर इरशाद होता है कि अगर इसको मुहम्मद ने बना लिया है तो ज़्यादा नहीं एक ही सूरत पेश करो। सूरः ब-क़रह (जो मदीने में नाज़िल हुई थी) इसमें एक सूरत ही की चुनौती है, और

Maktab-E-Ashraf

यह बतला दिया गया है कि तुमको ऐसा करने पर क़ुदरत नहीं है तो सुनो! अगर तुमने ऐसी आयतें पेश न कीं और पेश कर भी कहाँ सकते हो? तो फिर अज़ाबे दोज़ख़ से बचो। हालाँकि फ़साहत अरब वालों की घुट्टी में पड़ी हुई थी, और यह उनका ख़ास कमाल समझा जाता था। उनके अश्आर और वे क़सीदे जो काबा शरीफ़ के दरवाज़े पर लटकाये जाते थे, उनके कलाम के आला नमूने का सुबूत हैं। लेकिन अल्लाह ने जो क़ुरआन पेश कर दिया कोई उसकी फ़साहत व बलाग़त को छू नहीं सका। चुनाँचे इसकी बलाग़त और मिठास व संक्षिप्ता और बयाने मज़मून की ख़ूबी को देखकर जो ईमान ले आया वह ले आया, क्योंकि इन ही अहले कमाल में ऐसे आला सलाहियत वाले भी थे जिन्होंने क़ुरआन की बलाग़त का लोहा मान लिया और सर झुका दिया। इक़रारी हो गये कि यह हो सकता है तो ख़ुदा ही का कलाम हो सकता है, जैसा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने के जादूगर जो अपनी जादूगरी में उस ज़माने में बेमिसाल और बेजोड़ थे, बोल उठे कि मूसा का यह लाठी का प्रदर्शन जादू से कोई ताल्लुक़ नहीं रखता, यह अल्लाह ही की ताईद के ज़रिये मुम्किन है। इसलिये कि यक़ीनन मूसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के पैग़म्बर हैं, क्योंकि कोई कलाकार ही किसी कला और फ़न के कमाल को समझ सकता है।

इसी तरह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जो ऐसे ज़माने में पैदा हुए थे जबकि तिब (चिकित्सा और इलाज के फ़न) ने बड़ी तरक़्क़ी हासिल कर ली थी, और मरीज़ों के इलाज में माहिर हकीम लोग अपना कमाल दिखा रहे थे। ऐसे वक़्त में पैदाईशी अंधों और कोढ़ियों को हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का अच्छा कर देना, बल्कि ख़ुदा का नाम लेकर मुर्दों को भी ज़िन्दा कर देना, ऐसी चीज़ें हैं जिनके आगे किसी इलाज व दवा की कुछ नहीं चल सकती।

चुनाँचे समझने वाले समझ गये कि मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि हर नबी को ऐसे मोजिज़े दिये गये हैं जिनको देखकर बशर ईमान ले आ सकें, और मुझे भी जो क़ुरआन दिया गया है इससे मुताल्लिक़ मैं भी उम्मीद करता हूँ कि अक्सर व बेशतर इसकी सच्चाई को मान लेंगे बल्कि उनमें से बाज़ ने जो क़ुरआन को समझ ही नहीं सकते थे झुठलाना करना शुरू कर दिया, लेकिन इसकी कोई दलील न ला सके, और यह उनकी जहालत और हिमाक़त की वजह से था। इसी क़िस्म की तकज़ीब (झुठलाना) अपने पैग़म्बरों की पहली क़ौमों ने भी की थी तो अब तुम ज़रा नज़र दौड़ाओ कि इन झुठलाने वालों का कैसा बुरा हश्र हुआ, जो केवल दुश्मनी और ज़िद की बिना पर झुठला रहे थे। तो अब ऐ इनकार करने वाले क़ुरैश के लोगो! उनका हश्र देखकर सबक़ लो। चुनाँचे उस ज़माने में भी बाज़ लोग तो ईमान ले आये और क़ुरआन से लाभान्वित हुए और बाज़ जो ईमान नहीं लाये वे कुफ़्र की हालत में मर गये। उन लोगों को ख़ुदा ख़ूब जानता है जो हिदायत के मुस्तहिक़ हैं, उन्हीं को हिदायत भी करता है, और जो गुमराही के मुस्तहिक़ हैं उनको भटकने देता है। इस अ़मल में वह आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) है, ज़ालिम नहीं।

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ أَنتُم بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ○ وَمِنْهُم مَّن	और अगर इन दलीलों के बाद भी आपको झुठलाते रहे तो (बस आख़िरी बात यह) कह दीजिए कि (अच्छा साहिब) मेरा किया हुआ मुझको (मिलेगा) और तुम्हारा किया हुआ तुमको (मिलेगा)। तुम मेरे किए हुए के जवाबदेह नहीं

يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ
وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ
اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْىَ وَلَوْ كَانُوْا
لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ
شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

हो, और मैं तुम्हारे किए हुए का जवाबदेह नहीं हूँ। (41) और (आप उनके ईमान की उम्मीद छोड़ दीजिए, क्योंकि) उनमें (अगरचे) बाज़ ऐसे भी हैं जो (ज़ाहिर में) आपकी तरफ़ कान लगा-लगा बैठते हैं, क्या आप बहरों को सुना (कर उनके मानने का इन्तिज़ार कर) रहे हैं, चाहे उनको समझ भी न हो। (42) और (इसी तरह) उनमें बाज़ ऐसे हैं कि (ज़ाहिर में) आपको (मोजिज़ात व कमालात के साथ) देख रहे हैं, तो फिर क्या आप अन्धों को रास्ता दिखलाना चाहते हैं चाहे उनको बसीरत "यानी अ़क्ल व समझ" भी न हो। (43) (यह) यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता, लेकिन लोग ख़ुद ही अपने आपको तबाह करते हैं। (44)

Maktab E Ashraf

नफ़रत और बेताल्लुक़ी का ऐलान

नबी करीम सल्ल. से ख़िताब हो रहा है कि अगर ये मुश्रिक लोग तुमको झुठलाते हैं तो तुम भी इनसे और इनके आमाल से अपनी बेज़ारी (बेताल्लुक़ी) ज़ाहिर करो और साफ़ कह दो कि मेरा अ़मल मेरे लिये और तुम्हारा अ़मल तुम्हारे लिये है। मैं तुम्हारे माबूदों को न मानूँगा। इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने भी अपनी क़ौम से यही कहा था कि मैं तुमसे और तुम्हारे इन झूठे माबूदों से बेताल्लुक़ हूँ। क़ुरैश ही में बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो तुम्हारे कलाम और क़ुरआन व वअ़ज़ को सुनते हैं और जो मुतास्सिर हो सकते हैं, और यही बहुत काफ़ी था लेकिन फिर भी वे सही रास्ते पर न आये। इसमें तुम्हारा कोई क़सूर नहीं, क्योंकि तुम बहरों को सुनाने पर क़ादिर नहीं हो, और न तुमको ख़ुद यह क़ुदरत है कि तुम उनको हिदायत करो, जब तक कि ख़ुदा की मर्ज़ी भी शामिल न हो, और उन्हीं में ऐसे भी हैं कि जो तुम्हारी तरफ़ गहरी नज़र से देखते हैं, तुम्हारे पाकीज़ा अख़्लाक़, हुस्ने सूरत और तुम्हारी नुबुव्वत की दलीलें (जिससे अ़क्ल रखने वाले ही फ़ायदा उठा सकते हैं) को अपनी खुली आँखों से देखते हैं, लेकिन फिर भी क़ुरआन की हिदायत से कुछ फ़ैज़याब (लाभान्वित) नहीं होते, जैसे कि इल्म व समझ रखने वाले फ़ायदा उठाते हैं। और ऐसे मोमिन लोग तुमको देखते हैं तो इज़्ज़त व वक़ार की निगाह से देखते हैं, और कुफ़्फ़ार नज़र डालते हैं तो अपमान भरी निगाह से। वे तुम्हें देखते हैं तो हंसी उड़ाते हैं। अल्लाह तआ़ला किसी पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता। एक सुनता है और हिदायत पाता है और दूसरा भी सुनता और देखता है लेकिन अन्धा और बहरा बना रहता है। आँखें खुली हैं फिर भी अन्धे हैं, कान रखते हुए बहरे हैं, दिल है मगर मुर्दा।

एक ने फ़ायदा उठाया, दूसरे ने नुक़सान। अल्लाह तआ़ला की ज़ाते पाक हर चीज़ पर इख़्तियार व क़ब्ज़ा रखती है, वह सबसे पूछगछ करेगी, लेकिन उससे कौन पूछगछ कर सकता है। वह तो ज़ुल्म नहीं

Maktab E Ashraf

करता, लेकिन लोग ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर लेते हैं।

हदीसे क़ुदसी में है कि ऐ मेरे बन्दो! मैंने ज़ुल्म करने को अपने ऊपर हराम करार दिया है, तुम पर भी हराम करार देता हूँ। चुनाँचे एक दूसरे पर ज़ुल्म न किया करो, तुम्हारे आमाल मेरी नज़र में हैं। मैं हर किस्म के अमल की पूरी-पूरी जज़ा (बदला) देता हूँ। जिसको अच्छी जज़ा मिली वह ख़ुदा का शुक्र करे और जिसको सज़ा मिली उसको चाहिये कि अपनी ज़ात को मलामत करे।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوٓا۟ إِلَّا سَاعَةً مِّنَ ٱلنَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِلِقَآءِ ٱللَّهِ وَمَا كَانُوا۟ مُهْتَدِينَ ○	और (उनको) वह दिन (याद दिलाईये) जिसमें अल्लाह तआ़ला उनको (इस कैफ़ियत से) जमा करेगा कि (वे ऐसा समझेंगे) जैसे वे (दुनिया या बर्ज़ख़ में) सारे दिन की एक-आध घड़ी रहे होंगे और आपस में एक-दूसरे को पहचानेंगे (भी और) वाक़ई (उस वक़्त सख़्त) ख़सारे में पड़े वे लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया, और वे (दुनिया में भी) हिदायत पाने वाले न थे। (45)

क़ियामत और दुनिया एक मुख़्तसर घड़ी

याद दिलाया जा रहा है कि क़ियामत क़ायम होगी और लोग अपनी-अपनी क़ब्रों से उठकर मैदान-ए-हश्र में जमा हो जायेंगे। और जब वह दिन आ पहुँचेगा तो वे समझेंगे कि दुनिया में दिन का कुछ हिस्सा ही गुज़ार आये, यानी शाम नहीं तो सुबह रहे थे और सुबह नहीं तो शाम गुज़ारी थी। जिस दिन सूर फूँका जायेगा तो मुजरिम लोग गिरोह के गिरोह परेशान-हाल निकल आयेंगे, चुपके-चुपके बातें कर रहे होंगे कि बस दस रोज़ हमारा क़ियाम रहा होगा, उनमें के नुमायाँ और तेज़-हाफ़िज़े वाले लोग कहेंगे अरे कहाँ के दस दिन एक ही दिन तो दुनिया में गुज़ारा। गुनाहगार तब्क़ा तो क़समें खा-खाकर कहेगा कि घन्टे भर से ज़्यादा कब रहे? यह सब दलील है इस बात की कि आख़िरत के आ़लम में दुनिया की ज़िन्दगी कैसी हक़ीर (मामूली, बेहक़ीक़त) और कितनी मुख़्तसर है। पूछा जायेगा कि बताओ दुनिया में कितने साल गुज़ारे? तो कहेंगे एक दिन या इससे भी कम। चुनाँचे याददाश्त रखने वालों से पूछ लिया जाये, कहा जायेगा कि काश तुम्हें इल्म होता कि दुनिया की ज़िन्दगी कितनी थोड़ी होती है। वे आपस में एक दूसरे को पहचान लेंगे। माँ बच्चों को और बच्चे माँ-बाप को, रिश्तेदार अपने रिश्तेदारों को, लेकिन हर एक अपनी-अपनी मुसीबत या अपनी-अपनी राहत में व्यस्त व मशग़ूल रहेगा। जब सूर फूँका जायेगा तो फिर ख़ानदान और नसब कुछ नहीं, कोई अ़ज़ीज़ अपने अ़ज़ीज़ को नहीं पूछेगा, जिन लोगों ने ख़ुदा से मुलाक़ात को झुठलाया था वे बड़े घाटे में रहेंगे, अफ़सोस है उन झुठलाने वालों पर, कि क़ियामत के दिन उन्होंने अपनी ज़ात और अपने संबन्धियों को हलाकत में डाल दिया। इससे बड़ा ख़सारा और क्या हो सकता है कि अपने साथियों के सामने हसरत व शर्मिन्दगी उठानी पड़े, और अलग रहना पड़े।

Maktab E Ashraf

وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ٥ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ٥	और जिस (अ़ज़ाब) का उनसे हम वायदा कर रहे हैं, उसमें से कुछ थोड़ा-सा (अ़ज़ाब) अगर हम आपको दिखला दें, या (उसके नाज़िल होने से पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें। सो हमारे पास तो उनको आना (ही) है, फिर (सबको मालूम है कि) अल्लाह तआ़ला उनके सब कामों की इत्तिला रखता ही है। (46) और हर-हर उम्मत के लिए एक हुक्म पहुँचाने वाला (हुआ) है। सो जब वह उनका रसूल (उनके पास) आ चुकता है (और अहकाम पहुँचा देता है तो उसके बाद) उनका फ़ैसला इन्साफ़ के साथ किया जाता है, और उन पर (ज़रा भी) ज़ुल्म नहीं किया जाता। (47)

फ़ैसले

अपने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से ख़िताब होता है कि अगर हम तुम्हारी ज़िन्दगी में उनसे इन्तिक़ाम (बदला) लें, ताकि तुम्हारे दिल को तस्कीन मिले या तुम्हारी ही ज़िन्दगी ख़त्म हो जाये, हर हाल में इनका लौटना हमारी ही तरफ़ है। अगर तुम न भी रहो तो तुम्हारे बाद इनके अफ़आ़ल (काम और आमाल) का ख़ुदा गवाह बन जायेगा। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि बीती रात मेरी अगली और पिछली सारी उम्मत मेरे सामने पेश की गई तो एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह! पहले गुज़री उम्मत तो ख़ैर! लेकिन बाद की उम्मत जो आने वाली है और अभी पैदा ही नहीं हुई है वह कैसे पेश की गई? फ़रमाया कि उनकी सूरत एक ख़ाके की शक्ल में सामने लाई गई, और मैं उनमें से हर एक को इससे भी बेहतर तौर पर पहचान रहा था जैसे कि तुम अपने किसी साथी को पहचान लेते हो। हर उम्मत के लिये एक एक रसूल होता है। जब उनके पास उनका रसूल आ जाता है तो उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला हो जाता है। जैसे अल्लाह पाक ने फ़रमाया है कि ज़मीन ख़ुदा के नूर से चमक उठती है, चुनाँचे हर उम्मत अपने पैग़म्बर की मौजूदगी में ख़ुदा के सामने पेश होती है। उनका अच्छा या बुरा नामा-आमाल साथ होता है, जो उनके गवाह की हैसियत से होता है। तथा फ़रिश्ते भी गवाह होते हैं, जिन्हें उन पर निगराँ मुक़र्रर किया गया था। एक के बाद दूसरी हर उम्मत पेश होती रहेगी और यह उम्मत अगरचे आख़िरी उम्मत है लेकिन क़ियामत के दिन यह सबसे पहली उम्मत बन जायेगी, जिसका फ़ैसला अल्लाह पाक सबसे पहले फ़रमायेगा।

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- हम अगरचे सब के बाद हैं लेकिन क़ियामत में सबसे पहले होंगे, और सारी मख़्लूक़ से पहले हमारा हिसाब किताब हो जायेगा। इस उम्मत ने यह शर्फ़ (इज़्ज़त व सम्मान) अपने रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की बरकत से हासिल किया है। आप पर क़ियामत तक दुरूद व सलाम हो।

Mahtab E Ashraf

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ○ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا
وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ
اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ
سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ○ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ
اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا
يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ○ اَثُمَّ اِذَا مَا
وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ
تَسْتَعْجِلُوْنَ ○ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ
تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ○

और ये लोग कहते हैं कि (ऐ नबी और ऐ मुसलमानो!) यह (अज़ाब का) वायदा कब (ज़ाहिर) होगा, अगर तुम सच्चे हो (तो ज़ाहिर क्यों नहीं करा देते)। (48) आप फ़रमा दीजिए कि मैं (ख़ुद) अपनी ज़ाते ख़ास के लिए तो किसी नफ़े (के हासिल करने का) और किसी नुक़सान (के दूर करने) का इख़्तियार रखता ही नहीं, मगर जितना (इख़्तियार) ख़ुदा को मन्ज़ूर हो। हर उम्मत के (अज़ाब के) लिए (अल्लाह के नज़दीक) एक तय वक़्त है, (सो) जब उनका वह तय किया हुआ वक़्त आ पहुँचता है तो (उस वक़्त) एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं और न आगे सरक सकते हैं। (49) आप (उसके मुताल्लिक़) फ़रमा दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अगर तुम पर उसका (यानी ख़ुदा का) अज़ाब रात को आ पड़े, या दिन को, तो (यह बतलाओ कि) उस (अज़ाब) में कौनसी चीज़ ऐसी है कि मुजरिम लोग उसको जल्दी माँग रहे हैं। (50) क्या फिर जब वो (मुक़र्रर और तयशुदा वायदा) आ ही पड़ेगा (उस वक़्त) उसकी तस्दीक़ करोगे? हाँ अब (माना) हालाँकि (पहले से) तुम (झुठलाने के इरादे से) उसकी जल्दी (मचाया) करते थे। (51) फिर ज़ालिमों (यानी मुश्रिकों) से कहा जाएगा कि हमेशा का अज़ाब चखो, तुमको तो तुम्हारे ही किए का बदला मिला है। (52)

कैसा बेहूदा मुतालबा

इरशाद होता है कि ये मुश्रिक लोग अज़ाब में जल्दी करते हैं और वक़्ते अज़ाब आने से पहले अज़ाब माँगते हैं। उसमें इनकी कोई भलाई नहीं। काफ़िर तो जल्दी करते हैं लेकिन मोमिन उससे डरते हैं और यक़ीन रखते हैं कि वास्तव में अज़ाब ज़रूर आयेगा, अगरचे उसका निर्धारित वक़्त मालूम न हो। इसी लिये अल्लाह पाक नबी सल्ल. को जवाब सिखा रहा है कि कह दो मैं अपने नफ़्स के लिये न नुक़सान का मालिक हूँ न फ़ायदे का। मैं सिर्फ़ उतना ही कहता हूँ जो मुझे बता दिया गया है, और अगर मैं कुछ हासिल करना चाहता हूँ तो उस पर क़ादिर नहीं जब तक कि अल्लाह तआला ख़ुद मुझे आगाह न फ़रमा दे। मैं तो

Maktab E Ashraf

उसका बन्दा और तुम्हारे लिये उसका क़ासिद हूँ। मैंने तुम्हें ख़बर दे दी है कि क़ियामत ज़रूर होगी लेकिन उसका निर्धारित वक़्त मुझे नहीं बतलाया गया। हर क़ौम के लिये एक मुक़र्ररा मुद्दत होती है और जब वह मुद्दत ख़त्म हो जाये तो एक घड़ी का भी आगा-पीछा न होगा। जैसा कि फ़रमायाः

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا.

जब किसी का वक़्त आ जाता है तो ज़र्रा भर की भी ताख़ीर (देरी) नहीं हो सकती।

काफ़िरों पर ख़ुदा का अ़ज़ाब अचानक आ जायेगा। अगर दिन और रात में किसी भी वक़्त यकायक आ जाये तो बताओ क्या करोगे? इसलिये जल्दी क्यों करते हो? जबकि आ ही जायेगा तो क्या उस वक़्त ईमान लाओगे? वह ईमान का वक़्त कब रहेगा? उस वक़्त कहा जायेगा कि लो जिस अ़ज़ाब की जल्दी करते थे। उस वक़्त कहेंगे ऐ ख़ुदा! हमने देख लिया, हमने सुन लिया, अ़ज़ाब से साबक़ा पड़ने पर बोल उठेंगे कि हम अब एक ख़ुदा को मानते हैं और दूसरे तमाम माबूदों को छोड़ते हैं, लेकिन उस वक़्त का ईमान कोई ईमान नहीं। अल्लाह तआ़ला की आ़दत तो अपने बन्दों में यूँ ही चली हुई है। उन ज़ालिमों से कहा जायेगा कि अब हमेशा का अ़ज़ाब चखो। इस तरह उन्हें ख़ूब डाँट बताई जायेगी, जिस अ़ज़ाबे जहन्नम का वे इनकार करते थे उस अ़ज़ाब में उन्हें धक्के दे-देकर झोंका जायेगा। तुम जादू कहते थे तो क्या यह जादू है? नहीं! बल्कि तुम ख़ुद अन्धे हो। अब चाहे सब्र करो या न करो, अपने आमाल का बदला ज़रूर पाओगे।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِیْ وَرَبِّیْٓ
اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۚؔ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ وَلَوْ ع ۵ ۱۰
اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِی الْاَرْضِ لَا
فْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا
الْعَذَابَ ۚ وَقُضِیَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

और वे (इन्तिहाई ताज्जुब व इनकार से आपसे) पूछते हैं कि क्या वह (अ़ज़ाब) वाक़ई (कोई चीज़) है, आप फ़रमा दीजिए कि हाँ क़सम है मेरे रब की, वह वास्तविक (चीज़) है, और तुम किसी तरह उसे (यानी ख़ुदा को) आ़जिज़ नहीं कर सकते (कि वह अ़ज़ाब देना चाहे और तुम बच जाओ)। (53)

और अगर हर-हर मुश्रिक शख़्स के पास इतना (माल) हो कि सारी ज़मीन में भर जाए तब भी उसको देकर अपनी जान बचाने लगे। और जब अ़ज़ाब देखेंगे तो (और फ़ज़ीहत के ख़ौफ़ से) शर्मिन्दगी को (अपने दिल ही में) छुपाकर रखेंगे और उनका फ़ैसला इन्साफ़ के साथ होगा, और उन पर (ज़रा भी) ज़ुल्म न होगा। (54)

ख़ुदा की क़सम यही हक़ है

तुमसे ये लोग पूछ रहे हैं कि मिट्टी हो जाने के बाद यह क़ब्रों से उठना क्या सच है? तो कह दो कि

हाँ ख़ुदा की क़सम सच है। तुम्हारा मिट्टी हो जाना और फिर हमारा तुमको पहली हालत पर ले आना हमारे लिये आसान है, हम इसमें आजिज़ नहीं। ख़ुदा तो जब किसी चीज़ को वजूद में लाना चाहता है तो सिर्फ़ यह कह देता है कि 'हो जा' पस वह चीज़ वजूद में आ जाती है।

ऐसी क़समें क़ुरआन में सिर्फ़ दो जगह और बयान हुई हैं जिसमें अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को हुक्म दिया है कि जो मआ़द (आख़िरत) का इनकार करते हैं उनसे क़सम खाकर बयान करो। सूरः सबा में है कि काफ़िर कहते हैं कि क़ियामत न होगी, कह दो कि ख़ुदा की क़सम होगी। और सूरः तग़ाबुन में है कि काफ़िर समझते हैं कि फिर ज़िन्दा नहीं होंगे, कह दो कि ख़ुदा की क़सम ज़िन्दा होंगे और तुम्हारे आमाल तुमको बताये जायेंगे। और यह बात ख़ुदा पर कुछ दुश्वार नहीं है।

जब क़ियामत क़ायम होगी तो ये काफ़िर चाहेंगे कि ज़मीन भर सोना देकर अ़ज़ाब से छुटकारा पायें, लेकिन न हो सकेगा। और जब अ़ज़ाब को देख लेंगे तो एक ख़ामोश नदामत (शर्मिन्दगी) से दोचार रहेंगे। लेकिन जो कुछ भी उनसे बर्ताव होगा इन्साफ़ के साथ होगा, ज़रा भी ज़्यादती न होगी।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ هُوَ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝	याद रखो कि जितनी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं, सब अल्लाह ही की (मिल्क) हैं। याद रखो कि अल्लाह का वायदा सच्चा है, (पस क़ियामत ज़रूर आएगी) लेकिन बहुत-से आदमी यक़ीन ही नहीं करते। (55) वही जान डालता है, वही जान निकालता है, और तुम सब उसी के पास लाए जाओगे, (और हिसाब किताब होगा)। (56)

सब कुछ ख़ुदा का है

वह आसमानों और ज़मीनों का मालिक है, उसका वादा पूरा होकर रहेगा। वह ज़िन्दा करता है, वही मारता है, लौटना उसी की तरफ़ है। वह इस बात पर क़ादिर है कि समुद्रों, मैदानों और दुनिया के कोनों कोनों से उनकी मिट्टी के ज़र्रों को फिर जमा करे और फिर ज़िन्दा जिस्म बना दे।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝	ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से (एक ऐसी चीज़) आई है जो (बुरे कामों से रोकने के लिए) नसीहत (है) और दिलों में जो (बुरे कामों से) रोग (हो जाते हैं) उनके लिए शिफ़ा है, और रहनुमाई करने वाली है, और रहमत (और सवाब का ज़रिया) है, (और ये सब बरकतें) ईमान वालों के लिए हैं। (57) आप (उनसे) कह दीजिये कि (जब क़ुरआन ऐसी चीज़ है) पस लोगों को ख़ुदा के इस इनाम और रहमत पर ख़ुश होना चाहिए। वह इस (दुनिया) से कहीं बेहतर है, जिसको वे जमा कर रहे हैं। (58)

Maktab E Ashraf

शिफ़ा का नुस्ख़ा

इस उम्मत को जो क़ुरआने अज़ीम दिया गया है इस पर एहसान जताया जा रहा है कि ऐ लोगो! यह पन्द व नसीहत का एक दफ़्तर है, जो तुम्हारे ख़ुदा की तरफ़ से है, और तुम्हारे दिलों के लिये शिफ़ा है, यानी शक व शुब्हे, दिलों की गन्दगी और नापाकी को दूर करने वाला है। इससे ख़ुदा की हिदायत व रहमत हासिल होगी, मगर सिर्फ़ उन्हीं को जो ख़ुदा पर यक़ीन और ईमान रखते हैं। क़ुरआन को हमने मोमिनों के लिये शिफ़ा और रहमत बनाकर उतारा है, लेकिन गुनाहगारों के लिये यह नुक़सान और ख़सारे के सिवा और कुछ नहीं। कह दो कि यह क़ुरआन ख़ुदा का फ़ज़्ल और रहमत है, इसको लेकर ख़ुश हो जाओ और दुनिया-ए-फ़ानी के मुनाफ़े (लाभ) जो तुम हासिल करते हो, उन सबसे बेहतरीन चीज़ यह क़ुरआन है।

जब इराक़ का ख़िराज (टैक्स) हज़रत उमर रज़ि. के पास आया तो हज़रत उमर रज़ि. उसे देखने के लिये निकल आये, उनका ख़ादिम भी उनके साथ था। हज़रत उमर ख़िराज में आये हुए ऊँटों को गिनने लगे लेकिन कहाँ तक गिनते, गिनते गिनते थक गये। कहने लगे ख़ुदा का शुक्र है। उनका ख़ादिम कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम यह भी ख़ुदा का फ़ज़्ल और रहमत है। तो हज़रत उमर रज़ि. ने कहा ऐसा नहीं, अल्लाह तआ़ला ने 'बिफ़ज़्लिल्लाहि व बि-रहमतिही' कहकर क़ुरआन और उससे लाभान्वित होना मुराद लिया है, इसलिये इसको फ़ज़्ल व रहमत नहीं बल्कि 'मिम्मा यज्मऊ़न' (यानी उसमें से जो कुछ तुम जमा करते हो) समझना चाहिये, क्योंकि यह हमारा जमा किया हुआ है। फ़ज़्ल व रहमत की तो बहुत बड़ी शान है।

आप (उनसे) कह दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अल्लाह ने तुम्हारे (फ़ायदा उठाने के) लिए जो कुछ रिज़्क़ भेजा था, फिर तुमने (अपनी घड़त से) उसका कुछ हिस्सा हराम और कुछ हिस्सा हलाल क़रार दे लिया। आप (उनसे) पूछिए कि क्या तुमको ख़ुदा ने हुक्म दिया है या (सिर्फ़) अल्लाह पर (अपनी तरफ़ से) बोहतान ही बाँधते हो? (59) और जो लोग अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधते हैं, उनका क़ियामत के बारे में क्या गुमान है, वाक़ई लोगों पर अल्लाह का बड़ा ही फ़ज़्ल है, लेकिन अक्सर (आदमी) उनमें से बेक़द्र हैं (वरना तौबा कर लेते)। (60)	قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ ع ٦ ١١

तुम्हारी अपनी उपज

मुश्रिकों ने बाज़ जानवरों को 'बहाइर' 'सवाइब' 'वसाइल' के नाम देकर किसी को अपने पर हलाल और किसी को हराम क़रार दे लिया था। इसकी तरदीद फ़रमाई जा रही है। जैसा कि अल्लाह का इरशाद है कि खेतों में से जो निकलता है और मवेशी (जानवर) जो पैदा होते हैं वे उसमें से ख़ुदा का एक ख़ास हिस्सा क़रार देते हैं। अबुल-अख़्वस रिवायत करते हैं कि मैं नबी सल्ल. के पास हाज़िर हुआ और सूरत व लिबास

की हैसियत से मैं बदहाल-सा था। आपने फ़रमाया- तुम्हारे पास कुछ माल व दौलत है कि नहीं? मैंने कहा कि ख़ुदा का दिया सब कुछ मौजूद है। ऊँट, घोड़ों बकरियों के रेवड़ और गल्ले हैं, बाँदी गुलाम हैं, तो आपने फ़रमाया फिर तुम पर ख़ुदा की नेमत के आसार ज़ाहिर क्यों नहीं हैं? फिर फ़रमाया तुम्हारे ऊँटों के बच्चे होते हैं, वे हर हिस्से से तन्दुरुस्त होते हैं लेकिन तुम उस्तरा लेकर उठते हो, उनके कान काट देते हो, कहते हो कि ये 'बहाइर' हैं। उनकी खाल चीर देते हो कहते हो कि अब ये 'सिरम' हैं। अपने पर भी हराम कर लेते हो और अपने घर वालों पर भी, क्या ऐसा नहीं है? मैंने कहा हाँ। अब आपने फ़रमाया कि सुनो! जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें हलाल दिया है वह हमेशा के लिये हलाल है, हराम हो नहीं सकता। अल्लाह का हाथ तुम्हारे हाथ से ज़्यादा क़वी (ताक़तवर) है, और अल्लाह का चाक़ू तुम्हारे चाक़ू से ज़्यादा तेज़ है। अल्लाह पाक उन लोगों से अपनी सख़्त नाराज़गी का इज़हार फ़रमाता है जो उसके हलाल को अपने ऊपर हराम कर लेते हैं, या हराम को अपने लिये हलाल बना लेते हैं। और यह सिर्फ़ अपनी ज़ाती राय और ख़्वाहिश की बिना पर, जिसकी कोई दलील नहीं। फिर उनको क़ियामत के अ़ज़ाब से डराता है। फ़रमाता है कि जो लोग ख़ुदा पर बोहतान बाँधते हैं आख़िर वे समझते क्या हैं कि क़ियामत के दिन हम उनसे क्या बर्ताव करेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْفَضْلٍ عَلَى النَّاسِ.

लोगों पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है।

इब्ने जरीर कहते हैं कि उसके छोड़ने में गोया दुनिया ही में उन्हें सज़ा देकर उनको पाक करना मक़सूद है, लेकिन मेरा ख़्याल है कि शायद इससे मुराद यह हो कि अल्लाह तआ़ला लोगों पर बड़ा ही फ़ज़्ल वाला है कि दुनिया में बहुत सी ऐसी चीज़ें इनसानों के लिये पैदा कर दीं जिनसे उनकी ख़ुशी और उनका फ़ायदा है, और ऐसी चीज़ें इनसान के लिये हराम फ़रमा दीं जिनमें सरासर नुक़सान का पहलू था, चाहे दीन की हैसियत से हो या दुनिया की हैसियत से, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। यानी ख़ुदा के इनामों को अपने ऊपर हराम कर लेते हैं और अपने नफ़्सों पर तंगी कर लेते हैं, यानी अपनी तरफ़ से किसी को हलाल और किसी को हराम क़रार दे लेते हैं, मुश्रिकों में इस चीज़ का ख़ूब रिवाज हो गया था और उन्होंने अपना मस्लक (दीन और तरीक़ा) ही ऐसा बना लिया था। और अहले किताब में अगरचे यह बात नहीं थी लेकिन उन्होंने भी मूसा बिन सबाह से यह बिदअ़त (बुरा तरीक़ा) इख़्तियार कर ली थी।

अल्लाह तआ़ला के फ़रमानः

اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْفَضْلٍ عَلَى النَّاسِ.

(अल्लाह इनसानों पर बड़े फ़ज़्ल वाला है) के बारे में मन्क़ूल है कि क़ियामत के दिन तीन क़िस्म के ख़ुदा-परस्त (अल्लाह को मानने वाले) पेश किये जायेंगे। अल्लाह तआ़ला उनमें से एक क़िस्म से दरियाफ़्त फ़रमायेगा कि तुमने किस ख़्याल से यह आमाल इख़्तियार किये थे? वे कहेंगे या रब तूने जन्नत पैदा की, जन्नत में बाग़, फल, पेड़, नहरें, हूर व महल्लात और नेक बन्दों के लिये हर क़िस्म की नेमतें मुहैया कीं, उसी को हासिल करने के लिये मैंने रात-रातभर जागकर इबादत की, दिन-दिनभर रोज़े रखे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तूने जन्नत की ख़ातिर जब ये अ़मल किये तो जा जन्नत ही तेरा ठिकाना है। लेकिन यह तेरे अ़मल का बदला नहीं, मैं तुझे दोज़ख़ से निजात देता हूँ यह मेरा फ़ज़्ल है, और मैं तुझे जन्नत में दाख़िल करता हूँ यह भी मेरा फ़ज़्ल है। चुनाँचे ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे।

फिर दूसरे लोग बुलाये जायेंगे, ख़ुदा उनसे भी यही पूछेगा तो वे कहेंगे या रब तूने दोज़ख़ पैदा की, दोज़ख़ में तौक़ व ज़न्जीर रखे, गर्म हवायें और खौलता हुआ पानी उसमें पैदा किया, गुनाहगारों के लिये सारे ही अ़ज़ाब उसमें मुहैया किये, चुनाँचे मैं रात-रातभर जागकर इबादत करता रहा, दोज़ख़ के ख़ौफ़ से दिन-दिन भर भूखा प्यासा रहकर रोज़े रखे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तूने दोज़ख़ से डरकर नेक आमाल किये हैं तो ले मैंने तुझे दोज़ख़ से निजात बख़्शी और फिर मेरा यह अतिरिक्त फ़ज़्ल है कि दोज़ख़ से निजात देने के बाद तुझे जन्नत भी दे देता हूँ। चुनाँचे वह जन्नत में जा दाख़िल होगा।

अब तीसरी क़िस्म के लोग हाज़िर किये जायेंगे और जब अल्लाह पूछेगा तो वे बतायेंगे कि या रब! हमने तेरे शौक़ और तेरी मुहब्बत के लिये तेरी इबादत की, रात भर भी इबादत की और दिन भर भी रोज़े रखे, सिर्फ़ तेरी मुलाक़ात के शौक़ और तेरी रज़ामन्दी के लिये। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि जब मेरी मुलाक़ात के शौक़ में तुमने ऐसा किया है तो अल्लाह तआ़ला उनके सामने जलवा-अफ़रोज़ हो जायेगा और फ़रमायेगा लो मुझे देखो, मुझ पर नज़र डालो कि तुमको सबसे बड़ी दौलत मिली है। फिर फ़रमायेगा कि मैं अपने फ़ज़्ल से तुम्हें दोज़ख़ से भी निजात देता हूँ और जन्नत से भी तुम्हें नवाज़ता हूँ। मेरे फ़रिश्ते तुम्हारे पास हाज़िर रहेंगे और मैं बज़ाते ख़ुद तुम पर अपनी सलामती नाज़िल फ़रमाता रहूँगा। चुनाँचे ऐसे लोग जन्नत में जा दाख़िल होंगे।

और आप (चाहे) किसी हाल में हों, और उन्हीं हालात में से यह कि आप कहीं से क़ुरआन पढ़ते हों और (इसी तरह और लोग भी जितने हों) तुम जो काम करते हो हमको सबकी ख़बर रहती है, जब तुम उस काम को करना शुरू करते हो, और आपके रब (के इल्म) से कोई चीज़ ज़र्रा बराबर भी ग़ायब नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में, (बल्कि सब उसके इल्म में हाज़िर हैं) और न कोई चीज़ इस (ज़िक्र हुई मात्रा) से छोटी है और न कोई चीज़ (उससे) बड़ी है, मगर यह सब (अल्लाह तआ़ला के इल्म में होने की वजह से) किताबे मुबीन (यानी लौहे महफ़ूज़) में (लिखा हुआ) है। (61)	وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۭ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاۗءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

ज़र्रे-ज़र्रे का इल्म

नबी सल्ल. को ख़बर दी जा रही है कि ख़ुदा तुम्हारी उम्मत और समस्त मख़्लूक़ात के सारे अहवाल से हर लम्हा और हर घड़ी वाक़िफ़ है। ज़र्रा भर चीज़ भी ज़मीन और आसमानों के अन्दर चाहे कितनी ही हक़ीर (मामूली) क्यों न हो, किताबे मुबीन में यानी अल्लाह के इल्म में मौजूद है। उसके इल्म से बाहर नहीं हो सकती। ग़ैब की मालूमात उसी के पास हैं। ख़ुश्की हो कि तरी ग़ैब की बात उसके सिवा कोई नहीं जानता। एक पत्ता भी टूटकर गिरता है, रात की अंधेरियों में कहीं कोई ज़र्रा भी पड़ा रहता है और कोई

चीज़ तर हो कि खुश्क, अच्छी हो कि बुरी, सब का उसको इल्म है। जानदार चीज़ें हों या बेजान, पेड़ पौधे हों या दरख़्त व पत्थर उनकी हर हरकत को जानता है, ज़मीन पर जितने जानदार हैं, हवा में जितने परिन्दे उड़ते हैं, ये भी सब तुम्हारी तरह गिरोह-गिरोह (यानी जमाअ़त की शक्ल में) हैं। हर जानदार की ग़िज़ा का ज़ामिन (ज़िम्मेदार) अल्लाह तआ़ला है।

जब इन चीज़ों की हरकतों का भी उसको इल्म है तो इनसान जो कि इबादत व आमाल का मुकल्लफ़ व मामूर है उसकी हरकतों व आमाल का इल्म उसको कैसे न होगा? जैसा कि फ़रमाता है कि तुम उसी अ़ज़ीज़ व रहीम पर भरोसा रखो, जो तुमको अगर नमाज़ में खड़े भी हों तो देख रहा है, सज्दा भी कर रहे हो तो देख रहा है। और इसी लिये फ़रमाया कि चाहे तुम किसी मश्ग़ले में हो, क़ुरआन पढ़ रहे हो या और कोई अ़मल कर रहे हो, हम देख रहे हैं और सुन रहे हैं। चुनाँचे जब जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्ल. से एहसान के मायने पूछे तो फ़रमाया इसका मतलब यह है कि तुम ख़ुदा की इस तरह इबादत करो गोया ख़ुदा को देखकर इबादत कर रहे हो, और अगर यह नहीं तो कम से कम इस तरह कि तुम उसके सामने हो और वह तुम्हें देख रहा है।

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝	याद रखो कि अल्लाह के दोस्तों पर न कोई अन्देशे (वाला वाक़िआ़ पड़ने वाला) है और न वे (किसी मतलूब के जाते रहने पर) ग़मज़दा होते हैं। (62) वे (अल्लाह के दोस्त) हैं जो ईमान लाए और (गुनाहों से) परहेज़ रखते हैं। (63) उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ख़ौफ़ व रंज से बचने की) ख़ुशख़बरी है, (और) अल्लाह की बातों में (यानी वायदों में) कुछ फ़र्क़ नहीं (हुआ करता), यह (ख़ुशख़बरी जो ज़िक्र हुई) बड़ी कामयाबी है। (64)

कहाँ का ख़ौफ़, कैसा रंज?

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि औलिया-अल्लाह (अल्लाह के वली और दोस्त) वे लोग हैं जो ईमान लाने के बाद परहेज़गारी भी इख़्तियार करते हैं। चुनाँचे जो परहेज़गार है, ख़ुदा का वली है, आख़िरत के अहवाल से अगर उन्हें साबक़ा पड़ेगा तो उनको कोई ख़ौफ़ महसूस नहीं होगा और न दुनिया में उन्हें कोई रंज व ग़म घेरेगा। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि औलिया-अल्लाह वे लोग हैं जो हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र व फ़िक्र में देखे जाते हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि एक आदमी ने पूछा या रसूलल्लाह! औलिया-अल्लाह कौन हैं? फ़रमाया वे लोग कि जब देखो यादे ख़ुदा में मसरूफ़ हों।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- ख़ुदा के बन्दों में ऐसे बन्दे भी हैं कि अम्बिया व शुहदा (शहीद लोग) भी उन पर रश्क करते हैं। पूछा गया या रसूलल्लाह! वे कौन लोग हैं? हम भी उनसे मुहब्बत रखेंगे। फ़रमाया अम्बिया के लिये क़ाबिले रश्क वे लोग हैं कि न माल का कोई

ताल्लुक़ न नसब का लगाव, मगर सिर्फ़ अल्लाह के लिये एक दूसरे को चाहते हैं। उनके चेहरे नूरानी हैं, वे नूर के मिम्बरों पर हैं, लोग जहाँ ख़ौफ़ से थर्रा जायें वहाँ उन पर ज़रा भी ख़ौफ़ के आसार नहीं। लोगों पर रंज व ग़म तारी है और उनको रंज से कोई वास्ता नहीं।

अबू मालिक अश्अरी से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- विभिन्न क़बीलों से और चारों तरफ़ से लोग जमा होंगे और उनमें कोई रिश्तेदारी न होगी, लेकिन वे महज़ अल्लाह की ख़ातिर आपस में एक दूसरे को दोस्त रखते होंगे और ख़ुलूस व मुहब्बत होगी। क़ियामत के रोज़ अल्लाह उनके लिये नूर के मिम्बर क़ायम करेगा जिन पर वे बैठे होंगे। लोग क़ियामत में परेशान फिर रहे होंगे लेकिन वे इत्मीनान से होंगे, अल्लाह के औलिया यही लोग हैं। हज़रत अबू दर्दा से किसी ने नबी करीम सल्ल. की वज़ाहत-

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ.

(कि उनके लिये दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी अल्लाह की तरफ़ से ख़ौफ़ व रंज से बचने की ख़ुशख़बरी है) के बारे में पूछी तो कहा कि ख़ुशख़बरी से अच्छे और नेक ख़्वाब मुराद हैं, जिनको कोई मुस्लिम देखता है। या दूसरों को उससे मुताल्लिक़ ख़्वाब दिखाया जाता है। हज़रत अबू दर्दा रज़ि. ने कहा कि तुमने मुझसे यह सवाल किया और इससे पहले सिर्फ़ एक वक़्त एक शख़्स ने नबी सल्ल. से यह सवाल किया था, और आपने फ़रमाया था कि यह सच्चे ख़्वाब जो कोई देखे या उसके हक़ में कोई दूसरा देखे तो यह दुनिया की ज़िन्दगी में भी उसके लिये ख़ुशख़बरी है और आख़िरत में जन्नत की बशारत है।

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. से हुज़ूर सल्ल. ने यही फ़रमाया था कि तुमसे पहले मुझसे किसी ने यह सवाल नहीं किया था। 'बुशरा' से अच्छे ख़्वाब मुराद हैं। इब्ने सामित रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा था कि इस आयत में आख़िरत की बशारत (ख़ुशख़बरी) तो जन्नत है, लेकिन दुनिया की बशारत से क्या मुराद है? तो आपने फ़रमाया कि सच्चे ख़्वाब जिसको कोई देखे या उसके हक़ में किसी को दिखाये जायें, और यह सच्चे ख़्वाब भी नुबुव्वत के सत्तर या चवालीस हिस्सों में से एक हैं। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कोई इनसान अच्छे अ़मल करता है और लोग उसकी तारीफ़ करते हैं तो गोया यह मोमिन के लिये दुनिया ही में जन्नत की बशारत (ख़ुशख़बरी) है। और यह नुबुव्वत के 49 हिस्सों में से एक हिस्सा है। पस जो अच्छे ख़्वाब देखे तो वह लोगों के सामने बयान कर दिया करे। और जो बुरे ख़्वाब देखे तो ये शैतान की तरफ़ से होते हैं। वह उन्हें ख़ौफ़ज़दा करने के लिये ऐसा करता है, तो चाहिये कि तीन दफ़ा अपनी बाईं तरफ़ थूक दे और ख़ुदा की तकबीर पढ़ ले। और किसी से बयान न करे।

एक दूसरी जगह ख़्वाब को नुबुव्वत के छयालीस हिस्सों में से एक हिस्सा क़रार दिया है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. कहते हैं कि अच्छे ख़्वाब अल्लाह तआ़ला की बशारत हैं। कहा गया है कि इससे मुराद यह है कि मोमिन के मरने के वक़्त फ़रिश्ते उसको जन्नत और मग़फ़िरत की ख़ुशख़बरी देते हैं। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا...... الخ

जो लोग इस बात के क़ायल हैं कि अल्लाह ही हमारा रब है फिर मरते दम तक इस पर क़ायम भी रहते हैं तो उन पर फ़रिश्ते नाज़िल होंगे और कहेंगे कि न ख़ौफ़ करो न ग़मगीन होओ, तुमको उस जन्नत की ख़ुशख़बरी है जिसका तुमसे वादा किया गया है। दुनिया और आख़िरत में हम तुम्हारे वाली हैं। तुम जो चाहते हो तुमको मिल गया, यह ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से तुम्हें तोहफ़ा है।

Maktab E Ashraf

हज़रत बरा रज़ि. की हदीस में है कि जब मोमिन की मौत का वक़्त आता है तो रोशन चेहरे और सफ़ेद लिबास वाले फ़रिश्ते उसके पास आते हैं और कहते हैं कि ऐ पाक रूह! राहत व आराम की तरफ़ चल। ख़ुदा तुझसे नाराज़ नहीं। तो यह रूह उसके मुँह से इस तरह निकल पड़ेगी जैसे मश्क के मुँह से पानी निकल पड़ता है। जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि क़ियामत की दहशत उनको घबरा न देगी। फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि यह वही दिन है जिसका तुमसे वादा था। उस दिन मोमिनों के साथ नूर चल रहा होगा सामने भी और सीधी तरफ़ भी। आज तुम्हें जन्नत की बशारत (ख़ुशख़बरी) है जिसके नीचे हमेशा बहने वाली नहरें चल रही हैं। यह बड़ी ज़बरदस्त कामयाबी है।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○ أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ○ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٰتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ○	और आपको उनकी बातें ग़म में न डालें, पूरी तरह ग़लबा (और क़ुदरत भी) ख़ुदा ही के लिए (साबित) है, वह (उनकी बातें) सुनता है (और उनकी हालत) जानता है, (वह आपका बदला उनसे ख़ुद ले लेगा)। (65) याद रखो कि जितने कुछ आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं (यानी जिन्नात, इनसान और फ़रिश्ते) ये सब अल्लाह तआ़ला ही की (मिल्क में) हैं। और जो लोग अल्लाह तआ़ला को छोड़कर दूसरे शरीकों की इबादत कर रहे हैं, (ख़ुदा जाने) किस चीज़ की इत्तिबा कर रहे हैं? महज़ बे-सनद ख़्याल की पैरवी कर रहे हैं, और महज़ ख़्याली बातें कर रहे हैं। (66) वह ऐसा है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन भी (इस तौर पर बनाया कि रोशन होने की वजह से) देखने-भालने का ज़रिया है। इस (के बनाने) में उन लोगों के लिए (तौहीद) की दलीलें हैं जो (ग़ौर व फ़िक्र के साथ इन मज़ामीन को) सुनते हैं। (67)

ख़ुदा तआ़ला हर चीज़ पर ग़ालिब है

अल्लाह पाक रसूलुल्लाह सल्ल. से इरशाद फ़रमाता है कि मुश्रिकों का यह क़ौल तुमको रन्जीदा न करे, तुम उन पर ग़ालिब आने के लिये अल्लाह से मदद माँगो, उसी पर भरोसा करो, हर तरह की इज़्ज़त और ग़लबा ख़ुदा, ख़ुदा के रसूल और मोमिनों के लिये है। वह अपने बन्दों की बातों को सुनता है, उनके हालात को जानता है। आसमानों और ज़मीन की बादशाहत उसी के लिये है। मुश्रिक लोग जो बुतों की इबादत करते हैं वे बुत न किसी तरह का नुक़सान पहुँचाने पर क़ादिर हैं न नफ़े पर, न उन मुश्रिकों के पास कोई माक़ूल दलील है, वे तो झूठ, अटकल और अपने अन्दाज़ों की पैरवी कर रहे हैं।

Maktab-e-Ashraf

फिर इरशाद होता है कि अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये रात बनाई ताकि दिन भर की थकान से सुकून व आराम हासिल करें और दिन को रोज़ी कमाने की ख़ातिर रोशन बनाया। वे दिन में सफ़र करते हैं और रोशनी के अन्दर उनकी दूसरी मस्लेहतें भी हैं। इन दलीलों को सुनकर इबरत (सबक़) हासिल करने वालों के लिये इन आयतों में निशानियाँ हैं, और ये निशानियाँ अल्लाह की बड़ाई पर दलील हैं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ
الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ
اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ
اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا
يُفْلِحُوْنَ ۝ؕ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا
مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ
بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ ع ١٢

वे कहते हैं (अल्लाह की पनाह) कि अल्लाह औलाद रखता है? सुब्हानल्लाह! (कैसी सख़्त बात कही) वह तो किसी का मोहताज नहीं (और सब उसके मोहताज हैं)। उसी की (मिल्क) है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। तुम्हारे पास (सिवाय बेहूदा दावे के) इस (दावे) पर कोई दलील (भी) नहीं, (तो) क्या अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम (किसी दलील से) इल्म नहीं रखते। (68) आप कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह तआ़ला पर झूठ घड़ते हैं, (जैसे मुश्रिक लोग) वे (कभी) कामयाब न होंगे। (69) (यह) दुनिया में (चन्द दिनों का) थोड़ा-सा ऐश है, (जो बहुत जल्द ख़त्म हुआ जाता है) फिर (मरकर) हमारे (ही) पास उनको आना है, फिर (आख़िरत में) हम उनको उनके कुफ़्र के बदले सख़्त सज़ा (का मज़ा) चखा देंगे। (70)

बड़ी बेहूदा बात

इसमें तरदीद (नकारना) है उन लोगों की जो इसके क़ायल हैं कि नऊज़ु बिल्लाह ख़ुदा के भी कोई लड़का है। वह तो पाक ख़ुदा है, वह औलाद तो क्या हर चीज़ से बेनियाज़ है, और हर मौजूद चीज़ उसके करम की मोहताज है। ज़मीन व आसमान और जो कुछ इनमें है सब उसी का है। फिर वह अपने मम्लूक और अपने अ़ब्द (बन्दे और ग़ुलाम) ही को अपना बेटा भला कैसे बना लेगा? ऐ मोमिनो! तुम्हारे पास तो यह दलील है, लेकिन उनके पास अपने झूठ व बोहतान की कोई दलील नहीं। अरे तुम जानते कुछ भी नहीं और दावा कर बैठते हो। ये मुश्रिकों को ज़बरदस्त तंबीह है। ये काफ़िर कहते हैं कि ख़ुदा का भी एक बेटा पैदा हुआ है, यह ऐसी ज़बरदस्त गुस्ताख़ी है कि इसको सुनकर आसमान फट पड़े, ज़मीन में दरारें पड़ जायें, पहाड़ गिर पड़ें तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। ख़ुदा के लिये भला यह कहाँ हो सकता है कि उसके भी कोई बेटा हो? ज़मीन व आसमान की हर चीज़ तो ख़ुदा की आभारी और उसी की अ़ब्द (ग़ुलाम) है, सब उसकी गिनती में हैं, वह इनकी गिनती जानता है, हर एक क़ियामत के दिन अलग-अलग उसके पास हाज़िर होगा। फिर इन बोहतान लगाने वाले काफ़िरों को अल्लाह पाक डाँट देता है कि ये दीन और दुनिया में कहीं

Maktaba E Ashraf

भी फ़लाह नहीं पायेंगे। लेकिन दुनिया में इन्हें जो कुछ मिल रहा है वह इनके लिये अ़ज़ाब का पेशख़ेमा है, और इनके लिये ढील है ताकि थोड़े वक़्त और वे दुनिया की फ़ानी चीज़ों से फ़ायदा हासिल कर लें, फिर तो उन्हें ज़बरदस्त अ़ज़ाब से दोचार होना ही पड़ेगा। यह दुनिया तो उनके लिये चन्द रोज़ की ज़िन्दगी की राहत है, फिर हमारी तरफ़ लौटना ही होगा। वहाँ हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखायेंगे। यह उनके झुठलाने, बोहतान बाँधने और कुफ़्र के सबब होगा।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ م اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَ تَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ○ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ط اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ لا وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ج فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ○

और आप उनको नूह (अ़लैहिस्सलाम) का क़िस्सा पढ़कर सुनाईये (जो कि उस वक़्त सामने आया था) जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! अगर तुमको (नसीहत व भलाई की बात कहने की हालत में) मेरा रहना और अहकामे ख़ुदावन्दी की नसीहत करना भारी (और नागवार) मालूम होता है तो मेरा तो ख़ुदा ही पर भरोसा है, सो तुम (मुझको नुक़सान पहुँचाने के मुताल्लिक़) अपनी तदबीर (जो कुछ कर सको) अपने शरीकों के साथ (यानी बुतों) के पुख़्ता कर लो, फिर तुम्हारी (वह) तदबीर तुम्हारी घुटन (और दिल की तंगी) का सबब न (होनी चाहिए), फिर मेरे साथ (जो कुछ करना है) कर गुज़रो, और मुझ को (बिल्कुल) मोहलत न दो। (71) फिर भी अगर तुम मुँह ही मोड़े जाओ तो यह (समझो कि) मैंने तुमसे (इस तब्लीग़ पर) कोई मुआ़वज़ा तो नहीं माँगा, (और मैं तुमसे क्यों माँगता, क्योंकि) मेरा मुआ़वज़ा तो (करम के वायदे के मुताबिक़) सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है। और (चूँकि) मुझको हुक्म किया गया है कि मैं इताअ़त करने वालों में रहूँ (72) सो (बावजूद इस वाज़ेह नसीहत के भी) वे लोग उनको झुठलाते रहे, पस (उनपर तूफ़ान का अ़ज़ाब मुसल्लत हुआ और) हमने (उस अ़ज़ाब से) उनको और जो उनके साथ कश्ती में थे उनको नजात दी और उनको आबाद किया। और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको (उस तूफ़ान में) ग़र्क़ कर दिया। सो देखना चाहिए उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ जो (अल्लाह के अ़ज़ाब) से डराए जा चुके थे। (73)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम का क़िस्सा

ऐ नबी! मक्का के काफ़िरों को जिन्होंने तुम्हें झुठलाया है और तुम्हारी मुख़ालफ़त की है, नूह अ़लैहिस्सलाम के और नूह की क़ौम के वाक़िआ़त सुना दो। जिसने अपने पैग़म्बर को झुठलाया तो अल्लाह ने किस तरह उनको हलाक कर दिया और उनके बाद दूसरी क़ौम को किस तरह पानी में ग़र्क़ कर दिया, ताकि पहले गुज़रे लोगों के अफ़सोसनाक परिणाम को देखकर ये होशियार हो जायें कि कहीं इन्हें भी हलाकत से साबक़ा न पड़े। वे वाक़िआ़त यह हैं कि नूह अ़लैहिस्सलाम ने जब अपनी क़ौम से कहा कि अगर ऐसा ही तुमको मेरा तुम्हारे दरमियान ठहरना और तुम्हें सही रास्ते पर लाने के लिये नसीहतें करना नागवार गुज़रता है तो ख़ैर मुझे भी परवाह नहीं, मेरा भरोसा तो ख़ुदा पर है। तुम्हें भारी और नागवार गुज़रे या न गुज़रे मैं तो तब्लीग़ से बाज़ नहीं आ सकता। अच्छा तुम और तुम्हारे शुरका यानी बुत व औसान जिनकी तुम ख़ुदा के बजाय परस्तिश करते हो, सब एक दिल हो जाओ और अपनी कोशिशों में कोई कमी न उठा रखो, और हर तरह से अपने को मज़बूत बना लो। अगर तुमको यही गुमान है कि तुम हक़ पर हो तो मेरे बारे में अपना फ़ैसला नाफ़िज़ कर दो और मुझे एक घन्टे भर की मोहलत न दो, जिस क़द्र कर सकते हो कर गुज़रो, मुझे न तुम्हारी परवाह है न तुमसे ख़ौफ़ है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारे क़ियास (अन्दाज़े और तुलना) की बुनियाद तो कुछ है ही नहीं।

हूद अ़लैहिस्सलाम ने भी अपनी क़ौम से ऐसा ही कहा था कि मैं भी ख़ुदा को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि तुम ख़ुदा को छोड़कर बुतों को जो ख़ुदा का शरीक बना लेते हो, मैं इस ज़ेहनियत से बिल्कुल बरी हूँ। अब चाहो तो तुम सब मेरे ख़िलाफ़ साज़िश कर लो और मुझे दम भर की भी मोहलत न दो। मेरा भरोसा तो ख़ुदा पर है जो तुम्हारा रब भी है और मेरा भी, अब अगर तुमने मुझे झुठलाया और पीठ फेर ली तो क्या मुझे तुमसे कुछ लेना था कि जिसके ज़ाया होने का अफ़सोस होगा? मैं जो तुम्हारी ख़ैरख़्वाही (भला चाहना और हमदर्दी) कर रहा हूँ इस पर कुछ तुमसे उजरत तो नहीं माँग रहा, मुझे तो अज्र देने वाला ख़ुदा है। मुझे ताकीद है कि सबसे पहले मैं ईमान लाऊँ और मुझ पर फ़र्ज़ है कि इस्लाम के अहकाम की तामील करूँ। क्योंकि तमाम अम्बिया का दीन इस्लाम ही था। चाहे वे शुरू के हों या आख़िर के, काम करने का तरीक़ा और मस्लक चाहे अलग-अलग हो जायें, कुछ हर्ज नहीं, तौहीद की तालीम तो एक ही रहेगी। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि हमने हर एक के लिये एक-एक शरीअ़त अलग अलग क़ानून और अलग-अलग रास्ता बनाया। यह नूह अ़लैहिस्सलाम हैं जो कहते हैं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले ईमान लाऊँ।

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के बारे में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब उनके रब ने उनसे कहा कि ईमान लाओ तो फ़ौरन बोल उठे कि मैं ईमान लाया। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने बेटों, पोतों इस्माईल और याक़ूब को भी नसीहत कर रखी थी कि ऐ मेरे बेटो! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये दीने इस्लाम को पसन्द किया और चुना है। इसलिये इस्लाम को इख़्तियार कर रखो इससे पहले कि तुम्हें मौत आ जाये। हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम ने भी कहा था कि ऐ ख़ुदा! तूने मुझे बादशाहत अ़ता फ़रमाई और बात की तौजीह व तावील (यानी इल्म व समझ) की तालीम दी, ज़मीन और आसमान को पैदा करने वाला तू ही है। दुनिया और आख़िरत में तू ही मेरा वाली है, मैं मरूँ तो इस्लाम पर क़ायम रहकर मरूँ और मुझे नेक लोगों के गिरोह में शामिल रख।

Maktab E Ashraf

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा था कि ऐ लोगो! अगर तुम मुसलमान हो तो ख़ुदा पर भरोसा रखो और उसी पर ईमान लाओ। मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने के जादूगरों ने कहा था कि या रब! हमको साबित-क़दम रख (यानी इस्लाम पर जमाव नसीब फ़रमा) और इस्लाम की मौत दे। बिल्क़ीस ने कहा था कि इलाही! मैं हदों से आगे बढ़ गई थी, मैं इस्लाम लाती हूँ और दीने इस्लाम इख़्तियार करती हूँ। अल्लाह पाक का इरशाद है कि हमने जो तौरात नाज़िल की है वह सरासर हिदायत और नूर है, मुसलमानों पर नबी इसी के ज़रिये हुक्म क़ायम करते हैं और इरशादे बारी तआ़ला है कि ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथियों की तरफ़ हमने यह बात नाज़िल की थी कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ। उन्होंने कहा कि हम ईमान लाये और ऐ ख़ुदा तू ही गवाह रह कि हम मुसलमान हैं।

रसूलों के सिलसिले को ख़त्म और पूरा करने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन ही के लिये है, जिसका कोई शरीक नहीं। मैं उसी के हुक्म का मामूर हूँ और पहले मैं ही इस्लाम लाता हूँ। चुनाँचे आपने फ़रमाया कि हम अम्बिया के गिरोह गोया अ़ल्लाती (बाप शरीक) भाई हैं कि बाप सब का एक है और मायें अलग-अलग। यानी दीन हम सब का एक है और वह एक ख़ुदा की इबादत है। चाहे सब की शरीअ़तें अलग-अलग हों।

फिर फ़रमाता है कि हमने नूह अ़लैहिस्सलाम और उनके दीन पर चलने वालों को कश्ती में बैठाकर निजात दे दी और उनको ज़मीन पर बहैसियत ख़लीफ़ा क़रार दिया, और जिन्होंने हमारी बातों को झुठला दिया था उनको ग़र्क़ कर दिया। देखो उन बदनसीबों का कैसा बुरा हश्र हुआ। (ऐ मुहम्मद सल्ल.!) देखो हमने मोमिनों को कैसी निजात दी और न मानने वालों को कैसा हलाक कर दिया।

फिर उन (नूह अ़लैहिस्सलाम) के बाद हमने और रसूलों को उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजा, सो वे उनके पास मोजिज़े लेकर आए (मगर) फिर (भी उनकी ज़िद और हठ की यह क़ैफ़ियत थी कि) जिस चीज़ को उन्होंने अव्वल (बारी में एक बार) झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उसको मान लेते, (और जैसे ये दिल के सख़्त थे) हम (अल्लाह तआ़ला) इसी तरह काफ़िरों के दिल पर बन्द लगा देते हैं। (74)	ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝

रसूल और मोजिज़े

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि हमने नूह के बाद दूसरे रसूलों को भी उनकी क़ौमों की तरफ़ निशानियाँ, दलीलें और मोजिज़े देकर भेजा। लेकिन जिस तरह वे झुठला चुके थे उसी पर क़ायम रहे और पहले रसूलों के झुठलाने के गुनाहगार तो थे ही, अब इन रसूलों पर भी ईमान न लाये, जैसा कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि हम उनके दिलों और निगाहों से समझने और देखने की सलाहियत ही निकाल देते हैं और इन सरकशों के दिलों पर मोहर लगा देते हैं। यानी जैसे पहली उम्मतों ने पैग़म्बरों को झुठलाया था ता

हमने उनके दिलों पर मुहर लगा दी थी, इसी तरह उन गुमराहों की पैरवी करने वालों के दिलों पर भी मुहर लगा दी। चुनाँचे जब तक वे दर्दनाक अ़ज़ाब से दोचार नहीं होंगे यक़ीन न करेंगे।

मतलब यह है कि रसूलों को झुठलाने वाली उम्मतों को अल्लाह ने हलाक कर दिया और जो रसूलों पर ईमान लाये उन्हें निजात अ़ता फ़रमाई। यह नूह अ़लैहिस्सलाम के बाद के लोगों का ज़िक्र है वरना आदम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने के बाद के लोग तो इस्लाम पर क़ायम थे। लेकिन बाद में उनके अन्दर बुतों की इबादत (पूजा) का रिवाज हो गया, इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने उनकी तरफ़ नूह अ़लैहिस्सलाम को भेजा। इसी लिये तो क़ियामत के दिन मोमिन लोग नूह अ़लैहिस्सलाम को कहेंगे कि आप पहले पैग़म्बर हैं जो दुनिया में भेजे गये हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि आदम और नूह के दरमियान दस सदियाँ गुज़री थीं, ये सब इस्लाम मज़हब पर क़ायम थे। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि नूह के बाद कितने ही ज़माने हमने ख़त्म कर दिये। ऊपर ज़िक्र हुई आयत के ज़रिये अ़रब के मुश्रिकों को डराया गया है, जो आख़िरी रसूल को झुठला रहे थे, जबकि पहले पैग़म्बरों को झुठलाने पर अ़ज़ाब व सज़ा का अल्लाह ने इस क़द्र ज़िक्र किया है तो क़ुरैश को रसूल के झुठलाने पर ग़ौर करना चाहिये कि वे तो उनसे भी बड़े गुनाह के मुजरिम हो रहे हैं, कि यह तो तमाम अम्बिया के सरदार और ख़ातिमुल-अम्बिया हैं, अब फिर न कोई नबी आयेगा न इन्हें हिदायत का कोई दूसरा मौक़ा मिलेगा।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ○ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ○ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ○ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ○

फिर इन (ज़िक्र हुए) पैग़म्बरों के बाद हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और हारून (अ़लैहिस्सलाम) को फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास अपने मोजिज़े (लाठी और चमकता हुआ हाथ) देकर भेजा, सो उन्होंने (दावे के साथ ही उनकी तस्दीक़ करने से) तकब्बुर किया, और वे लोग अपराधों के आ़दी थे (इसलिए इताअ़त न की)। (75) फिर जब (दावे के बाद) उनको हमारे पास से (मूसा अ़लैहिस्सलाम की नुबुव्वत पर) सही दलील पहुँची तो वे लोग कहने लगे कि यक़ीनन यह खुला जादू है। (76) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमायाः क्या तुम इस सही दलील के बारे में जबकि वह तुम्हारे पास पहुँची, (ऐसी बात) कहते हो (कि यह जादू है)। क्या यह जादू है? और (हालाँकि) जादूगर कामयाब नहीं हुआ करते। (77) वे लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमको उस तरीक़े से हटा दो जिस पर हमने अपने बुज़ुर्गों को देखा है, और (इसलिए आए हो कि) तुम दोनों को दुनिया में रियासत (और सरदारी) मिल जाए, और (तुम अच्छी तरह समझ लो) हम तुम दोनों को कभी न मानेंगे। (78)

Maktab E Ashraf

हर फ़िरऔन के लिये एक मूसा है

फिर इन रसूलों के बाद हमने फ़िरऔन और उसकी जमाअत की तरफ़ मूसा और हारून अलैहिमस्सलाम को भेजा और अपनी निशानियाँ और दलीलें भी साथ दीं। लेकिन हक़ को मानने और फ़रमाँबरदारी से ख़ाली मुजरिम क़ौम ने इनकार कर दिया। और जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ चीज़ आ पहुँची तो बिना सोचे-समझे ही कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। गोया कि उन्होंने अपनी सरकशी पर क़सम ही खा रखी थी, हालाँकि उन्हें यक़ीन था कि जो कुछ वे कह रहे हैं वास्तव में वह झूठ और बोहतान है। जैसा कि ख़ुद अल्लाह पाक फ़रमाता है कि वे इनकार तो कर रहे हैं लेकिन उनके दिल ख़ुद यक़ीन रखते हैं कि यह हमारा ज़ुल्म और सरकशी (नाफ़रमानी) है।

ग़र्ज़ कि मूसा अलैहिस्सलाम ने तरदीद करते हुए कहा कि हक़ बात तुम्हारे सामने आती है तो कह उठते हो कि यह जादू है, हालाँकि जादूगर तो कभी ख़ैर व फ़लाह का मुँह नहीं देख सकते। वे इनकारी लोग कहते हैं कि ऐ मूसा! क्या तुम इसी लिये हमारे पास आये हो कि हमारे बाप-दादा के दीन से हमें फेर दो और फिर सारी बड़ाई व हुकूमत पर ग़लबा सब तुम्हारे और तुम्हारे भाई हारून के लिये हो जाये? हम तो कभी तुमको मानने वाले नहीं। अल्लाह तआला ने अपनी पाक किताब में मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन के क़िस्से को कई बार ज़िक्र फ़रमाया है। क्योंकि वह बहुत ही अजीब क़िस्सा है। फ़िरऔन पहले ही से मूसा अलैहिस्सलाम से डरा रहता था, लेकिन क़ुदरत के करिश्मे देखिये कि जिससे फ़िरऔन इतना डरा हुआ था अल्लाह पाक ने उसी को फ़िरऔन के पास पाला पोसा और शहज़ादों की तरह आप उसके घर परवरिश पाते रहे। फिर एक इन्क़िलाब आया और एक ऐसा सबब पैदा हो गया कि आप फ़िरऔन के पास से निकल खड़े हुए और अल्लाह ने नुबुव्वत व रिसालत और अपने साथ कलाम के सम्मान से आपको सम्मानित किया। फिर उसी फ़िरऔन की तरफ़ भेजा कि जाओ उसे इस्लाम की दावत दो कि वह तुम्हारी तरफ़ रुजू करे और बेदीनी के बजाय हमारे दीन पर चले। हालाँकि जो शान व हुकूमत फ़िरऔन को हासिल थी सो थी। चुनाँचे आप ख़ुदा का पैग़ाम लेकर आते हैं, आपके भाई हारून अलैहिस्सलाम के सिवा और कोई आपका मददगार नहीं। लेकिन फ़िरऔन ने सरकशी की, ग़ुरूर किया, उसमें बेजा तरफ़दारी पैदा हो गई, उसका बुरा नफ़्स जाग उठा, वह मूसा से मुँह फेरने वाला हो गया, और वह दावा कर बैठा जिसका उसको कोई हक़ न था। बग़ावत व सरकशी की, बनी इस्राईल के मोमिनों की तौहीन व अपमान किया। ऐसे नाज़ुक मौक़े पर भी फ़िरऔन के क़ब्ज़े और इख़्तियार से मूसा और हारून अलैहिमस्सलाम महफ़ूज़ रहते हैं। अल्लाह उनको अपनी हिफ़ाज़त में ले लेता है, और एक के बाद एक मूसा के साथ मुबाहसा और नोक झोंक होती रहती है। और मूसा ऐसी-ऐसी निशानियाँ और मोजिज़े पेश करते हैं कि अक़्लें हैरान रह जाती हैं और मानना पड़ता है कि ख़ुदा की तरफ़ से ताईद पाये हुए के सिवा और कोई ऐसी दलीलें पेश नहीं कर सकता। एक निशानी से बढ़कर दूसरी निशानी पेश की जाती है, लेकिन फ़िरऔन और उसकी जमाअत भी क़सम खा बैठी थी कि न मानेंगे, यहाँ तक कि जब अज़ाब आया तो ऐसा आया कि कोई उसको रद्द ही न कर सकता था, चुनाँचे एक दिन वे सब ग़र्क़ कर दिये गये और उस ज़ालिम क़ौम का ख़ात्मा हो गया।

Maktab E Ashraf

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سٰحِرٍ
عَلِيْمٍ ○ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ
مُّوْسٰى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ○ فَلَمَّآ
اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ ط
اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ
عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ○ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ
بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ○ ع ٨ ١٢ ١٣

और फ़िरऔन ने (अपने सरदारों से) कहा कि मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को (जो हमारे मुल्क में हैं) हाज़िर करो। (79) (चुनाँचे जमा किए गए) सो जब वे आए (और मूसा अलैहिस्सलाम से मुक़ाबला हुआ तो) मूसा ने उनसे फ़रमाया कि डालो जो कुछ तुमको (मैदान में) डालना है। (80) सो जब उन्होंने (अपना जादू का सामान) डाला तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम (बनाकर) लाए हो, जादू (वह) है, यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला इस (जादू) को अभी दर्हम-बर्हम "यानी उलट-पुलट" किए देता है, (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता। (81) और अल्लाह तआ़ला हक़ (यानी सही दलील और मोजिज़े) को अपने वायदों के मुवाफ़िक़ साबित कर देता है चाहे मुजरिम (और काफ़िर) लोग (कैसा ही) नागवार समझें। (82)

जादूगरों का वाक़िआ

अल्लाह पाक ने जादूगरों और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से का ज़िक्र सूरः आराफ़ में फ़रमाया है और वहाँ इस क़िस्से पर रोशनी डाली जा चुकी है। इस सूरत, सूरः तॉ-हा और सूरः शु-अ़रा में भी ज़िक्र है कि फ़िरऔन ने इरादा किया कि मूसा अलैहिस्सलाम के दीने हक़ का मुक़ाबला अपने जादूगरों की ख़ुराफ़ात और कर्तबों से करे। लेकिन वह मक़सद में नाकाम रह गया और भरी महफ़िल व आ़म मजमे में अल्लाह की दलीलें ग़ालिब आ गयीं, सब जादूगर सज्दे में गिर पड़े और कहने लगे कि हम तो रब्बुल-आ़लमीन पर ईमान ले आये, जो मूसा और हारून का रब है। फ़िरऔन का तो गुमान था कि वह जादूगरों से मदद लेकर ख़ुदा के रसूल पर ग़ालिब आ जायेगा, लेकिन नाकामी का मुँह देखना पड़ा और दोज़ख़ का हक़दार हो गया।

फ़िरऔन ने हुक्म दिया था कि मुल्क के कोने-कोने से जादूगर जमा किये जायें, उन जादूगरों से मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा- अपना अ़मल करो जो करना चाहते हो। और यह इसलिये कहा कि फ़िरऔन ने उनसे वादा कर रखा था कि ग़ालिब आ जाओगे तो तुम लोग मेरे मुक़र्रब (ख़ास ओ़हदेदार) बनोगे और तुम्हें बड़ा इनाम व इकराम दिया जायेगा। जादूगरों ने कहा कि मूसा तुम पहले अपना कर्तब दिखाओगे कि हम पहले दिखायें? मूसा ने कहा तुम्हीं पहल करो। इस ग़र्ज़ से कहा ताकि लोग देख सकें कि जादूगर क्या चीज़ पेश करते हैं, फिर उसके बाद हक़ सामने आये और बातिल को रुस्वा कर दे। जब जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ डाल दीं और लोगों की आँखों पर जादू चला दिया, रस्सियाँ साँप बन गईं, लोग ख़ौफ़ज़दा हो गये,

इतना बड़ा ज़बरदस्त जादू पेश किया कि मूसा भी ख़ौफ़ज़दा (भयभीत) हो गये। हमने कहा कि मूसा डरो नहीं, तुम ही ग़ालिब रहोगे, अपने हाथ का असा (लाठी) मैदान में फेंक दो, वह अज़्दहा बनकर उनके साँपों को निगल जायेगा। जादूगरों का यह करतब जादू का खेल है और जादूगर तो किसी सूरत में भी कामयाब नहीं हो सकते। ऐसे में मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनसे कहा कि यह तुम्हारा खेल तो जादू का खेल है, अल्लाह तआ़ला इसे बातिल (बेअसर) करके रहेगा। बुरे लोगों और ख़राबी फैलाने वालों के अ़मल कामयाब नहीं हो सकते। अल्लाह हक़ को साबित करके रहेगा चाहे गुनाहगारों को नागवारी ही क्यों न हो।

इब्ने अबी सुलैम से रिवायत है कि ये आयतें ख़ुदा के हुक्म से जादू से शिफ़ा का काम देंगी। इन आयतों को पढ़कर पानी पर फूँको, फिर जादू से ग्रस्त और पीड़ित के सर पर उंडेल दो, यह सूरः युनूस की आयत है। वह यह है:

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَاجِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ. اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ. اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَ
يُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْكَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

(यानी सूरः यूनुस की आयत नम्बर 81-82)

दूसरी आयत है:

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَاكَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

(सूरः आराफ़ आयत 118) और

اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ۝

(सूरः ताहा आयत 69)

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ۚ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝

पस (जब लाठी का मोजिज़ा ज़ाहिर हुआ तो) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) पर (शुरू-शुरू में) उनकी क़ौम में से सिर्फ़ थोड़े-से आदमी ईमान लाए, वे भी फ़िरऔ़न से और अपने हाकिमों से डरते-डरते, कि कहीं (ज़ाहिर होने पर) उनको तकलीफ़ (न) पहुँचाये, और (हक़ीक़त में उनका डरना बेजा न था) क्योंकि फ़िरऔ़न उस मुल्क में ज़ोर (हुकूमत) रखता था, और यह (बात भी थी) कि वह (इन्साफ़) की हद से बाहर हो जाता था। (83)

इनसान का ख़ौफ़

अल्लाह पाक ख़बर देता है कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने खुली निशानियाँ जो पेश कीं तो फ़िरऔ़न की क़ौम और उसके मानने वालों में से बहुत ही थोड़े ईमान लाये। ईमान लाने वाले नौजवानों और उसकी क़ौम के अफ़राद को यह ख़ौफ़ था कि ज़बरदस्ती वे फिर कुफ़्र की दुनिया में लौटा दिये जायेंगे। क्योंकि फ़िरऔ़न

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

बड़ा अय्यार सरकश था, उसकी शान व दबदबा बहुत ज़्यादा था। उसकी क़ौम उससे बहुत डरती थी। बनी इस्राईल के अलावा में से सिर्फ़ फ़िरऔन की औरत (बीवी) और फ़िरऔन की आल में से एक और शख़्स, फिर फ़िरऔन का ख़ज़ानची और उसकी बीवी। बस यही थोड़ी सी जमाअत थी जो ईमान ले आई थी। इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि:

إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِ

(उसकी क़ौम से बहुत थोड़े से आदमी) से मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम बनी इस्राईल मुराद है। मुजाहिद कहते हैं कि 'ज़ुर्रियत' से उन लोगों की औलाद मुराद है जिनकी तरफ़ मूसा अ़लैहिस्सलाम भेजे गये थे और जो बहुत अ़रसा पहले उस औलाद को छोड़कर मर गये थे। इब्ने जरीर 'ज़ुर्रियत' के बारे में मुजाहिद का क़ौल पसन्द करते हैं कि वे फ़िरऔन की क़ौम में से नहीं बल्कि बनी इस्राईल में से थे।

मशहूर है कि बनी इस्राईल तो सब मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान ला चुके थे और उन्हें बशारत (ख़ुशख़बरी) दी जा चुकी थी, और वे मूसा की सिफ़तों से ख़ूब वाक़िफ़ हो चुके थे, और उन्हें आसमानी किताबों से ख़ुशख़बरी मिल चुकी थी कि अल्लाह तआ़ला उन्हें फ़िरऔन की क़ैद से निजात देगा और फ़िरऔन पर ग़ालिब बना देगा। इसी लिये जब फ़िरऔन को यह बात मालूम हुई तो बहुत एहतियात से रहने लगा और जब मूसा अ़लैहिस्सलाम मुबल्लिग़ (अल्लाह के दीन के दाओ़) होकर फ़िरऔन के पास आये तो फ़िरऔन बनी इस्राईल को बहुत तकलीफ़ें पहुँचाने लगा। अब वे कहने लगे कि ऐ मूसा! तुम्हारे आने से पहले भी हम सताये जा रहे थे और तुम्हारे आने के बाद भी हम सताये जा रहे हैं। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा ज़रा सब्र करो, ख़ुदा जल्द ही तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देगा और उसका जानशीन (उत्तराधिकारी) तुमको बना देगा और देखेगा कि अब तुम ख़ुद कैसा अ़मल करते हो। और जब यह बात है तो ज़ुर्रियत से फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम यानी बनी इस्राईल के सिवा और क्या मुराद हो सकती है। बनी इस्राईल को फ़िरऔन और फिर अपनी जमाअ़त से ख़ौफ़ था कि वे फिर उन्हें काफ़िर बना लेंगे और बनी इस्राईल में क़ारून के सिवा कोई ऐसा न था जिससे वे डरते। क्योंकि क़ारून मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम में से था, लेकिन बाग़ी था। फ़िरऔन से मिला हुआ था।

وَقَالَ مُوسَىٰ يَٰقَوْمِ إِن كُنتُمْ ءَامَنتُم بِٱللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوٓا۟ إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ۝ فَقَالُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ۝	और मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम (सच्चे दिल से) अल्लाह पर ईमान रखते हो तो (सोच-विचार मत करो बल्कि) उसी पर तवक्कुल करो, अगर तुम (उसकी) इताअ़त करने वाले हो। (84) उन्होंने (जवाब में) अ़र्ज़ किया कि हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया। ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इन ज़ालिमों की मश्क़ का तख़्ता "यानी निशाना" न बना। (85) और हमको अपनी रहमत के सदक़े में इन काफ़िरों से नजात दे। (86)

Maktab E Ashraf

ख़ुदा तआ़ला पर भरोसा और यक़ीन

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि मूसा ने बनी इस्राईल से कहा कि अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करके बैठो। अल्लाह भरोसे वालों का कफ़ील हो जाता है। क़ुरआन के बहुत से मक़ामात में इबादत व तवक्कुल (अल्लाह की इबादत और उस पर भरोसे) को मिलाकर (यानी एक साथ) बयान किया गया है:

فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ.

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا.

वग़ैरह। और अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को हुक्म दिया है कि हर नमाज़ में कई बार कहो कि:

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ.

'इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन' चुनाँचे बनी इस्राईल हुक्म बजा लाये और कहा कि:

عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ.

यानी हम तो अल्लाह पर भरोसा करते हैं। ऐ ख़ुदा! हमको इन ज़ालिमों के ज़ुल्म व सितम का निशाना न बना।

हम पर इन्हें कामयाब न कर। वरना वे यह गुमान करेंगे कि हम ही हक़ पर हैं, और ये बनी इस्राईल बातिल पर हैं। चुनाँचे और ज़्यादा हम पर सितम तोड़ेंगे। फ़िरऔ़न के मानने वालों के हाथों हमें अ़ज़ाब न दे, और न अपने अ़ज़ाब में मुब्तला कर, वरना फ़िरऔ़न की क़ौम कहेगी कि अगर ये लोग हक़ पर होते तो अ़ज़ाब में मुब्तला न होते, और हम इन पर ग़ालिब न आते, और हमें अपनी रहमत व एहसान से ऐ ख़ुदा इस काफ़िर क़ौम से निजात बख़्श। ये काफ़िर हैं और हम मोमिन हैं, और तुझ पर ही भरोसा रखते हैं।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ○	और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और उनके भाई (हारून अ़लैहिस्सलाम) के पास 'वही' भेजी कि तुम दोनों अपने उन लोगों के लिए (बदस्तूर) मिस्र में घर बरक़रार रखो, (और नमाज़ के वक़्त में) तुम सब अपने उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह क़रार दे लो। और (यह ज़रूरी है कि) नमाज़ के पाबन्द रहो। और (ऐ मूसा!) आप मुसलमानों को ख़ुशख़बरी दे दें। (87)

बनी इस्राईल और मुल्के मिस्र

अल्लाह तआ़ला बनी इस्राईल को फ़िरऔ़न से निजात देने के सबब को बयान करता है कि मूसा और हारून अ़लैहिमस्सलाम को हमने हुक्म दिया कि तुम अपनी क़ौम को लेकर मिस्र में जा बसो।

Maktaba Ashraf

وَاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً.

(कि नमाज़ के वक़्तों में तुम सब अपने घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह क़रार दे लो) में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि इससे मुराद यह है कि तुम अपने घरों ही को मस्जिदें बना लो, और इब्राहीम कहते हैं कि बनी इस्राईल डरे हुए थे इसलिये हुक्म दिया गया कि घरों ही में नमाज़ पढ़ा करो और इस हुक्म की हैसियत बिल्कुल ऐसी है जब फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम की तरफ़ से गिरफ़्त (पकड़ और बनी इस्राईल पर ज़्यादती) बहुत बढ़ गई तो नमाज़ की अधिकता का हुक्म दिया गया जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ.

यानी ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद तलब करो।

हदीस में है कि नबी सल्ल. भी जब किसी वक़्त बहुत परेशान होते तो नमाज़ से मदद हासिल करते, इसी लिये इस आयत में है कि घरों ही को मस्जिदें समझ कर नमाज़ें पढ़ने लगो और मोमिनों को सवाब और जल्दी ही फ़तह व मदद की ख़ुशख़बरी दो। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि बनी इस्राईल ने मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा था कि हम फ़िरऔ़नियों के सामने खुलेबन्दों नमाज़ नहीं पढ़ सकते हैं तो अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि अच्छा घरों में पढ़ लो। मुजाहिद कहते हैं कि बनी इस्राईल को फ़िरऔ़न से ख़ौफ़ था कि मस्जिद में नमाज़ पढ़ेंगे तो क़त्ल कर दिये जायेंगे इसलिये कहा गया कि अच्छा छुपकर घरों में पढ़ लो। और घरों को आमने-सामने बनाये रखो।

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ○ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ○

और मूसा ने (दुआ़ में) अ़र्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! (हमको यह बात मालूम हो गई कि) आपने फ़िरऔ़न को और उसके सरदारों को दुनियावी ज़िन्दगी में ठाट-बाट के सामान और तरह-तरह के माल ऐ हमारे रब! इसी वास्ते दिए हैं कि वे (लोगों को) आपकी राह से गुमराह करें। ऐ हमारे रब! उनके मालों को तबाह व बरबाद कर दीजिए और उनके दिलों को (ज़्यादा) सख़्त कर दीजिए (जिससे हलाकत के हक़दार हो जाएँ) सो ये ईमान न लाने पाएँ यहाँ तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब (के हक़दार होकर उस) को देख लें। (88) (हक़ तआ़ला ने) फ़रमाया कि तुम दोनों की दुआ़ क़बूल कर ली गई, सो तुम अपने मन्सबी काम (यानी तब्लीग़ पर) साबित क़दम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जिनको इल्म नहीं। (89)

Maktab E Ashraf

पैग़म्बर की बददुआ

अल्लाह पाक ख़बर दे रहा है कि जब फ़िरऔन और उसकी जमाअत ने हक़ के क़बूल करने से इनकार किया और अपनी गुमराही व कुफ़्र पर क़ायम रही, ज़ुल्म व सरकशी इख़्तियार की तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा से कहा कि या रब! तूने फ़िरऔन और उसके लोगों को दुनिया की सजावट (रौनक़) और बहुत ज़्यादा माल व दौलत इस दुनिया में दे रखा है इससे तो वे और भटक जायेंगे या दूसरों को भटकाने लगेंगे। यानी तूने उन्हें ये नेमतें दीं हालाँकि तू जानता है कि ये ईमान न लायेंगे, यह तो उन पर इनाम हुआ। दूसरा क़ौल यह है कि तेरे अतिय्यात के सबब लोग यह ख़्याल करेंगे कि तेरे उन पर जो इनामात हैं वह गोया इस बात का सुबूत हैं कि तू उन्हें दोस्त रखता है। जब ही तो उन्हें ख़ुशहाल रखा। यह गोया सबब हुआ इस बात का कि उनकी वजह से लोग भटके। इसी लिये ऐ ख़ुदा! इनके मालों को हलाक कर दे। ज़ह्हाक और अबुल-आलिया वग़ैरह कहते हैं- चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनके मालों को पत्थर बना दिया। वे पत्थर ऐसे ही हो गये जैसी उनकी असलियत थी। जिस कैफ़ियत में कि वे माल अपनी असली हालत में थे उसी में आ गये। क़तादा रह. कहते हैं- हमारे इल्म में आया है कि उनके अनाज ने भी पत्थर की शक्ल इख़्तियार कर ली थी और शकर वग़ैरह भी पत्थर के ज़र्रों की शक्ल में आ गई थी। मुहम्मद बिन कअ़ब ने उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ के सामने सूरः यूनुस पढ़ी और जब इस आयत पर पहुँचेः

رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ.

(यानी जिसकी यह तफ़सीर चल रही है) तो उमर ने कहा ऐ अबू हमज़ा! 'तमिस' का क्या मतलब है? अबू हमज़ा ने कहा कि उनके माल व सामान पत्थर बन गये थे। उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ ने अपने गुलाम से कहा कि वह थैली ले आ। जब वह थैली लाया तो उसमें चने और अंडे रखे हुए थे, जो पत्थर बने हुए थे।

अल्लाह तआ़ला का फ़रमानः

وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ.

यानी ऐ अल्लाह उनके दिलों पर मुहर लगा दे कि दर्दनाक अ़ज़ाब देखने तक ईमान ही न लायें।

यह दुआ मूसा अ़लैहिस्सलाम ने गुस्से में आकर फ़िरऔ़न और क़ौमे फ़िरऔ़न के लिये की थी। जिनके बारे में मूसा अ़लैहिस्सलाम को यक़ीन हो चुका था कि अब इनमें ख़ैर की सलाहियत ही नहीं है और अब किसी अच्छी बात की इनसे उम्मीद ही बाक़ी नहीं। जैसा कि नूह अ़लैहिस्सलाम ने कहा थाः

رَبِّ لَاتَذَرْعَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا...... الخ

ऐ ख़ुदा! इन काफ़िरों में से किसी बाशिन्दे को न छोड़, अगर तू इनको ज़िन्दा छोड़ेगा तो ये तेरे दूसरे बन्दों को भी गुमराह करेंगे और इनके यहाँ जितनी भी औलाद पैदा होगी सब काफ़िर ही काफ़िर पैदा होगी।

इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने मूसा अ़लैहिस्सलाम की दुआ क़बूल कर ली और उनके भाई हारून ने इस पर आमीन कही। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम दोनों की दुआ क़बूल की जाती है और फ़िरऔ़न की आल और उसके मानने वाले हलाक किये जाते हैं। इस आयत से इस बात पर दलील लाई जाती है कि अगर मुक़्तदी इमाम के फ़ातिहा (सूरः अल्हम्दु) पढ़ने पर आमीन कहे तो यह मुक़्तदी के भी

Maktab E Ashraf

ख़ुद क़ुरआन पढ़ने के बराबर है। इसी लिये मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की थी और हारून अ़लैहिस्सलाम ने आमीन कही थी

आगे फ़रमाया 'फ़स्तक़ीमा' कि जैसे तुम्हारी दुआ़ क़बूल कर ली गई है अब तुम भी इसी तरह मेरे हुक्म पर जमे और क़ायम रहो, और मेरे अहकाम नाफ़िज़ करो। इस्तिक़ामत (जमना और क़ायम रहना) इसी को कहते हैं। कहा जाता है कि इस दुआ़ के चालीस साल बाद फ़िरऔन हलाक हो गया और बाज़ कहते हैं कि चालीस दिन बाद।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِىٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ
فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰىٓ اِذَآ
اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
الَّذِىٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ
الْمُسْلِمِيْنَ ۝ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ
وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ
بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ
كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝ ع

और हमने बनी इस्राईल को (उस) दरिया से पार कर दिया, फिर उनके पीछे-पीछे फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ ज़ुल्म और ज़्यादती के इरादे से (दरिया में) चला, यहाँ तक कि जब डूबने लगा (और अ़ज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आने लगे) तो (घबराकर) कहने लगा कि मैं ईमान लाता हूँ कि सिवाय उसके कि जिसपर बनी इस्राईल ईमान लाए हैं, कोई माबूद नहीं, और मैं मुसलमानों में दाख़िल होता हूँ। (90) (जवाब दिया गया कि) अब (ईमान लाता है) और (अ़ज़ाब के देखने से) पहले सरकशी करता रहा, और फ़सादियों में दाख़िल रहा। अब निजात चाहता है? (91) सो (जो तू निजात चाहता है उसके बजाय) आज हम तेरे बदन (यानी तेरी लाश को, पानी में नीचे बैठ जाने से) निजात देंगे, ताकि तू उनके लिए (इबरत का) निशान हो जो तेरे बाद (मौजूद) हैं। और हक़ीक़त यह है कि (फिर भी) बहुत-से आदमी हमारी (ऐसी-ऐसी) निशानियों से (यानी इबरतों से) ग़ाफ़िल हैं, (और अल्लाह के अहकाम की मुख़ालफ़त से नहीं डरते)। (92)

फ़िरऔन और उसकी बदबख़्ती

फ़ौज मौजों की भेंट

अल्लाह पाक फ़िरऔन और उसके लश्कर के डूबने की कैफ़ियत बयान फ़रमाता है कि बनी इस्राईल जब मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ मिस्र से निकले और वे छह लाख सिपाही थे, फ़िरऔन की ईमान लाई हुई ज़ुर्रियत को छोड़कर बनी इस्राईल ने फ़िरऔन की क़ौम वाले क़िबतियों से बड़ी तादाद में ज़ेवर उधार के तौर

पर माँग लिये थे और लेकर निकल गये। चुनाँचे फ़िरऔन का ग़ुस्सा और भी तेज़ हो गया। उसने अपने कारिन्दों को अपने मुल्क के हर प्रान्त से लश्कर जमा करने को भेजा और एक बड़ा लश्कर लेकर बनी इस्राईल का पीछा करने के लिये चल पड़ा, और ख़ुदा का मंशा यही था। चुनाँचे उसके मुल्क में जितने भी मालदार और हैसियत वाले लोग थे कोई शिर्कत से बचा न रहा, सब ही फ़िरऔन के साथ हो गये। सुबह सुबह के वक़्त उन लोगों ने बनी इस्राईल को पा लिया, दोनों फ़रीक़ों ने जब एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथी पुकार उठे कि "ऐ मूसा! अब तो हम पकड़ लिये गये" और यह उस वक़्त की बात थी जबकि बनी इस्राईल दरिया के किनारे पर आ पहुँचे थे और फ़िरऔन के लोग भी पीछे थे। इसके सिवा कोई रास्ता बाक़ी नहीं रहा था कि दोनों फ़रीक़ों में मुठभेड़ हो जाये। मूसा अ़लैहिस्सलाम से लोग बार-बार पूछने लगे कि अब क्या होगा? फ़िरऔनियों से कैसे बचेंगे? आगे दरिया पीछे दुश्मन। मूसा अ़लैहिस्सलाम कहते थे कि "मुझे तो यही हुक्म है कि दरिया में रास्ता पैदा कर दूँ। हम कभी नहीं पकड़े जायेंगे। मेरा रब मेरा मुहाफ़िज़ व निगराँ है।" जब हद से ज़्यादा मायूसी हो गई तो अल्लाह तआ़ला ने नाउम्मीदी को उम्मीद से बदल दिया और हुक्म फ़रमाया कि दरिया पर अपना अ़सा (लाठी) मारो। मूसा ने अ़सा मारा, दरिया फट पड़ा, पानी का हर टुकड़ा एक बुलन्द पहाड़ पर था, दरिया में बारह रास्ते बन गये और हर गिरोह के लिये एक-एक रास्ता बन गया, दरिया के अन्दर गीली ज़मीन को ख़ुश्क हवाओं ने फ़ौरन सुखा दिया और रास्ता गुज़रने के क़ाबिल हो गया। दरियाई रास्ते सूख गये, अब न गिरफ़्तार होने का ख़ौफ़ था और न किसी बात का डर कि डूब जायेंगे। पानी की दीवारों के अन्दर दरीचे (रोशनदान) से बन गये थे ताकि हर रास्ते वाले अपने साथियों को उन दरीचों (बड़े-बड़े सुराख़ों) के ज़रिये देख सकें और मुत्मईन हो सकें कि दूसरे हलाक तो नहीं हो गये हैं।

अब बनी इस्राईल ने दरिया को पार कर लिया, जब आख़िरी इस्राईली भी दरिया के पार उतर गया तो फ़िरऔन का लश्कर दरिया के दूसरे किनारे पर पहुँच चुका था। उस लश्कर में एक लाख सवार तो सिर्फ़ काले रंग के घोड़ों वाले थे, दूसरे रंग के घोड़े इसके अ़लावा थे, इससे फ़िरऔन के लश्कर की अधिकता का अन्दाज़ा हो सकता है। फ़िरऔन ने जब यह डरावना मन्ज़र देखा तो डर गया और वापस होने का इरादा कर लिया लेकिन अफ़सोस कि अब निजात का मौक़ा जा चुका था, तक़दीर नाफ़िज़ हो चुकी थी, मूसा की दुआ़ ने क़ुबूलियत हासिल कर ली थी। जिब्राईल एक घोड़ी पर सवार थे, फ़िरऔन के घोड़े के पास से गुज़रे, घोड़ी को देखकर घोड़ा हिनहिना उठा, जिब्राईल ने अपनी घोड़ी दरिया में डाल दी, घोड़ा भी दरिया में कूद पड़ा। फ़िरऔन उसको न थाम सका, मजबूरन दरिया में हो गया लेकिन उसने अपनी बहादुरी साबित करने के लिये अपने साथी सरदार लोगों को ललकारा कि बनी इस्राईल हमसे ज़्यादा दरिया के अन्दर दाख़िल होने के हक़दार नहीं। सब दरिया में कूद पड़े, रास्ता बना हुआ है, चुनाँचे उसका लश्कर दरिया के अन्दर समा गया। मीकाईल अ़लैहिस्सलाम सबके पीछे थे और उसके लश्कर को हाँक कर आगे बढ़ा रहे थे। चुनाँचे एक भी पीछे न रहा।

जब सब दरिया में दाख़िल हो गये और बनी इस्राईल सब दरिया पार हो गये तो अल्लाह पाक ने दरिया को आपस में जोड़ दिया। अब कोई फ़िरऔनी भी बच न सका। मौजें (दरिया की लहरें) ऊपर नीचे हो रही थीं, उनमें उतार-चढ़ाव पैदा हो गया था। फ़िरऔन पर मौत की हालत तारी थी। अब वह कह उठा कि "हाँ बनी इस्राईल के ख़ुदा के सिवा कोई दूसरा ख़ुदा नहीं, मैं ईमान लाता हूँ" लेकिन अफ़सोस कि वह उस वक़्त ईमान लाया जबकि ईमान लाना कुछ भी मुफ़ीद न था।

अल्लाह तआला का क़ौल है कि जब उन्होंने अ़ज़ाब देख लिया तो बोल उठे कि हम एक ख़ुदा पर ईमान लाये और कुफ़्र व शिर्क से बाज़ आये, लेकिन हमारा अ़ज़ाब देख चुकने के बाद ईमान नफ़ा-बख़्श (लाभ पहुँचाने वाला) नहीं। अल्लाह की यही सुन्नत है, काफ़िर ख़सारे में रहेंगे। इसी लिये अल्लाह पाक ने फ़िरऔ़न के जवाब में कहा कि अब ईमान लाता है और अब तक नाफ़रमान और काफ़िर बना हुआ था और फ़ितने मचा रहा था और लोगों को गुमराह कर रहा था, वे लोग दोज़ख़ में ले जाने के लिये एक दूसरे के इमाम बने हुए थे। अब उनकी हरगिज़ मदद नहीं की जायेगी।

अल्लाह तआला ने फ़िरऔ़न की यह बात कि मैं मूसा के रब पर ईमान लाता हूँ नबी सल्ल. से बयान फ़रमाई। यह उन ग़ैब की बातों में से थी जिनकी ख़बर सिर्फ़ आपको ही हो सकी। इसी लिये रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि जब फ़िरऔ़न ने ईमान का कलिमा ज़बान से निकाला तो जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मुझसे बयान करते हैं कि ऐ अल्लाह के नबी! मैंने दरिया का कीचड़ लेकर फ़िरऔ़न के मुँह में ठूँस दिया ताकि कहीं इन कलिमात से रहमत का दरिया जोश में न आ जाये।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً.

कि अब हम तेरी रूह को नहीं तेरे जिस्म को महफ़ूज़ करते हैं ताकि बाद वालों के लिये इबरत (सबक़ और निशान) बन जाये।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल है कि बाज़ बनी इस्राईल ने फ़िरऔ़न की मौत के बारे में शक किया था तो अल्लाह तआ़ला ने दरिया को हुक्म दिया कि फ़िरऔ़न के बेजान जिस्म को जिस पर लिबास भी मौजूद है ज़मीन के एक टीले पर फेंक दे, ताकि लोगों को फ़िरऔ़न की मौत का हक़ीक़ी सुबूत मिल जाये, बदन यानी बेजान जिस्म। अल्लाह फ़रमाता है:

اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ.

यानी अक्सर लोग हमारी निशानियों से इबरत व नसीहत हासिल नहीं करते हैं।

कहते हैं कि यह हलाकत (यानी फ़िरऔ़न उसकी क़ौम का दरिया में डूबना) आ़शूरा के दिन (यानी दस मुहर्रम) में हुई थी। नबी सल्ल. जब मदीना आये तो उन दिनों यहूद आ़शूरा (मुहर्रम) के दिन का रोज़ा रखा करते थे। पूछा कि इस दिन क्यों रोज़ा रखते हो? यहूद ने कहा कि इस दिन मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़िरऔ़न पर ग़ालिब आये थे, तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि ऐ मेरे लोगो! तुम इस दिन रोज़ा रखने के यहूद से ज़्यादा मुस्तहिक़ (पात्र) हो, इसी लिये आ़शूरा (दस मुहर्रम) का रोज़ा रखा करो।

और हमने (फ़िरऔ़न को ग़र्क़ करने के बाद) बनी इस्राईल को बहुत अच्छा ठिकाना रहने को दिया, और हमने उनको नफ़ीस और पाक चीज़ें (बाग़ात और चश्मों वग़ैरह से) खाने को दीं। सो उन्होंने (जहालत की वजह से) इख़्तिलाफ़ नहीं किया, यहाँ तक कि उनके पास (अहकाम का) इल्म पहुँच गया। यक़ीनी बात है	وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ

कि आपका रब उन (इख़्तिलाफ़ करने वालों) के दरमियान क़ियामत के दिन उन मामलात में (अमली) फ़ैसला करेगा जिनमें वे इख़्तिलाफ़ (मतभेद और झगड़ा) किया करते थे। (93)	بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ۝

Maktab E Ashraf

बनी इस्राईल पर ख़ुदा के इनामात और उनकी नाशुक्री

अल्लाह पाक बनी इस्राईल पर अपनी दीनी और दुनियावी नेमतों का ज़िक्र फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाता है कि हमने उनको रहने के लिये अच्छी जगह दी, यानी मिस्र व शाम के मुल्कों में जो बैतुल-मुक़द्दस के क़रीब हैं। अल्लाह तआला ने जब फ़िरऔन को हलाक कर दिया तो मूसा की हुकूमत मिस्र के मुल्क पर क़ाबिज़ हो गई। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने उस क़ौम को वारिस बना दिया जो पूरब व पश्चिम हर जगह कमज़ोर थी, हमने उन्हें बरकत दी और बनी इस्राईल से तुम्हारे रब का वादा पूरा हुआ क्योंकि उन्होंने सब्र किया था और फ़िरऔन की क़ौम ने जो कुछ महल व मकानात तैयार किये थे सब तहस नहस कर दिये गये। हमने उन्हें बाग़ों और चश्मों से निकाल बाहर किया, ख़ज़ाने उनसे छीन लिये और उन सब का वारिस बनी इस्राईल को बना दिया। उन्होंने बेशुमार बाग़ात व चश्मे छोड़े थे लेकिन बनी इस्राईल मूसा अ़लैहिस्सलाम से हमेशा ही बैतुल-मुक़द्दस के इलाक़े का मुतालबा करते रहते थे, जो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह का वतन था। उन दिनों यरोशलम अ़मालिक़ा क़ौम के क़ब्ज़े में था। बनी इस्राईल को उनसे लड़ने के लिये कहा गया तो वे इनकार कर बैठे, अल्लाह पाक ने उन्हें तीह के जंगल में हैरान व परेशान छोड़ दिया। चालीस बरस वहाँ गुज़रे, इस अ़रसे में हज़रत हारून और फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम वफ़ात पा गये। जब बनी इस्राईल तीह से यूशा बिन नून के साथ बाहर निकले और अल्लाह ने बैतुल-मुक़द्दस उनके हाथों फ़तह करा दिया, यह एक लम्बे समय तक उनके क़ब्ज़े में रहा। फिर बुख़्ते-नस्सर ने क़ब्ज़ा कर लिया। फिर दोबारा बनी इस्राईल का क़ब्ज़ा हुआ, फिर यूनान के बादशाह इस पर क़ाबिज़ हुए उनके अहकाम लम्बी मुद्दत तक चलते रहे। इस अ़रसे में अल्लाह तआला ने ईसा बिन मरियम को भेजा, यहूद ने हज़रत ईसा की दुश्मनी में यूनान के बादशाहों से साज़-बाज़ की, हज़रत ईसा की चुग़लियाँ खाईं और कहा कि ईसा रियाया (पब्लिक) में फ़साद व फ़ितना (असंतोष) पैदा कर रहा है। यूनान के बादशाह ने उनको पकड़कर सूली देना चाहा लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी से एक हवारी पर ईसा अ़लैहिस्सलाम का गुमान हो गया उसको पकड़ कर सूली दे दी और गुमान किया कि ईसा यही थे। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ईसा को उन्होंने यक़ीनन क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया है। अल्लाह ग़ालिब व हकीम है।

फिर मसीह अ़लैहिस्सलाम के तक़रीबन तीन सौ बरस बाद एक यूनानी बादशाह ने ईसाई दीन क़बूल किया लेकिन यह फ़ल्सफ़ी (विज्ञानी) था। कहते हैं कि ईसाई दीन में एक बहाने और दिखावे के तौर पर शामिल हो गया था ताकि ईसवी दीन में फ़ितना पैदा करे। ईसाई पादरियों ने उसके हुक्म से शरीअ़त के नये नये क़ानून बनाये, बिदअ़तें फैलाईं, छोटे बड़े क्लीसा और इबादत के स्थान बनाये, हैकल और इबादतख़ाने क़ायम किये, उस ज़माने में ईसाई दीन बहुत फैल गया और उसमें रद्दोबदल और कमी-ज़्यादती होने लगी, रहबानियत पैदा हो गई, सच्चे ईसाई दीन की मुख़ालफ़त होने लगी। असली दीन चन्द

Maktab E Ashraf

इबादत-गुज़ारों के अन्दर ही बाक़ी रह गया। अब ये भी राहिबों की शक्ल में जंगल और मैदानों में अपने इबादत के स्थान बनाकर रहने लगे। ईसाईयों का क़ब्ज़ा मुल्के शाम, जज़ीरा और रोम के मुल्कों पर हो गया। उसी बादशाह ने शहर क़ुस्तुनतुनिया और क़मामा बसाया, बैतुल-मुक़द्दस में बैतुल-लहम और कनीसे बनाये। हूरान के शहर बसाये, जैसे बसरा वग़ैरह, बड़ी-बड़ी मज़बूत इमारतें बनाईं। यहीं से सलीब-परस्ती की शुरूआत हुई। ईसाई पूरब के दूर-दराज़ इलाक़ों तक जा पहुँचे और वहाँ भी कनीसे बनाये। ख़िन्ज़ीर (सुअर) का गोश्त हलाल कर लिया, दीन के बहुत से अहकाम और बुनियादी बातों में अ़जीब अ़जीब बिदअ़तें (दीन में नई बातें) पैदा कीं। 'इमामते हक़ीरा' का उसूल तैयार करके 'इमामते कबीरा' का नाम रख दिया। बादशाह के हुक्म से नये-नये शरई क़वानीन बना लिये, इसकी तफ़सील बहुत लम्बी है। ग़र्ज़ यह कि इन मुल्कों और इलाक़ों पर उनका क़ब्ज़ा सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के ज़माने तक रहा, यहाँ तक कि बैतुल-मुक़द्दस हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. के हाथों फ़तह हुआ।

हमने उन्हें पाक-पाक चीज़ें दी थीं ताकि पाक चीज़ें खायें, लेकिन मज़हबी मालूमात के बावजूद वे इख़्तिलाफ़ (विवाद खड़े) करने लगे, हालाँकि मज़हब में इख़्तिलाफ़ (झगड़े और विवाद) की कोई वजह ही नहीं थी। अल्लाह ने तो सब बातें साफ़-साफ़ बिना किसी लाग-लपेट के बयान कर दी थीं। हदीस में है कि यहूद ने इकहत्तर (71) फ़िर्क़े बना लिये थे, ईसाईयों ने बहत्तर (72) बनाये और मेरी उम्मत तिहत्तर (73) फ़िर्क़े बनायेगी। जिनमें से सिर्फ़ एक निजात पाने वाला होगा और बाक़ी सब दोज़ख़ में जायेंगे। नबी करीम सल्ल. से पूछा गया कि वह एक कौनसा है? आपने फ़रमाया जिस पर मैं और मेरे सहाबा चल रहे हैं। इसी लिये अल्लाह पाक ने फ़रमाया है कि मैं क़ियामत के दिन इनके इख़्तिलाफ़ात (मतभेदों और विवादों) का फ़ैसला कर दूँगा।

فَاِنْ كُنْتَ فِىْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ

फिर अगर मान लीजिए आप इस (किताब) की तरफ़ से शक (व शुब्हे) में हों जिसको हमने आपके पास भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछ लीजिए जो आपसे पहले (की) किताबों को पढ़ते हैं, (मुराद तौरात व इन्जील हैं, तो वे क़ुरआन को सच बतलाएँगे)। बेशक आपके पास आपके रब की तरफ़ से सच्ची किताब आई है, आप हरगिज़ शक करने वालों में न हों। (94) और न (शक करने वालों से बढ़कर) उन लोगों में से हों जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की आयतों को झुठलाया, कहीं आप (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) तबाह न हो जाएँ। (95) यक़ीनन जिन लोगों के हक़ में आपके रब की (यह तक़दीरी) बात (कि ईमान न लाएँगे) साबित हो चुकी है वे (कभी) ईमान न लाएँगे। (96) चाहे उनके

Maktab e Ashraf

كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ٥

पास (हक़ के सुबूत की) तमाम दलीलें पहुँच जाएँ, जब तक कि दर्दनाक अज़ाब को न देख लें, (मगर उस वक़्त ईमान फ़ायदेमन्द नहीं होता)। (97)

अहले किताब की दुश्मनी और बैर

क़तादा बिन दुआमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- न मैं शक करता हूँ न मुझे पूछने की ज़रूरत है। इस आयत में उम्मत को साबित-क़दम (दीन पर जमे और सही रास्ते पर क़ायम) रहने की तरग़ीब दी गई है, और बताया गया है कि इस नबी की सिफ़त पहली आसमानी किताबों तौरात व इन्जील में मौजूद थी जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो लोग नबी-ए-उम्मी की पैरवी करते हैं वे इस बिना पर कि आपकी सिफ़ात तौरात व इन्जील में लिखी हुई पाते हैं। लेकिन इसके बावजूद हुज़ूर सल्ल. को इसी तरह जानते हैं जैसे अपनी औलाद के औलाद होने को। फिर भी उसे छुपाते हैं, रद्दोबदल इन्जील में कर देते हैं, हुज्जत पूरी होने के बावजूद ईमान नहीं लाते। इसी लिये अल्लाह ने फ़रमाया कि उन पर हक़ की हुज्जत क़ायम हो चुकी है, लेकिन कैसा ही सुबूत उनको क्यों न मिले, ये उस वक़्त तक ईमान न लायेंगे जब तक कि अज़ाब को अपनी आँखों से न देख लेंगे। लेकिन उस वक़्त इनका ईमान लाना कुछ नफ़ा-बख़्श (लाभदायक) न होगा।

क़ौम के इस दर्जे पर पहुँच जाने के बाद ही मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उन पर बद्दुआ़ की थी कि ऐ ख़ुदा तआ़ला! इनके मालों को फ़ना कर दे, इनके दिलों पर मुहर लगा दे, अ़ज़ाब के बग़ैर ये न मानेंगे। इसी तरह अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि अगर हम उन पर फ़रिश्ते भी नाज़िल कर दें, मुर्दे भी उनसे बात करने लगें और हर चीज़ उनके लिये जमा कर दें फिर भी ये ईमान लाने वाले नहीं, और इनमें से अक्सर तो जानते ही नहीं हैं।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ٥

चुनाँचे (अज़ाब शुदा बस्तियों में से) कोई बस्ती ईमान न लाई, कि ईमान लाना उसको फ़ायदेमन्द होता, हाँ मगर यूनुस (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम। जब वे ईमान ले आए तो हमने रुस्वाई के अज़ाब को दुनियावी ज़िन्दगी में उन पर से टाल दिया, और उनको एक ख़ास वक़्त (यानी मौत के वक़्त) तक (ख़ैर व ख़ूबी के साथ) ऐश "यानी चैन व सुकून" दिया। (98)

उम्मतों ने नबियों का हमेशा इनकार किया

पहले गुज़री उम्मतों में से कोई भी उम्मत सारी की सारी ईमान नहीं लाई, जिसकी तरफ़ कि हमने अपने पैग़म्बर भेजे थे, बल्कि तुमसे पहले भी ऐ मुहम्मद! जो रसूल आया ज़रूर उसको झुठलाया गया, जैसा

कि अल्लाह तआला का क़ौल है- अफ़सोस बन्दों पर कि रसूल उनके पास आता है तो उसका मज़ाक़ उड़ाये बग़ैर नहीं रहते। कहते हैं कि यह तो जादूगर है, मजनूँ है, जिस बस्ती में भी हमारा कोई नबी पहुँचा तो वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो अपने बाप-दादा के नक़्शे-क़दम पर चलेंगे।

सही हदीस में है कि "अम्बिया मेरे सामने पेश किये गये, किसी नबी के साथ बड़ी-बड़ी जमाअतें उम्मतों की थीं और किसी नबी के साथ एक ही आदमी था, और किसी नबी के साथ दो आदमी, और किसी के साथ तो एक भी नहीं। फिर मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत की अधिकता का ज़िक्र फ़रमाया। फिर अपनी उम्मत की अधिकता का ज़िक्र किया जिसने कि पूरब व पश्चिम को ढाँप लिया था। ग़र्ज़ यह कि यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम के अलावा किसी मुल्क की क़ौम सब की सब ईमान नहीं लाई। हज़रत यूनुस की क़ौम नैनवा वाले थे, उनका ईमान अज़ाब दिखाई देने के बाद डर की बिना पर था। अज़ाब से डरकर अल्लाह का नबी अपनी क़ौम के अन्दर से बाहर निकल गया था। अब उन लोगों को सख़्त अफ़सोस हुआ, ख़ुदा की पनाह चाही, अल्लाह से फ़रियाद व ज़ारी की, अपने बच्चों और मवेशियों सबको लेकर ख़ुदा के सामने आ खड़े हुए और अल्लाह से दरख़्वास्त की कि जिस अज़ाब की नबी ने ख़बर दी है और फिर हमसे जुदा हो गया उसको दूर फ़रमा दे। उस वक़्त अल्लाह ने उन पर रहम किया, अज़ाब जो सामने आ चुका था हट गया जैसा कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि क़ौमे युनूस जब ईमान ले आई तो दुनियावी ज़िन्दगी में उन पर आया हुआ अज़ाब हमने हटा लिया और पूरी ज़िन्दगी उस अज़ाब से उन्हें बचा लिया।

मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) का इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि आया सिर्फ़ दुनियावी अज़ाब हटा या अज़ाबे आख़िरत भी हट गया। बाज़ कहते हैं कि सिर्फ़ दुनिया का अज़ाब, क्योंकि आयत से सिर्फ़ इसी पर रोशनी पड़ती है। और बाज़ कहते हैं कि अल्लाह तआला का क़ौल है कि हमने नबी को एक लाख से ज़्यादा आदमियों की तरफ़ भेजा था, वे ईमान लाये, चुनाँचे निर्धारित मियाद तक हमने उन्हें फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया। यहाँ ईमान का लफ़्ज़ मुतलक़ (बिना किसी क़ैद के) है, और मुतलक़ ईमान तो आख़िरत के अज़ाब से निजात देने वाला होता है। वल्लाहु आलम

क़तादा रह. ने इस आयत की तफ़सीर में लिखा है कि अज़ाब आ चुकने के बाद कोई क़ौम ईमान लाये तो नहीं छोड़ा जाता है, लेकिन जब युनूस ने अपनी क़ौम को छोड़ दिया और लोग समझ गये कि अब अज़ाब से निजात नहीं तो उनके दिलों में तौबा के जज़्बात पैदा हुए। उन्होंने ख़राब कपड़े पहनकर अपने को बदहाल बना लिया, मवेशियों (जानवरों और पशुओं) का गिरोह और उनके बच्चों का गिरोह अलग-अलग किया, अपने साथ बच्चों जानवरों तक को ले गये, चालीस दिन तक फ़रियाद व ज़ारी की। अल्लाह ने उनके ख़ुलूसे नीयत और तौबा के ख़ालिस जज़्बे को देखकर उन पर से अज़ाब हटा दिया। क़ौमे युनूस मूसल के इलाक़े में नैनवा की रहने वाली थी।

ग़र्ज़ यह कि यह अज़ाब उनके सरों पर इस तरह मंडरा रहा था जैसे अंधेरी रात में बादल के टुकड़े। ये लोग अपने एक आलिम के पास गये कि हमें एक दुआ लिख दीजिये कि जिसकी बरकत से अज़ाब टल जाये। उसने यह दुआ लिख दी थी:

يَاحَيُّ حِيْنَ لَاحَيَّ يَاحَيُّ يُحْيِ الْمَوْتٰى يَاحَيُّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

"या हय्यु ही-न ला हय्-य या हय्यु युहयिल् मौता या हय्यु ला इला-ह इल्ला अन्-त"

चुनाँचे अज़ाब टल गया। यह पूरा क़िस्सा सूरः साफ़्फ़ात में इन्शा-अल्लाह बयान होगा।

Maktab_E_Ashraf

Maktaba Ashraf

और उन क़ौमों और बस्तियों की क्या तख़्सीस है?) अगर आपका रब चाहता तो तमाम रू-ए-ज़मीन के लोग सबके सब ईमान ले आते, सो (जब यह बात है तो) क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती कर सकते हैं जिससे वे ईमान ही ले आएँ। (99) हालाँकि किसी शख़्स का ईमान बिना ख़ुदा के हुक्म (यानी उसकी मर्ज़ी) के मुम्किन नहीं, और वह (यानी अल्लाह तआ़ला) बेअ़क़्ल लोगों पर (कुफ़्र की) गंदगी डाल देता है। (100)	وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِی الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۖ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ○ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۖ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ○

हर हाल में ख़ुदा ही का हुक्म

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि ऐ मुहम्मद। अगर अल्लाह चाहता तो सब के सब ईमान ले आते, लेकिन अल्लाह तआ़ला जो कुछ करता है उसमें हिक्मत होती है। ख़ुदा की मर्ज़ी होती तो सब एक ही ख़्याल के होते, लेकिन लोग विभिन्न और अलग-अलग राय रखते हैं। सही राय पर वे हैं जिन पर अल्लाह का रहम है और उनकी फ़ितरत भी ऐसी ही बनाई है। ख़ुदा की यह बात पूरी होकर रहेगी कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इनसानों से भर दूँगा। अगर सब के सब हिदायत पाने वाले होते तो ईमान क्या बेमानी सी बात होकर न रह जाती? अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि क्या तुम मजबूर करके इन्हें मोमिन बनाना चाहते हो? न यह तुम पर वाजिब है न तुम्हारे लिये ज़रूरी है, अल्लाह जिसको चाहे गुमराह करे और जिसको चाहे हिदायत दे, तुम उन पर अफ़सोस करके अपना दिल न कुढ़ाओ। इस ख़्याल के तहत कि वे ईमान नहीं ला रहे हैं क्या तुम अपनी जान हलाक कर दोगे? तुम अपनी ताक़त से किसी को सही रास्ते पर नहीं ला सकते। तुम्हारा काम तो सिर्फ़ तब्लीग़ कर देना है। फिर उनको हम से निपटना है, तुम सिर्फ़ नसीहत करने वाले हो, नसीहत कर दो, समझा दो, इसके बाद तुम ज़िम्मेदार नहीं।

ये आयतें इस बात पर दलालत करती हैं कि हर काम का असल करने वाला अल्लाह ही है, कोई ईमान नहीं ला सकता ख़ुदा की मर्ज़ी के बग़ैर। अ़क़्ल से काम न लेने वाले गुमराह कर दिये जाते हैं। अल्लाह पाक हिदायत करने और न करने के बारे में अ़दल (इन्साफ़) पर है।

आप कह दीजिए कि तुम ग़ौर करो। (और देखो) कि क्या-क्या चीज़ें हैं आसमानों और ज़मीन में। और जो लोग (दुश्मनी के तौर पर) ईमान नहीं लाते, उनको दलीलें और धमकियाँ कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचातीं, (यह बयान हुआ उनके बैर का), (101) सो वे लोग (जैसा कि उनके हाल से ज़ाहिर है) सिर्फ़ उन लोगों के	قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ وَمَا تُغْنِی الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ○ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ قُلْ

فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ ثُمَّ نُنَجِّیْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ع ١٠ ١٥	जैसे वाक़िआत का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि अच्छा तो तुम (तो उसके) इन्तिज़ार में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ (उसके) इन्तिज़ार करने वालों में हूँ। (102) फिर हम (उस अज़ाब से) अपने पैग़म्बरों को और ईमान वालों को बचा लेते थे, (जिस तरह हमने उन मोमिनों को निजात दी थी) हम इसी तरह सब ईमान वालों को निजात दिया करते हैं। यह (वायदे के मुताबिक़) हमारे ज़िम्मे है। (103)

इबरत की निगाह तो डालो

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की रहनुमाई फ़रमा रहा है कि सारी कायनात में हमारी जो निशानियाँ फैली हुई हैं जैसे आसमान, सितारे, सय्यारे, सूरज व चाँद, रात व दिन वग़ैरह उन पर इबरत (सबक़ लेने की) निगाह डालो कि रात में दिन और दिन में रात कैसे दाख़िल हो जाती है। कभी दिन बड़ा और कभी रात बड़ी, आसमान की बुलन्दी और फैलाव, सितारों से उसकी सजावट, आसमान से पानी बरसना, ज़मीन का सूख जाने के बाद फिर ज़िन्दा व हरा-भरा हो जाना, दरख़्तों में फल-फूल और कलियाँ पैदा होना, अनेक नबातात का उगना, विभिन्न और अनेक क़िस्म के जानवर, उनकी शक्लें अलग-अलग, उनके रंग उनके फ़ायदे सब अलग-अलग। पहाड़, चटियल मैदान, जंगल, बाग़, आबादियाँ और वीराने, समुद्र के अ़जायबात (आश्चर्य), मौजें, उनका उतार-चढ़ाव। इसके बावजूद सफ़र करने वालों के लिये समुद्र का क़ब्ज़े व इख़्तियार में हो जाना, जहाज़ चलना। ये सब ख़ुदा-ए-क़ादिर की निशानियाँ हैं, जिसके सिवा कोई दूसरा ख़ुदा है ही नहीं, लेकिन अफ़सोस कि ये सारी निशानियाँ काफ़िरों के ग़ौर व फ़िक्र (चिंतन व मंथन) का कुछ भी सबब नहीं बनतीं।

ख़ुदा की दलील साबित हो चुकी है, ये लोग ईमान नहीं लाते हैं न लायें, ये तो उन्हीं अ़ज़ाब के दिनों का इन्तिज़ार कर रहे हैं जिससे पहले की क़ौमों को साबक़ा पड़ा था। ऐ नबी! कह दो कि वक़्त का इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ और जब इन्तिज़ार के ख़त्म होने पर अ़ज़ाब आ जायेगा तो फिर हम अपने रसूलों को बचा लेंगे और उनकी उम्मत को भी, और पैग़म्बरों का इनकार करने वालों को हलाक कर देंगे। अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे ले लिया है कि मोमिनों को बचा लेगा जैसे कि नेक काम करने वालों पर रहमत अपने ज़िम्मे ले ली है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला की किताब लौहे-महफ़ूज़ जो अ़र्श पर है उसमें लिखा है कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब (छाई हुई) है।

Maktaba Ashraf

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ شَكٍّ مِّنْ
دِيْنِىْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ
وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَنْ
اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ
فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَاِنْ
يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا
هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ
يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से शक (और शुब्हे) में हो तो मैं उन माबूदों की इबादत नहीं करता ख़ुदा के अलावा जिनकी तुम इबादत करते हो, लेकिन हाँ उस माबूद की इबादत करता हूँ जो तुम (यानी तुम्हारी जान) को कब्ज़ करता है, और मुझको (अल्लाह की तरफ़ से) यह हुक्म हुआ है कि मैं ईमान लाने वालों में से होऊँ। (104) और यह कि अपने आपको इस (ज़िक्र हुए) दीन (और ख़ालिस तौहीद) की तरफ़ इस तरह मुतवज्जह रखना कि और सब तरीक़ों से अलग हो जाऊँ, और (मुझको यह हुक्म हुआ है कि) कभी मुश्रिक मत बनना। (105) और (यह हुक्म हुआ है कि) ख़ुदा (की तौहीद) को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत मत करना जो तुझको न (इबादत करने की हालत में) कोई नफ़ा पहुँचा सके और न (इबादत छोड़ देने की हालत में) कोई नुक़सान पहुँचा सके। फिर अगर (मान लो) तुमने ऐसा किया (यानी अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत की) तो तुम उस हालत में (अल्लाह का) हक़ ज़ाया करने वालों में से हो जाओगे। (106) और (मुझसे यह कहा गया है कि) अगर तुमको अल्लाह तआ़ला कोई तकलीफ़ पहुँचाए तो सिवाय उसके और कोई उसका दूर करने वाला नहीं है, और अगर वह तुमको कोई राहत पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला नहीं, (बल्कि) वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिसपर चाहे मुतवज्जह फ़रमाए, और वह बड़ी मग़फ़िरत वाले (और) रहमत वाले हैं। (107)

झूठे दीन से बेज़ारी

अल्लाह पाक नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि ऐ नबी! सुना दो कि मैं दीने हनीफ़ जो लाया हूँ जिसकी 'वही' मुझ पर उतरी है, अगर उसके सही होने में बहरहाल तुम्हें शक हो तो मैं तो तुम्हारे माबूदों की कभी

परस्तिश (पूजा और इबादत) न करूँगा। मैं ख़ुदा-ए-वाहिद व ला शरीक (एक ख़ुदा जिसका कोई शरीक नहीं) का बन्दा हूँ जो तुम्हें मौत देता है और जिसने ज़िन्दगी दी थी। यक़ीनन तुम सब को उसी की तरफ़ जाना है। फ़र्ज़ करो कि अगर हक़ीक़त में तुम्हारे माबूद हक़ हैं तो उनसे कहो कि मुझे नुक़सान पहुँचायें। याद रखो कि उनमें नफ़ा व नुक़सान पहुँचाने की कोई क़ुदरत नहीं है। नफ़ा व नुक़सान तो ख़ुदा तआ़ला के हाथ में है। ऐ नबी! काफ़िरों से मुँह फेरकर (यानी उनसे बेताल्लुक़ होकर) पूरे इख़्लास के साथ ख़ुदा की इबादत में लग जाओ, शिर्क की तरफ़ ज़रा भी न झुकना। अगर नुक़सान व नफ़े के अन्दर ख़ुदा तुम्हें घेर लेगा तो कौन उस घेरे से तुमको बाहर निकाल सकता है? नफ़ा व नुक़सान, बुराई व भलाई तो ख़ुदा की तरफ़ से ही है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया- उम्र भर ख़ैर के तालिब रहो और ख़ुदा की नेमतों को याद रखो। ख़ुदा की रहमतों की हवायें जिस ख़ुशनसीब को पहुँच गईं तो पहुँच गईं, वह जिसको चाहे रहमत से नवाज़े और अल्लाह पाक से दरख़्वास्त करो कि तुम्हारे ऐब व गुनाहों को छुपाता रहे और तुम्हें ज़माने और नफ़्स की आफ़तों से अमन में रखे। वह ग़फ़ुरुर्रहीम है। कैसा ही गुनाह क्यों न हो तौबा कर लो यहाँ तक कि शिर्क करके भी तौबा कर लो तो वह क़बूल कर लेता है।

قُلْ يَآ أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِىْ
لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ
وَمَآ أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰى
إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ
خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝ ع ١١ ١٢

आप (यह भी) कह दीजिए कि ऐ लोगो! तुम्हारे पास (दीने) हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से (दलील के साथ) पहुँच चुका है, सो (उसके पहुँच जाने के बाद) जो शख़्स सही रास्ते पर आ जाएगा सो वह अपने (नफ़े के) वास्ते सही रास्ते पर आएगा। और जो शख़्स (अब भी) बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना (यानी उसका वबाल भी) उसी पर पड़ेगा, और मैं तुमपर (कुछ बतौर ज़िम्मेदारी के) मुसल्लत नहीं किया गया। (108) और आप उसकी पैरवी करते रहिए जो कुछ आपके पास 'वही' भेजी जाती है, और (उनके कुफ़्र व तकलीफ़ पहुँचाने पर) सब्र कीजिए, यहाँ तक कि अल्लाह (उनका) फ़ैसला कर देंगे, और वह सब फ़ैसला करने वालों में अच्छे (फ़ैसला करने वाले) हैं। (109)

हक़ क़ायम हो चुका

अल्लाह पाक नबी सल्ल. से फ़रमाता है- लोगों से कह दो कि ख़ुदा के पास से जो 'वही' आई है वह हक़ है, उसमें ज़रा भी शुब्हा नहीं। जिसने हिदायत पाई और पैरवी की उसका फ़ायदा ख़ुद उसको पहुँचेगा, और जो हिदायत हासिल न करे उसका वबाल उसकी जान पर है। मैं कोई ख़ुदाई फ़ौजदार नहीं कि ज़बरदस्ती तुमको मोमिन बनाऊँ, मैं तो ख़ुदा के अ़ज़ाब से सिर्फ़ डराने वाला हूँ। हिदायत देना अल्लाह का

काम है। ऐ नबी! तुम ख़ुद 'वही' की पैरवी करो, ख़ुदा की 'वही' को मज़बूती से पकड़े रहो, जो तुम्हारी मुख़ालफ़त (विरोध) कर रहे हैं उस पर सब्र करो यहाँ तक कि ख़ुदा के फ़ैसले का हुक्म आ जाये। वह ख़ैरुल-हाकिमीन (तमाम हाकिमों में सबसे बेहतर हाकिम) है।

Maktab E Ashraf

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः यूनुस की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः हूद

सूरः हूद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 123 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

الٓرٰ قف كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ○ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ط اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ○ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ط وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ○ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ج وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

अलिफ़-लाम-रा (के मायने तो अल्लाह को मालूम हैं)। यह (क़ुरआन) एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें (दलीलों से) मज़बूत की गई हैं, (फिर उसी के साथ) साफ़-साफ़ (भी) बयान की गई हैं। (वह किताब ऐसी है कि) एक बाख़बर हकीम (यानी अल्लाह तआ़ला) की तरफ़ से (है)। (1) यह कि अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी की इबादत मत करो, मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ से (ईमान न लाने पर अ़ज़ाब से) डराने वाला, और (ईमान लाने पर सवाब की) ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ। (2) और यह (भी है) कि तुम लोग अपने गुनाह (शिर्क व कुफ़्र वग़ैरह) अपने रब से माफ़ कराओ, फिर (ईमान लाकर) उसकी तरफ़ (इबादत से) मुतवज्जह रहो, वह तुमको मुक़र्ररा वक़्त (यानी मौत के वक़्त) तक (दुनिया में) ख़ुशऐशी "यानी अच्छी पुर-सुकून ज़िन्दगी" देगा, और (आख़िरत में) हर ज़्यादा अ़मल करने वाले को ज़्यादा सवाब देगा। और अगर (ईमान लाने से) तुम लोग मुँह (ही) मोड़ते रहे तो मुझको (उस सूरत में) तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है। (3) तुम (सब) को अल्लाह ही के पास जाना है, और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। (4)

Maktab E Ashraf

मज़ामीन के एतिबार से क़ुरआन की तक़सीम

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने नबी करीम सल्ल. से सवाल किया कि आपको किस चीज़ ने बूढ़ा बना दिया? आपने फ़रमाया कि सूरः हूद, सूरः वाक़िआ, सूरः नबा और सूरः तकवीर ने। दूसरी रिवायत में है कि हूद और उसके साथ वाली सूरतों और सूरः हाक़्क़ा ने। सूरः ब-क़रह में हुरूफ़े हिज्जा पर बहस गुज़र चुकी है, उसके दोहराने की यहाँ ज़रूरत नहीं। इसी लिये 'अलिफ़-लाम-रा' पर रोशनी नहीं डाली जाती है। अल्लाह की आयतें मोहकम हैं। 'फ़ुस्सिलत' के मायने हैं कि सूरत व मायने के एतिबार से ये आयतें कामिल हैं। यह अल्लाह हकीम व ख़बीर की तरफ़ से नाज़िल शुदा हैं, वह अपने अक़्वाल (बातों) में हकीम है और मामलात के नतीजों में ख़बीर (ख़बर रखने वाला) है।

हुक्म दिया जाता है कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो। इससे पहले भी जिस किसी रसूल की तरफ़ हमने 'वही' भेजी तो यही कि मैं अकेला ख़ुदा हूँ, इबादत सिर्फ़ मेरी ही करो। हमने हर क़ौम में पैग़म्बर भेजा है कि इबादत सिर्फ़ ख़ुदा की करो और बुतों की परस्तिश (पूजा और इबादत) से बचो। मैं तुम्हें दोज़ख़ से डराता हूँ और जन्नत की ख़ुशख़बरी भी देता हूँ। सही हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने सफ़ा पहाड़ी पर चढ़कर क़ुरैश के क़बीलों को आवाज़ दी, थोड़ी ही देर में एक के बाद एक सब जमा हो गये। आपने फ़रमाया कि ऐ क़बीला-ए-क़ुरैश! अगर मैं तुम्हें ख़बर दूँ कि सुबह होते-होते दुश्मन तुम पर हमला करने के लिये आ पहुँचने वाला है तो मेरी बात तुम सच मानोगे कि नहीं? सबने एक ज़बान होकर कहा हमें तो कभी तजुर्बा नहीं हुआ कि तुमने कोई ग़लत बात कह दी हो। आपने फ़रमाया सुनो! मैं ख़ुदा के सख़्त अ़ज़ाब से तुम्हें आगाह कर देता हूँ कि वह तुम्हें आ पकड़ने वाला ही है। अब भी ख़ुदा से माफ़ी माँग लो, तौबा कर लो, वह ख़ुदा तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव करेगा और हर फ़ज़्ल वाले को अपने फ़ज़्ल व करम से नवाज़ेगा। वह दुनिया में तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करेगा और आख़िरत के जहान में भी, जो भी मर्द औरत बशर्तेकि ईमान ले आये हम उसे मरने के बाद पाकीज़ा ज़िन्दगी के साथ उठायेंगे।

रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत सअ़द रज़ि. से कहा कि अगर तुम किसी पर ख़र्च करो और तुम्हारी नीयत ख़ालिस अल्लाह के लिये है तो यक़ीनन उसका अज्र पाओगे। यहाँ तक कि जो अपनी औरत को खिलाते हो उसका भी अज्र तुम्हें मिलेगा। जिसने बुरा अ़मल किया उस पर एक गुनाह लिख दिया गया और जिसने एक नेकी की उस पर दस अज्र लिख दिये गये। अगर दुनिया में एक बुरे अ़मल की उसको सज़ा दी गई हो तो दस नेकियाँ उसके हक़ में बाक़ी रहती हैं और अगर दुनिया में उसे सज़ा न दी गई हो तो उसकी दस अच्छाईयों और नेकियों में से एक नेकी ख़त्म हो जाती है और उसकी नौ नेकियाँ उसी के हक़ में बाक़ी रहती हैं। फिर फ़रमाया कि वह शख़्स बड़े ख़सारे में रहा जिसकी इकाईयाँ (यानी बुराई और गुनाह) उसकी हर दहाई (यानी नेकी) पर ग़ालिब आ जाती हैं। अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो मुझे तुम पर क़ियामत के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है। यह उस शख़्स के लिये है जो अल्लाह के अहकाम से मुँह फेर लेता है, रसूलों को झुठलाता है, तो यक़ीनन क़ियामत के दिन अ़ज़ाब से दोचार होगा। तुम्हारा लौटना ख़ुदा की तरफ़ है, वह अपने औलिया (दोस्तों) पर एहसान करने और दुश्मनों को सज़ा देने पर क़ादिर है, और मख़्लूक़ के दोबारा लौटाने (ज़िन्दा करने) पर क़ादिर है। यह जबरदस्त तंबीह है जैसा कि इससे पहले तरग़ीब दी गई थी।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ۭ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○	याद रखो कि वे लोग अपने सीनों को दोहरा किए देते हैं, (और ऊपर से कपड़ा लपेट लेते हैं) ताकि (अपनी बातें) उससे (यानी ख़ुदा से) छुपा सकें। याद रखो कि वे लोग जिस वक़्त (दोहरे होकर) अपने कपड़े (अपने ऊपर) लपेटते हैं, वह (उस वक़्त भी) सब जानता है, जो कुछ चुपके-चुपके (बातें) करते हैं और जो कुछ (बातें) वे ज़ाहिर करते हैं, (क्योंकि) यक़ीनन वह (तो) दिलों के अन्दर की बातें जानता है। (5)

ख़ुदा तआ़ला सब कुछ जानता है

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि लोग खुले आसमान के सामने पेशाब-पाख़ाना करने और सोहबत (हमबिस्तरी) करने से बचते थे, तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि लोग खुले आसमान के नीचे ख़लवत करने और सोहबत करने से शर्म करते थे और अपने रुख़ फेर लेते थे। ख़ुसूसन उस वक़्त जबकि रात को बिस्तर ओढ़कर लेट जाते और अपने सर ढाँक लेते, उनका ख़्याल यह था कि अगर हम मकान में रहकर या कपड़ा ओढ़कर किसी बुरे काम का इर्तिकाब (जुर्म) करें तो ख़ुदा से अपने गुनाह को छुपा सकते हैं। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि वे रात के अंधेरे में सोते वक़्त कपड़ा ओढ़ लेते हैं लेकिन कोई छुपाये या ज़ाहिर करे अल्लाह तआ़ला वाक़िफ़ रहता है, यहाँ तक कि इनसान के दिल की नीयत और ज़मीर के इरादों और भेदों को भी जानता है। किताब "सबआ़ मुअ़ल्लक़ात" का मशहूर शायर ज़ुहैर कहता है:

فلان تکتمن اللہ مافی قلوبکم ☆ لیخفی ومھما یکتم اللہ یعلم

یؤخرفیوضع فی کتاب فیدخر ☆ لیوم الحساب اویعجل فینتقم

यानी तुम अपने दिलों की छुपी बात को ख़ुदा से छुपाने की कोशिश न करो, ख़ुदा ज़रूर जान लेता है। वह अ़मल जमा रहेगा और नामा-ए-आमाल में क़ियामत के दिन के लिये महफ़ूज़ रहेगा, वरना जल्दी सज़ा दी गई तो दुनिया ही में सज़ा दे दी जायेगी। इस जाहिलीयत के ज़माने के शायर ने भी इस आ़लम के बनाने वाले का एतिराफ़ किया है, और यह भी कि वह मामूली से मामूली चीज़ों से भी वाक़िफ़ है। दुनिया के बाद की ज़िन्दगी है, आमाल नामे हैं, क़ियामत का दिन है। कहते हैं कि किसी मुश्रिक ने नबी करीम सल्ल. के सामने से जाते वक़्त अपना मुँह मोड़ लिया और सर ढाँक लिया तो अल्लाह तआ़ला नें यह आयत उतारी। लेकिन इस बात को ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ मन्सूब करना ज़्यादा बेहतर है। यानी इससे मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला से छुपना चाहते हैं क्योंकि इसके बाद ही आता है:

اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ...... الخ

याद रखो कि लोग जिस वक़्त (दोहरे होकर) अपने कपड़े (अपने ऊपर) लपेट लेते हैं वह उस वक़्त भी सब जानता है।

अल्लाह का शुक्र है कि ग्यारहवें पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर बारह

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ○	और कोई (रिज़्क़ खाने वाला) जानवर रू-ए-ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं कि उसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो, और वह हर एक की ज़्यादा रहने की जगह को और चन्द दिन रहने की जगह को जानता है। सब चीज़ें किताबे मुबीन (यानी लौहे महफ़ूज़) में (भी दर्ज और मुक़र्रर) हैं। (6)

ख़ुदा तआला सब का राज़िक़ है

अल्लाह तआला सारी मख़्लूक़ात जो छोटी-बड़ी ख़ुश्की व तरी में हैं, उन सबके रिज़्क़ का ज़िम्मेदार है। वही उनके चलने-फिरने आने-जाने और ठहरने, रहने-सहने और मौत के स्थान और रहम (गर्भ) में रहने की जगह को जानता है। इब्ने अबी हातिम ने इस जगह मुफ़स्सिरीन के अक़वाल ज़िक्र किये हैं। वल्लाहु आलम

यह तमाम माजरा उस किताब में है जो अल्लाह तआला के पास है, लिखा हुआ है और वही किताब इसकी तफ़सील बयान करती है। जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

وَمَامِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَاطَآئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ مَافَرَّطْنَافِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ. الخ

कि रू-ए-ज़मीन पर चलने वाले जानवर और परिन्दे जो अपने परों से उड़ते हैं, सब के सब तुम्हारी जैसी ही उम्मते हैं। हमने किताब में कोई चीज़ लिखने से नहीं छोड़ी, ये सब के सब अपने रब की तरफ़ इकट्ठे होंगे। एक और जगह अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ.....الخ

यानी ग़ैब की कुन्जियाँ भी उसी के पास हैं, उसके सिवा कोई नहीं जानता। जो कुछ दरिया और जंगल में है उसे भी वही जानता है और जो पत्ता झड़ता है वह भी उसके इल्म में है। ज़मीन की अंधेरियों में कोई दाना और तरी व ख़ुश्की में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो उसके इल्म में न हो।

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ	और वह (अल्लाह) ऐसा है कि सब आसमान और ज़मीन को छह दिन (की मिक़्दार) में पैदा किया, और (उस वक़्त) उसका अ़र्श पानी पर था, ताकि तुमको आज़माए कि (देखें) तुममें अच्छा अ़मल करने वाला कौन है। और अगर आप (लोगों से) कहते हैं कि यक़ीनन तुम लोग मरने के बाद (क़ियामत के दिन दोबारा) ज़िन्दा किए जाओगे तो (उनमें)

जो लोग काफ़िर हैं वे (क़ुरआन के बारे में, जिसमें क़ियामत में ज़िन्दा होकर उठने की ख़बर है) कहते हैं कि यह तो बिल्कुल खुला जादू है। (7) और अगर थोड़े दिनों तक (मुराद दुनियावी ज़िन्दगी है) हम उनसे (वायदा किए गए) अ़ज़ाब को मुल्तवी "यानी टाले" रखते हैं, (कि इसमें हिक्मतें हैं) तो (इनकार व मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर) कहने लगते हैं कि उस (अ़ज़ाब) को कौनसी चीज़ रोक रही है? याद रखो जिस दिन (मुक़र्ररा वक़्त पर) वह (अ़ज़ाब) उन पर आ पड़ेगा तो फिर (किसी के) टाले न टलेगा, और जिस (अ़ज़ाब) के साथ यह हँसी-ठट्ठा कर रहे थे वह उनको आ घेरेगा। (8)	لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ○ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ○ ع

ख़ुदा तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि उसे हर चीज़ पर क़ुदरत है, आसमान व ज़मीन को उसने सिर्फ़ छह दिन में पैदा किया है। इससे पहले उसका अ़र्शे करीम पानी के ऊपर था। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ बनू तमीम! तुम ख़ुशख़बरी क़बूल करो, उन्होंने कहा ख़ुशख़बरियाँ तो आपने सुना दीं, अब कुछ दिलवाईये। आपने फ़रमाया ऐ यमन वालो! तुम क़बूल करो। उन्होंने कहा हाँ हमें क़बूल हैं। मख़्लूक़ की शुरूआ़त तो हमें सुनाईये कि किस तरह हुई? आपने फ़रमाया सबसे पहले अल्लाह था, उसका अ़र्श पानी के ऊपर था, उसने लौहे-महफ़ूज़ में हर चीज़ का तज़किरा लिखा। हदीस के रिवायत करने वाले हज़रत इमरान रज़ि. कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने इतना ही फ़रमाया था कि किसी ने आकर मुझे ख़बर दी कि तेरी ऊँटनी पैर खुलवाकर भाग गई। मैं उसे ढूँढने चला गया, फिर मुझे मालूम नहीं कि क्या बात हुई। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। एक रिवायत में है कि अल्लाह था और उससे पहले कुछ न था, उसका अ़र्श पानी पर था, उसने हर चीज़ का तज़किरा लिखा, फिर आसमान व ज़मीन की पैदाईश से पचास हज़ार साल पहले अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ात की तक़दीर लिखी, उसका अ़र्श पानी पर था।

सही बुख़ारी में इस आयत की तफ़सीर के मौक़े पर एक हदीसे क़ुदसी लाये हैं कि ऐ इनसान! तू मेरी राह में ख़र्च कर मैं तुझे और दूँगा। और फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला का हाथ भरा हुआ है, दिन रात का ख़र्च उसमें कोई कमी नहीं लाता, ख़्याल तो करो कि आसमान व ज़मीन की पैदाईश से अब तक कितना ख़र्च किया होगा, लेकिन फिर भी उसके दाहिने हाथ में जो था वह कम नहीं होता, उसका अ़र्श पानी पर था, उसके हाथ में मीज़ान (तराज़ू) है, झुकाता है और ऊँची करता है। मुस्नद में है, अबू रज़ीन लक़ीत बिन आ़मिर बिन मुन्तफ़िक़ उक़ैली ने हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया कि मख़्लूक़ के पैदा करने से पहले हमारा परवर्दिगार कहाँ था? आपने फ़रमाया अ़मा (बादल) में, नीचे भी हवा और ऊपर भी हवा, फिर अ़र्श को उसके बाद पैदा किया। यह रिवायत तिर्मिज़ी की किताबे तफ़सीर में भी है। सुनन इब्ने माजा में भी है।

इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन कहते हैं।

मुजाहिद रह. का क़ौल है कि किसी चीज़ को पैदा करे इससे पहले अ़र्शे ख़ुदावन्दी पानी पर था। वहब, ज़मरा, क़तादा, इब्ने जरीर वग़ैरह भी यही कहते हैं। क़तादा कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला बतलाता है कि आसमान व ज़मीन की पैदाईश से पहले मख़्लूक़ की इब्तिदा किस तरह हुई। रबीअ़ बिन अनस कहते हैं कि उसका अ़र्श पानी पर था, जब आसमान व ज़मीन को पैदा किया तो उस पानी के दो हिस्से कर दिये, आधा अ़र्श के नीचे, यही 'बहरे मसजूर' है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि बुलन्दी के सबब अ़र्श को अ़र्श कहा जाता है। सअ़द ताई फ़रमाते हैं कि अ़र्श सुर्ख़ याक़ूत का है। मुहम्मद बिन इस्हाक़ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला इसी तरह था जिस तरह उसने अपनी पाक ज़ात का वस्फ़ (ख़ूबी और सिफ़त) बयान किया, इसलिये कि कुछ न था सिर्फ़ पानी था, उस पर अ़र्श था। अ़र्श पर ख़ुदा तआ़ला था। वह जो चाहे कर गुज़रने वाला है।

नोटः यहाँ यह मतलब नहीं कि अ़र्श कोई ऐसा मक़ाम या तख़्त है जिस पर अल्लाह तआ़ला रहता या बैठता है। नहीं! बल्कि यह अल्लाह की मख़्लूक़ में से एक अ़ज़ीमुश्शान चीज़ है जिसको फ़रिश्ते संभाले हुए हैं, और अल्लाह का उसके साथ अपनी शान के मुताबिक़ ताल्लुक़ है। अल्लाह तआ़ला जैसे हमारी तरह के जिस्मानी अंगों से पाक है इसी तरह हालतों यानी उठने-बैठने वग़ैरह से पाक है। बस वह अपनी पाक और बुलन्द शान के मुताबिक़ अ़र्श पर क़ायम है जिसका तसव्वुर व अन्दाज़ा इनसानी अ़क़्ल से बाहर की चीज़ है। इसमें ज़्यादा दिमाग़ चलाना ठीक नहीं, इसलिये कि जो चीज़ अ़क़्ल से बाहर है उसको अ़क़्ल कैसे पा सकती है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इस आयत के बारे में सवाल हुआ कि पानी किस चीज़ पर था? आपने फ़रमाया हवा की पीठ पर। फिर फ़रमाता है कि आसमान व ज़मीन की पैदाईश तुम्हारे नफ़े के लिये है, और तुम इसलिये हो कि उसी एक ख़ालिक़ की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न बनाओ। याद रखो कि तुम बेकार पैदा नहीं किये गये, आसमान व ज़मीन और इनके दरमियान की चीज़ें बेकार और बिना मक़सद के पैदा नहीं कीं। यह गुमान तो काफ़िरों का है, और काफ़िरों के लिये आग का गड्ढा है। एक और आयत में है:

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا......الخ

क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ लौटाये न जाओगे?

अल्लाह जो सच्चा मालिक है वही हक़ है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह सम्मानित अ़र्श का रब है। एक और आयत में है कि इनसानों और जिन्नों को मैंने सिर्फ़ अपनी इबादत के लिये ही पैदा किया है। वह तुम्हें आज़मा रहा है कि तुममें से अच्छे अ़मल वाले कौन हैं। यह नहीं फ़रमाया कि ज़्यादा अ़मल वाले कौन हैं, इसलिये कि अच्छा अ़मल वह होता है जिसमें ख़ुलूस (यानी सिर्फ़ अल्लाह के लिये किया) हो, और शरीअ़ते मुहम्मदी की ताबेदारी हो। इन दोनों बातों में से अगर एक भी न हो तो वह अ़मल बेकार और ग़ारत है। फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! अगर आप उन्हें कहें कि तुम मरने के बाद भी जीने वाले हो, जिस ख़ुदा ने तुम्हें पहली बार पैदा किया है वह दोबारा भी पैदा करेगा, तो साफ़ कह देंगे कि हम इसे नहीं मानते, हालाँकि इसके क़ायल भी हैं कि ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला अल्लाह ही है। ज़ाहिर है कि पहली बार में (जबकि कोई नमूना भी सामने न था) जिस पर भारी न गुज़रा उस पर दोबारा की पैदाईश

Maktab E Ashraf

कैसे भारी और मुश्किल गुज़रेगी? यह तो पहली बार के मुक़ाबले में बहुत ही आसान है। अल्लाह का फ़रमान है:

وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ.

उसी ने पहली बार शुरू में पैदा किया वही दोबारा पैदा करेगा, और यह तो उसपर और भी आसान है।

एक और आयत में है कि तुम सब का पैदा करना और मारकर ज़िन्दा कर देना मुझ पर ऐसा ही है जैसा एक का। लेकिन ये लोग इसे नहीं मानते थे और इसे खुले जादू से ताबीर करते थे। कुफ़्र व दुश्मनी से इस क़ौल को जादू का असर ख़्याल करने लगते थे। फिर फ़रमाता है कि अगर हम अ़ज़ाब व पकड़ को इनसे कुछ निर्धारित मुद्दत के लिये पीछे हटा दें तो ये उसे न आने वाला जानकर जल्दी मचाने लगते हैं, कि अ़ज़ाब हमसे लेट क्यों हो गया? इनके दिल में कुफ़्र व शिर्क इस तरह बैठ गया है कि उससे छुटकारा ही नहीं मिलता।

'उम्मत' का लफ़्ज़ क़ुरआन व हदीस में कई एक मायने में इस्तेमाल किया गया है, इससे मुराद मुद्दत भी है, इस आयत के और आयत 'वद्कुर् बअ्-द उम्मतिन्' जो सूरः यूसुफ़ में है के यही मायने हैं। इमाम व मुक़्तदी के मायने में भी यह लफ़्ज़ आया है जैसे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बारे में 'उम्मतन् क़ानितल् लिल्लाहि हनीफ़ा' आया है। मिल्लत और दीन के बारे में भी यह लफ़्ज़ आता है, जैसे मुश्रिकों का क़ौल है 'इन्ना वजद्ना आबा-अना अ़ला उम्मतिन्' है। और जमाअ़त के मायने में भी आता है जैसे 'व-ज-द अ़लैहि उम्मतन्' वाली आयत में, और आयत 'व लक़द् बअ़स्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिन्' में और आयत 'व लिकुल्लि उम्मतिर्-रसूलुन्' में।

इन आयतों में उम्मत से मुराद काफ़िर मोमिन सब उम्मती हैं, जैसे मुस्लिम की हदीस में है- उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि इस उम्मत का जो यहूदी ईसाई मेरा नाम सुने और मुझ पर ईमान न लाये वह जहन्नमी है, हाँ ताबेदार उम्मत वह है जो रसूलों को माने जैसे 'कुन्तुम ख़ै-र उम्मतिन्' वाली आयत में। सही हदीस में है कि मैं कहूँगा 'उम्मती उम्मती'। इसी तरह उम्मत का लफ़्ज़ फ़िर्क़े और गिरोह के लिये भी इस्तेमाल होता है, जैसे आयत 'व मिन् क़ौमि मूसा उम्मतुन्' में है और जैसे आयत 'मिन् अह्लिल् किताबि उम्मतुन क़ाईमतुन्' में है।

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ○ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّىْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ○ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ○	और अगर हम इनसान को अपनी मेहरबानी का मज़ा चखाकर उससे छीन लेते हैं तो वह नाउम्मीद और नाशुक्रा हो जाता है। (9) और अगर उसको किसी तकलीफ़ के बाद जो कि उस पर आ पड़ी हो किसी नेमत का मज़ा चखा दें, तो कहने लगता है कि मेरा सब दुख-दर्द रुख़्सत हुआ, (अब कभी न होगा) पस वह इतराने लगता है, शैख़ी बघारने लगता है। (10) मगर जो लोग मुस्तक़िल-मिज़ाज हैं और नेक काम करते हैं, (वे ऐसे नहीं होते) ऐसे लोगों के लिए बड़ी मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है। (11)

Maktab E Ashraf

इनसान नाशुक्री करता और इतराता है

कामिल ईमान वालों के अलावा उमूमन लोगों में जो बुराईयाँ हैं उनका बयान हो रहा है कि राहत के बाद की सख़्ती पर मायूस और बिल्कुल नाउम्मीद हो जाते हैं। ख़ुदा से बदगुमानी करके आईन्दा के लिये भलाई को भूल बैठते हैं, गोया कि न कभी इससे पहले आराम उठाया था न इसके बाद किसी राहत की उम्मीद है। यही हाल इसके ख़िलाफ़ (विपरीत हालत में) भी है कि अगर सख़्ती के बाद आसानी हो गई तो कहने लगते हैं कि बस अब बुरा वक़्त टल गया, अपनी हालत पर और अपने पास की चीज़ों पर मस्त व बेफ़िक्र हो जाते हैं, दूसरों के मुक़ाबले में फ़ख़्र व नाज़ करने लगते हैं, अकड़-फूं में पड़ जाते हैं और आगे की सख़्ती से बिल्कुल बेफ़िक्र हो जाते हैं। हाँ ईमान वाले इस बुरी ख़स्लत से महफ़ूज़ होते हैं, वे दुख-दर्द में सब्र करते हैं, राहत व आराम में ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी करते हैं, ये सब्र पर मग़फ़िरत और नेकी पर सवाब पाते हैं। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, कि मोमिन को कोई सख़्ती कोई मुसीबत, कोई दुख, कोई ग़म ऐसा नहीं पहुँचता जिसकी वजह से अल्लाह तआ़ला उसकी ख़तायें माफ़ न फ़रमाता हो, यहाँ तक कि काँटा चुभने पर भी। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की एक और हदीस में है कि मोमिन के लिये ख़ुदा तआ़ला का हर फ़ैसला सरासर बेहतर ही बेहतर होता है। यह राहत पाकर शुक्र करता है और भलाई समेटता है, तकलीफ़ उठाकर सब्र करता है, नेकी पाता है, यह हाल मोमिन के सिवा और किसी का नहीं होता। इसी का बयान सूरः अ़सर में है, यानी अ़सर के वक़्त की क़सम तमाम इनसान नुक़सान में हैं सिवाय उनके जो ईमान लायें और साथ ही नेकियाँ भी करें, और एक दूसरे को दीने हक़ की और सब्र की हिदायत करते हैं, यही बयान इस आयत में है:

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا......الخ

कि इनसान कम-हिम्मत पैदा हुआ है। (सूरः मआ़रिज आयत 19)

फ़लअ़ल्लक तारिकुम् बअ़ज़ मा यूहा इलैक — فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوْحٰى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ○ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ	सो शायद आप (तंग होकर) उन (अहकाम) में से जो कि आपके पास 'वही' के ज़रिये से भेजे जाते हैं, बाज़ को (कि वह तब्लीग़ है) छोड़ देना चाहते हैं, और आपका दिल इस बात से तंग होता है कि वे कहते हैं कि (अगर यह नबी हैं तो) इन पर कोई ख़ज़ाना क्यों नाज़िल नहीं हुआ, या उनके साथ कोई फ़रिश्ता (जो हमसे भी बात-चीत करता) क्यों नहीं आया? आप तो (उन कुफ़्फ़ार के एतिबार से) सिर्फ़ डराने वाले हैं, और हर चीज़ पर पूरा इख़्तियार रखने वाला (तो) अल्लाह ही है। (12) क्या (उसके बारे में यूँ) कहते हैं (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) कि आपने उसको (अपनी तरफ़ से) ख़ुद बना लिया है? आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि अगर

(यह मेरा बनाया हुआ है) तो (अच्छा) तुम भी इस जैसी दस सूरतें (जो तुम्हारी) बनाई हुई (हों) ले आओ, और (अपनी मदद के लिए) जिन-जिन को अल्लाह के अलावा बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। (13) फिर ये (काफ़िर लोग) अगर तुम लोगों का कहना (कि इसके जैसा बना लाओ) न कर सकें तो तुम (उनसे कह दो कि अब तो) यक़ीन कर लो कि (यह क़ुरआन) अल्लाह ही के इल्म (और क़ुदरत) से उतरा है, और यह भी (यक़ीन कर लो) कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं। तो फिर अब भी मुसलमान होते हो (या नहीं)? (14)	اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ○ فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ○

आप अपना काम किये जायें

काफ़िर लोगों की ज़बान पर जो चढ़ते वही ताने रसूलुल्लाह सल्ल. पर तोड़ते। अल्लाह तआ़ला अपने सच्चे पैग़म्बर सल्ल. को दिलासा और तसल्ली देता है कि आप न इस काम में सुस्ती करें न दिल छोटा करें, यह तो उनका शेवा (तरीक़ा) है। कभी वे कहते अगर यह रसूल है तो खाने पीने का मोहताज क्यों है? बाज़ारों में क्यों आता जाता है? इसके साथ में कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरा? इसे कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं दिया गया? इसके खाने को कोई ख़ास बाग़ क्यों नहीं बनाया गया? मुसलमानों को ताना देते कि तुम तो उसके पीछे हो लिये जिस पर जादू कर दिया गया है। पस अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ पैग़म्बर! आप अपने दिल को रन्जीदा न करें, ग़म न उठायें, अपने काम से न रुकें, उन्हें हक़ की पुकार सुनाने में कोई कोताही न करें, दिन रात अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहें। हमें मालूम है कि उनकी तकलीफ़देह बातें आपको बुरी लगती हैं, आप तवज्जोह ही न कीजिये, ऐसा न हो कि आप कोई बात छोड़ दें, या तंग-दिल होकर बैठ जायें कि ये आवाज़ें कसते हैं, फब्तियाँ कसते हैं। अपने से पहले रसूलों को देखिये सब झुठलाये गये, सताये गये और साबिर व साबित-क़दम रहे, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला की मदद आ पहुँची।

फिर क़ुरआन का मोजिज़ा बयान फ़रमाया कि इस जैसा क़ुरआन लाना तो कहाँ इस जैसी दस सूरतें बल्कि एक सूरत भी सारी दुनिया मिलकर भी नहीं ला सकती, इसलिये कि यह ख़ुदा का कलाम है, जैसे उसकी ज़ात मिसाल से पाक है ऐसे ही उसकी सिफ़तें भी बेमिसाल हैं। नामुम्किन है कि उसके जैसा मख़्लूक़ का कलाम हो जाये, अल्लाह की ज़ात इससे बुलन्द व बाला, पाक और बरी है। माबूद और रब सिर्फ़ वही है, जब तुमसे यह नहीं हो सकता और अब तक नहीं हो सका तो यक़ीन कर लो कि तुम इसके बनाने से आ़जिज़ हो। दर असल यह ख़ुदा का कलाम है और उसी की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। उसका इल्म, उसके हुक्म अहकाम, उसकी रोक-टोक इसमें हैं और साथ ही मान लो कि माबूदे बरहक़ सिर्फ़ वही है। बस आओ इस्लाम के झण्डे तले खड़े हो जाओ।

Maktab E Ashraf

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝

जो शख़्स (अपने अच्छे आमाल से) महज़ दुनियावी ज़िन्दगी (के फ़ायदों) और इसकी रौनक़ (को हासिल करना) चाहता है, तो हम उन लोगों के (उन) आमाल (का बदला) उनको इस (दुनिया) ही में पूरे तौर से भुगता देते हैं, और उनके लिए (दुनिया) में कुछ कमी नहीं होती। (15) ये ऐसे लोग हैं कि उनके लिए आख़िरत में सिवाय दोज़ख़ के और कुछ (सवाब वग़ैरह) नहीं, और उन्होंने इस (दुनिया) में जो कुछ किया था वह (आख़िरत में सब-का-सब) नाकारा (साबित) होगा और (वास्तव में तो) जो कुछ कर रहे हैं वह अब भी बेअसर है। (16)

दुनिया की तलब करने वाले आख़िरत से मेहरूम हैं

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि रियाकारों की नेकियों का बदला सब कुछ इसी दुनिया में मिल जाता है, ज़रा सी भी कमी नहीं होती। पस जो शख़्स दुनिया में दिखलावे के लिये नमाज़ पढ़े या रोज़ा रखे या तहज्जुद-गुज़ारी करे उसका अज्र उसे दुनिया में ही मिल जाता है। आख़िरत में वह ख़ाली हाथ और अमल से बिल्कुल कोरा उठता है। हज़रत अनस रज़ि. वग़ैरह का बयान है कि यह आयत यहूद व ईसाईयों के हक़ में उतरी है, और मुजाहिद कहते हैं कि रियाकारों (दिखावे के लिये अमल करने वालों) के बारे में उतरी है। ग़र्ज़ जिसका जो इरादा हो उसी के मुताबिक़ उससे मामला होता है। दुनिया-तलबी के लिये जो आमाल हों वे आख़िरत में कारामद नहीं हो सकते, मोमिन की नीयत और मक़सद चूँकि आख़िरत-तलबी ही होता है अल्लाह तआ़ला उसे आख़िरत में उसके आमाल का बेहतरीन बदला अता फ़रमाता है, और दुनिया में भी उसे उसकी नेकियाँ काम आती हैं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यही मज़मून आया है। क़ुरआने करीम की आयत 'मन् का-न युरीदुल् आजि-ल-त अज्जल्ना लहू फ़ीहा.......' (सूरः बनी इस्राईल आयत 18) में भी इसी का तफ़सीली बयान है कि दुनिया-तलब (यानी दुनिया के तालिब और लालची) लोगों में से जिसे हम जिस क़द्र चाहें दे देते हैं, फिर उसका ठिकाना जहन्नम होता है, जहाँ वह ज़लील व रुस्वा होकर दाख़िल होता है। हाँ जिसकी ख़्वाहिश आख़िरत की हो और बिल्कुल उसी के मुताबिक़ उसका अमल भी हो, और हो भी वह ईमान वाला तो ऐसे लोगों की कोशिश की क़द्रदानी की जाती है। उन्हें और इन्हें हर एक को हम तेरे रब की अता से बढ़ाते रहते हैं, तेरे परवर्दिगार का इनाम किसी से रुका हुआ नहीं। तो आप देख लें कि किस तरह हमने एक को एक पर फ़ज़ीलत बख़्श रखी है, आख़िरत दर्जों और फ़ज़ीलत के एतिबार से बहुत ही बड़ी और ज़बरदस्त चीज़ है। एक और आयत में इरशाद है:

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ .... الخ

यानी जिसका इरादा आख़िरत की खेती का हो हम ख़ुद उसमें उसके लिये बरकत अता फ़रमाते हैं,

और जिसका इरादा दुनिया की खेती का हो हम उसे उसमें से कुछ दे दें, लेकिन आख़िरत में वह बेनसीब रह जाता है (यानी वहाँ उसको कुछ नहीं मिलेगा)।

Maktub E Ashraf

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ
شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا
وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ
يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ
فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

क्या (क़ुरआन का इनकार करने वाला ऐसे शख़्स की बराबरी कर सकता है) जो क़ुरआन पर (क़ायम हो?) जो कि उसके रब की तरफ़ से (आया) है, और इस (क़ुरआन) के साथ एक गवाह तो इसी में (मौजूद) है, और एक इससे पहले (यानी) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की किताब है, जो (अहकाम बतलाने के एतिबार से) इमाम है और रहमत है। ऐसे लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान रखते हैं। और (दूसरे) फ़िर्क़ों में से जो शख़्स इस (क़ुरआन) का इनकार करेगा तो दोज़ख़ उसके वायदे की जगह है, (काफ़िर का यही हाल है) सो (ऐ मुख़ातब!) तुम क़ुरआन की तरफ़ से शक में मत पड़ना, इसमें कोई शक व शुब्हा नहीं कि वह सच्ची (किताब) है, तुम्हारे रब के पास से (आई है) लेकिन (बावजूद इन दलीलों के ग़ज़ब है कि) बहुत-से आदमी ईमान नहीं लाते। (17)

मोमिनों की ख़ुसूसियात

उन मोमिनों का वस्फ़ (ख़ूबी और सिफ़त) बयान हो रहा है जो फ़ितरत पर क़ायम हैं, जो ख़ुदा को दिल से एक और बेमिस्ल मानते हैं। जैसा कि अल्लाह का हुक्म है:

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا....... الخ

कि अपना मुँह दीने हनीफ़ पर क़ायम कर दे, अल्लाह की फ़ितरत जिस पर इनसानी फ़ितरत क़ायम की है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है, फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी (आग को पूजने वाला) बना लेते हैं, जैसे कि जानवरों के बच्चे सही सालिम पैदा होते हैं फिर लोग उनके कान काट डालते हैं। मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे क़ुदसी में है कि मैंने अपने तमाम बन्दों को तौहीद (अल्लाह पर ईमान वाला) पैदा किया। लेकिन फिर शैतान आकर उन्हें उनके दीन से बहकाता है और मेरी हलाल की हुई चीज़ें उन पर हराम कर देता है। उन्हें कहता है कि मेरे साथ उन्हें शरीक करें जिनकी कोई दलील नहीं।

मुस्नद और सुनन में है कि हर बच्चा इसी मिल्लत (यानी इस्लाम) पर पैदा होता है, यहाँ तक कि

उसकी ज़बान खुले......। पस मोमिन ख़ुदा की बनाई हुई फ़ितरत पर ही बाक़ी रहता है। एक तो फ़ितरत उसकी सही सालिम होती है फिर उसके पास ख़ुदाई शाहिद आता है यानी पैग़म्बर के ज़रिये अल्लाह की शरीअ़त और क़ानून पहुँचता है, जो शरीअ़त हज़रत मुहम्मद सल्ल. की शरीअ़त के साथ ख़त्म हुई। पस शाहिद से मुराद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं, हज़रत मुहम्मद सल्ल. हैं। ख़ुदा की रिसालत पहले हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम लाये और आपके वास्ते से हज़रत मुहम्मद सल्ल.। एक क़ौल यह भी है कि वह अ़ली रज़ि. हैं, लेकिन वह क़ौल कमज़ोर है, इसका कोई क़ायल साबित ही नहीं। ठीक बात पहली ही है।

पस मोमिन की फ़ितरत ख़ुदा की 'वही' से मिल जाती है। संक्षिप तौर पर उसे पहले ही से यक़ीन होता है, फिर शरीअ़त की तफ़सीलात को मान लेता है, उसकी फ़ितरत एक-एक मसले की तस्दीक़ करती जाती है। पस सही फ़ितरत, उसके साथ क़ुरआन की तालीम जिसे हज़रत जिब्राईल ने ख़ुदा के नबी को पहुँचाया और आपने अपनी उम्मत को फिर इससे पहले की एक और ताईद भी मौजूद है, हज़रत मूसा की किताब यानी तौरात जिसे ख़ुदा ने उस ज़माने की उम्मत के लिये पेशवाई के क़ाबिल बनाकर भेजा था, और जो ख़ुदा की तरफ़ से रहमत थी, उस पर जिनका पूरा ईमान है वे लाज़िमी तौर पर इस नबी और इस किताब पर भी ईमान लाते हैं, क्योंकि उस किताब ने इस किताब पर ईमान लाने की रहनुमाई की है। पस ये लोग इस किताब पर भी ईमान लाते हैं।

फिर पूरे क़ुरआन को या इसके किसी हिस्से को न मानने वालों की सज़ा का बयान फ़रमाया कि दुनिया वालों में से जो गिरोह, जो फ़िर्क़ा इसे न माने चाहे यहूदी हो या ईसाई, कहीं का हो, कोई हो, किसी रंगत और शक्ल व सूरत का हो, क़ुरआन पहुँचा और उसने इसको न माना तो वह जहन्नमी है। जैसे रब्बुल-आ़लमीन ने अपने नबी की ज़बानी इसी क़ुरआने करीम में फ़रमाया है:

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ.....

कि मैं इससे तुम्हें भी आगाह कर रहा हूँ और उन्हें भी जिन्हें यह पहुँच जाये।

एक और आयत में है:

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا.

लोगों में ऐलान कर दो कि ऐ इनसानो! मैं तुम सबकी तरफ़ ख़ुदा का पैग़म्बर हूँ।

सही मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि इस उम्मत में से जो भी मुझे सुन ले और फिर मुझ पर ईमान न लाये वह जहन्नमी है। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं मैं जो सही हदीस सुनता हूँ उसकी तस्दीक़ किताबुल्लाह (यानी क़ुरआन) में ज़रूर पाता हूँ। उपरोक्त हदीस सुनकर मैं इस तलाश में लगा कि इसकी तस्दीक़ क़ुरआन की किस आयत से होती है तो मुझे यह आयत मिली। पस तमाम दीन वाले इससे मुराद हैं। फिर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि इस क़ुरआन के अल्लाह की तरफ़ से पूर्ण रूप से हक़ होने में तुझे कोई शक व शुब्हा न करना चाहिये (यहाँ नबी पाक सल्ल. मुराद नहीं बल्कि वे लोग मुराद हैं जो शक व शुब्हा करते हैं), जैसे इरशाद है कि इस किताब के रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से उतरी हुई होने में कोई शक व शुब्हा नहीं। एक और जगह है:

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ.

इस किताब में कोई शक नहीं।

Maktab E Ashraf

फिर इरशाद है कि अक्सर लोग ईमान से कोरे (ख़ाली) होते हैं। जैसे फ़रमान है:

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ.

यानी अगरचे तेरी ख़्वाहिश हो लेकिन यक़ीन कर ले कि अक्सर (यानी ज़्यादातर) लोग मोमिन नहीं होंगे। एक और आयत में है:

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

अगर तू दुनिया वालों की अक्सरियत की पैरवी करेगा तो वे तुझे राहे ख़ुदा से भटका देंगे। एक और आयत में है:

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ.

यानी उन पर इब्लीस (शैतान) ने अपना गुमान सच कर दिखाया और सिवाय मोमिनों की एक मुख़्तसर (थोड़ी सी) जमाअत के बाक़ी सब के सब उसी के पीछे लग गये।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ط اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ج اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ط وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ م يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ط مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

और ऐसे शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है जो अल्लाह तआ़ला पर झूठ बाँधे? ऐसे लोग (क़ियामत के दिन) अपने रब के सामने पेश किए जाएँगे और (आमाल के) गवाह (फ़रिश्ते सबके सामने यूँ) कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झूठी बातें लगाई थीं, (सब) सुन लो कि ऐसे ज़ालिमों पर ख़ुदा की (ज़्यादा) लानत है। (18) जो कि (अपने कुफ़्र व ज़ुल्म के साथ) दूसरों को भी ख़ुदा की राह (यानी दीन) से रोकते थे, और उस (राह) में टेढ़ (और शुब्हात) निकालने की तलाश (और फ़िक्र) में रहा करते थे, (ताकि दूसरों को गुमराह करें) और वे आख़िरत के भी इनकारी थे। (19) ये लोग (तमाम) ज़मीन (के तख़्ते) पर (भी) ख़ुदा तआ़ला को आजिज़ नहीं कर सकते थे, और न उनका ख़ुदा के सिवा कोई मददगार हुआ, (कि गिरफ़्तारी के बाद छुड़ा लेता), ऐसों को (औरों से) दोगुनी सज़ा होगी, ये लोग न सुन सकते थे और न (हद से बढ़ी हुई दुश्मनी की वजह से राहे हक़ को) देखते थे। (20) ये वे लोग हैं जो अपने आपको बरबाद कर बैठे, और जो (माबूद) उन्होंने घड़ रखे थे (आज)

उनसे सब ग़ायब (और गुम) हो गए, (कोई भी तो काम न आया)। (21) पस लाज़िमी बात है कि आख़िरत में ज़्यादा ख़सारा "यानी घाटा" पाने वाले यही लोग होंगे। (22)	يَفْتَرُوْنَ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝

इससे बढ़कर कौनसा ज़ुल्म होगा

जो लोग ख़ुदा पर बोहतान बाँध लें उनका अन्जाम और क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने उनकी रुस्वाई का बयान हो रहा है। मुस्नद अहमद में है, सफ़वान बिन मुहरिज़ कहते हैं कि मैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का हाथ थामे हुए था कि एक शख़्स आपके पास आया और पूछने लगा कि आपने रसूलुल्लाह सल्ल. से क़ियामत के दिन की सरगोशी के बारे में क्या सुना है? आपने फ़रमाया मैंने हुज़ूर सल्ल. से सुना है कि अल्लाह तआ़ला मोमिन को अपने से क़रीब करेगा, यहाँ तक कि अपना बाज़ू उस पर रख देगा और उसे लोगों की निगाहों से छुपा देगा और उससे उसके गुनाहों का इक़रार करायेगा कि क्या तुझे अपना फ़ुलाँ गुनाह याद है? और फ़ुलाँ भी? और फ़ुलाँ भी? यह इक़रार करता जायेगा यहाँ तक कि समझ लेगा कि बस अब हलाक हुआ, उस वक़्त अरहमुर्राहिमीन फ़रमायेगा कि मेरे बन्दे मैं दुनिया में इन पर पर्दा डालता रहा, सुन आज भी मैं इन्हें बख़्शता हूँ। फिर उसकी नेकियों का आमाल-नामा उसे दे दिया जायेगा और कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ों पर नौ गवाह पेश होंगे जो कहेंगे कि यही वे हैं जो अल्लाह पर झूठ बोलते थे। याद रहे कि उन ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत है....।

यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। ये लोग हक़ की पैरवी से, हिदायत के रास्ते से और जन्नत से औरों को रोकते रहे और अपना तरीक़ा टेढ़ा तिरछा ही तलाश करते रहे, साथ ही क़ियामत और आख़िरत के दिन के पहले भी मुन्किर ही रहे, इसे मानकर ही न दिया। याद रहे कि ये ख़ुदा के मातहत हैं, वह इनसे हर इन्तिक़ाम लेने पर क़ादिर है। अगर चाहे तो आख़िरत से पहले दुनिया ही में पकड़ ले, लेकिन उसकी तरफ़ से इन्हें थोड़ी सी ढील मिल गई है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को मोहलत देता है, आख़िरकार जब पकड़ता है तब फिर छोड़ता ही नहीं। उनकी सज़ायें बढ़ती ही चली जायेंगी, इसलिये कि ख़ुदा की दी हुई क़ुव्वतों से उन्होंने काम न लिया, हक़ के सुनने से कानों को बहरा रखा, हक़ को देखने से आँखों को अन्धा रखा। जहन्नम में जाते वक़्त ख़ुद ही कहेंगे किः

لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ.

यानी अगर हम सुनते होते, अ़क़्ल रखते होते तो आज़ दोज़ख़ी न बनते।

यह फ़रमान आयतः

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ.

(सूरः नहल आयत 88) में है कि काफ़िरों को राहे ख़ुदा से रोकने वालों को अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ते चले जायेंगे। हर-हर नाफ़रमानी हर-हर बुराई के काम पर सज़ा भुगतेंगे। पस क़ौल यही है कि आख़िरत की निस्बत के एतिबार से काफ़िर लोग भी शरीअ़त की बातों के मुकल्लफ़ हैं। ये यही हैं जिन्होंने अपने आपको

Maktab E Ashraf

नुक़सान पहुँचाया और ख़ुद अपने आपको जहन्नमी बनाया। जहाँ का अ़ज़ाब ज़रा सी देर भी हल्का नहीं होगा। आग के शोले कम होने तो कहाँ और तेज़ होते जायेंगे।

जिन्हें उन्होंने गढ़ (ख़ुद तैयार किया और बना) लिया है यानी बुत और ख़ुदा के शरीक वग़ैरह वे आज इनके कुछ काम न आयेंगे, नज़र भी न पड़ेंगे, बल्कि और नुक़सान पहुँचायेंगे। वे तो इनके दुश्मन हो जायेंगे और इनके शिर्क से साफ़ इनकार कर देंगे। अगरचे ये उन्हें इ़ज़्ज़त का सबब समझते हैं, लेकिन वास्तव में वे इनके लिये ज़िल्लत का सबब हैं। खुले तौर पर इस बात का क़ियामत के दिन इनकार कर देंगे कि इन मुश्रिकों ने उनकी परस्तिश (पूजा) की। यही इरशाद अल्लाह के दोस्त हज़रत इब्राहीम का अपनी क़ौम से था कि इन बुतों से अपने दुनियावी ताल्लुक़ात को तुम जोड़े रखो लेकिन क़ियामत के दिन एक दूसरे का इनकार कर जायेगा, एक दूसरे पर लानत करने लगेगा, तुम सब का ठिकाना जहन्नम होगा और कोई किसी को कुछ मदद न पहुँचायेगा। यही मज़मून आयतः

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا .... الخ

(सूरः ब-क़रह आयत 166) में है, यानी उस वक़्त पेशवा लोग अपने मुरीदों से पल्ला झाड़ लेंगे, अल्लाह का अ़ज़ाब आँखों से देख लेंगे और आपसी ताल्लुक़ात सब ख़त्म हो जायेंगे। इसी क़िस्म की और भी बहुत सी आयतें हैं, वे भी इनकी हलाकत और नुक़सान की ख़बर देती हैं। यक़ीनन यही लोग क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा नुक़सान उठायेंगे, जहन्नम के गड्ढ़े जन्नत के दर्जों के बदले इन्होंने ले लिये। ख़ुदा की नेमतों के बदले जहन्नम की आग क़बूल की, मीठे ठंडे ख़ुशगवार जन्नती पानी के बदले जहन्नम का खौलता हुआ गर्म आग जैसा पानी इन्हें मिला, हूरे-ऐन के बदले लहू पीप, और बुलन्द व ऊँचे महलों के बदले दोज़ख़ के तंग मक़ामात इन्होंने लिये। ख़ुदा-ए-रहमान की नज़दीकी और दीदार के बदले उसका ग़ज़ब और सज़ा इन्हें मिली, बेशक यहाँ ये सख़्त टोटे (नुक़सान और घाटे) में रहे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ ع

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे-अच्छे काम किए और दिल से अपने रब की तरफ़ झुके, ऐसे लोग जन्नत वाले हैं, और वे उसमें हमेशा रहा करेंगे। (23) दोनों फ़रीक़ (जिनका ज़िक्र हुआ यानी मोमिन व काफ़िर) की हालत ऐसी है जैसे एक शख़्स हो अन्धा भी और बहरा भी, और एक शख़्स हो कि देखता भी हो और सुनता भी हो, (जिसको समझना बहुत आसान है)। क्या ये दोनों शख़्स हालत में बराबर हैं? क्या तुम (इस फ़र्क़ को) समझते नहीं? (24)

एक मिसाल

बुरे लोगों के ज़िक्र के बाद अब भले और नेक लोगों का बयान हो रहा है, जिनके दिल ईमान वाले,

जिनके बदन के अंग फ़रमाँबरदारी करने वाले थे, क़ौल व फ़ेल से फ़रमाने ख़ुदा बजा लाने वाले और रब की नाफ़रमानी से बचने वाले थे। ये लोग जन्नत के वारिस होंगे, बुलन्द और ऊँचे बालाख़ाने, बिछे बिछाये सजे सजाये तख़्त, झुके हुए ख़ोशों और मेवों के दरख़्त, उभरे उभरे फ़र्श, ख़ूबसूरत बीवियाँ, क़िस्म-क़िस्म के अच्छे ज़ायक़े वाले फल, मर्ज़ी व मंशा के मुताबिक़ खाने, मज़ेदार पीने की चीज़ें और सबसे बढ़कर अल्लाह का दीदार। ये नेमतें होंगी जो इनके लिये हमेशा के लिये होंगी, न इन्हें मौत आये, न बुढ़ापा, न बीमारी, न ग़फ़लत, न पाख़ाना, न पेशाब, न थूक, न नाक, मुश्क के जैसा पसीना आया और ग़िज़ा हज़्म।

पहले बयान हुए काफ़िर बदबख़्त लोग और ये मोमिन मुत्तक़ी लोग बिल्कुल वही निस्बत रखते हैं जो अंधे-बहरे और बीना (देखने वाले) और सुनने वाले में है। काफ़िर दुनिया में हक़ को देखने से अन्धे थे और आख़िरत के दिन भी ख़ैर की तरफ़ राह नहीं पायेंगे, न उसे देखेंगे, वे हक़्क़ानियत की दलीलों के सुनने से बहरे थे, नफ़ा देने वाली बात सुनते ही न थे, अगर उनमें कोई भलाई होती तो ख़ुदा तआ़ला उन्हें ज़रूर सुनाता। इनके विपरीत मोमिन आदमी समझदार, अ़क़्लमन्द, आ़लिम, देखता भालता, सोचता समझता, हक़ व बातिल में तमीज़ करता, भलाई ले लेता, बुराई छोड़ देता, दलील और शुब्हे में फ़र्क़ कर लेता, पस बातिल से बचता, हक़ को मानता, बतलाईये ये दोनों कैसे बराबर हो सकते हैं? ताज्जुब है कि फिर भी तुम ऐसे दो मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) शख़्सों में फ़र्क़ नहीं जानते। अल्लाह का इरशाद है:

لَا يَسْتَوِىٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ...... الخ.

दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं होते। जन्नती तो बिल्कुल कामयाब हैं।

एक और आयत में है कि अन्धा और देखता बराबर नहीं, अंधेरा और उजाला बराबर नहीं, साया और धूप बराबर नहीं, ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं। फ़रमाया अल्लाह तो जिसे चाहे सुना सकता है तू क़ब्र वालों को सुना नहीं सकता। तू तो सिर्फ़ आगाह करने वाला है। हमने तुझे हक़ के साथ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। हर-हर उम्मत में डराने वाला आ चुका है।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ۝ فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ

और हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम के पास रसूल बनाकर (यह पैग़ाम देकर) भेजा कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत मत करना। (25) मैं तुमको (अल्लाह के अ़लावा किसी और की इबादत करने की सूरत में) साफ़-साफ़ डराता हूँ, मैं तुम्हारे हक़ में एक बड़े तकलीफ़ देने वाले दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा करता हूँ। (26) सो उनकी क़ौम में जो काफ़िर सरदार थे, वे (जवाब में) कहने लगे कि हम तो तुमको अपने ही जैसा आदमी देखते हैं, और तुम्हारी पैरवी उन्हीं लोगों ने की है जो हममें बिल्कुल कम दर्जे के और हक़ीर हैं, (जिन

هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ ۢ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ○	की अक़्ल अक्सर कम होती है, फिर वह पैरवी भी महज़) सरसरी राय से (हुई है) और हम तुम लोगों में (यानी तुममें और मुसलमानों में) कोई बात अपने से ज़्यादा भी नहीं पाते, बल्कि हम तुमको (बिल्कुल) झूठा समझते हैं। (27)

Maktaba Ashraf

लगातार तब्लीग़

सबसे पहले काफ़िरों की तरफ़ रसूल बनाकर बुतपरस्ती से रोकने के लिये ज़मीन पर नूह अ़लैहिस्सलाम ही भेजे गये थे। आपने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि मैं तुम्हें अ़ज़ाबे ख़ुदा से डराने आया हूँ। अगर तुम ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अ़लावा दूसरों) की इबादत न छोड़ोगे तो अ़ज़ाब में फंसोगे। देखो तुम सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की इबादत करते रहो, अगर तुमने ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो क़ियामत के दिन दर्दनाक सख़्त अ़ज़ाब का मुझे तुम पर ख़ौफ़ है। इस पर क़ौम के काफ़िर सरदार और बड़े लोग बोल उठे कि आप कोई फ़रिश्ता तो हैं नहीं, हम ही जैसे इनसान हैं, फिर कैसे मुम्किन है कि हम सबको छोड़कर एक ही के पास 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) आये, और हम अपनी आँखों देख रहे हैं कि ऐसे रज़ील लोग आपके हल्क़े (दायरे और मानने वालों) में शामिल हो गये हैं, कोई शरीफ़ और बड़ा आदमी आपका फ़रमाँबरदार नहीं हुआ। और ये लोग बेसोचे समझे बग़ैर ग़ौर व फ़िक्र के आपकी मज्लिस में आ बैठे हैं, और हाँ में हाँ मिलाये जाते हैं। फिर हम देखते हैं कि इस नये दीन ने तुम्हें कोई फ़ायदा भी नहीं पहुँचाया कि तुम ख़ुशहाल हो गये हो, तुम्हारी रोज़ियाँ बढ़ गई हों या सामाजिक और अख़्लाक़ी तौर पर तुम्हें कोई बरतरी हम पर हासिल हो गई हो। बल्कि हमारे ख़्याल से तो तुम सब झूठे हो, नेकी, सलाहियत और इबादत पर जो वादे तुम हमें आख़िरत की दुनिया के दे रहे हो हमारे नज़दीक तो ये सब भी झूठी बातें हैं।

उन काफ़िरों की ज़रा इस बेहूदगी को देखिये अगर हक़ के क़बूल करने वाले नीचे दर्जे के लोग हुए तो क्या इससे हक़ की शान घट गई? हक़ हक़ ही है, चाहे उसके मानने वाले बड़े लोग हों चाहे छोटे लोग हों। बल्कि हक़ बात यह है कि हक़ की पैरवी करने वाले ही शरीफ़ लोग हैं, अगरचे वे ग़रीब और मिस्कीन हों, और हक़ से मुँह फेरने वाले ही ज़लील और कमीने हैं चाहे वे ग़नी, मालदार और अमीर हों। हाँ यह हक़ीक़त है कि सच्चाई की आवाज़ को सबसे पहले ग़रीब मिस्कीन लोग ही क़बूल करते हैं और अमीर कबीर लोग नाक-भौं चढ़ाने लगते हैं। क़ुरआन का फ़रमान है कि तुझसे पहले जिस-जिस बस्ती में हमारे अम्बिया आये वहाँ के बड़े लोगों ने यही किया कि हमने अपने बाप दादों को जिस दीन पर पाया है हम तो उन्हीं की राह पर चलते रहेंगे।

रोम के बादशाह हिरक़्ल ने जब अबू सुफ़ियान से पूछा था कि शरीफ़ लोगों ने उसकी ताबेदारी की है या ज़ईफ़ (कमज़ोर) लोगों ने? तो उसने यही जवाब दिया था कि ज़ईफ़ों ने। जिस पर हिरक़्ल ने कहा था कि रसूलों के ताबेदार यही लोग होते हैं। हक़ की फ़ौरी क़बूलियत भी कोई ऐब की बात नहीं, हक़ की वज़ाहत (यानी स्पष्ट होने) के बाद सोच विचार की ज़रूरत ही क्या है? बल्कि हर अ़क़्लमन्द का काम यही है कि हक़ के मानने में सब्क़त और जल्दी करे, इसमें सोचना जहालत और नासमझी है। अल्लाह के तमाम पैग़म्बर बहुत वाज़ेह, साफ़ और खुली हुई दलीलें लेकर आते हैं। हदीस शरीफ़ में है कि मैंने जिसे भी इस्लाम

Maktab E Ashraf

की तरफ़ बुलाया उसमें कुछ न कुछ झिझक ज़रूर पाई, सिवाय अबू बक्र के, कि उन्होंने कोई पसोपेश न किया, वाज़ेह चीज़ को देखते ही फ़ौरन बेझिझक क़ुबूल कर लिया।

उनका यानी काफ़िरों का तीसरा एतिराज़ यह है कि हम कोई बरतरी तुम में नहीं देखते। यह भी उनकी कम-अक़्ली (बेवक़ूफ़ी) की वजह से है, उनको अगर आँखें और कान न हों और मौजूद चीज़ का इन्कार करें तो वास्तव में उसका न होना साबित नहीं हो सकता, ये तो न हक़ को देखें न हक़ को सुनें बल्कि अपने शक में गोते लगाते रहते हैं। अपनी जहालत में हाथ-पैर मारते रहते हैं, झूठे, बोहतान बाँधने वाले, ख़ाली हाथ, घटिया और नुक़सान वाले हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ۗ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝

(हज़रत नूह ने) फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! भला यह तो बतलाओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर (क़ायम) हूँ, (जिससे मेरी नुबुव्वत साबित होती है) और उसने मुझको अपने पास से रहमत (यानी नुबुव्वत) अ़ता फ़रमाई हो, फिर वह (नुबुव्वत या उसकी हुज्जत) तुमको न सूझती हो तो (मैं क्या करूँ मजबूर हूँ) क्या हम इस (दावे या दलील) को तुम्हारे गले मढ़ दें, और तुम उससे नफ़रत किए चले जाओ। (28)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का जवाब

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को जवाब दिया कि सच्ची नुबुव्वत, यक़ीन और स्पष्ट चीज़ मेरे पास तो मेरे रब की तरफ़ से आ चुकी है, बहुत बड़ी रहमत व नेमत अल्लाह तआ़ला ने मुझे अ़ता फ़रमाई और वह तुमसे पोशीदा रही, तुम उसे न देख सके न तुमने उसकी क़द्र की, न उसे पहचाना, बल्कि बिना सोचे-समझे तुमने उसे धक्के दिये और उसे झुठलाने लगे। अब बतलाओ कि तुम्हारे इस नापसन्द करने की हालत में मैं कैसे यह कर सकता हूँ कि तुम्हें उसका मातहत बना दूँ।

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۗ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝ وَيٰقَوْمِ

और (इतनी बात और भी फ़रमाई कि) ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कुछ माल नहीं माँगता, मेरा मुआवज़ा तो सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मैं तो इन ईमान वालों को निकालता नहीं (क्योंकि) ये लोग अपने रब के पास (इज़्ज़त व मक़बूलियत के साथ) जाने वाले हैं, लेकिन वाक़ई मैं तुम लोगों को देखता हूँ कि (ख़्वाह-मख़्वाह) की जहालत कर रहे हो (और बेढंगी बातें कर रहे हो)। (29) और ऐ मेरी

Maktab E Ashraf

مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ○	क़ौम! (मान लो) अगर मैं उनको निकाल भी दूँ तो (यह बतलाओ) मुझको ख़ुदा की पकड़ से कौन बचा लेगा। क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते? (30)

एक हक़ीक़त

आप अपनी क़ौम से फ़रमाते हैं कि मैं जो कुछ नसीहत तुम्हें कर रहा हूँ जितनी ख़ैरख़्वाही तुम्हारी करता हूँ उसकी कोई उजरत तो तुमसे नहीं माँगता, मेरी उजरत (बदला और इनाम) तो अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है, तुम जो मुझसे कहते हो कि इन ग़रीब मिस्कीन ईमान वालों को मैं धक्के दे दूँ मुझसे तो यह कभी नहीं होगा। यही मुतालबा नबी करीम सल्ल. से भी किया गया था, जिसके जवाब में यह आयत उतरीः

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاوةِ وَالْعَشِيِّ..... الخ

यानी सुबह शाम अपने रब के पुकारने वालों को अपनी मज्लिस से न निकाल।

एक और आयत में है:

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ..... الخ

इसी तरह हमने एक को दूसरे से आज़मा लिया और वे कहने लगे कि क्या यही वे लोग हैं जिन पर हम सब को छोड़कर अल्लाह का फ़ज़्ल नाज़िल हुआ? क्या अल्लाह तआ़ला शुक्रगुज़ारों को नहीं जानता?

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۚ اِنِّيْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ○	और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के (तमाम) ख़ज़ाने हैं, और न मैं (यह कहता हूँ कि मैं) तमाम ग़ैब की बातें जानता हूँ, और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और जो लोग तुम्हारी निगाहों में हक़ीर हों, मैं उनके मुताल्लिक़ (तुम्हारी तरह) यह नहीं कह सकता कि अल्लाह हरगिज़ उनको सवाब न देगा, उनके दिल में जो कुछ हो उसको अल्लाह ही ख़ूब जानता है, मैं तो (अगर ऐसी बात कह दूँ तो) उस सूरत में सितम ही कर दूँ। (31)

कुछ और वास्तविकतायें

नबी करीम हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं सिर्फ़ अल्लाह का रसूल हूँ। एक अल्लाह जिसका कोई शरीक नहीं उसकी इबादत और तौहीद की तरफ़ उसके फ़रमान के मुताबिक़ तुम सबको बुलाता हूँ। इससे मेरी मुराद तुमसे माल समेटना नहीं, हर बड़े छोटे के लिये मेरी दावत आ़म है, जो क़बूल करेगा निजात पायेगा। ख़ुदा के ख़ज़ानों में तसर्रुफ़ (अ़मल-दख़ल और अपनी मर्ज़ी चलाने) का मुझको कोई इख़्तियार

Maktaba E Ashraf

नहीं। मैं ग़ैब नहीं जानता, हाँ जो बात अल्लाह मुझे मालूम करा दे मालूम हो जाती है। मैं फ़रिश्ता होने का दावेदार नहीं हूँ बल्कि एक इनसान हूँ जिसकी ताईद ख़ुदा की तरफ़ से मोजिज़ों से हो रही है। जिन्हें तुम घटिया और ज़लील समझ रहे हो मैं तो इसका क़ायल नहीं कि उन्हें ख़ुदा के यहाँ उनकी नेकियों का बदला नहीं मिलेगा। उनके बातिन (अन्दर) का हाल भी मुझे मालूम नहीं, अल्लाह ही को इसका इल्म है। अगर ज़ाहिर की तरह वे बातिन में भी ईमान वाले हैं तो उन्हें ख़ुदा के यहाँ ज़रूर नेकियाँ मिलेंगी, जो यह कहे कि उनका अन्जाम बुरा होगा, उसने ज़ुल्म किया और जहालत की बात कही।

वे लोग कहने लगे कि ऐ नूह! तुम हमसे बहस कर चुके, फिर बहस भी बहुत कर चुके, सो (अब हम बहस-वहस नहीं करते) जिस चीज़ से तुम हमको धमकाया करते हो (कि अज़ाब आ जाएगा) वह हमारे सामने ले आओ, अगर तुम सच्चे हो। (32) उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उसको तुम्हारे सामने लाएगा बशर्ते कि उसको मन्ज़ूर हो, और (उस वक़्त फिर) तुम उसको आ़जिज़ न कर सकोगे। (33) और मेरी ख़ैर-ख़्वाही तुम्हारे काम नहीं आ सकती, चाहे मैं तुम्हारी (कैसी ही) ख़ैर-ख़्वाही करना चाहूँ, जबकि अल्लाह ही को तुम्हारा गुमराह करना मन्ज़ूर हो, वही तुम्हारा मालिक है और उसी के पास तुमको जाना है। (34)	قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۣ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

बदबख़्ती की इन्तिहा और बदकिस्मती का ख़ौफ़नाक प्रदर्शन

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम की जल्दबाज़ी बयान हो रही है कि अ़ज़ाब माँग बैठे। कहने लगे बस हुज्जतें (दलीलें) तो हमने बहुत सी सुन लीं आख़िरी फ़ैसला हमारा यह है कि हम तो तेरी ताबेदारी नहीं करेंगे। अब अगर तू सच्चा है तो दुआ़ करके हम पर अ़ज़ाब ले आ। आपने जवाब दिया कि यह भी मेरे बस की बात नहीं, ख़ुदा के हाथ में है, उसे कोई आ़जिज़ करने वाला नहीं। अगर अल्लाह का इरादा ही तुम्हारी गुमराही और बरबादी का है तो फिर वाक़ई मेरी नसीहत बेफ़ायदा है, सब का मालिक अल्लाह ही है, तमाम कामों का पूरा करना उसी के हाथ में है। वही हर चीज़ पर क़ाबिज़ और इख़्तियार रखने वाला, इन्साफ़ करने वाला हाकिम, हुक्म का मालिक, पहली बार में पैदा करने वाला फिर लौटाने वाला, दुनिया व आख़िरत का तन्हा मालिक वही है, सारी मख़्लूक़ को उसी की तरफ़ लौटना है।

क्या ये लोग कहते हैं कि उन्होंने (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने, अल्लाह अपनी	اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ

अपनी पनाह में रखे) यह (क़ुरआन) घड़ लिया है। आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि अगर (मान लो कि) मैंने घड़ा होगा तो मेरा (यह) जुर्म मुझ पर आयद होगा और तुम मेरे जुर्म से बरी रहोगे, और मैं तुम्हारे इस जुर्म से बरी रहूँगा। (35)	اِجْرَامِیْ وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ۟ع

Maktab E Ashraf

जवाब

यह दरमियानी कलाम इस किस्से के बीच में इसकी ताईद और तक़रीर के लिये है। अल्लाह तआ़ला अपने आख़िरी नबी रसूलुल्लाह सल्ल. से फ़रमाता है कि ये काफ़िर लोग तुझ पर इस क़ुरआन के अपनी तरफ़ से गढ़ लेने का इल्ज़ाम लगा रहे हैं, तू जवाब दे कि अगर ऐसा है तो मेरा गुनाह मुझ पर है, मैं जानता हूँ कि ख़ुदा के अ़ज़ाब कैसे कुछ हैं। फिर कैसे मुम्किन है कि मैं ख़ुदा पर झूठ इल्ज़ाम लगाऊँ और बोहतान बाँधूँ। हाँ अपने गुनाहों के ज़िम्मेदार तुम ख़ुद हो।

और नूह (अ़लैहिस्सलाम) के पास 'वही' भेजी गई कि सिवाय उनके जो (इस वक़्त तक) ईमान ला चुके हैं, और कोई (नया शख़्स) तुम्हारी क़ौम में से ईमान न लाएगा, सो जो कुछ ये लोग (कुफ़्र, तकलीफ़ देना और हँसी मज़ाक़) कर रहे हैं (36) इस पर कुछ ग़म न करो। और तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म से कश्ती तैयार कर लो, और मुझसे काफ़िरों के बारे में कुछ गुफ़्तगू मत करना, वे सब ग़र्क़ किए जाएँगे। (37) और वह कश्ती तैयार करने लगे, और जब कभी उनकी क़ौम के किसी गिरोह के सरदार का उन पर गुज़र होता तो उनसे हँसी करते। आप फ़रमाते कि अगर तुम हम पर हँसते हो तो हम तुम पर हँसते हैं, जैसा कि तुम (हम पर) हँसते हो। (38) सो अभी तुमको मालूम हुआ जाता है कि वह कौनसा शख़्स है जिस पर ऐसा अ़ज़ाब आया चाहता है जो उसको रुस्वा कर देगा, और उस पर हमेशा का अ़ज़ाब नाज़िल होगा। (39)	وَاُوْحِیَ اِلٰی نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ یُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ۟ۚ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْیُنِنَا وَوَحْیِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِیْ فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ۝ وَیَصْنَعُ الْفُلْكَ ۫ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَیْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ۝ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ یَّاْتِیْهِ عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَیَحِلُّ عَلَیْهِ عَذَابٌ مُّقِیْمٌ۝

Maktab E Ashraf

बड़ा तूफ़ान

क़ौमे-नूह ने जब अ़ज़ाब की जल्दी मचाई तो आपने ख़ुदा से दुआ़ की कि ख़ुदाया! ज़मीन पर किसी काफ़िर को रहता बसता न छोड़। परवर्दिगार मैं आ़जिज़ आ गया हूँ तू मेरी मदद कर, उसी वक़्त 'वही' आई कि जो ईमान ला चुके हैं उनके सिवा और कोई अब ईमान न लायेगा। तू उन पर अफ़सोस न कर, न उनका कोई ऐसा ख़ास ख़्याल कर, हमारे सामने हमारी तालीम के मुताबिक़ एक कश्ती तैयार कर, और अब ज़ालिमों के बारे में हमसे कोई बातचीत न कर। हम उनका डूबो देना मुक़र्रर कर चुके। बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि हुक्म हुआ कि लकड़ियाँ काटकर सुखाकर तख़्ते बना लो, इसमें एक सौ साल गुज़र गये, फिर मुकम्मल तैयारी में सौ साल और निकल गये। एक क़ौल है कि चालीस साल लगे। वल्लाहु आलम

इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ तौरात से नक़ल करते हैं कि साग की लकड़ी से यह कश्ती तैयार हुई। इसकी लम्बाई अस्सी हाथ और चौड़ाई पचास हाथ की थी, अन्दर बाहर से रोग़न किया गया था, पानी काटने के पुर्ज़े भी थे। क़तादा रह. का क़ौल है कि लम्बाई तीन सौ हाथ की थी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान है कि लम्बाई बारह सौ हाथ और चौड़ाई छह सौ हाथ की थी। कहा गया है कि लम्बाई दो हज़ार हाथ और चौड़ाई एक सौ हाथ थी। वल्लाहु आलम

उसकी अन्दरूनी ऊँचाई तीस हाथ की थी, उसमें तीन दर्जे थे, हर दर्जा दस हाथ ऊँचा था। सबसे नीचे के हिस्से में मवेशी और जंगली जानवर थे। दरमियान के हिस्से में इनसान थे, ऊपर के हिस्से में परिन्दे थे। दरवाज़ा ख़ूब लम्बा चौड़ा और ऊपर से बिल्कुल बन्द था। इब्ने जरीर रह. ने एक ग़रीब क़ौल अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से ज़िक्र किया है कि हवारियों (हज़रत ईसा के सहाबा और मानने वालों) ने हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि आप ख़ुदा के हुक्म से किसी ऐसे मुर्दे को ज़िन्दा करते जिसने नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती देखी हो, तो हमें उससे मालूमात हासिल होतीं। आप उन्हें लेकर एक टीले पर पहुँचे, वहाँ की मिट्टी उठाई और फ़रमाया जानते हो यह कौन है? उन्होंने कहा अल्लाह और उसके रसूल को ही इल्म है। आपने फ़रमाया यह पिंडली है हाम बिन नूह की, फिर आपने अपनी लकड़ी उस टीले पर मारकर फ़रमाया अल्लाह के हुक्म से उठ खड़ा हो, उसी वक़्त एक बूढ़ा सा आदमी अपने सर से मिट्टी झाड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ। आपने उससे पूछा क्या तू बुढ़ापे में मरा था? उसने कहा नहीं, मरा तो था जवानी में, लेकिन अब दिल पर दहशत बैठी कि क़ियामत क़ायम हो गई, इस दहशत ने बूढ़ा कर दिया। आपने फ़रमाया अच्छा हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती के बारे में अपनी मालूमात बयान कर। उसने कहा वह बारह सौ हाथ लम्बी और छह सौ हाथ चौड़ी थी। तीन दर्जों की थी, एक में जानवर और चौपाये थे, दूसरे में इनसान, तीसरे में परिन्दे। जब जानवरों का गोबर फैल गया तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ 'वही' की कि हाथी की दुम हिलाओ, उसके हिलाते ही उससे ख़िन्ज़ीर (सुअर) नर व मादा निकल आये और वे मैला खाने लगे। चूहों ने जब उसके तख़्ते कुतरने शुरू किये तो हुक्म हुआ कि शेर की पेशानी पर उंगली लगा, उससे बिल्ली का जोड़ा निकला और चूहों की तरफ़ लपका।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने सवाल किया कि हज़रत नूह को शहरों के पानी में डूब जाने का इल्म कैसे हो गया? आपने फ़रमाया कि उन्होंने कौए को ख़बर लेने के लिये भेजा, लेकिन वह लाश पर बैठ गया देर तक न आया, आपने उसके लिये हमेशा डरते रहने की बददुआ़ की, इसलिये वह घरों से मानूस नहीं होता। आपने कबूतर को भेजा वह अपनी चोंच में ज़ैतून के दरख़्त का पत्ता लेकर आया और अपने पंजों

में सूखी मिट्टी लाया, इससे मालूम हो गया कि शहर डूब चुके हैं। आपने उसकी गर्दन में ख़सरे का तौक़ डाल दिया और उसके लिये अमन व उन्स की दुआ की। पस वह घरों में रहता सहता है। हवारियों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! आप इन्हें हमारे यहाँ ले चलिये कि हममें बैठकर और भी बातें हमें सुनायें। आपने फ़रमाया यह तुम्हारे साथ कैसे आ सकता है जबकि इसकी रोज़ी नहीं। फिर फ़रमाया अल्लाह के हुक्म से जैसा था वैसा ही हो जा, वह उसी वक़्त मिट्टी हो गया।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम तो कश्ती बनाने में लगे और काफ़िरों को एक मज़ाक़ हाथ लग गया। वे चलते फिरते उन्हें छेड़ते, बातें बनाते और ताने मारते क्योंकि उन्हें झूठा जानते थे और अ़ज़ाब के वादे पर उन्हें यक़ीन न था। इसके जवाब में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते अच्छा दिल ख़ुश कर लो, वक़्त आ रहा है कि इसका पूरा बदला लिया जायेगा, अभी जान लोगे कि कौन अ़ज़ाबे ख़ुदा से दुनिया में रुस्वा होता है और किस पर आख़िरत का अ़ज़ाब आ चिमटता है, जो कभी टाले न टलेगा।

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ○	यहाँ तक कि जब हमारा (अ़ज़ाब का) हुक्म (क़रीब) आ पहुँचा और तन्दूर (यानी ज़मीन से पानी) उबलना शुरू हुआ, हमने (नूह से) फ़रमाया कि हर एक (क़िस्म) में से (एक-एक नर और एक-एक मादा यानी) एक जोड़ा, यानी दो अ़दद उस पर चढ़ा लो, और अपने घर वालों को भी, उसको छोड़कर जिस पर हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है, और दूसरे ईमान वालों को भी (सवार कर लो) और सिवाय थोड़े से आदमियों के उनके साथ (यानी उन पर) कोई ईमान न लाया था। (40)

उत्साह और जोश

अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़ आसमान से मूसलाधार लगातार बारिश बरसने लगी, ज़मीन से भी पानी उबलने लगा, सारी ज़मीन पानी से पुर हो गई और जहाँ तक ख़ुदा को मन्ज़ूर था पानी भर गया। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को रब्बुल-आ़लमीन ने अपनी निगाहों के सामने चलने वाली कश्ती पर सवार कर दिया और काफ़िरों को उनके अन्जाम तक पहुँचा दिया। तन्दूर के उबलने से बक़ौल इब्ने अ़ब्बास रज़ि. यह मतलब है कि रू-ए-ज़मीन से चश्मे फूट पड़े, यहाँ तक कि आग की जगह तन्दूर में से भी पानी उबल पड़ा, यही क़ौल पहले और बाद के जमहूर उलेमा का है। हज़रत अ़ली रज़ि. से मन्क़ूल है कि तन्दूर आज सुबह का निकलना और फ़जर का रोशन होना है, यानी सुबह की रोशनी और फ़जर की चमक। लेकिन ज़्यादा ज़ाहिर पहला क़ौल है। मुजाहिद और शअ़बी रह. कहते हैं यह तन्दूर कूफ़ा में था, इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हिन्दुस्तान में एक नहर है। क़तादा रह. कहते हैं जज़ीरे में एक नहर है, जिसे ऐनुल-वर्दा कहते हैं। लेकिन ये सब क़ौल ग़रीब हैं। ग़र्ज़ इन अ़लामतों के ज़ाहिर होते ही नूह अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का हुक्म हुआ कि अपने साथ कश्ती में जानदार मख़्लूक़ की हर क़िस्म का एक एक जोड़ा नर व

मादा सवार कर लो। कहा गया है कि ग़ैर-जानदार के लिये भी यही हुक्म हुआ था जैसे पेड़-पौधे वग़ैरह। कहा गया है कि परिन्दों में सबसे पहले तोता कश्ती में आया और सबसे आख़िर में गधा सवार होने लगा, शैतान उसकी दुम में लटक गया, जब उसके दो अगले पाँव कश्ती में आ गये और उसने अपना पिछला धड़ उठाना चाहा तो न उठा सका, क्योंकि दुम पर उस मलऊन का बोझ था। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम जल्दी कर रहे थे, यह बहुत चाहता था लेकिन पिछले पाँव चढ़ नहीं सकते थे, आख़िर आपने फ़रमाया आ जा चाहे तेरे साथ शैतान भी हो, तब वह चढ़ गया और शैतान भी उसके साथ ही आया। बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि शेर को अपने साथ ले जाना मुश्किल हो गया आख़िर उसे बुख़ार आया तब उसे सवार किया। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने जब तमाम मवेशी अपनी कश्ती में सवार कर लिये तो लोगों ने कहा कि शेर की मौजूदगी में ये मवेशी कैसे आराम से रह सकेंगे? पस अल्लाह तआ़ला ने उस पर बुख़ार डाल दिया, उससे पहले ज़मीन पर यह बीमारी न थी। फिर लोगों ने चूहे की शिकायत की कि ये हमारा खाना और दीगर सब चीज़ें ख़राब कर रहे हैं तो ख़ुदा के हुक्म से शेर की छींक से एक बिल्ली निकली, जिससे चूहे दुबक कर कोने-खुदरों में बैठ रहे।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को हुक्म हुआ कि अपने घर वालों को भी अपने साथ कश्ती में बिठा लो, मगर उनमें से जो ईमान न लाये उसे साथ मत लेना। आपका लड़का याम भी उन्हीं काफ़िरों में से था, वह अलग हो गया, आपकी बीवी वह भी अल्लाह व रसूल की मुन्किर थी। और तेरी क़ौम के तमाम मुसलमानों को भी अपने साथ बैठा ले, लेकिन उन मुसलमानों की तादाद बहुत ही कम थी। साढ़े नौ सौ साल के क़ियाम की लम्बी मुद्दत में आप पर बहुत ही कम लोग ईमान लाये थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि कुल अस्सी आदमी थे, जिनमें औरतें भी थीं। हज़रत कअ़ब रह. फ़रमाते हैं कि बहत्तर शख़्स थे। एक क़ौल है कि सिर्फ़ दस शख़्स थे। एक क़ौल है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और उनके तीन लड़के थे। 'साम' 'हाम' और 'याफ़िस' और चार औरतें थीं तीन तो इन तीनों की बीवियाँ और चौथी याम की बीवी। और कहा गया है कि ख़ुद हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की बीवी लेकिन यह राय विचारनीय है। ज़ाहिर यह है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की बीवी हलाक होने वालों में हलाक हुई। इसलिये कि वह अपनी क़ौम के दीन पर ही थी, तो जिस तरह लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी क़ौम के साथ हलाक हुई इसी तरह यह भी। वल्लाहु आलम

और (नूह ने) फ़रमाया कि इस कश्ती में सवार हो जाओ, इसका चलना और ठहरना अल्लाह ही के नाम से है, यक़ीनन मेरा रब मग़फ़िरत करने वाला (है), रहीम है। (41) और वह कश्ती उनको लेकर पहाड़ जैसी लहरों में चलने लगी, और नूह ने अपने (एक सगे या सौतेले) बेटे को पुकारा, और वह अलग मक़ाम पर था, कि ऐ मेरे (प्यारे) बेटे! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ मत हो। (42) वह कहने लगा कि मैं अभी किसी पहाड़	وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۗ وَنَادٰى نُوْحُ ۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ

Maktab E Ashraf

اَلْكٰفِرِيْنَ ○ قَالَ سَاٰوِىْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِىْ مِنَ الْمَآءِ ۭ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ○	की पनाह ले लूँगा जो मुझको पानी से बचा लेगा। (नूह ने) फ़रमाया कि आज अल्लाह के हुक्म (यानी कहर से) कोई बचाने वाला नहीं, लेकिन जिस पर वही रहम करे, और दोनों के बीच में एक मौज "यानी लहर" आड़ हो गई, पस वह भी दूसरे काफ़िरों की तरह गर्क़ हो गया। (43)

ईमान के नतीजे में ख़ुशगवार अमन

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम जिन्हें अपने साथ ले जाना चाहते थे उनसे फ़रमाया कि आओ इसमें सवार हो जाओ, इसका पानी पर चलना अल्लाह के नाम की बरकत से है, और इसी तरह इसका आख़िरी ठहराव भी उसी के पाक नाम से है। एक क़िराअत में 'मजराहा व मुरसाहा' भी है, यही अल्लाह का आपको हुक्म था कि जब तुम और तुम्हारे साथी ठीक तरह बैठ जाओ तो कहनाः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ.

कि तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने हमें ज़ालिम क़ौम से निजात बख़्शी।

और यह दुआ़ भी करना किः

رَبِّ اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ.

यानी ऐ मेरे रब! मुझको (ज़मीन पर) बरकत का उतारना उतारियो और आप सब उतारने वालों से अच्छे हैं।

इसी लिये मुस्तहब है कि तमाम कामों के शुरू में बिस्मिल्लाह कह ली जाये चाहे कश्ती पर सवार होना हो, चाहे जानवर पर सवार होना हो, जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि उसी अल्लाह ने तुम्हारे लिये तमाम जोड़े पैदा किये हैं, और कश्तियाँ व चौपाये तुम्हारी सवारी के लिये पैदा किये हैं, कि तुम उनकी पीठ पर सवारी लेकर ख़ुदा का शुक्र करो। हदीस में भी इसकी ताईद और रग़बत आई है। सूरः ज़ुख़रुफ़ में इसका पूरा बयान होगा इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

तबरानी में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरी उम्मत के लिये डूबने से बचाव उनके इस क़ौल में है कि सवार होते हुए कह लेंः

بِسْمِ اللّٰهِ الْمَلِكِ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ.

बिस्मिल्लाहिल् मलिकि व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही....... पूरी आयत (सूरः अन्आ़म आयत 92)

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّىْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ.

बिस्मिल्लाहि मजरेहा व मुरसाहा इन्-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्रहीम।

इस दुआ़ के आख़िर में ख़ुदा का वस्फ़ ग़फ़ूर व रहीम इसलिये लाये कि काफ़िरों की सज़ा के मुक़ाबले

में मोमिनों पर रहमत व शफ़क़त का इज़हार हो। जैसे फ़रमान है कि तेरा रब जल्द सज़ा करने वाला और साथ ही ग़फ़ूर व रहीम भी है। एक और आयत में है:

اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ

यानी तेरा परवरदिगार लोगों के गुनाहों को बख़्शने वाला भी है और वह सख़्त सज़ा देने वाला भी है।

और भी बहुत सी आयतें हैं जिनमें रहमत व इन्तिक़ाम का बयान मिला जुला है। पानी रू-ए-ज़मीन पर भर गया है और किसी ऊँचे से ऊँचे पहाड़ की बुलन्द चोटी भी दिखाई नहीं देती कि पहाड़ों से भी पन्द्रह हाथ और एक क़ौल के मुताबिक़ अस्सी मील ऊपर को हो गया है। बावजूद इसके कश्ती-ए-नूह अल्लाह के हुक्म से बराबर सही तौर पर जा रही है। ख़ुद ख़ुदा इसका मुहाफ़िज़ है और यह ख़ास उसकी इनायत और मेहरबानी है। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

اِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ..... الخ

यानी पानी के उफान के वक़्त हमने ख़ुद तुम्हें कश्ती में चढ़ा लिया कि हम उसे तुम्हारे लिये नसीहत बनायें और याद रखने वाले कान उसे याद रख लें।

एक और आयत में है कि हमने तुम्हें इस तख़्तों वाली कश्ती पर सवार कराकर अपनी हिफ़ाज़त से पार उतारा और काफ़िरों को उनके कुफ़्र का अन्जाम दिखा दिया और उसे एक निशान बना दिया, क्या अब भी कोई है जो इबरत हासिल करे? उस वक़्त हज़रत नूह ने अपने बेटे को बुलाया, यह आपका चौथा लड़का था, इसका नाम याम था, यह काफ़िर था, इसे आपने कश्ती में सवार होने के वक़्त ईमान की और अपने साथ बैठ जाने की हिदायत की, ताकि डूबने और काफ़िरों के अ़ज़ाब से बच जाये, मगर इस बदनसीब ने जवाब दिया कि नहीं! मुझे इसकी ज़रूरत नहीं, पहाड़ पर चढ़कर बारिश के तूफ़ान से बच जाऊँगा। एक इस्राईली रिवायत में है कि उसने शीशे की कश्ती बनाई थी। वल्लाहु आलम

क़ुरआन में तो यह है कि उसने यह समझा कि तूफ़ान पहाड़ों की चोटियों तक नहीं पहुँचेगा, मैं जब पहाड़ पर जा पहुँचूँगा तो यह पानी मेरा क्या बिगाड़ेगा। इस पर हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि आज अ़ज़ाबे इलाही से कहीं पनाह नहीं, वही बचेगा जिस पर ख़ुदा का रहम हो। ये बातें हो ही रही हैं कि एक मौज (पानी की लहर) आई और नूह अ़लैहिस्सलाम के बेटे को ले डूबी।

और हुक्म हो गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल जा, और ऐ आसमान थम जा, और पानी घट गया और क़िस्सा ख़त्म हुआ, और वह (कश्ती) जूदी पर आ ठहरी, और कह दिया गया कि काफ़िर लोग रहमत से दूर। (44)	وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِىْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِىْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِىَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِىِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ٥

ज़ालिम व सरकश क़ौम की तबाही व ख़ात्मा

रू-ए-ज़मीन (दुनिया भर) के सब लोग उस तूफ़ान में जो वास्तव में अल्लाह का ग़ज़ब और मज़लूम

पैग़म्बर की बद्दुआ का अज़ाब था, ग़र्क़ हो गये। उस वक़्त अल्लाह तआला ने ज़मीन को उस पानी के निगल लेने का हुक्म दिया जो उसका उगला हुआ और आसमान का बरसाया हुआ था, साथ ही आसमान को भी पानी बरसाने से रुक जाने का हुक्म हो गया। पानी घटने लगा और काम पूरा हो गया। यानी तमाम काफ़िर नेस्त-नाबूद हो गये, सिर्फ़ कश्ती वाले मोमिन ही बचे। कश्ती ख़ुदा के हुक्म से जूदी पहाड़ पर रुकी। मुजाहिद रह. कहते हैं कि यह जज़ीरे में एक पहाड़ है, सब पहाड़ तूफ़ान उठाती मौजों में डूबकर रह गये थे, और यह पहाड़ अपनी आ़जिज़ी और तवाज़ो की वजह से ग़र्क़ होने से बच गया था। यहीं कश्ती-ए-नूह आकर रुकी। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि महीने भर तक यहीं लगी रही और सब उतर गये। कश्ती लोगों की इबरत (सबक़ लेने) के लिये यहीं सही व सालिम रखी रही, यहाँ तक कि इस उम्मत के पहले लोगों ने भी उसे देख लिया। हाँलाकि उसके बाद कई बेहतरीन और मज़बूत सैंकड़ो कश्तियाँ बनीं बिगड़ीं, ख़ाक हो गईं। ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि जूदी नाम का पहाड़ मूसल में है। बाज़ कहते हैं कि तूर पहाड़ को ही जूदी भी कहते हैं। ज़िर्र बिन हुबैश को नक़्श व निगार वाले दरवाज़ों से दाख़िल होकर दाईं तरफ़ के कोने पर बहुत ज़्यादा नमाज़ पढ़ते हुए देखकर नौबा बिन सालिम ने पूछा कि आप जो जुमा के दिन बराबर यहाँ अक्सर नमाज़ पढ़ा करते हैं इसकी क्या वजह है? आपने जवाब दिया कि कश्ती-ए-नूह यहीं लगी थी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के साथ कश्ती में बाल-बच्चों समेत कुल अस्सी आदमी थे। एक सौ पचास दिन तक वे सब कश्ती में ही रहे, अल्लाह तआ़ला ने कश्ती का मुँह मक्का शरीफ़ की तरफ़ कर दिया। यहाँ वह चालीस दिन तक बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करती रही। फिर उसे अल्लाह तआ़ला ने जूदी की तरफ़ रवाना कर दिया, वहाँ वह ठहर गई। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कौए को भेजा कि वह ख़ुश्की की ख़बर लाये, वह एक मुर्दार के खाने में लग गया और देर लगा दी। आपने एक कबूतर को भेजा वह अपनी चोंच में ज़ैतून के दरख़्त का पत्ता और पंजों में मिट्टी लेकर वापस आया, इससे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने समझ लिया कि पानी सूख गया है और ज़मीन ज़ाहिर हो गई है। पस आप जूदी के नीचे उतरे और वहीं एक बस्ती की बुनियाद डाल दी, जिसे समानीन कहते हैं।

एक दिन सुबह को जब लोग जागे तो हर एक की ज़बान बदली हुई थी। अस्सी ज़बानें बोलने लगे थे, जिनमें सबसे आला और बेहतरीन अ़रबी ज़बान (भाषा) थी। एक को दूसरे का कलाम समझना मुहाल हो गया। नूह अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने सब ज़बानें सिखा दीं, आप उन सब के दरमियान अनुवादक थे, एक का मतलब दूसरे को समझा देते थे।

हज़रत कअ़बे अहबार फ़रमाते हैं कि कश्ती-ए-नूह पूरब व पश्चिम के दरमियान चल रही थी, फिर जूदी पर ठहर गई। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि रजब की दसवीं तारीख़ को मुसलमान उसमें सवार हुए थे पाँच माह तक उसी में रहे। उन्हें लेकर कश्ती जूदी पर महीने भर तक ठहरी रही। आख़िर मुहर्रम में आ़शूरे के दिन (यानी दस मुहर्रम को) वे सब उसमें से उतरे, इसी क़िस्म की एक मरफ़ूअ़ हदीस भी इब्ने जरीर में है, उन्होंने इस दिन रोज़ा भी रखा। वल्लाहु आलम

मुस्नद अहमद में है कि नबी सल्ल. ने चन्द यहूदियों को आ़शूरा (दस मुहर्रम) के दिन रोज़ा रखते देखकर उनसे इसका सबब दरियाफ़्त फ़रमाया तो उन्होंने कहा कि इसी दिन अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इस्राईल को दरिया से पार उतारा था। और फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम को डुबो दिया था। और इसी दिन कश्ती-ए-नूह जूदी पर लगी थी। पस इन दोनों पैग़म्बरों ने शुक्रे ख़ुदा का रोज़ा इसी दिन रखा था। आपने यह सुनकर फ़रमाया फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम का सबसे ज़्यादा हक़दार मैं हूँ और

इस दिन के रोज़े का मैं ज़्यादा मुस्तहिक़ हूँ। तो आपने उस दिन का रोज़ा रखा और अपने सहाबा से फ़रमाया कि तुम में से जो आज रोज़े से हो वह तो अपना रोज़ा पूरा करे और जो नाश्ता कर चुका हो वह भी बाक़ी दिन कुछ न खाये। यह रिवायत इस सनद से तो ग़रीब है लेकिन इसके बाज़ हिस्सों की ताईद सही हदीस में भी मौजूद है।

फिर इरशाद होता है कि ज़ालिमों को हलाकत और रहमते ख़ुदा से दूरी हुई। वे सब हलाक हुए। उनमें से एक भी बाक़ी न बचा। तफ़सीर इब्ने जरीर और तफ़सीर इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अगर अल्लाह तआ़ला क़ौमे नूह में से किसी पर भी रहम करने वाला होता तो उस बच्चे की माँ पर रहम करता। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम में साढ़े नौ सौ साल तक ठहरे, आपने एक दरख़्त बोया था जो सौ साल तक बढ़ता और बड़ा होता रहा, फिर उसे काटकर तख़्ते बनाकर कश्ती बनानी शुरू की। काफ़िर लोग मज़ाक़ उड़ाते कि यह इस ख़ुश्की में कश्ती कैसे चलायेंगे? आप जवाब देते थे कि जल्द ही अपनी आँखों से देख लोगे। जब आप बना चुके और पानी ज़मीन से उबलने और आसमान से बरसने लगा और गलियाँ व रास्ते पानी से डूबने लगे तो उस बच्चे की माँ जिसे अपने उस बच्चे से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी, वह उसे लेकर पहाड़ की तरफ़ चली गई और जल्दी-जल्दी उस पर चढ़ना शुरू किया, तिहाई हिस्सा चढ़ गई लेकिन जब उसने देखा कि पानी वहाँ भी पहुँच गया तो और ऊपर को चढ़ी, दो तिहाई तक पहुँची, जब वहाँ भी पानी पहुँचा तो उसने चोटी पर जाकर दम लिया, लेकिन पानी वहाँ भी पहुँच गया। जब गर्दन-गर्दन पानी चढ़ गया तो उसने अपने बच्चे को अपने दोनों हाथों में लेकर ऊँचा उठा लिया, लेकिन पानी वहाँ भी पहुँचा और माँ बच्चा दोनों ग़र्क़ हो गये। पस अगर उस दिन कोई काफ़िर बचने वाला होता तो अल्लाह तआ़ला उस बच्चे की माँ पर रहम करता। यह हदीस इस सनद से ग़रीब है, कअ़ब अहबार और मुजाहिद बिन जुबैर से भी इस बच्चे और उसकी माँ का यही क़िस्सा नक़ल किया गया है।

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِیْ مِنْ اَهْلِیْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِیْنَ ۝ قَالَ یٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّیْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَیْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَتَرْحَمْنِیْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ۝

और नूह ने अपने रब को पुकारा और अ़र्ज़ किया कि मेरा यह बेटा मेरे घर वालों में से है, और आपका वायदा बिल्कुल सच्चा है, और आप हाकिमों के हाकिम हैं। (45) (अल्लाह तआ़ला ने) इरशाद फ़रमाया कि ऐ नूह! यह शख़्स तुम्हारे घर वालों में से नहीं, यह तबाह होने वाला है। सो मुझसे ऐसी चीज़ की प्रार्थना मत करो जिसकी तुमको ख़बर नहीं, मैं तुमको नसीहत करता हूँ कि तुम नादान न बन जाओ। (46) उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैं इस (बात) से आपकी पनाह माँगता हूँ कि आपसे ऐसे मामले की दरख़्वास्त करूँ जिस की मुझको ख़बर न हो, और अगर आप मेरी मग़फ़िरत न फ़रमाएँगे और मुझ पर रहम न फ़रमाएँगे तो मैं बिल्कुल ही तबाह हो जाऊँगा। (47)

नबी से रिश्तेदारी भी अल्लाह के अज़ाब से न बचा सकी

याद रहे कि यह दुआ हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की महज़ इस ग़र्ज़ से थी कि आपको सही तौर पर अपने डूबे हुए लड़के का हाल मालूम हो जाये। कहते हैं कि ऐ परवर्दिगार! यह भी ज़ाहिर है कि मेरा लड़का मेरे अहल (अपनों) में से था और मेरे अहल (घर वालों और अपनों) को बचाने का तेरा वादा था, और यह भी नामुम्किन है कि तेरा वादा ग़लत हो। फिर यह मेरा बच्चा कुफ़्फ़ार के साथ कैसे ग़र्क कर दिया गया? जवाब मिला कि तेरे जिस अहल (अपने और घर वालों) को निजात देने का मेरा वादा था उनमें तेरा यह बच्चा दाख़िल न था। मेरा यह वादा ईमान वालों को निजात देने का था, मैं कह चुका था कि:

وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ.

यानी अपने अहल (घर वालों) को तू कश्ती में चढ़ा ले, मगर जिस पर मेरी बात बढ़ चुकी है। यह अपने कुफ़्र की वजह से उन्हीं में से था जो मेरे अज़ली इल्म में कुफ़्र वाले और डूबने वाले मुक़र्रर हो चुके थे।

फ़ायदाः यह भी याद रहे कि जिन लोगों ने कहा है कि यह दर असल हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का लड़का था ही नहीं, क्योंकि आपके नुत्फ़े से न था बल्कि बदकारी से था, और बाज़ों ने कहा है कि यह आपकी बीवी के पहले घर का (यानी दूसरे शौहर से) लड़का था, ये दोनों क़ौल ग़लत हैं। बहुत से बुज़ुर्गों ने साफ़ लफ़्ज़ों में इसे ग़लत कहा है। बल्कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और बहुत से पहले बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है कि किसी नबी की बीवी ने ज़िना नहीं किया। पस यहाँ इस फ़रमान से कि वह तेरे अहल (घर वालों) में से नहीं, यही मतलब है कि तेरे जिस अहल की निजात का मेरा वादा था यह उनमें से नहीं। यही ठीक है और यही क़ौल क़ाबिले क़बूल है, इसके सिवा और कोई तौजीह (वजह बयान करना) बिल्कुल ग़लती है। अल्लाह की ग़ैरत इस बात को क़बूल ही नहीं कर सकती कि अपने किसी नबी के घर में ज़ानिया (बदकार) औरत दे। ख़्याल फ़रमाईये कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में जिन्होंने बोहतान बाँधा था उन पर ख़ुदा तआ़ला किस क़द्र ग़ज़बनाक हुआ था। उस लड़के के अहल में से निकल जाने की वजह ख़ुद क़ुरआने करीम ने बयान कर दी है कि उसके अ़मल नेक न थे। हज़रत इक्रिमा फ़रमाते हैं कि एक क़िराअत 'इन्नहू अ़मि-ल ग़ै-र सालिहिन्' है। मुस्नद की हदीस में हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को 'इन्नहू अ़-मलुन् ग़ैरु सालिहिन्' पढ़ते सुना है, और 'या इबादियल्लज़ी-न अस्रफ़ू अ़ला अन्फ़ुसिहिम्.....' पढ़ते सुना है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सवाल हुआ कि 'फ़-ख़ानताहुमा' का क्या मतलब है? आपने फ़रमाया इससे मुराद ज़िना नहीं, बल्कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की बीवी की ख़ियानत तो यह थी कि लोगों से कहती थी कि यह मजनूँ है। और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी की ख़ियानत यह थी कि जो मेहमान आपके यहाँ आते अपनी क़ौम को ख़बर कर देती। फिर आपने आयत 'इन्नहू अ़-मलुन् ग़ैरु सालिहिन्' पढ़ी।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. से जब हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के लड़के के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया कि ख़ुदा सच्चा है, उसने उसे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का लड़का फ़रमा दिया है। पस वह यक़ीनन हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का असली लड़का ही था, देखो ख़ुदा फ़रमाता है:

Maktaba E Ashraf

وَنَادٰى نُوْحُ نِ ابْنَهٗ.......

कि हज़रत नूह ने अपने बेटे को पुकारा......।

और यह भी याद रहे कि बाज़ उलेमा का क़ौल है कि किसी नबी की बीवी ने कभी ज़िना नहीं किया। ऐसा ही हज़रत मुजाहिद रह. से मन्क़ूल है और यही इब्ने जरीर का पसन्दीदा है और वास्तव में ठीक और सही बात भी यही है।

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ○	कहा गया कि ऐ नूह! उतरो हमारी तरफ़ से सलाम और बरकतें लेकर जो तुम पर नाज़िल होंगी, और उन जमाअ़तों पर जो कि तुम्हारे साथ हैं, और बहुत-सी ऐसी जमाअ़तें भी होंगी कि उनको हम चन्द दिन की ऐश देंगे, फिर उन पर हमारी तरफ़ से सख़्त सज़ा वाक़े होगी। (48)

अल्लाह की सलामती में

कश्ती ठहरी और ख़ुदा का सलाम आप पर और आपके तमाम मोमिन साथियों पर और उनकी औलाद में से क़ियामत तक जो ईमान वाले आने वाले हैं सब पर नाज़िल हुआ। साथ ही काफ़िरों के दुनियावी फ़ायदे से लाभान्वित होने और फिर अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होने का भी ऐलान हुआ। पस यह आयत क़ियामत तक के मोमिनों की सलामती व बरकत पर और काफ़िरों की सज़ा पर नातिक़ (गवाही देने वाली) है। इमाम इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि जब अल्लाह तआ़ला ने तूफ़ान ख़त्म करने का इरादा फ़रमा लिया तो रू-ए-ज़मीन पर एक हवा भेज दी जिसने पानी को साकिन कर दिया और उसका उबलना बन्द हो गया, साथ ही आसमान के दरवाज़े भी जो अब तक पानी बरसा रहे थे बन्द कर दिये गये। ज़मीन को पानी को जज़्ब कर (पी) लेने का हुक्म हो गया, उसी वक़्त पानी कम होना शुरू हो गया। और बक़ौल तौरात वालों के सातवें महीने की सत्रहवीं तारीख़ को कश्ती-ए-नूह जूदी पहाड़ पर लगी। दसवें महीने की पहली तारीख़ को पहाड़ों की चोटियाँ खुल गईं। इसके चालीस दिन के बाद कश्ती के सुराख़ पानी के ऊपर दिखाई देने लगे। फिर आपने कौए को पानी की तहक़ीक़ के लिये भेजा, लेकिन वह पलट कर न आया। आपने कबूतर को भेजा जो वापस आया। अपने पाँव रखने को उसे जगह न मिली, आपने अपने हाथ पर लेकर उसे अन्दर किया। फिर सात दिन के बाद उसे दोबारा भेजा, शाम को वह वापस आया, अपनी चोंच में ज़ैतून का पत्ता लिये हुए था, इससे अल्लाह के नबी ने मालूम कर लिया कि पानी ज़मीन से कुछ ही ऊँचा रह गया है। फिर सात दिन के बाद भेजा, अबकी बार वह न लौटा तो आपने समझ लिया कि ज़मीन बिल्कुल ख़ुश्क हो चुकी। ग़र्ज़ यह कि पूरे एक साल के बाद हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कश्ती का सरपोश उठाया और आवाज़ आई कि ऐ नूह! हमारी नाज़िल की हुई सलामती के साथ अब उतर आओ।

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ	यह क़िस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जिस को हम 'वही' के ज़रिये से आपको पहुँचाते हैं, इसको इससे पहले न आप जानते थे और न

Maktab E Ashraf

आपकी कौम, सो सब्र कीजिए, यकीनन नेक अन्जाम होना मुत्तकियों के लिए है। (49)	هٰذَا ۚ فَاصْبِرْ ۚ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

ع

इल्मे ग़ैब की नफ़ी

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के किस्से और इसी किस्म के पहले गुज़रे वाकिआत वे हैं जो ऐ रसूल! आपके सामने नहीं हुए लेकिन 'वही' के ज़रिये हम आपको उनकी ख़बर दे रहे हैं और आप लोगों के सामने उनकी हकीकत इस तरह खोल रहे हैं कि गोया उनके होने के वक्त वहीं मौजूद थे। इससे पहले न तो आप ही को उनकी कोई ख़बर थी, न आपकी कौम में से कोई और उनका इल्म रखता था, कि किसी को भी कोई गुमान हो कि शायद उससे सीख लिये हों। बस साफ़ बात यह है कि ये अल्लाह की 'वही' से मालूम हुए और ठीक उसी तरह जिस तरह पहली किताबों में मौजूद हैं। पस अब आपको इनके सताने और झुठलाने पर सब्र व तहम्मुल (संयम) करना चाहिये। हम आपकी मदद पर हैं, आपको और आपके ताबेदारों (मानने वालों) को इन पर ग़लबा देंगे, अन्जाम के लिहाज़ से आप ही ग़ालिब रहेंगे। यही तरीका और (यानी दूसरे) पैग़म्बरों का भी रहा।

और हमने आद की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (होने के काबिल) नहीं, तुम (इस बुत-परस्ती के एतिकाद में) बिल्कुल झूठ घड़ने वाले हो। (50) ऐ मेरी कौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कुछ मुआवज़ा नहीं माँगता, मेरा मुआवज़ा तो सिर्फ़ उस (अल्लाह) के ज़िम्मे है जिसने मुझको पैदा किया, फिर क्या तुम नहीं समझते। (51) और ऐ मेरी कौम! तुम अपने गुनाह अपने रब से माफ़ कराओ, फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो, वह तुम पर ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुमको और कुव्वत देकर तुम्हारी कुव्वत में तरक्की कर देगा, और मुजरिम रहकर मुँह मत फेरो। (52)	وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝ يٰقَوْمِ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى الَّذِىْ فَطَرَنِىْ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ۝

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का किस्सा

अल्लाह तआला ने हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को उनकी कौम की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा। उन्होंने कौम को ख़ुदा की तौहीद की दावत दी और उसके सिवा औरों की पूजा-पाठ से रोका, और बतलाया कि जिनको तुम पूजते हो उनकी पूजा ख़ुद तुमने गढ़ ली है, बल्कि उनके नाम और वजूद तुम्हारे ख़्याली

ढकोसले हैं। उनसे कहा कि मैं अपनी नसीहत का कोई बदला और मुआवज़ा तुमसे नहीं चाहता। मेरा सवाब मेरा रब मुझे देगा, जिसने मुझे पैदा किया है। क्या तुम यह मोटी सी बात भी अक़्ल में नहीं लाते कि दुनिया व आख़िरत की भलाई की तुम्हें राह दिखाने वाला तुमसे कोई उजरत तलब करने वाला नहीं, तुम इस्तिग़फ़ार में लग जाओ, पिछले गुनाहों की माफ़ी अल्लाह तआ़ला से तलब करो, तौबा करो और आईन्दा के लिये गुनाहों से रुक जाओ। ये दोनों बातें जिसमें हों अल्लाह तआ़ला उसकी रोज़ी उस पर आसान करता है, उसका काम आसान करता है, उसकी शान की हिफ़ाज़त करता है। सुनो ऐसा करने से तुम पर बारिशें बराबर उम्दा और ज़्यादा बरसेंगी और तुम्हारी क़ुव्वत व ताक़त में दिन दूनी रात चौगुनी बरकतें होंगी। हदीस शरीफ़ में है- जो शख़्स इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से माफ़ी माँगने) को लाज़िम पकड़ ले अल्लाह तआ़ला उसे हर मुश्किल से निजात देता है, हर तंगी से कुशादगी अ़ता फ़रमाता है और रोज़ी तो ऐसी जगह से पहुँचाता है जो ख़ुद उसके भी ख़्वाब व ख़्याल में न हो।

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ٥ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ۭ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ٥ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ٥ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ٥

उन लोगों ने जवाब दिया कि ऐ हूद! आपने हमारे सामने कोई दलील तो पेश नहीं की, और हम आपके कहने से तो अपने माबूदों को छोड़ने वाले नहीं, और हम किसी तरह आपका यक़ीन करने वाले नहीं। (53) हमारा क़ौल तो यह है कि हमारे माबूदों में से किसी ने आपको किसी ख़राबी में मुब्तला कर दिया है। (हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मैं (ऐलानिया) अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी (सुन लो और) गवाह रहो कि मैं उन चीज़ों से बेज़ार हूँ जिनको तुम ख़ुदा के सिवा शरीक क़रार देते हो। (54) सो तुम सब मिलकर मेरे साथ दाव-घात कर लो, फिर मुझको ज़रा भी मोहलत न दो। (55) मैंने अल्लाह पर भरोसा कर लिया है, जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है, जितने (रू-ए-ज़मीन पर) चलने वाले हैं सबकी चोटी उसने पकड़ रखी है। यक़ीनन मेरा रब सीधे रास्ते पर है। (56)

क़ौमे हूद की सरकशी

क़ौमे हूद ने अपने नबी की नसीहत सुनकर जवाब दिया कि आप जिस चीज़ की तरफ़ हमें बुला रहे हैं उसकी कोई दलील व हुज्जत तो हमारे पास आप लाये नहीं। और यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि आप कहें कि अपने माबूदों को छोड़ दो। हम छोड़ ही नहीं सकते, न हम आपको सच्चा मानने वाले हैं, न आप पर

Maktab E Ashraf

ईमान लाने वाले, बल्कि हमारा ख़्याल तो यह है कि चूँकि तू हमें हमारे माबूदों की इबादत से रोक रहा है और उन्हें ऐब लगाता (यानी बुरा कहता) है, इसलिये झुंझलाकर उनमें से किसी की मार तुझ पर पड़ी है, तेरी अक़्ल ख़राब हो गई है। यह सुनकर अल्लाह के नबी ने फ़रमाया- अगर यही है तो सुनो! मैं न सिर्फ़ तुम्हें ही, बल्कि ख़ुदा को भी गवाह करके ऐलान करता हूँ कि मैं ख़ुदा के सिवा जिस-जिसकी इबादत हो रही है सबसे बरी और बेज़ार हूँ। अब तुम ही नहीं बल्कि अपने साथ औरों को भी बुला लो और अपने उन सब झूठे माबूदों को भी बुला लो, और तुमसे जो हो सके मुझे नुक़सान पहुँचा दो, मुझे कोई मोहलत न लेने दो, न मुझ पर कोई तरस खाओ, जो नुक़सान तुम्हारे बस में हो मुझे पहुँचाने में कमी न करो। मेरा तवक्कुल (भरोसा और यक़ीन) अल्लाह की ज़ात पर है, वह मेरा और तुम्हारा सब का मालिक है। नामुम्किन है कि उसकी मंशा के बग़ैर मेरा बिगाड़ कोई भी कर सके। दुनिया भर के जानदार उसके क़ब्ज़े में और उसकी मिल्कियत में हैं, कोई नहीं जो उसके हुक्म से बाहर उसकी बादशाही से अलग हो, वह ज़ालिम नहीं, जो तुम्हारे मन्सूबे पूरे होने दे। वह सही रास्ते पर है, बन्दों की चोटियाँ उसके हाथ में हैं (यानी सब उसी के क़ब्ज़े और हुक्म के ताबे हैं)। मोमिन पर वह इससे भी ज़्यादा मेहरबान है जो मेहरबानी माँ बाप को औलाद पर होती है। वह करीम है, उसके करम की कोई हद नहीं। इसी वजह से बाज़ लोग बहक जाते और ग़ाफ़िल हो जाते हैं।

हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम के इस फ़रमान पर दोबारा ग़ौर कीजिये कि आपने क़ौमे आ़द वालों के लिये अपने इस क़ौल में अल्लाह की तौहीद की बहुत सी दलीलें बयान कर दीं, बतला दिया कि जब ख़ुदा के सिवा कोई नफ़ा नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, जब उसके सिवा किसी चीज़ पर किसी का क़ब्ज़ा नहीं तो फिर वही एक ज़ात इबादत की मुस्तहिक़ ठहरी और जिनकी इबादत तुम उसके सिवा कर रहे हो वे सब बातिल ठहरे। अल्लाह उनसे पाक है, मिल्कियत, अ़मल-दख़ल, क़ब्ज़ा, इख़्तियार सब उसी का है। सब उसी की मातहती में हैं, उसके सिवा कोई माबूद नहीं।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّىْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ حَفِيْظٌ ○ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ○ وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ○ وَاُتْبِعُوْا

फिर अगर तुम फिरे रहोगे तो मैं तो जो पैग़ाम देकर मुझको भेजा गया है, वह तुमको पहुँचा चुका हूँ और तुम्हारी जगह मेरा रब दूसरे लोगों को (ज़मीन में आबाद कर) देगा और उसका तुम कुछ नुक़सान नहीं कर रहे हो, यक़ीनन मेरा रब हर चीज़ की हिफ़ाज़त और देखभाल करता है। (57) और जब (अज़ाब के लिए) हमारा हुक्म पहुँचा तो हमने हूद को और जो उसके साथ ईमान-वाले थे, उनको अपनी इनायत से बचा लिया, और उनको एक सख़्त अज़ाब से बचा लिया। (58) और यह (क़ौम) आ़द थी जिन्होंने अपने रब की आयतों का इनकार किया और उसके रसूल का कहना न माना, और मुकम्मल तौर पर ऐसे लोगों के

Maktaba E Ashraf

فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝	कहने पर चलते रहे जो ज़ालिम (और) ज़िद्दी थे। (59) और इस दुनिया में भी लानत उनके साथ-साथ रही और क़ियामत के दिन भी। ख़ूब सुन लो (क़ौमे) आद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो रहमत से दूरी हुई आद को जो कि हूद की क़ौम थी। (60)

ع ٥

बुरा दिन

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मेरा काम तो पूरा हो चुका, ख़ुदा की रिसालत (पैग़ाम और अहकाम) तुम्हें पहुँचा चुका। अब अगर तुम मुँह मोड़ लो और न मानो तो तुम्हारा वबाल तुम पर ही है, न कि मुझ पर। ख़ुदा में क़ुदरत है कि वह तुम्हारी जगह उन्हें दे जो उसकी तौहीद को मानें और सिर्फ़ उसी की इबादत करें। उसे तुम्हारी कोई परवाह नहीं, तुम्हारा कुफ़्र उसे कोई नुक़सान नहीं देगा बल्कि उसका वबाल तुम पर ही है। मेरा रब बन्दों पर शाहिद (गवाह और उनको देखने वाला) है, उनके अक़वाल व अफ़आल (बातें और आमाल) उसकी निगाह में हैं। आख़िर उन पर अल्लाह तआ़ला का अज़ाब आ गया, ख़ैर व बरकत से ख़ाली, अज़ाब व सज़ा से भरी हुई आँधियाँ उन पर चलने लगीं। उस वक़्त हूद अलैहिस्सलाम और आप पर ईमान लाने वाले लोगों की जमाअ़त ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम और उसके लुत्फ़ व रहम से निजात पा गयी, सज़ाओं से बच गये, सख़्त अ़ज़ाब उन पर से हटा लिये गये। ये थे आ़द क़ौम के लोग, जिन्होंने ख़ुदा के साथ कुफ़्र किया, ख़ुदा के पैग़म्बरों की मानकर न दी। यह याद रहे कि एक नबी का नाफ़रमान तमाम अम्बिया का नाफ़रमान है (यानी ईमान के लिये लाज़िमी है कि अल्लाह तआ़ला के तमाम नबियों के सच्चा होने पर ईमान लाये, अगर किसी एक नबी को सच्चा न जाने और उसका इनकार व नाफ़रमानी करे तो गोया यह तमाम नबियों का इनकार करना है, चूँकि तमाम अम्बिया की बुनियादी तालीम एक ही थी)। ये उन्हीं की मानते रहे जो उनमें ज़िद्दी और सरकश थे, ख़ुदा की और उसके मोमिन बन्दों पर लानत उन पर बरस पड़ी, इस दुनिया में भी उनका ज़िक्र लानत से होने लगा और क़ियामत के दिन भी मैदाने मेहशर में सबके सामने उन पर ख़ुदा की लानत होगी, और ऐलान किया जायेगा कि आ़द वाले ख़ुदा के मुन्किर हैं। हज़रत सुद्दी का क़ौल है कि उनके बाद जितने नबी आये सब उन पर लानत ही करते आये, उनकी ज़बान से ख़ुदा की लानतें भी उन पर होती रहीं।

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝	और हमने समूद के पास उनके भाई सालेह को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। उसने तुमको ज़मीन (के माद्दे) से पैदा किया और उसने तुमको इसमें आबाद किया, तो तुम अपने गुनाह उससे माफ़ कराओ (यानी ईमान लाओ) फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो, बेशक मेरा रब क़रीब है, क़बूल करने वाला है। (61)

Maktab E Ashraf

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम समूद क़ौम वालों की तरफ़ ख़ुदा के रसूल बनाकर भेजे गये थे, क़ौम को आपने ख़ुदा की इबादत करने की और उसके सिवा दूसरों की इबादत से रुकने की नसीहत की। बताया कि इनसान को शुरू में अल्लाह तआला ने मिट्टी से बनाया है, तुम सब के बाप आदम इसी मिट्टी से पैदा हुए। उसी ने अपने फ़ज़्ल से तुम्हें ज़मीन पर बसाया है, कि इसमें गुज़र कर रहे हो। तुम्हें अल्लाह से इस्तिग़फ़ार (अपने गुनाहों की माफ़ी और मग़फ़िरत की तलब) करना चाहिये, उसकी तरफ़ झुके रहना चाहिये। वह बहुत ही क़रीब है, और क़बूल फ़रमाने वाला है।

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰـنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِىْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ○ قَالَ يٰـقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰنِىْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِىْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ○	वे लोग कहने लगे कि ऐ सालेह! तुम तो इससे पहले हममें होनहार थे, क्या तुम हमको उन चीज़ों की इबादत से मना करते हो जिनकी इबादत हमारे बड़े करते आए हैं, और जिस (दीन) की तरफ़ तुम हमको बुला रहे हो वाक़ई हम तो उसकी तरफ़ से बड़े शुब्हे में हैं। जिसने हमको फ़िक्र में डाल रखा है। (62) आपने फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! (भला) यह तो बताओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर हूँ और उसने मुझको अपनी तरफ़ से रहमत (यानी नुबुव्वत) अता फ़रमाई हो, सो अगर मैं उसका कहना न मानूँ तो फिर मुझको ख़ुदा से कौन बचा लेगा? तुम तो सरासर मेरा नुक़सान ही कर रहे हो। (63)

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का जवाब

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम और आपकी क़ौम के बीच जो बातचीत हुई यह उसी का तज़किरा है। वे कहते हैं कि तू यह बात ज़बान से न निकाल, इससे पहले तो हमारी बहुत कुछ उम्मीदें तुझसे जुड़ी हुई थीं, लेकिन तूने उन सब पर पानी फेर दिया और हमें पुरानी रविश और बाप-दादों की चाल और पूजा-पाठ से हटाने का एहतिमाम शुरू कर दिया। हमें तो तेरी इस नई रहबरी से बड़ा भारी शक व शुब्हा है।

आपने फ़रमाया सुनो! मैं ऊँची और पुख़्ता दलील पर हूँ मेरे पास रब की निशानी है, मुझे अपनी सच्चाई पर दिली इत्मीनान है। मेरे पास ख़ुदा की रिसालत और रहमत है। अब अगर मैं तुम्हें उसकी दावत न दूँ, ख़ुदा की नाफ़रमानी करूँ और उसकी इबादत की तरफ़ न बुलाऊँ तो कौन है जो मेरी मदद कर सके? और ख़ुदा के अज़ाब से मुझे बचा सके? मेरा ईमान है कि मख़्लूक़ मेरे काम नहीं आ सकती, तुम मेरे लिये बिल्कुल बेसूद हो, सिवाय मेरे नुक़सान के तुम मेरा कुछ बढ़ा नहीं सकते।

Maktaba E Ashraf

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا
تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۝
فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ
اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ۝ فَلَمَّا
جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ
جٰثِمِيْنَ ۝ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ
ثَمُوْدَا۠ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ۝ ع

और ऐ मेरी क़ौम! (तुम जो मोजिज़ा चाहते थे, सो) यह ऊँटनी है अल्लाह की जो तुम्हारे लिए दलील है। सो इसको छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरा करे, और इसको बुराई के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको फ़ौरी अ़ज़ाब आ पकड़े। (64) सो उन्होंने उसको मार डाला, तो (सालेह अ़लैहि. ने) फ़रमाया कि तुम अपने घरों में तीन दिन और बसर कर लो। और यह ऐसा वायदा है जिसमें ज़रा झूठ नहीं। (65) सो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने सालेह को और जो उनके साथ ईमान वाले थे उनको अपनी इनायत से बचा लिया। और उस दिन की बड़ी रुस्वाई से (बचा लिया), बेशक आपका रब ही बड़ी क़ुव्वत वाला, ग़लबे वाला है। (66) और उन ज़ालिमों को एक नारा "यानी ज़ोर की चीख़" ने आ दबाया, जिससे वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए, जैसे कभी उन घरों में बसे ही न थे। (67) ख़ूब सुन लो समूद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो रहमत से समूद को दूरी हुई। (68)

इन तमाम आयतों की पूरी तफ़सीर और क़ौमे समूद की हलाकत और ऊँटनी के मुफ़स्सल वाक़िआ़त सूरः आराफ़ में बयान हो चुके हैं। यहाँ उसको दोहराने की ज़रूरत नहीं, वहाँ मुलाहिज़ा फ़रमा लें।

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى
قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ
بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ۝ فَلَمَّا رَآٰ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ
اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ
قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى

और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर आए और उन्होंने सलाम किया। उन्होंने (यानी इब्राहीम ने) भी सलाम किया, फिर देर नहीं लगाई कि एक तला हुआ बछड़ा लाए। (69) सो जब उन्होंने (यानी इब्राहीम ने) देखा कि उनके हाथ उस (खाने) तक नहीं बढ़ते तो उनसे घबराहट महसूस की, और उनसे दिल में डर गए। वे (फ़रिश्ते) कहने लगे डरो मत, हम क़ौमे लूत की तरफ़ भेजे गए

Maktab E Ashraf

قَوْمِ لُوْطٍ ۝ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ۭ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ۝ قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ۭ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

हैं। (70) और उनकी (यानी इब्राहीम की) बीवी खड़ी थीं, पस हँसीं। सो हमने उनको इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी दी, और इस्हाक़ के बाद याक़ूब की। (71) कहने लगीं कि हाय ख़ाक पड़े, अब मैं बुढ़िया होकर बच्चा जनूँगी? और यह मेरे मियाँ हैं बिल्कुल बूढ़े, वाक़ई यह भी अजीब बात है। (72) (फ़रिश्तों ने) कहा, क्या तुम ख़ुदा के कामों में ताज्जुब करती हो? और (ख़ास कर) इस ख़ानदान के लोगो! तुम पर तो अल्लाह तआ़ला की (ख़ास) रहमत और उसकी बरकतें हैं, बेशक वह तारीफ़ के लायक़, बड़ी शान वाला है। (73)

अल्लाह के फ़रिश्तों से हज़रत इब्राहीम की एक मुलाक़ात

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास वे फ़रिश्ते बतौर मेहमान इनसानों की शक्ल में आते हैं जो क़ौमे लूत की हलाकत व तबाही की ख़बर और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के यहाँ बेटा होने की ख़ुशख़बरी लेकर ख़ुदा की तरफ़ से आये हैं। वे आकर सलाम करते हैं, आप उनके जवाब में सलाम कहते हैं। सलाम के बाद ही हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उनके सामने खाना पेश करते हैं, बछड़े का गोश्त जिसे गर्म पत्थरों पर सेंक लिया गया था। जब देखा कि आने वाले मेहमानों के हाथ तो बढ़ते ही नहीं, उस वक़्त उनसे कुछ बदगुमान से हो गये और दिल में कुछ ख़ौफ़ खाने लगे।

हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि क़ौमे लूत की हलाकत व तबाही के लिये जो फ़रिश्ते भेजे गये थे वे नौजवान इनसानों की शक्ल में ज़मीन पर आये। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के घर पर उतरे, आपने उन्हें देखकर बड़ी तकरीम (इज़्ज़त व सम्मान) की, जल्दी-जल्दी अपना बछड़ा लेकर उसे गर्म पत्थरों पर सेंक कर ला हाज़िर किया, और ख़ुद भी उनके साथ दस्तरख़्वान पर बैठ गये। आपकी बीवी साहिबा हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अ़न्हा खिलाने पिलाने के काम-काज में लग गईं। ज़ाहिर है कि फ़रिश्ते खाना नहीं खाते, वे खाने से रुक गये और कहने लगे- ऐ इब्राहीम! हम जब तक किसी खाने की क़ीमत न दे दें खाया नहीं करते। आपने फ़रमाया हाँ क़ीमत दे दीजिये, उन्होंने पूछा क्या क़ीमत है? आपने फ़रमाया बिस्मिल्लाह पढ़कर खाना शुरू करना और अल्हम्दु लिल्लाह कहना यही इसकी क़ीमत है। उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत मीकाईल अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ देखा और आपस में कहा कि वास्तव में यह इस क़ाबिल हैं कि अल्लाह तआ़ला इन्हें अपना ख़लील (दोस्त) बनाये। अब भी जो उन्होंने खाना शुरू न किया तो आपके दिल में तरह-तरह के ख़्यालात गुज़रने लगे। हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने देखा कि ख़ुद हज़रत इब्राहीम उनके इकराम में यानी उनके खिलाने की ख़िदमत में हैं लेकिन वे खाना नहीं खाते, तो उन मेहमानों की इस अजीब हालत पर उन्हें बेसाख़्ता हंसी आ गई। हज़रत इब्राहीम को ख़ौफ़ज़दा (डरा हुआ) देखकर फ़रिश्तों ने

Maktaba E Ashraf

कहा आप ख़ौफ़ न कीजिये, अब दहशत दूर करने के लिये असली वाक़िआ खोल दिया कि हम कोई इनसान नहीं, फ़रिश्ते हैं। क़ौमे लूत की तरफ़ भेजे गये हैं कि उन्हें हलाक करें। हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा को क़ौमे लूत की हलाकत की ख़बर ने ख़ुश कर दिया। उसी वक़्त उन्हें एक दूसरी ख़ुशख़बरी मिली कि इस नाउम्मीदी की उम्र में तुम्हारे यहाँ बच्चा होगा, उन्हें यह भी ताज्जुब था कि जिस क़ौम पर अ़ज़ाब उतर रहा है वह पूरी ग़फ़लत में है। ग़र्ज़ फ़रिश्तों ने आपको इस्हाक़ नाम का बच्चा होने की बशारत (ख़ुशख़बरी) दी। और फिर इस्हाक़ के यहाँ याक़ूब के होने की भी साथ ही ख़ुशख़बरी सुनाई।

इस आयत से इस बात पर इस्तिदलाल किया गया है कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम थे क्योंकि हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की तो बशारत दी गई थी और साथ ही उनके यहाँ भी औलाद होने की बशारत दी गई थी। यह सुनकर हज़रत सारा अ़लैहस्सलाम ने औरतों की आ़म आ़दत के मुताबिक़ इस पर ताज्जुब ज़ाहिर किया कि मियाँ-बीवी दोनों के इस बढ़े हुए बुढ़ापे में औलाद कैसी? यह तो सख़्त हैरत की बात है। फ़रिश्तों ने कहा कि अल्लाह के मामले में क्या हैरत? तुम दोनों को इस उम्र ही में ख़ुदा बेटा देगा, अगरचे तुमसे आज तक कोई औलाद नहीं हुई और तुम्हारे मियाँ की उम्र भी ढल चुकी है, लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत में कमी नहीं। वह जो चाहे होकर रहता है। ऐ नबी के घर वालो! तुम पर अल्लाह की रहमतें और उसकी बरकतें हैं, तुम्हें उसकी क़ुदरत में ताज्जुब न करना चाहिये। अल्लाह तआ़ला तारीफ़ों वाला और बुज़ुर्ग है।

फ़लम्मा ज़-ह-ब अ़न् इब्राहीमर्रौ़उ व जाअत्हुल्-बुश्रा युजादिलुना फ़ी क़ौमि लूत ○	فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ○ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ○ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ○

फिर जब इब्राहीम का वह ख़ौफ़ ख़त्म हो गया और उनको ख़ुशी की ख़बर मिली तो हमसे लूत की क़ौम के बारे में झगड़ा करना शुरू किया। (74) वाक़ई इब्राहीम बड़े बरदाश्त करने वाले और नर्म दिल वाले थे। (75) ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो, तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुँचा है, और उन पर ज़रूर ऐसा अज़ाब आने वाला है जो किसी तरह हटने वाला नहीं। (76)

इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का इसरार

मेहमानों के खाना न खाने की वजह से हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के दिल में जो दहशत (घबराहट) हो गई थी उनका हाल खुल जाने पर वह दूर हो गई। फिर आपने अपने यहाँ लड़का होने की ख़ुशख़बरी भी सुन ली और यह भी मालूम हो गया कि ये फ़रिश्ते क़ौमे लूत की हलाकत के लिये भेजे गये हैं। तो आप फ़रमाने लगे- अगर किसी बस्ती में तीन सौ मोमिन हों क्या फिर भी वह बस्ती हलाक हो जायेगी? हज़रत जिब्राईल और उनके साथियों ने जवाब दिया कि नहीं! फिर पूछा कि अगर चालीस हों? जवाब मिला फिर भी नहीं। दरियाफ़्त फ़रमाया अगर तीस हों? कहा गया फिर भी नहीं। यहाँ तक कि तादाद घटाते-घटाते पाँच के बारे में पूछा, फ़रिश्तों ने यही जवाब दिया, फिर एक ही के बारे में सवाल किया और यही जवाब मिला तो आपने फ़रमाया फिर उस बस्ती को हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की मौजूदगी में

Maktaba E Ashraf

तुम कैसे हलाक करोगे? फ़रिश्तों ने कहा हमें वहाँ हज़रत लूत की मौजूदगी का इल्म है, उसे और उसकी अहल (घर वालों) को सिवाय उसकी बीवी के हम बचा लेंगे। अब आपको इत्मीनान हुआ और ख़ामोश हो गये। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बुर्दबार, नर्म-दिल और रहम-दिल थे।

इस आयत की तफ़सीर पहले गुज़र चुकी है। अल्लाह तआ़ला ने अपने पैग़म्बर की बेहतरीन सिफ़ात बयान फ़रमाई हैं। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की इस गुफ़्तगू और सिफ़ारिश के जवाब में अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हुआ कि अब आप इससे निगाह फेर लीजिये। अल्लाह का हुक्म और उसकी तक़दीर नाफ़िज़ व जारी हो गई। अब अ़ज़ाब आयेगा और वह लौटाया न जायेगा।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ۝ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۙ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۙ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۙ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝

और जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के पास आए तो वह (यानी लूत अ़लैहिस्सलाम) उनकी वजह से ग़मगीन हुए और उनके आने के सबब तंगदिल हुए और कहने लगे कि आज का दिन बहुत भारी है। (77) और उनकी क़ौम उनके पास दौड़ी हुई आई, और वे पहले से नामाक़ूल हरकतें किया ही करते थे। वह (यानी लूत) फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी क़ौम! ये मेरी (बहू) बेटियाँ (जो तुम्हारे घरों में मौजूद) हैं, वे तुम्हारे लिए (अच्छी)-ख़ासी हैं, सो अल्लाह तआ़ला से डरो और मेरे मेहमानों में मुझको रुस्वा और फ़ज़ीहत मत करो। क्या तुममें कोई भी (माक़ूल आदमी और) भला मानस नहीं? (78) वे लोग कहने लगे कि आपको तो मालूम है कि हमको आपकी (बहू) बेटियों की ज़रूरत नहीं, और आपको तो मालूम है जो हमारा मतलब है। (79)

क़ौमे लूत अ़ज़ाब के जाल में

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को ये फ़रिश्ते अपना भेद बताकर वहाँ से चल दिये और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के पास उनकी ज़मीन में या उनके मकान में पहुँचे। ये नौजवान ख़ूबसूरत लड़कों की शक्ल में थे ताकि क़ौमे लूत की पूरी आज़माईश हो जाये। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम इन मेहमानों को देखकर क़ौम की हालत सामने रखकर हैरान हो गये, दिल ही दिल में पसोपेश में पड़ गये कि अगर इन्हें मेहमान बनाता हूँ तो मुम्किन है कि ख़बर पाकर लोग चढ़ दौड़ें, और अगर मेहमान नहीं रखता तो ये उन्हीं के हाथ पड़ जायेंगे। ज़बान से भी निकल गया कि आजका दिन बड़ा भारी दिन है। क़ौम वाले अपनी शरारत से बाज़ नहीं आयेंगे, मुझमें उनके मुक़ाबले की ताक़त नहीं, क्या होगा? क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत लूत

अ़लैहिस्सलाम अपनी ज़मीन में थे कि ये फ़रिश्ते इनसानों की शक्ल में आये और उनके मेहमान बने। तबई शराफ़त की वजह से हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम इनकार तो न कर सके और उन्हें लेकर घर चले, रास्ते में सिर्फ़ इस नीयत से कि ये अब भी वापस चले जायेंगे उनसे कहा कि ख़ुदा की क़सम! यहाँ के लोगों से ज़्यादा बुरे और ख़बीस लोग और कहीं के नहीं हैं। कुछ दूर जाकर फिर यही कहा, ग़र्ज़ घर तक चार बार यही कहा। फ़रिश्तों को ख़ुदा का हुक्म भी यही था कि जब तक उनका नबी उनकी बुराई बयान न करे उन्हें हलाक न करना। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास से चलकर दोपहर को ये फ़रिश्ते नहरे सद्दूम पहुँचे, वहाँ हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की बेटी जो पानी लेने गई थीं मिल गईं, उनसे उन्होंने पूछा कि यहाँ हम ठहर सकते हैं? उसने कहा कि आप यहीं रुकिये मैं वापस आकर जवाब दूँगी। उन्हें डर लगा कि अगर क़ौम वालों के हाथ ये लग गये तो इनकी बड़ी बेइज़्ज़ती होगी। यहाँ आकर वालिद साहिब से ज़िक्र किया कि शहर के दरवाज़े पर चन्द परदेसी नौउम्र लोग हैं, उन जैसे मैंने तो आज तक नहीं देखे। जाओ और उन्हें ठहराओ, वरना क़ौम वाले उन्हें सतायेंगे।

उस बस्ती के लोगों ने हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को कह रखा था कि देखो किसी बाहर वाले को तुम अपने यहाँ ठहराया न करो, हम ख़ुद सब कुछ कर लिया करेंगे। आपने जब यह हालत सुनी तो जाकर चुपके से उन्हें अपने घर ले आये, किसी को ख़बर न होने दी। मगर आपकी बीवी जो क़ौम से मिली हुई थी, उसी के ज़रिये बात ज़ाहिर हो गई। अब क्या था, दौड़े भागे आ गये, जिसे देखो ख़ुशियाँ मनाता जल्दी जल्दी लपकता चला आता है, उनकी तो यह ख़स्लत हो गई थी, इस बदकारी को तो गोया उन्होंने आ़दत बना ली थी। उस वक़्त अल्लाह के नबी उन्हें नसीहत करने लगे कि तुम इस बुरी ख़स्लत को छोड़ो, अपनी ख़्वाहिशें (काम-इच्छा) औ़रतों से पूरी करो।

'बनाती' यानी मेरी लड़कियाँ इसलिये फ़रमाया कि हर नबी अपनी उम्मत का गोया बाप होता है। क़ुरआने करीम की दूसरी आयत में है कि उस वक़्त उन्होंने कहा था कि हम तो पहले ही आपको मना कर चुके थे कि किसी को अपने यहाँ न ठहराया करो। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें समझाया। दुनिया व आख़िरत की भलाई उन्हें समझाई और कहा कि औ़रतें ही इस बात के लिये मुनासिब और बेहतर हैं, उनसे निकाह करके अपनी ख़्वाहिश पूरी करना ही पाक काम है।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यह न समझा जाये कि आपने अपनी लड़कियों के बारे में यह फ़रमाया था, नहीं! बल्कि नबी अपनी पूरी उम्मत का गोया बाप होता है। क़तादा रह. वग़ैरह से भी यही मन्क़ूल है। इमाम इब्ने जुरैज फ़रमाते हैं कि यह भी न समझना चाहिये कि हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने औ़रतों से बिना निकाह के मिलाप करने को फ़रमाया हो, नहीं! मतलब आपका उनसे निकाह कर लेने के हुक्म का था। फ़रमाते हैं कि अल्लाह से डरो, मेरा कहा मानो, औ़रतों की तरफ़ रग़बत (चाव) करो, उनसे निकाह करके अपनी ज़रूरत व इच्छा पूरी करो। मर्दों की तरफ़ इस काम की दिलचस्पी से न आओ। और ख़ुसूसन ये तो मेरे मेहमान हैं, मेरी इज़्ज़त का ख़्याल करो, क्या तुम में एक भी समझदार, नेक, सही राह वाला, भला आदमी नहीं? इसके जवाब में उन सरकशों ने कहा कि हमें औ़रतों से कोई सरोकार ही नहीं, यहाँ भी "बनाति-क" यानी तेरी लड़कियों के लफ़्ज़ से मुराद क़ौम की औ़रतें हैं। और तुझे मालूम है कि हमारा इरादा क्या है? यानी हमारा इरादा इन लड़कों से मिलने का है। फिर झगड़ा और नसीहत बेसूद है।

قَالَ لَوْ اَنَّ لِیْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِیْۤ اِلٰی رُكْنٍ شَدِیْدٍ ۝ قَالُوْا یٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ یَّصِلُوْۤا اِلَیْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّیْلِ وَلَا یَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِیْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَیْسَ الصُّبْحُ بِقَرِیْبٍ ۝

वह (यानी लूत) फ़रमाने लगे, क्या ख़ूब होता अगर मेरा तुम पर कुछ ज़ोर चलता, या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह पकड़ता। (80) वे (फ़रिश्ते) कहने लगे कि ऐ लूत! हम तो आपके रब के भेजे हुए (फ़रिश्ते) हैं, आप तक हरगिज़ उनकी रसाई न होगी, सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर चलिए, और तुममें से कोई (पीछे) फिरकर भी न देखे, (हाँ) मगर आपकी बीवी (न जाएगी) उस पर भी वही (आफ़त) आने वाली है जो और लोगों पर आएगी। उनके वायदे का वक़्त सुबह (का वक़्त) है, क्या सुबह (का वक़्त) क़रीब नहीं? (81)

क़ौमे लूत तबाही के शिकंजे में

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने जब देखा कि मेरी नसीहत उन पर असर नहीं करती तो उन्हें धमकाया कि अगर मुझमें क़ुव्वत व ताक़त होती या मेरा कुनबा या क़बीला ताक़तवर होता तो मैं तुम्हें तुम्हारी इस शरारत का मज़ा चखा देता। रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक हदीस में फ़रमाया है कि अल्लाह की रहमत हो हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम पर कि वह ज़ोरावर क़ौम की पनाह लेना चाहते थे। मुराद इससे अल्लाह तआ़ला की ज़ात है। आपके बाद फिर जो पैग़म्बर भेजा गया वह अपनी क़ौम के दायरे में ही भेजा गया। उनकी इस मायूसी, पूरे रंज व मलाल और सख़्त तंगदिली के वक़्त फ़रिश्तों ने ज़ाहिर कर दिया कि हम अल्लाह के भेजे हुए हैं। ये लोग हम तक या आप तक पहुँच ही नहीं सकते। आप रात के आख़िरी हिस्से में अपने अहल व अ़याल (घर वालों और बाल-बच्चों) को लेकर यहाँ से निकल जाईये। ख़ुद उन सब के पीछे रहिये और सीधे अपनी राह चले जाईये। क़ौम वालों की आह व पुकार पर उनके चीख़ने चिल्लाने पर उन्हें मुड़कर भी न देखना चाहिये। फिर हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी को इस हुक्म से अलग कर दिया, कि वह इस हुक्म की पाबन्दी न कर सकेगी। वह अ़ज़ाब के वक़्त क़ौम की हाय-वाय सुनकर मुड़कर देखेगी इसलिये कि ख़ुदा की तक़दीर में उसका भी उनके साथ हलाक होना तय हो चुका है।

कुछ लोगों का ख़्याल है कि आपकी बीवी भी यहाँ से निकलने में आपके साथ थी लेकिन अ़ज़ाब के नाज़िल होने पर क़ौम का शोर सुनकर सब्र न कर सकी, मुड़कर उनकी तरफ़ देखा और ज़बान से निकल गया कि हाय मेरी क़ौम! उसी वक़्त आसमान से एक पत्थर उस पर भी आया और उसको भी ढेर कर गया। हज़रत लूत की और ज़्यादा तसल्ली के लिये फ़रिश्तों ने उस ख़बीस क़ौम की हलाकत का वक़्त भी बयान कर दिया था कि सुबह होते ही ये तबाह हो जायेंगे और सुबह अब बिल्कुल क़रीब है, ये अ़क़्ल के अन्धे आपका घर घेरे हुए थे और हर तरफ़ से लपकते हुए आ पहुँचे थे। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम दरवाज़े पर खड़े हुए उन लूतियों (बदफ़ेली करने वालों) को रोक रहे थे, जब किसी तरह वे न माने और हज़रत लूत

Maktab-E-Ashraf

अलैहिस्सलाम परेशान होकर तंग आ गये, उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम घर में से निकले और उनके मुँह पर अपना पर मारा, जिससे उनकी आँखें अंधी हो गईं।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि. का बयान है कि ख़ुद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी उन लोगों के पास आते, उन्हें समझाते कि देखो अज़ाबे ख़ुदा न ख़रीदो, मगर उन्होंने अल्लाह के ख़लील की भी न मान कर दी, यहाँ तक कि अज़ाब आने का वक़्त आ पहुँचा। फ़रिश्ते हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के पास आये, आप उस वक़्त अपने खेत में काम कर रहे थे, उन्होंने कहा कि आजकी रात हम आपके मेहमान हैं। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को फ़रमाने ख़ुदा हो चुका था कि जब तक हज़रत लूत तीन बार उनकी बदचलनी की शहादत (गवाही) न दे लें उन पर अज़ाब न किया जाये। आप जब उन्हें लेकर चले तो चलते ही ख़बर दी कि यहाँ के लोग बड़े बद हैं। यह-यह बुराई उनमें घुसी हुई है। कुछ दूर और जाने के बाद दोबारा कहा कि क्या तुम्हें इस बस्ती के लोगों की बुराई की ख़बर नहीं? मेरे इल्म में तो रू-ए-ज़मीन पर इनसे ज़्यादा बुरे लोग नहीं। आह मैं तुम्हें कहाँ ले जाऊँ? मेरी क़ौम तो तमाम मख़्लूक़ से बदतर है। उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों से कहा कि देखो दो बार यह कह चुके हैं। जब इन्हें लेकर आप अपने घर के दरवाज़े पर पहुँचे तो रंज व अफ़सोस से रो दिये और कहने लगे मेरी क़ौम तमाम मख़्लूक़ से बदतर है। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि ये किस बदी में मुब्तला हैं? रू-ए-ज़मीन पर कोई बस्ती इस बस्ती से बुरी नहीं। उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फिर फ़रिश्तों से फ़रमाया कि देखो तीन बार यह अपनी क़ौम की बदचलनी की शहादत (गवाही) दे चुके, याद रखना अब अज़ाब तय हो चुका।

घर में गये और यहाँ से आपकी बुढ़िया बीवी ऊँची जगह पर चढ़कर कपड़ा हिलाने लगी, जिसे देखते ही बस्ती के बदकार दौड़ पड़े। पूछा क्या बात है? उसने कहा लूत के यहाँ मेहमान आये हैं। मैंने तो उनसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और उनसे ज़्यादा ख़ुशबू वाले लोग कभी देखे ही नहीं। अब क्या था ये ख़ुशी-ख़ुशी मुट्ठियाँ बन्द किये दौड़ते भागते हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के घर गये। हर तरफ़ से आपको घेर लिया। आपने उन्हें क़समें दीं, नसीहतें कीं, फ़रमाया कि औरतें बहुत हैं, लेकिन वे अपनी शरारत और अपने इरादे से बाज़ न आये। उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से उनके अज़ाब की इजाज़त चाही, ख़ुदा की जानिब से इजाज़त मिल गई। आपने असली सूरत का पर खोल दिया। आपके दो पर हैं जिन पर मोतियों का जड़ाव है। आपके दाँत साफ़ चमकते हुए हैं। आपकी पेशानी (माथा) ऊँची और बड़ी है। मरजान (मोती) की तरह के दाने हैं जो लुअ्-लुअ् (हीरे और मोतियों जैसे) हैं और आपके पाँव सब्ज़ी की तरह हैं।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से आपने फ़रमा दिया कि हम तो तेरे परवर्दिगार के भेजे हुए हैं। ये लोग तुझ तक पहुँच नहीं सकते। आप इस दरवाज़े से निकल जाईये। यह कहकर उनके मुँह पर अपना पर मारा जिससे वे अन्धे हो गये। रास्तों तक को नहीं पहचान सकते थे। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम अपने अहल (घर वालों) को लेकर रातों रात चल दिये। यही ख़ुदा का हुक्म भी था। मुहम्मद बिन कअ़ब, क़तादा, सुद्दी रह. वग़ैरह का यही बयान है।

सो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने उस ज़मीन (को उलटकर उस) का ऊपर का तख़्ता तो नीचे कर दिया (और नीचे का ऊपर) और	فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ

Maktab E Ashraf

مَّنْضُوْدٍ ۝ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۚ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ۝	उस ज़मीन पर खंगर के पत्थर (झाँवे) "यानी जली हुई ईंटों के टुकड़े" बरसाना शुरू किए (जो) लगातार (गिर रहे थे), (82) जिन पर आपके रब के पास का ख़ास निशान भी था। और ये (बस्तियाँ) उन ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं हैं। (83)

आख़िरकार दुनिया इस नापाक क़ौम के वजूद से पाक हो गई

सूरज के निकलने के वक़्त अज़ाबे ख़ुदा उन पर आ गया और उनकी बस्ती सदूम नाम की अस्त-व्यस्त हो गई। अज़ाब ने ऊपर तले से ढाँक लिया, आसमानों से पत्थर पक्की मिट्टी के उन पर बरसने लगे, जो सख़्त और वज़नी और बहुत बड़े-बड़े थे। सही बुख़ारी शरीफ़ में है 'सिज्जीन' और 'सिज्जील' दोनों एक ही हैं। 'मन्ज़ूद' से मुराद लगातार और एक के बाद दूसरे के हैं। उन पत्थरों पर क़ुदरती तौर से उनके नाम लिखे हुए थे, जिसके नाम का पत्थर था उसी पर गिरता था। वे तौक़ की तरह के थे, जो सुर्ख़ी में डूबे हुए थे। ये उन शहरियों पर भी बरसे और यहाँ के जो लोग दूसरे गाँवों और बस्तियों में थे उन पर भी वहीं गिरे। उनमें से जो जहाँ था वहीं पत्थर से हलाक किया गया, कोई खड़ा हुआ किसी जगह किसी से बातें कर रहा है वहीं आसमान से पत्थर आया और उसे हलाक कर गया। ग़र्ज़ उनमें से एक भी न बचा।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने उन सब को जमा करके उनके मकानात और मवेशियों समेत ऊँचा उठा लिया, यहाँ तक कि उनके कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें आसमान के फ़रिश्तों ने सुन लीं। आप अपने दाहिने पर के किनारे पर उनकी बस्ती को उठाये हुए थे, फिर उन्हें ज़मीन पर उलट दिया, एक को दूसरे से टकरा दिया और सब एक साथ ग़ारत हो गये। इक्के दुक्के जो रह गये थे उनके भेजे आसमानी पत्थरों से फोड़ दिये और बिल्कुल बेनाम व निशान कर दिये। ज़िक्र किया गया है कि उनकी चार बस्तियाँ थीं, हर बस्ती में एक-एक लाख आदमियों की आबादी थी। एक रिवायत में है कि तीन बस्तियाँ थीं। बड़ी बस्ती का नाम सदूम था, यहाँ कभी-कभी ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम भी आकर वअ़ज़ व नसीहत फ़रमाया करते थे। फिर फ़रमाता है कि ये चीज़ें कुछ उनसे दूर न थीं। सुनन की हदीस में है कि किसी को अगर तुम लवातत (बदफ़ेली) करता हुआ पाओ तो ऊपर वाले नीचे वाले (यानी इस बुरे काम को करने वाले और कराने वाले) दोनों को क़त्ल कर दो।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ	और हमने मद्यन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और तुम नाप और तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको फ़रागत

Maktaba E Ashraf

की हालत में देखता हूँ और मुझको तुम पर ऐसे दिन के अज़ाब का अन्देशा है जो (किस्म किस्म की मुसीबतों) जामे (यानी बहुत सी मुसीबतों को अपने अन्दर लिये हुए) होगा। (84)	بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ○

एक और बद-क़िस्मत क़ौम

अरब का एक क़बीला जो हिजाज़ व शाम के दरमियान मआन के क़रीब रहता था, उनके शहरों का और उनका नाम मद्यन था। उनकी जानिब अल्लाह तआला के नबी हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम भेजे गये। आप उनमें सबसे आला नसब और ऊँचे ख़ानदान के थे, और उन्हीं में से थे, इसी लिये 'अख़ाहुम' के लफ़्ज़ से बयान किया यानी उनके भाई। आपने भी अम्बिया की आदत, सुन्नत और अल्लाह तआला के पहले और ताकीदी हुक्म के मुताबिक़ अपनी क़ौम को एक अल्लाह की इबादत करने का हुक्म दिया, साथ ही नाप तौल में कमी से रोका कि किसी का हक़ न मारो, और ख़ुदा का यह एहसान याद दिलाया कि उसने तुम्हें ख़ुशहाल बना रखा है, और अपनी आशंका ज़ाहिर की कि अपनी मुश्रिकाना रविश और ज़ालिमाना हरकत से अगर बाज़ न आओगे तो तुम्हारी यह अच्छी हालत बदहाली से बदल जायेगी।

और ऐ मेरी क़ौम! तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ़ से, और लोगों का उनकी चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और ज़मीन में फ़साद करते हुए हद से न निकलो। (85) अल्लाह का दिया हुआ जो कुछ बच जाए वह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है, अगर तुमको यक़ीन आए, और मैं तुम्हारा पहरा देने वाला तो हूँ नहीं। (86)	وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ○ بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ○

लाजवाब नसीहतें

पहले तो अपनी क़ौम को नाप-तौल में कमी से रोका, अब लेन-देन के दोनों वक़्त अदल व इन्साफ़ के साथ पूरे-पूरे नाप-तौल का हुक्म देते हैं और ज़मीन में बिगाड़ और तबाही मचाने से मना करते हैं। उनमें रास्तों में लूट-मार करने और डाके डालने की बुरी ख़सलत भी थी। लोगों के हक़ मारकर ख़ुद नफ़ा उठाने से ख़ुदा का दिया हुआ नफ़ा बहुत बेहतर है। अल्लाह की यह वसीयत तुम्हारे लिये ख़ैरियत (अच्छाई और भलाई) लिये हुए है। अज़ाब से जैसे हलाकत होती है उसके मुक़ाबले में रहमत से ज़िन्दगी होती है। ठीक तौलकर पूरा नापकर हलाल से जो नफ़ा मिले उसी में बरकत होती है। बुरे और पाक में क्या बराबरी? देखो मैं तुम्हें हर वक़्त देख नहीं रहा, तुम्हें बुराईयों का छोड़ना और नेकियों का करना अल्लाह ही के लिये करना चाहिये, न कि दुनिया-दिखावे के लिये।

Maktaba Ashraf

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ۭ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ۝	वे कहने लगे कि ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी पाकबाज़ी तुमको तालीम कर रही है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी परस्तिश "यानी पूजा और इबादत" हमारे बड़े करते आए हैं या (इस बात को छोड़ दें कि) हम अपने माल में जो चाहें तसर्रुफ़ करें। वाक़ई आप हैं बड़े अक़्ल-मन्द, दीन पर चलने वाले। (87)

कैसी बेहूदा बात

हज़रत आमश रह. फ़रमाते हैं कि 'सलात' (नमाज़) से मुराद यहाँ 'क़िराअत' (पढ़ना) है। वे लोग मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर कहते हैं कि वाह आप अच्छे रहे कि आपको आपकी क़िराअत ने हुक्म दिया कि हम बाप-दादों की रविश छोड़कर अपने पुराने माबूदों की इबादत से अलग हो जायें। और यह भी ख़ूब है कि हम अपने माल के भी मालिक न रहें कि जिस तरह जो चाहें उसमें कमी करें धरें। किसी को नाप-तौल में कम न दें। हज़रत हसन फ़रमाते हैं- अल्लाह की कसम हक़ीक़त यही है कि हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की नमाज़ का हुक्म यही था कि आप उन्हें ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अ़लावा) की इबादत और मख़्लूक़ के हुक़ूक़ के ग़सब (दबाने और मारने) से रोकें। सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि उनके इस क़ौल का मतलब कि जो हम चाहें अपने मालों में करें, यह है कि ज़कात क्यों दें? अल्लाह के नबी को उनका बुर्दबार व दीन पर चलने वाले कहना मज़ाक़ व अपमान के तौर पर था।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ۭ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۭ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝	शुऐब ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! भला यह बताओ कि अगर मैं अपने रब की तरफ़ से दलील पर हूँ और उसने मुझको अपनी तरफ़ से एक उम्दा दौलत (यानी नुबुव्वत) दी हो (तो फिर कैसे तब्लीग़ न करूँ) और मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारे बरख़िलाफ़ उन कामों को करूँ जिनसे मैं तुमको मना करता हूँ, मैं तो इस्लाह "यानी सुधार" चाहता हूँ जहाँ तक मेरे बस में है, और मुझको जो कुछ तौफ़ीक़ हो जाती है सिर्फ़ अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मैं भरोसा रखता हूँ और उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ। (88)

बेज़ारी का ऐलान

आप अपनी क़ौम से फ़रमाते हैं कि देखो मैं अपने रब की तरफ़ से दलील व हुज्जत और यक़ीनी चीज़

पर क़ायम हूँ और उसी की तरफ़ तुम्हें बुला रहा हूँ। उसने अपनी मेहरबानी से मुझे बेहतरीन रोज़ी दे रखी है, यानी नुबुव्वत या रिज़्क़े हलाल, या दोनों। मेरी रविश (तरीक़ा) तुम यह न पाओगे कि तुम्हें तो भली बात का हुक्म करूँ और ख़ुद तुमसे छुपकर उसके ख़िलाफ़ करूँ (यानी मेरे क़ौल व अ़मल में विरोधाभास न पाओगे)। मेरी मुराद तो अपनी ताक़त के मुताबिक़ इस्लाह करनी है। हाँ मेरे इरादे की कामयाबी ख़ुदा के हाथ है। उसी पर मेरा भरोसा और तवक्कुल है और उसी की तरफ़ रुजू, तवज्जोह और झुकना है।

मुस्नद अहमद में है, हकीम बिन मुआ़विया अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उसके भाई मालिक ने कहा- ऐ मुआ़विया! रसूलुल्लाह सल्ल. ने मेरे पड़ोसियों को गिरफ़्तार कर रखा है, तुम आपके पास जाओ, आपसे तुम्हारी बातचीत भी हो चुकी है और तुम्हें आप पहचानते भी हैं। पस मैं उसके साथ चला, उसने कहा कि मेरे पड़ोसियों को आप रिहा कर दीजिये वे मुसलमान हो चुके थे। आपने उससे मुँह फेर लिया, वह गुस्से और नाराज़गी से उठ खड़ा हुआ और कहने लगा वल्लाह अगर आपने यह कहा तो लोग तो कहते हैं कि तू हमें किसी बात का हुक्म देता है और तू ख़ुद उसके ख़िलाफ़ करता है। इस पर आपने फ़रमाया क्या लोगों ने ऐसी बात ज़बान से निकाली है? अगर मैं ऐसा करूँ तो उसका वबाल मुझ पर ही है, उन पर तो कोई चीज़ नहीं। जाओ इसके पड़ोसियों को छोड़ दो।

एक और रिवायत में है कि उसकी क़ौम के चन्द लोग किसी शुब्हे में गिरफ़्तार थे। इस पर क़ौम का एक आदमी आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. ख़ुतबा दे रहे थे। उसने कहा- लोग कहते हैं कि आप किसी चीज़ से रोकते हैं और ख़ुद उसे करते हैं? आपने समझा नहीं, इसलिये पूछा लोग क्या कहते हैं? हज़रत बहज़ बिन हकीम के दादा कहते हैं कि मैंने बीच में बोलना शुरू कर दिया ताकि अच्छा है आपके कान में ये अलफ़ाज़ न पड़ें, कहीं ऐसा न हो कि आपके मुँह से मेरी क़ौम के लिये कोई बद्दुआ निकल जाये कि फिर उन्हें फ़लाह न मिले, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल. बराबर इसी कोशिश में रहे यहाँ तक कि आपने उसकी बात समझ ली और फ़रमाने लगे क्या उन्होंने ऐसी बात ज़बान से निकाल दी? या उनमें से कोई इसका क़ायल है? वल्लाह अगर मैं ऐसा करूँ तो उसका बोझ-भार मेरे ज़िम्मे है, उन पर कुछ नहीं। इसके पड़ोसियों को छोड़ दो। इसी तरह की वह हदीस भी है जिसे मुस्नद अहमद में लाये हैं कि आपने फ़रमाया- जब तुम मेरी जानिब से कोई ऐसी हदीस सुनो कि तुम्हारे दिल उसका इनकार करें और तुम्हारे बदन और बाल उससे किनारा करें और तुम समझ लो कि वह तुमसे बहुत दूर है तो मैं इससे भी ज़्यादा उससे दूर हूँ (यानी हदीस की तालीम भी ख़िलाफ़े अ़क़्ल नहीं, हाँ अ़क़्ले सलीम का होना ज़रूरी है)। इसकी सनद सही है।

हज़रत मसरूक़ रह. कहते हैं कि एक औरत हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास आई और कहने लगी- क्या आप बालों में बाल लगाने को मना करते हैं? (यानी नक़ली बाल लगाने को ताकि बाल ज़्यादा मालूम हों)। आपने फ़रमाया हाँ। उसने कहा आपके घर की कुछ औरतें तो ऐसा करती हैं। आपने फ़रमाया अगर ऐसा हो तो मैंने ख़ुदा के नेक बन्दे की वसीयत की हिफ़ाज़त नहीं की। मेरा इरादा नहीं कि जिस चीज़ से तुम्हें रोकूँ उसे ख़ुद करूँ। हज़रत अबू सुलैमान ज़ब्बी कहते हैं कि हमारे पास अमीरुल-मोमिनीन हज़रत इब्ने अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. के रिसाले (पत्र) आते थे जिनमें अहकाम का हुक्म और बाज़ चीज़ों की मनाही दर्ज होती थी। और आख़िर में यह हुआ करता था कि मैं भी उसमें वही हूँ जो ख़ुदा के नेक बन्दे (यानी अल्लाह के नबी सल्ल.) ने फ़रमाया कि मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही के फ़ज़्ल से है, उसी पर मेरा तवक्कुल (भरोसा और यक़ीन) है और उसी की तरफ़ मैं रुजू करता हूँ।

Maktab E Ashraf

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝	और ऐ मेरी कौम! मेरी ज़िद 'और विरोध' तुम्हारे लिए इसका सबब न हो जाए कि तुमपर भी उसी तरह की मुसीबतें आ पड़ें जैसी नूह की कौम, या हूद की कौम, या सालेह की कौम पर आ पड़ी थीं, और लूत की कौम तो (अभी) तुमसे (बहुत) दूर (ज़माने में) नहीं (हुई)। (89) और तुम अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह होओ, बिला-शुब्हा मेरा रब बड़ा मेहरबान (और) बड़ी मुहब्बत वाला है। (90)

चेतावनी

फ़रमाते हैं कि मेरी दुश्मनी और बैर में तुम अपने कुफ़्र पर और अपने गुनाहों पर जम न जाओ, वरना तुम्हें वह अज़ाब पहुँचेगा जो तुमसे पहले ऐसे कामों के करने वालों को पहुँचा है। खुसूसन कौमे लूत जो तुमसे करीब ज़माने में ही गुज़री है, और उनकी बस्तियाँ भी तुमसे कुछ दूर नहीं। पस ऐ कौम! तुम अपने पिछले गुनाहों की माफ़ी माँगो, आगे के लिये गुनाहों से तौबा कर लो, ऐसा करने वालों पर मेरा रब बहुत ही मेहरबान हो जाता है और उनको अपना प्यारा बना लेता है। अबू लैला कन्दी कहते हैं कि मैं अपने मालिक का जानवर थामे हुए खड़ा था, लोग हज़रत उस्मान रज़ि. के घर को घेरे हुए थे, आपने ऊपर से सर बुलन्द किया, यही आयत तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया- ऐ मेरी कौम के लोगो! मुझे कत्ल न करो, तुम इस तरह थे, फिर आपने अपने दोनों हाथों की उंगलियाँ एक दूसरी में डालकर दिखाई (यानी मुसलमानों की एकता और संगठन को ज़ाहिर किया)।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝	वे लोग कहने लगे कि ऐ शुऐब! बहुत-सी बातें तुम्हारी कही हुई हमारी समझ में नहीं आतीं, और हम तुमको अपने में कमज़ोर देख रहे हैं। और अगर तुम्हारे खानदान का पास न होता तो हम तुमको संगसार "यानी पत्थरों से मार-मार कर हलाक" कर चुके होते। और हमारी नज़र में तो तुम्हारी कुछ इज़्ज़त व कद्र ही नहीं। (91) (शुऐब अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! क्या मेरा खानदान तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से भी ज़्यादा इज़्ज़त वाला है। और उसको तुम ने पीठ पीछे डाल दिया, यकीनन मेरा रब तुम्हारे सब आमाल को घेरे में लिए हुए है। (92)

Maktab E Ashraf

बेवक़ूफ़ी का प्रदर्शन

मद्यन क़ौम ने कहा कि ऐ शुऐब! आपकी अक्सर बातें हमारी समझ में तो आती नहीं और ख़ुद आप भी हम में बहैसियत कमज़ोर हैं। सईद वग़ैरह का क़ौल है कि आपकी निगाह कम थी, ये आप बहुत ही साफ़ कहने वाले यहाँ तक कि आपको ख़तीबुल-अम्बिया का लक़ब मिला था। सुद्दी रह. कहते हैं कि इस वजह से कमज़ोर कहा गया है कि आप अकेले ही थे। इससे उनकी मुराद आपका अपमान था। इसलिये कि आपके कुनबे वाले आपके दीन पर न थे।

कहते हैं कि अगर तेरी बिरादरी का लिहाज़ न होता तो हम पत्थर मार-मारकर तेरा क़िस्सा ही ख़त्म कर देते। या यह कि तुझे दिल खोलकर बुरा कहते, हम में तेरी कोई क़द्र व रुतबा और इज़्ज़त नहीं। यह सुनकर आपने फ़रमाया था भाईयो! तुम मुझे मेरी रिश्तेदारी की वजह से छोड़ते हो, ख़ुदा की वजह से नहीं छोड़ते, तो गोया तुम्हारे नज़दीक क़बीले वाले ख़ुदा से भी बढ़कर हैं? अल्लाह के नबी को तकलीफ़ पहुँचाते हुए अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं करते? अफ़सोस तुमने किताबुल्लाह को पीठ पीछे डाल दिया, उसका कोई सम्मान व इताअत तुम में न रही। ख़ैर! अल्लाह तआला तुम्हारे अहवाल जानता है, वह तुम्हें पूरा बदला देगा।

وَيٰـقَوْمِ اعْـمَـلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ
عَـامِلٌ ؕ سَوْفَ تَـعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّـاْتِيْـهِ
عَـذَابٌ يُّـخْزِيْـهِ وَمَنْ هُـوَ كَـاذِبٌ ؕ
وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ۝ وَلَمَّا جَآءَ
اَمْـرُنَـا نَـجَّيْـنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِـرَحْـمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَـذَتِ الَّـذِيْنَ ظَلَمُوا
الـصَّيْـحَةُ فَـاَصْبَـحُـوْا فِـىْ دِيَـارِهِـمْ
جٰثِمِيْنَ ۝ كَـاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا
لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ۝ ع

और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी हालत पर अमल करते रहो, मैं भी (अपने तौर पर) अमल कर रहा हूँ। अब जल्द ही तुमको मालूम हुआ जाता है कि वह कौन शख़्स है जिस पर अज़ाब आया चाहता है, जो उसको रुस्वा कर देगा। और वह कौन शख़्स है जो झूठा था, और तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ। (93) और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने शुऐब को और जो उनके साथ में ईमान वाले थे उनको अपनी इनायत से बचा लिया। और उन ज़ालिमों को एक सख़्त आवाज़ ने आ पकड़ा, सो अपने घरों के अन्दर औंधे गिरे रह गए (और मर गए)। (94) जैसे उन घरों में बसे ही न थे। ख़ूब सुन लो कि मद्यन को रहमत से दूरी हुई जैसा कि समूद रहमत से दूर हुए थे। (95)

फिर वह वक़्त आ पहुँचा

जब अल्लाह के नबी अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम के ईमान लाने से मायूस हो गये तो थककर फ़रमाया

Maktab E Ashraf

कि अच्छा तुम अपने तरीक़े पर चलते जाओ मैं अपने तरीक़े पर क़ायम हूँ। तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि रुस्वा करने वाले अ़ज़ाब किन पर नाज़िल होते हैं और ख़ुदा के नज़दीक झूठा कौन है। तुम मुन्तज़िर रहो मैं भी इन्तिज़ार में हूँ। आख़िर उन पर भी अ़ज़ाबे इलाही मुसल्लत हो गया। उस वक़्त अल्लाह के नबी और मोमिन बचा दिये गये, उन पर रहमते ख़ुदा हुई और ज़ालिमों को तहस-नहस कर दिया गया। वे जलकर बेजान होकर रह गये। ऐसे कि गोया अपने घरों में आबाद ही न थे, और जैसे कि उनसे पहले के समूद क़ौम वाले ख़ुदा की लानत के पात्र बने थे, वैसे ही ये भी हो गये। समूद क़ौम वाले इनके पड़ोसी थे और कुफ़्र में और बद-अमनी में इन्हीं जैसे थे। और थीं भी ये दोनों क़ौमें अ़रब की।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ۝ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۭ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ۝ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ۝	और हमने मूसा को अपने मोजिज़े और रोशन दलील देकर (96) फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा। सो वे लोग फ़िरऔ़न की राय पर चलते रहे, और फ़िरऔ़न की राय कुछ सही न थी। (97) वह क़ियामत के दिन अपनी क़ौम के आगे-आगे होगा, फिर उनको दोज़ख़ में जा उतारेगा, और वह उतरने की बहुत ही बुरी जगह है, जिसमें ये लोग उतारे जाएँगे। (98) और इस (दुनिया) में भी लानत उनके साथ-साथ रही और क़ियामत के दिन भी, बुरा इनाम है जो उनको दिया गया। (99)

फ़िरऔ़न और मिस्र वालों की सरकशी

क़िबती क़ौम के सरदार फ़िरऔ़न और उसकी जमाअ़त की तरफ़ अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को अपनी निशानियों और खुली दलीलों के साथ भेजा, लेकिन उन्होंने फ़िरऔ़न की इताअ़त न छोड़ी, उसी की गुमराह रविश पर उसके पीछे लगे रहे। जिस तरह यहाँ उन्होंने उसकी फ़रमाँबरदारी न छोड़ी और उसे अपना सरदार मानते रहे, इसी तरह क़ियामत के दिन ये उसी के पीछे होंगे और वह अपनी अगुवाई में इन सब को अपने साथ ही जहन्नम में ले जायेगा और ख़ुद दोगुना अ़ज़ाब बरदाश्त करेगा। यही हाल बुरों की ताबेदारी करने वालों का होता है। वे कहेंगे भी कि ख़ुदाया! इन्हीं लोगों ने हमें बहकाया, तू इन्हें दोगुना अ़ज़ाब कर।

मुस्नद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- क़ियामत के दिन जाहिलीयत के शायरों का झंडा इमराउल-क़ैस के हाथ में होगा और वह उन्हें लेकर जहन्नम की तरफ़ जायेगा। इस आग के अ़ज़ाब पर यह और अतिरिक्त है कि यहाँ और वहाँ दोनों जगह ये लोग हमेशा की लानत में पड़े। क़ियामत के दिन की लानत मिलकर इन पर दो लानतें पड़ गईं। ये दूसरे लोगों को जहन्नम की दावत देने वाले इमाम थे, इसलिये इन पर दोहरी लानत पड़ी।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ۝ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِىْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۭ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝

ये (तबाह होने वाली) बस्तियों के बाज़ हालात थे, जिनको हम आपसे बयान करते हैं, (सो) बाज़ (बस्तियाँ) तो उनमें (अब भी) कायम हैं, और बाज़ का बिल्कुल ख़ात्मा हो गया। (100) और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन उन्होंने ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया। सो उनके वे माबूद जिनको वे अल्लाह के अलावा पूजते थे उनको कुछ फ़ायदा न पहुँचा सके जब आपके रब का हुक्म आ पहुँचा, और उल्टा उनको नुक़सान पहुँचाया। (101)

कोई काम न आया

अम्बिया और उनकी उम्मतों के वाक़िआत बयान फ़रमाकर अल्लाह तआ़ला का इरशाद होता है कि ये उन बस्ती वालों के वाक़िआत हैं जिन्हें हम तेरे सामने बयान फ़रमा रहे हैं। बाज़ बस्तियाँ तो अब तक आबाद हैं और बाज़ मिट चुकी हैं। हमने उन्हें ज़ुल्म से हलाक नहीं किया बल्कि ख़ुद उन्होंने ही अपने कुफ़्र व झुठलाने की वजह से अपने ऊपर अपने हाथों हलाकत ले ली। और जिन झूठे माबूदों के सहारे उनको थे वे वक़्त पर उनके कुछ काम न आ सके। बल्कि उनकी पूजा-पाठ ने उन्हें और तबाह व बरबाद कर दिया, दोनों जहान का वबाल उन पर आ पड़ा।

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ۭ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝

और आपके रब की पकड़ ऐसी ही है, जब वह किसी बस्ती पर पकड़ करता है जबकि वे ज़ुल्म किया करते हों। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक (और) सख़्त है। (102)

एक ही क़ानून

जिस तरह इन ज़ालिमों की हलाकत हुई इन जैसा जो भी होगा वह भी इसी नतीजे को देखेगा। अल्लाह तआ़ला की पकड़ दुखदायी और बहुत सख़्ती वाली होती है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को ढील देकर फिर पकड़ने के वक़्त अचानक दबा लेता है, फिर मोहलत नहीं मिलती। फिर आपने इस आयत की तिलावत की।

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ

इन (वाक़िआत) में उस शख़्स के लिए बड़ी इबरत है जो आख़िरत के अज़ाब से डरता हो। वह ऐसा दिन होगा कि उसमें तमाम आदमी

Maktaba E Ashraf

जमा किए जाएँगे, और वह (सबकी) हाज़िरी का दिन है। (103) और हम उसको सिर्फ़ थोड़ी मुद्दत के लिए मुल्तवी किए "यानी टाले" हुए हैं। (104) जिस वक़्त वह दिन आएगा, कोई शख़्स बिना उसकी (यानी ख़ुदा की) इजाज़त के बात तक न कर सकेगा। फिर उनमें बाज़े तो शक़ी "बदबख़्त" होंगे और बाज़े सईद "यानी नेकबख़्त" होंगे। (105)	وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ۝ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝

इबरत का सामान

काफ़िरों की हलाकत और मोमिनों की निजात में साफ़ दलील है हमारे उन वादों की सच्चाई पर जो हमने कियामत के बारे में किये हैं, जिस दिन तमाम अगले पिछले लोग जमा किये जायेंगे, एक भी बाक़ी न छूटेगा। वह बड़ा भारी दिन है, तमाम फ़रिश्ते, तमाम रसूल, तमाम मख़्लूक़ हाज़िर होगी। अल्लाह तआ़ला जो सबसे बड़ा हाकिम और सबसे बड़ा इन्साफ़ करने वाला है, इन्साफ़ करेगा। कियामत के क़ायम होने की देर की वजह यह है कि रब तआ़ला यह बात पहले ही मुक़र्रर कर चुका है कि इतनी मुद्दत तक दुनिया इनसानों से आबाद रहेगी, इतनी मुद्दत ख़ामोशी पर गुज़रेगी, फिर फ़ुलाँ वक़्त कियामत क़ायम होगी। जिस दिन कियामत आ जायेगी कोई न होगा जो अल्लाह तआ़ला की बिना इजाज़त लब भी खोल सके, मगर रहमान जिसे इजाज़त दे और वह बात भी ठीक बोले। तमाम आवाज़ें ख़ुदा-ए-रहमान के सामने पस्त होंगी।

बुख़ारी व मुस्लिम की शफ़ाअ़त वाली हदीस में है कि उस दिन सिर्फ़ रसूल ही बोलेंगे, और उनका कलाम भी सिर्फ़ यही होगा कि ख़ुदाया सलामत रख, ख़ुदाया सलामती दे। मेहशर के मजमे में बहुत से तो बुरे होंगे और बहुत से नेक। इस आयत के उतरने पर हज़रत उमर रज़ि. पूछते हैं कि या रसूलल्लाह! फिर हमारे आमाल इस बिना पर हैं जिससे पहले ही फ़राग़त कर ली गई है या किसी नई बिना पर? आपने फ़रमाया नहीं! बल्कि उस हिसाब पर जो पहले से ख़त्म हो चुका है, जो क़लम चल चुका है, लेकिन हर एक के लिये वही आसान होगा जिसके लिये उसकी पैदाईश की गई है। (मुस्नद अबू यअ़ला)

सो जो लोग शक़ी हैं वे तो दोज़ख़ में (ऐसे हाल से) होंगे कि उसमें उनकी चीख़-पुकार पड़ी रहेगी। (106) और हमेशा-हमेशा को उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, हाँ अगर उसके रब ही को (निकालना) मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है) आपका रब जो कुछ चाहे उसको पूरा कर सकता है। (107)	فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝

जहन्नम की डरावनी आवाज़ें

गधे के चीख़ने में जैसे उतार-चढ़ाव होता है ऐसी ही उनकी चीख़ें होंगी। यह याद रहे कि क़ुरआने

Maktab E Ashraf

करीम अरब के मुहावरों के मुताबिक़ नाज़िल हुआ है। वह हमेशगी के मुहावरे को इसी तरह बोला करते हैं कि यह हमेशगी (यानी हमेशा रहने) वाला है। जब तक आसमान व ज़मीन को ठहराव है यह भी उनके मुहावरे में है कि यह बाक़ी रहेगा जब तक दिन रात का चक्कर बंधा हुआ है। पस इन अलफ़ाज़ से हमेशगी मुराद है न कि क़ैद। इसके अ़लावा यह भी हो सकता है कि इस ज़मीन व आसमान के बाद आख़िरत के जहान में इन आसमान व ज़मीन के अ़लावा दूसरे हों। पस यहाँ ज़मीन व आसमान की जिन्स मुराद है, यही ज़मीन व आसमान नहीं। चुनाँचे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि हर जन्नत का अलग आसमान व ज़मीन है। इसके बाद ख़ुदा की मंशा का ज़िक्र है जैसे आयतः

اَلنَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ

(सूरः अन्आम आयत 128) में है। इस अलग रखने के बारे में बहुत से क़ौल हैं जिन्हें अ़ल्लामा जौज़ी ने किताब 'ज़ादुस्सियर' में नक़ल किया है। इब्ने जरीर ने ख़ालिद बिन सादान, ज़स्हाक, क़तादा और इब्ने सनान के इस क़ौल को पसन्द फ़रमाया है कि इस्तिसना (हुक्म से अलग रखने) से गुनाहगार मोमिन मुराद हैं। बाज़ पहले बुज़ुर्गों से इसकी तफ़सीर में बड़े ही ग़रीब अक़वाल नक़ल किये गये हैं। क़तादा फ़रमाते हैं कि अल्लाह ही को इसका पूरा इल्म है।

और रह गए वे लोग जो सईद हैं, सो वे जन्नत में होंगे और वे उसमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं। हाँ अगर आपके रबको (निकालना) मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है) वह ख़त्म न होने वाला अ़तिया होगा। (108)	وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝

जन्नतुल-फ़िरदौस

रसूलों के ताबेदार (उनकी तालीम को मानने और उस पर चलने वाले) जन्नतों में रहेंगे, जहाँ से कभी निकलना न होगा। ज़मीन व आसमान की बक़ा तक उनकी भी जन्नत में बक़ा रहेगी, मगर जो ख़ुदा चाहे। यानी यह बात अपनी ज़ात के एतिबार से वाजिब नहीं बल्कि ख़ुदा की मशीयत और उसके इरादे पर है। इमाम ज़स्हाक व हसन का क़ौल है कि यह भी मोमिन गुनाहगारों के हक़ में है, वे कुछ मुद्दत जहन्नम में गुज़ार कर वहाँ से निकाले जायेंगे। यह है अल्लाह का अ़तिया (इनायत और इनाम) जो ख़त्म न होगा, न घटेगा। यह इसलिये फ़रमाया कि कहीं ज़िक्रे मशीयत (अल्लाह के चाहने) से यह खटका न गुज़रे कि हमेशगी नहीं, जैसे कि दोज़ख़ियों के उसमें हमेशा रहने के ज़िक्र के बाद भी अपनी मशीयत और इरादे की तरफ़ रुजू किया, सब उसकी हिक्मत व अ़दल है। वह हर उस काम को कर गुज़रता है जिसका इरादा करे। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि मौत को चितकबरे भेड़िये की सूरत में लाया जायेगा और उसे ज़िबह कर दिया जायेगा। फ़रमा दिया जायेगा कि ऐ जन्नतियो! तुम्हारे लिये हमेशगी है मौत नहीं। और ऐ जहन्नमियो! तुम्हारे लिये भी हमेशगी है मौत नहीं।

Maktab E Ashraf

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا
يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ
وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ۝
ع
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ
وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝
وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ
اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

सो जिस चीज़ की ये पूजा करते हैं उसके बारे में ज़रा शुब्हा न करना, ये लोग भी उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप-दादा इबादत करते थे। और हम यक़ीनन उनका (अज़ाब का) हिस्सा उन को (क़ियामत के दिन) पूरा-पूरा बिना किसी कमी के पहुँचा देंगे। (109)

और हमने मूसा को किताब दी थी, सो उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया, और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले मुक़र्रर हो चुकी है तो उनका फ़ैसला हो चुका होता, और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उनको तरद्दुद "यानी असमंजस" में डाल रखा है। (110) और यक़ीनन सब-के-सब ऐसे ही हैं कि आपका रब उनको उनके आमाल का पूरा-पूरा हिस्सा देगा, वह यक़ीनन उनके आमाल की पूरी-पूरी ख़बर रखता है। (111)

मुश्रिकों की सरकशी को नज़र में न लाईये

मुश्रिकों के शिर्क के बातिल होने में हरगिज़ शुब्हा न करना, उनके पास सिवाय बाप-दादों की भोंडी पैरवी के और दलील ही क्या है? उनकी नेकियाँ उन्हें दुनिया ही में मिल जायेंगी, आख़िरत में सख़्त अज़ाब ही अज़ाब होंगे। जो ख़ैर व शर के वादे हैं सब पूरे होने वाले हैं। इनके अज़ाब का मुक़र्ररा हिस्सा इन्हें ज़रूर पहुँचेगा। मूसा अलैहिस्सलाम को हमने किताब दी, लेकिन फिर लोगों ने फूट डाली, किसी ने इक़रार किया तो किसी ने इनकार किया। पस पहले अम्बिया की तरह आपके साथ भी किया जायेगा, कोई मानेगा कोई इनकार करेगा। चूँकि हम वक़्त मुक़र्रर कर चुके हैं और हम बग़ैर हुज्जत पूरी किये अज़ाब नहीं किया करते इसी लिये यह ताख़ीर (देरी) है, वरना अभी इन्हें इनके गुनाहों का मज़ा मिल जाता। काफ़िरों को ख़ुदा की और उसके रसूल की बातें ग़लत ही मालूम होती हैं, उनका शक व शुब्हा दूर नहीं होता। सबको अल्लाह जमा करेगा और उनके किये हुए आमाल का बदला देगा।

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

तो आप जिस तरह कि आपको हुक्म हुआ है मुस्तक़ीम रहिए "यानी सही रास्ते पर क़ायम रहिए" और वे लोग भी जो (कुफ़्र से) तौबा करके आपके साथ में हैं, और दायरे से ज़रा मत निकलो, यक़ीनी तौर पर वह तुम सब के

आमाल को ख़ूब देखता है। (112) और उन ज़ालिमों की तरफ़ मत झुको, कभी तुमको दोज़ख़ की आग लग जाए और ख़ुदा के सिवा कोई तुम्हारा साथ देने वाला न हो, फिर हिमायत तो तुम्हारी ज़रा भी न हो। (113)	فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ○

Maktab E Ashraf

हक़ पर मज़बूती के साथ क़ायम रहिये

हक़ और सीधी राह पर हमेशा जमे रहने और साबित-क़दमी की हिदायत अल्लाह तआ़ला अपने नबी (सल्ल.) और तमाम मुसलमानों को कर रहा है, यही सबसे बड़ी चीज़ है। साथ ही सरकशी (नाफ़रमानी और ज़्यादती) से रोकता है, क्योंकि यही तबाह करने वाली चीज़ है, चाहे किसी मुश्रिक ही पर की गई हो। परवर्दिगार बन्दों के आमाल से आगाह है। दीन के कामों में सुस्ती न करो, शिर्क की तरफ़ न झुको, मुश्रिकों के आमाल पर रज़ामन्दी का इज़हार न करो, ज़ालिमों की तरफ़ न झुको, वरना आग तुम्हें छू लेगी। ज़ालिमों की तरफ़दारी उनके ज़ुल्म पर मदद है, यह कभी न करो। अगर ऐसा किया तो कौन है जो तुमसे ख़ुदा का अ़ज़ाब हटाये? और कौन है जो उससे तुम्हें बचाये?

और आप नमाज़ की पाबन्दी रखिए, दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्सों में। बेशक नेक काम मिटा देते हैं बुरे कामों को, यह बात एक नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114) और सब्र किया कीजिए कि अल्लाह तआ़ला नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते। (115)	وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۭ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ○ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ○

नेकियाँ बुराईयों के असरात से सुरक्षित रखती हैं

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह कहते हैं कि दिन के दोनों सिरे से मुराद सुबह और मग़रिब की नमाज़ है। क़तादा, ज़ह्हाक वग़ैरह का क़ौल है कि पहले सिरे से मुराद सुबह की नमाज़ और दूसरे से मुराद ज़ोहर, अ़सर की नमाज़। रात की घड़ियों से मुराद इशा की नमाज़ और बक़ौल मुजाहिद वग़ैरह मग़रिब व इशा की नमाज़ें। नेकियों का करना गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है। सुनन में है कि नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं- जिस मुसलमान से कोई गुनाह हो जाये फिर वह वुज़ू करके दो रकअ़त नमाज़ पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उसका गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। एक मर्तबा हज़रत उस्मान रज़ि. ने वुज़ू किया फिर फ़रमाया इसी तरह मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को वुज़ू करते देखा है और आपने फ़रमाया है कि जो मेरे इस वुज़ू जैसा वुज़ू करे, फिर दो रकअ़त नमाज़ अदा करे, जिसमें अपने दिल से बातें न करे तो उसके तमाम पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। मुस्नद में है कि आपने पानी मंगवाया, वुज़ू किया फिर फ़रमाया इसी तरह रसूलुल्लाह सल्ल. वुज़ू करते थे। फिर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया जो मेरे इस वुज़ू जैसा वुज़ू करे और खड़ा होकर ज़ोहर

की नमाज़ अदा करे उसके सुबह से लेकर अब तक के गुनाह माफ़ हो जाते हैं। फिर अ़सर की नमाज़ पढ़े तो ज़ोहर से अ़सर तक के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। फिर मग़रिब की नमाज़ अदा करे तो अ़सर से लेकर मग़रिब तक के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। फिर इशा की नमाज़ से मग़रिब से इशा तक के गुनाह माफ़ हो जाते हैं। फिर यह सोता है, लोट-पोट होता है, फिर सुबह उठकर फ़जर की नमाज़ पढ़ लेने से इशा से लेकर सुबह की नमाज़ तक के सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं, यही हैं वे भलाईयाँ जो बुराईयों को दूर कर देती हैं।

एक सही हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- बतलाओ तो अगर तुम में से किसी के मकान के दरवाज़े पर ही नहर जारी है और वह उसमें हर रोज़ पाँच मर्तबा गुस्ल करता हो तो क्या उसके जिस्म पर ज़रा सा भी मैल बाक़ी रह जायेगा? लोगों ने कहा हरगिज़ नहीं। आपने फ़रमाया बस यही मिसाल है पाँच नमाज़ों की, कि इनकी वजह से अल्लाह तआ़ला ख़तायें और गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। सही मुस्लिम शरीफ़ में रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि पाँचों नमाज़ें और जुमा जुमे तक और रमज़ान रमज़ान तक का कफ़्फ़ारा है, जब तक कि कबीरा (बड़े) गुनाहों से परहेज़ किया जाये।

मुस्नद अहमद में है कि हर नमाज़ अपने से पहले की ख़ताओं को मिटा देती है। बुख़ारी शरीफ़ में है कि किसी शख़्स ने एक औ़रत का बोसा लिया, फिर हुज़ूर सल्ल. से अपने इस गुनाह पर शर्मिन्दगी ज़ाहिर की, इस पर यह आयत उतरी। उसने कहा क्या यह मेरे लिये ही मख़्सूस है? आपने जवाब दिया नहीं, बल्कि मेरी सारी उम्मत के लिये यही हुक्म है। एक और रिवायत में है कि उसने कहा मैंने बाग़ में उस औ़रत से सब कुछ किया, हाँ सोहबत नहीं की। अब मैं हाज़िर हूँ जो सज़ा मेरे लिये आप तजवीज़ फ़रमायें मैं बरदाश्त कर लूँगा। हुज़ूर सल्ल. ने उसे कोई जवाब नहीं दिया, वह चला गया। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया अल्लाह ने उसकी पर्दापोशी की थी, काश यह भी अपने नफ़्स की पर्दापोशी करता (यानी अपने गुनाह को छुपाता)। नबी करीम सल्ल. बराबर उसी शख़्स की तरफ़ देखते रहे, फिर फ़रमाया इसे वापस बुला लाओ, जब वह आ गया तो आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। इस पर हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. ने दरियाफ़्त किया कि क्या यह इसी के लिये है? आपने फ़रमाया नहीं बल्कि सब लोगों के लिये है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला ने जिस तरह तुम में रोज़ियाँ तक़सीम फ़रमाई हैं, अख़्लाक़ भी तक़सीम फ़रमाये हैं, अल्लाह तआ़ला दुनिया तो उसे भी देता है जिससे ख़ुश हो और उसे भी जिससे नाराज़ हो, लेकिन दीन सिर्फ़ उन्हीं को देता है जिनसे उसे मुहब्बत हो। पस जिसे दीन मिल जाये यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत रखता है। उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, बन्दा मुसलमान नहीं होता जब तक कि उसका दिल और उसकी ज़बान मुसलमान न हो जाये। और बन्दा ईमान वाला नहीं होता जब तक कि उसके पड़ोसी उसकी ईज़ाओं (तकलीफ़ देने) से बेफ़िक्र न हो जायें। लोगों ने पूछा ये किस तरह की ईज़ायें (तकलीफ़ें) हैं? फ़रमाया धोखा और ज़ुल्म। सुनो जो शख़्स हराम माल कमाये फिर उसमें से ख़र्च करे अल्लाह उसे बरकत से मेहरूम रखता है। अगर वह उसमें से सदक़ा करे तो क़बूल नहीं होता। और जितना कुछ अपने बाद बाक़ी छोड़ मरे वह सब उसके लिये दोज़ख़ की आग का तोशा बनता है। याद रखो कि अल्लाह तआ़ला बुराई को बुराई से नहीं मिटाता बल्कि बुराई को भलाई से मिटाता है।

मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. के पास आया और कहा कि एक औ़रत सौदा लेने के लिये आई थी, अफ़सोस है कि मैं उसे कोठरी में लेजाकर उससे सिवाय सोहबत

Maktab_e_Ashraf

(संभोग) के हर तरह लुत्फ़-अन्दोज़ हुआ। अब जो हुक्मे ख़ुदा हो वह मुझ पर जारी किया जाये। आपने फ़रमाया शायद उसका शौहर यहाँ नहीं है? उसने कहा जी हाँ यही बात थी। आपने फ़रमाया तुम जाओ। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से मसला पूछो, हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ि. ने भी यही सवाल किया, पस आपने भी हज़रत उमर की तरह फ़रमाया। फिर वह नबी करीम सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी हालत बयान की। आपने फ़रमाया शायद उसका शौहर राहे ख़ुदा में गया हुआ होगा? पस क़ुरआने करीम की यह आयत उतरी तो वह कहने लगा क्या यह ख़ास मेरे लिये ही है? तो हज़रत उमर रज़ि. ने उसके सीने पर हाथ रखकर फ़रमाया नहीं इस तरह सिर्फ़ तेरी ही आँखें ठंडी नहीं हो सकतीं बल्कि यह सब लोगों के लिये आ़म है। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया उमर सच्चे हैं। इब्ने जरीर में है कि वह औ़रत मुझसे एक दिर्हम की खजूरें ख़रीदने आई थी तो मैंने उसे कहा कि अन्दर कोठरी में इससे बहुत अच्छी खजूरें हैं, वह अन्दर आ गई, मैंने अन्दर जाकर उसे चूम लिया। फिर वह हज़रत उमर रज़ि. के पास गया तो आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला से डर और अपने नफ़्स पर पर्दा डाले रह, लेकिन अबुल-युसर रज़ि. कहते हैं कि मुझसे सब्र न हो सका, मैंने जाकर हुज़ूर सल्ल. से वाक़िआ़ बयान किया, आपने फ़रमाया अफ़सोस तूने एक ग़ाज़ी मर्द की ग़ैर-हाज़िरी में ऐसी ख़ियानत की। मैंने तो यह सुनकर ख़ुद को जहन्नमी समझ लिया और मेरे दिल में ख़्याल आने लगा कि काश मेरा इस्लाम इसके बाद होता। हुज़ूर सल्ल. ने ज़रा सी देर अपनी गर्दन झुका ली, उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम यह आयत लेकर उतरे।

इब्ने जरीर में है कि एक शख़्स ने आकर हुज़ूर सल्ल. से दरख़्वास्त की कि ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई हद (सज़ा) मुझ पर जारी कीजिये। एक दो दफ़ा उसने यह कहा लेकिन आपने उसकी तरफ़ से मुँह मोड़ लिया। फिर जब नमाज़ खड़ी हुई और आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो दरियाफ़्त फ़रमाया- वह शख़्स कहाँ है? उसने कहा हुज़ूर! मैं हाज़िर हूँ। आपने फ़रमाया तूने अच्छी तरह वुज़ू किया और हमारे साथ नमाज़ पढ़ी? उसने कहा जी हाँ। आपने फ़रमाया पस तो तू ऐसा ही है जैसे अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ था। ख़बरदार! अब कोई ऐसी हरकत न करना, और अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी। हज़रत अबू उस्मान का बयान है कि मैं हज़रत सलमान के साथ था। उन्होंने एक दरख़्त की ख़ुश्क टहनी पकड़कर उसे हिलाया तो तमाम ख़ुश्क पत्ते झड़ गये, फिर फ़रमाया अबू उस्मान तुम पूछते नहीं हो कि मैंने यह क्यों किया? मैंने कहा हाँ जनाब इरशाद हो। फ़रमाया इसी तरह मेरे साथ रसूलुल्लाह सल्ल. ने किया, फिर फ़रमाया जब मुसलमान बन्दा अच्छी तरह वुज़ू करके पाँचों नमाज़ें अदा करता है तो उसके गुनाह ऐसे झड़ जाते हैं जैसे ख़ुश्क (सूखी) टहनी के पत्ते झड़ गये। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

मुस्नद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अगर कोई बुराई हो जाये तो उसके बाद ही नेकी कर लो कि उसे मिटा दे, और लोगों से ख़ुश-अख़्लाक़ी (अच्छे व्यवहार) से मिला करो। एक और हदीस में है कि जब तुझसे कोई गुनाह हो जाये तो उसके बाद ही नेकी कर लिया कर, कि उसे मिटा दे। मैंने कहा या रसूलल्लाह! क्या 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' पढ़ना भी नेकी है? आपने फ़रमाया वह तो बेहतरीन और अफ़ज़ल नेकी है। अबू यअ़ला में है कि दिन रात के जिस वक़्त में कोई 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' पढ़े उसके आमाल नामे में से बुराईयाँ मिट जाती हैं, यहाँ तक कि उनकी जगह वैसी ही नेकियाँ हो जाती हैं। इसके रावी उस्मान में कमज़ोरी है। बज़्ज़ार में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा कि हुज़ूर! मैंने कोई ख़्वाहिश ऐसी नहीं छोड़ी जिसे पूरी न की हो। आपने फ़रमाया क्या तू ख़ुदा के एक होने की और मेरी रिसालत की गवाही देता है? उसने कहा हाँ। तो आपने फ़रमाया बस यह उन सब पर हावी और ग़ालिब

रहेगी।

जो उम्मतें तुमसे पहले हो गुज़री हैं उनमें ऐसे समझदार लोग न हुए जो कि (दूसरों को) मुल्क में फ़साद (यानी कुफ़ व शिर्क) फैलाने से मना करते, सिवाय चन्द आदमियों के कि जिन को उनमें से हमने (अ़ज़ाब से) बचा लिया था। और जो लोग नाफ़रमान थे वे नाज़ व नेमत में थे, उसी के पीछे पड़े रहे और अपराधों के आ़दी हो गए। (116) और आपका रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को कुफ़ के सबब हलाक कर दे और उनके रहने वाले सुधार में लगे हों। (117)	فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ۝

नेक लोग ख़ुदा के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ हैं

यानी कुछ लोगों को छोड़कर हम पिछले ज़माने के लोगों में से ऐसे क्यों नहीं पाते जो शरीरों और मुन्किरों को बुराईयों से रोकते रहें। यही वे हैं जिन्हें हम अपने अ़ज़ाबों से बचा लिया करते हैं। इसी लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस उम्मत में ऐसी जमाअ़त की मौजूदगी का क़तई (निश्चित) और यक़ीनी हुक्म दिया। फ़रमायाः

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ.....الخ

और नेकी की दावत देने वाली एक जमाअ़त तुम में हर वक़्त मौजूद रहनी चाहिये.....।

ज़ालिमों का शेवा (आ़दत और तरीक़ा) है कि वे अपनी बुरी आ़दतों से बाज़ नहीं आते, नेक उलेमा की बातों की तरफ़ तवज्जोह भी नहीं करते, यहाँ तक कि अ़ज़ाबे ख़ुदा उनकी बेख़बरी में आ पड़ते हैं। भली बस्तियों पर ख़ुदा की तरफ़ से ज़ुल्म के तौर पर अ़ज़ाब कभी नहीं आते। हम ज़ुल्म से पाक हैं, लेकिन ख़ुद ही वे अपनी जानों पर ज़ुल्म करने लगते हैं।

और अगर आपके रब को मन्ज़ूर होता तो सब आदमियों को एक ही तरीक़े का (यानी सब को मोमिन) बना देता, और (आगे भी) हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे, (118) मगर जिस पर आपके रब की रहमत हो। और (इस इख़्तिलाफ़ का ग़म न कीजिए, क्योंकि) उसने (यानी अल्लाह तआ़ला ने) लोगों को इसी वास्ते पैदा किया है, और आपके रब की (यह) बात पूरी होगी कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इनसानों दोनों से भर दूँगा। (119)	وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۭ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ۝

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला हर बात पर क़ादिर है

ख़ुदा की क़ुदरत किसी काम से आ़जिज़ (बेबस) नहीं। वह चाहे तो सब को ही इस्लाम या कुफ़्र पर जमा कर दे, लेकिन उसकी हिक्मत है जो दीन व धर्म के अलग-अलग होने के बारे में इनसानी राय भिन्न हैं और यह सिलसिला इसी तरह जारी है। तरीक़े अलग-अलग, माली हालात भिन्न, एक दूसरे के मातहत। यहाँ मुराद दीन व मज़हब का भिन्न और अलग-अलग होना है। हाँ जिन पर ख़ुदा का रहम हो जाये वे रसूलों की ताबेदारी और ख़ुदा तआ़ला के अहकाम पर अ़मल करने में बराबर लगे रहते हैं। अब वे नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ के पैरोकार हैं, और यही निजात पाने वाले हैं। चुनाँचे मुस्नद व सुनन में हदीस है, जिसकी हर सनद दूसरी सनद को मज़बूती दे रही है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- यहूदियों के 71 गिरोह हुए, ईसाई 72 फ़िर्क़ों में बंट गये, इस उम्मत के 73 फ़िर्क़े हो जायेंगे, सब जहन्नमी हैं सिवाय एक जमाअ़त के। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा या रसूलल्लाह! वे कौन लोग हैं? आपने जवाब दिया वे जो इस पर हों जिस पर मैं हूँ और मेरे सहाबा (यानी मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े और नक़्शे-क़दम पर)।

(मुस्तद्रक व हाकिम)

हज़रत अ़ता रह. का क़ौल है कि 'मुख़्तलिफ़ीन' (मतभेद और विवाद करने वालों) से मुराद यहूदी, ईसाई और मजूसी हैं, और ख़ुदा के रहम वाली जमाअ़त से मुराद दीने इस्लाम के मानने वाले लोग हैं। क़तादा रह. कहते हैं कि यही जमाअ़त है चाहे इनके वतन और बदन जुदा हों। और गुनाहगार व नाफ़रमान बिखराव, विवाद और मतभेद वाले हैं चाहे उनके वतन और बदन एक ही जगह जमा हों। क़ुदरती तौर पर उनकी पैदाईश ही इसलिये है। नेकबख़्ती व बदबख़्ती की यह तक़सीम अज़ली (यानी तक़दीरी और पहले से तयशुदा) है। यह भी मतलब है कि रहमत हासिल करने वाली यह जमाअ़त है ही इसलिये।

हज़रत ताऊस रह. के पास दो शख़्स अपना झगड़ा लेकर आये और झगड़े की सीमाओं से आगे बढ़ गये तो आपने फ़रमाया- तुम आपस में झगड़े और ख़ूब ही इख़्तिलाफ़ किया। इस पर एक ने कहा इसी के लिये हम पैदा किये गये हैं। आपने फ़रमाया ग़लत है, उसने अपने सुबूत में इसी आयत की तिलावत की तो आपने फ़रमाया- इसलिये नहीं पैदा किया कि आपस में इख़्तिलाफ़ करें बल्कि पैदाईश तो जमा के लिये और रहमत हासिल करने के लिये हुई है। जैसे इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि रहमत के लिये पैदा किया है न कि अ़ज़ाब के लिये। एक और आयत में है:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنَ.

मैंने जिन्नात और इनसानों को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिये ही पैदा किया है।

तीसरा क़ौल यह भी है कि रहमत और इख़्तिलाफ़ (मतभेद व विवाद) के लिये पैदा किया है। चुनाँचे मालिक इसकी तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि एक फ़िर्क़ा जन्नती और एक जहन्नमी। इन्हें रहमत हासिल करने और इन्हें इख़्तिलाफ़ (झगड़े और विवाद) में लगे रहने के लिये पैदा किया है। तेरे रब का यह फ़ैसला नातिक़ (क़तई और निश्चित) है कि उसकी मख़्लूक़ में इन दोनों क़िस्मों के लोग होंगे। और इन दोनों से जन्नत व दोज़ख़ को भरा जायेगा। उसकी पूर्ण हिक्मतों को वही जानता है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत और दोज़ख़ में आपस में गुफ़्तगू हुई। जन्नत ने कहा मुझमें तो सिर्फ़ ज़ईफ़ और कमज़ोर लोग ही दाख़िल होते हैं और जहन्नम ने कहा कि मैं तकब्बुर और तजब्बुर करने

वालों (यानी ज़ालिमों, घमन्डियों और बड़ाई जताने वाले लोगों) के साथ मख़्सूस की गई हूँ। इस पर अल्लाह तआ़ला ने जन्नत से फ़रमाया तू मेरी रहमत है, जिसे मैं चाहूँ तुझसे नवाज़ूँगा और जहन्नम से फ़रमाया तू मेरा अ़ज़ाब है, जिसे मैं चाहूँ तेरे अ़ज़ाब से इन्तिक़ाम लूँगा। तुम दोनों पुर हो (भर) जाओगी, जन्नत में तो बराबर ज़्यादती रहेगी यहाँ तक कि उसके लिये अल्लाह तआ़ला एक नई मख़्लूक़ पैदा करेगा और उसे उसमें बसायेगा, और जहन्नम भी बराबर ज़्यादती की तलब करती रहेगी, यहाँ तक कि उस पर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त अपना क़दम रख देगा।

और पैग़म्बरों के क़िस्सों में से हम ये सारे क़िस्से आपसे बयान करते हैं जिनके ज़रिये से हम आपके दिल को मज़बूती देते हैं, और उन (क़िस्सों) में आपके पास (ऐसा मज़मून) पहुँचा है (जो ख़ुद भी) सही (है) और मुसलमानों के लिए नसीहत और याद-दिहानी (है)। (120)	وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ○

मक़सद

पहली उम्मतों का अपने नबियों को झुठलाना, नबियों का उनकी ईज़ाओं (तकलीफ़ें देने) पर सब्र करना, आख़िर ख़ुदा के अ़ज़ाब का आना, काफ़िरों का बरबाद होना, नबियों, रसूलों और मोमिनों का निजात पाना, ये सब वाक़िआ़त हम तुझे सुना रहे हैं, ताकि तेरे दिल को हम और मज़बूत कर दें और तुझे कामिल सुकून हासिल हो जाये। इस सूरत में भी हक़ तुझ पर वाज़ेह हो चुका या यह कि इस दुनिया में भी तेरे सामने सच्चे वाक़िआ़त बयान हो चुके। यह इबरत (सबक़) है कुफ़्फ़ार के लिये और नसीहत है मोमिनों के लिये, कि वे इससे नफ़ा (फ़ायदा) हासिल करें।

और जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए कि तुम अपनी हालत पर अ़मल करते रहो, हम भी अ़मल कर रहे हैं। (121) और तुम मुन्तज़िर रहो हम भी मुन्तज़िर हैं। (122)	وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۭ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ○ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ○

इन्तिज़ार

धमकाने, डराने और तंबीह करने के तौर पर उन काफ़िरों से कह दो कि अच्छा तुम अपने तरीक़े से नहीं हटते तो न हटो, हम भी अपने तरीक़े पर आ़मिल हैं। तुम मुन्तज़िर रहो कि आख़िर अन्जाम क्या होता है, हम भी उसी अन्जाम की राह देखते हैं। तो अल्लाह का शुक्र है कि दुनिया ने उन काफ़िरों का अन्जाम देख लिया और उन मुसलमानों का भी जो ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम से दुनिया पर छा गये। मुख़ालिफ़ों (विरोधियों) पर कामयाबी के साथ ग़लबा हासिल कर लिया, दुनिया को मुट्ठी में ले लिया।

और आसमानों व ज़मीन में जितनी ग़ैब की बातें हैं उनका इल्म ख़ुदा ही को है, और सब मामले उसी की तरफ़ लौटाए जाएँगे। तो आप उसी की इबादत कीजिए और उसी पर भरोसा कीजिए, और आपका रब उन बातों से बेख़बर नहीं जो कुछ तुम (लोग) कर रहे हो। (123)	وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

Maktab E Ashraf

ग़ैब का जानने वाला

आसमान व ज़मीन के सब ग़ैब (पोशीदा चीज़ों और बातों) पर इत्तिला रखने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। उसी की सब को इबादत करनी चाहिये और उसी पर भरोसा करना चाहिये, जो भी उस पर भरोसा रखे वह उसके लिये काफ़ी है। हज़रत कअ़ब रह. फ़रमाते हैं कि तौरात का ख़ात्मा (समापन) भी इन्हीं आयतों पर है। अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ में से किसी के अ़मल से बेख़बर नहीं।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः हूद की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः यूसुफ़

सूरः यूसुफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-रा। ये आयतें हैं एक वाज़ेह किताब की। (1) हमने उसको उतारा है क़ुरआन अ़रबी (ज़बान का) ताकि तुम समझो। (2) हमने जो यह क़ुरआन आपके पास भेजा है, इसके ज़रिये से हम आपसे एक बड़ा उम्दा क़िस्सा बयान करते हैं, और इससे पहले आप बिल्कुल बेख़बर थे। (3)	الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝

एक दिलचस्प और सबक़ लेने वाला वाक़िआ़

सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में 'हुरूफ़े-मुक़त्तआ़त' की बहस गुज़र चुकी है। इस किताब यानी

Maktaba E Ashraf

क़ुरआन शरीफ़ की ये आयतें बहुत वाज़ेह, खुली हुई और ख़ूब साफ़ हैं। ग़ैर-वाज़ेह चीज़ों की हक़ीक़त खोल देती हैं। यहाँ पर 'तिल्-क' (वह) मायने में 'हाज़ा' (यह) के है। चूँकि अ़रबी भाषा निहायत कामिल, मक़सद को पूरी तरह वाज़ेह कर देने वाली और फैलाव व कसरत वाली है, इसलिये यह निहायत पाकीज़ा किताब इस बेहतरीन ज़बान (भाषा) में सबसे अफ़ज़ल रसूल पर फ़रिश्तों के सरदार फ़रिश्ते के ज़रिये तमाम रू-ए-ज़मीन के बेहतरीन मक़ाम में बेहतरीन वक़्तों में नाज़िल होकर हर-हर तरह कमाल को पहुँची, ताकि तुम हर तरह सोच-समझ सको और इसे जान लो। हम बेहतरीन क़िस्सा बयान फ़रमाते हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया- हुज़ूर! अगर कोई वाक़िआ़ बयान फ़रमाते तो बेहतर होता, इस पर यह आयत उतरी। एक और रिवायत में है कि एक ज़माने तक क़ुरआने करीम नाज़िल होता रहा और आप सहाबा रज़ि. के सामने तिलावत फ़रमाते रहे फिर उन्होंने कहा हुज़ूर कोई वाक़िआ़ भी बयान हो जाता, इस पर ये आयतें उतरीं। फिर कुछ वक़्त के बाद कहा काश कि आप कोई बात बयान फ़रमाते, इस पर आयतः

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ....... الخ

(अल्लाह ने सबसे बेहतर बात नाज़िल की) उतरी, और बात बयान हुई। कलाम का एक ही अन्दाज़ देखकर सहाबा रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! बात से ऊपर की और क़ुरआन से नीचे की कोई चीज़ होती, यानी वाक़िआ़, इस पर ये आयतें उतरीं। फिर उन्होंने हदीस की ख़्वाहिश की इस पर आयतः

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ....... الخ

उतरी। पस क़िस्से के इरादे पर बेहतरीन क़िस्सा और बात के इरादे पर बेहतरीन बात नाज़िल हुई। इस जगह जहाँ कि क़ुरआन की तारीफ़ हो रही है और यह बयान है कि यह क़ुरआन दूसरी सब किताबों से बेनियाज़ कर देने वाला है, मुनासिब है कि हम मुस्नद अहमद की उस हदीस को भी बयान कर दें जिसमें है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. को किसी अहले किताब से एक किताब हाथ लग गई थी, उसे लेकर उमर हाज़िर हुए और आपके सामने सुनाने लगे, इस पर नबी करीम सल्ल. सख़्त नाराज़ और ग़ुस्सा हो गये और फ़रमाने लगे ऐ ख़त्ताब के लड़के! क्या तुम इसमें मशग़ूल होकर बहक जाना चाहते हो? उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि मैं क़ुरआन को निहायत रोशन लेकर आया हूँ तुम इन अहले किताब से कोई बात न पूछो, मुम्किन है कि वे सही जवाब दें और तुम उसे झुठला दो, और हो सकता है कि वे ग़लत जवाब दें और तुम उसे सच्चा समझ लो। सुनो! उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर आज ख़ुद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम भी ज़िन्दा होते तो उन्हें भी सिवाय मेरी ताबेदारी के कोई चारा न था।

एक और रिवायत में है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने आपसे कहा कि क़बीला बनू क़ुरैज़ा के मेरे एक दोस्त ने तौरात में से चन्द जामे बातें मुझे लिख दी हैं तो क्या मैं उन्हें आपको सुनाऊँ? आपका चेहरा बदल गया (यानी नाराज़गी और ग़ुस्से से हालत बदल गयी) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन साबित रज़ि. ने कहा ऐ उमर! क्या तुम हुज़ूर सल्ल. के चेहरे को नहीं देख रहे हो? अब हज़रत उमर रज़ि. की निगाह पड़ी तो आप कहने लगे हम अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद के रसूल होने पर दिल से रज़ामन्द हैं। तब आपके चेहरे से ग़ुस्सा दूर हुआ और फ़रमाया उस ज़ाते पाक की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, अगर तुम में ख़ुद हज़रत मूसा होते फिर तुम मुझे छोड़कर उनकी इत्तिबा में लग जाते तो तुम सब गुमराह हो जाते। उम्मतों में से मेरा हिस्सा तुम हो और नबियों में से तुम्हारा हिस्सा

मैं हूँ। अबू यअ़ला में है कि सूस का रहने वाला क़बीला अ़ब्दुल-क़ैस का एक शख़्स जनाब फ़ारूक़े आज़म के पास आया, आपने उससे पूछा तेरा नाम फ़ुलाँ-फ़ुलाँ है? उसने कहा हाँ, पूछा तू सूस में रहता है? उसने कहा हाँ, तो आपके हाथ में जो ख़ोशा था उसे मारा, उसने कहा अमीरुल-मोमिनीन! मेरा क्या क़ुसूर है? आपने फ़रमाया बैठ जा, मैं बताता हूँ। फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर इसी सूरत की शुरू से तीन आयतें पढ़ीं। तीन मर्तबा इन आयतों की तिलावत की और तीन मर्तबा उसे मारा। उसने फिर पूछा कि अमीरुल-मोमिनीन! मेरा क़ुसूर क्या है? आपने फ़रमाया- तूने दानियाल की किताब लिखी है, उसने कहा फिर जो आप फ़रमायें मैं करने को तैयार हूँ। आपने फ़रमाया जा गर्म पानी और सफ़ेद रूई से उसे बिल्कुल मिटा दे। ख़बरदार आज के बाद उसे न ख़ुद पढ़ना न किसी और को पढ़ाना। अब अगर मैंने इसके ख़िलाफ़ सुना कि तूने ख़ुद उसे पढ़ा या किसी को पढ़ाया तो ऐसी सख़्त सज़ा दूँगा कि दूसरों को इबरत हो। फिर फ़रमाया बैठ जा, एक बात सुनता जा, मैंने जाकर अहले किताब की एक किताब लिखी, फिर उसे चमड़े में लिये हुए हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम के पास आया। आपने मुझसे पूछा तेरे हाथ में क्या है? मैंने कहा एक किताब है कि हम इल्म में बढ़ जायें। इस पर आप इस क़द्र नाराज़ हुए कि ग़ुस्से की वजह से आपके गालों पर सुर्ख़ी ज़ाहिर हो गई। फिर मुनादी की गई कि नमाज़ जमा करने वाली है, उस वक़्त अन्सार ने हथियार संभाल लिये कि किसी ने हुज़ूर सल्ल. को नाराज़ कर दिया है, और मिम्बरे नबवी के चारों तरफ़ वे लोग हथियार-बन्द बैठ गये। अब आपने फ़रमाया लोगो! मैं जामे कलिमात दिया गया हूँ और कलिमात के ख़ातिम दिया गया हूँ और फिर मेरे लिये बहुत ही मुख़्तसर किया गया है। मैं दीने ख़ुदा की बातें बहुत रोशन और स्पष्ट लाया हूँ। ख़बरदार! तुम बहक न जाना, गहरे उतरने वाले कहीं तुम्हें बहका न दें।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि. खड़े हो गये और कहने लगे अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर, आपके रसूल होने पर मैं तो या रसूलल्लाह दिल से राज़ी हूँ। अब हुज़ूर सल्ल. मिम्बर से उतरे। इसके एक रावी अ़ब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ को मुहद्दिसीन ज़ईफ़ (कमज़ोर) कहते हैं। इमाम बुख़ारी रह. उनकी हदीस को सही मानते हैं। मैं कहता हूँ कि इसकी एक ताईद एक दूसरी सनद से हाफ़िज़ अबू बक्र अहमद बिन इब्राहीम इस्माईली लाये हैं कि ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के ज़माने में आपने हिमस के चन्द आदमी बुलाये उनमें दो शख़्स वे थे जिन्होंने यहूदियों से चन्द बातें मुन्तख़ब करके लिख ली थीं, वे उस मजमूए को भी अपने साथ लाये ताकि हज़रत उमर रज़ि. से मालूम कर लें, अगर आपने इजाज़त दी तो हम इसमें ऐसी और भी बातें बढ़ा लेंगे वरना इसे भी फेंक देंगे। यहाँ आकर उन्होंने कहा ऐ अमीरुल-मोमिनीन! यहूदियों से हम बाज़ ऐसी बातें सुनते हैं कि जिनसे हमारे रौंगटे खड़े हो जाते हैं तो क्या वे बातें उनसे ले लें या बिल्कुल ही न लें? आपने फ़रमाया शायद तुमने उनकी कुछ बातें लिख रखी हैं? सुनो मैं इसमें फ़ैसलाकुन (निर्णायक) वाक़िआ सुनाऊँ। मैं हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में ख़ैबर गया, वहाँ के एक यहूदी की बातें मुझे बहुत पसन्द आईं, मैंने उससे दरख़्वास्त की और उसने वे बातें मुझे लिख दीं, मैंने वापस आकर हुज़ूर सल्ल. से ज़िक्र किया, आपने फ़रमाया जाओ उसे लेकर आओ। मैं ख़ुशी-ख़ुशी चला कि शायद आपको मेरा यह काम पसन्द आ गया। लाकर मैंने उसको पढ़ना शुरू किया, अब जो ज़रा सी देर के बाद मैंने नज़र उठाई तो देखा कि आप तो सख़्त नाराज़ हैं। मेरी ज़बान से फिर तो एक लफ़्ज़ भी न निकला और ख़ौफ़ की वजह से मेरा रुवाँ खड़ा हो गया। मेरी यह हालत देखकर आपने उन तहरीरों को उठा लिया, उनका एक-एक हर्फ़ मिटाना शुरू किया और ज़बाने मुबारक से इरशाद फ़रमाते जाते थे कि देखो ख़बरदार इनकी न मानना ये तो गुमराही के

Maktab E Ashraf

गड्ढ़े में जा पड़े हैं और ये तो दूसरों को भी बहका रहे हैं। चुनाँचे आपने उस सारी तहरीर का एक हर्फ़ भी बाक़ी न रखा। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- अगर तुमने भी उनकी बातें लिखी हुई होतीं तो मैं तुम्हें ऐसी सज़ा देता कि औरों के लिये इबरत (सबक़) हो जाये। उन्होंने कहा वल्लाह हम हरगिज़ एक हर्फ़ भी न लिखेंगे। बाहर आते ही जंगल में जाकर उन्होंने अपनी वे तख़्तियाँ गड्ढ़ा खोदकर दफ़न कर दीं। मरासीले अबी दाऊद में भी हज़रत उमर रज़ि. से ऐसी ही रिवायत है। वल्लाहु तआ़ला आलम

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَٰٓأَبَتِ إِنِّى رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِى سَٰجِدِينَ ○

(वह वक़्त ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जब यूसुफ़ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा! मैंने ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद देखे हैं, उनको अपने सामने सज्दा करते हुए देखा है। (4)

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का ख़्वाब

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के वालिद हज़रत याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हैं, चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम अ़लैहिमुस्सलाम हैं। (बुख़ारी)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल हुआ कि सब लोगों में ज़्यादा बुज़ुर्ग कौन है? आपने फ़रमाया जिसके दिल में अल्लाह का डर सबसे ज़्यादा हो। उन्होंने कहा हमारा मक़सूद ऐसा आ़म जवाब नहीं है। आपने फ़रमाया फिर सब लोगों में ज़्यादा बुज़ुर्ग हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम हैं जो ख़ुद नबी थे, जिनके वालिद नबी थे, जिनके दादा नबी थे, जिनके परदादा अल्लाह के नबी और ख़लील थे। उन्होंने कहा हम यह भी नहीं पूछते। आपने फ़रमाया फिर क्या तुम अ़रब के क़बीलों के बारे में यह सवाल करते हो? उन्होंने कहा जी हाँ। आपने फ़रमाया सुनो! जाहिलीयत के ज़माने में जो मुम्ताज़ और शरीफ़ थे वे इस्लाम लाने के बाद भी वैसे ही शरीफ़ (सम्मानित) हैं, जबकि उन्होंने दीनी समझ हासिल कर ली हो। (बुख़ारी)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबियों के ख़्वाब ख़ुदा की 'वही' होते हैं। मुफ़स्सिरीन ने कहा कि यहाँ ग्यारह सितारों से मुराद हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ग्यारह भाई हैं, और सूरज चाँद से मुराद आपके वालिद और वालिदा हैं। इस ख़्वाब की ताबीर ख़्वाब देखने के चालीस साल बाद ज़ाहिर हुई। बाज़ कहते हैं कि अस्सी बरस के बाद ज़ाहिर हुई, जबकि आपने अपने माँ-बाप को शाही तख़्त पर बैठाया और ग्यारह भाई आपके सामने सज्दे में गिर पड़े, उस वक़्त आपने फ़रमाया कि मेरे मेहरबान बाप यह देखिये आज ख़ुदा तआ़ला ने मेरे ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया।

एक रिवायत में है कि बुस्ताना नाम के यहूदियों का एक ज़बरदस्त आ़लिम था, उसने नबी पाक सल्ल. से उन ग्यारह सितारों के नाम दरियाफ़्त किये। आप ख़ामोश रहे, हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आसमान से नाज़िल होकर आपको नाम बतलाये। आपने उसे बुलवाया और फ़रमाया अगर मैं तुझे उनके नाम बता दूँ तो तू मुसलमान हो जायेगा? उसने इक़रार किया तो आपने फ़रमाया सुनो! उनके नाम ये हैं- जिरयान, तारिक़, ज़ियाल, ज़ुल-कतफ़ैन, क़ाबिस, वसाब, अ़मूदान, फ़लीक़, मुस्बिह, फ़रूह, फ़रग़। यहूदी ने कहा हाँ-हाँ

ख़ुदा की क़सम उन सितारों के नाम यही हैं। (इब्ने जरीर)

यह रिवायत किताब 'दलाईले बैहक़ी' में, अबू यअ़ला में, बज़्ज़ार में और इब्ने अबी हातिम में भी है। अबू यअ़ला में यह भी है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने जब यह ख़्वाब अपने वालिद साहिब से बयान किया तो आपने फ़रमाया- यह सच्चा ख़्वाब है, यह पूरा होकर रहेगा। आप फ़रमाते हैं कि सूरज से मुराद बाप हैं और चाँद से मुराद माँ हैं। लेकिन इस रिवायत की सनद में हकम बिन ज़हीर फ़ज़ारी मुन्फ़िरद (अकेले) हैं जिन्हें बाज़ इमामों ने ज़ईफ़ (कमज़ोर) कहा है, और अक्सर ने उन्हें मतरूक कर रखा है (यानी उनकी हदीसें छोड़ देते हैं) यही हुस्ने यूसुफ़ की रिवायत के रावी हैं उन्हें चारों ही ज़ईफ़ (कमज़ोर) कहते हैं।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ○	**उन्होंने फ़रमाया कि बेटा! अपने इस ख़्वाब को अपने भाईयों के सामने बयान मत करना, पस वे तुम्हारे लिए कोई ख़ास तदबीर करेंगे। बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है। (5)**

बाप की बेटे को नसीहत

हज़रत यूसुफ़ का यह ख़्वाब सुनकर इसकी ताबीर सामने रखकर हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने ताकीद कर दी कि इसे भाईयों के सामने न दोहराना, क्योंकि इस ख़्वाब की ताबीर यह है कि दूसरे भाई आपके सामने पस्त होंगे, यहाँ तक कि वे आपकी इज़्ज़त व ताज़ीम के लिये आपके सामने अपनी बहुत ही लाचारी और आ़जिज़ी ज़ाहिर करेंगे, तो मुम्किन है कि इस ख़्वाब को सुनकर इसकी ताबीर को सामने रखकर शैतान के बहकावे में आकर अभी से वे तुम्हारी दुश्मनी में लग जायें, हसद (जलन) की वजह से कोई नामाक़ूल फ़रेबकारी करने लगें और किसी हीले (बहाने) से तुझे पस्त करने की फ़िक्र में लग जायें। चुनाँचे रसूलुल्लाह सल्ल. की तालीम भी यही है, फ़रमाते हैं कि तुम लोग कोई अच्छा ख़्वाब देखो तो ख़ैर उसे बयान कर दो, और जो शख़्स कोई ऐसा बुरा ख़्वाब देखे तो जिस करवट पर हो वह करवट बदल दे, बाईं तरफ़ तीन मर्तबा थुत्कार दे और उसकी बुराई से अल्लाह तआ़ला की पनाह तलब करे, और किसी से उसका ज़िक्र न करे। वह ख़्वाब उसे कोई नुक़सान न देगा।

मुस्नद अहमद वग़ैरह की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब तक ख़्वाब की ताबीर न ली जाये वह गोया परिन्दे के पाँव पर है, हाँ जब उसकी ताबीर बयान हो गई फिर वह हो जाता है।

फ़ायदाः इसी से यह हुक्म भी लिया जा सकता है कि नेमत को छुपाना चाहिये जब तक कि वह ख़ुद अच्छी तरह हासिल न हो जाये और ज़ाहिर न हो जाये, जैसे कि एक हदीस में है कि ज़रूरतों के पूरा करने पर उनके छुपाने से भी मदद लिया करो, क्योंकि हर वह शख़्स जिसे कोई नेमत मिले लोग उससे हसद करने लग जाते हैं।

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ ع

और इसी तरह तुम्हारा रब तुमको चुनेगा और तुमको ख़्वाबों की ताबीर का इल्म देगा, और तुमपर और याक़ूब के ख़ानदान पर अपना इनाम पूरा करेगा जैसा कि इससे पहले तुम्हारे दादा-परदादा (यानी) इब्राहीम और इस्हाक़ पर अपना इनाम पूरा कर चुका है, वाक़ई तुम्हारा रब बड़ा इल्म (व) हिक्मत वाला है। (6)

ख़्वाब की ताबीर

हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अपने लख़्ते जिगर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को उन्हें मिलने वाले रुतबों और बुलन्दियों की ख़बर देते हैं कि जिस तरह ख़्वाब में उसने तुम्हें यह फ़ज़ीलत दिखाई इसी तरह वह तुम्हें नुबुव्वत का बुलन्द मर्तबा भी अ़ता फ़रमायेगा, तुम्हें ख़्वाब की ताबीर सिखा देगा और तुम्हें अपनी भरपूर नेमत देगा, यानी नुबुव्वत। जैसे कि इससे पहले वह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह और हज़रत इस्हाक़ को भी अ़ता फ़रमा चुका है, जो तुम्हारे दादा और परदादा थे। अल्लाह तआ़ला इससे ख़ूब वाक़िफ़ है कि नुबुव्वत के लायक़ कौन है।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۨ ۝ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝

यूसुफ़ और उनके भाईयों के क़िस्से में (ख़ुदा की क़ुदरत और आँ-हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत की) दलीलें मौजूद हैं, उन लोगों के लिए जो पूछते हैं। (7) (वह वक़्त ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जबकि उनके भाईयों ने बातचीत की कि यूसुफ़ और उनका भाई हमारे बाप को हमसे ज़्यादा प्यारे हैं, हालाँकि हम एक जमाअ़त (की जमाअ़त) हैं, वाक़ई हमारे बाप खुली ग़लती में हैं। (8) या तो युसूफ़ को क़त्ल कर डालो या उसको किसी सरज़मीन में डाल आओ तो तुम्हारे बाप का रुख़ ख़ालिस तुम्हारी तरफ़ हो जाएगा और तुम्हारे सब काम बन जाएँगे। (9) उन्हीं में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल मत करो, और उनको किसी अन्धेरे कुएँ में डाल दो, ताकि उनको कोई राह चलता निकाल ले जाए, अगर तुमको करना है। (10)

Maktab E Ashraf

हसद और ईर्ष्या का प्रदर्शन

वास्तव में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम और उनके भाईयों के वाक़िआ़त इस क़ाबिल हैं कि उनका दरियाफ़्त करने वाला उनसे बहुत ही इबरतें (सीख) हासिल कर सके और नसीहतें ले सके। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के एक ही माँ से दूसरे भाई बिनयामीन थे और ये सब भाई दूसरी माँ से थे। ये सब आपस में कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम अब्बा जान हमसे ज़्यादा इन दोनों को चाहते हैं, ताज्जुब है कि हम जो एक जमाअ़त हैं उनको तर्जीह देते हैं जो सिर्फ़ दो हैं। यक़ीनन यह तो वालिद साहिब की स्पष्ट ग़लती है। यह याद रहे कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाईयों की नुबुव्वत पर दर असल कोई दलील नहीं, और इस आयत के बयान का अन्दाज़ तो बिल्कुल इसके ख़िलाफ़ है। बाज़ लोगों का बयान है कि इस वाक़िए के बाद उन्हें नुबुव्वत मिली, लेकिन यह चीज़ भी दलील की मोहताज है। और दलील में क़ुरआन की आयत 'क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि...... (सूरः ब-क़रह आयत 136) में लफ़्ज़ 'असबात' पेश करना भी एहतिमाल से ज़्यादा वक़्अ़त नहीं रखता। इसलिये कि बनी इस्राईल के बुतून को 'असबात' कहा जाता है। जैसे कि 'अ़रब' (अ़रब के लोगों) को क़बाईल कहा जाता है और 'अ़जम' (अ़रब से बाहर के लोगों) को 'शुऊब' कहा जाता है। पस आयत में सिर्फ़ इतना ही है कि बनी इस्राईल के असबात पर अल्लाह की 'वही' नाज़िल हुई। उन्हें इसलिये संक्षिप रूप से ज़िक्र किया गया है कि ये बहुत थे लेकिन हर सब्त हज़रत यूसुफ़ के भाईयों में से एक की नस्ल थी। पस इसकी कोई दलील नहीं कि ख़ास भाईयों को ख़ुदा तआ़ला ने नुबुव्वत से सम्मानित किया था। वल्लाहु आलम।

फिर आपस में कहते हैं कि एक काम करो, वह यह कि यूसुफ़ को ख़त्म ही कर डालो, इस सूरत में न कोई हंगामा होगा और न कोई शोर व गुल, और नतीजे में अब्बा जान की मुहब्बत सिर्फ़ हमारे ही साथ रहेगी। अब उसे बाप से जुदा करने की दो सूरतें हैं, या तो उसे मार ही डालो या कहीं ऐसी दूर-दराज़ जगह फेंक आओ कि एक की दूसरे को ख़बर ही न हो। और इसे करके फिर नेक बन जाना, तौबा कर लेना अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला है। यह सुनकर एक ने मश्विरा दिया यही सबसे बड़ा था और इसका नाम रूबैल था। कोई कहता है, यहूदा था, कोई कहता है शमऊन था। उसने कहा भाई यह तो ना-इन्साफ़ी है बेवजह बेक़सूर सिर्फ़ अ़दावत (दुश्मनी) में ख़ूने नाहक़ गर्दन पर लेना तो ठीक नहीं। यह भी कुछ ख़ुदा की हिक्मत थी, रब को मन्ज़ूर ही न था, उनमें हज़रत यूसुफ़ को क़त्ल करने की क़ुव्वत ही न थी। मन्ज़ूरे ख़ुदा तो यह था कि यूसुफ़ को नबी बनाये, बादशाह बनाये और इन्हें आ़जिज़ी के साथ उसके सामने खड़ा करे। पस उनके दिल रूबैल की राय से मुतास्सिर हो गये और तय हुआ कि उसे किसी ग़ैर-आबाद कुँए में फेंक दें। क़तादा रह. कहते हैं कि यह बैतुल-मुक़द्दस का कुआँ था। उन्हें यह ख़्याल हुआ कि मुम्किन है मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रें और वे इसे अपने क़ाफ़िले में ले जायें, फिर कहाँ यह और कहाँ हम। जब गुड़ देने से काम निकलता हो तो ज़हर क्यों दो। बग़ैर क़त्ल किये मक़सद हासिल होता है तो क्यों अपने हाथ ख़ून से रंगो।

उनके गुनाह का तसव्वुर तो करो ये रिश्तेदारी के तोड़ने, बाप की नाफ़रमानी करने, छोटे पर ज़ुल्म करने, बेगुनाह को नुक़सान पहुँचाने, बड़े बूढ़े को सताने और हक़दार का हक़ काटने, इ़ज़्ज़त व फ़ज़ीलत के ख़िलाफ़ करने, बुज़ुर्गी को टालने और अपने बाप को दुख पहुँचाने और उसे उसके कलेजे की ठंडक और

आँखों के सुख से हमेशा के लिये दूर करने और बूढ़े बाप, ख़ुदा के मक़बूल बन्दे पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम को इस बुढ़ापे में नाक़ाबिले बरदाश्त सदमा पहुँचाने और उस बेसमझ बच्चे को अपने मेहरबान बाप की प्यार भरी निगाहों से हमेशा के लिये ओझल करने के पीछे लगे हैं। ख़ुदा के दो नबियों को दुख देना चाहते हैं, एक प्यार करने वाले बाप और उसके बेटे में जुदाई डालना चाहते हैं, सुख की जानों को दुख में डालना चाहते हैं, फूल से नाज़ुक बेज़ुबान बच्चे को उसके मुश्फ़िक़ मेहरबान बूढ़े बाप की नर्म व गर्म गोदी से अलग करते हैं, अल्लाह इन्हें बख़्शे। आह शैतान ने कैसी उल्टी पट्टी पढ़ाई है और इन्होंने भी कैसी बदी पर कमर बाँधी है।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَالَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ○ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ○	सबने कहा कि अब्बा! इसकी क्या वजह है कि यूसुफ़ के बारे में आप हमारा एतिबार नहीं करते, हालाँकि हम उनके ख़ैर-ख़्वाह हैं। (11) आप उनको कल के दिन हमारे साथ भेजिए कि ज़रा वे खाएँ और खेलें, और हम उनकी पूरी हिफ़ाज़त रखेंगे। (12)

साज़िश

बड़े भाई रूबैल के समझाने पर सब भाई इस राय पर सहमत हो गये कि यूसुफ़ को ले जायें और किसी ग़ैर-आबाद कुएँ में डाल आयें। यह तय करने के बाद बाप को धोखा देने, भाई को फुसला कर ले जाने और उस पर आफ़त ढाने के लिये सब मिलकर बाप के पास आये, इसके बावजूद कि थे बुरा सोचने वाले, बद-ख़्वाह, बुरा चाहने वाले, लेकिन बाप को अपनी बातों में फंसाने के लिये और अपने गहरे मक्र में उन्हें उलझाने के लिये पहले ही जाल बिछाते हैं कि अब्बा जी! आख़िर क्या बात है जो आप हमें यूसुफ़ के बारे में अमीन (अमानतदार) नहीं जानते? हम तो उसके भाई हैं, उसकी ख़ैरख़्वाही हम से ज़्यादा कौन कर सकता है? बाप से कहते हैं कि भाई यूसुफ़ को कल हमारे साथ सैर के लिये भेजिये, उनका जी ख़ुश होगा, दो घड़ी खेलकूद लेंगे, हंस-बोल लेंगे, आज़ादी से चल-फिर लेंगे, आप बेफ़िक्र रहिये हम उसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे, हर वक़्त देखभाल रखेंगे, आप हम पर भरोसा कीजिये, हम उसके निगहबान (मुहाफ़िज़ व निगराँ) हैं।

قَالَ اِنِّىْ لَيَحْزُنُنِىْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ○ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ○	(हज़रत याकूब ने) फ़रमाया कि मुझको यह बात ग़म में डालती है कि उसको तुम ले जाओ और मैं यह अन्देशा करता हूँ कि उसको कोई भेड़िया खा जाए और तुम उससे बेख़बर रहो। (13) वे बोले अगर उनको कोई भेड़िया खा जाये और हम एक जमाअ़त (की जमाअ़त मौजूद) हों तो हम बिल्कुल ही गए गुज़रे हुए। (14)

Maktaba Ashraf

Maktab E Ashraf

जो आशंका थी वह होकर रहा

अल्लाह के नबी हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अपने बेटों की इस दरख़्वास्त का कि भाई यूसुफ़ को हमारे साथ सैर के लिये भेजिये, जवाब देते हैं कि तुम्हें मालूम है मुझे इससे बहुत मुहब्बत है, तुम इसे लेजाओगे मुझ पर इसकी इतनी देर की जुदाई भी भारी गुज़रेगी। हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की इस मुहब्बत की वजह यह थी कि आप हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के चेहरे पर ख़ैर (भलाई और नेकी) के निशान देख रहे थे, नुबुव्वत का नूर पेशानी से ज़ाहिर था, अख़्लाक़ की पाकीज़गी एक-एक बात से टपकती थी, सूरत की ख़ूबी सीरत की अच्छाई का बयान थी, अल्लाह की तरफ़ से दोनों बाप बेटों पर दुरूद व सलाम हो।

दूसरी वजह यह भी है कि मुम्किन है तुम अपनी बकरियों के चराने चुगाने और दूसरे कामों में मशग़ूल रहो और ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई भेड़िया आकर इसका काम तमाम कर जाये और तुम्हें पता भी न चले। आह! हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की इसी बात को उन्होंने ले लिया और दिमाग़ में बसा लिया कि यह अच्छा उज़्र (बहाना) है। यूसुफ़ को अलग करके अब्बा के सामने यही गढ़ देंगे। उसी वक़्त बात बनाई और जवाब दिया कि अब्बा आपको भला क्या फ़िक्र, हमारी जमाअ़त की जमाअ़त क़वी और ताक़तवर मौजूद हो और हमारे भाई को भेड़िया खा जाये यह बिल्कुल नामुम्किन है, अगर ऐसा हो जाये फिर तो गोया हम सब बेकार, निकम्मे, आ़जिज़, नुक़सान वाले ही हुए।

सो जब उनको ले गए और सबने पुख़्ता इरादा कर लिया कि उनको किसी अन्धेरे कुँए में डाल दें, और हमने उनके पास 'वही' भेजी कि तुम उन लोगों को यह बात जतलाओगे और वे पहचानेंगे भी नहीं। (15)	فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

मुसीबत का पेश आना

समझा-बुझाकर भाईयों ने बाप को राज़ी कर ही लिया और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को लेकर चले। जंगल में जाकर सब ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को किसी ग़ैर-आबाद कुएँ में डाल दें। हालाँकि बाप से यह कहकर ले गये थे कि इसका जी बहलेगा, हम इसे इ़ज़्ज़त के साथ ले जायेंगे, हर तरह ख़ुश रखेंगे, इसका जी बहल जायेगा और यह राज़ी ख़ुश रहेगा। यहाँ आते ही ग़द्दारी शुरू कर दी और लुत्फ़ यह कि सबने एक साथ दिल सख़्त कर लिया, बाप ने इनकी बातों में आकर अपने जिगर के टुकड़े को इनके सुपुर्द कर दिया, जाते हुए सीने से लगाकर चुमकार-पुचकार कर दुआ़यें देकर रुख़्सत किया, बाप की आँखों से हटते ही उन सब ने भाई को तकलीफ़ें देनी शुरू कर दीं। बुरा-भला कहने लगे, मारते पीटते, बुरा भला कहते उस कुएँ के पास पहुँचे और हाथ-पाँव रस्सी से जकड़ कर कुएँ में गिराना चाहा। आप एक-एक के दामन से चिमटते हैं और एक-एक से रहम की दरख़्वास्त करते हैं, लेकिन हर एक झिड़क देता है और धक्का देकर मार-पीटकर हटा देता है। मायूस हो गये, सबने मिलकर मज़बूत बाँधा और

कुएँ में लटका दिया। आपने कुएँ का किनारा हाथ से थाम लिया, लेकिन भाईयों ने उंगलियों पर मार-मारकर उसे भी हाथ से छुड़ा दिया। आधी दूर आप पहुँचे होंगे कि उन्होंने रस्सी काट दी, आप तह में जा गिरे, कुएँ के बीच में एक पत्थर था जिस पर आप आकर खड़े हो गये, ऐन इस मुसीबत के वक़्त इस सख़्ती और तंगी के वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आपकी तरफ़ 'वही' भेजी ताकि आपका दिल मुत्मईन हो जाये, आप सब्र व संयम से काम लें और अन्जाम का आपको इल्म हो जाये।

'वही' (अल्लाह की तरफ़ से भेजे गये पैग़ाम या दिल में डाली गयी बात) में फ़रमाया गया कि ग़मगीन न हो, यह न समझ कि यह मुसीबत दूर न होगी। सुन! अल्लाह तआ़ला तुझे इस सख़्ती के बाद आसानी देगा, इस तकलीफ़ के बाद राहत मिलेगी, उन भाईयों पर खुदा तुझे ग़लबा देगा, ये अगरचे तुझे पस्त करना चाहते हैं लेकिन खुदा की मंशा है कि वह तुझे बुलन्द करे। ये जो कुछ आज तेरे साथ कर रहे हैं एक वक़्त आयेगा कि तू इन्हें इनके इस करतूत को याद दिलायेगा और ये शर्मिन्दगी से सर झुकाये हुये होंगे। अपना क़सूर सुन रहे होंगे और इन्हें यह भी न मालूम होगा कि तू तू है। चुनाँचे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई उनके पास पहुँचे तो आपने तो उन्हें पहचान लिया लेकिन वे न पहचान सके। उस वक़्त आपने एक प्याला मंगवाया अपने हाथ पर रखकर उसे उंगली से ठोका, आवाज़ निकलने ही वाली थी कि आपने फ़रमाया लो यह जाम तो कुछ कह रहा और तुम्हारे मुताल्लिक़ ही कुछ ख़बर दे रहा है। यह कह रहा है कि तुम्हारा एक सौतेला भाई यूसुफ़ नाम का था तुम उसे बाप के पास से ले गये और उसे कुएँ में फेंक दिया। फिर उसे उंगली मारी और ज़रा सी देर कान लगाकर फ़रमाया लो यह कह रहा है कि फिर तुम उसके कुर्ते पर झूठा ख़ून लगाकर बाप के पास गये और वहाँ जाकर उनसे कह दिया कि तेरे लड़के को भेड़िये ने खा लिया। अब तो ये हैरान हो गये और आपस में कहने लगे हाय बुरा हुआ भाँडा फूट गया। इस जाम ने तो तमाम सच्ची-सच्ची बातें बादशाह से कह दीं, बस यही है जो आपको कुएँ में 'वही' हुई कि इनके इस करतूत को तू इन्हें इनकी नासमझी की हालत में जतायेगा।

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ۝ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ۝	**और वे लोग अपने बाप के पास इशा के वक़्त रोते हुए पहुँचे। (16) कहने लगे अब्बा! हम सब तो आपस में दौड़ने में लग गए और यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया, पस एक भेड़िया उनको खा गया, और आप तो हमारा काहे को यक़ीन करने लगे, चाहे हम (कैसे ही) सच्चे हों। (17) और यूसुफ़ के कुर्ते पर झूठ-मूठ का ख़ून भी लगा लाए थे, (याक़ूब अ़लैहि. ने) फ़रमाया, (ऐसा नहीं है) बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है, सो सब्र ही करूँगा जिसमें शिकायत का नाम न होगा। और जो बातें तुम बनाते हो उनमें अल्लाह तआ़ला ही मदद करे। (18)**

Maktab E Ashraf

झूठ का घरौंदा

चुप चाप नन्हे भाई पर खुदा के मासूम नबी पर बाप की आँख के तारे पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़कर रात हुए बाप के पास भला बनने और अपनी हमदर्दी ज़ाहिर करने के लिये ग़म की सूरत बनाकर रोते हुए पहुँचे और अपने मलाल का यूसुफ़ के न होने का सबब यह बयान किया कि हमने तीर-अन्दाज़ी और दौड़ शुरू की, छोटे भाई को सामान के पास छोड़ा, इत्तिफ़ाक़ की बात है उसी वक़्त भेड़िया आ गया और भाई का लुक़्मा बना लिया, चीर-फाड़कर खा गया। फिर अपनी बात को सही साबित करने और यक़ीन दिलाने के लिये बाप के सामने बात बनाते हैं कि हम अगर आपके नज़दीक सच्चे ही होते तब भी यह वाक़िआ ऐसा है कि आप हमें सच्चा मानने में शंका करते, फिर जबकि पहले ही से आपने अपना एक ख़तरा ज़ाहिर किया हो और ख़िलाफ़े ज़ाहिर वाक़िए में इत्तिफ़ाक़न ऐसा ही हो भी जाये तो ज़ाहिर है कि आप इस वक़्त तो हमें सच्चा मान ही नहीं सकते, हैं तो हम सच्चे ही लेकिन आप भी हम पर एतिबार न करने में एक हद तक सही हैं। क्योंकि यह वाक़िआ ही ऐसा अनोखा है, हम ख़ुद हैरान हैं कि यह क्या हो गया। यह तो था ज़बानी खेल, एक काम भी इसी के साथ कर लाये थे यानी बकरी के एक बच्चे को ज़िबह करके उसके ख़ून से हज़रत यूसुफ़ के कपड़े रंग दिये कि बतौर सुबूत के अब्बा के सामने पेश करेंगे कि देखो ये हैं यूसुफ़ के ख़ून के धब्बे उनके कुर्ते पर। लेकिन ख़ुदा की शान चोर के पाँव कहाँ? सब कुछ तो किया लेकिन कुर्ता फाड़ना भूल गये, इसलिये बाप पर सब मक्र व फ़रेब खुल गया। लेकिन अल्लाह के नबी अ़लैहिस्सलाम ने सब्र किया और साफ़ लफ़्ज़ों में अगरचे न कहा फिर भी बेटों को भी पता चल गया कि अब्बा जी को हमारी बात सही मालूम नहीं हुई। फ़रमाया कि तुम्हारे दिल ने तो यह एक बात बना दी है, ख़ैर मैं तो तुम्हारी इस हरकत पर सब्र ही करूँगा, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने करम व मेहरबानी से इस दुख को टाल दे। तुम जो एक झूठी बात मुझसे बयान कर रहे हो और एक मुहाल चीज़ पर मुझे यक़ीन दिला रहे हो। इस पर मैं अल्लाह से मदद तलब करता हूँ, उसकी मदद शामिले हाल रही तो दूध का दूध और पानी का पानी अलग हो जायेगा।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि कुर्ता देखकर आपने यह भी फ़रमाया था कि ताज्जुब है भेड़िया यूसुफ़ को खा गया, उसका लिबास ख़ून से भर गया मगर कहीं से ज़रा भी न फटा, ख़ैर में सब्र करूँगा जिसमें कोई शिकायत न हो, न कोई घबराहट हो। कहते हैं कि तीन चीज़ों का नाम सब्र है, अपनी मुसीबत किसी से ज़िक्र न करना, अपने दिल का दुखड़ा किसी के सामने न रोना, और साथ ही अपने नफ़्स को पाक न समझना। इमाम बुख़ारी रह. ने इस मौक़े पर हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के उस वाक़िए की पूरी हदीस को बयान किया है जिसमें आप पर तोहमत लगाये जाने का ज़िक्र है। उसमें आपने फ़रमाया है कि वल्लाह मेरी और तुम्हारी मिसाल हज़रत यूसुफ़ के बाप की सी है कि उन्होंने फ़रमाया था- अब सब्र ही बेहतर है, और तुम्हारी इन बातों पर अल्लाह ही से मदद चाही गई है।

और एक क़ाफ़िला आ निकला और उन्होंने अपना आदमी पानी लाने के वास्ते भेजा, उसने अपना डोल डाला। कहने लगा कि (अरे भाई) बड़ी ख़ुशी की बात है, यह तो (अच्छा) लड़का	وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَأَدْلٰى دَلْوَهٗ ط قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ط

(निकल आया) और उनको (तिजारत का) माल क़रार देकर छुपा लिया, और अल्लाह को उन सबकी कारगुज़ारियाँ मालूम थीं। (19) और उनको बहुत ही कम क़ीमत में बेच डाला, यानी गिनती के चन्द दिर्हम के बदले, और वे लोग उनके कुछ क़द्रदान तो थे ही नहीं। (20)	وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزَّاهِدِيْنَ ۝

अल्लाह की तदबीर

भाई तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को कुएँ में डालकर चल दिये, यहाँ तीन दिन आपको उसी अंधेरे कुएँ में अकेले गुज़र गये। मुहम्मद बिन इस्हाक़ का बयान है कि उस कुएँ में गिराकर भाई तमाशा देखने के लिये उसके आस-पास ही दिन भर फिरते रहे कि देखें वह क्या करता है और उसके साथ क्या किया जाता है। क़ुदरते ख़ुदा से एक क़ाफ़िला वहीं से गुज़रा, उन्होंने अपने सक़्क़े को पानी के लिये भेजा, उसने उसी कुएँ में डोल डाला, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उसकी रस्सी को मज़बूत थाम लिया और बजाय पानी के आप बाहर निकले। वह आपको देखकर बाग़-बाग़ (बहुत ख़ुश) हो गया, रह न सका बुलन्द आवाज़ से कह उठा कि लो सुब्हानल्लाह यह तो जवान बच्चा आ गया। दूसरी क़िराअत इसकी 'या बुशरा' भी है। सुद्दी रह. कहते हैं कि बुशरा सक़्क़े के भेजने वाले का नाम भी था, उसने उसका नाम लेकर पुकार कर ख़बर दी कि मेरे डोल में तो एक बच्चा आया है, लेकिन सुद्दी का यह क़ौल ग़ैर-मशहूर है, इस तरह की क़िराअत पर भी वही मायने हो सकते हैं। इसकी इज़ाफ़त अपने नफ़्स की तरफ़ है (यानी उस डोल खींचने वाले ने अपने आपसे कहा कि मुबारक हो तुझे एक ख़ूबसूरत बच्चा मिल गया)।

उन लोगों ने आपको एक बड़ी मताअ़ और दौलत तसव्वुर करते हुए छुपा लिया और क़ाफ़िले के दूसरे लोगों पर यह राज़ ज़ाहिर न किया बल्कि कह दिया कि हमने कुएँ के पास लोगों से इसे ख़रीदा है। उन्होंने हमें इसे दे दिया है ताकि वे भी साझा न मिलायें। एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद यह है कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाईयों ने हज़रत यूसुफ़ की शान और पहचान छुपाई और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने भी अपने आपको ज़ाहिर न किया कि ऐसा न हो ये लोग कहीं क़त्ल ही कर दें। इसलिये चुप-चाप भाईयों के हाथों आप बिक गये। सक़्क़े से उन्होंने कहा उसने आवाज़ देकर बुला लिया, उन्होंने ओने पोने यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को उनको बेच डाला। अल्लाह उनकी इस हरकत से कुछ बेख़बर न था, वह देख रहा था। अगरचे वह क़ादिर था कि उसी वक़्त इस भेद को ज़ाहिर कर दे लेकिन उसकी हिक्मतें बेहद व बेहिसाब हैं। उसकी तक़दीर यूँ ही थी, सब कुछ उसी के हुक्म व मर्ज़ी से होता है, वह रब्बुल-आ़लमीन बरकतों वाला है।

इसमें हुज़ूर सल्ल. को भी एक तरह से तस्कीन व तसल्ली दी गई है कि मैं देख रहा हूँ कि क़ौम आपको दुख दे रही है, मैं क़ादिर हूँ कि आपको उनसे छुड़ा दूँ उन्हें ग़ारत कर दूँ लेकिन मेरे काम हिक्मत के साथ हैं, देर है अंधेर नहीं। बेफ़िक्र रहो जल्द ही तुम्हें ग़ालिब कर दूँगा और धीरे-धीरे उनको ख़त्म कर दूँगा। जैसे कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम और उनके भाईयों के दरमियान मेरी हिक्मत का हाथ काम करता रहा, यहाँ तक कि परिणाम के एतिबार से हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के सामने उन्हें झुकना पड़ा और उनके रुतबे का इक़रार करना पड़ा। बहुत थोड़े मौल (मामूली क़ीमत) पर भाईयों ने उन्हें बेच दिया, नाक़िस चीज़ के

Maktab E Ashraf

बदले यूसुफ़ जैसे भाई को दे दिया, और इसकी भी उन्हें कोई परवाह न थी बल्कि अगर उनसे बिल्कुल बिना क़ीमत माँगा जाता तो भी दे देते।

यह भी कहा गया है कि मतलब यह है कि क़ाफ़िले वालों ने उसे बहुत कम क़ीमत पर ख़रीदा, लेकिन यह कुछ ज़्यादा दुरुस्त नहीं। इसलिये कि उन्होंने तो उसे देखकर ख़ुशियाँ मनाई थीं और बतौर पूँजी उसे छुपा लिया था, पस अगर उन्हें उसकी दिलचस्पी न होती तो वे ऐसा क्यों करते। पस तरजीह इसी बात को है कि यहाँ मुराद भाइयों का हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को गिरे हुए भाव में बेच डालना है।

'बख़्सिन्' से मुराद हराम और ज़ुल्म भी है। लेकिन यहाँ वह मुराद नहीं ली गई, क्योंकि इस क़ीमत के हराम होने का इल्म तो हर एक को है। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम नबी पुत्र नबी पुत्र नबी पुत्र ख़लीलुर्रहमान अलैहिमुस्सलाम थे। आप तो करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम थे। पस यहाँ मुराद नाक़िस, कम, थोड़ी और खोटी बल्कि बराये नाम क़ीमत पर बेच डालना है, बावजूद इसके वह ज़ुल्म व हराम भी था, भाई को बेच रहे हैं और वह भी कोड़ियों के मौल। चन्द दिर्हमों के बदले बीस या बाईस या चालीस दिर्हम के बदले, यह दाम लेकर आपस में बाँट लिये और इसकी उन्हें कोई परवाह न थी, उन्हें नहीं मालूम था कि अल्लाह के यहाँ इनकी क्या क़द्र है, वे क्या जानते थे कि यह ख़ुदा के नबी बनने वाले हैं। हज़रत मुजाहिद रह. कहते हैं कि इतना सब कुछ करने पर भी सब्र न हुआ, क़ाफ़िले के पीछे हो लिये और उनसे कहने लगे देखो इस ग़ुलाम में भाग निकलने की आदत है, इसे मज़बूत बाँध दो, कहीं तुम्हारे हाथों से भी भाग न जाये।

इसी तरह बाँधे-बाँधे मिस्र तक पहुँचे और वहाँ आपको बाज़ार में लेजाकर बेचने लगे। उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुझे जो लेगा वह ख़ुश हो जायेगा, पस मिस्र के बादशाह ने आपको ख़रीद लिया, वह था भी मुसलमान।

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝	और जिस शख़्स ने मिस्र में उनको ख़रीदा था उसने अपनी बीवी से कहा की इसको ख़ातिर से रखना, क्या अजब है कि हमारे काम आए या हम इसको बेटा बना लें। और हमने इसी तरह यूसुफ़ को उस सरज़मीन में क़ुव्वत दी, और ताकि हम उनको ख़्वाबों की ताबीर देना बतला दें, और अल्लाह तआला अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर आदमी नहीं जानते। (21) और जब वह अपनी जवानी को पहुँचे, हमने उनको हिक्मत और इल्म अता फ़रमाया, और हम नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (22)

Maktab E Ashraf

अगर अल्लाह फ़ज़्ल करे तो दुश्मन क्या कर सकता है

रब तआ़ला का लुत्फ़ बयान हो रहा है कि जिसने आपको मिस्र में ख़रीदा अल्लाह ने उसके दिल में आपकी इ़ज़्ज़त व वक्अ़त डाल दी। उसने आपके नूरानी चेहरे को देखते ही समझ लिया कि इसमें ख़ैर व भलाई है। यह मिस्र का वज़ीर था, इसका नाम क़तफ़ीर था, कोई कहता है अतफ़ीर था, उसके बाप का नाम वहीब था, यह मिस्र के ख़ज़ानों का दारोग़ा (वित्त मंत्री) था। मिस्र की हुकूमत उस वक़्त रय्यान बिन वलीद के हाथ में थी। यह अ़मालीक़ (अ़रब क़बीलों में से मुल्क शाम के बादशाहों) में से एक शख़्स था। अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी का नाम राहील था, कोई कहता है कि ज़ुलेख़ा था। यह रुआ़बील की बेटी थीं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि मिस्र में जिसने आपको ख़रीदा उसका नाम मालिक बिन ज़अ़र बिन क़रीब बिन उनुक़ बिन मदयान बिन इब्राहीम था। वल्लाहु आलम।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा दूर-बीन, दूर-रस, अन्जाम पर नज़रें रखने वाले और अ़क़्लमन्दी से ताड़ने वाले (यानी दूरगामी नज़रों के मालिक और एक ही नज़र में ताड़ने और गहराई तक पहुँचने वाले) तीन शख़्स गुज़रे हैं, एक तो यही अ़ज़ीज़े मिस्र कि एक ही निगाह में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को ताड़ गया और जाते ही बीवी से कहा कि इसे अच्छी तरह आराम से रखो। दूसरे वह बच्ची जिसने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को एक ही नज़र में जान लिया और जाकर बाप से कहा कि अगर आपको आदमी की ज़रूरत है तो इनसे मामला कर लीजिये, यह क़वी और अमानतदार शख़्स हैं, तीसरे हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. कि आपने दुनिया से रुख़्सत होते हुए ख़िलाफ़त हज़रत उमर रज़ि. जैसे शख़्स को सौंपी।

यहाँ अल्लाह तआ़ला अपना एक और एहसान बयान फ़रमा रहा है कि भाईयों के फन्दे से हमने छुड़ा लिया, फिर हमने मिस्र में लाकर यहाँ की सरज़मीन पर उनका क़दम जमा दिया। क्योंकि अब हमारा यह इरादा पूरा होना था कि हम उसे ख़्वाब की ताबीर का कुछ इल्म अ़ता फ़रमायें। अल्लाह के इरादे को कौन टाल सकता है? कौन रोक सकता है? कौन ख़िलाफ़ कर सकता है? वह सब पर ग़ालिब है, सब उसके सामने आ़जिज़ हैं, जो चाहता है वह होकर ही रहता है, जो इरादा करता है कर चुकता है। लेकिन अक्सर लोग इल्म से ख़ाली होते हैं, न उसकी हिक्मत को मानते हैं, न उसकी हिक्मत को जानते हैं, न उसकी बारीकियों पर उनकी निगाह होती है, न वे उसकी हिक्मतों को समझ सकते हैं।

जब आपकी अ़क़्ल कामिल हुई, जब जिस्मानी बनावट पूरी हो चुकी, बदन अपने बढ़ने और उन्नति को हासिल कर चुका तो अल्लाह तआ़ला ने आपको नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई और इससे आपको इ़ज़्ज़त बख़्शी। यह कोई नई बात नहीं, हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं। कहते हैं कि इससे मुराद तैंतीस बरस की उम्र है, या तीस से कुछ ऊपर की, या बीस की, या चालीस की, या पच्चीस की, या तीस की या अट्ठारह की, या मुराद जवानी को पहुँचना है, और इसके अ़लावा और क़ौल भी हैं। वल्लाहु आलम

और जिस औरत के घर में यूसुफ़ रहते थे, वह (उनसे अपना मतलब हासिल करने को) उनको फुसलाने लगी और सारे दरवाज़े बन्द कर	وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ

Maktaba E Ashraf

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّیْٓ اَحْسَنَ مَثْوَایَ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ○	दिए और कहने लगी कि आ जाओ, तुम ही से कहती हूँ। (यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) कहा, (यह तो भारी गुनाह है) अल्लाह बचाए। (दूसरे) वह मेरा पालने-परवरिश करने वाला है। मुझको कैसी अच्छी तरह रखा, ऐसे हक़्-फ़रामोश को फ़लाह नहीं हुआ करती। (23)

हुस्न व पाकदामनी की कश्मकश

अ़ज़ीज़े मिस्र जिसने आपको ख़रीदा था और बहुत अच्छी तरह औलाद की तरह रखा था, अपनी घर वाली से भी ताकीद से कह दिया था कि इन्हें किसी तरह की तकलीफ़ न हो, इ़ज़्ज़त व इकराम से इन्हें रखो। उस औ़रत की नीयत में खोट आ जाता है। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के हुस्न पर आ़शिक़ हो जाती है, दरवाज़े बन्द करके और बन-संवर कर बुरे काम की तरफ़ यूसुफ़ को बुलाती है, लेकिन हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम बड़ी सख़्ती से इनकार करके उसे मायूस कर देते हैं। आप फ़रमाते हैं कि तेरा शौहर मेरा सरदार है। उस वक़्त मिस्र वालों की बोलचाल और मुहावरे में बड़ों के लिये यही लफ़्ज़ बोला जाता था। आप फ़रमाते हैं कि तुम्हारे शौहर की मुझ पर मेहरबानी है, वह मेरे साथ अच्छे सुलूक व एहसान से पेश आते हैं, फिर कैसे मुम्किन है कि मैं उनकी ख़ियानत (यानी इ़ज़्ज़त व आबरू में बद-दियानती) करूँ। याद रखो चीज़ को ग़ैर-जगह रखने वाले भलाई से मेहरूम हो जाते हैं।

लफ़्ज़ 'है-त' के बारे में उलेमा की विभिन्न रायें और क़िराअतें हैं, हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ारियों की क़िराअतें क़रीब-क़रीब हैं। पस जिस तरह तुम सिखाये गये हो पढ़ते रहो, गहराई से, इख़्तिलाफ़ से और लान-तान व एतिराज़ से बचो। इस लफ़्ज़ के मायने यही हैं कि आ और सामने हो, वग़ैरह। फिर आपने इस लफ़्ज़ को पढ़ा, किसी ने कहा इसे दूसरी तरह भी पढ़ते हैं। आपने फ़रमाया दुरुस्त है, पर मैंने तो जिस तरह सीखा है उसी तरह पढ़ूँगा। यानी 'है-त' न कि 'हीतु'। यह लफ़्ज़ मुज़क्कर व मुअन्नस दोनों के लिये आता है।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِیْنَ ○	और उस औ़रत के दिल में तो उनका ख़्याल जम ही रहा था, और उनको भी उस औ़रत का कुछ-कुछ ख़्याल हो चला था, अगर अपने रब की दलील को उन्होंने न देखा होता तो ज़्यादा ख़्याल हो जाता अ़जब न था। इसी तरह (हमने उनको इल्म दिया) ताकि हम उनसे छोटे और बड़े गुनाह को दूर रखें, क्योंकि वह हमारे मुख़्लिस बन्दों में से थे। (24)

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की हिफ़ाज़त

पहले उलेमा और बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त से तो इस आयत के बारे में वह मन्क़ूल है जो इब्ने जरीर

Maktab E Ashraf

वग़ैरह ने लिखा है, और कहा गया है कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का इरादा उस औरत के साथ सिर्फ़ नफ़्स का खटका था। बग़वी की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है- जब मेरा कोई बन्दा नेकी का इरादा करे तो तुम उसकी नेकी लिख लो और जब उस नेकी को कर गुज़रे तो उस जैसी दस गुनी नेकी लिख लो, और अगर किसी बुराई का इरादा करे और फिर उसे न करे तो उसके लिये नेकी लिख लो, क्योंकि उसने मेरी वजह से उस बुराई को छोड़ा है। और अगर उस बुराई को कर ही गुज़रे तो उसी के बराबर लिख लो। इस हदीस के अलफ़ाज़ और भी हैं। असल बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। एक क़ौल है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उसे मारने का इरादा किया था। एक क़ौल है कि उसे बीवी बनाने की तमन्ना की थी। एक क़ौल है कि आप इरादा करते अगर दलील न देखते, लेकिन चूँकि दलील देख ली इरादा नहीं फ़रमाया। लेकिन इस क़ौल में अ़रबी ज़बान की हैसियत से कलाम है, जिसे इमाम इब्ने जरीर वग़ैरह ने बयान फ़रमा दिया है।

यह तो यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के इरादे के बारे में अक़वाल थे। वह दलील जो आपने देखी उसके मुताल्लिक़ भी उलेमा के अक़वाल मुलाहिज़ा फ़रमाईये। कहते हैं कि अपने वालिद हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को देखा कि गोया वह अपनी उंगली मुँह में डाले खड़े हैं और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के सीने पर आपने हाथ मारा। कहते हैं कि अपने सरदार की ख़्याली तस्वीर सामने आ गई। कहते हैं कि आपकी नज़र छत की तरफ़ उठ गई, देखते हैं कि उस पर यह आयत लिखी हुई है:

لَاتَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا.وَسَآءَ سَبِيْلًا.

कि ख़बरदार ज़िना के क़रीब भी न फटकना, वह बड़ी बेहयाई और ख़ुदा के ग़ज़ब का काम है। और वह बड़ा ही बुरा रास्ता है।

कहते हैं कि तीन आयतें लिखी थीं, एक तोः

اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ.

कि तुम पर निगराँ मुक़र्रर हैं। दूसरीः

وَمَا تَكُوْنُ فِىْ شَاْنٍ.

कि तुम जिस हाल में भी हो ख़ुदा तुम्हारे साथ है। तीसरी आयतः

اَفَمَنْ هُوَقَآئِمٌ..... الخ

कि ख़ुदा हर शख़्स के हर अ़मल पर हाज़िर नाज़िर है।

कहते हैं कि चार आयतें लिखी पाईं, तीन वही जो ऊपर हैं और एक ज़िना के हराम होने को बयान करने वाली आयत जो इससे पहले की है (यानी सूरः बनी इस्राईल की आयत 32)

कहते हैं कि कोई आयत दीवार पर ज़िना की मनाही के बारे में लिखी हुई पाई। कहते हैं कि एक निशान था जो आपके इरादे से आपको रोक रहा था, मुम्किन है वह याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की तस्वीर हो, और मुम्किन है अपने ख़रीदने वाले की सूरत हो, और मुम्किन है कोई क़ुरआनी आयत हो। कोई ऐसी साफ़ दलील नहीं कि किसी ख़ास एक चीज़ के फ़ैसले पर हम पहुँच सकें। हमारे लिये सही बात यही है कि इसे यूँ ही मुतलक़ (बिना किसी एक चीज़ को मुतैयन किये) छोड़ दिया जाये, जैसे कि अल्लाह के फ़रमान में भी सिर्फ़ दलील और निशानी कहा है किसी चीज़ को विशेष तौर पर बयान नहीं किया। (इसी तरह इरादे को

भी समझ लीजिये)।

फिर फ़रमाता है कि हमने जिस तरह उस वक़्त उसे एक दलील दिखाकर बुराई से बचा लिया, इसी तरह उसके और कामों में भी हम उसकी मदद करते रहे, और उसे बुराईयों व बेहयाईयों से महफ़ूज़ रखते रहे। वह था भी हमारा मक़बूल पसन्दीदा बेहतरीन और मुख़्लिस बन्दा। अल्लाह की तरफ़ से आप पर दुरूद व सलाम नाज़िल हो।

Maktab E Ashraf

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهُ مِنْ دُبُرٍ
وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ط قَالَتْ مَا
جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ
يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ قَالَ هِيَ
رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ
اَهْلِهَا ج اِنْ كَانَ قَمِيْصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ
فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ
قَمِيْصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ
قَالَ اِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ط اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ۝ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا سكتة
وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ
الْخٰطِـِٔيْنَ ۝ ع ١٣

और दोनों (आगे-पीछे) दरवाज़े की तरफ़ को दौड़े, और उस औरत ने उनका कुर्ता पीछे से फाड़ डाला, और दोनों ने उस औरत के शौहर को दरवाज़े के पास पाया। (औरत) बोली जो शख़्स तेरी बीवी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा सिवाय इसके और क्या है कि वह जेलख़ाने भेजा जाए या और कोई दर्दनाक सज़ा हो। (25) (हज़रत यूसुफ़ ने) कहा, यही मुझसे अपना मतलब (निकालने) को फुसलाती थी, और उस औरत के ख़ानदान में से एक गवाह ने गवाही दी कि इनका कुर्ता अगर आगे से फटा है तो औरत सच्ची है और ये झूठे। (26) और अगर इनका कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत झूठी और यह सच्चे। (27) सो जब उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो कहने लगा कि यह तुम औरतों की चालाकी है, बेशक तुम्हारी चालाकियाँ ग़ज़ब ही की हैं। (28) ऐ यूसुफ़! इस बात को जाने दो, और ऐ औरत! तू अपने क़ुसूर की माफ़ी माँग, बेशक पूरी की पूरी तू ही क़ुसूरवार है। (29)

पाकदामन यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ख़ुद को बचाने के लिये दरवाज़े की तरफ़ दौड़े और यह औरत आपको पकड़ने के लिये आपके पीछे भागी। पीछे से कुर्ता उसके हाथ में आ गया, ज़ोर से अपनी तरफ़ घसीटा जिससे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम गिर जाने के क़रीब हो गये, लेकिन आपने भी आगे को ज़ोर लगाकर

Maktaba E Ashraf

दौड़ जारी रखी, इसमें कुर्ता पीछे से बिल्कुल फट गया और दोनों दरवाज़े पर पहुँच गये। देखते हैं कि औरत का शौहर मौजूद है, उसे देखते ही उसने चाल चली और फ़ौरन ही सारा इल्ज़ाम यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर लगा दिया और आप अपनी पाकदामनी, आबरू और मज़लूमियत जताने लगी। सूखा सा मुँह बनाकर अपने शौहर से अपनी बिपता और पाकीज़गी बयान करते हुए कहती है- फ़रमाईये हुज़ूर! आपकी बीवी से जो बदकारी का इरादा रखे उसकी क्या सज़ा होनी चाहिये? बामुश्क़्क़त क़ैद या बड़ी मार से कम तो हरगिज़ कोई सज़ा इस जुर्म की नहीं हो सकती। अब जबकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपनी आबरू को ख़तरे में देखा और ख़ियानत की बदतरीन तोहमत लगती देखी तो अपने ऊपर से इल्ज़ाम हटाने, साफ़ और सच्ची हक़ीक़त के ज़ाहिर कर देने के लिये फ़रमाया- हक़ीक़त यह है कि यही मेरे पीछे पड़ी थीं, मेरे भागने पर मुझे पकड़ रही थीं, यहाँ तक कि मेरा कुर्ता भी फाड़ दिया।

उसी औरत के क़बीले से एक गवाह ने गवाही दी और मय सुबूत व दलील उनसे कहा कि फटे हुए कुर्ते को देख लो अगर वह सामने के रुख़ से फटा हुआ है तो ज़ाहिर है कि औरत सच्ची है और यह झूठा है। इसने उसे अपनी तरफ़ लाना चाहा उसने इसे धक्के दिये, रोका मना किया, हटाया इसगें सामने से कुर्ता फट गया तो वाक़ई क़ुसूरवार मर्द है। औरत जो अपनी बेगुनाही बयान करती है वह सच्ची है, वास्तव में इस सूरत में वह सच्ची है।

और अगर इसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ पाओ तो औरत के झूठा और मर्द के सच्चा होने में कलाम नहीं। ज़ाहिर है कि औरत इस पर माईल थी, यह उससे भागा वह दौड़ी, पकड़ा तो कुर्ता हाथ में आ गया, उसने अपनी तरफ़ घसीटा, इसने अपनी जानिब खींचा, वह पीछे की तरफ़ से फट गया।

कहते हैं कि यह गवाह बड़ा आदमी था, जिसके मुँह पर दाढ़ी थी। यह अज़ीज़े मिस्र का ख़ास आदमी था और पूरी उम्र का मर्द था, और ज़ुलेख़ा के चचा का लड़का था। ज़ुलेख़ा बादशाहे वक़्त रय्यान बिन वलीद की भानजी थी। पस एक क़ौल तो इस गवाह के मुताल्लिक़ यह है। दूसरा क़ौल यह है कि यह एक छोटा सा दूध पीता गहवारे में झूलता बच्चा था।

इब्ने जरीर में है कि चार छोटे बच्चों ने छुटपन में ही कलाम किया है, इस पूरी हदीस में उस बच्चे का भी ज़िक्र है जिसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाकदामनी की गवाही दी थी। इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि चार बच्चों ने कलाम किया है- फ़िरऔन की लड़की की मश्शाता (बाल संवारने वाली ख़ादिमा) के लड़के ने, हज़रत यूसुफ़ के गवाह ने, जुरैज के साहिब ने और हज़रत ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम ने। मुजाहिद रह. ने एक तो बिल्कुल ही ग़रीब बात कही, वह कहते हैं कि वह सिर्फ़ ख़ुदा का हुक्म था, कोई इनसान था ही नहीं।

इसी तजवीज़ के मुताबिक़ जब ज़ुलेख़ा के शौहर ने देखा तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के कुर्ते को पीछे की जानिब से फटा हुआ देखा, उसके नज़दीक साबित हो गया कि यूसुफ़ सच्चा और उसकी बीवी झूठी है। वह सच्चे यूसुफ़ पर तोहमत लगा रही है, तो बेसाख़्ता उसके मुँह से निकल गया कि यह तो तुम औरतों का फ़रेब है, इस नौजवान पर तुम तोहमत बाँध रही और झूठा इल्ज़ाम रख रही हो, तुम्हारे मक्र व फ़रेब तो हैं ही चक्कर में डाल देने वाले।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहता है कि आप इस वाक़िए को भूल जाईये, जाने दीजिये, इस नामुराद वाक़िए का फिर से ज़िक्र ही न कीजिये। फिर अपनी बीवी से कहता है कि तुम अपने गुनाह से इस्तिग़फ़ार करो। अज़ीज़े मिस्र नर्म आदमी था, नर्म अख़्लाक़ थे, या यूँ समझो कि वह समझ रहा था कि

यह औरत माज़ूर समझे जाने के लायक़ है। उसने वह देखा है जिस पर सब्र करना बहुत मुश्किल है, इसलिये उसे हिदायत कर दी कि अपने बुरे इरादे से तौबा कर, सरासर तू ही ख़तावार है, ग़लती ख़ुद की फिर इल्ज़ाम दूसरों के सर रखा।

Maktab E Ashraf

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتٰهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۗ اِنَّا لَنَرٰهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۗ اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ۗ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۗ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ

और कुछ औरतों ने जो कि शहर में रहती थीं यह बात कही कि अ़ज़ीज़ की बीवी अपने गुलाम को (उससे अपना मतलब हासिल करने के वास्ते) फुसलाती है। उस गुलाम का इश्क़ उसके दिल में जगह कर गया है, हम तो उसको खुली ग़लती में देखते हैं। (30) सो जब उस औरत ने उन औरतों की यह बदगोई सुनी तो किसी के हाथ उनको बुला भेजा (कि तुम्हारी दावत है) और उनके वास्ते (मस्नद) तकिया लगाया, और हर एक को उनमें से एक-एक चाक़ू दे दिया। (यह तो सिर्फ़ बहाना था, असली ग़र्ज़ यह थी कि अपने आपे में न रहकर अपने हाथ ज़ख़्मी कर लें) और (यूसुफ़ से) कहा कि ज़रा इनके सामने तो आ जाओ। (वह यह समझकर कि कोई जायज़ और सही ज़रूरत होगी बाहर आ गए) सो औरतों ने जो उनको देखा तो (उनके हुस्न व ख़ूबसूरती से) हैरान रह गईं और (उनपर ऐसी बदहवासी तारी हुई कि) अपने हाथ काट लिए, और कहने लगीं, ख़ुदा की पनाह, यह शख़्स आदमी हरगिज़ नहीं, यह तो कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। (31) बोली वह शख़्स यही है जिसके बारे में तुम मुझको बुरा-भला कहती थीं (कि अपने गुलाम को चाहती है) और वाक़ई मैंने इससे अपना मतलब हासिल करने की ख़्वाहिश की थी मगर यह पाक-साफ़ रहा, और अगर आईन्दा (भी) मेरा कहना नहीं करेगा तो बेशक जेलख़ाने भेजा जाएगा और बेइज़्ज़त भी होगा। (32)

(यूसुफ़ ने) दुआ की कि ऐ मेरे रब! जिस काम की तरफ़ ये औरतें मुझको बुला रही हैं

اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝	उससे तो जेल में जाना ही मुझको ज़्यादा पसन्द है। और अगर आप उनके दाव-पैच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माईल हो जाऊँगा और नादानी का काम कर बैठूँगा। (33) सो उनके रब ने उनकी दुआ क़बूल की और उन औरतों के दाव-पैच को उनसे दूर रखा, बेशक वह बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है। (34)

मुसीबत पर मुसीबत

इस दास्ताने मुहब्बत की ख़बर शहर में फैल गई, चर्चे होने लगे, चन्द शरीफ़-ज़ादियों (बड़े घरों की और सम्मानित औरतों) ने निहायत ताज्जुब व अपमान से इस क़िस्से को दोहराया कि देखो वज़ीर की बीवी है और एक ग़ुलाम पर जान दे रही है, उसकी मुहब्बत को अपने दिल में जमाये हुए है। 'शग़फ़' कहते हैं हद से गुज़री हुई क़ातिल मुहब्बत को, शिग़ाफ़ कहते हैं दिल के पर्दों को। वे कहने लगीं कि अज़ीज़ की बीवी खुली ग़लती में पड़ी हुई है। कहीं इन ग़ीबतों का पता अज़ीज़ की बीवी को चल गया, यहाँ लफ़्ज़ 'मक्र' इसलिये बोला गया है कि कुछ हज़रात के बक़ौल ख़ुद उन औरतों का वास्तव में यह एक खुला मक्र (फ़रेब और धोखा) था, उन्हें तो दर असल हुस्ने यूसुफ़ के दीदार की तमन्ना थी। यह तो सिर्फ़ एक हीला बनाया था। अज़ीज़ की बीवी भी उनकी चाल समझ गई और फिर इसमें उसने अपनी माज़ूरी की मस्लेहत भी देखी तो उनको उसी वक़्त बुला भेजा कि फ़ुलाँ वक़्त आपकी मेरे यहाँ दावत है और एक मज्लिस और महफ़िल जमाई जहाँ फल और मेवे बहुत थे। उसने तराश-तराश कर छील-छीलकर खाने के लिये एक-एक तेज़ चाक़ू सब के हाथ में दे दिया। यह था उन औरतों के धोखे का जवाब। उन्होंने एतिराज़ जड़ कर यूसुफ़ का हुस्न देखना चाहा, इसने अपने को माज़ूर ज़ाहिर करने और उनके मक्र को ज़ाहिर करने के लिये उन्हें ख़ुद उनके हाथों से ज़ख़्मी कर दिया।

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से कहा कि आप आईये। उन्हें अपनी मालिका का हुक्म मानने से कैसे इनकार हो सकता था? उसी वक़्त जिस कमरे में थे वहाँ से आ गये। औरतों की निगाह जो आपके चेहरे पर पड़ी तो सब की सब हैरान रह गईं, हैबत व जलाल और हुस्न के रौब से बेख़ुद हो गईं और बजाय इसके कि उन तेज़ चलने वाली छुरियों से फल कटते उनके हाथ और उंगलियाँ कटने लगीं।

हज़रत ज़ैद बिन असलम कहते हैं कि बाक़ायदा मेहमान नवाज़ी पहले हो चुकी थी, अब तो सिर्फ़ मेवे से तवाज़ो हो रही थी। मीठे फल हाथों में थे, चाक़ू चल रहे थे कि उसने कहा यूसुफ़ को देखना चाहती हो? सब एक ज़बान होकर बोल उठीं हाँ-हाँ ज़रूर। उसी वक़्त हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से कहलवा भेजा कि तशरीफ़ लाईये। आप आये, फिर उसने कहा जाईये, आप चले गये। आते-जाते सामने से पीछे से उन सब औरतों ने पूरी तरह आपको देखा, देखते ही सब सकते में आ गईं, होश व हवास जाते रहे, बजाय नींबू काटने के अपने हाथ काट लिये और कोई एहसास तक न हुआ। हाँ जब यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम चले गये तो होश आया और तकलीफ़ महसूस हुई तब पता चला कि बजाय फल के हाथ काट लिया है। इस पर अज़ीज़

की बीवी ने कहा देखा एक ही बार के जमाल (हुस्न की झलक) ने तुम्हें ऐसा बेख़ुद और मदहोश कर दिया फिर बतलाओ मेरा क्या हाल होगा?

औरतों ने कहा ख़ुदा की कसम यह इनसान नहीं, यह तो फ़रिश्ता है, और फ़रिश्ता भी बड़े मर्तबे वाला। आज के बाद हम तुम्हें कभी मलामत नहीं करेंगे। उन औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम जैसा तो कहाँ उनके आस-पास उनके जैसा भी कोई शख़्स नहीं देखा था। आपको आधा हुस्न क़ुदरत ने अ़ता फ़रमा रखा था। चुनाँचे मेराज की हदीस में है कि तीसरे आसमान पर रसूलुल्लाह सल्ल. की मुलाक़ात हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से हुई, जिन्हें आधा हुस्न दिया गया था।

एक और रिवायत में है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम और आपकी वालिदा साहिबा को आधा हुस्न क़ुदरत की तरफ़ से इनायत किया गया था। एक और रिवायत में है कि तिहाई हुस्न हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम और आपकी वालिदा को दिया गया था। आपका चेहरा चाँद की तरह रोशन था, जब कभी कोई औरत आपके पास किसी काम के लिये आती तो आप मुँह ढककर उससे बात करते कि कहीं वह फ़ितने में न पड़ जाये।

एक और रिवायत में है कि हुस्न के तीन हिस्से किये गये हैं, तमाम लोगों को दो हिस्से तक़सीम किये गये और एक हिस्सा सिर्फ़ आपको और आपकी वालिदा को दिया गया। या दो तिहाईयाँ हुस्न की इन माँ बेटे को मिलीं और एक तिहाई में दुनिया के तमाम लोग।

एक और रिवायत में है कि हुस्न के दो हिस्से किये गये, एक हिस्से में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम और आपकी वालिदा हज़रत सारा और एक हिस्से में दुनिया के और सब लोग। बैहक़ी में है कि आपको हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का आधा हुस्न दिया गया था, अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को अपने हाथ से कमाले सूरत का नमूना बनाया था और बहुत ही हसीन पैदा किया था। आपकी औलाद में आपके जैसा कोई न था और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को उनका आधा हुस्न दिया गया था। पस उन औरतों ने आपको देखकर यही कहा कि अल्लाह की पनाह! यह इनसान नहीं। 'ब-शरन्' की दूसरी क़िराअत 'बशरिय्यिन्' है, यानी यह ख़रीदा हुआ इनसान हो ही नहीं सकता, यह तो कोई इज़्ज़त व रुतबे वाला फ़रिश्ता है। अब अ़ज़ीज़ की बीवी ने कहा बतलाओ तुम मुझे माज़ूर समझोगी कि नहीं? इसका हुस्न व जमाल क्या ऐसा नहीं कि सब्र व बरदाश्त छीन ले? मैंने हर चन्द इसे अपनी तरफ़ माईल करना चाहा लेकिन यह मेरे क़ब्ज़े में नहीं आया। अब समझ लो कि जहाँ इसमें यह ज़ाहिरी ख़ूबी है वहाँ आबरू व पाकदामनी की यह बातिनी ख़ूबी भी बेनज़ीर है। फिर धमकाने लगी कि अगर मेरी बात यह न मानेगा तो इसे क़ैदख़ाना भुगतना पड़ेगा और मैं इसको बहुत ज़लील करूँगी। उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उनके इस ढोंग से अल्लाह की पनाह तलब की और दुआ़ की कि या अल्लाह! मुझे जेलख़ाने जाना पसन्द है मगर तू मुझे इनके बुरे इरादों से महफ़ूज़ रख। ऐसा न हो कि मैं किसी बुराई में फंस जाऊँ। ख़ुदाया तू अगर मुझे बचा ले तो मैं बच सकता हूँ वरना मुझमें इतनी ताक़त नहीं, मुझे अपने किसी नफ़े नुक़सान का कोई इख़्तियार नहीं। तेरी मदद और तेरे रहम व करम के बग़ैर न किसी गुनाह से रुक सकता हूँ न किसी नेकी को कर सकता हूँ। ऐ बारी तआ़ला मैं तुझसे मदद तलब करता हूँ तुझी पर भरोसा रखता हूँ तू मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर, कि मैं इन औरतों की तरफ़ झुक जाऊँ और जाहिलों में से हो जाऊँ।

पस अल्लाह तआ़ला ने आपकी दुआ़ कबूल फ़रमा ली और आपको बाल-बाल बचा लिया। पाकदामनी

Maktab E Ashraf

व आबरू अ़ता फ़रमाई, अपनी हिफ़ाज़त में रखा और बुराई से आप बचे ही रहे, बावजूद भरपूर जवानी के बावजूद इन्तिहाई हुस्न व ख़ूबी के, बावजूद हर तरह के कमाल के जो आप में था, आप अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को ग़लत जगह पूरा करने से रुके रहे और उस औरत की तरफ़ रुख़ भी न किया, जो रईस ज़ादी है, रईस की बीवी है, उनकी मालिका है, फिर बहुत ही ख़ूबसूरत है, हुस्न के साथ ही माल भी है, हुकूमत भी है, वह अपनी बात के मानने पर इनाम व इकराम का और न मानने पर जेल का और सख़्त सज़ा का हुक्म सुना रही है। लेकिन आपके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा का समुद्र मौजें मार रहा है, आप अपने इस दुनियावी आराम को और इस ऐश और लज़्ज़त को नामे ख़ुदा पर क़ुरबान करते हैं, और क़ैद व बन्द को उस पर तरजीह देते हैं ताकि ख़ुदा के अ़ज़ाब से बच जायें और आख़िरत में सवाब के मुस्तहिक़ बन जायें।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- सात क़िस्म के लोग हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला अपने साये तले जगह देगा, जिस दिन कि कोई साया सिवाय उसके साये के न होगा।

(1) मुसलमान आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) बादशाह।

(2) वह जवान मर्द व औ़रत जिसने अपनी जवानी ख़ुदा की इबादत में गुज़ार दी।

(3) वह शख़्स जिसका दिल मस्जिद में अटका हुआ हो, जब मस्जिद से निकला मस्जिद की धुन में रहे यहाँ तक कि फिर वहाँ जाये।

(4) वे दो शख़्स जो आपस में सिर्फ़ अल्लाह के लिये मुहब्बत रखते हैं। उसी पर जमा होते हैं और उसी पर बिछुड़ते हैं।

(5) वह शख़्स जो सदक़ा देता है लेकिन इस तरह छुपाकर कि दायें हाथ के ख़र्च की ख़बर बायें हाथ को नहीं होती।

(6) वह शख़्स जिसे कोई पद, ओ़हदे वाली और हसीन व ख़ूबसूरत औ़रत अपनी तरफ़ बुलाये और वह कह दे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ।

(7) वह शख़्स जिसने तन्हाई में ख़ुदा को याद किया फिर उसकी दोनों आँखों से आँसू जारी हो गये।

फिर बहुत-सी निशानियाँ देखने के बाद उन लोगों को यही मस्लेहत मालूम हुआ कि उनको एक वक़्त तक क़ैद में रखें। (35)	ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ۠

ع ٦ ١٤

क़ैद लेकिन हज़ारों आज़ादियों से बेहतर

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की पाकदामनी का राज़ सब पर खुल गया, लेकिन फिर भी उन लोगों ने मस्लेहत इसी में देखी कि कुछ मुद्दत के लिये हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को जेलख़ाने में ही रखें। बहुत मुम्किन है कि इसमें उन सब ने यह मस्लेहत सोची हो कि लोगों में बात फैल गई है कि अ़ज़ीज़ की बीवी इसके इश्क़ में मुब्तला है, जब हम यूसुफ़ को क़ैद कर देंगे तो लोग समझ लेंगे कि क़सूर इसी का है। इसी ने कोई ऐसी निगाह की होगी। यही वजह थी कि जब मिस्र के बादशाह ने आपको क़ैदख़ाने से आज़ाद करने के लिये अपने पास बुलवाया तो आपने वहीं से फ़रमाया कि मैं न निकलूँगा जब तक मेरा इस इल्ज़ाम से बरी होना और मेरी पाकदामनी साफ़ तौर पर ज़ाहिर न हो जाये, और आप हज़रात इसकी पूरी तहक़ीक़

Maktab E Ashraf

न कर लें। जब तक बादशाह ने हर तरह गवाहों से बल्कि ख़ुद अ़ज़ीज़ की बीवी से पूरी तहक़ीक़ न कर ली और आपका बेक़सूर होना सारी दुनिया पर न खुल गया, आप जेलख़ाने से बाहर न निकले।

फिर आप बाहर आये जबकि एक दिल भी ऐसा न था जिसमें अल्लाह के पाकदामन नबी व रसूल हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ से ज़रा भी बदगुमानी हो, क़ैद करने की बड़ी वजह यही थी कि अ़ज़ीज़ की बीवी की रुस्वाई न हो।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۭ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّىْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّىْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۭ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ○	और उनके (यानी यूसुफ़ के) साथ और भी दो गुलाम क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए। उनमें से एक ने कहा कि मैं अपने को (ख़्वाब में) देखता हूँ कि शराब निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा कि मैं अपने को इस तरह देखता हूँ कि मैं अपने सर पर रोटियाँ लिए जाता हूँ। उनमें से परिन्दे खाते हैं। हमको इस (ख़्वाब) की ताबीर बतलाईये। आप हमको नेक आदमी मालूम होते हैं। (36)

रिहाई के इन्तिज़ामात

इत्तिफ़ाक़ से जिस रोज़ हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को जेलख़ाने में जाना पड़ा, उसी दिन बादशाह का साक़ी (शराब पिलाने वाला) और नानबाई भी किसी जुर्म में जेलख़ाने भेजे गये। साक़ी का नाम बिन्दार था और बावर्ची का नाम बल्लस था। उन पर इल्ज़ाम यह था कि उन्होंने खाने पीने में बादशाह को ज़हर देने की साज़िश की थी। क़ैदख़ाने में भी अल्लाह के नबी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की नेकियों की बहुत शोहरत थी। सच्चाई, अमानतदारी, सख़ावत, अच्छे अख़्लाक़, इबादत की अधिकता, ख़ुदा का ख़ौफ़ खाने, इल्म व अ़मल, ताबीरे ख़्वाब, एहसान व सुलूक वग़ैरह में आप मशहूर हो गये थे। जेलख़ाने के क़ैदियों की भलाई, उनकी हमदर्दी, उनसे मुरव्वत और सुलूक, उनके साथ भलाई और एहसान, उनकी दिलजोई और तसल्ली देना, उनके बीमारों की तीमारदारी, ख़िदमत और दवा-दारू भी आपका शग़ल था।

ये दोनों शाही मुलाज़िम हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से बहुत ही मुहब्बत करने लगे। एक दिन कहने लगे कि जनाब! हमें आपसे बहुत ही मुहब्बत हो गई है। आपने फ़रमाया अल्लाह तुम्हें बरकत दे। बात यह है कि मुझे तो जिसने चाहा कोई न कोई आफ़त ही मुझ पर लाये। फूफी की मुहब्बत, बाप का प्यार, अ़ज़ीज़ की बीवी का इश्क़, सब मुझे याद है, और इसका नतीजा मेरी ही नहीं बल्कि तुम्हारी भी आँखों के सामने है।

अब दोनों ने एक मर्तबा ख़्वाब देखा। साक़ी ने तो देखा कि वह अंगूर का शीरा निचोड़ रहा है। इब्ने मसऊद रज़ि. की किराअत में 'ख़म्रन' के बदले लफ़्ज़ 'इ-नबन्' है, अ़म्मान के लोग अंगूर को ख़मर कहते हैं। उसने देखा था कि गोया अंगूर की बेल बूटी है, उसमें ख़ोशे लगे हुए हैं, उसने तोड़े हैं, फिर उनका शीरा निचोड़ रहा है, कि बादशाह को पिलाये। यह ख़्वाब बयान करके इच्छा व्यक्त की कि आप हमें इसकी

Maktab E Ashraf

ताबीर बतलाईये।

अल्लाह के पैग़म्बर यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- इसकी ताबीर यह है कि तुम्हें तीन दिन के बाद जेलख़ाने से आज़ाद कर दिया जायेगा और तुम अपने काम पर यानी बादशाह के लिये जाम बनाने पर लग जाओगे। दूसरे ने कहा जनाब! मैंने ख़्वाब देखा है कि मैं सर पर रोटी उठाये हुए हूँ और परिन्दे आ-आकर उसमें से खा रहे हैं। अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक मशहूर बात यह है कि वाक़ई इन दोनों ने यही ख़्वाब देखे थे, और इनकी सही ताबीर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से दरियाफ़्त की थी। लेकिन हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से मन्क़ूल है कि दर हक़ीक़त उन्होंने कोई ख़्वाब नहीं देखा था बल्कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की आज़माईश के लिये झूठे ख़्वाब बयान करके ताबीर तलब की थी।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝	(यूसुफ़ ने) फ़रमाया कि जो खाना तुम्हारे पास आता है जो कि तुमको खाने के लिए मिलता है, मैं उसके आने से पहले उसकी हक़ीक़त तुमको बतला दिया करता हूँ। यह (बतला देना) उस इल्म की बदौलत है जो मुझको मेरे रब ने तालीम फ़रमाया है, मैंने तो उन लोगों का मज़हब छोड़ रखा है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वे लोग आख़िरत के भी इनकारी हैं। (37) और मैंने अपने बाप-दादों का मज़हब इख़्तियार कर रखा है, इब्राहीम का और इस्हाक़ का और याक़ूब का। हमको किसी तरह मुनासिब नहीं कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक क़रार दें। यह (तौहीद का अक़ीदा) हम पर और दूसरे लोगों पर ख़ुदा तआ़ला का एक फ़ज़्ल है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (38)

ख़्वाब की ताबीर

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अपने दोनों क़ैदी साथियों को तसल्ली देते हैं कि मैं तुम्हारे ख़्वाब की सही ताबीर जानता हूँ और उसके बतलाने में मुझे कोई बुख़्ल नहीं। इसकी ताबीर के वाक़े होने से पहले ही मैं तुम्हें वह बतला दूँगा। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के इस फ़रमान और इस वादे से तो बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम तन्हाई की क़ैद में थे. खाने के वक़्त खोल दिया जाता था और एक दूसरे से मिल सकते थे, इसलिये आपने उनसे यह वादा किया। और मुम्किन है कि ख़ुदा की तरफ़ से थोड़ी थोड़ी करके दोनों ख़्वाबों की पूरी ताबीर बतलाई गई हो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह क़ौल नक़ल किया गया है, अगरचे बहुत ग़रीब है। फिर फ़रमाते हैं

Maktab E Ashraf

मुझे यह इल्म ख़ुदा तआला की तरफ़ से अता फ़रमाया गया है। वजह यह है कि मैंने उन काफ़िरों का मज़हब छोड़ रखा है, जो न ख़ुदा को मानें न आख़िरत को सच्चा जानें। मैंने ख़ुदा के पैग़म्बरों के सच्चे दीन को मान रखा है और उसी की ताबेदारी करता हूँ। ख़ुद मेरे बाप दादा अल्लाह के रसूल थे। इब्राहीम, इस्हाक़, याक़ूब अलैहिमुस्सलाम। हक़ीक़त यह है कि जो भी सही रास्ते पर चले और उसी पर जमा रहे, हिदायत का पैरोकार रहे, ख़ुदा के रसूलों की इत्तिबा को लाज़िम पकड़े, गुमराहों की राह से मुँह फेर ले, अल्लाह तबारक व तआला उसके दिल को नूर से पुर और उसके सीने को भर देता है। उसे इल्म व इरफ़ान की दौलत से मालामाल कर देता है। उसे भलाई में लोगों का पेशवा बना देता है, और दुनिया को वह नेकी की तरफ़ बुलाता रहता है।

जब हमको सही रास्ता दिखा दिया गया, तौहीद की समझ हमें दे दी गई, शिर्क की बुराई बता दी गई, फिर हमें यह बात कैसे शोभा देती है कि हम ख़ुदा के साथ और किसी को भी शरीक कर लें। यह तौहीद, यह सच्चा दीन और यह ख़ुदा के एक होने की गवाही, यह ख़ास ख़ुदा का फ़ज़्ल है, जिसमें तन्हा हम ही नहीं बल्कि ख़ुदा की दूसरी मख़्लूक़ भी शामिल है। हाँ हमें यह बरतरी है कि हमारी जानिब डायरेक्ट ख़ुदा की 'वही' आई और लोगों को हमने यह 'वही' पहुँचाई।

लेकिन अक्सर लोग नाशुक्री करते हैं, ख़ुदा की इस ज़बरदस्त नेमत को जो ख़ुदा ने उन पर रसूल भेजकर इनाम फ़रमाई है, नाक़द्री करते हैं और मानकर नहीं देते, बल्कि रब की नेमत के बदले कुफ़्र करते हैं और ख़ुद मय अपने साथियों के हलाकत के घर में अपनी जगह बना लेते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. दादा को भी बाप के हुक्म में रखते हैं और फ़रमाते हैं कि जो चाहे मैं हतीम (काबे के इहाते में एक स्थान) में उससे गुफ़्तगू और क़सम व अ़हद के लिये तैयार हूँ। अल्लाह तआला ने दादा दादी का ज़िक्र नहीं किया, देखो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाया- मैंने अपने बाप इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब अलैहिमुस्सलाम के दीन की पैरवी की।

يٰصَاحِبَىِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ
خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ مَا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً
سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ
اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

ऐ क़ैदख़ाने के दोनों साथियो! मुतफ़र्रिक़ "यानी अलग-अलग" माबूद अच्छे या एक माबूदे बरहक़ जो सबसे ज़बरदस्त है (वह अच्छा)? (39) तुम लोग तो ख़ुदा को छोड़कर सिर्फ़ चन्द बेहक़ीक़त नामों की इबादत करते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने मुक़र्रर कर लिया है। ख़ुदा तआला ने तो उनकी कोई दलील भेजी नहीं। हुक्म ख़ुदा ही का है, उसने यह हुक्म दिया है कि सिवाय उसके और किसी की इबादत मत करो, यही सीधा तरीक़ा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (40)

Maktab E Ashraf

दीने इस्लाम और सीधे रास्ते की व्याख्या

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से वे अपने ख़्वाब की ताबीर पूछने आये हैं, आपने उन्हें ताबीरे ख़्वाब बता देने का वादा कर लिया है, लेकिन इससे पहले उन्हें तौहीद (इस्लाम, एक अल्लाह को माबूद मानने) का वअ़ज़ दे रहे हैं, शिर्क से और मख़्लूक़ परस्ती से नफ़रत दिला रहे हैं। फ़रमा रहे हैं कि वह ख़ुदा-ए-वाहिद जिसने हर चीज़ पर क़ब्ज़ा कर रखा है, जिसके सामने तमाम मख़्लूक़ पस्त व आ़जिज़ और लाचार व बेबस है, जिसका शरीक और साझी कोई भी नहीं, जिसकी बड़ाई व हुकूमत चप्पे-चप्पे और ज़र्रे-ज़र्रे पर है। वही एक बेहतर है या तुम्हारे ये ख़्याली कमज़ोर और नाकारे बहुत से माबूद बेहतर हैं?

फिर फ़रमाया तुम जिन-जिनकी पूजा कर रहे हो ये बेसूद हैं, यह नाम और इनके लिये इबादत यह तुम्हारी अपनी उपज है। ज़्यादा से ज़्यादा तुम कह सकते हो कि तुम्हारे बाप-दादा भी इसके मरीज़ थे, लेकिन कोई दलील इसकी तुम नहीं ला सकते, इसकी कोई दलील अ़क़्ली व नक़ली दुनिया में ख़ुदा ने बनाई ही नहीं। हुक्म व तसर्रुफ़, क़ब्ज़ा व क़ुदरत तमाम का तमाम अल्लाह तआ़ला ही का है। उसने अपने बन्दों को अपनी इबादत का और अपने सिवा किसी और की इबादत करने से रुक जाने का क़तई और हतमी हुक्म दे रखा है। दीने मुस्तक़ीम (सही रास्ता) यही है कि ख़ुदा की तौहीद हो, उसके लिये ही अ़मल व इबादत हो, उसी ख़ुदा का हुक्म चलता है, इस पर बेशुमार दलीलें मौजूद हैं लेकिन अक्सर लोग इन बातों से जाहिल हैं, नादान हैं, तौहीद व शिर्क का फ़र्क़ नहीं जानते, इसी लिये अक्सर लोग शिर्क की दलदल में धंसे रहते हैं। बावजूद अम्बिया की ज़बरदस्त ख़्वाहिश के उन्हें ईमान नसीब नहीं होता।

ख़्वाब की ताबीर से पहले इस बहस के छेड़ने की एक ख़ास मस्लेहत यह भी थी कि उनमें से एक के लिये ताबीर बहुत बुरी थी। आपने चाहा कि ये उसे न पूछें तो बेहतर है। लेकिन इस तकल्लुफ़ की क्या ज़रूरत है, ख़ुसूसन ऐसे मौक़े पर जबकि ख़ुदा के पैग़म्बर उनसे ताबीर देने का वादा कर चुके हैं। यहाँ तो सिर्फ़ यह बात है कि उन्होंने आपकी बुज़ुर्गी और इ़ज़्ज़त देखकर आप से एक बात पूछी, आपने उसके जवाब से पहले उन्हें उससे ज़्यादा बेहतर की तरफ़ तवज्जोह दिलाई और दीने इस्लाम उनके सामने मय दलाईल पेश फ़रमाया, क्योंकि आपने देखा था कि उनमें भलाई क़बूल करने का माद्दा है, बात को सोचेंगे दलील पर ग़ौर करेंगे, हक़ को क़बूलियत के कानों से सुनेंगे। जब आप अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके, अल्लाह के अह्काम की तब्लीग़ कर चुके तो अब बग़ैर इसके कि वे दोबारा पूछें आपने उनका जवाब शुरू किया।

ऐ क़ैदख़ाने के दोनों साथियो! तुममें एक तो (बरी होकर) अपने आक़ा को शराब पिलाया करेगा और दूसरा सूली दिया जाएगा, और उसके सर को परिन्दे खाएँगे, जिस बारे में तुम पूछते थे वह इसी तरह मुक़द्दर हो चुका। (41)	يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُ كُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ۝

Maktab E Ashraf

ख़्वाब की ताबीर

अब अल्लाह के ख़ास बन्दे और पैग़म्बर इब्ने पैग़म्बर उनके ख़्वाब की ताबीर बतला रहे हैं लेकिन यह नहीं फ़रमाते कि तेरे ख़्वाब की यह ताबीर है ताकि एक रंजीदा न हो जाये और मौत से पहले उस पर मौत का बोझ न पड़ जाये। बल्कि ग़ैर-स्पष्ट करके फ़रमाते हैं कि तुम दो में से एक तो अपने बादशाह का साक़ी (जाम पिलाने वाला) बन जायेगा, यह दर असल उसके ख़्वाब की ताबीर है जिसने ख़ुद को अंगूर का शीरा तैयार करते देखा था। और दूसरा जिसने अपने सर पर रोटियाँ देखी थीं उसके ख़्वाब की ताबीर यह दी कि उसे सूली दी जायेगी और परिन्दे उसका दिमाग़ और मग़ज़ खायेंगे। फिर साथ ही फ़रमाया कि अब यह होकर ही रहेगा। इसलिये कि जब तक ख़्वाब की ताबीर बयान न की जाये वह मुअ़ल्लक़ (अधर में) रहता है और जब ताबीर हो चुकी वह ज़ाहिर हो जाता है। कहते हैं कि ताबीर सुनने के बाद उन दोनों ने कहा कि हमने तो वास्तव में कोई ख़्वाब देखा ही नहीं। आपने फ़रमाया अब तो तुम्हारे सवाल के मुताबिक़ ज़ाहिर होकर ही रहेगा। इससे ज़ाहिर है कि जो शख़्स ख़्वाह-म-ख़्वाह का ख़्वाब गढ़ ले और फिर उसकी ताबीर भी दे दी जाये तो वह लाज़िम हो जाती है। वल्लाहु आलम

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- ख़्वाब गोया परिन्दे के पाँव पर है, जब तक उसकी ताबीर न दे दी जाये। जब ताबीर दे दी गई फिर वह वाक़े हो जाता (यानी ज़ाहिर हो जाता) है। मुस्नद अबू यअ़ूला में मरफ़ूअ़ रिवायत है कि ख़्वाब की ताबीर सबसे पहले जिसने दी उसी के लिये है।

और जिस शख़्स की रिहाई का गुमान था उससे (यूसुफ़ ने) फ़रमाया कि अपने आक़ा के सामने मेरा भी ज़िक्र करना, (कि एक शख़्स बेक़ुसूर क़ैद है। उसने वायदा कर लिया) फिर उसको अपने आक़ा के सामने ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया तो क़ैदख़ाने में और भी चन्द साल उनका रहना हुआ। (42)	وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِندَ رَبِّكَ فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ۝ ع ٥

एक कोशिश

जिसे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उसके ख़्वाब की ताबीर के मुताबिक़ अपने ख़्याल में जेलख़ाने से आज़ाद होने वाला समझा था, उससे तन्हाई में कि दूसरा बावर्ची न सुने, फ़रमाया कि बादशाह के सामने ज़रा मेरा ज़िक्र भी कर देना, लेकिन यह इस बात को भूल ही गया, यह भी एक शैतानी चाल थी कि जिससे अल्लाह के नबी अ़लैहिस्सलाम कई साल तक क़ैदख़ाने ही में रहे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरफ़ूअ़न् मन्क़ूल है कि अल्लाह के नबी सल्ल. ने फ़रमाया अगर यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम यह कलिमा न कहते तो जेलख़ाने में इतनी लम्बी मुद्दत न गुज़ारते। उन्होंने अल्लाह तआ़ला के सिवा दूसरे से मदद व सहयोग चाहा। यह रिवायत बहुत ही ग़रीब है। इसलिये कि सुफ़ियान बिन वकीअ़ और इब्राहीम बिन यज़ीद दोनों रावी हैं, हसन और क़तादा से मुर्सल तौर पर मरवी है, अगरचे मुर्सल हदीसें किसी मौक़े पर क़ाबिले क़ुबूल भी हों लेकिन ऐसे अहम मक़ामात पर ऐसी मुर्सल रिवायतें हुज्जत बनाये जाने

Maktaba Ashraf

के हरगिज़ क़ाबिल नहीं हो सकतीं। वल्लाहु आलम।

'बिज़्उन्' का लफ़्ज़ तीन से नौ तक के लिये आता है। हज़रत वहब बिन मुनब्बेह का बयान है कि हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम सात साल तक बीमारी में मुब्तला रहे और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम क़ैदख़ाने में सात साल तक रहे और बुख़्ते नस्सर का अ़ज़ाब भी सात साल तक रहा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि क़ैद की मुद्दत बारह साल थी। ज़ह्हाक कहते हैं कि चौदह साल आपने क़ैदख़ाने में गुज़ारे।

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّىٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ
سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا
الْمَلَاُ اَفْتُوْنِىْ فِىْ رُءْيَاىَ اِنْ كُنْتُمْ
لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ
وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ۝
وَقَالَ الَّذِىْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ
اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ۝ يُوْسُفُ
اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِىْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ
سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّىْٓ
اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ قَالَ
تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ
فَذَرُوْهُ فِىْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا
تَاْكُلُوْنَ ۝ ثُمَّ يَاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ

और बादशाह ने कहा, मैं देखता हूँ कि सात गायें मोटी-ताज़ी हैं जिनको सात कमज़ोर और दुबली गायें खा गईं। और सात बालें हरी हैं और उनके अ़लावा (सात) और हैं जो कि सूखी हैं। ऐ दरबार वालो! अगर तुम ताबीर दे सकते हो तो मेरे इस ख़्वाब के बारे में मुझको जवाब दो। (43) वे लोग कहने लगे कि यूँ ही परेशान ख़्यालात हैं, और हम लोग ख़्वाबों की ताबीर का इल्म भी नहीं रखते। (44) और उन (ज़िक्र हुए) दो (क़ैदियों) में से जो रिहा हो गया था उसने कहा, और मुद्दत के बाद उसको (यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की वसीयत का) ख़्याल आया कि मैं इसकी ताबीर की ख़बर लाए देता हूँ, आप लोग मुझको ज़रा जाने की इजाज़त दीजिए। (45) (वह क़ैदख़ाने में पहुँचा और कहा) ऐ यूसुफ़! ऐ सच्चाई के पैकर, आप हम लोगों को इस (ख़्वाब) का जवाब (यानी ताबीर) दीजिये कि सात गायें मोटी हैं उनको सात दुबली गायें खा गईं, और सात बालें हरी हैं और उसके अ़लावा (सात) सूखी हैं, ताकि मैं उन लोगों के पास लौटकर जाऊँ, ताकि उनको भी मालूम हो जाए। (46) आपने फ़रमाया कि तुम सात साल लगातार ग़ल्ला बोना, फिर जो फ़ल काटो उसको बालों ही में रहने देना, (ताकि घुन न लग जाए) हाँ मगर थोड़ा-सा जो तुम्हारे खाने में आए (निकाल लेना) (47) फिर उसके बाद सात साल

Maktab E Ashraf

شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ۝ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝	ऐसे सख़्त आएँगे जो कि उस ज़ख़ीरे को खा जाएँगे जिसको तुमने (उन सालों के वास्ते) जमा कर रखा है, हाँ मगर थोड़ा-सा जो रख छोड़ोगे। (48) फिर उसके बाद एक साल ऐसा आएगा जिसमें लोगों के लिए ख़ूब बारिश होगी और उसमें शीरा भी निचोड़ेंगे। (49)

ع ١٢

बादशाह का ख़्वाब, उसकी ताबीर और ज़रूरी व्यवस्था का मश्विरा

ख़ुदा ने पहले से यह तय कर रखा था कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम क़ैदख़ाने से इज़्ज़त व सम्मान, पाकीज़गी, बराअत और आबरू के साथ निकलें। इसके लिये क़ुदरत ने यह सबब बनाया कि मिस्र के बादशाह ने एक ख़्वाब देखा, जिससे वह हैरान रह गया। दरबार आयोजित किया और तमाम सरदारों, वज़ीरों, बड़े आदमियों, काहिनों, नजूमियों, उलेमा और ख़्वाब की ताबीर बयान करने वालों को जमा किया और अपना ख़्वाब बयान करके उन सब से ताबीर दरियाफ़्त की, लेकिन किसी की समझ में कुछ न आया और सबने लाचार होकर यह कहकर टाल दिया कि यह कोई ताबीर के लायक़ सच्चा ख़्वाब नहीं, जिसकी ताबीर हो सके, यह तो यूँ ही परेशान ख़्वाब, ख़्यालात और फ़ुज़ूल वहम का ख़ाका है, इसकी ताबीर हम नहीं जानते।

उस वक़्त शाही साक़ी को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम याद आ गये कि वह ख़्वाब की ताबीर के पूरे माहिर हैं। इस इल्म में उनको काफ़ी महारत है। यह वही शख़्स है जो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के साथ जेलख़ाने में सज़ा भुगत रहा था। यह भी और इसका एक और साथी भी। इससे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने कहा था कि बादशाह के पास मेरा ज़िक्र भी करना, लेकिन इसे शैतान ने भुला दिया था। आज लम्बी मुद्दत के बाद इसे याद आ गया और इसने सब के सामने कहा कि अगर आपको इसकी ताबीर सुनने का शौक़ है और वह भी सही ताबीर तो मुझे इजाज़त दीजिये कि यूसुफ़े सिद्दीक़ जो क़ैदख़ाने में हैं उनके पास जाऊँ और उनसे दरियाफ़्त कर आऊँ। सबने इसे मन्ज़ूर कर लिया और उसे अल्लाह के मोहतरम नबी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के पास भेजा।

'उम्मतिन' की दूसरी किराअत 'उ-मतिन' भी है, इसके मायने भूल के हैं, यानी भूल जाने के बाद उसे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का भी फ़रमान याद आया। दरबार से इजाज़त लेकर यह चला, क़ैदख़ाने में पहुँचकर अल्लाह के नबी इब्ने नबी इब्ने नबी इब्ने नबी अ़लैहिमुस्सलाम से कहा ऐ सच्चे यूसुफ़! बादशाह ने इस तरह का एक ख़्वाब देखा है, उसे ताबीर का शौक़ और दिलचस्पी है, तमाम दरबार भरा हुआ है, सब की निगाहें लगी हुई हैं, आप मुझे ताबीर बतला दें तो मैं जाकर उन्हें सुना दूँ और सब मालूम कर लें। आपने न उसे कोई मलामत की कि तू अब तक मुझे भूला रहा बावजूद मेरे कहने के तूने आज तक बादशाह से मेरा ज़िक्र भी न किया, न इस बात की दरख़्वास्त की कि मुझे जेल से आज़ाद किया जाये। बग़ैर किसी तमन्ना के इज़हार और बग़ैर किसी इल्ज़ाम के ख़्वाब की पूरी ताबीर सुना दी और साथ ही

Maktab E Ashraf

तदबीर भी बता दी। फ़रमाया कि सात मोटी-ताज़ी गायों से मुराद यह है कि सात साल तक बराबर हाजत के मुताबिक़ बारिश बरसती रहेगी, ख़ूब ख़ुशहाली होगी, ग़ल्ले, खेत, बाग़ात ख़ूब फलेंगे। यही मुराद सात हरी बालों से है। गाय, बेल ही हलों में जुतते हैं, उनसे ज़मीन पर खेती की जाती है।

अब तरकीब भी बतला दी कि इन सात बरसों में जो अनाज ग़ल्ला निकले उसे बतौर ज़ख़ीरे के जमा कर लेना और रखना भी बालों और ख़ोशों समेत, ताकि सड़े गले नहीं, ख़राब न हो, हाँ अपनी खाने की ज़रूरत के मुताबिक़ ले लेना, लेकिन ख़्याल रहे कि ज़रा सा भी ज़्यादा न लिया जाये सिर्फ़ हाजत के मुताबिक़ ही निकाला जाये। इन सात बरसों के गुज़रते ही अब जो क़हत-साली (सूखा और अकाल) शुरू होगी वह बराबर सात साल तक रहेगी। न बारिश बरसेगी न पैदावार होगी। यह मुराद है सात दुबली गायों और सात ख़ुश्क ख़ोशों से कि उन सात बरसों में वह जमा किया हुआ ज़ख़ीरा तुम खाते पीते रहोगे। याद रखना उनमें कोई ग़ल्ला खेती नहीं होगी, वह जमा किया हुआ ज़ख़ीरा ही काम आयेगा, तुम दाने बोओगे लेकिन पैदावार कुछ न होगी।

आपने ख़्वाब की पूरी ताबीर देकर साथ ही यह ख़ुशख़बरी भी सुना दी कि उन सात साल की ख़ुश्क-सालियों (अकाल और सूखे) के बाद जो साल आयेगा वह बड़ी बरकतों वाला होगा। ख़ूब बारिशें बरसेंगी, ख़ूब ग़ल्ले और खेतियाँ होंगी, रेल-पेल हो जायेगी, तंगी दूर हो जायेगी और लोग आ़दत के अनुसार ज़ैतून वग़ैरह का तेल निकालेंगे और पहले की तरह अंगूर का शीरा निचोड़ेंगे, जानवरों के थन दूध से लबरेज़ हो जायेंगे कि ख़ूब दूध निकालें और पियें।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۚ فَلَمَّا جَاءَهُ
الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا
بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ
رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ○ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ
إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ ۚ قُلْنَ
حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ ۚ
قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ الْآنَ حَصْحَصَ
الْحَقُّ أَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ
الصَّادِقِينَ ○ ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ

और बादशाह ने हुक्म दिया कि उनको मेरे पास लाओ। फिर जब उनके पास क़ासिद पहुँचा, आपने फ़रमाया तू अपनी सरकार के पास लौट जा, फिर उनसे दरियाफ़्त कर कि उन औरतों का क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे। मेरा रब उन औरतों के फ़रेब को ख़ूब जानता है। (50) कहा कि तुम्हारा क्या वाक़िआ है, जब तुमने यूसुफ़ से अपने मतलब की ख़्वाहिश की। औरतों ने जवाब दिया कि अल्लाह की पनाह, हमको उनमें ज़रा भी बुराई की बात मालूम नहीं हुई। अज़ीज़ की बीवी कहने लगी कि अब तो हक़ बात ज़ाहिर हो ही गई। मैंने ही उनसे अपने मतलब की ख़्वाहिश की थी, और बेशक वही सच्चे हैं। (51) (यूसुफ़ ने) फ़रमाया कि यह (एहतिमाम) सिर्फ़ इस वजह से है ताकि उसको (यानी अज़ीज़ को) यक़ीन

के साथ मालूम हो जाए कि मैंने उनकी ग़ैर-मौजूदगी में उसकी आबरू पर हाथ नहीं डाला, और यह कि अल्लाह तआला ख़ियानत करने वालों के फ़रेब को चलने नहीं देता। (52)	بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ۝

Maktab-E-Ashraf

क़ुदरत का करिश्मा, यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की रिहाई और ज़ुलेख़ा का अपनी ग़लती स्वीकार करना

ख़्वाब की ताबीर मालूम करके जब क़ासिद लौटा और उसने बादशाह को तमाम हक़ीक़त से अवगत कराया तो बादशाह को अपने ख़्वाब की ताबीर पर यक़ीन आ गया, साथ ही उसे यह भी मालूम हो गया कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम बड़े ही आ़लिम, फ़ाज़िल शख़्स हैं। ख़्वाब की ताबीर में तो आपको कमाल हासिल है, साथ ही बुलन्द अख़्लाक़ वाले, हुस्ने तदबीर वाले, अल्लाह की मख़्लूक़ का नफ़ा चाहने वाले और बिल्कुल बेलालच शख़्स हैं। अब उसे शौक़ हुआ कि ख़ुद आपसे मुलाक़ात करे। उसी वक़्त हुक्म दिया कि जाओ यूसुफ़ को जेलख़ाने से आज़ाद करके मेरे पास लाओ।

दोबारा क़ासिद आपके पास आया और बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया तो आपने फ़रमाया- मैं यहाँ से न निकलूँगा जब तक कि मिस्र के बादशाह, उसके दरबारी और मिस्र के तमाम लोग यह मालूम न कर लें कि मेरा क़सूर क्या था? अ़ज़ीज़ की बीवी के बारे में जो बात मेरी तरफ़ लगाई गई है उसमें कहाँ तक सच्चाई है? अब तक मेरा क़ैद भुगतना वाक़ई किसी जुर्म की बिना पर था या सिर्फ़ ज़ुल्म व ज़्यादती की बिना पर? तुम अपने बादशाह के पास वापस जाकर मेरा यह पैग़ाम पहुँचाओ कि वह इस वाक़िए की पूरी तहक़ीक़ करें।

हदीस शरीफ़ में भी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के इस सब्र की और आपकी इस शराफ़त व फ़ज़ीलत की तारीफ़ आई है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) वग़ैरह में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- हज़रत इब्राहीम के मुक़ाबले में शक के हक़दार हम बहुत ज़्यादा हैं, जबकि उन्होंने फ़रमाया था कि ऐ मेरे रब! मुझे अपना मुर्दों को ज़िन्दा करना मय कैफ़ियत दिखला (यानी जब हम ख़ुदा की इस क़ुदरत में शक नहीं करते तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम जैसे बड़ी शान वाले पैग़म्बर कैसे शक कर सकते थे? पस आपकी यह तलब और ज़्यादा इत्मीनान हासिल करने के लिये थी न कि शक के तौर पर। चुनाँचे ख़ुद क़ुरआन में है कि आपने फ़रमाया यह मेरे दिली इत्मीनान के लिये है। अल्लाह हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम पर रहम करे वह किसी ज़ोरावर जमाअ़त या मज़बूत क़िले की पनाह चाहने लगे और सुनो अगर मैं यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के बराबर जेलख़ाने भुगते हुए होता और फिर क़ासिद मेरी आज़ादी का पैग़ाम लाता तो मैं उसी वक़्त जेलख़ाने से आज़ादी मन्ज़ूर कर लेता)।

मुस्नद अहमद में इसी आयत 'फ़स्अल्हु' (तू उससे मालूम कर) की तफ़सीर में मन्क़ूल है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अगर मैं होता तो उसी वक़्त क़ासिद की बात मान लेता और कोई उज़्र तलाश न करता।

मुस्नद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है, आप सल्ल. फ़रमाते हैं वल्लाह मुझे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के सब्र व

करम पर रह-रहकर ताज्जुब आता है, अल्लाह उन्हें बख़्शे। देखो तो सही बादशाह ने ख़्वाब देखा है वह ताबीर के लिये परेशान है, कासिद आकर आपसे ताबीर पूछता है, आप फ़ौरन बग़ैर किसी शर्त के बतला देते हैं। अगर मैं होता तो जब तक जेलख़ाने से ख़ुद को आज़ाद न करा लेता हरगिज़ न बतलाता। मुझे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सब्र व करम पर ताज्जुब मालूम हो रहा है। अल्लाह उन्हें बख़्शे कि जब उनके पास कासिद उनकी रिहाई का पैग़ाम लेकर पहुँचता है तो आप फ़रमाते हैं अभी नहीं, जब तक कि मेरी पाकीज़गी, पाकदामनी और बेगुनाही सब पर ज़ाहिर न हो जाये। अगर मैं उनकी जगह होता तो दौड़कर दरवाज़े पर पहुँचता। यह रिवायत मुर्सल है।

नोटः ऊपर बयान हुई रिवायतों में जो कुछ इरशाद हुआ वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल की आजिज़ी, विनम्रता, सादगी और दूसरों का ज़िक्र अच्छे अन्दाज़ में करने को दर्शाता है, वरना दावत व तब्लीग़ के सिलसिले में जो-जो मुसीबतें और परेशानियाँ आपने झेलीं, वह इस कैदख़ाने से भी बढ़कर थीं। किसी भी मौके पर आपकी ज़बान से ऐसी किसी जल्दबाज़ी का इज़हार नहीं हुआ। अल्लाह तआ़ला आपको हम सबकी तरफ़ से बेशुमार अज्र अता फ़रमाये। **मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी**

अब बादशाह ने तहकीक करनी शुरू की, उन औरतों को जिन्हें अ़ज़ीज़ की बीवी ने अपने यहाँ दावत पर जमा किया था और ख़ुद उसे भी दरबार में बुलवाया। फिर उन तमाम औरतों से पूछा कि दावत वाले दिन क्या मामला पेश आया था? सब बयान करो। उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह की कसम यूसुफ़ पर कोई इल्ज़ाम नहीं, उस पर बेबुनियाद तोहमत है, वल्लाह हमको ख़ूब मालूम है कि यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं। उस वक़्त अ़ज़ीज़ की बीवी ख़ुद भी बोल उठी कि अब हक़ ज़ाहिर हो गया, वाकिआ खुल गया, हकीकत वाज़ेह हो गई, मुझे ख़ुद इस बात का इकरार है कि वाकई मैंने ही उसे फंसाना चाहा था, उसने जो उस वक़्त कहा था कि यह औरत मुझे फुसला रही थी, इसमें वह बिल्कुल सच्चा है, मैं इसका इकरार करती हूँ और अपना कसूर आप बयान करती हूँ ताकि मेरे शौहर यह बात जान लें कि मैंने वास्तव में उसकी कोई ख़ियानत नहीं की (यानी मेरी आबरू पर कोई बट्टा नहीं लगा)। यूसुफ़ की पाकदामनी की वजह से कोई शर और बुराई मुझसे ज़हूर में नहीं आई। बदकारी से अल्लाह तआ़ला ने मुझे बचाये रखा है, मेरे इस इकरार से और वाकिए के खुल जाने से साफ़ ज़ाहिर है, और मेरे शौहर जान सकते हैं कि मैं बुराई में मुब्तला नहीं हुई। यह बिल्कुल सच है कि ख़ियानत करने वालों की मक्कारियों को अल्लाह तआ़ला उभरने और तरक़्क़ी नहीं करने देता, उनकी दग़ाबाज़ी कोई फल नहीं लाती।

अल्लाह का शुक्र है, तफ़सीर इब्ने कसीर का बारहवाँ पारा ख़त्म हुआ।

पारा नम्बर तेरह

और (बाक़ी) मैं अपने नफ़्स को (ज़ात के एतिबार से) बरी (और पाक) नहीं बतलाता, (क्योंकि) नफ़्स तो (हर एक का) बुरी ही बात बतलाता है, सिवाय उस (नफ़्स) के जिस पर मेरा रब रहम करे बेशक मेरा रब बड़ी मग़फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला है। (53)	وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِىْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىْ ۚ اِنَّ رَبِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

ज़ुलेख़ा का अपनी ग़लती मानना

फिर ज़ुलेख़ा (अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी) ने कहा कि मैं अपने नफ़्स को पाक नहीं कहती और न उसे हर किस्म के जुर्म से बरी करती हूँ। नफ़्स (जी और दिल) में तो तरह-तरह के ख़्यालात और नाजायज़ तमन्नायें आती ही रहती हैं, और वह बुराई करने पर उकसाता ही रहता है। लिहाज़ा नफ़्स के धोखे और फुसलाने में आकर मैंने यूसुफ़ को अपने फंदे में लाना चाहा (मगर वह न आये), क्योंकि नफ़्स बुराई पर उभारता तो है मगर जिसको अल्लाह रहम फ़रमाकर बचा ले (उसको नहीं उभारता)। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है। यह क़ौल अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी ज़ुलेख़ा का ही है, यही बात ज़्यादा मशहूर और क़ाबिले क़बूल है, और वाक़िए के आगे-पीछे के मज़मून से भी यही बात ज़्यादा मुनासबत (ताल्लुक़) रखती है। और मानवी लिहाज़ से भी यही ज़्यादा सही मालूम होती है, और इसी को इमाम मारवर्दी रह. ने अपनी तफ़सीर में बयान किया है। इमाम इब्ने तैमिया रह. ने तो इसके बारे में एक मुस्तक़िल किताब लिखी है और उसमें इस क़ौल की पूरी हिमायत व ताईद की है। लेकिन बाज़ लोग यह भी कहते हैं कि यह क़ौल हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का है (यानी "ज़ालि-क लियअ्ल-म" से "ग़फ़ूरुर्रहीम" तक)। जिसका मतलब यह हुआ कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि:

"ताकि अ़ज़ीज़े मिस्र जान ले कि उसकी पीठ पीछे (यानी अनुपस्थिति में) उसकी बीवी के बारे में मैंने उसकी कोई ख़ियानत नहीं की। और बाक़ी यह कि मैं अपने नफ़्स को पाक नहीं बतलाता....आख़िर तक।"

इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने तो सिवाय इस क़ौल के और कोई क़ौल बयान ही नहीं किया। चुनाँचे तफ़सीर इब्ने जरीर में है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि (जब यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के कहने पर बादशाह ने शहर की औ़रतों से उनके बारे में दरियाफ़्त किया तो उन्होंने कहा कि हमने तो उनमें कोई बुराई नहीं देखी, और ज़ुलेख़ा ने भी इक़रार कर लिया कि हक़ बात यही है कि मैंने ही उनको फुसलाने की कोशिश की थी) इस पर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि मैंने यह सब कुछ सिर्फ़ इसलिये कराया ताकि अ़ज़ीज़े मिस्र को मालूम हो जाये कि मैंने उसके पीछे उसकी कोई ख़ियानत नहीं की। तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आपसे फ़रमाया कि "क्या उस दिन भी नहीं की जब उस औ़रत ने आपका इरादा किया और आपने उस औ़रत का?" तब आपने फ़रमाया कि "मैं अपने नफ़्स को बरी नहीं कहता, नफ़्स तो बुराई की तरग़ीब देता ही है......।"

(यहाँ यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के इरादे से उसी आयत की तरफ़ इशारा है जिसमें दोनों के लिये एक ही लफ़्ज़

Maktab E Ashraf

Maktaba E Ashraf

इस्तेमाल हुआ है, लेकिन वहाँ आयत का मतलब यह है कि अगर आप अल्लाह की निशानियाँ न देखते तो मुम्किन था कि आप भी इरादा कर लेते। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

मुजाहिद, सईद बिन जुबैर, इक्रिमा, इब्ने अबी हुज़ैल, ज़ह्हाक, हसन, क़तादा और सुद्दी (रहमतुल्लाहि अ़लैहिम) सब इसी के क़ायल हैं, लेकिन पहला क़ौल (यानी इसका जुलेख़ा का कलाम होना) ही ज़्यादा क़वी और ज़ाहिर है। क्योंकि पिछले कलाम का आख़िरी हिस्सा अ़ज़ीज़ की बीवी जुलेख़ा ही का है, जो वह सबके सामने बादशाह से बयान कर रही थी, और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम उस जगह मौजूद न थे, बल्कि जेल में थे। इस तमाम गुफ़्तगू के बाद बादशाह ने उनको बुलवाया था।

और (यह सुनकर) बादशाह ने कहा कि उनको मेरे पास लाओ, मैं उनको ख़ास अपने (काम के) लिए रखूँगा। पस जब उसने (यानी बादशाह ने) उनसे बातें कीं तो (उनसे) कहा कि तुम हमारे नज़दीक आज (से) इज़्ज़त व इकराम वाले और मोतबर हो। (54) (हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मुल्की ख़ज़ानों पर मुझको मामूर कर दो, मैं (उनकी) हिफ़ाज़त भी रखूँगा (और) ख़ूब वाक़िफ़ (भी) हूँ। (55)	وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۝ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ۝

अ़ज़ीज़े मिस्र की हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर मेहरबानियाँ

जब बादशाह के सामने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की बेगुनाही खुल गयी तो उसने खुश होकर कहा कि उन्हें मेरे पास बुला लाओ, कि मैं उन्हें अपने ख़ास मुशीरों (सलाहकारों) में कर लूँ। चुनाँचे आप तशरीफ़ लाये। जब वह आपसे मिला, आपकी सूरत देखी, आपकी बातें सुनीं, आपके अख़्लाक़ देखे तो दिल से गरवीदा हो गया, और बेसाख़्ता उसकी ज़बान से निकल गया कि आज से आप हमारे यहाँ सम्मानित और मोतबर व भरोसेमन्द हैं। उस वक़्त आपने एक ख़िदमत अपने लिये पसन्द फ़रमाई, और उसकी अहलियत (पात्रता) ज़ाहिर की। इनसान को यह जायज़ भी है कि जब वह अन्जान लोगों में हो तो अपनी क़ाबलियत बवक़्ते ज़रूरत बयान कर दे। उस जवाब की बिना पर जिसकी ताबीर आपने दी थी, आपने यही आरज़ू की कि ज़मीन की पैदावार ग़ल्ला वग़ैरह जो जमा किया जाता है उसपर मुझे मुक़र्रर किया जाये, ताकि मैं उसको बचाकर रख सकूँ तथा अपने इल्म के मुताबिक़ अ़मल कर सकूँ, ताकि रिआ़या को क़हत-साली की मुसीबत के वक़्त किसी क़द्र आ़फ़ियत और सुकून मिल सके। बादशाह के दिल पर तो आपकी अमानतदारी, सच्चाई, सलीक़ेमन्दी और कामिल इल्म का सिक्का बैठ चुका था, उसी वक़्त उसने दरख़्वास्त को मन्ज़ूर कर लिया।

और हमने ऐसे (अ़जीब) अन्दाज़ पर यूसुफ़ को मुल्क में बा-इख़्तियार बना दिया कि उसमें जहाँ चाहें रहें-सहें, हम जिस पर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें और हम नेकी करने	وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۚ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ۚ نُصِيبُ

Maktab E Ashraf

بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ○ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ○ ع	वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते। (56) और आख़िरत का अज्र कहीं ज़्यादा बढ़कर है, ईमान और तक़्वे वालों के लिए। (57)

यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को दुनिया में भी हमने बड़ाई और तरक़्क़ी अ़ता की

मुल्क मिस्र में यूँ हज़रत यूसुफ़ की तरक़्क़ी हुई। अब उनके इख़्तियार में था कि जिस तरह चाहें तसर्रुफ़ (अ़मल-दख़्ल) करें, जहाँ चाहें मकानात तामीर करें। या तो उस क़ैद और तन्हाई को देखिये या अब इस इख़्तियार और आज़ादी को देखिये। सच है रब जिसे भी अपनी रहमत का जितना हिस्सा चाहे दे। साबिरों का सब्र फल लाकर ही रहता है। भाईयों का दुख सहा, ख़ुदा की नाफ़रमानी से बचने के लिये अ़ज़ीज़े मिस्र की औ़रत से बिगाड़ ली और क़ैदख़ाने की मुसीबतें बरदाश्त कीं, पस रहमते इलाही का हाथ बढ़ा और सब्र का अज्र मिला। नेक काम करने वालों की नेकियाँ कभी ज़ाया नहीं जातीं। फिर ऐसे ईमान और तक़्वे वाले आख़िरत में बड़े दर्जे और आला सवाब पाते हैं, यहाँ यह मिला वहाँ के मिलने की तो कुछ न पूछिये। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के बारे में भी क़ुरआन में आया है कि यह दुनिया की दौलत व सल्तनत हमने तुझे अपने एहसान से दी है और क़ियामत के दिन तेरे लिये हमारे यहाँ अच्छी मेहमानी है।

ग़र्ज़ यह कि मिस्र के बादशाह रय्यान बिन वलीद ने मिस्र की सल्तनत की विज़ारत आपको दी। पहले इस ओ़हदे पर उस औ़रत का शौहर था, जिसने आपको अपनी तरफ़ माईल करना चाहा था। उसी ने आपको ख़रीद लिया था। आख़िर मिस्र का बादशाह आपके हाथ पर ईमान लाया।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि आपके ख़रीदने वाले का नाम अतग़र था। यह उन्हीं दिनों में इन्तिक़ाल कर गया। उसके बाद बादशाह ने उसकी बीवी राहील से हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का निकाह कर दिया। जब आप उनसे मिले तो फ़रमाया कहो क्या यह तुम्हारे उस इरादे से बेहतर नहीं? उन्होंने जवाब दिया कि ऐ सिद्दीक़! मुझे मलामत न कीजिए। आपको मालूम है कि मैं हुस्न व ख़ूबसूरती वाली, धन दौलत वाली औ़रत थी। मेरे शौहर मर्दानगी से मेहरूम थे। वह मुझसे मिल ही नहीं सकते थे। उधर आपको क़ुदरत ने जिस फ़य्याज़ी से (यानी बहुत ज़्यादा) दौलते हुस्न के साथ मालामाल किया है, वह भी ज़ाहिर है। पस मुझे आप मलामत न कीजिए। कहते हैं कि वाक़ई हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें कुंवारी पाया। फिर उनके पेट से आपके दो लड़के हुए 'अफ़राईम' और 'मीशा'। अफ़राईम के यहाँ हज़रत नून पैदा हुए जो हज़रत यूशा के वालिद हैं। और रहमत नाम की बेटी हुई जो हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की बीवी हैं। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रह. फ़रमाते हैं कि अ़ज़ीज़ की बीवी रास्ते में खड़ी थीं कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की सवारी निकली, बेसाख़्ता उनके मुँह से निकल गया कि अल्हम्दु लिल्लाह शाने ख़ुदा पर क़ुरबान जिसने अपनी फ़रमाँबरदारी की वजह से गुलामों और ख़ादिमों को बादशाही पर पहुँचाया और अपनी नाफ़रमानी की

Maktab-e-Ashraf

वजह से बादशाहों को गुलामी पर ला उतारा।

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ○ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ○ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ○ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ○ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ○	और (किनआ़न में भी अकाल पड़ा तो) यूसुफ़ के भाई आए फिर उनके (यानी यूसुफ़ के) पास पहुँचे, सो उन्होंने (यानी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) उनको पहचान लिया और उन्होंने उनको (यानी यूसुफ़ को) नहीं पहचाना। (58) और जब उन्होंने (यानी यूसुफ़ ने) उनके (ग़ल्ले का) सामान तैयार कर दिया तो (चलते वक़्त) फ़रमा दिया कि अपने अ़ल्लाती "माँ की तरफ़ से सौतेले" भाई को भी (साथ) लाना (ताकि उसका हिस्सा भी दिया जा सके), तुम देखते नहीं हो कि मैं पूरा नापकर देता हूँ, और मैं सबसे ज़्यादा मेहमान नवाज़ी करता हूँ। (59) और अगर तुम (दोबारा आए और) उसको मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे नाम का ग़ल्ला होगा और न तुम मेरे पास आना। (60) वे बोले (देखिए) हम (अपनी कोशिश भर तो) उसके बाप से उसको माँगेंगे और हम (इस काम को) ज़रूर करेंगे। (61) और उन्होंने (यानी यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कह दिया कि उनकी जमा-पूँजी उन (ही) के सामान में (छुपाकर) रख दो, ताकि जब घर जाएँ तो उसको पहचानें, शायद (यह एहसान व करम देखकर) फिर दोबारा आएँ। (62)

भाईयों का हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के दरबार में आना

कहते हैं कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने मिस्र का वज़ीर बनकर सात साल तक ग़ल्ले और अनाज को बेहतरीन तौर पर जमा किया। उसके बाद जब आ़म क़हत-साली (सूखा और अकाल) शुरू हुई, और लोग एक-एक दाने को तरसने लगे तो आपने ज़रूरतमन्दों को देना शुरू किया। यह क़हत इलाक़ा-ए-मिस्र से निकल कर किनआ़न वग़ैरह शहरों को भी शामिल था। आप ही बाहर से आने वाले शख़्स को ऊँट भरकर ग़ल्ला अ़ता फ़रमाया करते थे और ख़ुद आपका लश्कर बल्कि ख़ुद बादशाह भी दिन भर में सिर्फ़ एक ही मर्तबा दोपहर के वक़्त एक-आध निवाला खा लेते थे, और मिस्र वालों को पेट भरकर खिलाते थे। पस उस ज़माने में यह बात एक रहमते ख़ुदा थी।

यह भी नक़ल किया गया है कि आपने पहले साल माल के बदले ग़ल्ला बेचा, दूसरे साल सामान

Maktab-E-Ashraf

असबाब के बदले, तीसरे साल भी और चौथे साल भी, फिर ख़ुद लोगों की जान और उनकी औलाद के बदले। पस ख़ुद लोग, उनकी औलादें और उनकी कुल मिल्कियत और माल के आप मालिक बन गये। लेकिन उसके बाद आपने सबको आज़ाद कर दिया और उनके माल भी उनके हवाले कर दिये। यह रिवायत बनी इस्राईल की है, जिसे हम सच या झूठ नहीं कह सकते। यहाँ यह बयान हो रहा है कि उन आने वालों में यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई भी थे, जो बाप के हुक्म से आये थे। उन्हें मालूम हुआ था कि अ़ज़ीज़े मिस्र माल व सामान के बदले ग़ल्ला देते हैं तो आपने अपने दस बेटों को यहाँ भेजा, और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के सगे भाई बिनयामीन को जो आपके बाद हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को बहुत ही प्यारे थे, अपने पास रोक लिया।

जब यह क़ाफ़िला अल्लाह के नबी के पास पहुँचा तो आपने पहली ही निगाह में सबको पहचान लिया लेकिन उनमें से एक भी आपको न पहचान सका। इसलिये कि आप उनसे बचपन में ही जुदा हो गये थे। भाईयों ने आपको सौदागरों के हाथ बेच डाला था। उन्हें क्या ख़बर थी कि फिर क्या हुआ। और यह तो ज़ेहन में भी नहीं आ सकता था कि वह बच्चा जिसे एक गुलाम की हैसियत से बेचा था आज वही अ़ज़ीज़े मिस्र बनकर बैठा है। इधर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने गुफ़्तगू का अन्दाज़ भी ऐसा इख़्तियार किया कि उन्हें वहम भी न हो। उनसे पूछा कि तुम लोग मेरे मुल्क में कैसे आ गये? उन्होंने कहा यह सुनकर कि आप ग़ल्ला अ़ता फ़रमाते हैं। आपने फ़रमाया मुझे तो शक होता है कि कहीं तुम जासूस न हो? उन्होंने कहा ख़ुदा की पनाह! हम जासूस नहीं। फ़रमाया तुम रहने वाले कहाँ के हो? कहा किनआ़न के और हमारे वालिद साहिब का नाम याक़ूब नबीयुल्लाह है। आपने पूछा तुम्हारे सिवा उनके और लड़के भी हैं? उन्होंने कहा हाँ हम बारह भाई थे, हममें जो सबसे छोटा और हमारे बाप की आँखों का तारा था वह तो हलाक हो गया। उसी का एक भाई और है उसे बाप ने हमारे साथ नहीं भेजा बल्कि अपने पास ही रोक लिया है कि उससे ज़रा उनको इत्मीनान और तसल्ली रहे।

इन बातों के बाद आपने हुक्म दिया कि इन्हें सरकारी मेहमान समझा जाये और हर तरह की ख़ातिर मुदारात की जाये और अच्छी जगह ठहराया जाये। अब जब उन्हें ग़ल्ला दिया जाने लगा और उनके थेले भर दिये गये और जितने जानवर उनके साथ थे वे जितना ग़ल्ला उठा सकते थे भर दिया तो फ़रमाया देखो अपनी सच्चाई के इज़हार के लिये अपने उस भाई को जिसे तुम इस बार अपने साथ नहीं लाये, अब के आओ तो लेते आना। देखो मैंने तुमसे अच्छा मामला किया है और तुम्हारी बड़ी ख़ातिर तवाज़ो की है। इस तरह रग़बत और दिलचस्पी दिलाकर फिर धमका भी दिया कि अगर तुम दोबारा के आने में उसे साथ न लाये तो मैं तुम्हें एक दाना अनाज का न दूँगा, बल्कि तुम्हें अपने नज़दीक भी न आने दूँगा। उन्होंने वादे किये कि हम उन्हें कह-सुनकर लालच दिलाकर हर तरह पूरी कोशिश करेंगे, अपने उस भाई को भी लायेंगे ताकि बादशाह के सामने हम झूठे न पड़ें।

सुद्दी रह. कहते हैं कि आपने उनसे रहन रख लिया कि जब उसे लाओगे तो यह पाओगे, लेकिन यह बात कुछ जी को लगती नहीं, इसलिये कि आपने तो उन्हें वापसी की बड़ी रग़बत (लालच और दिलचस्पी) दिलाई और बहुत कुछ तमन्ना ज़ाहिर की। जब भाई चलने की तैयारियाँ करने लगे तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने चालाक नौकरों को इशारा किया कि जो असबाब (ग़ल्ला हासिल करने के लिये नक़दी और सामान) ये लाये थे और जिसके बदले इन्होंने हमसे ग़ल्ला लिया है, वह भी इन्हें वापस कर दो,

लेकिन इस ख़ूबसूरती से कि इन्हें मालूम तक न हो। उनके कजावों और बोरों में उनकी तमाम चीज़ें रख दो, मुम्किन है इसकी वजह यह हो कि आपको ख़्याल हुआ हो कि अब घर में क्या होगा जिसे लेकर यह ग़ल्ला लेने के लिये आयें, और यह भी हो सकता है कि आपने अपने बाप और भाईयों से अनाज का कुछ मुआवज़ा लेना मुनासिब न समझा हो, और यह भी हो सकता है कि आपने यह ख़्याल फ़रमाया हो कि जब ये अपना सामान खोलेंगे और ये चीज़ें उसमें पायेंगे तो ज़रूरी है कि हमारी ये चीज़ें हमें वापस देने को आयें और इसी बहाने भाई से मुलाक़ात हो जायेगी।

Maktabah Ashraf

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ○ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۠ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ○

ग़रज़ जब वह लौटकर अपने बाप (याक़ूब) के पास पहुँचे, कहने लगे ऐ अब्बा! हमारे लिए (क़तई तौर पर) ग़ल्ले की बन्दिश कर दी गई, सो आप हमारे भाई (बिनयामीन) को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम (फिर) ग़ल्ला ला सकें, और हम उनकी पूरी हिफ़ाज़त रखेंगे। (63) उन्होंने (यानी याक़ूब अ़लैहि. ने) फ़रमाया कि बस (रहने दो) मैं इसके बारे में भी तुम्हारा वैसा ही एतिबार करता हूँ जैसा इससे पहले इसके भाई (यूसुफ़) के बारे में तुम्हारा एतिबार कर चुका हूँ। सो अल्लाह (के सुपुर्द, वही) सबसे बढ़कर निगहबान है, और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। (64)

बाप के लिये एक और आज़माईश

बयान हो रहा है कि बाप के पास पहुँचकर उन्होंने कहा कि अब हमें तो ग़ल्ला मिल नहीं सकता, जब तक कि आप हमारे भाई को न भेजें। अगर उन्हें साथ कर दें तो ज़रूर मिल सकता है। आप बेफ़िक्र रहिये हम ख़ुद उसकी सुरक्षा कर लेंगे।

हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बस वही तुम इसके साथ करोगे जो इससे पहले इसके भाई यूसुफ़ के साथ कर चुके हो, कि पहले तो ले गये फिर वापस आकर कोई बात बना दी। "हाफ़िज़न" की दूसरी क़िराअत "हिफ़्ज़न" भी है। आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ही बेहतर हाफ़िज़ और निगहबान है। और है भी वह अर्रहमुर्राहिमीन (यानी तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला)। मेरे बुढ़ापे पर, मेरी कमज़ोरी पर वह रहम फ़रमायेगा और जो ग़म व रंज मुझे अपने बच्चे का है दूर कर देगा। मुझे उसकी पाक ज़ात से उम्मीद है कि वह मेरे यूसुफ़ को मुझसे फिर मिला देगा, और मेरी यह परेशानी दूर कर देगा। उस पर कोई काम मुश्किल नहीं, न वह अपने बन्दों से अपने रहम व करम को रोकता है।

Maktab E Ashraf

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا نَبْغِىْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌo قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِىْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌo

और (इस गुफ़्तगू के बाद) जब उन्होंने अपना सामान खोला तो (उसमें) उनको उनकी जमा-पूँजी (भी) मिली कि उन्हीं को वापस कर दी गई। कहने लगे कि ऐ अब्बा! (लीजिए) और हमको क्या चाहिए, यह हमारी जमा-पूँजी भी तो हम ही को लौटा दी गई है, और अपने घर वालों के वास्ते (और) रसद लाएँगे और अपने भाई की ख़ूब हिफ़ाज़त रखेंगे, और एक ऊँट का बोझ गल्ला और ज़्यादा लाएँगे, यह थोड़ा-सा गल्ला है। (65) उन्होंने (यानी हज़रत याक़ूब अ़लैहि. ने) फ़रमाया कि उस वक़्त तक हरगिज़ इसको तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक कि अल्लाह की क़सम खाकर मुझको पक्का क़ौल न दोगे कि तुम इसको ज़रूर ले ही आओगे, हाँ अगर घिर ही जाओ (तो मजबूरी है)। (चुनाँचे सबने इस पर क़सम खाई) सो जब वे क़सम खाकर उन्हें (यानी अपने बाप को) क़ौल दे चुके तो उन्होंने फ़रमाया कि हम लोग जो कुछ बात-चीत कर रहे हैं यह सब अल्लाह ही के हवाले है। (66)

बेटों का अ़हद

यह पहले बयान हो चुका है कि भाईयों की वापसी के वक़्त ख़ुदा के नबी (हज़रत यूसुफ़) ने उनका माल व मता उनके सामान के साथ पोशीदा तौर पर वापस कर दिया था। यहाँ घर पहुँचकर जब उन्होंने कजावे (ऊँटों के ऊपर जो सामान रखने के बने होते हैं) खोले और सामान अ़लैहदा अ़लैहदा किया तो अपनी सब चीज़ें ज्यों की त्यों वापस की हुई पायीं। वे अपने वालिद से कहने लगे, लीजिए अब आपको और क्या चाहिये? असल तक तो अ़ज़ीज़े मिस्र ने हमें वापस कर दी है और बदले का ग़ल्ला पूरा पूरा दे दिया है। अब तो आप भाई को ज़रूर हमारे साथ कर दीजिए। हम अपने ख़ानदान के लिये ग़ल्ला भी लायेंगे और भाई की वजह से एक ऊँट का बोझ और भी मिल जायेगा। क्योंकि अ़ज़ीज़े मिस्र हर शख़्स को एक ऊँट का बोझ ही देते हैं। और आपको इन्हें हमारे साथ करने में संकोच क्यों है? हम इनकी देखभाल और निगरानी पूरी तरह करेंगे। यह नाप बहुत ही आसान है। यह था अपनी बात को अच्छी तरह पेश करना।

हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम इन तमाम बातों के जवाब में फ़रमाते हैं कि जब तक तुम हलफ़िया इक़रार न करोगे कि अपने इस भाई को अपने साथ मुझ तक वापस पहुँचाओगे मैं इसे तुम्हारे साथ नहीं भेज सकता। हाँ यह और बात है कि ख़ुदा न ख़्वास्ता तुम सब ही घिर जाओ और छूट न सको। चुनाँचे

बेटों ने ख़ुदा को बीच में रखकर मज़बूत अहद व पैमान किया। अब हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया कि हमारी इस गुफ़्तगू का ख़ुदा वकील है, अपने प्यारे बच्चे को उनके साथ कर दिया, इसलिये कि क़हत की वजह से ग़ल्ले की ज़रूरत थी और बग़ैर भेजे चारा न था।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۗ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ۗ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ۗ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝	और (चलते वक़्त) उन्होंने (यानी याक़ूब ने उनसे) फ़रमाया कि ऐ मेरे बेटो! सब-के-सब एक ही दरवाज़े से मत जाना बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से जाना, और मैं ख़ुदा के हुक्म को तुम पर से टाल नहीं सकता। हुक्म तो बस अल्लाह ही का (चलता) है, (बावजूद इस ज़ाहिरी तदबीर के दिल से) उसी पर भरोसा रखता हूँ, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए। (67) और जब (मिस्र पहुँचकर) जिस तरह उनके बाप ने कहा था (उसी तरह शहर के) अन्दर दाख़िल हुए (तो बाप का अरमान पूरा हो गया, बाक़ी) उनको (यानी उनके बाप को उन्हें यह तदबीर बतला कर) उनसे ख़ुदा का हुक्म टालना मक़सूद न था लेकिन याक़ूब (अ़लैहि.) के जी में (तदबीर के दर्जे में) एक अरमान (आया) था जिसको उन्होंने ज़ाहिर कर दिया, और वह बेशक बड़े आ़लिम थे, इस वजह से कि हमने उनको इल्म दिया था, लेकिन अक्सर लोग इसका इल्म नहीं रखते। (68)

ع ۸

बेटों को बाप की हिदायत

चूँकि अल्लाह के नबी हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को अपने बच्चों पर नज़र लग जाने का ख़तरा था, क्योंकि वे सब अच्छे ख़ूबसूरत, सेहतमन्द, ताक़तवर, मज़बूत और क़वी नौजवान थे। इसलिये रुख़्सत करते वक़्त उनसे फ़रमाते हैं कि मेरे बेटो! तुम सब शहर के एक ही दरवाज़े से शहर में न जाना, बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से एक-एक दो-दो होकर जाना। नज़र का लग जाना हक़ है। घोड़े सवार को यह गिरा देती है। फिर साथ ही फ़रमाते हैं कि यह भी जानता हूँ और मेरा ईमान है कि यह तदबीर तक़दीर में हेर-फेर नहीं कर सकती। ख़ुदा की क़ज़ा (लिखे हुए और तक़दीर) को कोई शख़्स किसी तदबीर से बदल नहीं सकता। ख़ुदा का चाहा पूरा होकर ही रहता है। हुक्म उसका चलता है, कौन है जो उसके इरादे को बदल सके? उसके फ़रमान को टाल सके? उसकी क़ज़ा को लौटा सके? मेरा भरोसा उसी पर है और मुझ पर ही क्या मौक़ूफ़ है हर एक तवक्कुल करने वाले को उसी पर तवक्कुल करना चाहिये।

Maktab E Ashraf

चुनाँचे बेटों ने बाप का हुक्म माना और इसी तरह कई एक दरवाज़ों में बट गये, और शहर में पहुँचे। इस तरह वह ख़ुदा की कज़ा (तक़दीर) को बदल नहीं सकते थे। हाँ हज़रत याक़ूब ने एक ज़ाहिरी तदबीर बता दी थी कि उससे वे बुरी नज़र से बच जायें। वह इल्म वाले थे, ख़ुदाई इल्म उनके पास था, हाँ अक्सर लोग इन बातों को नहीं जानते।

और जब ये लोग (यानी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई) यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने भाई को अपने साथ मिला लिया (और तन्हाई में उनसे) कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ, सो ये लोग जो कुछ (बद-सुलूकी) करते रहे हैं उसका रंज मत करना। (69)	وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

हज़रत यूसुफ़ का ख़ुद को ज़ाहिर करना

बिनयामीन जो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के सगे भाई थे, उन्हें लेकर आपके दूसरे भाई जब मिस्र पहुँचे तो आपने अपने सरकारी मेहमान ख़ाने में ठहराया। बड़ी इज़्ज़त व सम्मान किया और सिला व इनाम दिया। अपने भाई से तन्हाई में फ़रमाया कि मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ। अल्लाह तआ़ला ने मुझ पर यह इनाम किया, इज़्ज़त दी और रहम व करम का मामला फ़रमाया है। अब तुम्हें चाहिये कि भाईयों ने जो सुलूक मेरे साथ किया है उसका रंज न करो, और इस हक़ीक़त को भी उन पर न खोलो। मैं कोशिश में हूँ कि किसी तरह तुम्हें अपने पास रोक लूँ।

फिर जब उन्होंने (यानी यूसुफ़ अ़लैहि. ने) उनका सामान तैयार कर दिया तो पानी पीने का बरतन अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम ज़रूर चोर हो। (70) वे उन (तलाश करने वालों) की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है? (71) उन्होंने कहा कि हमको बादशाही पैमाना नहीं मिलता, (वह ग़ायब है) और जो शख़्स उसको (लाकर) हाज़िर करे उसको एक ऊँट के बोझ के बराबर ग़ल्ला मिलेगा, और मैं उस (के दिलवाने) का ज़िम्मेदार हूँ। (72)	فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ۝ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝

भाई को रोकने की एक तदबीर

जब आप अपने भाईयों को आ़दत के मुवाफ़िक़ एक-एक ऊँट ग़ल्ले का देने लगे और उनका सामान

Maktab E Ashraf

लादा जाने लगा तो अपने चालाक मुलाज़िमों को चुपके से हिदायत कर दी कि चाँदी का शाही प्याला बिनयामीन के सामान में चुपके से रख दें। बाज़ ने कहा है कि यह प्याला सोने का था। इसमें पानी पिया जाता था और इसी से ग़ल्ला भरकर दिया जाता था। बल्कि वैसा ही प्याला हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के पास भी था। पस आपके मुलाज़िमों ने होशियारी से वह प्याला आपके भाई हज़रत बिनयामीन के ख़ुरजी (वह झूल जिसको ऊँट वग़ैरह की पीठ पर सामान रखने के लिये डालते हैं) में रख दिया। जब ये चलने लगे तो सुना कि पीछे से मुनादी आवाज़ देता आ रहा है कि ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम चोर हो। इनके कान खड़े हुए, रुक गये, उधर मुतवज्जह हुए और पूछा कि आपकी क्या चीज़ खो गयी है? जवाब मिला कि शाही प्याला जिससे अनाज नापा जाता था। सुनो! शाही ऐलान है कि उसके ढूँढ लाने वाले को एक बोझ ग़ल्ला मिलेगा, और मैं इसका ज़िम्मेदार हूँ।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِی الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِیْنَ ۝ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِیْنَ ۝ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِیْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِیْنَ ۝ فَبَدَاَ بِاَوْعِیَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِیْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِیْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِیُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِیَاْخُذَ اَخَاهُ فِیْ دِیْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِیْ عِلْمٍ عَلِیْمٌ ۝

ये लोग कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम तुमको ख़ूब मालूम है कि हम लोग मुल्क में फ़साद फैलाने नहीं आए, और हम लोग चोरी करने वाले नहीं। (73) उन (ढूँढने वाले) लोगों ने कहा (अच्छा) अगर तुम झूठे निकले तो उस चोर की क्या सज़ा है? (74) उन्होंने जवाब दिया कि जिस शख़्स के सामान में मिले बस वही शख़्स अपनी सज़ा है, हम लोग ज़ालिमों (यानी चोरों) को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (75) फिर उन्होंने (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) अपने भाई के सामान के थैले से पहले तलाशी की शुरूआ़त दूसरे भाईयों के (सामान के) थैलों से की, फिर (आख़िर में) उस (बरतन को) अपने भाई के (सामान के) थैले से बरामद कर लिया। हमने यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की ख़ातिर से इस तरह तदबीर फ़रमाई। वह (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम) अपने भाई को उस (मिस्र के) बादशाह के क़ानून की रू से नहीं ले सकते थे, मगर यह कि अल्लाह ही को मन्ज़ूर था। हम जिसको चाहते हैं (इल्म में) ख़ास दर्जों तक बढ़ा देते हैं, और तमाम इल्म वालों से बढ़कर एक बड़ा इल्म वाला है। (76)

हज़रत यूसुफ़ के भाईयों का इनकार

अपने ऊपर चोरी की तोहमत सुनकर हज़रत यूसुफ़ के भाईयों के कान खड़े हुए और कहने लगे तुम

हमें जान चुके हो, हमारी आदतों और चाल-चलन से वाक़िफ़ हो चुके हो, हम ऐसे नहीं कि कोई फ़साद उठायें, न ऐसे हैं कि चोरियाँ करते फिरें। शाही मुलाज़िमों ने कहा अच्छा अगर प्याले का चोर तुममें से ही कोई हो और तुम झूठे पड़ो तो उसकी सज़ा क्या होनी चाहिये? जवाब दिया कि इब्राहीमी शरीअ़त के मुताबिक़ उसकी सज़ा यह है कि वह उस शख़्स के सुपुर्द कर दिया जाये जिसका माल उसने चुराया है। हमारी शरीअ़त का यही फ़ैसला है।

अब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का मतलब पूरा हो गया। आपने हुक्म दिया कि इनकी तलाशी ली जाये। चुनाँचे पहले दूसरे भाईयों के सामान की तलाशी ली गयी, हालाँकि मालूम था कि उनके बरतन ख़ाली हैं, लेकिन सिर्फ़ इसलिये कि उन्हें और दूसरे लोगों को कोई शुब्हा न हो आपने यह काम किया। जब भाईयों की तलाशी हो चुकी और जाम (प्याला) न मिला तो अब बिनयामीन के सामान की तलाशी शुरू हुई। चूँकि उनके सामान में रखवाया था इसलिये उसमें से निकलना ही था। निकलते ही हुक्म दिया कि उन्हें रोक लिया जाये, यह थी वह तरकीब जो अल्लाह तआ़ला ने अपनी हिक्मत, हज़रत यूसुफ़ और बिनयामीन वग़ैरह की मस्लेहत के लिये हज़रत यूसुफ़ सिद्दीक़ को सिखाई थी। क्योंकि शाहे मिस्र के क़ानून के मुताबिक़ तो बावजूद चोर होने के बिनयामीन को हज़रत यूसुफ़ अपने पास नहीं रख सकते थे, लेकिन चूँकि भाई ख़ुद यही फ़ैसला कर चुके थे इसलिये यही फ़ैसला हज़रत यूसुफ़ ने जारी कर दिया। आपको मालूम था कि इब्राहीमी शरीअ़त का फ़ैसला चोर के बारे में किया गया है इसलिये भाईयों से पहले क़बूल करा लिया था। जिसके दर्जे ख़ुदा बढ़ाना चाहे बढ़ा देता है, जैसा कि फ़रमान है- तुम में ईमान वालों के दर्जे बुलन्द करेंगे। हर आ़लिम से ऊपर कोई और आ़लिम भी है, यहाँ तक कि ख़ुदा सबसे बड़ा आ़लिम है। उसी से इल्म की इब्तिदा (शुरूआ़त) है और उसी की तरफ़ इल्म की इन्तिहा (हद, सीमा और अंत) है।

قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ○	कहने लगे, (साहिब) अगर इसने चोरी की तो (ताज्जुब नहीं, क्योंकि) इसका एक भाई (था वह) भी (इसी तरह) इससे पहले चोरी कर चुका है। पस यूसुफ़ ने इस बात को (जो आगे आती है) अपने दिल मे पोशीदा रखा और इसको उनके सामने (ज़बान से) ज़ाहिर नहीं किया, यानी (दिल में) यूँ कहा कि उस (चोरी) के दर्जे में तुम तो और भी ज़्यादा बुरे हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो उस (की हक़ीक़त) का अल्लाह ही को ख़ूब इल्म है। (77)

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का संयम

भाई के बरतन में से जाम (शाही प्याला) निकलता देखकर बात बना दी कि देखो इसने चोरी की थी और यही किया इसके भाई यूसुफ़ ने भी, एक मर्तबा इससे पहले चोरी कर ली थी। वह वाक़िआ़ यह था कि नाना का बुत चुपके से उठा लाये थे और उसे तोड़ दिया था। यह भी मरवी है कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की एक बड़ी बहन थीं जिनके पास अपने वालिद हज़रत इस्हाक़ का एक पटका (कमर बन्द)

था जो उनके बड़े आदमी के पास रहा करता था। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पैदा होते ही अपनी फूफी साहिबा की परवरिश में थे। उन्हें हज़रत यूसुफ़ से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी। जब आप कुछ बड़े हो गये तो हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने आपको ले जाना चाहा, बहन साहिबा से दरख़्वास्त की, लेकिन बहन ने जुदाई को नाक़ाबिले बरदाश्त बयान करके इनकार कर दिया। उधर आपके वालिद साहिब हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के शौक़ की भी इन्तिहा न थी, ज़िद करने लगे, आख़िर बहन साहिबा ने फ़रमाया- अच्छा कुछ दिनों रहने दो फिर ले जाना। इसी दौरान में एक दिन उन्होंने वही कमर-बन्द हज़रत यूसुफ़ के कपड़ों के नीचे छुपा दिया, फिर तलाश शुरू की, घर भर छान मारा न मिला। शोर मचा, आख़िर यह तय पाया कि घर में जो लोग हैं उनकी तलाशियाँ ली जायें, चुनाँचे ली गयी, किसी के पास हो तो निकले, आख़िर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तलाशी ली गयी, उनके पास से बरामद हुआ। हज़रत याक़ूब को ख़बर दी गयी और मिल्लते इब्राहीमी के क़ानून के मुताबिक़ आप अपनी फूफी की तहवील में कर दिये गये, और फूफी ने इस तरह अपने शौक़ को पूरा किया, इन्तिक़ाल के वक़्त तक हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को न छोड़ा। इसी बात का ताना आज भाई दे रहे हैं। जिसके जवाब में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने चुपके से अपने दिल में कहा कि तुम बड़े ख़ाना-ख़राब लोग हो, इसके भाई की चोरी का हाल ख़ुदा ख़ूब जानता है।

कहने लगे कि ऐ अज़ीज़! इस (बिनयामीन) का एक बहुत बूढ़ा बाप है, सो (आप ऐसा कीजिए कि) इसकी जगह हम में से एक को रख लीजिए (और अपना गुलाम बना लीजिए) हम आपको नेक-मिज़ाज देखते हैं। (78) उन्होंने (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) कहा कि ऐसी (बेइन्साफ़ी की) बात से ख़ुदा बचाए कि जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है उसके सिवा दूसरे शख़्स को पकड़ कर रख लें, इस हालत में तो हम बड़े बेइन्साफ़ समझे जाएँगे। (79)	قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝

ع

माज़िरत और ख़ुशामदें

जब बिनयामीन के पास से शाही माल बरामद हुआ और उनके अपने इक़रार के मुताबिक़ वह शाही क़ैदी ठहर चुके तो अब इन्हें रंज होने लगा। अज़ीज़े मिस्र की ख़ुशामद करने लगे और उसे रहम दिलाने के लिये कहा कि इनके वालिद इनके बड़े ही चाहने वाले हैं, ज़ईफ़ और बूढ़े शख़्स हैं, इनका एक सगा भाई पहले ही गुम हो चुका है, जिसके सदमे से पहले ही से निढाल हैं। अब अगर यह सुनेंगे तो डर है कि ज़िन्दा न बच सकेंगे। आप हममें से किसी को इनकी जगह अपने पास रख लें और इसे छोड़ दें। आप बड़े मोहसिन (एहसान करने वाले) हैं इतनी अर्ज़ हमारी क़बूल फ़रमा लें। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि भला यह संगदिली और ज़ुल्म कैसे हो सकता है कि करे कोई भरे कोई, चोर को रोका जायेगा न कि बेगुनाह को। बेक़सूर को सज़ा देना और गुनाहगार को छोड़ देना यह तो खुली नाइन्साफ़ी और

बदसुलूकी की बात है।

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ۭ قَالَ
كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ
اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا
فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ
حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ
وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى
اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ
وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا
لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ
كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا
لَصٰدِقُوْنَ ۝

फिर जब उनको उनसे (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से) बिल्कुल उम्मीद न रही (कि बिनयामीन को देंगे) तो (उस जगह से) अलग होकर आपस में मश्विरा करने लगे। उन सबमें जो बड़ा था उसने कहा, क्या तुमको मालूम नहीं तुम्हारे बाप तुमसे ख़ुदा की क़सम खिलाकर पक्का क़ौल ले चुके हैं, और इससे पहले यूसुफ़ के बारे में तुम किस क़द्र कोताही कर ही चुके हो। सो मैं तो इस ज़मीन से टलता नहीं जब तक कि मेरे बाप मुझको (हाज़िरी की) इजाज़त न दें, या अल्लाह तआला मेरे लिए इस मुश्किल को सुलझा दे, और वही ख़ूब सुलझाने वाला है। (80) तुम वापस अपने बाप के पास जाओ और (जाकर उनसे) कहो कि अब्बा! आपके साहिबज़ादे (बिनयामीन) ने चोरी की, (इसलिए गिरफ़्तार हुए) और हम तो वही बयान करते हैं जो हमको (देखने से) मालूम हुआ है, और हम ग़ैब की बातों के तो हाफ़िज़ नहीं थे। (81) और उस बस्ती (यानी मिस्र) वालों से पूछ लीजिए जहाँ हम (उस वक़्त) मौजूद थे, और उस क़ाफ़िले वालों से पूछ लीजिए जिनमें हम शामिल होकर (यहाँ) आए हैं। और यक़ीन जानिए कि हम बिल्कुल सच कहते हैं। (82)

Mahtab F Ashraf

परेशानी और घबराहट

जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई अपने भाई की रिहाई से मायूस हो गये, उन्हें इस बात ने दुविधा में डाल दिया कि हम वालिद से सख़्त अहद व पैमान करके आये हैं कि बिनयामीन को आपके हुज़ूर में पहुँचा देंगे। अब यहाँ से यह किसी तरह छूट नहीं सकते, इल्ज़ाम साबित हो चुका, हमारे अपने फ़ैसले के मुताबिक़ वह शाही क़ैदी ठहर चुके, अब बताओ क्या किया जाये? इस आपस के मश्विरे में बड़े भाई ने अपना ख़्याल इन लफ़्ज़ों में ज़ाहिर किया कि तुम्हें मालूम है कि उस ज़बरदस्त ठोस वादे के बाद जो हम अब्बा जान से करके आये हैं, अब उन्हें मुँह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहे, न यह हमारे बस की बात है कि किसी तरह बिनयामीन को शाही क़ैद से आज़ाद करा लें, फिर इस वक़्त हमें अपना पहला क़सूर और नादिम (शर्मिन्दा) कर रहा है जो यूसुफ़ के बारे में हमसे इससे पहले ही हो चुका है। अब मैं तो यहीं रुक जाता हूँ यहाँ तक

Maktab E Ashraf

कि या तो वालिद साहिब मेरा कसूर माफ़ फ़रमाकर मुझे अपने पास हाज़िर होने की इजाज़त दें या अल्लाह तआला मुझे कोई फ़ैसला सुझा दे कि मैं या तो लड़-भिड़कर अपने भाई को ले जाऊँ या ख़ुदा तआला कोई और शक्ल निकाल दे। कहा गया है कि उनका नाम रोबैल या यहूदा था।

जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को दूसरे भाईयों ने क़त्ल करना चाहा तो इन्होंने भाईयों को इससे बाज़ रखा था। अब यह अपने और भाईयों को मश्विरा देते हैं कि तुम अब्बा जी के पास जाओ, उन्हें सारी स्थिति से मुत्तला करो। उनसे कहो कि हमें क्या ख़बर थी कि यह चोरी कर लेंगे और चोरी का माल इनके पास मौजूद है। हमसे तो एक मसला पूछा गया हमने बयान कर दिया। आपको हमारी बात का यक़ीन न हो तो मिस्र वालों से दरियाफ़्त फ़रमा लीजिए। जिस क़ाफ़िले के साथ हम आये हैं उससे पूछ लीजिए कि हमने सच्चाई, अमानत, हिफ़ाज़त में कोई कसर नहीं उठा रखी, और हम जो कुछ अर्ज़ कर रहे हैं वह बिल्कुल सच्चाई पर आधारित है।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

वह (यानी याक़ूब अलैहिस्सलाम) फ़रमाने लगे कि बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली, सो सब्र ही करूँगा (जिसमें शिकायत का नाम न होगा), (मुझको) अल्लाह से उम्मीद है कि उन सबको मुझ तक पहुँचा देगा, (क्योंकि) वह ख़ूब वाक़िफ़ है, बड़ी हिक्मत वाला है। (83) और उनसे दूसरी तरफ़ रुख़ कर लिया और कहने लगे कि हाय यूसुफ़, अफ़सोस! और ग़म से (रोते-रोते) उनकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं, और वह (ग़म से जी ही जी में) घुटा करते थे। (84) (बेटे) कहने लगे, ख़ुदा की क़सम (मालूम होता है) तुम हमेशा ही यूसुफ़ की यादगारी में लगे रहोगे यहाँ तक कि घुल-घुलकर जान होंठों पर आ जाएगी या यह कि बिल्कुल मर ही जाओगे। (85) उन्होंने (यानी याक़ूब अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मैं तो अपने रंज व ग़म की सिर्फ़ अल्लाह से शिकायत करता हूँ और अल्लाह की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (86)

याक़ूब अलैहिस्सलाम का बेमिसाल सब्र

भाईयों की ज़बानी यह सुनकर हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने वही फ़रमाया जो इससे पहले उस वक़्त फ़रमाया था जब इन्होंने यूसुफ़ के ख़ून से भरे कपड़े पेश करके अपनी गढ़ी हुई कहानी सुनाई थी कि "सब्र ही बेहतर है"। आप समझे कि उसी तरह यह बात भी इनकी अपनी बनाई हुई है। बेटों से यह फ़रमाकर

Maktab e Ashraf

अब अपनी उम्मीद ज़ाहिर की जो ख़ुदा से थी कि बहुत मुम्किन है कि बहुत जल्द अल्लाह तआ़ला मेरे तीनों बच्चों को मुझसे मिला दे- यानी हज़रत यूसुफ़ को, बिनयामीन को और आपके बड़े साहिबज़ादे रोबैल को, जो मिस्र में ठहर गये थे इस उम्मीद पर कि अगर मौक़ा लग जाये तो बिनयामीन को ख़ुफ़िया तौर पर निकाल ले जायें। या मुम्किन है कि ख़ुदा तआ़ला ख़ुद हुक्म दे और यह उसकी रज़ामन्दी के साथ वापस लौटें। फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआ़ला अ़लीम है। मेरी हालत को ख़ूब जानता है, हकीम है उसकी क़ज़ा व क़द्र (यानी तय किया हुआ) और उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं होता। अब आपके इस नये रंज ने पुराना रंज भी ताज़ा कर दिया और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की याद दिल में चुटकियाँ लेने लगी।

हज़रत सईद इब्ने ज़ुबैर फ़रमाते हैं कि "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ने की हिदायत सिर्फ़ इसी उम्मत को की गयी है। इस नेमत से पहली उम्मतें मय नबियों के मेहरूम थीं। देखिये हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम भी ऐसे वाक़िए पर "या अ-सफ़ा अ़ला यूसु-फ़" (हाय यूसुफ़ अफ़सोस) कहते हैं। आपकी आँखें जाती रही थीं, ग़म ने आपको नाबीना कर दिया था, और ज़बान ख़ामोश थी। मख़्लूक़ में से किसी से शिकायत व शिकवा नहीं करते थे, ग़मगीन और रन्जीदा रहा करते थे।

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ किया- लोग तुझसे यह कहकर दुआ़ माँगते हैं कि ऐ इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब के ख़ुदा! ऐसा कर कि इन तीनों नामों में चौथा नाम मेरा भी शामिल हो जाये। जवाब मिला कि ऐ दाऊद! इब्राहीम आग में डाले गये और सब्र किया, तेरी आज़माईश अभी ऐसी नहीं हुई। इस्हाक़ ने ख़ुद अपनी क़ुरबानी क़बूल कर ली और अपना गला कटवाने बैठ गये, तुझ पर यह बात भी नहीं आयी। याक़ूब से मैंने उसके लख़्ते जिगर को अलग कर दिया, उसने भी सब्र किया, तेरे साथ यह वाक़िआ़ भी नहीं हुआ। यह रिवायत मुर्सल है और इसमें मुन्कर होना भी है। इसमें बयान हुआ है कि ज़बीहुल्लाह (अल्लाह के लिये ज़िबह होने वाले) हज़रत इस्हाक़ थे, लेकिन सही बात यह है कि हज़रत इस्माईल थे। इस रिवायत के रावी इब्ने ज़ैद बिन जदआ़न अक्सर मुन्कर और ग़रीब रिवायतें बयान कर दिया करते हैं। वल्लाहु आलम।

बहुत मुम्किन है कि अह्नफ़ बिन क़ैस रह. ने यह रिवायत बनी इस्राईल से की हो, जैसे कअ़ब और वहब वग़ैरह इस्राईली रिवायात नक़ल कर देते हैं। वल्लाहु आलम।

बनी इस्राईल की रिवायतों में यह भी है कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को इस मौक़े पर जबकि बिनयामीन क़ैद में थे एक ख़त लिखा था, जिसमें उन्हें रहम का मामला करने के लिये लिखा था कि हम मुसीबत के मारे लोग हैं। मेरे दादा हज़रत इब्राहीम आग में डाले गये, मेरे वालिद हज़रत इस्हाक़ ज़िबह के साथ आज़माये गये, मैं ख़ुद यूसुफ़ की जुदाई में मुब्तला हूँ। लेकिन यह रिवायत भी सनद के एतिबार से साबित नहीं।

बच्चों ने बाप का यह हाल देखकर उन्हें समझाना शुरू किया कि अब्बा जी आप तो उसी की याद में ख़ुद को घुला देंगे, बल्कि हमें तो डर है कि अगर आपका यही हाल कुछ दिनों रहा तो कहीं ज़िन्दगी से हाथ न धो बैठें। हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें जवाब दिया कि मैं तुमसे कुछ नहीं कह रहा हूँ। मैं अपने रब के सामने अपना दुख रो रहा हूँ और उसकी ज़ात से बहुत कुछ उम्मीदवार हूँ। वह भलाईयों वाला है, मुझे यूसुफ़ का ख़्वाब याद है, उसकी ताबीर होकर रहेगी।

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के एक मुख़्लिस दोस्त ने एक मर्तबा आपसे पूछा कि आपकी बीनाई (आँखों की रोशनी) कैसे जाती रही? और आपकी कमर कैसे कुबड़ी हो गयी?

Maktaba Ashraf

आपने फ़रमाया कि यूसुफ़ को रो-रोकर आँखें खो बैठा और बिनयामीन के सदमे ने कमर तोड़ दी। उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और फ़रमाया अल्लाह तआ़ला आपको सलाम के बाद कहता है कि मेरी शिकायतें दूसरों के सामने करने से आप शर्माते नहीं? हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने उसी वक़्त फ़रमाया कि परेशानी और ग़म की शिकायत अल्लाह ही के सामने है। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया, आपकी शिकायत का ख़ुदा को ख़ूब इल्म है। यह हदीस भी ग़रीब है और इसमें भी नकारत है।

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْئَسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ○ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ○

ऐ मेरे बेटो! जाओ यूसुफ़ और उसके भाई की तलाश करो, और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वही लोग नाउम्मीद होते हैं जो काफ़िर हैं। (87) फिर जब वे उनके (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के) पास पहुँचे। कहने लगे ऐ अ़ज़ीज़! हमको और हमारे घर वालों को (अकाल की वजह से) बड़ी तकलीफ़ पहुँच रही है, और हम कुछ यह निकम्मी "यानी बेकार-सी और मामूली" चीज़ लाए हैं, सो आप पूरा ग़ल्ला दे दीजिए और हमको ख़ैरात (समझकर) दे दीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ैरात देने वालों को (बेहतरीन) बदला देता है। (88)

ख़ुदा से मायूसी कुफ़्र है

हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अपने बेटों को हुक्म फ़रमा रहे हैं कि तुम इधर-उधर जाओ और यूसुफ़ और बिनयामीन की तलाश करो। अ़रबी में तहस्सुस का लफ़्ज़ भलाई की जुस्तजू के लिये बोला जाता है और बुरी बातों के लिये तजस्सुस का लफ़्ज़ बोला जाता है। साथ में फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की ज़ात से मायूस न होना चाहिये, उसकी रहमत से मायूस वही होते हैं जिनके दिलों में कुफ़्र होता है। तुम तलाश बन्द न करो, अल्लाह से नेक उम्मीद रखो और अपनी कोशिश जारी रखो।

चुनाँचे ये लोग फिर मिस्र पहुँचे, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के दरबार में हाज़िर हुए। वहाँ अपनी ख़स्ताहाली (परेशानी) ज़ाहिर की, कि क़हत-साली (सूखे और अकाल) ने हमारे ख़ानदान को सता रखा है, हमारे पास कुछ नहीं रहा जिससे ग़ल्ला ख़रीदते। अब रद्दी, नाक़िस, बेकार, खोटी और क़ीमत न बनने वाली कुछ मामूली सी रखी रखाई चीज़ें लेकर आपके पास आये हैं, गोया बदला नहीं कहा जा सकता, न क़ीमत बनती है, लेकिन फिर भी हमारी ख़्वाहिश है कि आप हमें वही दे दीजिए जो सच्ची, सही और पूरी क़ीमत पर दिया करते हैं। हमारे बोझ भर दीजिए, हमारी ख़ुर्जियाँ पुर कर दीजिए। इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में "फ़-औफ़ि लनल् कै-ल" की जगह "फ़-औफ़ि रिकाबना" है। यानी हमारे ऊँट ग़ल्ले से लाद दीजिए और हम पर सदक़ा कीजिए हमारे भाई को रिहाई दीजिए। या यह मतलब है कि यह ग़ल्ला हमें हमारे इस माल

Maktaba E Ashraf

के बदले नहीं बल्कि बतौर ख़ैरात दीजिए।

किसी शख़्स ने हज़रत सुफ़ियान बिन उयैना से सवाल किया कि हमारे नबी से पहले भी किसी नबी पर सदक़ा हराम हुआ है? तो आपने यही आयत पढ़कर इस्तिदलाल किया कि नहीं हुआ। हज़रत मुजाहिद रह. से सवाल हुआ कि क्या किसी शख़्स का अपनी दुआ में यह कहना बुरा और मकरूह है कि या अल्लाह मुझ पर सदक़ा कर? फ़रमाया हाँ इसलिये कि सदक़ा वह करता है जो सवाब का तालिब हो।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ○ قَالُوْآ ءَ اِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ○ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ ○ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۡ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ○	उन्होंने (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, (कहो) वह भी तुमको याद है जो कुछ तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ (बर्ताव) किया था, जबकि तुम्हारी जहालत का ज़माना था। (89) कहने लगे, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ़ हो। उन्होंने फ़रमाया (हाँ) मैं यूसुफ़ हूँ और यह (बिनयामीन) मेरा (हक़ीक़ी) भाई है। हम पर अल्लाह तआ़ला ने बड़ा एहसान किया, वाक़ई जो शख़्स गुनाहों से बचता है और सब्र करता है तो अल्लाह ऐसे नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं किया करता। (90) वे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम कुछ शक नहीं कि तुमको अल्लाह तआ़ला ने हम पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई, और बेशक हम (इसमें) ख़तावार थे। (91) उन्होंने (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि तुम पर आज कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तआ़ला तुम्हारा क़ुसूर माफ़ करे, और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। (92)

दास्तान का समापन

जब भाई हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास आजिज़ी और बेबसी की हालत में पहुँचे, अपने तमाम दुख रोने लगे, अपने वालिद की और अपने घर वालों की मुसीबतें बयान कीं तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का दिल भर आया, न रहा गया, अपने सर से ताज उतार दिया और भाईयों से कहा कि कुछ अपने करतूत याद भी हैं कि तुमने यूसुफ़ के साथ क्या किया? और उसके भाई के साथ क्या किया? वह जहालत का करिश्मा था। इसी लिये बाज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि ख़ुदा का हर गुनाहगार जाहिल है। क़ुरआन फ़रमाता है:

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ.

फिर आपका रब ऐसे लोगों के लिये जिन्होंने जहालत से बुरा काम कर लिया फिर उसके बाद तौबा कर ली और अपने आमाल ठीक कर लिये तो आपका रब उसके बाद बड़ी मग़फ़िरत करने वाला बड़ी

Maktab E Ashraf

रहमत वाला है। (सूरः नहल आयत 119)

बज़ाहिर मालूम होता है कि पहली दो दफ़ा की मुलाक़ात में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को ख़ुद को ज़ाहिर करने का हुक्मे ख़ुदा न था। अब की मर्तबा हुक्म हो गया, आपने मामला साफ़ कर दिया। जब तकलीफ़ बढ़ गयी, सख़्ती ज़्यादा हो गयी तो अल्लाह तआ़ला ने राहत दे दी और कुशादगी अ़ता फ़रमा दी, जैसा कि इरशाद है कि सख़्ती के साथ आसानी है, यक़ीनन सख़्ती के साथ आसानी है।

अब भाई चौंक पड़े कुछ इस वजह से कि ताज उतारने के बाद पेशानी की निशानी देख ली, कुछ इस क़िस्म के सवालात, कुछ हालात कुछ अगले वाक़िआ़त सब सामने आ गये, फिर भी अपना शक दूर करने के लिये पूछा कि क्या आप ही यूसुफ़ हैं? आपने इस सवाल के जवाब में साफ़ कह दिया कि हाँ मैं ख़ुद यूसुफ़ हूँ और यह मेरा सगा भाई है। अल्लाह तआ़ला ने हम पर फ़ज़्ल व करम किया, बिछुड़ने के बाद मिला दिया, तक़्वा और सब्र रायगाँ (बेकार) नहीं जाते, नेकोकारी बिना फल लाये नहीं रहती। अब तो भाईयों ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी का इक़रार कर लिया कि वाक़ई सूरत, सीरत दोनों एतिबार से आप ही हम पर फ़ौक़ियत (बरतरी) रखते हैं। मुल्क व माल के एतिबार से भी अल्लाह ने आपको हम पर फ़ज़ीलत दे रखी है। इसी तरह बाज़ के नज़दीक नुबुव्वत के एतिबार से भी, क्योंकि हज़रत यूसुफ़ नबी थे और ये भाई नबी न थे। इस इक़रार के बाद अपनी ख़ता और ग़लती का भी इक़रार किया, उसी वक़्त हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं आज के बाद तुम्हें तुम्हारी यह ख़ता याद न दिलाऊँगा। मैं तुम्हें कोई डाँट-डपट करना नहीं चाहता, न तुम पर इल्ज़ाम रखता हूँ न तुम पर नाराज़गी का इज़हार करता हूँ बल्कि मेरी दुआ़ है कि ख़ुदा भी तुम्हें माफ़ फ़रमाये, वह तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। भाईयों ने उज़्र पेश किया, आपने क़बूल फ़रमा लिया कि अल्लाह तुम्हारी ख़ता को छुपाये और तुमने जो किया है उसे बख़्श दे।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ
اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ
اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ
تُفَنِّدُوْنِ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ
الْقَدِيْمِ ۝

अब तुम मेरा यह कुर्ता (भी) लेते जाओ और इसको मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, (इससे) उनकी आँखें रोशन हो जाएँगी, और अपने (बाक़ी) घर वालों को (भी) सबको मेरे पास ले आओ। (93)

और जब क़ाफ़िला चला तो उनके बाप ने कहना शुरू किया कि अगर तुम मुझको बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो (एक बात कहूँ कि) मुझको तो यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की ख़ुशबू आ रही है। (94) वे (पास वाले) कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम आप तो अपने उसी पुराने ग़लत ख़्याल में मुब्तला हैं। (95)

बूढ़े बाप का इलाज और देखभाल

चूँकि ख़ुदा के रसूल हज़रत याक़ूब अपने रंज व ग़म में रोते रोते नाबीना (अंधे) हो गये थे, इसलिये

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अपने भाईयों से कहते हैं कि मेरा यह कुर्ता लेकर तुम अब्बा के पास जाओ, इसे उनके मुँह पर डालते ही इन्शा-अल्लाह उनकी निगाह रोशन हो जायेगी। फिर उन्हें और अपने घर के तमाम और लोगों को यहीं मेरे पास ले आओ। इधर यह क़ाफ़िला मिस्र से निकला, उधर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत याक़ूब को हज़रत यूसुफ़ की ख़ुशबू पहुँचा दी, तो आपने अपने बच्चों से जो आपके पास थे फ़रमाया कि मुझे तो मेरे प्यारे बेटे यूसुफ़ की ख़ुशबू आ रही है। लेकिन तुम तो मुझे कम-अ़क़्ल बूढ़ा कहकर मेरी इस बात का यक़ीन नहीं करोगे। अभी क़ाफ़िला किनआ़न से आठ दिन के फ़ासले पर था कि ख़ुदा के हुक्म से हवा ने हज़रत याक़ूब तक हज़रत यूसुफ़ के कुर्ते की ख़ुशबू पहुँचा दी। उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की गुमशुदगी की मुद्दत अस्सी साल की हो चुकी थी, और क़ाफ़िला अस्सी फ़र्सख़ आपसे दूर था। लेकिन भाईयों ने कहा, आप तो यूसुफ़ की मुहब्बत में ग़लती में पड़े हुए हैं, न वह आपके दिल से दूर हो न आपको तसल्ली हो। उनका यह कलिमा बड़ा सख़्त था, किसी लायक़ औलाद के लिये शोभा नहीं कि अपने बाप से यह कहे, न किसी उम्मती को लायक़ है कि अपने नबी से यह कहे।

पस जब ख़ुशख़बरी लाने वाला आ पहुँचा तो (आते ही) उसने वह कुर्ता उनके मुँह पर (लाकर) डाल दिया। पस फ़ौरन ही उनकी आँखें खुल गईं और (बेटों से) फ़रमाया, क्यों मैंने तुमसे कहा न था कि अल्लाह तआ़ला की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (96) सब बेटों ने कहा कि ऐ हमारे बाप! हमारे लिए (ख़ुदा से) हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत की दुआ़ कीजिए, हम बेशक ख़तावार थे। (97) उन्होंने (यानी याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया जल्द ही तुम्हारे लिए अपने रब से मग़फ़िरत की दुआ़ करूँगा, बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (98)	فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ○ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ○ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○

अपनी ग़लती और जुर्म का इक़रार

कहते हैं कि हज़रत यूसुफ़ का कुर्ता हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के बड़े बेटे यहूदा लाये थे, इसलिये कि उन्होंने पहले झूठ-मूट वह कुर्ता पेश किया था जिसे ख़ून से भरकर लाये थे और बाप को यह समझाया था कि यह यूसुफ़ का ख़ून है। अब तलाफ़ी (उस ग़लती की भरपाई) के लिये यह कुर्ता भी यही लाये कि बुराई के बदले भलाई हो जाये। बुरी ख़बर के बदले ख़ुशख़बरी हो जाये। आते ही बाप के मुँह पर डाला। उसी वक़्त हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की आँखें खुल गयीं और बच्चों से कहने लगे, देखो मैं तो हमेशा तुमसे कहा करता था कि ख़ुदा की मैं बाज़ वे बातें जानता हूँ जिनसे तुम बिल्कुल बेख़बर हो। मैं तुमसे कहा करता था कि ख़ुदा तआ़ला मेरे यूसुफ़ को ज़रूर मुझसे मिलायेगा, अभी थोड़े ही दिनों का ज़िक्र है कि मैंने तुमसे कहा था कि मुझे आज मेरे यूसुफ़ की ख़ुशबू आ रही है।

Maktab E Ashraf

अब बेटे नादिम (शर्मिन्दा) होकर अपनी ख़ता का इक़रार करके बाप से इस्तिग़फ़ार तलब करते हैं। बाप जवाब में फ़रमाते हैं कि मुझे इससे इनकार नहीं और मुझे अपने रब से यह भी उम्मीद है कि वह तुम्हारी ख़तायें माफ़ फ़रमा देगा। इसलिये कि वह बख़्शिशों और मेहरबानियों वाला है। तौबा करने वालों की तौबा क़बूल फ़रमा लिया करता है। मैं सुबह सेहरी के वक़्त तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से माफ़ी तलब) करूँगा। इब्ने जरीर में है कि हज़रत उमर रज़ि. मस्जिद में आते तो सुनते कि कोई कह रहा है- या ख़ुदा! तूने पुकारा मैंने मान लिया, तूने हुक्म दिया मैं बजा लाया, यह सेहर का वक़्त है, पस तू मुझे बख़्श दे। आपने कान लगाकर ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के घर से आवाज़ आ रही है। आपने उनसे पूछा, उन्होंने कहा यही वक़्त है जिसके लिये हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अपने बेटों से कहा था कि तुम्हारे लिये थोड़ी देर बाद इस्तिग़फ़ार करूँगा। हदीस में है कि यह रात जुमे की रात थी। इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते- मुराद इससे यह है कि जब जुमे की रात आ जाये, लेकिन यह हदीस ग़रीब है, बल्कि इसके मरफ़ूअ़ होने में कलाम है। वल्लाहु आलम।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ○ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۭ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ○

फिर जब ये सब-के-सब यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने माँ-बाप को (अदब के तौर पर) अपने पास जगह दी, और कहा कि सब मिस्र में चलिए (और) ख़ुदा को मन्ज़ूर है तो (वहाँ) अमन-चैन से रहिए। (99) और अपने माँ-बाप को (शाही) तख़्त पर ऊँचा बिठाया, और सब-के-सब उनके (यानी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के) आगे सज्दे में गिर गए, और उन्होंने (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) कहा कि ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो पहले ज़माने में देखा था, जिसको मेरे रब ने सच्चा कर दिया। और उसने (यानी ख़ुदा ने) मेरे साथ एहसान किया कि (एक तो) उसने मुझे क़ैद से निकाला और (दूसरा यह कि) तुम सबको बाहर से (यहाँ) लाया। (यह सब कुछ) इसके बाद (हुआ) कि शैतान ने मेरे और मेरे भाईयों के बीच फ़साद डलवा दिया था, बेशक मेरा रब जो चाहता है उसकी उम्दा तदबीर करता है, बेशक वह बड़ा इल्म वाला (और) हिक्मत वाला है। (100)

लम्बी मुद्दत के बाद ख़्वाब की ताबीर

भाईयों पर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुद को ज़ाहिर करके फ़रमाया था कि अब्बा जी को और

घर के सब लोगों को यहीं ले आओ। भाईयों ने यही किया, इस सम्मानित काफ़िले ने किनआन से कूच किया। जब मिस्र के क़रीब पहुँचे तो अल्लाह के नबी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने वालिद हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के स्वागत के लिये चले और हुक्मे शाही से शहर के तमाम अमीर और बड़े लोग और हुकूमत के कारिन्दे और अधिकारी भी आपके साथ थे। यह भी मन्क़ूल है कि ख़ुद मिस्र का बादशाह भी स्वागत के लिये शहर से बाहर आया था। उसके बाद जो जगह देने वग़ैरह का ज़िक्र है उसके बारे में बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह इबारत आगे-पीछे हो गयी है, यानी आपने उनसे फ़रमाया, तुम मिस्र में चलो, इन्शा-अल्लाह पुर-अमन और बेख़तर होगे।

अब शहर में प्रवेश के बाद आपने अपने माँ-बाप को अपने पास जगह दी और उन्हें ऊँचे तख़्त पर बैठाया। लेकिन इमाम इब्ने जरीर रह. ने इसकी तरदीद की है और फ़रमाया कि इसमें सुद्दी रह. का क़ौल बिल्कुल ठीक है, कि जब पहले ही मुलाक़ात हुई तो आपने उन्हें अपने पास कर लिया, और जब शहर का दरवाज़ा आया तो फ़रमाया अब इत्मीनान के साथ यहाँ चलिये, लेकिन इसमें भी एक बात रह गयी है कि "आवा" असल में मन्ज़िल में जगह देने को कहते हैं जैसे "आवा इलैहि अख़ाहु" (यानी उन्होंने अपने भाई को अपने साथ मिला लिया) में है। और हदीस में भी है "मन आवा मुहदिसन्"। पस कोई वजह नहीं कि हम इसका मतलब यह बयान न करें कि उनके आ जाने के बाद उन्हें जगह देने के बाद आपने उनसे फ़रमाया कि तुम अमन के साथ मिस्र में दाख़िल होओ, यानी यहाँ क़हत (सूखा और अकाल) वग़ैरह की मुसीबतों से महफ़ूज़ होकर आराम से रहो।

मशहूर है कि क़हत-साली के जो साल बाक़ी थे वे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के तशरीफ़ लाने की वजह से अल्लाह तआ़ला ने दूर कर दिये, जैसा कि मक्का वालों की क़हत-साली के बाक़ी साल नबी करीम सल्ल. की दुआ़ की वजह से ख़त्म हो गये थे। जब क़हत से तंग आकर अबू सुफ़ियान ने आपसे शिकायत की और बहुत रोये, तथा आपसे दुआ़ की दरख़्वास्त की।

अ़ब्दुर्रहमान कहते हैं कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वालिदा (माँ) का तो पहले ही इन्तिक़ाल हो चुका था, उस वक़्त आपके वालिद के साथ आपकी ख़ाला थीं, लेकिन इमाम इब्ने जरीर और इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. का क़ौल है कि आपकी वालिदा ज़िन्दा थीं, उनकी मौत पर कोई सही दलील नहीं। और क़ुरआने करीम के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ इस बात को चाहते हैं कि आपकी वालिदा माजिदा ज़िन्दा मौजूद थीं, यही बात ठीक भी है। आपने अपने वालिदैन (माँ-बाप) को अपने साथ शाही तख़्त पर बैठाया, उस वक़्त माँ-बाप भी और ग्यारह भाई कुल के कुल आपके सामने सज्दे में गिर पड़े। आपने फ़रमाया अब्बा जी! लीजिये मेरे ख़्वाब की ताबीर ज़ाहिर हो गयी, ये हैं ग्यारह सितारे और यह हैं सूरज चाँद, जो मेरे सामने सज्दे में हैं। उनकी शरीअ़त में यह चीज़ जायज़ थी कि बड़ों को सलाम के साथ सज्दा करते थे। बल्कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा तक यह बात जायज़ ही रही। लेकिन इस मिल्लते मुहम्मदिया में अल्लाह तआ़ला ने किसी और के लिये सिवाय अपनी ज़ात पाक के सज्दे को पूरी तरह हराम कर दिया। और अल्लाह तआ़ला ने उसे अपने लिये ही मख़्सूस कर लिया। हज़रत क़तादा रह. वग़ैरह के क़ौल का हासिले मज़मून यही है।

हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. मुल्क शाम गये, वहाँ उन्होंने देखा कि शाम (सीरिया) के लोग अपने बड़ों को सज्दा करते हैं। यह जब लौटे तो इन्होंने हुज़ूर सल्ल. को सज्दा किया। आपने पूछा मुआ़ज़ यह क्या बात है? उन्होंने जवाब दिया कि मैंने शाम वालों को देखा कि वे अपने बड़ों और बुज़ुर्गों

को सज्दा करते हैं। आप तो इसके सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। आपने फ़रमाया अगर मैं किसी को किसी के लिये सज्दे का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर के सामने सज्दा करे। इस सबब से कि उसके उस पर बहुत बड़े हक़ हैं। एक और हदीस में है कि हज़रत सलमान रज़ि. ने अपने इस्लाम के शुरू के ज़माने में रास्ते में हुज़ूर सल्ल. को देखकर आपके सामने सज्दा किया तो आपने फ़रमाया सलमान! मुझे सज्दा न करो। सज्दा उस ख़ुदा को करो जो हमेशा की ज़िन्दगी वाला है, जो कभी न मरेगा।

बहरहाल यह उस शरीअ़त में जायज़ था इसलिये उन्होंने सज्दा किया तो आपने फ़रमाया लीजिए अब्बा जी मेरे ख़्वाब का ज़हूर हो गया। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिखाया। उसका अन्जाम ज़ाहिर हो गया। चुनाँचे एक और आयत में क़ियामत के दिन के लिये भी यही लफ़्ज़ बोला गया है। 'यौ-म यअ्ती तअ्वीलुहू'। पस यह मुझ पर ख़ुदा का एक बड़ा एहसान है कि उसने मेरे ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया। और जो मैंने सोते हुए देखा था अल्हम्दु लिल्लाह मुझे जागते में भी उसने दिखा दिया। और एक एहसान उसका यह भी है कि उसने मुझे क़ैदख़ाने से निजात दी और तुम सबको जंगल से यहाँ लाकर मुझसे मिला दिया।

आप चूँकि जानवरों के पालने वाले थे इसलिये उमूमन जंगल और देहात में ही क़ियाम रहता था। फ़िलिस्तीन भी शाम के जंगलों में था। ज़्यादा तर समय वहीं पढ़ाव रहा करता था। कहते हैं कि ये इदलाज में हसमी के नीचे रहा करते थे और पशु पालते थे। ऊँट बकरियाँ वग़ैरह साथ रहती थीं।

फिर फ़रमाते हैं- इसके बाद कि शैतान ने हममें फूट डलवा दी थी, अल्लाह तआ़ला जिस काम का इरादा करता है उसके वैसे ही असबाब मुहैया कर देता है, और उसे आसान और सहल कर देता है। वह अपने बन्दों की मस्लेहतों को ख़ूब जानता है। वह अपने कामों और बातों, अपनी बनाई हुई तक़दीर और किये हुए फ़ैसलों में मुख़्तार व हाकिम है, उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं है।

सुलैमान का क़ौल है कि ख़्वाब के देखने और उसकी तावील के ज़ाहिर होने में चालीस साल का वक़्फ़ा (अन्तराल) था। अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद फ़रमाते हैं कि ख़्वाब की ताबीर के ज़ाहिर होने में इससे ज़्यादा ज़माना लगता भी नहीं, यह आख़िरी मुद्दत है। हज़रत हसन से रिवायत है कि बाप बेटे अस्सी बरस के बाद मिले। तुम ख़्याल करो कि ज़मीन पर हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम से ज़्यादा ख़ुदा को कोई महबूब बन्दा न था, फिर भी इतनी मुद्दत उन्हें यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की जुदाई में गुज़री, हर वक़्त आँखों से आँसू जारी रहते और दिल में ग़म की लहरें उठतीं। एक और रिवायत में है कि यह मुद्दत तिरासी साल की थी।

फ़रमाते हैं कि जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम कुएँ में डाले गये उस वक़्त आपकी उम्र सत्रह साल की थी। अस्सी बरस तक आप बाप की नज़रों से ओझल रहे। फिर मुलाक़ात के बाद तेईस बरस ज़िन्दा रहे और एक सौ बीस बरस की उम्र में इन्तिक़ाल किया। बक़ौल क़तादा 53 बरस के बाद बाप बेटे मिले। एक क़ौल है कि अट्ठारह साल एक दूसरे से दूर रहे। और एक क़ौल है कि चालीस साल की जुदाई रही और फिर मिस्र में बाप से मिलने के बाद सत्रह साल ज़िन्दा रहे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल जब मिस्र पहुँचे हैं उनकी संख्या सिर्फ़ तरेसठ थी और जब यहाँ से निकले हैं उस वक़्त उनकी संख्या एक लाख सत्तर हज़ार थी। मसरूक़ कहते हैं कि आने के वक़्त यह मय मर्द व औरत तीन सौ नब्बे थे। अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद का क़ौल है कि जब ये लोग आये कुल छियासी थे, यानी मर्द व औरत

बूढ़े बच्चे सब मिलाकर, और जब निकले हैं उस वक़्त इनकी गिनती छह लाख से ज़्यादा थी।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِىْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِىْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اَنْتَ وَلِيّٖ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝	ऐ मेरे परवर्दिगार! तूने मुझको हुकूमत का बड़ा हिस्सा दिया और मुझको ख़्वाबों की ताबीर देना तालीम फ़रमाया (जो कि एक बड़ा इल्म है), ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, मुझको पूरी फ़रमाँबरदारी की हालत में दुनिया से उठा ले और मुझको ख़ास नेक बन्दों में शामिल कर ले। (101)

अल्लाह की नेमतों का शुक्र

नुबुव्वत मिल चुकी, बादशाहत अ़ता हो गयी, मुसीबतें ख़त्म हुईं, माँ-बाप और भाई से मुलाक़ात हो गयी तो अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि जैसे ये दुनियावी नेमतें तूने मुझ पर की हैं, इन नेमतों को आख़िरत में पूरी फ़रमा। जब भी मौत आये तो इस्लाम पर और तेरी फ़रमाँबरदारी पर आये। और मैं नेक लोगों में मिला दिया जाऊँ, और नबियों व रसूलों में रहूँ। उन पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

बहुत मुम्किन है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की यह दुआ़ इन्तिक़ाल के वक़्त हो, जैसा कि सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से साबित है, कि इन्तिक़ाल के वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपनी उंगली उठाई और यह दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! रफ़ीक़े आला से मिला दे। तीन मर्तबा आपने यही दुआ़ की। हाँ यह भी हो सकता है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की इस दुआ़ का मक़सद यह हो कि जब भी वफ़ात आये इस्लाम पर आये और नेक लोगों में मिल जाऊँ। यह नहीं कि उसी वक़्त आपने यह दुआ़ अपनी मौत के लिये की हो, इसकी बिल्कुल वही मिसाल है जो कोई किसी को दुआ़ देते हुए कहता है कि अल्लाह तुझे इस्लाम पर मौत दे, इससे यह मुराद नहीं होती कि तुझे अभी मौत आ जाये, या जैसे हम माँगते हैं कि ख़ुदाया हमें तेरे दीन पर ही मौत आये। या हमारी यह दुआ़ कि ऐ अल्लाह मेरा इस्लाम पर ख़ात्मा कर और नेक लोगों में मिला।

और अगर यही मुराद हो कि वाक़ई आपने उसी वक़्त मौत माँगी तो मुम्किन है कि यह बात उस शरीअ़त में जायज़ हो। चुनाँचे क़तादा रह. का क़ौल है कि जब आपके तमाम काम हो गये, आँखें ठण्डी हो गयीं, मुल्क, माल, इज़्ज़त, आबरू, ख़ानदान बिरादरी बादशाहत सब मिल गये तो आपको नेक लोगों की जमाअ़त में पहुँचने का शौक़ और चाहत पैदा हुई। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि किसी नबी ने सिवाय हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के आपसे पहले मौत तलब नहीं की। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं यही सबसे पहले इस दुआ़ के माँगने वाले हैं। मुम्किन है इससे इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की मुराद यह हो कि इस दुआ़ के सबसे पहले करने वाले यानी इस्लाम पर ख़ात्मा होने की दुआ़ सबसे पहले माँगने वाले आप ही थे। जैसा कि यह दुआ़ "रब्बिग़फ़िर् ली व लिवालिदय्-य....." (यानी ऐ अल्लाह! बख़्शिश फ़रमा मेरी, मेरे माँ-बाप की....) सबसे पहले हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने माँगी थी। बावजूद इसके भी अगर यही कहा जाये कि

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने मौत की ही दुआ़ की थी तो हम कहते हैं कि हो सकता है उनके दीन में यह जायज़ हो, हमारे यहाँ तो सख़्त मना है।

मुस्नद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं तुममें कोई किसी सख़्ती और मुसीबत से घबराकर मौत की आरज़ू न करे। अगर उसे ऐसी तमन्ना करनी ज़रूरी है तो यूँ कहे कि ऐ अल्लाह! जब तक मेरी ज़िन्दगी तेरे इल्म में मेरे लिये बेहतर है, मुझे ज़िन्दा रख। और जब तेरे इल्म में मेरी मौत बेहतर हो, मुझे मौत दे दे। बुख़ारी व मुस्लिम की इसी हदीस में है कि तुम में से कोई किसी सख़्ती के नाज़िल होने की वजह से मौत की तमन्ना हरगिज़ न करे, अगर वह नेक है तो उसकी ज़िन्दगी उसकी नेकियाँ बढ़ायेगी। और अगर वह बुरा है तो बहुत मुम्किन है कि ज़िन्दगी में उसे किसी वक़्त तौफ़ीक़ हो जाये। बल्कि यूँ कहे ऐ अल्लाह! जब तक मेरी ज़िन्दगी बेहतर है तू मुझे ज़िन्दा रख।

मुस्नद अहमद में है कि हम एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. की मज्लिस में बैठे हुए थे। आपने हमें नसीहत की और ऐसे दर्द भरे अन्दाज़ में नसीहत की कि हमारे दिल गर्मा दिये। उस वक़्त हममें ज़्यादा रोने वाले हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. थे। रोते रोते उनकी ज़बान से निकल गया कि काश मैं मर जाता। आपने फ़रमाया सअ़द! मेरे सामने मौत की तमन्ना करते हो? तीन मर्तबा यही अलफ़ाज़ दोहराये। फिर फ़रमाया ऐ सअ़द! अगर तू जन्नत के लिये पैदा किया गया है तो जिस क़द्र उम्र बढ़ेगी नेकियाँ ज़्यादा होंगी, जो तेरे हक़ में बेहतर है। मुस्नद में है- आप फ़रमाते हैं कि तुममें से कोई हरगिज़ हरगिज़ मौत की तमन्ना न करे, न उसकी दुआ़ करे। हाँ अगर कोई ऐसा हो कि उसे अपने आमाल पर भरोसा और उन पर यक़ीन हो। सुनो! तुम में से जो कोई मरता है उसके आमाल का सिलसिला बन्द हो जाता है। मोमिन के आमाल उसकी नेकियाँ ही बढ़ाते हैं।

यह याद रहे कि यह हुक्म उस मुसीबत में है जो दुनियावी हो, और उसी की ज़ात के मुताल्लिक़ हो। लेकिन अगर फ़ितना मज़हबी हो, मुसीबत दीनी हो तो मौत का सवाल जायज़ है, जैसा कि फ़िरऔ़न के जादूगरों ने उस वक़्त दुआ़ की थी जबकि फ़िरऔ़न उन्हें क़त्ल की धमकियाँ दे रहा था, कि ख़ुदाया! हमको सब्र की तौफ़ीक़ दे और हमें इस्लाम की हालत में मौत दे। इसी तरह हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम जब बच्चे की पैदाईश के दर्द से घबराकर खजूरों के तने तले गयीं तो बेसाख़्ता ज़बान से निकल गया कि काश मैं इससे पहले ही मर गयी होती और आज तक लोगों की ज़बान व दिल से भुला दी गयी होती। यह आपने उस वक़्त फ़रमाया जब मालूम हुआ कि लोग उन्हें ज़िना की तोहमत लगा रहे हैं, इसलिये कि आप शादीशुदा न थीं और हमल (गर्भ) ठहर गया था। फिर बच्चा पैदा हुआ और दुनिया ने शोर मचाया था कि मरियम बदकार औ़रत है। न माँ बुरी न बाप बदकार, पस अल्लाह तआ़ला ने आपकी पाकीज़गी लोगों पर स्पष्ट और ज़ाहिर कर दी, और अपने बन्दे हज़रत ईसा को गहवारे (पालने) में ज़बान दी, और मख़्लूक़ को ज़बरदस्त मोजिज़ा और खुली निशानी दिखा दी। उन पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

एक हदीस में एक लम्बी दुआ़ का ज़िक्र है, जिसमें यह जुमला भी है कि ख़ुदाया जब तू किसी क़ौम के साथ फ़ितने (आज़माईश) का इरादा करे तो मुझे उस फ़ितने में मुब्तला करने से पहले ही दुनिया से उठा ले। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- दो चीज़ों को इनसान अपने हक़ में बुरी जानता है, मौत को बुरी जानता है और मौत मोमिन के लिये फ़ितने से बेहतर है। माल की कमी को इनसान अपने लिये बुराई ख़्याल करता है हालाँकि माल की कमी हिसाब की कमी है। ग़र्ज़ यह कि दीनी फ़ितनों (इम्तिहान और आज़माईशों) के वक़्त मौत की तलब जायज़ है। चुनाँचे हज़रत अ़ली रज़ि. ने अपनी ख़िलाफ़त के आख़िरी ज़माने में जब देखा कि

लोगों की शरारतें किसी तरह ख़त्म नहीं होतीं और किसी तरह इत्तिफ़ाक़ नसीब नहीं होता, तो दुआ की या इलाही! मुझे अब तू उठा ले। ये लोग मुझसे और मैं इनसे तंग आ चुका हूँ।

हज़रत इमाम बुख़ारी रह. पर भी जब फ़ितनों की ज़्यादती हुई, दीन का संभालना मुश्किल हो गया और ख़ुरासान के हाकिम के साथ बड़े विवाद और लड़ाईयाँ पेश आयीं तो आपने अल्लाह के दरबार में दुआ की कि ख़ुदाया! अब मुझे अपने पास बुला ले। एक हदीस में है कि फ़ितनों के ज़मानों में इनसान क़ब्र को देखकर कहेगा कि काश मैं इस जगह होता क्योंकि फ़ितनों, बलाओं, ज़लज़लों और सख़्तियों ने हर एक फ़ितने में फंसे शख़्स को फ़ितने में डाल रखा होगा।

इब्ने जरीर में है कि जब हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अपने उन बेटों के लिये जिनसे बहुत क़सूर सर्ज़द हो चुके थे इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह तआ़ला ने उनका इस्तिग़फ़ार क़बूल किया और उन्हें बख़्श दिया। हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब सारा ख़ानदान मिस्र में जमा हो गया तो हज़रत यूसुफ़ के भाईयों ने एक रोज़ आपस में कहा कि हमने अब्बा जी को जितना सताया है ज़ाहिर है। हमने भाई यूसुफ़ पर जो ज़ुल्म तोड़े हैं, ज़ाहिर है। अब अगरचे ये दोनों बुज़ुर्ग हमें कुछ न कहें और हमारी ख़ता माफ़ कर दें लेकिन कुछ ख़्याल भी है कि ख़ुदा के यहाँ हमारी कैसी दुर्गत बनेगी? आख़िर यह तय हुआ कि आओ अब्बा जी के पास चलें और उनसे इल्तिजा करें। चुनाँचे सब मिलकर आपके पास आये, उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ भी बाप के पास बैठे हुए थे। आते ही उन्होंने एक ज़बान में कहा कि हुज़ूर हम आपके पास एक ऐसे अहम मामले के लिये आये हैं कि इससे पहले कभी ऐसे काम के लिये आपके पास नहीं आये थे। अब्बा जी और ऐ भाई साहिब! हम इस वक़्त ऐसी मुसीबत में मुब्तला हैं और हमारे दिल इस क़द्र रो रहे हैं कि आज से पहले हमारी ऐसी हालत कभी नहीं हुई। ग़र्ज़ कि कुछ इस तरह आ़जिज़ी और नदामत ज़ाहिर की कि दोनों बुज़ुर्गों का दिल भर आया। ज़ाहिर है कि अम्बिया के दिलों में तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा रहम और नर्मी होती है। पूछा कि आख़िर तुम क्या चाहते हो, और ऐसी तुम पर क्या मुसीबत आ पड़ी है?

सबने कहा आपको ख़ूब मालूम है कि हमने आपको किस क़द्र सताया, हमने भाई पर कैसे ज़ुल्म व सितम ढाये? दोनों ने कहा हाँ मालूम है। फिर? कहा क्या यह सही है कि आप दोनों ने हमारी ख़तायें माफ़ कर दीं? कहा हाँ बिल्कुल सही है। हम दिल से माफ़ कर चुके। तब लड़कों ने कहा आपका माफ़ कर देना भी बेफ़ायदा है जब तक कि अल्लाह तआ़ला हमें माफ़ न कर दे। पूछा अच्छा फिर मुझसे क्या चाहते हो? जवाब दिया यही कि आप हमारे लिये अल्लाह से बख़्शिश तलब फ़रमायें, यहाँ तक कि 'वही' के ज़रिये आपको मालूम हो जाये कि ख़ुदा ने हमें बख़्श दिया तो ज़रूर हमारी आँखों में नूर और दिल में सुरूर आ सकता है। वरना हम तो दोनों जहान से गये।

उसी वक़्त आप खड़े हो गये, क़िब्ले की तरफ़ रुख़ किया। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम आपके पीछे खड़े हुए और बहुत आ़जिज़ी और दिल की हुज़ूरी के साथ अल्लाह के दरबार में दुआ़यें शुरू कीं। हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम दुआ़ करते थे, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम आमीन कहते थे। कहते हैं कि बीस साल तक दुआ़ मक़बूल न हुई। आख़िर बीस साल के बाद जबकि भाईयों का ख़ून अल्लाह के ख़ौफ़ से ख़ुश्क होने लगा, तब 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) आयी और दुआ़ की क़बूलियत और लड़कों की बख़्शिश की ख़ुशख़बरी सुनाई गयी। बल्कि यह भी फ़रमाया गया कि अल्लाह का वादा है कि तेरे बाद नुबुव्वत भी उन्हें मिलेगी। यह क़ौल हज़रत अनस रज़ि. का है और इसमें दो रावी ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं- यज़ीद रक़ाशी, सालेह मुर्री। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अपनी मौत के वक़्त हज़रत यूसुफ़ को

वसीयत की कि मुझे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम व इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की जगह में दफ़न करना। चुनाँचे इन्तिक़ाल के बाद आपने यह वसीयत पूरी की और मुल्क शाम (सीरिया) की ज़मीन में आपको आपके बाप दादा के पास दफ़न किया। उन सब पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢـبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝	(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) यह क़िस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम आपको 'वही' के ज़रिये से बतलाते हैं (और) आप उन (यूसुफ़ के भाईयों) के पास उस वक़्त मौजूद न थे जबकि उन्होंने अपना इरादा पुख़्ता कर लिया था और वे तदबीरें कर रहे थे। (102) और अक्सर लोग ईमान नहीं लाते चाहे आपका कैसा ही जी चाहता हो। (103) और आप उनसे इस पर कुछ मुआ़वज़ा तो चाहते नहीं। यह (क़ुरआन) तो तमाम जहान वालों के लिए सिर्फ़ नसीहत है। (104)

ع ۵

एक हक़ीक़त

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का पूरा क़िस्सा बयान फ़रमाकर कि किस तरह भाईयों ने उनके साथ बुराई की, और किस तरह उनकी जान ज़ाया करनी चाही, और ख़ुदा ने उन्हें किस तरह बचाया, और किस तरह तरक़्क़ी व बुलन्दी पर पहुँचाया, अब अपने नबी से फ़रमाता है कि यह और इस जैसी और चीज़ें सब हमारी तरफ़ से तुम्हें दी जाती हैं। ताकि लोग उनसे नसीहत हासिल करें। आपके मुख़ालिफ़ भी आँखें खोलें और उन पर हमारी हुज्जत क़ायम हो जाये।

ज़ाहिर है कि तू उस वक़्त उनके पास नहीं था जबकि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई उनको कुएँ में डालने की तजवीज़ कर रहे थे, सिर्फ़ हमारे बतलाने, सिखलाने से तुझे ये वाक़िआ़त मालूम हुए।

जैसे हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम के क़िस्से को बयान फ़रमाते हुए इरशाद हुआ कि जब वे क़लमें डाल रहे थे कि मरियम को कौन पाले, तू उस वक़्त उनके पास न था।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से में भी इस क़िस्म का इरशाद फ़रमाया है कि पश्चिमी दिशा में जब हम हज़रत मूसा को अपनी बातें समझा रहे थे तू वहाँ न था। इसी तरह मद्यन वालों का मामला भी तुझसे छुपा हुआ ही था, आसमानों में फ़ैसले के वक़्त होने वाली गुफ़्तगू में तू मौजूद न था। यह सब हमारी तरफ़ से 'वही' के ज़रिये तुझे बतलाया गया। यह खुली दलील है तेरी रिसालत व नुबुव्वत की, कि पहले गुज़रे वाक़िआ़त तू इस तरह खोल-खोलकर लोगों के सामने बयान करता है कि गोया तूने अपनी आँखों से ख़ुद देखे हैं और तेरे सामने ही गुज़रे हैं। फिर ये वाक़िआ़त नसीहत व सीख, हिक्मत व उपदेश से भरे हैं, जिससे इनसानों की दीन व दुनिया संवर सकती है। बावजूद इसके भी अक्सर लोग ईमान से कोरे रह जाते हैं, चाहे तू लाख चाहे कि ये मोमिन बन जायें। एक और आयत में है:

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

Maktaba E Ashraf

अगर तू इनसानों की अक्सरियत की इताअ़त करेगा तो वे तुझे अल्लाह की राह से बहका और भटका देगी।

बहुत से वाक़िआत के बयान के बाद हर एक वाक़िए के साथ क़ुरआन ने फ़रमाया है कि अगरचे इसमें बड़ी ज़बरदस्त निशानी है लेकिन फिर भी अक्सर लोग मानने वाले नहीं। आप जो कुछ भी मेहनत और जिद्दोजहद कर रहे हैं और अल्लाह की मख़्लूक़ को अल्लाह की राह दिखा रहे हैं, इसमें आपका अपना दुनियावी नफ़ा हरगिज़ मक़सूद नहीं। आप उनसे कोई उजरत और कोई बदला नहीं चाहते, बल्कि यह सिर्फ़ ख़ुदा की रज़ा हासिल करने के लिये मख़्लूक़ के नफ़ा के लिये है। यह तो तमाम जहान के लिये सरासर ज़िक्र है, ताकि वे सही रास्ता पायें, नसीहत हासिल करें, सबक़ लें, हिदायत व निजात पायें।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ○ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ○ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ○	**और बहुत-सी निशानियाँ हैं आसमानों में और ज़मीन में, जिनपर उनका गुज़र होता रहता है, और वे उनकी तरफ़ (बिल्कुल) तवज्जोह नहीं करते। (105) और अक्सर लोग जो ख़ुदा को मानते भी हैं तो इस तरह कि शिर्क भी करते जाते हैं। (106) सो क्या फिर भी इस बात से मुत्मइन हुए (बैठे) हैं कि उनपर ख़ुदा के अ़ज़ाब की कोई ऐसी आफ़त आ पड़े जो उनको घेर ले या उन पर अचानक क़ियामत आ जाए और उनको (पहले से) ख़बर भी न हो। (107)**

ये किस बात का इन्तिज़ार कर रहे हैं?

बयान हो रहा है कि क़ुदरत की बहुत सी निशानियाँ, अल्लाह के एक होने की बहुत सी गवाहियाँ दिन रात उनके सामने हैं, फिर भी अक्सर लोग निहायत बेपरवाही और अपनी कम-अ़क़्ली की वजह से उनमें कभी ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते। क्या यह इतना विस्तृत और विशाल आसमान, क्या यह इस क़द्र फैली हुई ज़मीन, क्या ये रोशन सितारे, यह गर्दिश वाला सूरज चाँद, ये पेड़ और ये पहाड़, ये खेतियाँ और सब्ज़ियाँ, ये उफान भरे समुद्र और ये ज़ोर से चलने वाली हवायें, ये विभिन्न क़िस्म के रंगा-रंग मेवे, ये अलग-अलग ग़ल्ले और क़ुदरत की बेशुमार निशानियाँ एक अ़क़्लमन्द को इस क़द्र भी काम नहीं आ सकतीं कि वह इनसे अपने ख़ुदा की जो एक है, जो बेनियाज़ है, जो तन्हा है, जो वाहिद है, जो ला-शरीक है, जो क़ादिर व क़य्यूम है, जो बाक़ी और काफ़ी है, उसकी ज़ात को पहचान लें और उसके नामों और सिफ़तों के क़ायल हो जायें? बल्कि उनमें के अक्सरियत की ज़ेहनियत (सोच और मानसिकता) तो यहाँ तक बिगड़ चुकी है कि ख़ुदा पर ईमान है, फिर भी शिर्क से नहीं हट रहे हैं। आसमान व ज़मीन, पहाड़ और दरख़्त, इनसान और जिन्नात का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला) अल्लाह को मानते हैं लेकिन फिर भी उसके सिवा दूसरों को उसके साथ शरीक ठहराते हैं।

ये मुश्रिक लोग हज को आते हैं, एहराम बाँधकर लब्बैक पुकारते हुए कहते हैं कि ख़ुदाया तेरा कोई

Maktab E Ashraf

शरीक नहीं, जो भी शरीक हैं उनका ख़ुद का मालिक भी तू ही है और उनकी मिल्कियत का मालिक भी तू ही है। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि जब वे इतना कहते कि हम हाज़िर हैं, ख़ुदाया तेरा कोई शरीक नहीं, तो नबी करीम सल्ल. फ़रमाते बस बस, यानी अब आगे कुछ न कहो, वास्तव में शिर्क बड़ा भारी ज़ुल्म है, कि ख़ुदा के साथ दूसरों की भी इबादत की जाये।

सहीहैन में है कि इब्ने मसऊद रज़ि. ने नबी करीम सल्ल. से सवाल किया कि सबसे बड़ा गुनाह क्या है? आपने जवाब दिया कि तेरा ख़ुदा के साथ किसी को शरीक ठहराना, हालाँकि उसी अकेले ने तुझे पैदा किया है। इसी तरह इस आयत के तहत में मुनाफ़िक़ भी दाख़िल हैं, उनके अ़मल इख़्लास से ख़ाली होते हैं, बल्कि वे रियाकार होते हैं और रियाकारी (दिखावा) भी शिर्क है। क़ुरआन का फ़रमान है:

اِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ..... الخ.

मुनाफ़िक़ लोग ख़ुदा को धोखा देना चाहते हैं हालाँकि ख़ुदा की तरफ़ से ख़ुद धोखे में हैं। ये नमाज़ को सुस्ती और काहिली से अदा करते हैं। सिर्फ़ लोगों को दिखाना मक़सूद होता है। अल्लाह का ज़िक्र नाम के लिये होता है।

यह भी याद रहे कि बाज़ शिर्क बहुत हल्का और छुपा होता है। ख़ुद करने वाले को भी पता नहीं चलता। चुनाँचे हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. एक बीमार के पास गये, उसके बाज़ू पर एक धागा बंधा हुआ देखकर आपने उसे तोड़ दिया और यही आयत पढ़ी कि ईमान वाले होते हुए भी मुश्रिक हुए जाते हो? (यह धागा किसी जादू टोने की शक्ल से था)।

हदीस शरीफ़ में है कि ख़ुदा के सिवा दूसरे के नाम की जिसने क़सम खाई वह मुश्रिक हो गया। मुलाहिज़ा हो तिर्मिज़ी शरीफ़ नबी करीम सल्ल. का फ़रमान है कि झाड़-फूँक, डोरे-धागे और झूठे तावीज़ शिर्क हैं। अल्लाह अपने बन्दों को तवक्कुल के ज़रिये सब सख़्तियों से दूर कर देता है। (अबू दाऊद वग़ैरह)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. की बीवी फ़रमाती हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह की आ़दत थी कि जब कभी बाहर से आते ज़ोर से खंखारते कि घर वाले समझ जायें, और आप उन्हें किसी ऐसी हालत में न देख पायें कि बुरा लगे। एक दिन इसी तरह आप आये, उस वक़्त मेरे पास एक बुढ़िया थी जो बीमार होने की वजह से मुझ पर दम करने आयी थी। मैंने आपकी खंखार की आवाज़ सुनते ही उसे चारपाई के नीचे छुपा दिया। आप आये, मेरे पास मेरी चारपाई पर बैठ गये और मेरे गले में धागा देखकर पूछा यह क्या है? मैंने कहा इसमें दम कराकर मैंने बाँध लिया है। आपने उसे पकड़कर तोड़ दिया और फ़रमाया अ़ब्दुल्लाह का घर शिर्क से बेपरवाह है। ख़ुद मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि झाड़-फूँक तावीज़ात और डोरे-धागे शिर्क हैं। मैंने कहा, यह आप कैसे फ़रमाते हैं, मेरी आँख दुख रही थी, मैं फुलाँ यहूदी के पास जाया करती थी, वह दम कर देता था तो सुकून हो जाता था। आपने फ़रमाया तेरी आँख में शैतान चौका मारा करता था और उसकी फूँक से वह रुक जाता था। तुझे यह काफ़ी नहीं कि वह कहती जो रसूलुल्लाह सल्ल. ने सिखाया है:

اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ وَاَنْتَ الشَّافِىْ لَاشِفَاءَ اِلَّا شِفَاؤُكَ لَايُغَادِرُ سَقَمًا.

यानी ऐ लोगों के रब! इस परेशानी और बीमारी को दूर कर दे, शिफ़ा देने वाला तू ही है। तू ऐसी शिफ़ा देता है जो किसी तरह की बुराई को नहीं छोड़ती।

मुस्नद अहमद की एक और हदीस में ईसा बिन अ़ब्दुर्रहमान से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन हकीम बीमार पड़े, हम उनका हाल पूछने के लिये गये। उनसे कहा गया कि आप कोई डोरा-धागा लटका लें, तो

Maktab E Ashraf

आपने फ़रमाया मैं डोरा-धागा लटकाऊँ? हालाँकि रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है जो शख़्स जो चीज़ लटकाये वह उसी के हवाले कर दिया जाता है। मुस्नद में है कि जो शख़्स कोई डोरा-धागा लटकाये, उसने शिर्क किया। एक रिवायत में है कि जो शख़्स ऐसी कोई चीज़ लटकाये, अल्लाह उसका काम पूरा न करे, और जो शख़्स उसे लटकाये अल्लाह उसे लटका हुआ ही रखे। एक हदीसे क़ुदसी में है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मैं तमाम शरीकों से बेनियाज़ व बेपरवाह हूँ। जो शख़्स अपने किसी काम में मेरा कोई शरीक ठहराये में उसे और उसके शिर्क को छोड़ देता हूँ। (मुस्लिम)

मुस्नद में है कि क़ियामत के दिन जबकि अगले पिछले सब जमा होंगे, ख़ुदा की तरफ़ से एक मुनादी निदा करेगा कि जिसने अपने अ़मल में शिर्क किया है वह उसका सवाब अपने शरीक से तलब कर ले। अल्लाह तआ़ला तमाम शरीकों से बढ़कर शिर्क से बेनियाज़ है। मुस्नद में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा डर छोटे शिर्क का है। लोगों ने पूछा वह क्या है? फ़रमाया रियाकारी और दिखावा, क़ियामत के दिन लोगों को आमाल का बदला दिया जायेगा, उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ रियाकारो! तुम जाओ और जिनके दिखाने सुनाने के लिये तुमने अ़मल किये थे उन्हीं से अपना अज्र तलब करो, और देखो कि वे देते हैं या नहीं?

मुस्नद में है, आप फ़रमाते हैं कि जो शख़्स कोई बदशगुनी लेकर अपने काम से लौट जाये वह मुश्रिक हो गया। सहाबा ने दरियाफ़्त किया- हुज़ूर फिर उसका कफ़्फ़ारा क्या है? आपने फ़रमाया यह कहनाः

اَللّٰهُمَّ لَاخَيْرَ اِلَّا خَيْرُكَ وَلَاطَيْرَ اِلَّا طَيْرُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ.

यानी ऐ अल्लाह! सब भलाईयाँ, सब नेक शगुन तेरे ही हाथ में हैं, तेरे सिवा कोई भलाईयों और नेक शगुन वाला नहीं। और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

मुस्नद में है कि हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. ने अपने एक ख़ुतबे में फ़रमाया कि लोगो! शिर्क से बचो, वह तो चींवटी की चाल से ज़्यादा छुपी चीज़ है (यानी हर वक़्त सचेत रहो और अपने हर-हर क़दम पर निगरानी रखो कि कहीं कोई शिर्क वाली हरकत न हो जाये)।

इस पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हर्ब और हज़रत क़ैस बिन मुज़ारिब खड़े हो गये और कहा या तो आप इसकी दलील पेश कीजिये या हम जायें और हज़रत उमर से आपकी शिकायत करें। आपने फ़रमाया लो दलील लो, हमें नबी करीम सल्ल. ने एक दिन ख़ुतबा सुनाया और फ़रमाया लोगो! शिर्क से बचो, वह तो चींवटी की चाल से ज़्यादा छुपी चीज़ है। पस किसी ने आपसे पूछा कि फिर उससे बचाव कैसे हो सकता है? फ़रमाया यह दुआ़ पढ़ा करोः

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ مِمَّا لَا نَعْلَمُ.

यानी ऐ अल्लाह! हम तेरे साथ शिर्क करने से तेरी पनाह माँगते हैं अगर हम उस चीज़ को जानते हों, और अगर अनजाने में हो जाये तो उसकी माफ़ी चाहते हैं।

एक और रिवायत में है कि यह सवाल करने वाले हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ थे। आपने पूछा था कि या रसूलल्लाह! शिर्क तो यही है कि ख़ुदा के साथ दूसरे को पुकारा जाये? इस हदीस में दुआ़ के अलफ़ाज़ ये हैं।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ وَاَنَا اَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ مِمَّا لَا اَعْلَمُ.

इसका तर्जुमा भी क़रीब-क़रीब वही है जो ऊपर गुज़रा। बस उसमें "हम" के लफ़्ज़ से दुआ थी और इसमें "मैं" के लफ़्ज़ से।

अबू दाऊद वग़ैरह में है कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने नबी करीम सल्ल. से अर्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसी दुआ सिखाईये जिसे मैं सुबह व शाम और सोते वक़्त पढ़ा करूँ? आपने फ़रमाया यह दुआ पढ़ो।

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ. اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ.

अल्लाहुम्-म फ़ातिरस्समावाति वल्-अर्ज़ि आलिमल् ग़ैबि वश्शहादति रब्बु कुल्लि शैइन् व मलीकहू। अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त अऊज़ु बि-क मिन् शर्रि नफ़्सी व मिन् शर्रिश्शैतानि व शिरकिही।

एक और रिवायत में है कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ पढ़नी सिखाई, उसके आख़िर में ये अलफ़ाज़ हैं:

وَاَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءًا اَوْ اَجُرَّهٗ اِلٰى مُسْلِمٍ.

व अनिक़्तरिफ़ु अला नफ़्सी सवाअन् औ अजुर्रुहू इला मुस्लिमिन्।

फ़रमाता है कि क्या इन मुश्रिकों को इस बात का ख़ौफ़ जाता रहा कि अगर मन्ज़ूरे ख़ुदा हो तो उसका अज़ाब इनको चारों तरफ़ से आ घेरे और इन्हें पता भी न चले। जैसा कि इरशाद है:

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ..... الخ.

यानी ये मक्कारियाँ और बुराईयाँ करने वाले क्या इस बात से निडर हो गये हैं कि अल्लाह तआला उन्हें ज़मीन में धंसा दे, या ऐसी जगह से अज़ाब दे कि वे सोच भी न सकें। या उन्हें लेटे बैठे ही पकड़ ले या होशियार करके थाम ले। ख़ुदा किसी बात में आजिज़ नहीं, यह तो सिर्फ़ उसकी रहमत व मेहरबानी है कि गुनाह करें और पनपें।

एक और फ़रमाने ख़ुदा है कि बस्तियों के गुनाहगार इस बात से बेख़ौफ़ हो गये हैं कि उनके पास रातों को उनके सोते हुए ही अज़ाब आ जाये, या दिन दहाड़े बल्कि हंसते खेलते हुए अज़ाब आ पहुँचे। अल्लाह के मक्र (तदबीर) से बेख़ौफ़ न होना चाहिये। ऐसे लोग नुक़सान उठाते हैं।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ○

आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं (लोगों को) ख़ुदा की (तौहीद की) तरफ़ इस तौर पर बुलाता हूँ कि मैं दलील पर क़ायम हूँ, मैं भी और मेरे साथ वाले भी, और अल्लाह (शिर्क से) पाक है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। (108)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पसन्दीदा रास्ता

अल्लाह तआला अपने रसूल को जिन्हें तमाम जिन्नात व इनसानों की तरफ़ भेजा है, हुक्म देता है कि लोगों को ख़बर कर दो कि मेरा मस्लक, मेरा तरीक़ा, मेरी सुन्नत यह है कि ख़ुदा की दावत आम कर दूँ,

Maktab E Ashraf

पूरे यक़ीन, दलील और बसीरत के साथ मैं इस तरफ़ सब को बुला रहा हूँ। मेरे जितने पैरो हैं वह भी इसी तरफ़ सबको बुला रहे हैं, यक़ीनी, शरई और अक़्ली दलीलों के साथ इस तरफ़ दावत देते हैं, हम अपने रब की पाकीज़गी बयान करते हैं, उसकी बड़ाई, पाकीज़गी, तस्बीह व तहलील बयान करते हैं। उसे शरीक से, नज़ीर से, वज़ीर से, मुशीर से और हर तरह की कमी और कमज़ोरी से पाक मानते हैं। न उसकी औलाद मानें न बीवी, न साथी न हम-जिन्स, वह इन तमाम बुरी बातों से पाक और बुलन्द व बरतर है। आसमान और ज़मीन और इनकी सारी मख़्लूक़ उसकी तारीफ़ और पाकी बयान कर रही है, लेकिन लोग उनकी तस्बीह समझते नहीं। अल्लाह बड़ा ही हलीम (बुर्दबार) और ग़फ़ूर (माफ़ करने वाला) है।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ○

और हमने आपसे पहले मुख़्तलिफ़ बस्ती वालों में से जितने (रसूल) भेजे सब आदमी ही थे (कोई भी फ़रिश्ता न था), और (ये लोग जो बेफ़िक्र हैं, तो) क्या ये लोग मुल्क में (कहीं) चले-फिरे नहीं कि (अपनी आँखों से) देख लेते कि उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ जो इनसे पहले (काफ़िर) हो गुज़रे हैं, और अलबत्ता आख़िरत की दुनिया उन लोगों के लिए निहायत ख़ैर व फ़लाह की चीज़ है जो एहतियात रखते हैं, सो क्या तुम इतना भी नहीं समझते। (109)

चल-फिरकर देखो दुनिया एक इबरत की जगह है

बयान फ़रमाता है कि रसूल और नबी मर्द ही बनते रहे न कि औरतें। जमहूर मुसलमानों का यही क़ौल है, नुबुव्वत औरतों को कभी नहीं मिली।

इस आयते करीमा का मज़मून भी इसी पर दलालत करता है, लेकिन बाज़ का क़ौल है जैसा कि इब्ने हज़म उन्दुलुसी की भी यही राय है कि हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम की बीवी हज़रत सारा, मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा और ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा मरियम भी नबीया थीं। फ़रिश्तों ने हज़रत सारा को उनके लड़के इस्हाक़ और पोते याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी, मूसा की माँ की तरफ़ उन्हें दूध पिलाने की 'वही' हुई, मरियम को हज़रत ईसा की ख़ुशख़बरी फ़रिश्ते ने दी। फ़रिश्तों ने मरियम से कहा कि अल्लाह ने तुझे पसन्दीदा, पाक और अपनी चुनी हुई बन्दी बना लिया है, तमाम जहान की औरतों पर। ऐ मरियम! अपने रब की फ़रमाँबरदारी करती रह। उसके लिये सज्दे कर और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ कर।

इसका जवाब यह है कि इतना तो हम मानते हैं जितना क़ुरआन ने बयान फ़रमाया, लेकिन इससे उनकी नुबुव्वत साबित नहीं होती। सिर्फ़ इतना फ़रमान या इतनी ख़ुशख़बरी या इतना हुक्म किसी की नुबुव्वत के लिये दलील नहीं। अहले सुन्नत वल-जमाअ़त में सबका मज़हब यह है कि औरतों में से कोई नबी नहीं हुई, उनमें सिद्दीक़ा हैं जैसा कि सबसे अशरफ़ व अफ़ज़ल औरत हज़रत मरियम के बारे में क़ुरआन फ़रमाता है:

Maktab E Ashraf

وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ.

कि उनकी (हज़रत ईसा की) माँ सिद्दीक़ा हैं।

पस अगर वह नबीया होतीं तो इस स्थान पर उनका वही मर्तबा बयान किया जाता। आयत का मतलब यह है कि ज़मीन के रहने वाले इनसान ही नबी होते हैं न कि आसमान से कोई फ़रिश्ता उतरता था। चुनाँचे एक और आयत में है:

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ.

यानी तुझसे पहले जितने रसूल हमने भेजे वे सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में आना-जाना भी रखते थे। वे ऐसे न थे कि खाना खाने से पाक हों, न ऐसे थे कि कभी मरने वाले ही न हों। हमने उनसे अपने वादे पूरे किये, उन्हें और उनके साथ जिन्हें हमने चाहा निजात दी, और मुश्रिक लोगों को हलाक कर दिया। इसी तरह एक और आयत में है:

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ...... الخ.

यानी मैं कोई पहला रसूल तो नहीं? याद रहे कि 'अहले-क़ुरा' से मुराद शहर वाले हैं न कि देहात व जंगल के रहने वाले, वे तो बड़े टेढ़ी तबीयत वाले और बद-अख़्लाक़ होते हैं। मशहूर व मारूफ़ है कि शहरी लोग नर्म तबीयत के और अच्छे अख़्लाक़ वाले होते हैं। इसी तरह बस्तियों से दूर वाले परे किनारे रहने वाले भी आ़म तौर पर ऐसे ही डेढ़े-तिरछे होते हैं। क़ुरआन फ़रमाता है:

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا..... الخ.

जंगलों के रहने वाले बद्दू कुफ़्र व निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं।

क़तादा रह. भी यही मतलब बयान फ़रमाते हैं। क्योंकि शहरियों में इल्म व अ़मल ज़्यादा होता है। एक हदीस में है कि जंगल के रहने वाले देहातियों में से किसी ने नबी करीम सल्ल. की ख़िदमत में हदिया पेश किया, आपने उसे बदले में कुछ दिया लेकिन उसने उसे बहुत कम समझा। आपने और दिया, और दिया यहाँ तक कि उसे ख़ुश कर दिया। फिर फ़रमाया- मेरा तो जी चाहता है कि सिवाय क़ुरैशी, अन्सारी, सक़फ़ी और दौसी लोगों के औरों का तोहफ़ा कबूल ही न करूँ। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि वह मोमिन जो लोगों से मिले-जुले और उनकी तकलीफ़ों व सताने पर सब्र करे उससे बेहतर है जो न उनसे मेल-मिलाप रखे और न उनके सताने और तकलीफ़ें देने पर सब्र करे।

ये झुठलाने वाले क्या मुल्क में चलते फिरते नहीं? कि अपने से पहले झुठलाने वालों की हालत को देखें और उनके अन्जाम पर ग़ौर करें। जैसा कि एक और जगह फ़रमान है:

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَا.... الخ.

यानी क्या उन्होंने ज़मीन की सैर नहीं की कि उनके दिल समझदार होते।

उनके कान सुन लेते, उनकी आँखें देख लेतीं कि उन जैसे गुनाहगारों का क्या हश्र होता रहा है। वे निजात से मेहरूम रहते हैं, अल्लाह का ग़ज़ब उन्हें ग़ारत कर देता है। आख़िरत में उनके लिये बहुत ही बेहतरी और अच्छाई है जो एहतियात से ज़िन्दगी गुज़ार देते हैं। यहाँ भी निजात पाते हैं और वहाँ भी। वहाँ की निजात यहाँ की निजात से बहुत ही बेहतर है। अल्लाह का वादा है:

Maktab-E-Ashraf

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا..... الخ.

हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की इस दुनिया में भी मदद फ़रमाते हैं और क़ियामत के दिन भी उनकी इमदाद करेंगे। उस दिन गवाह खड़े होंगे, ज़ालिमों के उज़्र (बहाने और हीले-हवाले) बेफ़ायदा रहेंगे। उन पर लानत बरसेगी और उनके लिये बुरा घर होगा। घर को आख़िरत के साथ जोड़ा।

حَتّٰىٓ إِذَا اسْتَيْئَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوٓا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ○	यहाँ तक कि जब पैग़म्बर (इस बात से) मायूस हो गए और उन पैग़म्बरों को गुमान ग़ालिब हो गया कि हमारी समझ ने ग़लती की, उनको हमारी मदद पहुँची, फिर (उस अज़ाब से) हमने जिसको चाहा वह बचा लिया गया, और हमारा अज़ाब मुजरिम लोगों से नहीं हटता। (110)

वक़्त पर मदद

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि उसकी मदद उसके रसूलों पर ऐन मौक़े पर उतरती है। मुसीबतों के झटके जब ज़ोरों पर होते हैं, मुख़ालफ़त जब शिखर पर होती है, इख़्तिलाफ़ जब बढ़ जाता है, दुश्मनी जब हद से बढ़ जाती है, अल्लाह के नबियों को जब हर तरफ़ से घेर लिया जाता है तो एक दम से अल्लाह की मदद आ पहुँचती है।

"कुज़िबू" और "कुज़्ज़िबू" दोनों क़िराअतें हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की क़िराअत 'ज़ाल' की तशदीद से है यानी 'कुज़्ज़िबू'। चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर रज़ि. ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से पूछा कि यह लफ़्ज़ "कुज़िबू" है या "कुज़्ज़िबू" है? हज़रत आयशा रज़ि. ने फ़रमाया "कुज़्ज़िबू" है। उन्होंने कहा फिर तो यह मायने हुए कि रसूलों ने गुमान किया कि वे झुठलाये गये, तो यह गुमान की कौनसी बात थी, यह तो यक़ीनी बात थी कि वे झुठलाये जाते थे। आपने फ़रमाया बेशक यह यक़ीनी बात थी कि वे काफ़िरों की तरफ़ से झुठलाये जाते थे लेकिन वह वक़्त भी आया कि ईमान वाले उम्मती भी ऐसे ज़लज़ले में डाले गये, और इस तरह उनकी मदद में ताख़ीर हुई कि रसूलों के दिल में यह ख़्याल गुज़रा कि ग़ालिबन अब तो हमारी जमाअ़त भी हमें झुठलाने लगी होगी। अब मददे ख़ुदा आयी और उन्हें ग़लबा हुआ। तुम इतना तो ख़्याल करो कि 'कुज़िबू' कैसे ठीक हो सकता है। अल्लाह की पनाह क्या अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ख़ुदा के बारे में यह बदगुमानी कर सकते हैं कि उन्हें रब की तरफ़ से झूठ कहा गया?

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की क़िराअत में 'कुज़िबू' है। आप इसकी दलील में यह आयतः

حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ..... الخ.

(यहाँ तक कि अम्बिया और ईमान वाले कहने लगे कि ख़ुदा की मदद कहाँ है? याद रखो मददे ख़ुदा बिल्कुल क़रीब है) पढ़ देते थे।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा इसका सख़्ती से विरोध करती और फ़रमाया करती थीं कि जनाबे रसूले ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. से ख़ुदा तआ़ला ने जितने वादे किये आपको पूरा यक़ीन था कि वे सब यक़ीनी और निश्चित हैं, और सब पूरे होकर ही रहेंगे। आख़िर दम तक कभी ख़ुदा न ख़्वास्ता आपके दिल में यह वहम भी पैदा नहीं हुआ कि अल्लाह का कोई वादा ग़लत साबित होगा, या मुम्किन है कि ग़लत हो जाये या पूरा न हो। हाँ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर बराबर बलायें और आज़माईशें आती हैं, यहाँ तक कि उनके दिल में यह ख़तरा पैदा होने लगा कि कहीं मेरे मानने वाले भी मुझसे बदगुमान होकर मुझे झुठला रहे हों। एक शख़्स क़ासिम बिन मुहम्मद के पास आकर कहता है कि मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुर्तुबी 'कुज़िबू' पढ़ते हैं तो आपने फ़रमाया कि उनसे कह दो मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. की पाक बीवी हज़रत आयशा रज़ि. से सुना है वह "कुज़्ज़िबू" पढ़ती थीं। यानी उनके मानने वालों ने उन्हें झुठलाया। पस एक क़िराअत तो तशदीद के साथ है, दूसरी तख़्फ़ीफ़ के साथ है।

फिर इसकी तफ़सीर में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से तो वह नक़ल किया गया है जो ऊपर गुज़र चुका। इब्ने मसऊद रज़ि. से नक़ल है कि आपने यह आयत इसी तरह पढ़कर फ़रमाया यही वह है जो तू बुरा जानता है। यह रिवायत उस रिवायत के ख़िलाफ़ है जिसे इन दोनों बुज़ुर्गों से औरों ने रिवायत की है। इसमें है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया जब रसूल नाउम्मीद हो गये कि उनकी क़ौम उनकी बात मानेगी, और क़ौम ने यह समझ लिया कि नबियों ने उनसे झूठ कहा, उसी वक़्त अल्लाह की मदद आ पहुँची। और जिसे ख़ुदा ने चाहा निजात बख़्शी। इसी तरह की तफ़सीर औरों से भी मन्क़ूल है।

एक क़ुरैशी नौजवान ने हज़रत सईद बिन जुबैर रह. से कहा कि हज़रत हमें बतलाईये इस लफ़्ज़ को क्या पढ़ें? मुझसे तो इस लफ़्ज़ की क़िराअत की वजह से मुम्किन है कि इस सूरत का पढ़ना ही छूट जाये। आपने फ़रमाया- इसका मतलब यह है कि अम्बिया इससे मायूस हो गये कि उनकी क़ौम उनकी बात मानेगी और क़ौम वाले समझ बैठे कि नबियों ने ग़लत कहा है। यह सुनकर हज़रत ज़ह्हाक बिन मुज़ाहिम बहुत ही ख़ुश हुए और फ़रमाया कि आज जैसा जवाब किसी आ़लिम का मैंने नहीं सुना। अगर मैं यहाँ से यमन पहुँचकर भी ऐसे जवाब को सुनता तो उसे भी बहुत आसान जानता (यानी इतना लम्बा सफ़र भी अगर करना पड़ता तो ऐसी क़ीमती बात हासिल हो जाने के लिये वह भी कुछ न था)।

मुस्लिम बिन यसार रह. भी आपका यह जवाब सुनकर उठे और आपसे मुआ़नक़ा किया (यानी गले मिले) और कहा ख़ुदा तआ़ला आपकी परेशानियों को इसी तरह दूर कर दे जिस तरह आपने हमारी परेशानी दूर फ़रमाई। बहुत से मुफ़स्सिरीन ने भी यही मतलब बयान किया है। बल्कि मुजाहिद रह. की तो क़िराअत 'ज़ाल' के ज़बर से है यानी 'कज़्ज़बू'। हाँ बाज़ मुफ़स्सिरीन "व ज़न्नू" का फ़ाअ़िल (यानी गुमान करने वाले) मोमिनों को बतलाते हैं और बाज़ काफ़िरों को, यानी काफ़िरों ने या यह कि बाज़ मोमिनों ने यह गुमान किया कि रसूलों से जो मदद का वादा था उसमें वे झूठे साबित हुए।

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. तो फ़रमाते हैं कि रसूल नाउम्मीद हो गये, यानी अपनी क़ौम के ईमान से, और अल्लाह की मदद में देर देखकर उनकी क़ौम गुमान करने लगी कि उनसे झूठा वादा किया गया था। पस ये दोनों रिवायतें तो उन दोनों बुज़ुर्ग सहाबियों से मन्क़ूल हैं, और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा इसका साफ़ इनकार करती हैं। इब्ने जरीर रह. भी हज़रत आयशा के क़ौल की तरफ़दारी करते और दूसरे क़ौल की तरदीद करते हैं और उसे नापसन्द करके रद्द कर देते हैं। वल्लाहु आलम।

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ○ ع	उन (नबियों और पहली उम्मतों) के क़िस्से में समझदार लोगों के लिए (बड़ी) इबरत है। यह क़ुरआन (जिसमें क़िस्से हैं) कोई गढ़ी हुई बात तो है नहीं (कि इससे इबरत न होती) बल्कि इससे पहले जो (आसमानी) किताबें हो चुकी हैं यह उनकी तस्दीक़ करने वाला है और हर ज़रूरी बात का ख़ुलासा करने वाला है, और ईमान वालों के लिए हिदायत का ज़रिया और रहमत है। (111)

सबक़ लेने वाले वाक़िआत

नबियों के वाक़िआत, मुसलमानों की निजात, काफ़िरों की हलाकत के क़िस्से अक़्लमन्दों के लिये बड़ी इबरत व नसीहत वाले हैं। यह क़ुरआन बनावटी नहीं बल्कि आसमानी किताबों की सच्चाई की दलील है, उनमें जो हक़ीक़ी (वास्तविक) बातें ख़ुदा की हैं उनकी तस्दीक़ करता है, और जो बदल दिया गया या कमी-बेशी करके हेर-फेर कर दिया गया उसे छाँट देता है। जो बातें उनकी बाक़ी रखने की थीं उन्हें और जो अहकाम मन्सूख़ हो गये उन्हें बयान करता है। हर एक हलाल व हराम, अच्छे और बुरे को खोल-खोलकर बयान करता है। ताआ़त (नेकियों और फ़राईज़), वाजिबात, मुस्तहब्बात, हराम की हुई और मक्रूह वग़ैरह चीज़ों का बयान फ़रमाता है। मुख़्तसर और तफ़सीली ख़बरें देता है। ख़ुदा तआ़ला शानुहू की सिफ़ात बयान करता है और बन्दों ने जो ग़लतियाँ अपने ख़ालिक़ के बारे में की हैं उनकी इस्लाह करता है। मख़्लूक़ को इससे रोकता है कि वह ख़ुदा की कोई सिफ़त उसकी मख़्लूक़ में साबित करें। पस यह क़ुरआन मोमिनों के लिये हिदायत व रहमत है, उनके दिल गुमराही से हिदायत, झूठ से सच और बुराई से भलाई की राह पाते हैं और रब्बुल-आ़लमीन से दुनिया व आख़िरत की भलाई हासिल कर लेते हैं।

हमारी भी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला हमें भी दुनिया व आख़िरत में ऐसे ही मोमिनों का साथ नसीब फ़रमाये और क़ियामत के दिन जबकि बहुत से चेहरे सफ़ेद होंगे और बहुत से मुँह काले हो जायेंगे, हमें मोमिनों के साथ नूरानी चेहरों में शामिल रखे। आमीन।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः यूसुफ़ की तफ़सीर ख़त्म हो गयी।

अल्लाह का शुक्र है वही तारीफ़ों के लायक़ है और उसी से हम मदद चाहते हैं।

Maktab E Ashraf

सूरः रअ़द

सूरः रअ़द मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 43 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِىٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَO	अलिफ़्-लाम्-मीम्-रा। यह (जो आप सुन रहे हैं) आयतें हैं (एक बड़ी) किताब (यानी क़ुरआन) की, और जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ़ से नाज़िल किया जाता है बिल्कुल सच है, और लेकिन बहुत-से आदमी ईमान नहीं लाते। (1)

सच्ची किताब

सूरतों के शुरू में जो 'हुरूफ़े मुक़त्तआ़त' आते हैं उनकी पूरी तशरीह (तफ़सील व व्याख्या) सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में हम लिख आये हैं। और यह भी कह आये हैं कि जिस सूरत के शुरू में ये हरूफ़ आयें वहाँ आ़म तौर पर यही बयान होता है कि क़ुरआन कलामे ख़ुदा है, इसमें कोई शक नहीं। चुनाँचे यहाँ भी इन हुरूफ़ के बाद फ़रमाया- यह किताब की यानी क़ुरआन की आयतें हैं। बाज़ ने कहा मुराद किताब से तौरात व इन्जील है। लेकिन यह ठीक नहीं। फिर इसी के साथ आगे का मज़मून जोड़ते हुए इस किताब की और सिफ़तें बयान फ़रमायीं कि यह पूरी की पूरी हक़ है, और ख़ुदा की तरफ़ से तुझ पर उतारी गयी है।

फिर फ़रमाया कि बावजूद हक़ होने के फिर भी अक्सर लोग ईमान से मेहरूम हैं। जैसे पहले गुज़रा है कि अगरचे तू तमन्ना करे लेकिन अक्सर लोग ईमान क़बूल करने वाले नहीं। यानी इसका हक़ होना स्पष्ट है लेकिन उनकी ज़िद, हठधर्मी और सरकशी उन्हें ईमान की तरफ़ मुतवज्जह (आकर्षित) न होने देगी।

اَللّٰهُ الَّذِىْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ	अल्लाह ऐसा (क़ादिर है) कि उसने आसमानों को बिना सुतून के ऊँचा खड़ा कर दिया, चुनाँचे तुम इन (आसमानों) को (इसी तरह) देख रहे हो, फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ, और सूरज व चाँद को काम में लगा दिया, हर एक मुक़र्ररा वक़्त पर चलता रहता है। वही (अल्लाह) हर काम की तदबीर करता है (और) दलीलों को

Maktab E Ashraf

साफ़-साफ़ बयान करता है ताकि तुम अपने रब के पास जाने का यक़ीन कर लो। (2)	لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ○

अल्लाह की निशानियों में से आसमान को देखो

अल्लाह की कमाले क़ुदरत और उसकी बादशाहत को देखो कि बग़ैर सुतूनों के आसमान को उसने बुलन्द व बाला और क़ायम कर रखा है। ज़मीन से आसमान को ख़ुदा ने कैसा ऊँचा किया, और सिर्फ़ अपने हुक्म से उसे क़ायम किया, जिसकी इन्तिहा को कोई नहीं पाता। दुनियावी आसमान सारी ज़मीन को और जो इसके इर्द-गिर्द है पानी हवा वग़ैरह सबको घेरे हुए है, और हर तरफ़ से बराबर ऊँचा (उठा हुआ) है। ज़मीन से पाँच सौ साल की राह (दूरी) पर है। हर जगह से इतना ही ऊँचा है, फिर उसकी अपनी मोटाई और दल भी पाँच सौ साल के फ़ासले का है। फिर दूसरा आसमान इस आसमान को भी घेरे हुए है और पहले से दूसरे तक का फ़ासला वही पाँच सौ साल का है। इसी तरह तीसरा, फिर चौथा, फिर पाँचवाँ, फिर छठा, फिर सातवाँ। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ..... الخ.

यानी अल्लाह ने सात आसमान पैदा किये हैं और इसी के मिस्ल ज़मीन।

हदीस शरीफ़ में है कि सातों आसमान और उनमें और उनके बीच में जो कुछ है वह कुर्सी के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे कि चटियल मैदान में कोई हल्क़ा (छल्ला) हो। और कुर्सी अ़र्श के मुक़ाबले में भी ऐसी ही है। अ़र्श का अन्दाज़ा अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को मालूम नहीं। बाज़ बुज़ुर्गों का बयान है कि अ़र्श से ज़मीन तक का फ़ासला पचास हज़ार साल का है। अ़र्श सुर्ख़ याक़ूत (मोती) का है। बाज़ मुफ़स्सिर कहते हैं कि आसमान के सुतून तो हैं लेकिन देखे नहीं जाते। मगर अयास बिन मुआ़विया फ़रमाते हैं- आसमान ज़मीन पर एक गुंबद की तरह है, यानी बग़ैर सुतून के है। क़ुरआन के अन्दाज़े बयान के लायक़ भी यही बात है। और आयत:

وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ....

और वही आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है........। (सूरः हज आयत 65)

से भी यही ज़ाहिर है। पस मतलब यह होगा कि आसमान बिना सुतून के इस क़द्र बुलन्द है और तुम ख़ुद देख रहे हो, यह है अल्लाह की कामिल क़ुदरत का कमाल। उमैया बिन अबुस्सलत के शे'रों में है, जिसके अश्आ़र के बारे में हदीस में है कि उसके अश्आ़र ईमान लाये हैं और उसका दिल कुफ़्र करता है। और यह भी रिवायत है कि ये अश्आ़र हज़रत ज़ैद बिन उमर बिन नुफ़ैल रज़ि. के हैं। जिनमें है:

وَاَنْتَ الَّذِىْ مِنْ فَضْلِ مَنٍّ وَّرَحْمَةٍ	بَعَثْتَ اِلٰى مُوْسٰى رَسُوْلًا مُنَادِيًا
فَقُلْتَ لَهٗ يَا اذْهَبْ وَهَارُوْنَ فَادْعُوْا	اِلَى اللّٰهِ فِرْعَوْنَ الَّذِىْ كَانَ طَاغِيًا
وَقُوْلَا لَهٗ هَلْ اَنْتَ سَوَّيْتَ هٰذِهٖ	بَلَا عَمَدٍ اَوْفَوْقَ ذٰلِكَ بَانِيًا
وَقُوْلَا لَهٗ هَلْ اَنْتَ سَوَّيْتَ وَسْطَهَا	مُنِيْرًا اِذَا جَنَّكَ الَّيْلُ هَادِيًا

وَقُوْلَا لَهُ مَنْ اَنْبَتَ الْحَبَّ فِي الثَّرٰى فَيُصْبِحُ مِنْهُ الْعُشْبُ يَفْتَرُّ رَابِيًا
وَيُخْرِجُ مِنْهُ حَبُّهُ فِي رُؤُسِهٖ فَفِي ذَاكَ آيَاتٌ لِمَنْ كَانَ دَاعِيًا

Maktab E Ashraf

यानी तू वह खुदा है जिसने अपने फ़ज़्ल व करम से अपने नबी मूसा को मय हारून के फ़िरऔन की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा, और उनसे फ़रमा दिया कि उस सरकश (नाफ़रमान) को क़ायल करने के लिये उससे कहें कि इस बुलन्द व बाला बेसुतून आसमान को क्या तूने बनाया है? और इसमें सूरज, चाँद, सितारे तूने पैदा किये हैं? और मिट्टी से दानों को उगाने वाला फिर उन दरख़्तों में बालें पैदा करके उनमें दाने पकाने वाला क्या तू है? क्या क़ुदरत की ये ज़बरदस्त निशानियाँ एक इन्साफ़-पसन्द इनसान के लिये खुदा की हस्ती और वजूद की दलील नहीं हैं?

"फिर खुदा तआ़ला अ़र्श पर क़ायम हुआ"।

इसकी तफ़सीर सूरः आराफ़ में गुज़र चुकी है, और यह भी बयान कर दिया गया है कि जिस तरह है उसी तरह छोड़ दी जाये। किसी चीज़ से या किसी हैयत व शक्ल से अल्लाह की ज़ात और उसके अफ़आ़ल को तशबीह नहीं दी जा सकती। वह इन सब बातों से कहीं बरतर व बुलन्द है। सूरज व चाँद उसके हुक्म के मुताबिक़ गर्दिश में हैं, और मुक़र्ररा वक़्त यानी क़ियामत तक बराबर इसी तरह लगे रहेंगे। जैसे फ़रमान है कि सूरज अपनी जगह बराबर चल रहा है, उसकी जगह से मुराद अ़र्श के नीचे है जो ज़मीन के तले से दूसरी तरफ़ से मिला हुआ है। यह और तमाम सितारे यहाँ तक पहुँचकर अ़र्श से और दूर हो जाते हैं। क्योंकि सही बात यही है जिस पर बहुत सी दलीलें हैं कि वह क़ुब्बा है (यानी गोल गुंबद की तरह है)। आ़लम से मिले हुए बाक़ी आसमानों की तरह वह घेरे हुए नहीं, इसलिये कि उसके पाये हैं और उसके उठाने वाले हैं। और यह बात घूमे हुए आसमान में तसव्वुर और ख़्याल में नहीं आ सकती, जो भी ग़ौर करेगा इसे सच मानेगा, क़ुरआन व हदीस में ग़ौर करने वाला इसी नतीजे पर पहुँचेगा। अल्लाह का शुक्र है।

सिर्फ़ सूरज व चाँद का ही ज़िक्र यहाँ इसलिये है कि सातों सय्यारों में बड़े और रोशन यही दो हैं। पस जबकि ये दोनों अल्लाह के हुक्म के ताबे हैं तो दूसरे तो इनसे कहीं ज़्यादा ताबे और हुक्म के अधीन होंगे। जैसे कि सूरज चाँद को सज्दा न करो से मुराद दूसरे सितारों को भी सज्दा न करना है। फिर एक दूसरी आयत में इसकी वज़ाहत और तफ़सील भी मौजूद है। फ़रमायाः

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرَاتٍ ۢ بِاَمْرِهٖ..... الخ.

यानी सूरज चाँद और सितारे उसके हुक्म से ताबे हैं। वही हर चीज़ को बनाने और पैदा करने वाला है, वही बरकतों वाला है, वही रब्बुल-आ़लमीन (यानी तमाम जहानों को पालने वाला) है। वह आयतों (निशानियों) को, अपने एक और बेमिस्ल होने की दलीलों को तफ़सील से बयान फ़रमा रहा है, कि तुम उसकी तौहीद (एक होने और अपने शरीक से पाक होने) के क़ायल हो जाओ, और इसे मान लो कि वह तुम्हें फ़ना करके फिर ज़िन्दा कर देगा।

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ۭ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ	और वह ऐसा है कि उसने ज़मीन को फैलाया और उस (ज़मीन) में पहाड़ और नहरें पैदा कीं, और उसमें हर क़िस्म के फूलों से

Maktaba Ashraf

दो-दो क़िस्म के पैदा किए, रात (की अँधेरी) से दिन (की रोशनी) को छुपा देता है। इन (ज़िक्र हुए) उमूर में सोचने वालों के (समझने के) वास्ते (तौहीद पर) दलीलें (मौजूद) हैं। (3) और ज़मीन में पास-पास (और फिर) मुख़्तलिफ़ टुकड़े हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेतियाँ हैं और खजूरें हैं, जिनमें बाज़े तो ऐसे हैं कि एक तने से ऊपर जाकर दो तने हो जाते हैं और बाज़े में दो तने नहीं होते, सबको एक ही तरह का पानी दिया जाता है, और हम एक को दूसरे पर फलों में फ़ौक़ियत "यानी बरतरी" देते हैं। इन (ज़िक्र हुए) उमूर में (भी) समझदारों के वास्ते (तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं। (4)	جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ وَفِى الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَاۗءٍ وَّاحِدٍ ۣ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ○

कुछ और दलीलें

ऊपर की आयत में ऊपर के आ़लम (यानी आसमानी दुनिया) का बयान था, यहाँ ज़मीनी कायनात का ज़िक्र हो रहा है। ज़मीन को लम्बाई-चौड़ाई में फैलाकर ख़ुदा ही ने बिछाया है, इसमें मज़बूत पहाड़ भी उसी के गाड़े हुए हैं, इसमें दरियाओं और चश्मों को भी उसी ने जारी किया, ताकि विभिन्न शक्ल व सूरत विभिन्न रंग, विभिन्न ज़ायक़ों के फल फूल के दरख़्त उनसे सैराब हों, जोड़े-जोड़े मेवे उसने पैदा किये, खट्टे मीठे वग़ैरह। रात-दिन बराबर एक दूसरे के पीछे आते-जाते रहते हैं, एक का आना दूसरे का जाना।

पस मकान, मकान में रहने वालों और ज़माने सब में तसर्रुफ़ (क़ब्ज़ा व क़ुदरत) उसी क़ादिरे मुत़्लक़ का है। ख़ुदा की इन निशानियों को, इन हिक्मतों को, इन दलाईल को जो ग़ौर से देखे वह हिदायत पा सकता है। ज़मीन के टुकड़े मिले-जुले हुए हैं, फिर क़ुदरत को देखिये कि एक टुकड़े से तो पैदावार हो और दूसरे से कुछ न हो, एक की मिट्टी सुर्ख़ दूसरे की सफ़ेद। यह पीली, यह स्याह, यह पथरीली, यह नर्म, यह मीठी यह नमकीली। एक रेतीली एक साफ़। ग़र्ज़ यह भी ख़ालिक़ की क़ुदरत की निशानी है और बतलाती है कि हर चीज़ का बनाने और पैदा करने वाला, मुख़्तार, मालिकुल-मुल्क ला-शरीक एक वही ख़ुदा है। न उसके सिवा कोई माबूद न पालने वाला।

'सिनवान' कहते हैं एक पेड़ को जो कई तनों और शाख़ों वाला हो, जैसे अनार और अन्जीर, और बाज़ खजूर की क़िस्में। 'ग़ैर-सिनवान' हो, इस तरह न हो बल्कि एक तना हो, जैसे और दरख़्त होते हैं। इसी से इनसान के चचा को 'सिन्वुल-अबि' कहते हैं। हदीस में यह आया है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत उमर से फ़रमाया- क्या तुम्हें मालूम नहीं कि इनसान का चचा उसके बाप जैसा होता है। हज़रत बरा रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक जड़ यानी एक तने में कई एक शाख़दार खजूर के दरख़्त होते हैं। एक तने पर एक ही

होता है। यही 'सिनवान' और 'ग़ैर-सिनवान' है। यही क़ौल दूसरे उलेमा और बुज़ुर्गों का भी है। सबके लिये पानी एक ही है, यानी बारिश का, जिस पर ज़ायके और फल में कमी-बेशी में बेइन्तिहा फ़र्क़ है। कोई मीठा है, कोई खट्टा है। हदीस में भी यह तफ़सीर है, मुलाहिज़ा हो तिर्मिज़ी शरीफ़।

ग़र्ज़ कि क़िस्मों और जिन्सों की भिन्नता, शक्ल व सूरत का अलग-अलग होना, रंग का एक दूसरे से अलग होना, बू का विभिन्न होना, ज़ायके में फ़र्क़ होना, पत्तों की भिन्नता, तरोताज़गी का अलग-अलग होना। एक बहुत मीठा, एक सख़्त कड़वा, एक निहायत अच्छे ज़ायके वाला, एक बेहद बदमज़ा, रंग किसी का पीला, किसी का सुर्ख़, किसी का सफ़ेद, किसी का स्याह। इसी तरह ताज़गी और फल में भी इख़्तिलाफ़ (भिन्नता) हालाँकि ग़िज़ा के एतिबार से बराबर हैं। यह क़ुदरत के करिश्मे हैं। एक इन्साफ़-पसन्द शख़्स के लिये इबरतें (सबक़) हैं और हर चीज़ में अपनी कारीगरी दिखाने वाले और हर चीज़ पर पूरा इख़्तियार व हुकूमत रखने वाले ख़ुदा की क़ुदरत का बड़ा ज़बरदस्त पता देती है, कि जो वह चाहता है होता है। अ़क़्लमन्दों के लिये ये आयतें और ये निशानियाँ काफ़ी और बहुत हैं।

और (ऐ मुहम्मद!) अगर आपको ताज्जुब हो तो (वाक़ई) उनका यह क़ौल ताज्जुब के लायक़ है कि जब हम ख़ाक हो गए तो क्या हम फिर (क़ियामत के दिन) नए सिरे से पैदा होंगे। ये वे लोग हैं कि उन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया और ऐसे लोगों की गर्दनों में (दोज़ख़ में) तौक़ डाले जाएँगे, और ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं (और) वे उसमें हमेशा रहेंगे। (5)	وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ○

काफ़िरों की बेहूदा बातें

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि आप उनके झुठलाने पर कोई ताज्जुब न करें, ये हैं ही ऐसे। इतनी-इतनी निशानियाँ देखते हुए ख़ुदा की क़ुदरत को हमेशा अपनी आँखों से देखते हुए, इसे मानते हुए कि सबका ख़ालिक़ अल्लाह ही है, फिर क़ियामत के मुन्किर होते हैं। हालाँकि रोज़मर्रा यह देखते रहते हैं कि ख़ुद कुछ नहीं होता और ख़ुदा तआ़ला सब कुछ कर देता है। हर आ़क़िल जान सकता है कि ज़मीन व आसमान की पैदाईश इनसान की पैदाईश से बहुत बड़ी है, और दोबारा पैदा करना पहली बार के पैदा करने के मुक़ाबले में बहुत आसान है। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

यानी जिसने आसमान व ज़मीन बग़ैर थके पैदा कर दिया क्या वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक है। बल्कि हर चीज़ उसकी क़ुदरत में है।

पस यहाँ फ़रमाता है कि दर असल ये काफ़िर हैं, इनकी गर्दनों में क़ियामत के दिन तौक़ होंगे, और ये

जहन्नमी हैं, जो हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۭ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ○	और ये लोग आ़फ़ियत से पहले आपसे मुसीबत (के नाज़िल होने) का तक़ाज़ा करते हैं, हालाँकि इनसे पहले (और काफ़िरों पर सज़ाओं के) वाक़िआ़त गुज़र चुके हैं। और यह बात भी यक़ीनी है कि आपका रब लोगों की ख़ताएँ बावजूद उनकी बेजा हरकतों के माफ़ कर देता है, और यह बात भी यक़ीनी है कि आपका रब सख़्त सज़ा देता है। (6)

ये जल्दबाज़ी न करें

ये क़ियामत के इनकारी कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हम पर अ़ज़ाबे ख़ुदा जल्द ही क्यों नहीं लाते? कहते थे कि ऐ वह शख़्स जो दावा करता है कि तुझ पर कलामे ख़ुदा उतरता है, हमारे नज़दीक तो तू (अल्लाह की पनाह) पागल है। अगर मान लो तू सच्चा है तो अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाता? इसके जवाब में उनसे कहा गया कि फ़रिश्ते हक़ और फ़ैसले के साथ ही आया करते हैं। जब वह वक़्त आयेगा उस वक़्त ईमान लाने या तौबा करने या नेक अ़मल करने की फ़ुरसत व मोहलत नहीं मिलेगी। इसी तरह एक और आयत में है कि ये आपसे अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं।

एक और आयत में है कि बेईमान उसकी (यानी क़ियामत की) जल्दी कर रहे हैं और ईमान वाले उससे ख़ौफ़ खा रहे हैं, और उसे सच्चा जान रहे हैं। इसी तरह एक और आयत में इरशाद है- वे कहते थे कि ख़ुदाया क़ियामत से पहले ही हमारा मामला निपटा ले। एक और आयत में है- कहते थे कि ख़ुदाया अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई और दर्दनाक अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा।

मतलब यह है कि अपने कुफ़्र व इनकार के सबब अल्लाह के अ़ज़ाब का आना मुहाल समझकर इस क़द्र निडर और बेख़ौफ़ हो गये थे कि अ़ज़ाब के उतरने की आरज़ू और तलब किया करते थे। यहाँ फ़रमाया कि उनसे पहले के ऐसे लोगों की मिसालें उनके सामने हैं कि किस तरह वे अ़ज़ाबे ख़ुदा में पकड़ लिये गये। यह तो ग़नीमत जानिये कि ख़ुदा तआ़ला का करम है कि गुनाह देखता है और फ़ौरन नहीं पकड़ता, वरना रू-ए-ज़मीन पर किसी को चलता-फिरता न छोड़ता। दिन रात ख़तायें देखता है और माफ़ फ़रमाता है। लेकिन इससे यह न समझ लिया जाये कि वह अ़ज़ाब पर क़ुदरत नहीं रखता, उसके अ़ज़ाब भी बड़े दुखदायी, निहायत सख़्त और बहुत दर्दनाक हैं। चुनाँचे अल्लाह का फ़रमान है:

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْرَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ..... الخ.

अगर ये तुझे झुठलायें तो तू कह दे कि तुम्हारा रब बहुत बड़ी रहमतों वाला है। लेकिन उसके आये हुए अ़ज़ाब गुनाहगारों पर से नहीं हटाये जा सकते।

एक और जगह फ़रमान है कि तेरा परवर्दिगार जल्द अ़ज़ाब करने वाला, बख़्शने वाला और मेहरबानी

Maktab E Ashraf

करने वाला है। एक और आयत में है:

نَبِّئْ عِبَادِىٓ اَنِّىٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ. وَاَنَّ عَذَابِىْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ.

मेरे बन्दों को ख़बर कर दीजिये कि मैं ग़फ़ूर (माफ़ करने वाला) रहीम (रहम करने वाला) हूँ। और मेरे अ़ज़ाब भी बड़े दर्दनाक हैं।

इस क़िस्म की और भी बहुत सी आयतें हैं, जिनमें उम्मीद व तमन्ना और ख़ौफ़ व डर का एक साथ बयान हुआ है। इब्ने अबी हातिम में है कि इस आयत के उतरने पर रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अगर ख़ुदा तआ़ला का माफ़ फ़रमाना और दरगुज़र करना न होता तो किसी की ज़िन्दगी का लुत्फ़ (सुकून व आराम) बाक़ी न रहता। और अगर उसका धमकाना डराना और सज़ा देना न होता तो हर शख़्स बेपरवाही से ज़ुल्म व ज़्यादती में मशग़ूल हो जाता। इब्ने अ़साकिर में है कि हसन बिन उस्मान अबू हस्सान रमादी रह. ने ख़्वाब में अल्लाह तआ़ला का दीदार किया, देखा कि नबी करीम सल्ल. ख़ुदा के साथ खड़े अपने एक उम्मती की शफ़ाअ़त कर रहे हैं, जिस पर फ़रमाने बारी जारी हुआ कि क्या तुझे इतना काफ़ी नहीं कि मैंने सूरः रअ़द में तुझ पर आयतः

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ.....

"और यह भी यक़ीनी है कि आपका रब लोगों की ख़तायें उनकी ग़लत हरकतों के बावजूद माफ़ कर देता है"।

नाज़िल फ़रमाई है। अबू हस्सान फ़रमाते हैं कि उसके बाद मेरी आँख खुल गयी।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ع	और (ये) काफ़िर लोग (यूँ भी) कहते हैं कि उनपर (वह ख़ास) मोजिज़ा (जो हम चाहते हैं) क्यों नाज़िल नहीं किया गया, (हालाँकि) आप सिर्फ़ डराने वाले (नबी) हैं, और हर क़ौम के लिए हादी होते चले आए हैं। (7)

ع

हर क़ौम में सही राह दिखाने वाले पैदा हुए

काफ़िर लोग एतिराज़ के तौर पर कहा करते थे कि जिस तरह पहले पैग़म्बर मोजिज़े लेकर आये यह पैग़म्बर क्यों नहीं लाये? मिसाल के तौर पर सफ़ा पहाड़ सोने का बना देते, या जैसे अ़रब के पहाड़ यहाँ से हट जाते और यहाँ सब्ज़ा (हरी-भरी ज़मीन) और नहरें हो जातीं। पस उनके जवाब में दूसरी जगह है कि हम ये मोजिज़े भी दिखा देते, मगर पहलों की तरह इनके झुठलाने पर फिर पहलों जैसे ही अ़ज़ाब इन पर आ जाते। तू इनकी बातों से परेशान व चिंतित न हो जाया कर, तेरे ज़िम्मे तो सिर्फ़ तब्लीग़ ही है। तू हादी (हिदायत देने वाला) नहीं, उनके न मानने से तेरी पकड़ न होगी, हिदायत ख़ुदा के हाथ में है, यह तेरे बस की बात नहीं। हर क़ौम के लिये रहबर और दाओ़ी (सही राह की तरफ़ दावत देने वाला) है। या यह मतलब है कि हादी (हिदायत देने वाला) मैं हूँ तू डराने वाला है। एक और आयत में है:

وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ.

Maktab E Ashraf

हर उम्मत में डराने वाला गुज़रा है।

और मुराद यहाँ हादी से पैग़म्बर है। पस पेशवा, रहबर हर गिरोह में होता है, जिसके इल्म व अ़मल से दूसरे राह पा सकें। इस उम्मत के पेशवा नबी करीम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल. हैं। एक निहायत ही मुन्कर बेबुनियाद रिवायत में है कि इस आयत के उतरने के वक़्त आपने अपने सीने पर हाथ रखकर फ़रमाया- मुन्ज़िर (डराने वाला) तो मैं हूँ और हज़रत अ़ली के कन्धे की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया, ऐ अ़ली तू हादी है। मेरे बाद हिदायत पाने वाले तुझसे हिदायत पायेंगे।

हज़रत अ़ली रज़ि. से नक़्ल किया गया है कि इस जगह हादी से मुराद क़ुरैश का एक शख़्स है। जुनैद कहते हैं कि वह हज़रत अ़ली ख़ुद हैं। इब्ने जरीर ने हज़रत अ़ली रज़ि. से हादी होने की रिवायत की है, लेकिन यह सख़्त मुन्कर है।

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۭ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ○ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ○	अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर रहती है जो कुछ किसी औ़रत को हमल "यानी गर्भ" रहता है, और जो कुछ रहम "यानी बच्चेदानी" में कमी व बेशी होती है। और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाज़ से (मुक़र्रर) है। (8) वह (तमाम) छुपी और ज़ाहिर (चीज़ों) का जानने वाला (है), सबसे बड़ा (और) आ़लीशान है। (9)

आ़लिमुल-ग़ैब

अल्लाह के इल्म से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं, तमाम जानदार मादायें हैवान हों या इनसान, उनके पेट के बच्चों का, उनके गर्भ का ख़ुदा को इल्म है। पेट में क्या है? इसे ख़ुदा बख़ूबी जानता है। यानी लड़का है या लड़की, अच्छा है या बुरा, नेक है या बद, उसकी उम्र भी है या नहीं। चुनाँचे इरशाद है:

هُوَاَعْلَمُ بِكُمْ اِذْاَنْتُمْ اَجِنَّةٌ.

वह बख़ूबी (अच्छी और पूरी तरह) जानता है जबकि तुम्हें ज़मीन से पैदा करता है, और जबकि तुम माँ के पेट में छुपे हुए होते हो। एक जगह फ़रमान है:

يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ. الخ.

वह तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट में पैदा करता है। एक के बाद दूसरी पैदाईश में तीन-तीन अंधेरियों में। एक जगह इरशाद है:

وَلَقَدْ خَلَقْنَاالْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ.... الخ.

हमने इनसान को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, नुत्फ़े को जमा हुआ ख़ून बनाया, जमे हुए ख़ून को गोश्त का लोथड़ा किया, लोथड़े को हड्डी की शक्ल में कर दिया। फिर हड्डी पर गोश्त चढ़ाया। फिर आख़िरी मरहले (चरण) में पैदा किया। पस अल्लाह बेहतरीन ख़ालिक़ और बरकत वाला है।

Maktaba Ashraf

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीस में रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि तुम में से हर एक की पैदाईश चालीस दिन तक उसकी माँ के पेट में जमा होती रहती है। फिर इतने ही दिनों तक वह गोश्त का लोथड़ा रहता है। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला ख़ालिके कुल एक फ़रिश्ते को भेजता है जिसे चार बातों के लिख लेने का हुक्म होता है। उसका रिज़्क़, उम्र, अ़मल और नेक व बद होना लिख लेता है।

एक और हदीस में है कि वह पूछता है- ख़ुदाया यह मर्द होगा या औ़रत? बदबख़्त होगा या नेकबख़्त? इसकी रोज़ी कितनी है? इसकी उम्र कितनी है? अल्लाह तआ़ला बतला देते हैं और वह लिख लेता है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि ग़ैब की पाँच कुन्जियाँ हैं जिन्हें सिवाय अल्लाह तआ़ला अ़लीम व ख़बीर के कोई नहीं जानता। कल की बात अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता, औ़रत के पेट में लड़का है या लड़की, कोई नहीं जानता, बारिश कब बरसेगी इसका इल्म भी किसी को नहीं, कोई शख़्स कहाँ मरेगा इसे भी उसके सिवा कोई नहीं जानता, क़ियामत कब होगी इसका इल्म भी अल्लाह ही को है।

पेट क्या घटाते हैं, इससे मुराद हमल (गर्भ) का गिरना है। और रहम (पेट) में क्या बढ़ रहा है, कैसे पूरा हो रहा है, यह भी अल्लाह को बख़ूबी इल्म रहता है। देख लो कोई औ़रत दस महीने लेती है, कोई नौ, किसी का हमल (गर्भ) घटता है, किसी का बढ़ता है, नौ माह से घटना, नौ माह से बढ़ जाना अल्लाह के इल्म में है।

हज़रत ज़ह्हाक का बयान है कि मैं दो साल अपनी माँ के पेट में रहा, जब पैदा हुआ तो मेरे अगले दो दाँत निकल आये थे। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का फ़रमान है कि हमल (गर्भ) की ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत दो साल की होती है। कमी से मुराद बाज़ के नज़दीक हमल के दिनों में ख़ून आना और ज़्यादती से मुराद नौ माह से ज़्यादा हमल का ठहरा रहना है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि नौ से पहले जब औ़रत ख़ून को देखे तो नौ से ज़्यादा हो जाते हैं। जैसे हैज़ (माहवारी) के दिनों के ख़ून के गिरने से बच्चा अच्छा हो जाता है, और न गिरे तो बच्चा पूरा और बड़ा होता है।

हज़रत मक्होल रह. फ़रमाते हैं कि बच्चा अपनी माँ के पेट में बिल्कुल बिना ग़म और खटके के और आराम से होता है। उसकी माँ के हैज़ (माहवारी) का ख़ून उसकी ग़िज़ा होता है। जो बिना किसी तलब के और आराम से उसे पहुँचता रहता है। यही वजह है कि माँ को उन दिनों हैज़ (माहवारी) नहीं आता। फिर जब बच्चा पैदा होता है, ज़मीन पर आते ही चिल्लाता है, इस अन्जान जगह से उसे घबराहट होती है। जब उसकी नाल कट जाती है तो अल्लाह तआ़ल उसकी रोज़ी माँ के सीने में पहुँचा देता है। और अब भी बिना तलब, बिना जुस्तजू, बिना रंज व ग़म, बेफ़िक्री के साथ उसे रोज़ी मिलती रहती है। फिर ज़रा बड़ा होता है, अपने हाथों खाने पीने लगता है। लेकिन बालिग़ होते ही रोज़ी के लिये हाय-हाय करने लगता है। मौत और क़त्ल तक से रोज़ी हासिल होने की संभावना हो तो कोई संकोच नहीं करता। अफ़सोस ऐ इनसान! तुझ पर हैरत है, जिसने तुझे तेरी माँ के पेट में रोज़ी दी, जिसने तुझे तेरी माँ की गोद में रोज़ी दी, जिसने तुझे बच्चे से बालिग़ बनाने तक रोज़ी दी, अब तू बालिग़ और अ़क़्लमन्द होकर यह कहने लगा कि हाय कहाँ से खाऊँगा। मौत हो या क़त्ल हो। फिर आपने यही आयत पढ़ी। हर चीज़ उसके पास अन्दाज़े से है। रिज़्क़, मौत सब मुक़र्रर शुदा है।

हुज़ूर सल्ल. की एक बेटी साहिबा ने आपके पास आदमी भेजा कि मेरा बच्चा आख़िरी हालत में है, अगर आप तशरीफ़ लायें तो मुनासिब और बेहतर हो। आपने फ़रमाया जाओ उनसे कह दो कि जो अल्लाह ले ले वह उसी का है, जो दिये रखे वह भी उसी का है। हर चीज़ का सही अन्दाज़ा उसके पास है। उनसे

Maktab E Ashraf

कह दो कि सब्र करें और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रखें। ख़ुदा तआ़ला हर उस चीज़ को भी जानता है जो बन्दों से छुपी है और उसे भी जो बन्दों को भी मालूम है। उससे कुछ भी छुपा नहीं, वह सबसे बड़ा, वह हर एक से बुलन्द है। हर एक चीज़ उसके इल्म में है। सारी मख़्लूक़ उसके सामने आ़जिज़ है। हर चीज़ की गर्दनें इताअ़त के साथ उसके सामने झुकी हुई हैं। तमाम बन्दे उसके सामने आ़जिज़ लाचार और बिल्कुल बेबस हैं।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝

तुममें से जो शख़्स कोई बात चुपके से कहे और जो पुकारकर कहे, और जो शख़्स रात में कहे और जो दिन में चले-फिरे, ये सब (ख़ुदा के इल्म में) बराबर हैं। (10) हर शख़्स (की हिफ़ाज़त) के लिए कुछ फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं जिनकी बदली होती रहती है, कुछ उसके आगे और कुछ उसके पीछे कि वे अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। वाक़ई अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम की (अच्छी) हालत में बदलाव नहीं करता जब तक कि वे लोग ख़ुद अपनी (सलाहियत की) हालत को नहीं बदल देते। और जब अल्लाह किसी क़ौम पर मुसीबत डालना तजवीज़ कर लेता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत ही नहीं, और कोई उसके (यानी ख़ुदा के) सिवा उनका मददगार नहीं रहता। (11)

अल्लाह सब कुछ जानता है

अल्लाह तआ़ला का इल्म मख़्लूक़ को घेरे हुए है, कोई चीज़ उसके इल्म से बाहर नहीं। धीमी और बुलन्द हर आवाज़ वह सुनता है, छुपाओ या ज़ाहिर करो उससे कुछ छुपा नहीं। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. फ़रमाती हैं, वह ख़ुदा पाक है जिसकी सुनने की क़ुव्वत ने तमाम आवाज़ों को घेरा हुआ है। क़सम ख़ुदा की अपने शौहर की शिकायत लेकर आने वाली औ़रत ने रसूलुल्लाह सल्ल. से इस तरह काना-फूसी की कि मैं पास ही घर में बैठी हुई थी, लेकिन मैं भी पूरी तरह न सुन सकी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ये आयतें:

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِىْ.....الخ.

(अट्ठाईसवें पारे की शुरू की आयतें) उतारीं। यानी उस औ़रत की यह तमाम काना-फूसी अल्लाह तआ़ला सुन रहा था। वह हर चीज़ का सुनने वाला और हर चीज़ को देखने वाला है। जो अपने घर के तहख़ाने में रातों के अंधेरे में छुपा हुआ हो वह, और जो दिन के वक़्त ख़ुल्लम-ख़ुल्ला आबाद रास्तों में चला जा रहा हो वह, अल्लाह के इल्म में ये दोनों बराबर हैं। जैसे कि आयत:

Maktab E Ashraf

اَلَاحِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ.... الخ.

में फ़रमाया है। और आयतः

مَاتَكُوْنُ فِىْ شَأْنٍ.....

में इरशाद हुआ है कि तुम्हारे किसी काम के वक़्त हम इधर-उधर नहीं होते। कोई ज़र्रा हमारे इल्म से ख़ारिज नहीं। ख़ुदा के फ़रिश्ते बतौर निगहबान और चौकीदार के बन्दों के इर्द-गिर्द मुक़र्रर हैं, जो उन्हें आफ़तों और तकलीफ़ों से बचाते रहते हैं। जैसे कि आमाल पर निगहबान (निगरानी करने वाले) फ़रिश्तों की जमाअ़त है जो बारी-बारी लगातार आते जाते रहते हैं। रात के अलग, दिन के अलग। और जैसे कि दो फ़रिश्ते इनसान के दायें-बायें आमाल लिखने पर मुक़र्रर हैं। दाहिने वाला नेकियाँ लिखता है, बायीं तरफ़ वाला बदियाँ और गुनाह लिखता है। इसी तरह दो फ़रिश्ते उसके आगे पीछे हैं, जो उसकी हिफ़ाज़त व सुरक्षा करते रहते हैं। पस हर इनसान हर वक़्त चार फ़रिश्तों में रहता है- दो आमाल के लिखने वाले दायें बायें, दो हिफ़ाज़त करने वाले आगे पीछे। फिर रात के अलग, दिन के अलग। चुनाँचे हदीस में है कि तुममें फ़रिश्ते एक के पीछे एक आते जाते रहते हैं। रात के और दिन के। उनकी आपसी मुलाक़ात सुबह और अ़सर की नमाज़ में होती है। रात गुज़ारने वाले आसमान पर चढ़ जाते हैं, बावजूद इल्म के अल्लाह तबारक व तआ़ला उनसे पूछता है कि तुमने मेरे बन्दों को किस हालत में छोड़ा? वे जवाब देते हैं कि हम गये तो उन्हें नमाज़ में पाया, और आये तो नमाज़ में छोड़कर आये।

एक और हदीस में है कि तुम्हारे साथ वे हैं जो सिवाय पाख़ाने और सोहबत (हमबिस्तरी) के वक़्त के तुमसे अलग नहीं होते, पस तुम्हें उनका लिहाज़, उनकी शर्म, उनका इकराम और उनकी इ़ज़्ज़त करनी चाहिये। जब ख़ुदा बन्दे को कोई नुक़सान पहुँचाना चाहता है, बक़ौल इब्ने अ़ब्बास रज़ि. मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते उस काम को हो जाने देते हैं। मुजाहिद रह. कहते हैं कि हर बन्दे के साथ ख़ुदा की तरफ़ से मुवक्किल (ज़िम्मेदार) है जो उसे सोते जागते जिन्नात से, इनसानों से, ज़हरीले जानवरों और आफ़तों से बचाता रहता है, जो पहरे चौकी में रहते हैं। ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि बादशाह अल्लाह की निगहबानी में होता है अल्लाह के हुक्म से। यानी मुश्रिकों और ज़ाहिर चीज़ों से। वल्लाहु आलम

मुम्किन है इस क़ौल का मतलब यह हो कि जैसे बादशाहों और अमीरों की चौकीदारी सिपाही करते हैं, उसी तरह बन्दे के चौकीदार ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर शुदा होते हैं। एक ग़रीब रिवायत में तफ़सीर इब्ने जरीर में है कि हज़रत उस्मान रज़ि. हुज़ूर सल्ल. के पास आये और आपसे मालूम किया कि फ़रमाईये बन्दे के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं? आपने फ़रमाया- एक दायीं तरफ़ नेकियों का लिखने वाला जो बायीं तरफ़ वाले पर हाकिम और सरदार है। जब तू कोई नेकी करता है वह एक के बजाय दस लिख ली जाती हैं। जब तू कोई बुराई करे तो बायें वाला दायें वाले से उसके लिखने की इजाज़त तलब करता है, वह कहता है ज़रा ठहर जाओ, शायद यह तौबा व इस्तिग़फ़ार कर ले। तीन मर्तबा वह इजाज़त माँगता है तब भी अगर उसने तौबा न की तो नेकी का फ़रिश्ता उससे कहता है अब लिख ले। अल्लाह हमें इससे अलग कर दे, यह तो बड़ा बुरा साथी है। इसे ख़ुदा का लिहाज़ नहीं, यह उससे नहीं शर्माता। अल्लाह का फ़रमान है कि इनसान जो बात ज़बान पर लाता है उस पर निगहबान (निगरानी करने वाले) मुतैयन हैं, और फ़रिश्ते तेरे आगे पीछे हैं। अल्लाह का फ़रमान है:

Maktab-E-Ashraf

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ..... الخ.

हर शख़्स की हिफ़ाज़त के लिये कुछ फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जिनकी बदली होती रहती है। कुछ आगे और कुछ उसके पीछे, कि वे अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। (सूरः रअ़द आयत 11)

और एक फ़रिश्ता तेरे माथे के बाल थामे हुए है। जब तू ख़ुदा के लिये तवाज़ो और विनम्रता करता है, वह तुझे बुलन्द दर्जे वाला कर देता है। और जब तू अल्लाह के सामने सरकशी और तकब्बुर करता है वह तुझे पस्त और आ़जिज़ कर देता है। और दो फ़रिश्ते तेरे होंठों पर हैं, जो दुरूद तू मुझ पर पढ़ता है उसकी वे हिफ़ाज़त करते हैं। एक फ़रिश्ता तेरे मुँह पर खड़ा है कि कोई साँप वग़ैरह जैसी चीज़ तेरे हलक़ में न चली जाये, और दो फ़रिश्ते तेरी आँखों पर हैं, पस ये दस फ़रिश्ते हर इनसान के साथ हैं। फिर दिन के अ़लग हैं और रात के अलग। यूँ हर शख़्स के साथ बीस फ़रिश्ते अल्लाह की तरफ़ से मुतैयन हैं।

उधर बहकाने के लिये दिन भर तो इब्लीस (शैतान) की ड्यूटी रहती है, और रात को उसकी औलाद की। मुस्नद अहमद में है कि तुममें से हर एक के साथ जिन्न साथी है और फ़रिश्ता साथी है। लोगों ने कहा आपके साथ भी? फ़रमाया हाँ! लेकिन अल्लाह ने उस पर मेरी मदद की है, वह मुझे भलाई के सिवा कुछ नहीं कहता। (मुस्लिम)

ये फ़रिश्ते ख़ुदा के हुक्म से उसकी निगहबानी (हिफ़ाज़त व निगरानी) रखते हैं। हज़रत कअ़ब कहते हैं कि अगर इनसान के लिये हर नर्म व सख़्त खुल जाये तो अलबत्ता हर चीज़ उसे ख़ुद नज़र आने लगे। और अगर अल्लाह की तरफ़ से ये मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते मुक़र्रर न हों जो खाने पीने और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं तो ख़ुदा की क़सम तुम तो उचक लिये जाओ। अबू उमामा फ़रमाते हैं कि हर आदमी के साथ मुहाफ़िज़ फ़रिश्ता है जो तक़दीरी मामलात के अ़लावा और तमाम बलाओं को उससे दफ़ा करता रहता है।

एक शख़्स क़बीला मुराद का हज़रत अ़ली रज़ि. के पास आया, उन्हें नमाज़ में मशग़ूल देखा तो कहा कि क़बीला मुराद के आदमी आपके क़त्ल का इरादा कर चुके हैं। आप मुहाफ़िज़ (सुरक्षाकर्मी) मुक़र्रर कर लीजिए। आपने फ़रमाया हर शख़्स के साथ दो फ़रिश्ते उसके मुहाफ़िज़ मुक़र्रर हैं। बग़ैर तक़दीर के लिखे, किसी बुराई को इनसान तक पहुँचने नहीं देते। सुनो! मौत एक मज़बूत क़िला और उम्दा ढाल है। और कहा गया है कि अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के मामले से उसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं। जैसे हदीस शरीफ़ में है, लोगों ने हुज़ूर सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि यह झाड़-फूँक जो हम करते हैं क्या इससे ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई तक़दीर टल जाती है? आपने फ़रमाया वह ख़ुद अल्लाह की मुक़र्रर की हुई है।

इब्ने अबी हातिम में है कि बनी इस्राईल के नबियों में से एक की तरफ़ ख़ुदा की 'वही' हुई कि अपनी क़ौम से कह दे कि जिस बस्ती वाले और जिस घर वाले ख़ुदा की इताअ़त-गुज़ारी नहीं करते, ख़ुदा की नाफ़रमानी करने लगते हैं। अल्लाह तआ़ला उनकी राहत की चीज़ों को उनसे दूर करके उन्हें वे चीज़ें पहुँचाता है जो उन्हें तकलीफ़ देने वाली हों। इसकी तस्दीक़ क़ुरआन की आयतः

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ...... الخ.

वाक़ई अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम की (अच्छी हालत में) तब्दीली नहीं करता जब तक कि वे लोग ख़ुद अपनी (सलाहियत की) हालत को नहीं बदल देते। (सूरः रअ़द आयत 11)

से भी होती है। इमाम इब्ने अबी शैबा की किताब 'सिफ़तुल-अ़र्श' में यह रिवायत मरफ़ूअ़न भी आयी है। उमैर बिन अ़ब्दुल-मलिक कहते हैं कि कूफ़ा के मिम्बर पर हज़रत अ़ली रज़ि. ने हमें ख़ुतबा सुनाया

Maktab E Ashraf

जिसमें फ़रमाया कि अगर मैं चुप रहता तो हुज़ूर सल्ल. बात शुरू करते, और जब मैं पूछता तो आप मुझे जवाब देते। एक दिन आपने मुझसे फ़रमाया ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है- मुझे क़सम है अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की, अपनी बुलन्दी की जो अ़र्श पर है, कि जिस बस्ती के, जिस घर के लोग मेरी नाफ़रमानियों में मुब्तला हों फिर उन्हें छोड़कर मेरी फ़रमाँबरदारी में लग जायें तो मैं भी अपने अ़ज़ाब और दुख उनसे हटाकर अपनी रहमत और सुख उन्हें अ़ता फ़रमाता हूँ। यह हदीस ग़रीब है और इसकी सनद में एक रावी ग़ैर-मारूफ़ (ग़ैर-मशहूर) है।

هُوَ الَّذِىْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ۝	वह ऐसा है कि तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है, और वह बादलों को (भी) बुलन्द करता है जो (पानी से) भरे होते हैं। (12) और रअ़द (फ़रिश्ता) उसकी तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करता है और (दूसरे) फ़रिश्ते (भी) उसके ख़ौफ़ से, और वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिसपर चाहे उन्हें गिरा देता है। और वे लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि वह बड़ा ज़बरदस्त क़ुव्वत वाला है। (13)

हर चीज़ पर अल्लाह की हुक्मरानी है

बिजली भी उसी के हुक्म के ताबे है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने एक साईल (पूछने वाले) के जवाब में कहा था कि बर्क़ (आसमानी बिजली) पानी है, मुसाफ़िर उसे देखकर अपनी तकलीफ़ और मशक़्क़त के ख़ौफ़ से घबराता है, और मुक़ीम (वतन में होने वाला) बरकत व नफ़े की उम्मीद पर रिज़्क़ की ज़्यादती का लालच करता है। वही बोझल बादलों को पैदा करता है, जो पानी के बोझ की वजह से ज़मीन से क़रीब आ जाते हैं, पस उनमें बोझ पानी का होता है। फिर फ़रमाया कि कड़क भी उसकी तस्बीह व तारीफ़ करती है। एक और जगह है कि हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह (पाकी) व तारीफ़ बयान करती है।

एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला बादल पैदा करता है, जो अच्छी तरह बोलते और हंसते हैं। मुम्किन है बोलने से मुराद गरजना और हंसने से मुराद बिजली का ज़ाहिर होना हो। सअ़द इब्ने इब्राहीम कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला बारिश भेजता है, उससे अच्छी बोली और उससे अच्छी हंसी वाला कोई और नहीं। उसकी हंसी बिजली है और उसकी गुफ़्तगू गरज है। मुहम्मद बिन मुस्लिम कहते हैं- हमें यह बात मालूम हुई है कि बर्क़ (आसमानी बिजली) एक फ़रिश्ता है, जिसके चार मुँह हैं, एक इनसान जैसा, एक बैल जैसा, एक गिद्ध जैसा, एक शेर जैसा। वह जब दुम हिलाता है तो बिजली ज़ाहिर होती है। नबी करीम सल्ल. गरज कड़क सुनकर यह दुआ़ पढ़ते थेः

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ.

Maktab E Ashraf

ऐ अल्लाह! तू हमें अपने ग़ुस्से से हलाक न करना, और अपने अ़ज़ाब से तबाह न करना, और हमें अपनी आ़फ़ियत में रखना। (तिर्मिज़ी)

एक और रिवायत में यह दुआ़ हैः

سُبْحَانَ مَنْ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ.

पाक है वह ज़ात जिसकी तस्बीह व तारीफ़ गरज करती है।

हज़रत अ़ली गरज सुनकर यह पढ़ते थेः

سُبْحَانَ مَنْ سَبَّحْتَ لَهٗ.

पाक है वह जिसकी तस्बीह इसने बयान की।

इब्ने अबी ज़करिया फ़रमाते हैं कि जो शख़्स गरज कड़क सुनकर यह कहेः

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ.

"सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही"

उस पर बिजली नहीं गिरेगी। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. गरज कड़क की आवाज़ सुनकर बातें छोड़ देते और फ़रमातेः

سُبْحَانَ اللّٰهِ الَّذِىْ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ.

पाक है वह ज़ात गरज (यानी फ़रिश्ता) जिसकी तारीफ़ व तस्बीह बयान करता है और दूसरे फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ़ से उसकी तस्बीह व तारीफ़ बयान करते हैं।

और फ़रमाते हैं कि इस आयत में और इस आवाज़ में ज़मीन वालों के लिये बड़ी डरावे की चीज़ है। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुम्हारा रब फ़रमाता है कि अगर मेरे बन्दे मेरी पूरी इताअ़त करें तो मैं रातों को बारिशें बरसाता और दिन को सूरज चढ़ाता, और उन्हें गरज की आवाज़ तक न सुनाता। तबरानी में है कि आप फ़रमाते हैं- गरज सुनकर अल्लाह का ज़िक्र करो, क्योंकि ज़िक्र करने वालों पर कड़ाका (आसमानी बिजली) नहीं गिरता। वह कड़ाका भेजता है, जिसे चाहे उस पर अ़ज़ाब गिरता है, इसलिये आख़िर ज़माने में बहुत ज़्यादा बिजलियाँ गिरेंगी।

मुस्नद की हदीस में है कि क़ियामत के क़रीब बिजली बहुत ज़्यादा गिरेगी, यहाँ तक कि एक शख़्स अपनी क़ौम से आकर पूछेगा कि सुबह किस पर बिजली गिरी? वे कहेंगे फ़ुलाँ-फ़ुलाँ पर।

अबू यअ़ला रावी हैं कि नबी करीम सल्ल. ने एक शख़्स को एक घमंडी सरदार के बुलाने के लिये भेजा। उसने कहा कौन रसूल? और कौन अल्लाह? अल्लाह सोने का है या चाँदी का? या पीतल का? क़ासिद वापस आया और आपसे यह ज़िक्र किया कि देखिये मैंने तो आपसे पहले ही कहा था कि वह घमंडी और मग़रूर शख़्स है, आप उसे न बुलवायें। आपने फ़रमाया दोबारा जाओ और उससे यही कहो। उसने जाकर फिर बुलाया, लेकिन उस फ़िरऔ़न ने यही जवाब इस मर्तबा भी दिया। क़ासिद ने वापस आकर फिर हुज़ूर सल्ल. से अ़र्ज़ किया, आपने तीसरी मर्तबा भेजा, अबकी मर्तबा भी उसने पैग़ाम सुनकर वही जवाब देना शुरू किया, अचानक एक बादल उसके सर पर आ गया, कड़का हुआ, उसमें से बिजली गिरी और उसके सर से खोपड़ी उड़ा ले गयी। उसके बाद यह आयत उतरी।

एक रिवायत में है कि एक यहूदी हुज़ूर सल्ल. के पास आया और कहने लगा- ख़ुदा तआ़ला ताँबे का

Maktab E Ashraf

है या मोती का या याक़ूत का? अभी उसका सवाल पूरा न हुआ था कि बिजली गिरी और वह तबाह हो गया और यह आयत उतरी। क़तादा रह. कहते हैं- बयान किया गया है कि एक शख़्स ने क़ुरआन को झुठलाया और नबी पाक सल्ल. की नुबुव्वत से इनकार किया, उसी वक़्त आसमान से बिजली गिरी और वह हलाक हो गया और यह आयत उतरी।

इस आयत के शाने नुज़ूल में आ़मिर बिन फ़ुज़ैल और ज़ैद बिन रबीआ़ का क़िस्सा भी बयान होता है। अ़रब के ये दोनों सरदार मदीना में हुज़ूर सल्ल. के पास आये और कहा कि हम आपको मान लेंगे लेकिन इस शर्त पर कि आप हमें आधे का शरीक कर लें। आपने उन्हें इससे मायूस कर दिया तो आ़मिर मलऊन ने कहा वल्लाह मैं सारे अ़रब के मैदान को लश्करों से भर दूँगा। आपने फ़रमया तू झूठा है, ख़ुदा तुझे यह मौक़ा ही नहीं देगा। फिर ये दोनों मदीना में ठहरे रहे कि मौक़ा पाकर हुज़ूरे पाक को ग़फ़लत में क़त्ल कर दें। चुनाँचे एक दिन उन्हें मौक़ा मिल गया, एक ने तो आपको सामने से बातों में लगा लिया, दूसरा तलवार ताने पीछे से आ गया। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने आपको उनकी शरारत से बचा लिया। अब यहाँ से नाकाम व नामुराद होकर चले और अपने जले दिल के फफोले फोड़ने के लिये अ़रब को आपके ख़िलाफ़ उभारने लगे। इसी हालत में ज़ैद बिन रबीआ़ पर आसमान से बिजली गिरी और उसका काम तमाम हो गया, आ़मिर ताऊन की गिलटी से पकड़ा गया और उसी में बिलक-बिलक कर जान दी। इन्हीं जैसों के बारे में यह आयत उतरी कि अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहे बिजली गिराता है। ज़ैद बिन रबीआ़ के भाई लबीद ने अपने भाई के इस वाक़िए को अश्आ़र में ख़ूब बयान किया है।

एक और रिवायत में है कि आ़मिर ने कहा- अगर मैं मुसलमान हो जाऊँ तो मुझे क्या मिलेगा? आपने फ़रमाया जो सब मुसलमानों का हाल है वही तेरा हाल होगा। उसने कहा फिर तो मैं मुसलमान नहीं होता। अगर आपके बाद इस चीज़ (यानी ख़िलाफ़त) का वाली मैं बनूँ तो मैं दीन क़बूल करता हूँ। आपने फ़रमाया यह ख़िलाफ़त का मामला न तेरे लिये है न तेरी क़ौम के लिये, हाँ हमारा लश्कर तेरी मदद पर होगा। उसने कहा उसकी मुझे ज़रूरत नहीं। अब भी नजदी लश्कर मेरी पुश्त-पनाही पर है, मुझे तो कच्चे पक्के सब का मालिक कर दें तो मैं दीन इस्लाम क़बूल कर लूँ। आपने फ़रमाया नहीं। ये दोनों आपके पास से चले गये, आ़मिर कहने लगा वल्लाह मैं मदीने को हर तरफ़ से लश्करों से घेर लूँगा। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तेरा यह इरादा पूरा नहीं होने देगा। अब इन दोनों ने आपस में मश्विरा किया कि एक तो नबी पाक को बातों में लगाये, दूसरा तलवार से आपका काम तमाम कर दे। फिर उनमें से लड़ेगा कौन? ज़्यादा से ज़्यादा दियत देकर पीछा छूट जायेगा।

ये दोनों फिर आपके पास आये, आ़मिर ने कहा ज़रा आप उठकर यहाँ आईये, मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ। आप उठे, उसके साथ चले। एक दीवार के नीचे वह बातें करने लगा, हुज़ूर भी खड़े हुए सुन रहे थे, ज़ैद ने मौक़ा पाकर तलवार पर हाथ रखा, उसे मियान से बाहर निकालना चाहा लेकिन ख़ुदा तआ़ला ने उसका हाथ बेजान कर दिया, उससे तलवार निकली ही नहीं। जब काफ़ी देर लग गयी और अचानक हुज़ूर सल्ल. की नज़र पुश्त की तरफ़ पड़ी तो आपने यह हालत देखी और वहाँ से वापस चले आये। अब ये दोनों मदीना से चले गये, हर्रा-ए-अरक़म में आकर ठहरे, लेकिन सअ़द बिन मुआ़ज़ और उसैद बिन हुज़ैर वहाँ पहुँचे और उन्हें वहाँ से निकाला। अरक़म में पहुँचे ही थे कि ज़ैद पर बिजली गिरी, वह तो वहीं ढेर हो गया। आ़मिर यहाँ से भागा, लेकिन जुरैह में पहुँचा था कि उसे ताऊन (प्लैग) की गिलटी

Maktab E Ashraf

निकली। बनू सलूल क़बीले की एक औरत के यहाँ पर यह ठहरा। वह कभी-कभी अपनी गर्दन की गिलटी को दबाता और ताज्जुब से कहता यह तो ऐसी है जैसे ऊँट को होती है। अफ़सोस मैं सलूल की औरत के घर पर मरूँगा। क्या अच्छा होता कि मैं अपने घर होता। आख़िर उससे न रहा गया, घोड़ा मंगवाया, सवार हुआ और चल दिया। लेकिन रास्ते ही में हलाक हो गया। पस उनके बारे में ये आयतें (यानी सूरः रअ़द की आयत 8-11) नाज़िल हुयीं। इनमें नबी करीम सल्ल. की हिफ़ाज़त का ज़िक्र भी है। फिर अरबद पर बिजली गिरने का ज़िक्र है।

और फ़रमाया कि ये अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, उसकी बड़ाई और तौहीद को नहीं मानते, हालाँकि ख़ुदा तआ़ला अपने मुख़ालिफ़ों और मुन्किरों को सख़्त सज़ा और नाक़ाबिले बरदाश्त अ़ज़ाब देने वाला है। पस यह आयत इस आयत जैसी है:

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ.

यानी उन्होंने मक्र (फ़रेब और धोखा) किया और हमने भी (तदबीर की) इस तरह कि उनको मालूम न हो सका। अब तू ख़ुद देख ले कि उनके मक्र का अन्जाम क्या हुआ? हमने उन्हें और उनकी क़ौम को ग़ारत कर दिया। अल्लाह सख़्त पकड़ करने वाला है, बहुत क़वी है, पूरी क़ुव्वत व ताक़त वाला है।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَاۗءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ۭ وَمَا دُعَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝

सच्चा पुकारना उसी के लिए ख़ास है, और उसके (यानी ख़ुदा के) सिवा जिनको ये लोग पुकारते हैं वे इनकी दरख़्वास्त को इससे ज़्यादा मन्ज़ूर नहीं कर सकते जितना पानी उस शख़्स की दरख़्वास्त को मन्ज़ूर करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुँह तक (उड़कर) आ जाए, और वह उस (के मुँह) तक (अपने आप) आने वाला नहीं, और काफ़िरों का (उनसे) दरख़्वास्त करना बिल्कुल बेअसर है। (14)

सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला को पुकारो

हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. फ़रमाते हैं "लहू दअ़वतुल्-हक़्क़ि" से मुराद तौहीद है। मुहम्मद बिन मुन्कदिर कहते हैं कि इससे मुराद 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' है। फिर मुश्रिकों, काफ़िरों की मिसाल बयान हुई कि जैसे कोई शख़्स पानी की तरफ़ हाथ फैलाये हुए हो कि उसके मुँह में ख़ुद-ब-ख़ुद पहुँच जाये, तो ऐसा नहीं होगा। इसी तरह ये काफ़िर जिन्हें पुकारते हैं और जिनसे उम्मीदें रखते हैं, वे इनकी उम्मीदें पूरी नहीं कर सकते। और यह मतलब भी है कि जैसे कोई अपनी मुट्ठियों में पानी बन्द कर ले तो वह रहेगा नहीं। पस जैसे पानी मुट्ठी में रुकने वाला और जैसे पानी की तरफ़ हाथ फैलाने वाला पानी से मेहरूम है ऐसे ही ये मुश्रिक ख़ुदा के सिवा दूसरों को अगरचे पुकारें लेकिन रहेंगे मेहरूम ही। दीन व दुनिया का कोई फ़ायदा इन्हें न पहुँचेगा, इनकी पुकार बेफ़ायदा है।

Maktab E Ashraf

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ۝ السجدة

और अल्लाह तआ़ला ही के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं, ख़ुशी से और मजबूरी से, और उनके साये भी सुबह और शाम के वक़्तों में। (15) ● (सज्दा)

ख़ुदा की बड़ाई के सामने पूरी कायनात झुकी हुई है

अल्लाह तआ़ला अपनी बड़ाई व बादशाहत को बयान फ़रमा रहा है कि हर चीज़ उसके सामने पस्त है, और हर एक उसके सामने अपनी आ़जिज़ी का इज़हार करती है। मोमिन ख़ुशी से और काफ़िर ताक़त व ज़ोर के द्वारा उसके सामने झुके हुए हैं। उनकी परछाईं सुबह व शाम उसके सामने झुकी रहती है। 'आसाल' जमा (बहुवचन) है 'असील' की। एक और आयत में भी इसका बयान हुआ है। फ़रमायाः

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَاخَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ..... الخ.

यानी क्या उन्होंने नहीं देखा कि तमाम मख़्लूक़ ख़ुदा के सामने दायें-बायें झुक कर सज्दा करती है। और अपनी आ़जिज़ी का इज़हार करती है।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط قُلِ اللّٰهُ ط قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ط قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ لا اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ج اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ط قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ۝

आप कहिए कि आसमानों और ज़मीन का परवर्दिगार कौन है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह है। (फिर) आप (यह) कहिए कि क्या फिर भी तुमने उसके (यानी ख़ुदा के) सिवा (दूसरे) मददगार क़रार दे रखे हैं जो ख़ुद अपनी ज़ात के नफ़े-नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते। आप (यह भी) कहिए कि क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर हो सकता है? या कहीं अँधेरा और रोशनी बराबर हो सकती है? या उन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक क़रार दे रखे हैं कि उन्होंने भी (किसी चीज़ को) पैदा किया हो जैसे कि ख़ुदा पैदा करता है, फिर उनको पैदा करना एक-सा मालूम हुआ हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही वाहिद है, ग़ालिब है। (16)

ख़ुदा के इनकारी ना-समझ हैं

अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, ये मुश्रिक लोग भी इसी के क़ायल हैं कि ज़मीन,

आसमान का रब और इनका इन्तिज़ाम करने वाला अल्लाह ही है, बावजूद इसके अल्लाह के अ़लावा दूसरी चीज़ों की इबादत करते हैं, हालाँकि वे सब आ़जिज़ बन्दे हैं। इनके तो क्या ख़ुद अपने भी नफ़े नुक़सान का उन्हें कोई इख़्तियार नहीं। पस ये (यानी मुश्रिक लोग) और ख़ुदा के आ़बिद बराबर नहीं हो सकते। ये तो अंधेरियों में हैं और अल्लाह के बन्दे और उसको पूजने वाले नूर में हैं। जितना फ़र्क़ अंधे और बीना (देखने वाले) में है, जितना फ़र्क़ अंधेरों और रोशनी में है उतना ही फ़र्क़ इन दोनों में है।

फिर फ़रमाता है कि क्या उन मुश्रिकों के बनाये और गढ़े हुए ख़ुदा के शरीक उनके नज़दीक किसी चीज़ के ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाले) हैं? कि उनके लिये फ़र्क़ करना मुश्किल हो गया हो कि किस चीज़ का ख़ालिक़ अल्लाह है और किस चीज़ के ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) उनके माबूद हैं? हालाँकि ऐसा नहीं। ख़ुदा के जैसा, उसके बराबर और उसके मिस्ल कोई नहीं। वह वज़ीर से, शरीक से, औलाद से, बीवी से पाक है, और इन सबसे उसकी ज़ात बुलन्द व बाला है। यह तो मुश्रिक लोगों की पूरी बेवक़ूफ़ी है कि अपने झूठे माबूदों को ख़ुदा का पैदा किया हुआ और उसकी मिल्क में समझते हुए फिर भी उनकी पूजा-पाठ में लगे हुए हैं। लब्बैक पुकारते हुए कहते हैं कि ख़ुदाया हम हाज़िर हुए, तेरा कोई शरीक नहीं मगर वह शरीक कि वह ख़ुद तेरी मिल्कियत में है, और जिस चीज़ का वह मालिक है वह भी दर असल तेरी है। क़ुरआन ने एक और जगह उनका यह क़ौल बयान फ़रमाया है:

مَانَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى.

यानी हम तो इनकी इबादत सिर्फ़ इस लालच में करते हैं कि ये हमें अल्लाह से क़रीब कर दें।

उनके इस एतिक़ाद की जड़ काटते हुए इरशाद हुआ कि उसके पास कोई भी उसकी इजाज़त के बग़ैर लब नहीं हिला सकता। आसमानों के फ़रिश्ते भी शफ़ाअ़त उसकी इजाज़त के बग़ैर नहीं कर सकते। सूरः मरियम में फ़रमाया- ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ ख़ुदा के सामने हाथ बाँधे हाज़िर होगी, सब ख़ुदा की निगाह में और उसकी गिनती में हैं, और हर एक तन्हा-तन्हा उसके सामने क़ियामत के दिन हाज़िरी देने वाला है। पस जबकि सबके सब बन्दे और गुलाम होने की हैसियत में बराबर हैं, फिर एक का दूसरे की इबादत करना बड़ी हिमाक़त (बेवक़ूफ़ी) और खुली बेइन्साफ़ी नहीं तो और क्या है?

फिर उसने रसूलों का सिलसिला दुनिया की शुरूआ़त ही से जारी रखा, हर एक ने लोगों को पहला सबक़ यह दिया कि अल्लाह एक है, वही इबादतों के लायक़ है, उसके सिवा कोई और इबादत के लायक़ नहीं। लेकिन उन्होंने न अपने इक़रार का ख़्याल किया न रसूलों की मुत्तफ़िक़ा तालीम का लिहाज़, बल्कि विरोध और मुख़ालफ़त की, रसूलों को झुठलाया, इसलिये कि अ़ज़ाब का कलिमा उन पर सादिक़ आ गया, यह हक़ तआ़ला का ज़ुल्म नहीं है।

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌ ۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِى النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ	उसी (अल्लाह तआ़ला) ने आसमानों से पानी नाज़िल फ़रमाया, फिर नाले (भरकर) अपनी मिक़दार "यानी मात्रा" के मुवाफ़िक़ चलने लगे, फिर (वह) सैलाब कूड़े-कबाड़ को बहा लाया जो उस (पानी) के ऊपर (आ रहा) है। और जिन चीज़ों को आग के अन्दर ज़ेवर और असबाब बनाने की ग़रज़ से तपाते हैं उसमें

Maktab-e-Ashraf

يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝	भी ऐसा मैल-कुचैल (ऊपर आ जाता) है। अल्लाह तआ़ला हक़ (यानी ईमान वग़ैरह) और बातिल (कुफ़्र वग़ैरह) की इसी तरह की मिसाल बयान कर रहा है, सो जो मैल-कुचैल था वह तो फेंक दिया जाता है और जो चीज़ लोगों के लिए कारामद है ज़मीन (यानी दुनिया) में (नफ़ा पहुँचाने के साथ) रहती है। अल्लाह तआ़ला इसी तरह (हर ज़रूरी मज़मून में) मिसालें बयान किया करते हैं। (17)

सच और झूठ की एक मिसाल

हक़ और बातिल (यानी सच व झूठ और ग़लत व सही) के आपसी फ़र्क़ और हक़ की पायेदारी व बातिल की ना-पायेदारी की ये दो मिसालें बयान फ़रमाईं। इरशाद हुआ कि अल्लाह तआ़ला बादलों से मींह (बारिश) बरसाता है। जो चश्मों, दरियाओं वग़ैरह में चला जाता है, किसी में कम किसी में ज़्यादा। कोई छोटा है कोई बड़ा। यही मिसाल है दिलों की और उनके आपसी फ़र्क़ की। कोई आसमानी इल्म बहुत ज़्यादा लेता है कोई कम, फिर पानी की उस रौ पर झाग आ जाते हैं, एक मिसाल तो यह हुई। दूसरी मिसाल सोने चाँदी, लोहे ताँबे की है कि उसे आग में तपाया जाता है, सोने चाँदी ज़ेवर के लिये लोहा ताँबा बरतन वग़ैरह के लिये। उनमें भी झाग होते हैं। तो जैसे उन दोनों चीज़ों के झाग मिट जाते हैं, इसी तरह बातिल जो कभी हक़ पर छा जाता है, आख़िर छट जाता है, और हक़ नुमायाँ (ज़ाहिर और स्पष्ट) हो जाता है। जैसे पानी निखर कर साफ़ हो जाता है, और जैसे चाँदी सोना वग़ैरह तपाकर खोट से अलग कर लिये जाते हैं। अब सोने चाँदी पानी वग़ैरह से तो दुनिया नफ़ा (फ़ायदा और लाभ) उठाती है और उस पर जो खोट और झाग आ गया था उसका नाम व निशान भी नहीं रहता।

अल्लाह तआ़ला लोगों को समझाने के लिये कितनी साफ़ मिसालें बयान फ़रमा रहा है ताकि ये सोचें समझें। जैसे फ़रमाया कि हम ये मिसालें लोगों के सामने बयान फ़रमाते हैं लेकिन इसे उलेमा ही अच्छी तरह समझते हैं। बाज़ बुज़ुर्गों की समझ में जब कोई मिसाल न आती तो वे रोने लगते थे। क्योंकि न समझना इल्म से ख़ाली लोगों की निशानी है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि पहली मिसाल में उन लोगों का बयान है जिनके दिल यक़ीन के साथ इल्मे ख़ुदा के हामिल (उठाने वाले) होते हैं। और बाज़ दिल वो भी हैं जिनमें शक बाक़ी रह जाता है। पस शक के साथ अ़मल बेफ़ायदा होता है, यक़ीन पूरा फ़ायदा देता है। 'ज़बद' से मुराद शक है जो निकम्मी चीज़ है। यक़ीन कारामद चीज़ है जो बाक़ी रहने वाली है।

जैसे ज़ेवर जब आग में तपाया जाता है तो खोट ख़त्म हो जाता है और खरी चीज़ रह जाती है। इसी तरह अल्लाह के यहाँ यक़ीन मक़बूल है, शक मर्दूद है। पस जिस तरह पानी रह गया और पीने वग़ैरह के काम आया, और जिस तरह सोना चाँदी असली रह गया, और ज़ेवर वग़ैरह के काम आया, और जिस तरह ताँबा लोहा वग़ैरह रह गया और उसके बरतन और उपकरण वग़ैरह बने, इसी तरह नेक और ख़ालिस आमाल आ़मिल (अ़मल करने वाले) को नफ़ा देते और बाक़ी रहते हैं। हिदायत व हक़ पर जो आ़मिल रहे

Maktaba E Ashraf

वह नफ़ा पाता है, जैसे लोहे की छुरी, तलवार बग़ैर तपाये बन नहीं सकती इसी तरह बातिल, शक और दिखावे के आमाल ख़ुदा के यहाँ कारामद नहीं हो सकते। क़ियामत के दिन बातिल ज़ाया हो जायेगा और हक़, हक़ वालों को नफ़ा देगा।

सूरः ब-क़रह के शुरू में मुनाफ़िक़ों की दो मिसालें अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने बयान फ़रमायीं, एक पानी की एक आग की। सूरः नूर में काफ़िर की दो मिसालें बयान फ़रमायीं एक 'सराब' यानी रेत (बालू) की दूसरी समुद्र की तह (गहराई) की अंधेरियों में। रेत गर्मी के मौसम में दूर से बिल्कुल लहरें लेता हुआ दरिया का पानी मालूम होता है। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि क़ियामत के दिन यहूदियों से पूछा जायेगा कि तुम क्या माँगते हो? वे कहेंगे प्यासे हो रहे हैं, पानी चाहिये। उनसे कहा जायेगा कि फिर जाते क्यों नहीं? चुनाँचे जहन्नम उन्हें ऐसी नज़र आयेगी जैसे दुनिया में रेत का मैदान।

एक दूसरी आयत में फ़रमायाः

كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰهُ...... الخ.

जैसे बड़े गहरे समुद्र में अन्दरूनी अंधेरे कि उसको एक बड़ी लहर ने ढाँप लिया हो....। (सूरः नूर- 40)

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि जिस हिदायत व इल्म के साथ ख़ुदा तआ़ला ने मुझे भेजा है उसकी मिसाल उस बारिश की तरह है जो ज़मीन पर बरसी, ज़मीन के एक हिस्से ने तो पानी को क़बूल किया, घास चारा ख़ूब ज़्यादा उगाया। बाज़ी ज़मीन जाज़िब (अपनी तरफ़ खींचने वाली) थी, उसने पानी को रोक लिया, पस अल्लाह ने उससे भी लोगों को नफ़ा पहुँचाया, पानी उनके पीने पिलाने के, खेत के काम आया। और ज़मीन का जो टुकड़ा पथरीला और सख़्त था, उसमें न पानी ठहरा, न वहाँ कुछ पैदावार हुई। पस यह मिसाल है उसकी जिसने दीन में समझ हासिल की और मेरी बेअ़सत (यानी नबी बनकर आने) से अल्लाह ने उसे फ़ायदा पहुँचाया। उसने ख़ुद इल्म सीखा और दूसरों को सिखाया। और जिसने उसके लिये सर भी न उठाया, और न ख़ुदा की वह हिदायत क़बूल की जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ पस वह पथरीली और सख़्त ज़मीन की तरह है।

एक और हदीस में है कि मेरी और तुम्हारी मिसाल उस शख़्स की तरह है जिसने आग जलाई। जब आग ने अपने आस-पास की तमाम चीज़ें रोशन कर दीं तो पतंगे, कीड़े और परवाने वग़ैरह उसमें गिर-गिरकर जान देने लगे। वह उन्हें लाख रोकता है लेकिन इस पर भी वे बराबर गिर रहे हैं। बिल्कुल यही मिसाल मेरी और तुम्हारी है, मैं तुम्हारी कमर पकड़-पकड़कर तुम्हें रोकता हूँ और कह रहा हूँ कि आग से दूर हटो लेकिन तुम मेरी नहीं सुनते, नहीं मानते, मुझसे छूट-छूटकर आग में गिरे चले जाते हो। पस हदीस में भी पानी और आग दोनों की मिसालें आ चुकी हैं।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ	जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया उनके वास्ते अच्छा बदला है, और जिन लोगों ने उसका कहना न माना उनके पास अगर तमाम ज़मीन (यानी दुनिया) भर की चीज़ें (मौजूद) हों और (बल्कि) उसके साथ उसी के बराबर और भी हो, तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का सख़्त हिसाब

होगा और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरा ठिकाना है। (18)	وَمَاْوٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝

Maktab E Ashraf

नेकों और बुरों का अन्जाम

नेकों और बुरों का अन्जाम बयान हो रहा है। अल्लाह व रसूल को मानने वाले, अहकाम के पाबन्द, ख़बरों पर यक़ीन रखने वाले तो नेक बदले पायेंगे। ज़ुलक़रनैन ने फ़रमाया था कि ज़ुल्म करने वाले को हम भी सज़ा देंगे और ख़ुदा के यहाँ भी सख़्त अ़ज़ाब दिया जायेगा। और ईमान वाले और नेक अ़मल वाले लोग बेहतरीन बदला पायेंगे और हम भी उनसे नर्मी का मामला करेंगे। एक और आयत में फ़रमाने ख़ुदा है कि नेकों के लिये नेक बदला है और उसमें इज़ाफ़ा भी।

फिर फ़रमाता है कि जो लोग अल्लाह की बातें नहीं मानते, ये क़ियामत के दिन ऐसे अ़ज़ाब देखेंगे कि उनके पास सारी ज़मीन भरकर सोना हो तो वे अपने फ़िदये में देने के लिये तैयार हो जायें, बल्कि उस जितना और भी, मगर क़ियामत के दिन न फ़िदया होगा न बदला न मुआ़वज़ा, उनसे सख़्त पूछताछ होगी। एक-एक छिलके और एक-एक दाने का हिसाब लिया जायेगा। हिसाब में पूरे न उतरेंगे तो अ़ज़ाब होगा, जहन्नम उनका ठिकाना होगा, जो बहुत बुरी जगह होगी।

जो शख़्स (यह) यक़ीन रखता हो कि जो कुछ आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के रब की तरफ़ से आप पर नाज़िल हुआ है वह सब हक़ है, क्या ऐसा शख़्स उसकी तरह हो सकता है जो कि अन्धा है, पस नसीहत तो समझदार लोग ही क़बूल करते हैं। (19)	اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۖ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

फिर कौन फ़ायदा उठायेगा?

इरशाद होता है कि एक वह शख़्स जो आपकी तरफ़ उतरे ख़ुदा के कलाम को हक़ मानता हो, सब पर ईमान रखता हो, एक को दूसरे की तस्दीक़ करने वाला और मुवाफ़क़त करने वाला जानता हो, सब ख़बरों को सच जानता हो, सब हुक्मों को मानता हो, सब बुराईयों को बुरा जानता हो, आपकी सच्चाई का क़ायल हो। और दूसरा वह शख़्स जो गुमराह हो, भलाई को समझता ही नहीं, और अगर समझ भी ले तो मानता न हो, न सच्चा जानता हो। ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं। जन्नती ख़ुशनसीब हैं। यही फ़रमान यहाँ है कि ये दोनों बराबर नहीं। बात यह है कि अच्छी समझ समझदारों की ही होती है।

(और) ये (समझदार) लोग ऐसे हैं कि अल्लाह से जो कुछ उन्होंने अ़हद किया है उसको पूरा करते हैं और उस (अ़हद) को तोड़ते नहीं। (20) और (ये) ऐसे हैं कि अल्लाह	الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۝ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ

Maktab E Ashraf

اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ۝ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۝ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝

तआ़ला ने जिन ताल्लुक़ात के क़ायम रखने का हुक्म किया है उनको क़ायम रखते हैं, और अपने रब से डरते रहते हैं, और सख़्त अ़ज़ाब का अन्देशा रखते हैं। (21) और ये लोग ऐसे हैं कि अपने रब की रज़ामन्दी को ढूँढते हुए मज़बूत रहते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको रोज़ी दी है उसमें से चुपके भी और ज़ाहिर करके भी ख़र्च करते हैं। और बदसुलूकी को अच्छे सुलूक से टाल देते हैं, उस जहान "यानी आख़िरत" में नेक अन्जाम उन्हीं लोगों के वास्ते है। (22) (यानी) हमेशा रहने की जन्नतें जिनमें वे लोग भी दाख़िल होंगे और उनके माँ-बाप और बीवियाँ और औलाद में से जो (जन्नत के) लायक़ होंगे (वे भी दाख़िल होंगे) और फ़रिश्ते उनके पास हर (तरफ़ के) दरवाज़े से आते होंगे (23) (और यह कहते होंगे कि) तुम सही-सलामत रहोगे इसकी बदौलत कि तुम (दीने हक़ पर) मज़बूत रहे थे, सो इस जहान में तुम्हारा अन्जाम बहुत अच्छा है। (24)

नेकबख़्त और कामयाब कौन हैं?

उन बुज़ुर्गों की नेक ख़स्लतों का बयान हो रहा है, और उनके अच्छे अन्जाम की ख़बर दी जा रही है जो आख़िरत में जन्नत के मालिक बनेंगे, और यहाँ भी जो नेक बन्दे हैं वे मुनाफ़िक़ों की तरह नहीं होते बल्कि सिला-रहमी का, रिश्तेदारों से सुलूक करने का, फ़क़ीर मोहताजों को देने का, भली बातों के निभाने का जो अल्लाह का हुक्म है, ये उसके आ़मिल (अ़मल करने वाले) हैं। रब का ख़ौफ़ दिल में बसा हुआ है, नेकियाँ करते हैं, अल्लाह के फ़रमान को समझ कर बुराईयों को छोड़ते हैं, उनको ख़ुदा तआ़ला की नाफ़रमानी समझकर। आख़िरत के हिसाब का हमेशा ख़्याल रखते हैं इसी लिये बुराईयों से बचते हैं, नेकियों की रग़बत (दिलचस्पी और चाह) करते हैं, एतिदाल (दरमियानी रास्ता) नहीं छोड़ते, हर हाल में अल्लाह के फ़रमान का लिहाज़ रखते हैं। हराम कामों और ख़ुदा की नाफ़रमानियों की तरफ़ चाहे नफ़्स घसीटे, लेकिन ये उसे रोक लेते हैं, और आख़िरत का सवाब याद दिलाकर अल्लाह की मर्ज़ी और उसकी रज़ा के तालिब होकर नाफ़रमानियों से बाज़ रहते हैं।

नमाज़ की पूरी हिफ़ाज़त करते हैं। रुकूअ़ सज्दे के वक़्त बहुत ज़्यादा आ़जिज़ी और तवज्जोह से काम लेते हैं, जिन्हें देने का ख़ुदा ने हुक्म फ़रमाया है उन्हें अल्लाह की दी हुई चीज़ें देते रहते हैं। फ़क़ीर, मोहताज,

मिस्कीन, अपने हों या ग़ैर, इनकी बरकतों से मेहरूम नहीं रहते। छुपे खुले दिन रात वक़्त-बेवक़्त बराबर अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहते हैं। बुराई का भलाई से, दुश्मनी का दोस्ती से बदला देते हैं। दूसरा सरकशी करे ये नर्मी करते हैं। दूसरा सर चढ़े ये सर झुका देते हैं। दूसरों का ज़ुल्म बरदाश्त कर लेते हैं और ख़ुद अच्छा सुलूक करते हैं। क़ुरआन पाक की तालीम है:

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ...... الخ.

बहुत अच्छे तरीक़े से टाल दो तो दुश्मन भी सच्चा दोस्त बन जायेगा। सब्र करने वाले नसीब वाले ही इस मर्तबे को पाते हैं, ऐसे लोगों के लिये अच्छा अन्जाम है। वह अच्छा अन्जाम और बेहतरीन घर जन्नत है। जो हमेशगी वाली और पायेदार है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नत के एक महल का नाम अ़दन है जिसमें बुरूज और बालाख़ाने हैं, जिसके पाँच हज़ार दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े पर पाँच हज़ार फ़रिश्ते हैं, वह महल मख़्सूस है नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के लिये। ज़ह्हाक रह. कहते हैं कि यह जन्नत का शहर है जिसमें अम्बिया होंगे, शहीद होंगे और सच्चे हादी व रहनुमा (यानी दीन की तरफ़ रास्ता दिखाने वाले) होंगे। और उनके आस-पास और लोग होंगे और उनके इर्द-गिर्द और जन्नतें हैं। वहाँ ये अपने और दोस्तों को भी अपने साथ देखेंगे। उनके बड़े बाप-दादा, उनके छोटे बेटे-पोते उनके जोड़े भी जो ईमान वाले और नेक थे, उनके पास होंगे और ऐश व आराम में मस्त व लीन होंगे। जिससे उनकी आँखें ठण्डी रहेंगी। यहाँ तक कि अगर किसी के आमाल उस बुलन्दी के दर्जे तक पहुँचने के क़ाबिल न भी होंगे तो ख़ुदा तआ़ला उनके दर्जे बढ़ा देगा और आला मन्ज़िल तक पहुँचा देगा। जैसा कि फ़रमायाः

وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّیَّتُهُمْ بِاِیْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ .... الخ

जिन ईमान वालों की औलाद उनकी पैरवी ईमान में करती है, हम उन्हें भी उनके साथ मिला देते हैं।

उनके पास मुबारकबाद और सलाम के लिये हर-हर दरवाज़े से हर-हर वक़्त फ़रिश्ते आते रहते हैं। यह भी ख़ुदा का इनाम है, ताकि हर वक़्त ख़ुश रहें और ख़ुशख़बरियाँ सुनते रहें। नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों का पड़ोस, फ़रिश्तों का सलाम और जन्नतुल-फ़िरदौस मक़ाम। मुस्नद की हदीस में है- जानते हो कि सबसे पहले जन्नत में कौन जायेंगे? लोगों ने कहा ख़ुदा और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। फ़रमाया सबसे पहले जन्नती मुहाजिर लोगों में के मिस्कीन हैं जो दुनिया की लज़्ज़तों से दूर थे, जो तकलीफ़ों में मुब्तला थे, जिनकी उमंगें दिलों में ही रह गयीं और मौत आ गयी। रहमत के फ़रिश्तों को हुक्मे ख़ुदा होगा कि जाओ उन्हें मुबारकबाद दो। फ़रिश्ते कहेंगे ख़ुदाया हम तेरे आसमानों के रहने वाले तेरी बेहतरीन मख़्लूक़ हैं, क्या तू हमें हुक्म देता है कि हम जाकर उन्हें सलाम करें और उन्हें मुबारकबाद पेश करें? अल्लाह तआ़ला जवाब देगा- ये मेरे वे बन्दे हैं जिन्होंने सिर्फ़ मेरी इबादत की, मेरे साथ किसी को शरीक नहीं किया, दुनियावी राहतों से मेहरूम रहे, मुसीबतों में मुब्तला रहे, कोई मुराद पूरी होने न पाई और ये साबिर व शाकिर रहे। अब तो फ़रिश्ते जल्दी-जल्दी शौक़ के साथ उनकी तरफ़ दौड़ेंगे। इधर-उधर के हर-हर दरवाज़े से घुसेंगे और सलाम करके मुबारकबाद पेश करेंगे।

तबरानी में है कि सबसे पहले जन्नत में जाने वाले तीन क़िस्म के लोग हैं- फ़ुक़रा (ग़रीब नेक मुसलमान), मुहाजिर हज़रात, जो मुसीबतों में मुब्तला रहे। जब भी उन्हें जो हुक्म मिला बजा लाते रहे। उन्हें

Maktab E Ashraf

Maktaba E Ashraf

ज़रूरतें बादशाहों से होती थीं, लेकिन मरते दम तक पूरी न हुईं, जन्नत को क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला अपने सामने बुलायेगा। वह सजी संवरी अपनी तमाम नेमतों और ताज़गियों के साथ हाज़िर होगी। उस वक़्त ऐलान होगा कि मेरे वे बन्दे जो मेरी राह में जिहाद करते थे, मेरी राह में सताये जाते थे, मेरी राह में लड़ते-भिड़ते थे, कहाँ हैं? आओ बग़ैर हिसाब व अ़ज़ाब के जन्नत में चले जाओ। उस वक़्त फ़रिश्ते ख़ुदा के सामने सज्दे में गिर पड़ेंगे और अ़र्ज़ करेंगे कि परवर्दिगार! हम तो सुबह शाम तेरी पाकी और तारीफ़ बयान करने में लगे रहे, ये कौन हैं जिन्हें हम पर भी तूने फ़ज़ीलत (बड़ाई) अ़ता फ़रमाई? अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त फ़रमायेगा ये मेरे वे बन्दे हैं जिन्होंने मेरी राह में जिहाद किया, मेरी राह में तकलीफ़ें बरदाश्त कीं। अब तो फ़रिश्ते जल्दी करके उनके पास हर-हर दरवाज़े से जाकर पहुँचेंगे, सलाम करेंगे और मुबारकबाद पेश करेंगे कि तुम्हें तुम्हारे सब्र का बदला कितना अच्छा मिला।

हज़रत अबू उमामा रज़ि. फ़रमाते हैं कि मोमिन जन्नत में अपने तख़्त पर आराम से निहायत शान से तकिया लगाये बैठा हुआ होगा, ख़ादिमों की क़तारें इधर-उधर खड़ी होंगी, दरवाज़े वाले ख़ादिम से फ़रिश्ता इजाज़त माँगेगा, वह दूसरे ख़ादिम से कहेगा, वह और से, वह और से, यहाँ तक कि मोमिन से पूछा जायेगा। मोमिन इजाज़त देगा कि उसे आने दो। यूँ ही एक दूसरे को पहुँचायेगा और आख़िरी ख़ादिम फ़रिश्ते को इजाज़त देगा और दरवाज़ा खोल देगा, वह आयेगा, सलाम करेगा और चला जायेगा। एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्ल. हर साल के शुरू में शहीदों की क़ब्रों पर आते और कहतेः

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ.

तुम सलामत रहोगे इस वजह से कि तुम दीने हक़ पर जमे रहे थे सो उस जहान में तुम्हारा अन्जाम बहुत ही अच्छा है।

और इसी तरह अबू बक्र, उमर, उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हुम भी करते थे (इसकी सनद ठीक नहीं)।

और जो लोग ख़ुदा तआ़ला के मुआ़हदों को उनकी पुख़्तगी के बाद तोड़ते हैं, और ख़ुदा तआ़ला ने जिन ताल्लुक़ात "और रिश्तों" के क़ायम रखने का हुक्म फ़रमाया है उनको तोड़ते हैं, और ज़मीन (यानी दुनिया) में फ़साद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत होगी, और उनके लिए उस जहान में ख़राबी होगी। (25)	وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ○

ख़ुदा की लानत

मोमिनों की सिफ़ात बयान हुईं कि वादे के पूरे, रिश्तों-नातों के मिलाने वाले होते हैं, फिर उनका अज्र बयान हुआ कि वे जन्नतों के मालिक बनेंगे। अब यहाँ उन बद-नसीबों का ज़िक्र हो रहा है जो इनके उलट और विपरीत ख़स्लतें रखते थे। न ख़ुदा के वादों का लिहाज़ करते थे, न सिला-रहमी और अहकामे ख़ुदा की पाबन्दी का ख़्याल रखते थे। यह लानती गिरोह है और उसका अन्जाम बुरा है। हदीस में है कि मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं- बातों में झूठ बोलना, वादों के ख़िलाफ़ करना, अमानत में ख़ियानत करना। एक

Muktab E Ashraf

हदीस में है कि झगड़ों में गालियाँ बकना। इस तरह के लोग अल्लाह की रहमत से दूर हैं, उनका अन्जाम बुरा है, यह जहन्नमी गिरोह है। ये छह ख़स्लतें हुईं जो मुनाफ़िक़ों से अपने ग़लबे के वक़्त ज़ाहिर होती हैं। बातों में झूठ, वादाख़िलाफ़ी, अमानत में ख़ियानत, अल्लाह के अ़हद को तोड़ देना, ख़ुदा के मिलाने के हुक्म की चीज़ को न मिलाना (यानी रिश्ते और ताल्लुक़ को न जोड़ना, बल्कि तोड़ना), मुल्क में फ़साद फैलाना। और ये जब दबे हुए होते हैं तब भी झूठ, वादाख़िलाफ़ी और ख़ियानत करते हैं।

अल्लाह जिसको चाहे रिज़्क़ ज़्यादा देता है और तंगी कर देता है। और ये (काफ़िर) लोग दुनियावी ज़िन्दगी पर इतराते हैं, और यह दुनियावी ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में सिवाय एक मामूली फ़ायदे के और कुछ भी नहीं। (26)	اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۠

ع

दुनिया की ज़िन्दगी

ख़ुदा जिसकी रोज़ी में कुशादगी (तरक़्क़ी और फैलाव) देना चाहे वह इस पर क़ादिर है, जिसे तंग रोज़ी देना चाहे इस पर भी क़ादिर है। यह सब कुछ हिक्मत व इन्साफ़ से हो रहा है। काफ़िरों को दुनिया पर भरोसा हो गया है, ये आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गये, समझने लगे कि यहाँ की कुशादगी कोई वास्तविक और भली चीज़ है। हालाँकि हक़ीक़त यह है कि यह मोहलत है, और धीरे-धीरे गिरफ़्त (पकड़) की एक शुरूआत है। लेकिन उन्हें कोई समझ नहीं। मोमिनों को जो आख़िरत मिलने वाली है, उसके मुक़ाबले में तो यह कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ ही नहीं। यह निहायत नापायेदार और हक़ीर चीज़ है, मगर आख़िरत बहुत बड़ी और बेहतर है, लेकिन उमूमन लोग दुनिया को आख़िरत पर तरजीह देते हैं।

नबी करीम सल्ल. ने अपनी शहादत की उंगली से इशारा करके फ़रमाया कि इसे कोई समन्दर में डुबो ले और देखे कि इसमें कितना पानी आता है? जितना यह पानी समन्दर के मुक़ाबले पर है उतनी ही दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में है। (मुस्लिम)

एक छोटे-छोटे कानों वाले बकरी के मरे हुए बच्चे को रास्ते में पड़ा हुआ देखकर नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया जैसा यह उन लोगों के नज़दीक है जिनका यह था (यानी अब इसकी कोई हैसियत उनके नज़दीक इसकी नहीं, न ज़रूरत) इससे भी ज़्यादा बेकार और बेहक़ीक़त ख़ुदा के सामने दुनिया है।

और ये काफ़िर लोग कहते हैं कि उनपर (हमारे फ़रमाईशी मोजिज़ों में से) कोई मोजिज़ा उनके रब की तरफ़ से क्यों नाज़िल नहीं किया गया? आप कह दीजिए कि वाक़ई अल्लाह तआ़ला जिसको चाहें गुमराह कर देते हैं, और जो शख़्स उनकी तरफ़ मुतवज्जह होता है उसको अपनी तरफ़ से हिदायत कर देते हैं। (27)	وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ

(मुराद इससे वे लोग हैं) जो ईमान लाए और अल्लाह के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मीनान होता है। ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हो जाता है। (28) जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उनके लिए ख़ुशहाली और नेक अन्जामी है। (29)	اللّٰہِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ٥ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰی لَھُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ٥

बेहतरीन ठिकाना

मुश्रिकों का एक एतिराज़ बयान हो रहा है कि पहले अम्बिया की तरह यह हमारा मतलूबा (यानी हम जो माँगते हैं) कोई मोजिज़ा क्यों नहीं दिखाता। इसकी पूरी बहस कई बार गुज़र चुकी कि ख़ुदा को क़ुदरत तो है लेकिन अगर फिर भी ये टस से मस न हुए तो तहस-नहस कर दिये जायेंगे। हदीस में है कि ख़ुदा की तरफ़ से नबी सल्ल. पर 'वही' आई कि उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ मैं सफ़ा पहाड़ को सोने का कर देता हूँ, अ़रब की ज़मीन में मीठे दरियाओं की रेल-पेल कर देता हूँ, पहाड़ी ज़मीन को काश्त के क़ाबिल कर देता हूँ, लेकिन फिर भी अगर ये ईमान न लाये तो इन्हें वह सज़ा दूँगा जो किसी को न हुई। और अगर चाहो तो उनके लिये तौबा और रहमत का दरवाज़ा खुला रहने दूँ? तो आपने दूसरी सूरत पसन्द फ़रमाई। सच है हिदायत व गुमराही ख़ुदा के हाथ में है, वह किसी मोजिज़े के देखने पर मौक़ूफ़ नहीं। बेईमानों के लिये निशानियाँ, नसीहतें, मोजिज़े और डाँट-डपट सब बेफ़ायदा हैं। जिनके लिये अ़ज़ाब तय हो चुका है वे तमाम निशानियाँ देखकर भी नहीं मानेंगे। हाँ अ़ज़ाब देखकर तो पूरे ईमान वाले बन जायेंगे, लेकिन उस वक़्त उसका कोई फ़ायदा नहीं, बिल्कुल बेकार चीज़ है। फ़रमाता है:

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَیْھِمُ الْمَلٰٓئِکَۃَ...... الخ.

यानी अगर हम उन पर फ़रिश्ते उतारते और उनसे मुर्दे बातें करते और हर छुपी चीज़ उनके सामने ज़ाहिर कर देते, तब भी उन्हें ईमान नसीब न होता। हाँ अगर ख़ुदा चाहे तो और बात है। लेकिन उनमें अक्सर जाहिल हैं।

जो ख़ुदा की तरफ़ झुके, उससे मदद चाहे, उसकी तरफ़ आ़जिज़ी करे, वह राह पाने वाला हो जाता है। जिनके दिलों में ईमान जम गया है, जिनके दिल अल्लाह की तरफ़ झुकते हैं, उसके ज़िक्र से इत्मीनान हासिल करते हैं, राज़ी और ख़ुश हो जाते हैं, और वास्तव में अल्लाह का ज़िक्र दिल के इत्मीनान की चीज़ भी है। ईमान वालों और नेक काम करने वालों के लिये ख़ुशी, नेक शगुन और आँखों की ठण्डक है। उनका अन्जाम अच्छा है। ये मुबारकबाद के हक़दार हैं। ये भलाई को समेटने वाले हैं, उनका लौटना बेहतर है, उनका अन्जाम नेक है।

रिवायत है कि 'तूबा' से मुराद मुल्क हब्शा है, और नाम है जन्नत का, और मुराद इससे जन्नत है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नत जब तैयार हो चुकी उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने यही फ़रमाया था। कहते हैं कि जन्नत में एक दरख़्त का नाम तूबा है, सारी जन्नत में उसकी शाख़ें फैली हुई हैं। हर घर में उसकी शाख़ मौजूद है। अल्लाह तआ़ला ने उसे अपने हाथ से बोया है, लुअ्लुअ् (मोती) के दाने से पैदा

किया है और ख़ुदा के हुक्म से यह बढ़ा और फैला है, उसी की जड़ों से जन्नत की शहद, शराब, पानी और दूध की नहरें जारी होती हैं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है- तूबा नाम का जन्नत में एक दरख़्त है, सौ साल के रास्ते का। उसी के ख़ोशों (गुच्छों) से जन्नतियों के लिबास निकलते हैं।

मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह! जिसने आपको देख लिया और आप पर ईमान लाया उसे मुबारक हो। आपने फ़रमाया हाँ उसे भी मुबारक हो और उसे ख़ूब मुबारक हो जिसने मुझे न देखा और मुझ पर ईमान लाया। एक शख़्स ने पूछा तूबा क्या है? आपने फ़रमाया जन्नती पेड़ है, जो सौ साल की राह तक फैला हुआ है। जन्नतियों के लिबास उसकी शाख़ों से निकलते हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- जन्नत में एक पेड़ है कि सवार एक सौ साल तक उसके साये में चलता रहेगा लेकिन वह ख़त्म न होगा। एक और रिवायत में है कि चाल भी तेज़ और सवारी भी तेज़ चलने वाली। सही बुख़ारी शरीफ़ में आयत ''व ज़िल्लिम् ममदूद'' की तफ़सीर में भी यही है। एक और हदीस में है कि सत्तर साल या सौ साल तक के रास्ते में है। उसका नाम 'शजरतुल-ख़ुल्द' है। सिद्रतुल-मुन्तहा के ज़िक्र में आपने फ़रमाया है कि उसकी एक शाख़ के साये तले एक सौ साल तक सवार चलता रहेगा, और सौ-सौ सवार उसकी एक-एक शाख़ के नीचे ठहर सकते हैं। उसमें सोने की टिड्डियाँ हैं, उसके फल बड़े-बड़े मटकों के बराबर हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

आप फ़रमाते हैं कि हर जन्नती को तूबा के पास ले जाया जायेगा और उसे इख़्तियार दिया जायेगा कि जिस शाख़ को चाहे पसन्द करे। सफ़ेद, सुर्ख़, ज़र्द, स्याह। वे निहायत ख़ूबसूरत, नर्म और अच्छी होंगी। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं- तूबा को हुक्म होगा कि मेरे बन्दों के लिये बेहतरीन चीज़ें टपका, तो उसमें से घोड़े और ऊँट बरसने लगेंगे। सजे सजाये और ज़ीन लगाम वग़ैरह कसे कसाये, और उम्दा बेहतरीन लिबास वग़ैरह। इब्ने जरीर रह. ने इस जगह एक अ़जीब व ग़रीब क़ौल ज़िक्र किया है, वह यह कि वहब रह. कहते हैं- जन्नत में एक पेड़ है जिसका नाम तूबा है, जिसके साये के नीचे सवार सौ साल तक चलता रहेगा लेकिन ख़त्म न होगा। उसकी तरोताज़गी खिले हुए चमन की तरह है, उसके पत्ते बेहतरीन और उम्दा हैं, उसके गुच्छे ख़ुशबूदार हैं, उसके कंकर याक़ूत हैं, उसकी मिट्टी काफ़ूर है, उसका गारा मुश्क है, उसकी जड़ से शराब, दूध और शहद की नहरें बहती हैं, उसके नीचे जन्नतियों की बैठकें होंगी, ये बैठे हुए होंगे कि इनके पास फ़रिश्ते ऊँटनियाँ लेकर आयेंगे, जिनकी ज़न्जीरें सोने की होंगी, जिनके चेहरे चिराग़ जैसे चमकते हुए होंगे, बाल रेशम जैसे नर्म होंगे, जिन पर याक़ूत जैसे पालान (गद्दे) होंगे, जिन पर सोना जड़ा होगा, जिन पर रेशमी झूलें होंगी।

वे ऊँटनियाँ उनके सामने पेश करेंगे और कहेंगे कि ये सवारियाँ तुम्हें भिजवाई गयी हैं, और दरबारे ख़ुदा में तुमको याद किया गया है। ये उन पर सवार होंगे, वो परिन्दों की परवाज़ से भी तेज़ रफ़्तार वाली होंगी। जन्नती एक दूसरे से मिलकर चलेंगे, ऊँटनियों के कान से कान भी न मिलेंगे (यानी साथ चलने के बावजूद आपस में ज़रा भी न टकरायेंगी), पूरी फ़रमाँबरदारी के साथ चलेंगी। रास्ते में जो दरख़्त आयेंगे वे ख़ुद-ब-ख़ुद हट जायेंगे कि किसी को अपने साथी से अलग न होना पड़े। यूँ ही रहमान व रहीम ख़ुदा के पास पहुँचेंगे। ख़ुदा तआ़ला अपने चेहरे से पर्दे हटा देगा। ये अपने रब के चेहरे को देखेंगे और कहेंगे:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَحَقٌّ لَّكَ الْجَلَالُ وَالْاِكْرَام.

यानी ऐ अल्लाह बेशक तू सलाम है और सलामती तेरी ही तरफ़ से है, और बड़ाई व बुज़ुर्गी तेरे ही

Maktab E Ashraf

लिये ज़ेबा है।

उनके जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा:

اَنَا السَّلَامُ وَمِنِّی السَّلَامُ

हाँ मैं ही सलाम हूँ और मेरी ही तरफ़ से सलामती है। तुम पर मेरी रहमत दौड़ चुकी और मुहब्बत भी, मेरे उन बन्दों को बधाई हो जो बग़ैर देखे मुझसे डरते रहे, मेरी फ़रमाँबरदारी करते रहे।

जन्नती कहेंगे बारी तआ़ला! न तो हमसे तेरी इबादत का हक़ अदा हुआ, न तेरी पूरी क़द्र हुई, हमें इजाज़त दे कि तेरे सामने सज्दा करें। अल्लाह फ़रमायेगा यह मेहनत की जगह नहीं और न इबादत की, यह तो नेमतों, राहतों और मालामाल होने की जगह है। इबादतों की तकलीफ़ जाती रही, मज़े लूटने के दिन आ गये, जो चाहो माँगो पाओगे। तुममें से जो शख़्स जो माँगेगा उसे दूँगा। पस ये माँगेंगे। कम से कम सवाल वाला कहेगा कि ख़ुदाया तूने दुनिया में जो पैदा किया था, जिसमें तेरे बन्दे हाय-वाय कर रहे थे, मैं चाहता हूँ कि शुरू दुनिया से आख़िर दुनिया तक दुनिया में जितना कुछ था मुझे अ़ता फ़रमा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तूने तो कुछ न माँगा, अपने रुतबे से बहुत कम चीज़ माँगी, अच्छा हमने दी। मेरी बख़्शिश और देने में क्या कमी है।

फिर फ़रमायेगा जिन चीज़ों तक मेरे इन बन्दों की रसाई भी नहीं, वह इन्हें दो। चुनाँचे दी जायेंगी, यहाँ तक कि उनकी ख़्वाहिशें पूरी हो जायेंगी। उन चीज़ों में जो उन्हें यहाँ मिलेंगी, तेज़ रफ़्तार वाले घोड़े होंगे, हर चीज़ पर याक़ूती (यानी मोती का बना हुआ) तख़्त होगा, हर तख़्त पर सोने का एक डेरा होगा, हर डेरे में जन्नती फ़र्श होगा, जिन पर बड़ी-बड़ी आँखों वाली दो-दो हूरें होंगी, जो दो-दो जोड़े पहने हुए होंगी, जिनमें जन्नत के तमाम रंग होंगे और तमाम ख़ुशबूएँ। उन ख़ेमों के बाहर से उनके चेहरे ऐसे चमकते होंगे गोया वे बाहर ही बैठी हैं। उनकी पिंडली के अन्दर का गूदा बाहर से नज़र आ रहा होगा जैसे सुर्ख़ याक़ूत में डोरा पिरोया हुआ हो और वह ऊपर से नज़र आ रहा हो। उनमें से हर एक दूसरी पर अपनी फ़ज़ीलत ऐसी जानती और समझती होगी जैसी सूरज की तुलना किसी पत्थर से की जाये। इसी तरह जन्नती की निगाह में भी दोनों ऐसी ही होंगी।

यह उनके पास जायेगा और उनसे लिपटने-चिपटने और प्यार करने में मशग़ूल हो जायेगा। वे दोनों इसे देखकर कहेंगी ख़ुदा की क़सम! हमारे तो ख़्याल में भी न था कि ख़ुदा तुम जैसा शौहर हमें देगा। अब अल्लाह के हुक्म से इसी तरह सफ़बन्दी के साथ सवारियों पर ये वापस होंगे और अपनी मन्ज़िलों (ठिकानों) में पहुँचेंगे। देखो तो सही ख़ुदा-ए-पाक ने उन्हें क्या-क्या नेमतें अ़ता फ़रमा रखी हैं? वहाँ बुलन्द दर्जे के लोगों में ऊँचे-ऊँचे बालाख़ानों में जो ख़ालिस मोती के बने हुए होंगे, जिनके दरवाज़े सोने के होंगे, जिनके तख़्त याक़ूत के होंगे, जिनके फ़र्श नर्म और मोटे रेशम के होंगे, जिनके मिम्बर नूर के होंगे, जिनकी चमक सूरज की चमक से ज़्यादा होगी। आला इल्लिय्यीन में उनके महल होंगे, याक़ूत के बने हुए नूरानी जिनके नूर से आँखों की रोशनी जाती रहे, लेकिन ख़ुदा तआ़ला उनकी आँखें ऐसी न करेगा (यानी आँखों की रोशनी उनकी चमक से न जायेगी)।

जो महल सुर्ख़ याक़ूत (लाल मोती) के होंगे उनमें सब्ज़ रेशमी फ़र्श होंगे, और जो ज़र्द याक़ूत (पीले मोती) के होंगे उनके फ़र्श सुर्ख़ मख़मल के होंगे, जो ज़मर्रुद और सोने के जड़ाव के होंगे। उन तख़्तों के पाय जवाहर (हीरे-मोतियों) के होंगे, उन पर छतें लुअ्लुअ् (एक मोती है) की होंगी, उनके बुर्ज मरजान के

Maktab E Ashraf

होंगे, उनके पहुँचने से पहले ही ख़ुदाई तोहफ़े वहाँ पहुँच चुके होंगे। सफ़ेद याक़ूती घोड़ों को जन्नत के ख़ादिम लिये खड़े होंगे, जिनका सामान चाँदी का जड़ाव होगा। उनके तख़्त पर आला रेशमी नर्म दबीज़ फ़र्श बिछे हुए होंगे। ये उन सवारियों पर सवार होकर शान और ठाठ से जन्नत में जायेंगे। देखेंगे कि उनके घरों के पास नूरानी मिम्बरों पर फ़रिश्ते उनके स्वागत के लिये बैठे हुए हैं। वे इनका शानदार स्वागत करेंगे, मुबारकबाद देंगे, मुसाफ़ा करेंगे, फिर ये अपने घरों में दाख़िल होंगे। अल्लाह की तरफ़ से दिये हुए इनाम वहाँ मौजूद पायेंगे।

अपने महलों के पास दो जन्नतें हरी-भरी पायेंगे, और दो फली-फूली जिनमें दो चश्मे पूरी रवानी से जारी होंगे, और हर क़िस्म के जोड़ेदार मेवे होंगे, और ख़ेमों में पाकदामन भोली-भाली पर्दे वाली हूरें होंगी। जब ये वहाँ पहुँचकर राहत व आराम में होंगे उस वक़्त अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त फ़रमायेगा- मेरे प्यारे बन्दो! तुमने मेरे वादे सच्चे पाये? क्या तुम मेरे सवाबों से ख़ुश हो गये? वे कहेंगे ख़ुदाया! हम ख़ूब ख़ुश हो गये, बहुत ही राज़ी हैं, दिल से राज़ी हैं, दिल की कली-कली खिली हुई है, तू भी हमसे ख़ुश रह। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अगर मेरी रज़ामन्दी न होती तो मैं अपने इस मेहमानख़ाने में तुम्हें कैसे दाख़िल होने देता? अपना दीदार कैसे कराता? मेरे फ़रिश्ते तुमसे मुसाफ़ा क्यों करते? तुम ख़ुश रहो, आराम से रहो, तुम्हें मुबारक हो, तुम फलो-फूलो और सुख-चैन उठाओ। मेरे ये इनाम घटने और ख़त्म होने वाले नहीं।

उस वक़्त वे कहेंगे ख़ुदा ही की ज़ात तारीफ़ व प्रशंसा के लायक़ है, जिसने हमसे ग़म व रंज को दूर कर दिया, और ऐसे मक़ाम पर पहुँचाया कि जहाँ हमें कोई तकलीफ़, कोई मशक़्क़त नहीं। यह उसी का फ़ज़्ल है, वह बड़ा ही बख़्शने वाला और क़द्रदान है।

यह मज़मून ग़रीब है और यह रिवायत अ़जीब है। हाँ इसकी कुछ ताईदें भी मौजूद हैं। चुनाँचे सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से जो सबसे आख़िर में जन्नत में जायेगा, फ़रमायेगा कि माँग। वह माँगता जायेगा और अल्लाह करीम देता जायेगा, यहाँ तक कि उसका सवाल पूरा हो जायेगा। अब उसके सामने कोई ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रहेगी तो अल्लाह तआ़ला ख़ुद उसे याद दिलायेगा कि यह माँग, यह माँग। यह माँगेगा और पायेगा। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- यह सब मैंने तुझे दिया और इतना ही और भी दस बार अ़ता फ़रमाया।

सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे क़ुदसी में है कि ऐ मेरे बन्दो! तुम्हारे अगले पिछले इनसान, जिन्नात सब एक मैदान में खड़े हो जायें और मुझसे दुआ़यें करें और माँगें, मैं हर एक के तमाम सवालात पूरे करूँ लेकिन मेरे मुल्क में इतनी भी कमी न आयेगी जितनी कमी सूई को समुद्र में डुबोने से समुद्र के पानी में आये....। ख़ालिद बिन सअ़दान कहते हैं- जन्नत के एक दरख़्त का नाम तूबा है, उसमें थन हैं, जिनसे जन्नतियों के बच्चे दूध पीते हैं, कच्चे गिरे हुए (यानी गर्भपात के ज़रिये ज़ाया) बच्चे जन्नत की नहरों में हैं, क़ियामत के क़ायम होने तक फिर चालीस साल के बनकर अपने माँ-बाप के साथ जन्नत में रहेंगे।

(और) इसी तरह हमने आपको एक ऐसी उम्मत में रसूल बनाकर भेजा है कि उस (उम्मत) से पहले और बहुत-सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि आप उनको वह (किताब) पढ़कर सुना दें जो हमने आपके पास 'वही' के ज़रिये	كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ

Maktab E Ashraf

رَبِّىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ○	भेजी है, और वे लोग बड़े रहमत वाले की नाशुक्री करते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि वह मेरा पालने वाला (और निगहबान) है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और उसी के पास मुझको जाना है। (30)

अल्लाह का इनकार करने वाले

इरशाद होता है कि जैसे इस उम्मत की तरफ़ हमने तुझे भेजा कि तू इन्हें कलामे ख़ुदा पढ़कर सुनाये, इसी तरह तुझसे पहले और रसूलों को उन पहली उम्मतों की तरफ़ भेजा था। उन्होंने भी पैग़ामे इलाही अपनी-अपनी उम्मतों को पहुँचाया मगर उन्होंने झुठलाया। इसी तरह तेरी भी तकज़ीब की गयी (यानी आपको झुठलाया गया) तो तुझे तंगदिल और ग़मगीन न होना चाहिये। हाँ उन झुठलाने वालों को उनका अन्जाम देखना चाहिये जो उनसे पहले थे कि अ़ज़ाबे इलाही ने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया। पस तेरा झुठलाना तो उनके झुठलाने से भी हमारे नज़दीक ज़्यादा ना-पसन्द है, अब यह देख लें कि उन पर कैसे-कैसे अ़ज़ाब बरसते हैं। यही फ़रमान आयतः

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَا..... الخ.

में, और आयतः

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ..... الخ.

में है। कि देख ले हमने अपने पैग़म्बरों की किस तरह इमदाद फ़रमाई और उन्हें कैसे ग़ालिब किया? अपनी क़ौम को देख कि रहमान से कुफ़्र कर रही है, वह ख़ुदा के इस वस्फ़ और नाम को मानती ही नहीं।

हुदैबिया का सुलह-नामा लिखने के वक़्त मक्के के काफ़िर इस पर अड़ गये कि हम "बिस्मिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम" लिखने नहीं देंगे। हम नहीं जानते कि रहमान और रहीम क्या है। पूरी हदीस बुख़ारी में मौजूद है। क़ुरआन में हैः

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ..... الخ.

कि अल्लाह कहकर उसे पुकारो या रहमान कहकर, जिस नाम से पुकारो वह तमाम बेहतरीन नामों वाला है।

नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा के नज़दीक अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रहमान निहायत प्यारे नाम हैं। जिससे तुम कुफ़्र कर रहे हो मैं तो उसे मानता हूँ। वही मेरा परवर्दिगार है, मेरा एतिमाद उसी पर है, उसी की ओर मेरी सारी तवज्जोह, रुजू और दिल का मैलान है, उसके सिवा कोई इन बातों का मुस्तहिक़ नहीं।

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ۗ	और अगर कोई ऐसा क़ुरआन होता जिसके ज़रिये से पहाड़ (अपनी जगह से) हटा दिए जाते या उसके ज़रिये से ज़मीन जल्दी-जल्दी तय हो

Maktab E Ashraf

بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۟	जाती, या उसके ज़रिये से मुर्दों के साथ किसी को बातें करा दी जातीं (तब भी ये लोग ईमान न लाते) बल्कि सारा इख़्तियार ख़ास अल्लाह ही का है। क्या (यह सुनकर) फिर भी ईमान वालों को इस बात में तसल्ली नहीं हुई कि अगर ख़ुदा तआ़ला चाहता तो तमाम (दुनिया भर के) आदमियों को हिदायत कर देता, और (ये मक्का के) काफ़िर तो हमेशा (आए दिन) इस हालत में रहते हैं कि उनके (बुरे) किरदारों के सबब उनपर कोई न कोई हादसा पड़ता रहता है, या उनकी बस्ती के क़रीब नाज़िल होता रहता है, यहाँ तक कि अल्लाह का वायदा आ जाएगा। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करते। (31)

ع ۱۰

वह वक़्त आने वाला है

अल्लाह तआ़ला क़ुरआने करीम की तारीफ़ बयान फ़रमा रहा है कि अगर क़ुरआन से पहली किताबों में से किसी किताब के साथ पहाड़ अपनी जगह से टल जाने वाले और ज़मीन फट जाने वाली और मुर्दे जी उठने वाले होते तो यह क़ुरआन जो तमाम पहली किताबों से बढ़-चढ़कर है, उन सबसे ज़्यादा इस बात का अहल (हक़दार) था। इसमें तो बयान व अन्दाज़ का वह मोजिज़ा है कि सारे जिन्नात व इनसान मिलकर भी इस जैसी एक सूरत न बना सके। ये मुश्रिक लोग इसके भी मुन्किर हैं तो मामला अल्लाह के सुपुर्द करो, वह मालिके कुल है, तमाम चीज़ें उसी की तरफ़ लौटने वाली हैं। वह जो चाहता है हो जाता है, जो नहीं चाहता हरगिज़ नहीं होता। उसके भटकाये हुए की रहबरी और उसके राह दिखाये हुए की गुमराही किसी के क़ब्ज़े में नहीं।

यह याद रहे कि 'क़ुरआन' जब बोला जाता है तो इससे वो पहली किताबें भी मुराद होती हैं जो ख़ुदा की तरफ़ से आई हैं। इसलिये कि वह सबको अपने अन्दर समाये हुए है। मुस्नद में है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर क़ुरआन इस क़द्र आसान कर दिया गया था कि जब उनके हुक्म से सवारी पर ज़ीन और चारजामा कसा जाता तो उसके तैयार होने पहले ही वह क़ुरआन को ख़त्म कर लेते। वह अपनी हाथ की कमाई के अलावा कुछ न खाते थे। पस यहाँ क़ुरआन से मुराद ज़बूर है।

क्या ईमान वाले अब तक इससे मायूस नहीं हुए कि तमाम मख़्लूक़ ईमान नहीं लायेगी, क्या वे अल्लाह की मर्ज़ी और मंशा के ख़िलाफ़ कुछ कर सकते हैं? रब की यह मंशा ही नहीं, अगर होती तो पूरी दुनिया के इनसान मुसलमान हो जाते। भला इस क़ुरआन के बाद किस मोजिज़े की ज़रूरत दुनिया को रह गयी? इससे बेहतर, इससे स्पष्ट, इससे साफ़, इससे ज़्यादा दिलों में उतर जाने वाला और कौनसा कलाम होगा? इसे तो अगर बड़े से बड़े पहाड़ पर उतारा जाता तो वह भी ख़ुदा के ख़ौफ़ से चकनाचूर हो जाता।

Maktab E Ashraf

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- हर नबी को ऐसी चीज़ मिली कि लोग उस पर ईमान लायें, मेरी वह चीज़ ख़ुदा की वह 'वही' (यानी अल्लाह की तरफ़ से उतरा हुआ पैग़ाम अर्थात् क़ुरआन) है। पस मुझे उम्मीद है कि सब नबियों से ज़्यादा मेरी ताबेदारी होगी (यानी मेरी उम्मत सबसे ज़्यादा होगी, मेरे मानने वाले बहुत होंगे)।

मतलब यह है कि पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के मोजिज़े उनके साथ ही चले गये और मेरा यह मोजिज़ा जीता-जागता रहती दुनिया तक रहेगा, न इसके अ़जायबात (अद्भुत और आश्चर्य-चकित चीज़ें) ख़त्म होंगी न यह ज़्यादा पढ़े जाने की वजह से पुराना होगा, न इससे उलेमा सैर होंगे।

यानी इसे पढ़ने, इसमें ग़ौर करने और इसकी व्याख्या करने से कभी उकतायेंगे नहीं, बल्कि उनको क़ियामत तक इसमें अ़जीब-अ़जीब और नई-नई चीज़ें मिलती रहेंगी जिससे वे कभी इससे सैर न होंगे।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है दिल्लगी नहीं। जो सरकश इसे छोड़ देगा अल्लाह उसे तोड़ देगा, जो इसके अलावा किसी दूसरी चीज़, दीन या किताब में हिदायत तलाश करेगा उसे ख़ुदा गुमराह कर देगा। अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. फ़रमाते हैं कि काफ़िरों ने नबी करीम सल्ल. से कहा- अगर आप यहाँ के पहाड़ यहाँ से हटवा दें और यहाँ की ज़मीन खेती-बाड़ी के क़ाबिल हो जाये और जिस तरह सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ज़मीन की खुदाई हवा से कराते थे, आप भी करा दें तो हम ईमान लायें। या जिस तरह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे, आप भी कर दीजिए। इस पर यह आयत उतरी।

क़तादा रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि अगर किसी क़ुरआन (यानी इससे पहले भेजी हुई अल्लाह की किसी किताब) के साथ ये बातें ज़ाहिर होतीं तो इस तुम्हारे क़ुरआन के साथ भी होतीं। सब कुछ ख़ुदा के इख़्तियार में है, लेकिन वह ऐसा नहीं करता ताकि तुम सबको आज़मा ले, अपने इख़्तियार से ईमान लाओ या न लाओ, क्या ईमान वाले नहीं जानते?

एक क़िराअत के मुताबिक़ यह भी है कि ईमान वाले उनकी हिदायत से मायूस हो चुके थे, हाँ ख़ुदा के इख़्तियारात में किसी का ज़ोर और दख़ल नहीं, वह अगर चाहे तमाम मख़्लूक़ को हिदायत पर खड़ा कर दे। ये काफ़िर बराबर देख रहे हैं कि उनके झुठलाने की वजह से ख़ुदा के अ़ज़ाब बराबर उन पर बरसते रहते हैं या उनके आस-पास आ जाते हैं, फिर भी ये नसीहत और सीख हासिल नहीं करते? जैसे एक दूसरी जगह फ़रमाया है:

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى..... الخ.

यानी हमने तुम्हारे आस-पास की बहुत सी बस्तियों को उनकी बदकारियों की वजह से ग़ारत व बरबाद कर दिया। और तरह-तरह से अपनी निशानियाँ ज़ाहिर फ़रमायीं कि लोग बुराईयों से बाज़ रहें।

एक और आयत में है:

اَفَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا.

क्या वे नहीं देख रहे कि हम ज़मीन को घटाते चले आ रहे हैं। क्या अब भी अपना ही ग़लबा मानते चले जायेंगे?

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल किया गया है कि "क़ारिअ़ा" से मुराद आसमानी अ़ज़ाब है और आस-पास उतरने से मुराद नबी करीम सल्ल. का अपने लश्करों समेत उनकी सीमाओं में पहुँच जाना और

उनसे जिहाद करना है। उन सबका क़ौल है कि यहाँ अल्लाह के वादे से मुराद फ़त्हे मक्का है। लेकिन हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद क़ियामत का दिन है। अल्लाह का वादा अपने रसूलों की मदद व नुसरत का है, वह कभी टलने वाला नहीं। उन्हें और उनके ताबेदारों (मानने वालों और उम्मतियों) को ज़रूर बुलन्दी नसीब होगी। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَلَاتَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ. اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُوانْتِقَامٍ.

यह ग़लत गुमान हरगिज़ न करो कि अल्लाह अपने रसूलों से वादा-ख़िलाफ़ी करेगा, अल्लाह ग़ालिब है और बदला लेने वाला है।

और बहुत-से पैग़म्बरों के साथ जो आपसे पहले हो चुके हैं हँसी-ठट्ठा हो चुका है, फिर मैं उन काफ़िरों को मोहलत देता रहा, फिर मैंने उनपर दारोगीर "यानी पकड़" की, सो मेरी सज़ा किस तरह की थी। (32)	وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِo

अल्लाह के नबियों से मज़ाक़

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल सल्ल. को तसल्ली देता है कि आप अपनी क़ौम के ग़लत रवैये से रंज व फ़िक्र न करें। आपसे पहले पैग़म्बरों का भी यूँ ही मज़ाक़ उड़ाया गया था, मैंने उन काफ़िरों को भी कुछ देर तो ढील दी थी, आख़िर बुरी तरह पकड़ लिया था, और फिर बिल्कुल नेस्त व नाबूद कर दिया था। तुझे मालूम है कि किस कैफ़ियत से मेरे अ़ज़ाब उन पर आये और उनका अन्जाम कैसा कुछ हुआ। जैसे फ़रमाने ख़ुदा है- बहुत सी बस्तियाँ हैं कि बावजूद ज़ुल्म के बहुत दिनों दुनिया में मोहलत के साथ रहीं लेकिन आख़िरकार अपने बुरे आमाल की वजह से अ़ज़ाब का शिकार हुयीं। सहीहैन में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है- अल्लाह तआ़ला ज़ालिम को ढील देता है, फिर जब पकड़ता है तो वह ज़ालिम हैरान रह जाता है। फिर आपने यह आयतः

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ..... الخ.

और आपके रब की पकड़ ऐसी ही है, जब वह किसी बस्ती पर पकड़ करता है जबकि वे ज़ुल्म किया करते हैं बेशक उसकी पकड़ और गिरफ़्त बड़ी दुखदायी और सख़्त है। (सूरः हूद आयत 102)

तिलावत फ़रमाई।

फिर (भी) क्या जो (ख़ुदा) हर शख़्स के आमाल पर बाख़बर हो (और उन लोगों के शरीक क़रार दिए हुए बराबर हो सकते हैं) और उन लोगों ने ख़ुदा के लिए शरीक तजवीज़ किए हैं। आप कहिए कि (ज़रा) उन (शरीकों) का नाम तो लो, क्या तुम उसको (यानी ख़ुदा	اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ۭ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۭ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى

Maktab E Ashraf

الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ○	तआ़ला को) ऐसी बात की ख़बर देते हो कि दुनिया (भर) में उस (के वजूद) की ख़बर उस को (यानी अल्लाह को) न हो, या ख़ाली ज़ाहिरी लफ़्ज़ के एतिबार से उनको शरीक कहते हो, बल्कि काफ़िरों को अपने मुग़ालते की बातें पसन्दीदा मालूम होती हैं, और (इसी वजह से) ये लोग (हक़) रास्ते से मेहरूम रह गए। और जिसको ख़ुदा तआ़ला गुमराही में रखे उसको कोई राह पर लाने वाला नहीं। (३३)

हर चीज़ का निगराँ

अल्लाह तआ़ला हर इनसान के आमाल का मुहाफ़िज़ है, हर एक के आमाल को जानता है, हर नफ़्स (जान और प्राणी) पर निगाह रखने वाला है, हर एक के अच्छे बुरे अ़मल से बाख़बर है, कोई चीज़ उससे पोशीदा (छुपी) नहीं। कोई काम उसकी बेख़बरी में नहीं होता, हर हालत में उसे इल्म है, हर अ़मल पर वह मौजूद है, हर पत्ते के झड़ने का उसे इल्म है, हर जानदार की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है, हर एक के ठिकाने का उसे इल्म है, हर बात उसकी किताब में लिखी हुई है, खुली छुपी हर बात को यह जानता है, तुम जहाँ हो वहाँ अल्लाह तुम्हारे साथ है, तुम्हारे आमाल देख रहा है। इन सिफ़तों वाला ख़ुदा क्या तुम्हारे इन झूठे ख़ुदाओं जैसा है? जो न सुनें, न देखें औ न अपने लिये किसी चीज़ के मालिक हैं। न किसी और के नफ़े व नुक़सान का उन्हें इख़्तियार। इसका जवाब आयत ही में मौजूद है कि उन्होंने ख़ुदा के साथ औरों को शरीक ठहराया और उनकी इबादत करने लगे, तुम ज़रा उनके नाम तो बताओ, उनके हालात तो बयान करो, ताकि दुनिया जान ले कि वे बिल्कुल बेहक़ीक़त हैं।

क्या तुम ज़मीन की उन चीज़ों की ख़बर ख़ुदा को दे रहे हो जिन्हें वह नहीं जानता? यानी जिनका वजूद ही नहीं। इसलिये कि अगर वजूद होता तो इल्मे ख़ुदा से बाहर न होता। क्योंकि उस पर कोई पोशीदा से पोशीदा चीज़ भी वास्तव में छुपी हुई नहीं। या सिर्फ़ बातें बना रहे हो? तुमने ख़ुद उनके नाम गढ़ लिये, तुमने ही उन्हें नफ़े व नुक़सान का मालिक क़रार दिया, और तुमने ही उनकी पूजा-पाठ शुरू कर दी। यही तुम्हारे बड़े करते रहे। न तो तुम्हारे हाथ में कोई ख़ुदाई दलील है न और कोई दलील। यह तो सिर्फ़ वहम-परस्ती (अंधविश्वास) और अपनी इच्छाओं के पीछे चलना है। हिदायत ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल हो चुकी है, काफ़िर का मक्र (तदबीर और फ़रेब) उन्हें भले रंग में दिखाई दे रहा है, वे अपने कुफ़्र और अपने शिर्क पर ही नाज़ कर रहे हैं, दिन रात उसी में मशग़ूल हैं और उसी की तरफ़ औरों को बुला रहे हैं। जैसा कि फ़रमाया:

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ...... الخ.

उनके शैतानों ने उनके ग़लत रास्ते पर चलने को उनके सामने अच्छा और पसन्दीदा कर दिया। ये राहे ख़ुदा से, हिदायत के तरीक़े से रोक दिये गये हैं। एक क़िराअत में 'सद्दू' भी है, यानी उन्होंने इसे अच्छा

Maktab E Ashraf

जानकर फिर औरों को इसमें फाँसना शुरू कर दिया, और रसूल के रास्ते से लोगों को रोकने लगे। रब के गुमराह किये हुए लोगों को कौन राह दिखा सकता है? जैसा कि फ़रमायाः

وَمَنْ يُرِدِ اللّٰهُ لَهٗ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا.

जिसे ख़ुदा फ़ितने में डालना चाहे तू उसके लिये ख़ुदा के यहाँ कुछ भी तो इख़्तियार नहीं रखता।

एक और आयत में है कि चाहे तू उनकी हिदायत की तमन्ना और हिर्स करे लेकिन अल्लाह उन गुमराहों को रास्ता देना नहीं चाहता, फिर कौन है जो उनकी मदद करे।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ○ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ○	उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) अ़ज़ाब है, और आख़िरत का अ़ज़ाब इससे कई दर्जे ज़्यादा सख़्त है, और अल्लाह (के अ़ज़ाब) से उनको कोई बचाने वाला नहीं होगा। (34) (और) जिस जन्नत का मुत्तकियों से वायदा किया गया है उसकी कैफ़ियत यह है कि उस (की इमारतों व पेड़ों) के नीचे से नहरें जारी होंगी, उसका फल और उसका साया हमेशा रहने वाला रहेगा। यह तो अन्जाम होगा मुत्तकियों का, और काफ़िरों का अन्जाम दोज़ख़ होगा। (35)

अ़ज़ाब के ऊपर अ़ज़ाब

काफ़िरों की सज़ा और नेक काम करने वालों की जज़ा का ज़िक्र हो रहा है। काफ़िरों का कुफ़्र व शिर्क बयान फ़रमाकर उनकी सज़ा बयान फ़रमाई गयी, कि वे मोमिनों के हाथों क़त्ल व ग़ारत होंगे। इसके साथ ही आख़िरत के बहुत सख़्त अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे, जो इस दुनिया की सज़ा से कहीं ज़्यादा बढ़ा हुआ है। एक दूसरे पर लानत करने वाले मियाँ-बीवी से रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया था कि दुनिया का अ़ज़ाब आख़िरत के अ़ज़ाब से बहुत ही हल्का है। यहाँ का अ़ज़ाब फ़ानी वहाँ का बाक़ी। और उस आग का अ़ज़ाब जो यहाँ की आग से सत्तर हिस्से ज़्यादा तेज़ है। फिर क़ैद वह जो तसव्वुर और ख़्याल में भी न आ सके। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान हैः

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗ اَحَدٌ...... الخ.

उस जैसे न अ़ज़ाब किसी के न उस जैसी क़ैद व बन्द किसी की।

एक जगह फ़रमान हैः

وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا...... الخ.

क़ियामत के मुन्किरों के लिये हमने आग का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। दूर से उन्हें देखते ही शोर व हंगामा शुरू कर देगी। वहाँ के तंग और अंधेरे मकानों में जब ये जकड़े हुए डाले जायेंगे तो हाय-हाय करते

Maktab E Ashraf

हुए मौत माँगने लगेंगे। एक ही मौत क्या माँगते हो बहुत सी मौतें माँगो। अब बतलाओ कि यह ठीक है या हमेशा की जन्नत ठीक है, जिसका वादा परहेज़गारों से है कि वह उनका बदला है, और उनका हमेशगी का ठिकाना।

फिर नेक लोगों का अन्जाम बयान फ़रमाता है कि उनसे जिन जन्नतों का वादा है, उसकी एक सिफ़त तो यह है कि उसके हर तरफ़ नहरें जारी हैं, जहाँ चाहें पानी ले जायें। पानी भी न बिगड़ने वाला। फिर दूध की नहरें हैं, और दूध भी ऐसा जिसका ज़ायक़ा और स्वाद कभी न बिगड़े। और शराब की नहरें हैं, जिसमें सिर्फ़ लज़्ज़त ही लज़्ज़त है। न बद-मज़गी न बेहूदा नशा।

यानी न तो उसका स्वाद ही ख़राब है जैसे दुनिया की शराब में होता है, और न नशा जिससे इनसान की अ़क़्ल काम करना बन्द कर देती है, उसको अच्छे बुरे की तमीज़ नहीं रहती, और बहुत सी बार इनसान को शराब के नशे में गन्दी चीज़ों के खाने और गन्दी जगहों में पड़े रहने का भी एहसास नहीं होता।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

और साफ़ शहद की नहरें हैं, और हर क़िस्म के फल हैं। और साथ ही रब की रहमत, मालिक की मग़फ़िरत। उसके फल हमेशगी वाले हैं, उसकी खाने पीने की चीज़ें कभी फ़ना होने वाली नहीं। जब अल्लाह के रसूल सल्ल. ने कुसूफ़ (सूरज ग्रहण) की नमाज़ पढ़ी थी तो सहाबा ने पूछा कि हुज़ूर हमने आपको देखा कि आपने किसी चीज़ को गोया लेने का इरादा किया था, फिर हमने देखा कि आप पिछले पाँव पीछे को हटने लगे? आपने फ़रमाया हाँ मैंने जन्नत को देखा था, और चाहा था कि एक ख़ोशा (फलों का एक गुच्छा) तोड़ लूँ। अगर ले लेता तो रहती दुनिया तक वह रहता और तुम खाते रहते।

अबू यअ़ला में है कि हम एक दिन ज़ोहर की नमाज़ में नबी करीम सल्ल. के साथ थे कि आप अचानक आगे बढ़े और हम भी बढ़े, और फिर हमने देखा कि आपने गोया कोई चीज़ लेने का इरादा किया, फिर आप पीछे हट आये। नमाज़ के समापन के बाद हज़रत उबई बिन कअ़ब ने दरियाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! आज तो हमने आपको ऐसा काम करते हुए देखा कि आज से पहले कभी न देखा था। आपने फ़रमाया हाँ मेरे सामने जन्नत पेश की गयी, जो तरोताज़गी से महक रही थी, मैंने चाहा कि उसमें से एक गुच्छा अंगूर का तोड़ लूँ लेकिन मेरे और उसके बीच एक आड़ कर दी गयी, अगर मैं उसे तोड़ लेता तो तमाम दुनिया अपनी पूरी उम्र में उसे खाती रहती, और फिर भी ज़रा सा भी कम न होता।

एक देहाती ने नबी करीम सल्ल. से पूछा कि जन्नत में अंगूर होंगे? आपने फ़रमाया हाँ, उसने कहा कितने बड़े गुच्छे होंगे? फ़रमाया इतने बड़े कि अगर कोई काला कौआ महीने भर उड़ता रहे तो भी उस गुच्छे से आगे न निकल सके। एक और हदीस में है कि जन्नती जब कोई फल तोड़ेंगे उसी वक़्त उसकी जगह दूसरा लग जायेगा। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- जन्नती ख़ूब खायें पियेंगे लेकिन न थूक की ज़रूरत होगी और न नाक की, न पेशाब न पाख़ाना, मुश्क जैसी ख़ुशबू वाला पसीना आयेगा और उसी से खाना हज़्म हो जायेगा जैसे साँस बेतकल्लुफ़ चलता है इस तरह तस्बीह व तक़दीस (यानी अल्लाह की पाकी और बड़ाई) उनके दिलों में डाली जायेगी। (मुस्लिम वग़ैरह)

एक अहले किताब ने हुज़ूर सल्ल. से कहा- आप फ़रमाते हैं कि जन्नती खायें पियेंगे? आपने फ़रमाया हाँ! उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है कि हर शख़्स को खाने पीने और सोहबत व शहवत की इतनी क़ुव्वत दी जायेगी जितनी यहाँ सौ आदमियों को मिलकर हो। उसने कहा अच्छा तो जो खायेगा

Maktab E Ashraf

पियेगा उसे पेशाब पाख़ाना की भी हाजत होगी? फिर जन्नत में गन्दगी कैसी? आपने फ़रमाया नहीं! बल्कि पसीने के रास्ते सब हज़म हो जायेगा, और वह पसीना मुश्क जैसा होगा। (मुस्नद व नसाई)

फ़रमाते हैं कि जिस परिन्दे की तरफ़ खाने के इरादे से जन्नती नज़र डालेगा वह उसी वक़्त भुना भुनाया उसके सामने गिर पड़ेगा। बाज़ रिवायतों में है कि फिर वह उसी तरह अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा होकर उड़ जायेगा। क़ुरआन में है कि वहाँ बहुत ज़्यादा मेवे होंगे कि न कटेंगे न टूटेंगे न ख़त्म होंगे न घटेंगे। साये झुके हुए शाख़ें नीची, साये भी हमेशा रहेंगे। जैसे कि अल्लाह का फ़रमान है- ईमान वाले नेक किरदार बहती नहरों वाली जन्नतों में जायेंगे, वहाँ उनके लिये पाक बीवियाँ होंगी और बेहतरीन लम्बे चौड़े साये। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- जन्नत के एक दरख़्त के साये के नीचे तेज़-सवारी सौ साल तक तेज़ दौड़ाई जायेगी, लेकिन फिर भी उसका साया ख़त्म न होगा। क़ुरआन शरीफ़ में है कि साये हैं फैले और बढ़े हुए।

आ़म तौर पर क़ुरआने करीम में जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र एक साथ आता है, ताकि लोगों को जन्नत का शौक़ हो और दोज़ख़ से डर लगे। यहाँ भी जन्नत और वहाँ की चन्द नेमतों का ज़िक्र करके फ़रमाया कि यह है अन्जाम परहेज़गार और तक़वे वाले लोगों का। और काफ़िरों का अन्जाम और ठिकाना जहन्नम है। जैसा कि फ़रमाया कि जहन्नमी और जन्नती बराबर नहीं। जन्नती बामुराद और कामयाब हैं।

ख़तीबे दमिश्क़ हज़रत बिलाल बिन सअ़्द रह. फ़रमाते हैं कि ऐ ख़ुदा के बन्दो! क्या तुम्हारे किसी अ़मल की क़बूलियत का या किसी गुनाह की माफ़ी का कोई परवाना तुममें से किसी को मिल गया? क्या तुमने यह गुमान कर लिया है कि तुम बेकार पैदा किये गये हो, और तुम ख़ुदा के बस में आने वाले नहीं? ख़ुदा की क़सम अगर अल्लाह की इताअ़त का बदला दुनिया में ही मिलता तो तुम तमाम नेकियों पर जम जाते, क्या तुम दुनिया पर ही लट्टू हो गये हो? क्या इसी के पीछे मर मिटोगे? क्या तुम्हें जन्नत की रग़बत (चाहत और दिलचस्पी) नहीं? जिसके फल और जिसके साये हमेशा रहने वाले हैं। (इब्ने अबी हातिम)

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝ ع ٥ ١١

और जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उस (किताब) से ख़ुश होते हैं जो आप पर नाज़िल की गई है, और उन्हीं के गिरोह में बाज़े ऐसे हैं कि उसके कुछ हिस्से का इनकार करते हैं। आप फ़रमाइए कि मुझको यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह तआ़ला की इबादत करूँ और किसी को उसका शरीक न ठहराऊँ। मैं उसी (अल्लाह ही) की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मुझको जाना है। (36) और इसी तरह हमने उसको इस तौर पर नाज़िल किया कि वह एक ख़ास हुक्म है, अ़रबी (ज़बान में)। और अगर आप (मान लो, अगरचे ऐसा होना नामुम्किन है) उनके नफ़्सानी ख़्यालात की पैरवी करने लगें इसके बाद कि आपके पास (सही) इल्म पहुँच चुका है, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न कोई आपका मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (37)

Maktaba E Ashraf

दो फ़िर्क़े

जिन लोगों को इससे पहले किताब दी गयी थी और वे उसके आ़मिल (अ़मल करने वाले) हैं, वे तो इस क़ुरआन के तुझ पर उतरने से ख़ुश हो रहे हैं, क्योंकि ख़ुद उनकी किताबों में उसकी ख़ुशख़बरी और इसकी सच्चाई मौजूद है। जैसा कि इस आयत में है:

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ....الخ.

कि पहली किताबों को अच्छे तरीक़े से पढ़ने वाले इस आख़िरी किताब पर भी ईमान लाते हैं।

एक और आयत में है कि तुम मानो या न मानो पहली किताबों वाले तो इसके सच्चे ताबेदार बन जाते हैं...। क्योंकि उनकी किताबों में नबी करीम सल्ल. की रिसालत की ख़बर है और वे उस वादे को पूरा देखकर ख़ुशी से मान लेते हैं। अल्लाह तआ़ला इससे पाक है कि उसके वादे ग़लत निकलें, और उसके फ़रमान सही साबित न हों। पस वे ख़ुश होते हुए अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दे में गिर पड़ते हैं। हाँ इन जमाअ़तों में ऐसे भी हैं जो उसकी बाज़ बातों को नहीं मानते।

ग़र्ज़ यह कि बाज़ अहले किताब मुसलमान हैं, बाज़ नहीं। तो ऐ नबी! ऐलान कर दो कि मुझे सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत का हुक्म मिला हुआ है कि दूसरे की शिर्कत के बग़ैर उसी की इबादत की तरफ़ मैं तमाम दुनिया को दावत देता हूँ, उसी ख़ुदा की तरफ़ सबको बुलाता हूँ और उसी ख़ुदा की तरफ़ मेरा लौटना है। जिस तरह हमने तुमसे पहले नबी भेजे उन पर अपनी किताबें नाज़िल फ़रमायीं, इसी तरह यह क़ुरआन जो मोहकम और मज़बूत है, अ़रबी ज़बान में, जो तेरी और तेरी क़ौम की ज़बान (भाषा) है, इस क़ुरआन को हमने तुझ पर नाज़िल फ़रमाया।

यह भी तुझ पर ख़ास एहसान है कि इस स्पष्ट, ज़ाहिर, विस्तृत और मोहकम किताब के साथ तुझे ही हमने नवाज़ा, कि न इसके आगे से बातिल (ग़ैर-हक़) आ सके न इसके पीछे से आकर इसमें मिल सके। यह हकीम (हिक्मत वाले) व हमीद (तारीफ़ वाले) ख़ुदा की तरफ़ से उतरा है। ऐ नबी तेरे पास ख़ुदाई इल्म और आसमानी 'वही' आ चुकी है। अब भी अगर तूने उनकी ख़्वाहिश की पैरवी की तो याद रख कि ख़ुदाई अ़ज़ाब से तुझे कोई भी न बचा सकेगा। न कोई तेरी हिमायत पर खड़ा होगा।

हुज़ूरे पाक के तरीक़े और सुन्नत के इल्म के बाद जो गुमराही वालों के रास्तों को इख़्तियार करें उन उलेमा के लिये इस आयत में ज़बरदस्त वईद (डाँट-डपट) है।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ○ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ○	और हमने यक़ीनन आपसे पहले बहुत-से रसूल भेजे, और हमने उनको बीवियाँ और बच्चे भी दिए, और किसी पैग़म्बर के इख़्तियार में यह बात नहीं कि एक आयत भी बिना ख़ुदा तआ़ला के हुक्म के ला सके, हर ज़माने के (मुनासिब ख़ास-ख़ास) अहकाम (होते) हैं। (38) ख़ुदा तआ़ला (ही) जिस (हुक्म) को चाहे मौक़ूफ़ (निरस्त और स्थगित) कर देते हैं और जिस (हुक्म) को चाहें क़ायम रखते हैं, और असल किताब उन्हीं के पास है। (39)

Maktaba E Ashraf

उम्मुल-किताब (लौहे महफ़ूज़)

इरशाद है कि जैसे आप बावजूद इनसान होने के रसूले ख़ुदा हैं, ऐसे ही आपसे पहले तमाम रसूल भी इनसान ही थे। खाना खाते थे, बाज़ारों में चलते फिरते, बीवी बच्चों वाले थे। एक और आयत में है कि ऐ तमाम रसूलों से अफ़ज़ल! आप लोगों से कह दीजिए किः

اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ

मैं भी तुम जैसा ही एक इनसान हूँ। मेरी तरफ़ ख़ुदा की 'वही' आती है।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं नफ़्ली रोज़े रखता हूँ और नहीं भी रखता। रातों को तहज्जुद भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ। गोश्त भी खाता हूँ और औरतों से भी मिलता हूँ। जो शख़्स मेरे तरीक़े से मुँह मोड़ ले वह मेरा नहीं।

मुस्नद अहमद में आपका इरशाद है कि चार चीज़ें तमाम अम्बिया का तरीक़ा रहीं- ख़ुशबू लगाना, निकाह करना, मिस्वाक करना और मेहंदी।

फिर फ़रमाता है कि मोजिज़े ज़ाहिर करना किसी नबी के बस की बात नहीं, यह अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े की चीज़ है, वह जो चाहता है करता है। जो इरादा करता है हुक्म देता है, हर एक का मुक़र्रर वक़्त और मालूम मुद्दत किताब में लिखी हुई है। हर चीज़ का एक अन्दाज़ा तय और मुक़र्रर है, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ों का अल्लाह को इल्म है। सब कुछ किताब में मौजूद है। यह तो अल्लाह पर बहुत ही आसान है। हर किताब की जो आसमान से उतरी है एक मुद्दत मुक़र्रर है। उनमें से जिसे चाहता है मन्सूख़ कर देता है, जिसे चाहता है बाक़ी रखता है। पस इस क़ुरआन से जो उसने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल फ़रमाया है, तमाम पहली किताबें मन्सूख़ हो गयीं, अल्लाह तआ़ला जो चाहे मिटा दे, जो चाहे बाक़ी रखे। साल भर के मामलात मुक़र्रर कर दिये, लेकिन इख़्तियार से बाहर नहीं, जो चाहा बाक़ी रखा जो चाहा बदल दिया, सिवाय बदबख़्ती नेकबख़्ती, ज़िन्दगी और मौत के कि इनसे फ़रागत हासिल कर ली गयी है। इनमें तब्दीली नहीं होती।

मन्सूर कहते हैं कि मैंने हज़रत मुजाहिद रह. से पूछा- यह दुआ़ करना कैसा है कि इलाही अगर मेरा नाम नेक लोगों में है तो बाक़ी रख और अगर बुरों में है तो उसे हटा दे और नेकों में कर दे। आपने फ़रमाया यह तो अच्छी दुआ़ है। साल भर के बाद फिर मुलाक़ात हुई या कुछ ज़्यादा अ़रसा गुज़र गया था, तो मैंने फिर उनसे यही बात दरियाफ़्त की। आपने फ़रमायाः

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ.........

(सूरः दुख़ान आयत 3 और 4) दो आयतों की तिलावत की और फ़रमाया शबे-क़द्र में साल भर की रोज़ी और मुसीबतें वग़ैरह मुक़र्रर हो जाती हैं, फिर जो ख़ुदा चाहे आगे-पीछे करता है। हाँ नेकबख़्ती व बदबख़्ती की किताब नहीं बदलती। हज़रत शफ़ीक़ बिन सलमा अक्सर यह दुआ़ किया करते थे- ऐ अल्लाह! अगर तूने हमें बदबख़्तों में लिखा है तो उसे मिटा दे और हमको नेकों में लिख दे, और अगर तूने हमें नेक लोगों में लिखा है तो उसे बाक़ी रख। तू जो चाहे मिटा दे और जो चाहे बाक़ी रखे। असल किताब तेरे ही पास है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करते हुए रोते-रोते यह दुआ़

Maktab E Ashraf

पढ़ा करते थे- ऐ अल्लाह! अगर तूने मुझ पर बुराई और गुनाह लिख रखे हैं तो उन्हें मिटा दे। तू जो चाहे मिटाता है जो चाहे बाक़ी रखता है। उम्मुल-किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) तेरे पास ही है, तू उसे सआ़दत और रहमत कर दे। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. भी यही दुआ़ किया करते थे। कअ़ब रज़ि. ने अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि. से कहा कि अगर एक आयत किताबुल्लाह में न होती तो मैं क़ियामत तक जो मामलात होने वाले हैं सब आपको बता देता। पूछा कि वह कौनसी आयत है? आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

इन तमाम अक़वाल का मतलब यह है कि तक़दीर का उलट-फेर ख़ुदा के इख़्तियार की चीज़ है। चुनाँचे मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि बाज़ गुनाहों की वजह से इनसान अपनी रोज़ी से मेहरूम कर दिया जाता है। और तक़दीर को दुआ़ के सिवा कोई चीज़ बदल नहीं सकती। और उम्र की ज़्यादती करने वाली सिवाय नेकी के कोई चीज़ नहीं। नसाई और इब्ने माजा में भी यह हदीस है।

एक और सही हदीस में है कि सिला-रहमी (यानी रिश्ते को जोड़ना और रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करना) उम्र बढ़ाती है। एक और हदीस में है कि दुआ़ और क़ज़ा दोनों की मुठभेड़ ज़मीन व आसमान के बीच होती है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला के पास लौहे-महफ़ूज़ है जो पाँच सौ साल के रास्ते की है। सफ़ेद मोती की है, याक़ूत के। दो पठों के दरमियान, तरेसठ बार अल्लाह तआ़ला उस पर तवज्जोह फ़रमाता है, जो चाहता है मिटाता है, जो चाहता है बरक़रार रखता है। उम्मुल-किताब उसी के पास है। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि रात की तीन साअ़तें (घड़ियाँ) बाक़ी रहने पर ज़िक्र खोला जाता है, पहली साअ़त में उस ज़िक्र पर नज़र डाली जाती है जिसे उसके सिवा कोई और नहीं देखता। पस जो चाहता मिटाता है, जो चाहता है बरक़रार रखता है।

कलबी फ़रमाते हैं कि इससे रोज़ी को बढ़ाना घटाना, उम्र को बढ़ाना घटाना मुराद है। उनसे पूछा गया कि आपसे यह बात किसने बयान की? फ़रमाया अबू सालेह ने, उनसे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने रिआब ने, उनसे नबी सल्ल. ने। फिर उनसे आयत के बारे में सवाल हुआ तो जवाब दिया कि सब बातें लिखी जाती हैं। जुमेरात के दिन उनमें जो बातें जज़ा सज़ा से ख़ाली हों निकाल दी जाती हैं, जैसे तेरा यह क़ौल कि मैंने खाया मैंने पिया मैं आया मैं गया वग़ैरह। जो सच्ची बातें हैं वे सवाब व अ़ज़ाब की चीज़ें नहीं, और बाक़ी जो सवाब व अ़ज़ाब की चीज़ें हैं वे रख ली जाती हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि दो किताबें हैं- एक में कमी ज़्यादती होती है और अल्लाह के पास है। असल किताब वही है। फ़रमाते हैं इससे मुराद वह शख़्स है जो एक ज़माने तक अल्लाह की इताअ़त (हुक्म मानने) में लगा रहता है, फिर नाफ़रमानी और गुनाहों में लग जाता है और उसी पर मरता है। पस उसकी नेकी मिटा दी जाती है। और जिसके लिये साबित रहती है यह वह है जो इस वक़्त तो नाफ़रमानियों में मशग़ूल है, लेकिन ख़ुदा की तरफ़ से उसके लिये फ़रमाँबरदारी पहले से मुक़र्रर हो चुकी है, पस आख़िरी वक़्त वह ख़ैर पर लग जाता है और ताअ़ते ख़ुदा में मरता है। यह है जिसके लिये साबित (यानी बाक़ी) रहती है।

सईद बिन जुबैर फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि जिसे चाहे बख़्शे, जिसे चाहे न बख़्शे। इब्ने अ़ब्बास का क़ौल है कि जो चाहता है ख़त्म और निरस्त करता है जो चाहता है तब्दील नहीं करता। चीज़ों और मामलात को अदलने-बदलने का इख़्तियार उसी के पास है। बक़ौल क़तादा रह. यह आयत इस आयत जैसी है:

مَانَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْنُنْسِهَا.......الخ.

यानी जो चाहे मन्सूख़ (निरस्त और ख़त्म) कर दे, जो चाहे बाक़ी रखे।

मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जब इससे पहले की आयत उतरी कि कोई रसूल बग़ैर ख़ुदा के फ़रमान के कोई मोजिज़ा नहीं दिखा सकता, तो क़ुरैश के काफ़िरों ने कहा, फिर तो मुहम्मद बिल्कुल बेबस हैं। काम से तो फ़राग़त हासिल हो चुकी है, पस उन्हें डराने के लिये यह आयत उतरी कि हम जो चाहें कर दें। हर रमज़ान में नौपैद होती है। फिर अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है, जो चाहता है बाक़ी रखता है। रोज़ी भी देता है, तकलीफ़ भी और तक़सीम भी।

हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि जिसकी अजल (मौत और मुक़र्ररा वक़्त) आ जाये वह चल बसता है, न आयी हो तो रह जाता है, यहाँ तक कि अपने दिन पूरे कर ले। इब्ने जरीर रह. इस क़ौल को पसन्द फ़रमाते हैं। हलाल हराम उसके पास है, किताब का ख़ुलासा और जड़ उसी के हाथ है, किताब ख़ुद रब्बुल-आ़लमीन के पास ही है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कअ़ब से उम्मुल-किताब के बारे में दरियाफ़्त किया तो आपने जवाब दिया कि अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को और मख़्लूक़ के आमाल को जान लिया, फिर कहा कि किताब की सूरत में हो जाये, तो ऐसा ही हो गया। इब्ने अ़ब्बास फ़रमाते हैं- उम्मुल-किताब से मुराद ज़िक्र है।

और जिस (बात) का हम उनसे वायदा कर रहे हैं उसमें का बाज़ (वाक़िआ) अगर हम आपको दिखला दें या हम आपको वफ़ात दे दें, पस आपके ज़िम्मे तो सिर्फ़ (अहकाम का) पहुँचा देना है और दारोगीर "यानी पूछताछ और पकड़" करना हमारा काम है। (40) क्या वे इस (बात) को नहीं देख रहे हैं कि हम ज़मीन को हर (चारों) तरफ़ से लगातार कम करते चले आते हैं। और अल्लाह (जो चाहता है) हुक्म करता है, उसके हुक्म को कोई हटाने वाला नहीं, और वह बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। (41)	وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ○ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ○

सिर्फ़ अहकाम की तब्लीग़

तेरे दुश्मनों पर जो हमारे अ़ज़ाब आने वाले हैं वे हम तेरी ज़िन्दगी में लायें तो, और तेरे इन्तिक़ाल के बाद लायें तो, तुझे क्या? तेरा काम तो सिर्फ़ हमारा पैग़ाम पहुँचा देना है। वह तू कर चुका। उनका हिसाब उनका बदला हमारे हाथ में है, तू सिर्फ़ उन्हें नसीहत कर दे। तू उन पर कोई दरोग़ा और निगराँ नहीं। जो मुँह मोड़ेगा और कुफ़्र करेगा उसे अल्लाह ख़ुद बड़ी सज़ाओं में दाख़िल कर देगा। उनको लौटना तो हमारी तरफ़ ही है और उनका हिसाब भी हमारे ज़िम्मे है। क्या वे नहीं देखते कि हम ज़मीन को तेरे क़ब्ज़े में देते आ रहे हैं? क्या वे नहीं देखते कि आबाद और आ़लीशान महल खंडर और वीराने बनते जा रहे हैं? क्या वे नहीं देखते कि मुसलमान काफ़िरों को दबाते चले आ रहे हैं? क्या वे नहीं देखते कि बरकतें उठती जा रही

Maktaba Ashraf

हैं, ख़राबियाँ आती जा रही हैं? लोग मरते जा रहे हैं, ज़मीन उजड़ती जा रही है? ख़ुद ज़मीन ही अगर तंग होती जाती तो इनसान को छप्पर डालना भी मुहाल हो जाता। मक़सद इनसानों और दरख़्तों का कम होते रहना है। मुराद इससे ज़मीन की तंगी नहीं, बल्कि लोगों की मौत है। उलेमा व फ़ुक़हा और भले लोगों की मौत भी ज़मीन की बरबादी है। अ़रब का एक शायर कहता है।

اَلْاَرْضُ تَحْيَا اِذَامَا عَاشَ عَالِمُهَا ۔ مَتٰی یَمُتْ عَالِمٌ مِّنْهَا یَمُتْ طَرَفٌ

کَالْاَرْضِ تَحْیَا اِذَامَا الْغَیْثُ حَلَّ بِهَا ۔ وَاِنْ اَبٰی عَادَ فِیْ اَکْنَافِهَا التَّلَفُ

यानी जहाँ कहीं जो आ़लिमे दीन है, वहाँ की ज़मीन की ज़िन्दगी उसी से है। उसकी मौत ज़मीन की वीरानी और ख़राबी है। जैसे कि बारिश जिस ज़मीन पर बरसे लहलहाने लगती है, और अगर न बरसे तो सूखने और बंजर होने लगती है।

पस आयत में मुराद इस्लाम का शिर्क पर ग़ालिब आना और एक के बाद एक बस्ती को ताबे करना है। जैसा कि फ़रमायाः

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى..... الخ.

यानी हमने तुम्हारे आस-पास की बहुत सी बस्तियों को उनकी बदकारियों की वजह से ग़ारत व बरबाद कर दिया। और तरह-तरह से अपनी निशानियाँ ज़ाहिर फ़रमायीं कि लोग बुराईयों से बाज़ रहें।

यही क़ौल इमाम इब्ने जरीर रह. का भी पसन्दीदा है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ○	और उनसे पहले जो (काफ़िर) लोग हो चुके हैं उन्होंने तदबीरें कीं, सो असल तदबीर तो ख़ुदा ही की है, उसको सब ख़बर रहती है जो शख़्स जो कुछ भी करता है, और उन काफ़िरों को अभी मालूम हुआ जाता है कि उस आ़लम "यानी आख़िरत" में नेक अन्जामी किसके हिस्से में है। (42)

ख़ुफ़िया तदबीरें और उनका बदला

पहले काफ़िरों ने भी अपने नबियों के साथ मक्र (फ़रेब, धोखा और मक्कारियाँ) किया। उन्हें निकालना चाहा, ख़ुदा ने उनके मक्र का बदला लिया, अन्जाम आख़िरकार परहेज़गारों का ही अच्छा हुआ। इससे पहले के ज़माने के काफ़िरों की कारस्तानी बयान हो चुकी है कि वे आपको क़ैद करने, क़त्ल करने या शहर से निकालने का मश्विरा कर रहे थे। वह मक्र (तदबीर और साज़िश) में थे और अल्लाह उनकी घात में था, भला अल्लाह से ज़्यादा अच्छी पोशीदा तदबीर किसकी हो सकती है? उनके मक्र पर हमने भी यही किया और ये बेख़बर रहे। देख ले कि उनके मक्र का अन्जाम क्या हुआ? यही कि हमने उन्हें ग़ारत कर दिया, और उनकी सारी क़ौम को बरबाद कर दिया, उनके ज़ुल्म की गवाही देने वाले उनकी ग़ैर-आबाद बस्तियों के खंडरात अभी मौजूद हैं। हर एक के हर एक अ़मल से ख़ुदा तआ़ला वाक़िफ़ है। छुपकर किये जाने वाले

Maktab E Ashraf

अमल यहाँ तक कि दिल के भेद और दिल में आने वाली बातें और ख़्यालात भी उस पर ज़ाहिर हैं। हर आ़मिल (अमल करने वाले) को उसके आमाल का बदला देगा। इन काफ़िरों को अभी मालूम हो जायेगा कि अन्जाम आख़िरकार किसका अच्छा रहता है, उनका या मुसलमानों का? अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाह तआ़ला ने हमेशा हक़ वालों को ही ग़ालिब रखा है। अन्जाम के एतिबार से यही अच्छे रहते हैं, दुनिया व आख़िरत इनकी ही संवरती है।

और (ये) काफ़िर लोग (यूँ) कह रहे हैं कि (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) आप पैग़म्बर नहीं, आप फ़रमा दीजिए कि (मेरी नुबुव्वत पर) मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह और वह शख़्स जिसके पास (आसमानी) किताब का इल्म है, काफ़ी गवाह हैं। (43)	وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝

ع ٦ ١٢

आसमानी किताब का इल्म

काफ़िर तुझे झुठला रहे हैं, रिसालत के इनकारी हैं। तू ग़म न कर, कह दिया कर कि ख़ुदा की शहादत (गवाही) काफ़ी है, मेरी नुबुव्वत का वह ख़ुद गवाह है। मेरी तब्लीग़ पर, तुम्हारे झुठलाने पर वह शाहिद है। मेरी सच्चाई, तुम्हारे तोहमत लगाने को वह देख रहा है। आसमानी किताब का इल्म जिसके पास है इससे मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम हैं। यह क़ौल हज़रत मुजाहिद रह. वग़ैरह का है लेकिन बहुत ग़रीब क़ौल है। इसलिये कि यह आयत मक्का शरीफ़ में उतरी है और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. तो हिजरत के बाद मदीना में मुसलमान हुए हैं। इससे ज़्यादा ज़ाहिर इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि यहूद व ईसाईयों के हक़ कहने वाले आ़लिम मुराद हैं। हाँ उनमें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम भी हैं, और हज़रत सलमान व हज़रत तमीम दारी वग़ैरह भी।

हज़रत मुजाहिद रह. से एक रिवायत है कि इससे मुराद भी ख़ुद ख़ुदा तआ़ला है। हज़रत सईद रह. इससे इनकार करते थे, कि इससे मुराद हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने सलाम लिये जायें। क्योंकि यह आयत मक्की है और आयत को 'मिन इन्दिही' पढ़ते थे। यही क़िराअत मुजाहिद और हसन बसरी से भी नक़ल की गयी है। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यही क़िराअत है, लेकिन वह हदीस साबित नहीं। सही बात यही है कि यह इस्मे जिन्स है, हर वह आ़लिम जो पहली किताब का आ़लिम है, इसमें दाख़िल है। उनकी किताबों में नबी करीम सल्ल. की सिफ़त और आपकी ख़ुशख़बरी मौजूद थी। उनके नबियों ने आपके बारे में भविष्यवाणी कर दी थी, जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ...... الخ.

यानी मेरी रहमत ने तमाम चीज़ों को घेर रखा है। मैं उसे उन लोगों के नाम लिख दूँगा जो मुत्तक़ी हैं, ज़कात के अदा करने वाले हैं, हमारी आयतों पर ईमान रखने वाले हैं। रसूले ख़ुदा नबी-ए-उम्मी सल्ल. की इताअ़त करने वाले हैं, जिसका ज़िक्र अपनी किताब तौरात व इन्जील में मौजूद पाते हैं।

एक और आयत में है कि क्या यह बात भी उनके लिये काफ़ी नहीं कि इसके (यानी हुज़ूरे पाक के)

Maktab-E-Ashraf

हक़ (नबी और सच्चा) होने का इल्म बनी इस्राईल के उलेमा को भी है। एक बहुत ही ग़रीब हदीस में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने यहूद के उलेमा से कहा- मेरा इरादा है कि अपने बाप इब्राहीम व इस्माईल की मस्जिद में जाकर ईद मनायें। मक्का पहुँचे, नबी करीम सल्ल. यहीं थे। यह लोग जब हज से लौटे तो आपसे मुलाक़ात हुई, उस वक़्त आप एक मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे और लोग भी आपके पास थे, यह भी मय अपने साथियों के खड़े हो गये, आपने इनकी तरफ़ देखकर पूछा कि आप ही अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम हैं? कहा हाँ। फ़रमाया क़रीब आओ, जब क़रीब गये तो आपने फ़रमाया क्या तुम मेरा ज़िक्र तौरात में नहीं पाते? उन्होंने फ़रमाया आप ख़ुदा तआ़ला के औसाफ़ (ख़ूबियाँ) मेरे सामने बयान फ़रमाईये। उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये, आपके सामने खड़े हो गये और अ़र्ज़ किया कि कहो:

قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ.........

आपने "क़ुल् हुवल्लाहु अहद" वाली पूरी सूरत पढ़कर सुनाई। इब्ने सलाम ने उसी वक़्त कलिमा पढ़ लिया, मुसलमान हो गये, मदीना वापस चले आये, लेकिन अपने इस्लाम को छुपाये रहे। जब हुज़ूर सल्ल. हिजरत करके मदीना पहुँचे, उस वक़्त आप खजूर के एक पेड़ पर चढ़े हुए खजूरें उतार रहे थे कि आपको ख़बर पहुंची, उसी वक़्त दरख़्त से कूद पड़े, माँ कहने लगीं कि अगर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम भी आ जाते तो तुम पेड़ से न कूदते, क्या बात है? जवाब दिया कि अम्माँ जी! हज़रत मूसा की नुबुव्वत से भी ज़्यादा ख़ुशी मुझे तमाम रसूलों के सरदार और आख़िरी रसूल के यहाँ तशरीफ़ लाने से हुई है।

अल्लाह का शुक्र है, सूरः रअ़द की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः इब्राहीम

सूरः इब्राहीम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

الٓرٰ قف كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ٥ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ٥ نِ الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ ۢ بَعِيْدٍ٥

अलिफ़्-लाम-रा। यह (क़ुरआन) एक किताब है जिसको हमने आप पर नाज़िल फ़रमाया है ताकि आप तमाम लोगों को उनके परवर्दिगार के हुक्म से अन्धकार से निकालकर रोशनी की तरफ़ यानी ख़ुदा-ए-ग़ालिब तारीफ़ वाले की राह की तरफ़ लाएँ। (1) (वह ऐसा ख़ुदा है) कि उसी की मिल्क है जो कुछ कि आसमानों में है और जो कुछ कि ज़मीन में है, और बड़ी ख़राबी यानी बड़ा सख़्त अ़ज़ाब है (2) उन (काफ़िरों) को जो कि दुनियावी ज़िन्दगानी को आख़िरत पर तरजीह देते हैं, और (बल्कि) अल्लाह की (ज़िक्र हुई) राह से रोकते हैं और उसमें टेढ़ (यानी शुब्हात) को ढूँढते रहते हैं। ऐसे लोग बड़ी दूर की गुमराही में हैं। (3)

अल्लाह की तरफ़ से उतरी हुई किताब

'हुरूफ़े मुक़त्तआ़त' जो सूरतों के शुरू में आते हैं इनका बयान पहले गुज़र चुका है। ऐ नबी (सल्ल.) यह अ़ज़ीमुश्शान किताब हमने तेरी तरफ़ उतारी है। यह किताब तमाम किताबों से ऊँची, रसूल तमाम रसूलों से अफ़ज़ल व बुलन्द रुतबे वाला। जहाँ उतरी वह जगह दुनिया की तमाम जगहों से बेहतरीन और उम्दा। इस किताब की पहली ख़ूबी यह है कि इसके ज़िक्र से तू लोगों को अंधेरों से उजाले में ला सकता है। तेरा पहला काम यह है कि गुमराहियों को हिदायत से, बुराईयों को भलाईयों से बदल दे। ईमान वालों का हिमायती ख़ुद ख़ुदा है, वह उन्हें अंधेरों से उजाले में लाता है। और काफ़िरों के साथी ख़ुदा के अ़लावा और दूसरे हैं जो उन्हें नूर से हटाकर अंधेरियों में फंसा देते हैं। अल्लाह अपने हक़-परस्त बन्दे पर अपनी रोशन और वाज़ेह निशानियाँ उतारता है ताकि वह तुम्हें अंधेरियों से हटाकर नूर की तरफ़ पहुँचा दे। असल हादी

(हिदायत देने वाला) अल्लाह ही है, रसूलों के हाथ जिनकी हिदायत उसे मन्ज़ूर होती है वे राह पा लेते हैं और मग़लूब (यानी दबे कुचले) पूरे ग़ालिब, ज़बरदस्त और अल्लाह की हर चीज़ पर बादशाह बन जाते हैं। और हर हाल में तारीफ़ों वाले ख़ुदा की राह की तरफ़ उनकी रहबरी हो जाती है। जो काफ़िर तेरे मुख़ालिफ़ हैं, तुझे नहीं मानते, उन्हें क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब होगा। ये लोग दुनिया को आख़िरत पर तरजीह देते हैं, दुनिया के लिये पूरी कोशिश करते हैं और आख़िरत को भूले बैठे हैं। रसूलों की ताबेदारी से दूसरों को भी रोकते हैं। राहे ख़ुदा जो सीधी और साफ़ है, उसे टेढ़ी तिरछी करना चाहते हैं। ये इसी जहालत और गुमराही में रहेंगे लेकिन राहे ख़ुदा न टेढ़ी हुई है न होगी। फिर ऐसी हालत में उनकी इस्लाह (सुधार और सही रास्ते पर आने) की क्या उम्मीद है?

और हमने (पहले) तमाम पैग़म्बरों को (भी) उन्हीं की क़ौम की ज़बान में पैग़म्बर बनाकर भेजा है ताकि उनसे (अल्लाह के अहकाम को) बयान करें। फिर जिसको अल्लाह तआ़ला चाहें गुमराह करते हैं और जिसको चाहें हिदायत करते हैं, और वही (सब उमूर पर) ग़ालिब है (और) हिक्मत वाला है। (4)	وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

रसूल और उसकी ज़बान

यह भी अल्लाह तआ़ला शानुहू की बहुत बड़ी मेहरबानी है कि हर नबी को उसकी क़ौम की ज़बान (भाषा) में ही भेजा, ताकि समझने समझाने की आसानी रहे। मुस्नद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर नबी रसूल को अल्लाह तआ़ला ने उसकी उम्मत की ज़बान में ही भेजा है। हक़ उन पर खुल तो जाता ही है, फिर हिदायत व गुमराही ख़ुदा की तरफ़ से है। उसके चाहे बग़ैर कोई काम नहीं होता, वह ग़ालिब है, उसका हर काम हिक्मत से भरा है। गुमराह वही होते हैं जो गुमराही के मुस्तहिक़ हों और हिदायत पर वही आते हैं जो उसके मुस्तहिक़ हों। चूँकि हर नबी अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता रहा, इसलिये उसे उसकी क़ौम की ज़बान में ही किताबुल्लाह (अल्लाह की तरफ़ से किताब) मिलती थी और उसकी अपनी ज़बान भी वही होती थी। नबी करीम सल्ल. की रिसालत आ़म (सार्वजनिक और सबके लिये) थी, सारी दुनिया की सब क़ौमों की तरफ़ आप अल्लाह के रसूल थे। जैसे ख़ुद हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि मुझे पाँच चीज़ें ख़ुसूसियत से दी गयी हैं, जो किसी दूसरे नबी को अ़ता नहीं हुयीं। महीने भर की दूरी से रौब के साथ सिर्फ़ मेरी मदद की गयी (यानी एक महीने की दूरी से ही लोगों पर मेरा रौब पड़ता है)। मेरे लिये सारी ज़मीन मस्जिद और पाकीज़गी क़रार दी गयी है (यानी ज़मीन पर कहीं भी नमाज़ की इजाज़त है, इसी तरह मिट्टी से तयम्मुम करके पाकी हासिल करने की इजाज़त है)। मुझ पर माले ग़नीमत हलाल किये गये, जो मुझसे पहले किसी पर हलाल नहीं थे। मुझे शफ़ाअ़त सौंपी गयी है। हर नबी सिर्फ़ अपनी क़ौम ही की तरफ़ आता था और मैं तमाम लोगों की तरफ़ अल्लाह का रसूल बनाया गया हूँ। क़ुरआन यही फ़रमाता है कि ऐ नबी! ऐलान कर दो कि मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ।

Maktab E Ashraf

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि अपनी क़ौम को (कुफ़्र) की अँधेरियों से (ईमान की) रोशनी की तरफ़ लाओ, और उनको अल्लाह तआ़ला की (नेमत और सज़ा के) मामलात याद दिलाओ, बेशक उन (मामलात) में इबरतें हैं हर सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए। (5)

अल्लाह तआ़ला के एहसानात

जैसे हमने तुझे अपना रसूल बनाकर भेजा है और तुझ पर अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई है कि तू लोगों को अंधेरियों (यानी कुफ़्र) से निकाल कर नूर (इस्लाम यानी सही रास्ते) की तरफ़ ले आये। इसी तरह हमने हज़रत मूसा को बनी इस्राईल की तरफ़ भेजा था, बहुत सी निशानियाँ भी दी थीं, जिनका बयान इस आयत में है:

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍ...... الخ.

और हमने मूसा को खुले हुए नौ मोजिज़े दिये.....................। (सूरः बनी इस्राईल आयत 101)

उन्हें भी यही हुक्म था कि लोगों को नेकियों की दावत दें। उन्हें अंधेरों से निकाल कर रोशनी में और जहालत व गुमराही से हटाकर इल्म व हिदायत की तरफ़ ले आयें। उन्हें ख़ुदा के एहसानात याद दिलायें कि ख़ुदा ने उन्हें फ़िरऔन जैसे ज़ालिम जाबिर बादशाह की गुलामी से आज़ाद किया, उनके लिये दरिया को चीर दिया, उन पर बादल का साया कर दिया, उन पर मन्न व सलवा उतारा, और भी बहुत सी नेमतें अ़ता फ़रमायीं। मुस्नद की मरफ़ूअ़ हदीस में 'अय्यामिल्लाहि' की तफ़सीर ख़ुदा की नेमतों से की गयी है। लेकिन इब्ने जरीर में यह रिवायत उबई बिन कअ़ब रज़ि. ही से मौक़ूफ़न भी आयी है, और यही ज़्यादा ठीक है।

हमने अपने बन्दों बनी इस्राईल के साथ जो एहसान किये, फ़िरऔन से निजात दिलवाना, उसके ज़लील अ़ज़ाब से छुड़वाना, इसमें हर साबिर व शाकिर के लिये इबरत (सबक़) है, जो मुसीबत में सब्र के और राहत में शुक्र के आ़दी हैं। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं- अच्छा बन्दा वह है जो सख़्ती के वक़्त सब्र करे और नर्मी के वक़्त शुक्र करे। सही हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मोमिन का तमाम काम अ़जीब है, उसे मुसीबत पहुँचे तो सब्र करता है, वही उसके हक़ में बेहतर होता है, और अगर उसे राहत व आराम है तो शुक्र करता है, इसका अन्जाम भी उसके लिये बेहतर होता है।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ

और (उस वक़्त को याद कीजिये कि) जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम अल्लाह तआ़ला का इनाम अपने ऊपर याद करो, जबकि तुमको फ़िरऔन वालों से निजात दी, जो तुमको सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे और

اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ○ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِىْ لَشَدِيْدٌ ○ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِىٌّ حَمِيْدٌ ○	तुम्हारे बेटों को ज़िबह करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ा इम्तिहान था। (6) और (वह वक़्त याद करो) जबकि तुम्हारे रब ने तुमको इत्तिला फ़रमा दी कि अगर तुम शुक्र करोगे तो तुमको ज़्यादा (नेमत) दूँगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो (यह अच्छी तरह समझ लो कि) मेरा अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है। (7) और मूसा ने (यह भी) फ़रमाया कि अगर तुम और दुनिया भर के आदमी सब-के-सब मिलकर भी नाशुक्री करने लगो तो अल्लाह तआ़ला (का कोई नुक़सान नहीं, क्योंकि वह) बिल्कुल ग़नी (और) तारीफ़ वाले हैं। (8)

ع ۱۳

Mahtab E Ashraf

नेमतों का शुक्र

फ़रमाने ख़ुदा के मुताबिक़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम को ख़ुदा की नेमतें याद दिला रहे हैं। जैसे फ़िरऔ़नियों से उन्हें निजात दिलवाना, जो उन्हें ज़लील करके उन पर तरह-तरह के अत्याचार और ज़ुल्म ढा रहे थे। यहाँ तक कि उनके तमाम लड़कों को क़त्ल कर डालते थे, सिर्फ़ लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ते थे। यह नेमत इतनी बड़ी है कि तुम इसकी शुक्रगुज़ारी की ताक़त नहीं रखते। इस जुमले का यह मतलब भी हो सकता है कि फ़िरऔ़न की तकलीफ़ और अत्याचार दर असल तुम्हारी एक बहुत बड़ी आज़माईश थी, और यह भी गुंजाईश है कि दोनों मायने मुराद हों। वल्लाहु आलम

وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ.

यानी हमने उन्हें भलाई बुराई से आज़मा लिया ताकि वे हमारी तरफ़ लौट आयें। जब अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें आगाह कर दिया। और यह मायने भी मुम्किन हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने क़सम खाई, अपनी इ़ज़्ज़त, बड़ाई और किब्रियाई की। जैसा कि इस आयत में ज़िक्र है:

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ...... الخ.

और वह वक़्त याद करना चाहिये जबकि आपके रब ने (यह बात) बतला दी कि वह उन (यहूद) पर क़ियामत (के क़रीब) तक ऐसे (किसी न किसी) शख़्स को ज़रूर मुसल्लत करता रहेगा जो उनको सख़्त सज़ा की तकलीफ़ पहुँचाता रहेगा......। (सूरः आराफ़ आयत 167)

पस ख़ुदा का निश्चित वादा हुआ और इसका ऐलान भी कि शुक्रगुज़ारों की नेमतें और बढ़ जायेंगी, और नाशुक्रों की, नेमतों के मुन्किरों और उनके छुपाने वालों की नेमतें छिन जायेंगी और उन्हें सख़्त सज़ा होगी। हदीस में है कि बन्दा अपने गुनाह के सबब ख़ुदा की रोज़ी से मेहरूम हो जाता है।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. के पास से एक साईल (माँगने वाला) गुज़रा। आपने उसे

एक खजूर दी, वह बड़ा बिगड़ा और खजूर न ली। फिर दूसरा साईल गुज़रा, आपने उसे भी वही खजूर दी, उसने उसे ख़ुशी से ले लिया और कहने लगा कि अल्लाह के रसूल का अ़तीया है। आपने उसे बीस दिर्हम देने का हुक्म फ़रमाया। एक और रिवायत में है कि आपने बाँदी से फ़रमाया- इसे ले जाओ और उम्मे सलमा के पास चालीस दिर्हम हैं वो इसे दिलवा दो।

हज़रत मूसा ने बनी इस्राईल से फ़रमाया कि तुम सब और रू-ए-ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ भी नाशुक्री करने लगे तो ख़ुदा का क्या बिगाड़ेगी? वह बन्दों से और उनकी शुक्रगुज़ारी से बेनियाज़ और बेपरवाह है। तारीफ़ों के क़ाबिल और उसका मालिक वही है। चुनाँचे फ़रमायाः

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ.

तुम अगर कुफ़्र करो तो अल्लाह तुमसे ग़नी (बेपरवाह) है। एक और आयत में हैः

فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ.

उन्होंने कुफ़्र किया, मुँह मोड़ लिया तो अल्लाह ने उनसे पूरी तरह बेनियाज़ी बरती।

सही मुस्लिम शरीफ़ में हदीसे क़ुदसी है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे पहले दिन से लेकर आख़िरी दिन तक के तमाम इनसान व जिन्नात सब मिलकर बेहतरीन तक़्वे वाले दिल के शख़्स बन जायें, तो इससे मेरा मुल्क ज़रा सा भी बढ़ न जायेगा। और अगर तुम्हारे सब अगले पिछले इनसान, जिन्नात बुरे आमाल और बुरे दिल के बन जायें तो इस वजह से मेरे मुल्क में से एक ज़र्रा भी न घटेगा। ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे अगले पिछले इनसान जिन्न सब एक मैदान में खड़े हो जायें और मुझसे माँगें और मैं हर एक का सवाल पूरा कर दूँ तो भी मेरे पास के ख़ज़ानों में इतनी ही कमी आयेगी जितनी कमी समुद्र में सूई डालने से हो। पस हमारा रब पाक है, बुलन्द है, ग़नी (बेनियाज़) है और हमीद (तारीफ़ व प्रशंसा के क़ाबिल) है।

(ऐ मक्का के काफ़िरो!) क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, यानी नूह की क़ौम, और (हूद की क़ौम) आ़द, और (सालेह की क़ौम) समूद, और जो लोग उनके बाद हुए हैं जिनको सिवाय अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं जानता। उनके पैग़म्बर उनके पास दलीलें लेकर आए, सो उन क़ौमों ने अपने हाथ उन (पैग़म्बरों) के मुँह में दे दिए, और कहने लगे कि जो (हुक्म) तुमको देकर भेजा गया है हम उसके इनकारी हैं, और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो हम उसकी तरफ़ से बहुत बड़े शुब्हे में हैं जो (हम को) तरद्दुद में डाले हुए है। (9)	اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ۭ جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝

Maktab E Ashraf

मुख़ालफ़त भरा रवैया

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का बाक़ी वअ़ज़ (दीनी नसीहत) बयान हो रहा है कि आपने अपनी क़ौम को ख़ुदा की नेमतें याद दिलाते हुए फ़रमाया कि देखो तुमसे पहले लोगों पर रसूलों के झुठलाने की वजह से कैसे सख़्त अ़ज़ाब आये और किस तरह वे ग़ारत किये गये। यह क़ौल तो है इमाम इब्ने जरीर रह. का, लेकिन है ज़रा ग़ौर-तलब। बज़ाहिर तो ऐसा मालूम होता है कि वह वअ़ज़ तो ख़त्म हो चुका अब यह नया क़ुरआनी बयान है। कहा गया है कि आ़दियों और समूदियों के वाक़िआ़त तौरात शरीफ़ में थे ही नहीं, तो अगर यह बात भी हज़रत मूसा की ही मानी जाये तो ज़ाहिर है कि उनके क़िस्से यहूदियों के सामने बयान हो चुके थे और ये दोनों वाक़िए भी तौरात में थे, वल्लाहु आलम।

कुल मिलाकर यह कि उन लोगों के और उन जैसे और भी बहुत से लोगों के वाक़िआ़त क़ुरआने करीम में हमारे सामने बयान हो चुके हैं कि उनके पास ख़ुदा के पैग़म्बर, ख़ुदा की आयतें और ख़ुदा के दिये हुए मोजिज़े लेकर पहुँचे, उनकी तादाद का इल्म सिर्फ़ ख़ुदा ही को है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि नसब के बयान करने वाले ग़लत कहते हैं (यानी उन्हें पूरी इनसानी तारीख़ का इल्म नहीं) बहुत सी उम्मतें ऐसी भी गुज़री हैं जिनका इल्म ख़ुदा के सिवा किसी को नहीं।

उर्वा बिन ज़ुबैर का बयान है कि मअ़द बिन अ़दनान के बाद नसब-नामा सही तौर पर कोई नहीं जानता। 'वह अपने हाथ उनके मुँह तक लौटा ले गये' के एक मायने तो यह हैं कि रसूलों के मुँह बन्द करने लगे। एक मायने यह भी हैं वे अपने हाथ अपने मुँह पर रखने लगे कि जो रसूल कहते हैं यह बिल्कुल झूठ है। एक मायने यह हैं कि जवाब से लाचार होकर उंगलियाँ मुँह पर रख लीं। एक मायने यह हैं कि अपने मुँह से झुठलाने लगे, और यह भी हो सकता है कि यहाँ पर "फ़ी" मायने में "ब" के हो जैसे बाज़ अ़रब कहते हैं "अदूख़-लकल्लाहु बिल-जन्नति" यानी "फ़िल-जन्नति" (जन्नत में)। शे'र में भी यह मुहावरा इस्तेमाल हुआ है। और ब-क़ौल मुजाहिद इसके बाद का जुमला इसी की तफ़सीर है। यह भी कहा गया है कि उन्होंने गुस्से की वजह से अपनी उंगलियाँ अपने मुँह में डाल लीं। चुनाँचे एक और आयत में मुनाफ़िक़ों के बारे में है किः

وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ.

ये लोग तन्हाई में (यानी जब ये अकेले होते हैं) तुम्हारी जलन से अपनी उंगलियाँ चबाते रहते हैं।

यह भी है कि कलामुल्लाह सुनकर ताज्जुब से अपने हाथ अपने मुँह पर रख देते हैं, और कह गुज़रते हैं कि हम तो तुम्हारी रिसालत के मुन्किर हैं। हम तुम्हें सच्चा नहीं जानते, बल्कि सख़्त शुब्हे में हैं।

उनके पैग़म्बरों ने कहा, क्या (तुमको) अल्लाह तआ़ला के बारे में शक है जो कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, वह तुमको बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे, और मुक़र्ररा मुद्दत तक तुमको (ख़ैर व ख़ूबी के साथ) ज़िन्दगी दे। उन्होंने	قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ

مُسَمًّى ؕ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ ع

कहा कि तुम सिर्फ़ एक आदमी हो जैसे हम हैं, तुम (यूँ) चाहते हो कि हमारे बाप (और दादा) जिस चीज़ की इबादत करते थे (यानी बुत) उससे हमको रोक दो, सो कोई साफ़ मोजिज़ा दिखलाओ। (10) उनके रसूलों ने (इसके जवाब में) कहा कि हम भी तुम्हारे जैसे आदमी ही हैं, लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहे एहसान फ़रमा दे, और यह बात हमारे क़ब्ज़े की नहीं कि हम तुमको बिना ख़ुदा के हुक्म के कोई मोजिज़ा दिखला सकें, और अल्लाह ही पर सब ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए। (11) और हमको अल्लाह पर भरोसा न करने का कौनसी चीज़ सबब हो सकती है? हालाँकि उसने हमको हमारे (दोनों जहान के फ़ायदों के) रास्ते बतला दिए, और तुमने जो कुछ हमको तकलीफ़ पहुँचाई है हम उस पर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (12)

ख़ुदा तआ़ला की ज़ात हर शक व शुब्हे से ऊपर है

रसूलों की और उनकी क़ौम के काफ़िरों की बातचीत बयान हो रही है। क़ौम ने ख़ुदा की इबादत में शक व शुब्हे का इज़हार किया, इस पर रसूलों ने कहा कि अल्लाह के बारे में शक? यानी उसके वजूद में शक कैसा? फ़ितरत उसके वजूद की गवाह है, इनसान की बुनियाद में उसका इक़रार मौजूद है, अक़्ले सलीम उसके मानने पर मजबूर है। अच्छा अगर दलील के बग़ैर इत्मीनान नहीं तो देख लो कि ये आसमान व ज़मीन कैसे पैदा हो गये? किसी मौजूद के लिये बनाने वाले और मूजिद का होना ज़रूरी है। इन्हें बग़ैर नमूने के पैदा करने वाला वही अल्लाह है जिसका कोई शरीक नहीं है। इस आ़लम का हादिस (यानी फ़ना होने वाला) मुतीअ़ (ताबेदार व अधीन) और मख़्लूक़ (किसी और के ज़रिये बनाया हुआ) होना बिल्कुल ज़ाहिर है। इससे क्या इतनी मोटी बात भी समझ में नहीं आती कि कोई इसका बनाने और पैदा करने वाला है? और वही अल्लाह तआ़ला है, जो हर चीज़ का ख़ालिक़ व मालिक और माबूदे बरहक़ है। या क्या तुम्हें उसके माबूद होने और एक होने में शक है? जब तमाम मौजूदात का ख़ालिक़ और मूजिद वही है तो फिर इबादत का तन्हा मुस्तहिक़ वही क्यों न हो?

Maktab E Ashraf

चूँकि अक्सर उम्मतें ख़ालिक़ के वजूद की क़ायल थीं, फिर औरों की इबादत उन्हें वास्ता और वसीला जानकर ख़ुदा से नज़दीक करने वाले और नफ़ा देने वाले समझकर करती थीं, इसलिये पैग़म्बरे ख़ुदा उन्हें उनकी इबादतों से यह समझा कर रोकते हैं। ख़ुदा तआ़ला तुम्हें अपनी तरफ़ बुला रहा है ताकि आख़िरत में तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा दे और जो मुक़द्दर (निश्चित) वक़्त है उस तक तुम्हें अच्छाई से पहुँचा दे। हर एक फ़ज़ीलत वाले को वह उसकी फ़ज़ीलत इनायत फ़रमायेगा।

अब उम्मतों ने पहले मक़ाम (यानी ख़ुदा के एक होने) को मान लेने के बाद जवाब दिया कि तुम्हारी रिसालत हम कैसे मान लें? तुम हम जैसे ही इनसान हो। अच्छा अगर सच्चे हो तो कोई मोजिज़ा पेश करो, जो इनसानी ताक़त से बाहर हो। इसके जवाब में ख़ुदा के पैग़म्बरों ने फ़रमाया कि यह तो बिल्कुल मुसल्लम (मानी हुई बात) है कि हम तुम जैसे ही इनसान हैं, लेकिन रिसालत व नुबुव्वत ख़ुदा का अ़तीया (देन) है, वह जिसे चाहे दे, इनसान होकर फिर रसूल हो यह कोई नकारने वाली चीज़ नहीं है। और जो चीज़ तुम हमारे हाथों देखना चाहते हो उसके बारे में भी सुन लो कि वह हमारे बस की बात नहीं। हाँ हम अल्लाह से तलब करेंगे, अगर हमारी दुआ़ मक़बूल हुई तो बेशक हम दिखा देंगे। मोमिनों को तो हर काम में ख़ुदा ही पर तवक्कुल है, और ख़ुसूसियत के साथ हमें उस पर ज़्यादा तवक्कुल (एतिमाद) और भरोसा है, इसलिये भी कि उसने तमाम राहों (दीन और रास्तों) में से बेहतरीन राह दिखाई। तुम जितना चाहो दुख दो, लेकिन इन्शा-अल्लाह तवक्कुल का दामन हमारे हाथ से छूटेगा नहीं। अल्लाह पर भरोसा करने वालों की जमाअ़त के लिये अल्लाह का तवक्कुल व भरोसा काफ़ी वाफ़ी है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ
مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰٓى
اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝
وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ
وَعِيْدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ
عَنِيْدٍ ۝ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ
مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۝ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ

और (उन) काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुमको अपनी सरज़मीन से निकाल देंगे, या (यह हो कि) तुम हमारे मज़हब में लौट आओ। पस उन (रसूलों) पर उनके रब ने (तसल्ली के लिए) 'वही' नाज़िल फ़रमाई कि हम (ही) इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13) और उनके (हलाक करने के) बाद तुमको इस सरज़मीन में आबाद रखेंगे। (और) यह हर उस शख़्स के लिए (आ़म) है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे और मेरी वईद "दीनी सज़ा की धमकी" से डरे। (14) और (काफ़िर लोग) फ़ैसला चाहने लगे और जितने नाफ़रमान (और) ज़िद्दी (लोग) थे वे सब नाकाम हुए। (15) उसके आगे दोज़ख़ है और उसको (दोज़ख़ में) ऐसा पानी पीने को दिया जाएगा जो कि पीप-लहू (के जैसा) होगा। (16) जिसको घूँट-घूँट करके पियेगा और (गले से) आसानी के

وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۗ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ○	साथ उतारने की कोई सूरत न होगी, और हर (चारों) तरफ़ से उसपर मौत (के सामान) की आमद होगी और वह किसी तरह से मरेगा नहीं, और उसको और सख़्त अज़ाब का सामना होगा। (17)

Maktaba E Ashraf

काफ़िरों की सरकशी और उन पर ख़ुदाई अ़ज़ाब

काफ़िर जब तंग हुए, कोई हुज्जत बाक़ी न रही तो नबियों को धमकाने लगे और अपनी सरज़मीन (मुल्क और इलाक़े) से निकालने की धमकियाँ देने लगे। क़ौमे शुऐब ने भी अपने नबी और मोमिनों से यही कहा था कि हम तुम्हें अपनी बस्ती से निकाल देंगे। लूतियों ने भी यही कहा था कि आले लूत को अपने शहर से निकाल दो। क़ुरैश के मुश्रिकों ने भी यही मन्सूबा बाँधा था, और यह भी कहा था कि क़ैद कर लो, क़त्ल कर दो, या मुल्क से बाहर निकाल दो। वे अपने मन्सूबों को अ़मल में लाने की तदबीरों में थे और अल्लाह तआ़ला अपनी तदबीर में था, वह अपने नबी को सलामती के साथ मक्का से ले गया, मदीना वालों को आपका अन्सार व मददगार बना दिया। वे आपके लश्कर में शामिल होकर आपके झण्डे के नीचे काफ़िरों से लड़े और आहिस्ता-आहिस्ता अल्लाह तआ़ला ने आपको तरक़्क़ी दी। यहाँ तक कि आख़िरकार आपने मक्का भी फ़तह कर लिया। अब तो दीन के दुश्मनों के मन्सूबे ख़ाक में मिल गये, उनकी उम्मीदों पर पानी फिर गया, उनकी आरज़ूएँ पामाल हो गयीं, दीने ख़ुदा लोगों के दिलों में मज़बूत हो गया, जमाअ़तें की जमाअ़तें दीन में दाख़िल होने लगीं, पूरी दुनिया के मज़ाहिब पर दीने इस्लाम छा गया, अल्लाह का कलिमा बुलन्द व बाला हो गया और मुख़्तसर वक़्त में पूरब से पश्चिम तक इस्लाम का प्रचार व प्रसार हो गया। यहाँ फ़रमान है कि उधर काफ़िरों ने नबियों को धमकाया, इधर ख़ुदा ने उनसे सच्चा वादा फ़रमाया कि यही हलाक होंगे, और ज़मीन के मालिक तुम बनोगे। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि हमारा कलिमा हमारे रसूलों के बारे में सबक़त कर चुका है (यानी कामयाबी हमारे नबी और रसूलों ही को मिलेगी)। वही कामयाब होंगे और मोमिन ही ग़ालिब रहेंगे। एक और आयत में है:

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ...... الخ.

अल्लाह लिख चुका है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ही ग़ालिब आयेंगे। अल्लाह क़ुव्वत वाला, इज़्ज़त वाला है। एक और आयत में इरशाद है कि ज़िक्र के बाद ज़बूर में भी यही तहरीर है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने भी अपनी क़ौम से यही फ़रमाया था कि तुम अल्लाह से मदद तलब करो, सब्र व संयम से काम लो, ज़मीन अल्लाह ही की है, अपने बन्दों में से जिसे चाहे वारिस बनाये, अच्छा अन्जाम परहेज़गारों का ही है। एक और जगह इरशाद है:

وَاَوْرَثْنَا الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ..... الخ.

ज़ईफ़ और कमज़ोर लोगों को हमने ज़मीन के पूरब व पश्चिम का वारिस बना दिया। जहाँ हमारी बरकतें थीं। बनी इस्राईल के सब्र की वजह से हमारा उनसे जो बेहतरीन वादा था, वह पूरा हो गया। उनके दुश्मन फ़िरऔन और फ़िरऔनी और उनकी तैयारी सब ख़ाक में मिल गयीं। नबियों से फ़रमा दिया गया कि

Maktab E Ashraf

यह ज़मीन तुम्हारे कब्ज़े में आयेगी, ये वादे उनके लिये हैं जो क़ियामत के दिन मेरे सामने खड़े होने से डरते हैं और मेरे अज़ाब से ख़ौफ़ खाते हैं। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

فَاَمَّا مَنْ طَغٰى...... الخ.

यानी जिसने सरकशी की और दुनियायी ज़िन्दगी को तरजीह दी, उसका ठिकाना जहन्नम है।

एक और आयत में है कि जिसने अपने रब के सामने खड़े होने का ख़ौफ़ किया उसे दोहरी जन्नतें हैं।

रसूलों ने अपने रब से मदद व फ़तह और फ़ैसला तलब किया, या यह कि उनकी क़ौम ने इसे तलब किया जैसा कि मक्का के क़ुरैश ने कहा था कि इलाही! अगर यह हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा, या और कोई दर्दनाक अज़ाब हमें कर। और यह भी हो सकता है कि उधर से काफ़िरों का मुतालबा हुआ, इधर से रसूलों ने भी अल्लाह से दुआ की। जैसे बदर वाले दिन हुआ था कि एक तरफ़ रसूलुल्लाह सल्ल. दुआ माँग रहे थे, दूसरी तरफ़ काफ़िरों के सरदार भी कह रहे थे कि इलाही! आज सच्चे को ग़ालिब कर। यही हुआ भी, मुश्रिकों से कलामुल्लाह में एक और जगह फ़रमाया गया है कि तुम फ़तह तलब किया करते थे, लो अब वह आ गयी। अब भी अगर बाज़ आ जाओ तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है.....।

नुक़सान पाने वाले वे हैं जो घमंडी हों, ख़ुदा को कुछ गिनते ही न हों, हक़ से दुश्मनी व बैर रखते हों। क़ियामत के दिन फ़रमान होगा कि हर एक काफ़िर सरकश भलाई से रोकने वाले को जहन्नम में दाख़िल करो, जो ख़ुदा के साथ दूसरों की पूजा करता था उसे सख़्त अज़ाब में ले जाओ। हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन जहन्नम को लाया जायेगा, वह तमाम मख़्लूक़ को निदा (आवाज़ लगा) करके कहेगी कि मैं हर एक सरकश ज़िद्दी के लिये मुक़र्रर की गयी हूँ....। उस वक़्त इन बुरे लोगों का क्या ही बुरा हाल होगा, जबकि अम्बिया तक ख़ुदा के सामने गिड़गिड़ा रहे होंगे।

'वरा-अ' यहाँ पर 'अमा-म' के मायने में है, जिसके मायने "सामने" के हैं। जैसा कि आयत 'व का-न वराअहुम् मलिकुंय्-यअ्ख़ुज़ु' में है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की क़िराअत ही 'व का-न अमामहुम मलिकुन' है। ग़र्ज़ सामने से जहन्नम उसकी ताक में होगी, जिसमें जाकर फिर निकलना न होगा। क़ियामत के दिन तक तो सुबह शाम वह पेश होती रही, अब वही ठिकाना बन गयी। फिर वहाँ उसके लिये पानी के बदले आग जैसा पीप है, और हद से ज़्यादा ठण्डा और बदबूदार वह पानी है जो जहन्नमियों के ज़ख़्मों से बहा हुआ है। जैसा कि फ़रमाया:

هٰذَا فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ...... الخ.

पस एक गर्मी में हद से गुज़रा हुआ, एक सर्दी में हद से गुज़रा हुआ।

'सदीद' कहते हैं पीप और ख़ून को जो जहन्नमियों के गोश्त और उनकी खालों से बहा हुआ होगा। उसी को "तीनतुल-ख़बाल" भी कहा जाता है। मुस्नद अहमद में है कि जब उसके पास लाया जायेगा तो उसे सख़्त तकलीफ़ होगी, मुँह के पास पहुँचते ही सारे चेहरे की खाल झुलस कर उसमें गिर पड़ेगी। एक घूँट लेते ही पेट की आँतें पाख़ाने के रास्ते बाहर निकल पड़ेंगी।

अल्लाह का फ़रमान है कि वे खौलता हुआ गर्म पानी पिलाये जायेंगे, जो उनकी आँतें काट देगा। एक और फ़रमान है कि फ़रियाद करने पर उनकी फ़रियाद को पिघले हुए ताँबे जैसे गर्म पानी से पूरा किया जायेगा जो चेहरा झुलसा दे। जबरन घूँट-घूँट करके उतारेगा फ़रिश्ते लोहे के गुर्ज़ मार-मारकर पिलायेंगे। बुरे

स्वाद, बदबू, और अत्यंत गर्मी या सर्दी की तेज़ी की वजह से गले से उतारना मुहाल हो जायेगा। बदन में, अंगों में, जोड़-जोड़ में वह दर्द और तकलीफ़ होगी कि मौत का मज़ा आयेगा, लेकिन मौत आयेगी नहीं। रग-रग पर अ़ज़ाब है लेकिन जान नहीं निकलती। एक-एक रुवाँ नाक़ाबिले बरदाश्त मुसीबत में जकड़ा हुआ है लेकिन रूह बदन से जुदा नहीं हो सकती। आगे पीछे दायें बायें से मौत आ रही है लेकिन आती नहीं। तरह-तरह के अ़ज़ाबे दोज़ख़ की आग घेरे हुए है, मगर मौत बुलाये से भी नहीं आती। न मौत आये न अ़ज़ाब जाये। हर सज़ा ऐसी है कि मौत के लिये काफ़ी से ज़्यादा, लेकिन वहाँ तो मौत को मौत आ गयी है, ताकि सज़ा हमेशा के लिये होती रहे।

इन तमाम बातों के साथ फिर सख़्त मुसीबतों से भरे, दर्दनाक अ़ज़ाब और हैं। जैसे ज़क़्क़ूम के दरख़्त के बारे में फ़रमाया कि वह जहन्नम की जड़ से निकलता है, जिसके शगूफ़े (फल) शैतानों के सरों जैसे हैं, वे उसे खायेंगे और पेट भरकर खायेंगे, फिर खौलता हुआ तेज़ गर्म पानी पेट में जाकर उससे मिलेगा, फिर उनका लौटना जहन्नम की तरफ़ है। ग़र्ज़ कि कभी ज़क़्क़ूम खाने का, कभी हमीम पीने का, कभी आग में जलने का, कभी दोज़ख़ियों का पीप पीने का अ़ज़ाब उन्हें होता रहेगा। अल्लाह की पनाह।

अल्लाह का फ़रमान है:

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ یُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ...... الخ.

यही वह जहन्नम है जिसे काफ़िर झुठलाते रहे, आज जहन्नम के और उबलते हुए तेज़ गर्म पानी के बीच वे चक्कर खाते फिरेंगे।

एक और आयत में है कि ज़क़्क़ूम का दरख़्त गुनाहगारों की ग़िज़ा है, जो पिघले हुए ताँबे जैसा होगा। पेट में जाकर उबलेगा और ऐसे जोश मारेगा जैसे गर्म पानी जोश ले रहा हो। इसे पकड़ो और इसे बीच जहन्नम में डाल दो। फिर इसके सर पर गर्म पानी डालो। तू तो अपने ख़्याल में बड़ा अ़ज़ीज़ (सम्मानित) था और करम वाला था, यही है जिससे तुम हमेशा शक व शुब्हे करते रहे। सूरः वाक़िआ़ में फ़रमाया कि वे लोग जिनके बायें हाथ में आमाल-नामे दिये जायेंगे, ये बायें हाथ वाले कैसे बुरे लोग हैं। गर्म हवा और गर्म पानी में पड़े हुए होंगे, और धुएँ के साये में, जो न ठण्डा न इ़ज़्ज़त वाला। दूसरी आयत में है कि सरकशों के लिये जहन्नम का बुरा ठिकाना है, जिसमें वे दाख़िल होंगे, और वह रहने की बहुत ही बुरी जगह है। इस मुसीबत के साथ तेज़ गर्म पानी, पीप लहू और उसी के जैसी और भी तरह-तरह के अ़ज़ाब होंगे, जो दोज़ख़ियों को भुगतने पड़ेंगे, जिन्हें ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता। यह उनके आमाल का बदला होगा, न कि ख़ुदा का जुल्म।

مَثَلُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّیْحُ فِیْ یَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا یَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰی شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِیْدُ ○	जो लोग अपने परवर्दिगार के साथ कुफ़्र करते हैं उनकी हालत अमल के एतिबार से यह है कि जैसे कुछ राख हो, जिसको तेज़ आँधी के दिन में तेज़ी के साथ हवा उड़ा ले जाए। (इसी तरह) उन लोगों ने जो कुछ अमल किए थे उनका कोई हिस्सा उनको हासिल न होगा (राख की तरह बरबाद हो जाएगा), यह भी बड़ी दूर दराज़ की गुमराही है। (18)

Maktab-E-Ashraf

बड़ी नाकामी

काफ़िर जो ख़ुदा के साथ दूसरों की इबादतों के आदी थे, पैग़म्बरों की नहीं मानते थे, जिनके आमाल ऐसे थे जैसे पाये के बग़ैर वाली इमारत हो, जिनका नतीजा यह हुआ कि सख़्त ज़रूरत के वक़्त ख़ाली हाथ खड़े रहे गये। पस फ़रमान है कि उन काफ़िरों की यानी उनके आमाल की मिसाल, क़ियामत के दिन जबकि ये पूरे मोहताज होंगे, समझ रहे होंगे कि अब हमारी भलाईयों का बदला हमें मिलेगा, लेकिन कुछ न पायेंगे, मायूस रह जायेंगे, हसरत (अफ़सोस और तमन्ना) से मुँह तकने लगेंगे, जैसे तेज़ आँधी वाले दिन हवा राख को उड़ाकर ज़र्रा-ज़र्रा इधर-उधर कर दे, इसी तरह उनके आमाल बिल्कुल अकारत हो गये। जैसे उस बिखरी हुई और उड़ी हुई राख का जमा करना मुहाल है ऐसे ही उनके बेफ़ायदा आमाल का बदला मुहाल है। वे तो वहाँ होंगे ही नहीं। उनके आने से पहले ही ग़ायब हो गये। अल्लाह का फ़रमान है:

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ...... الخ.

ये काफ़िर जो कुछ इस दुनिया की ज़िन्दगी में ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल आग के बगूले जैसी है, जो ज़ालिमों की खेती झुलसा दे। ख़ुदा ज़ालिम नहीं, लेकिन ये अपने ऊपर ख़ुद ज़ुल्म करते रहते हैं।

एक और आयत में है कि ऐ ईमान वालो अपने सदक़ा ख़ैरात एहसान रखकर और तकलीफ़ देकर बरबाद न करो, जैसे वह जो रियाकारी के लिये ख़र्च करता हो और ख़ुदा पर और क़ियामत पर ईमान न रखता हो, उसकी मिसाल उस चट्टान की तरह है जिस पर मिट्टी थी, लेकिन मींह (बारिश) के पानी ने उसे धो दिया। अब वह बिल्कुल साफ़ हो गयी। ये लोग अपनी कमाई में से किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं, अल्लाह तआ़ला काफ़िरों की रहबरी नहीं फ़रमाता।

इस आयत में इरशाद हुआ कि यह दूर की गुमराही है, उनकी कोशिश उनके काम बेहैसियत और बेक़ीमत हैं। सख़्त ज़रूरत के वक़्त सवाब गुम पायेंगे, यही दूर की बद-नसीबी है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ٥ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ٥	क्या (ऐ मुख़ातब!) तुझको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों को और ज़मीन को बिल्कुल ठीक-ठीक पैदा किया है, (इससे उसका क़ादिर होना भी मालूम हो गया, पस) अगर वह चाहे तो तुम सबको फ़ना कर दे और एक दूसरी नई मख़्लूक़ को पैदा कर दे। (19) और यह ख़ुदा तआ़ला को कुछ भी मुश्किल नहीं। (20)

यह कुछ कठिन नहीं

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि क़ियामत के दिन दोबारा पैदा करने पर मैं क़ादिर हूँ। जब मैंने आसमान व ज़मीन को बना दिया तो इनसान की पैदाईश और बनाना मुझ पर क्या मुश्किल है? आसमान की ऊँचाई, फैलाव, विशालता, फिर उसमें ठहरे हुए और चलते फिरते सितारे, और यह ज़मीन पहाड़ों और

Maktab E Ashraf

जंगलों दरख़्तों और हैवानों वाली, सब अल्लाह ही की बनाई हुई है, जो इनके बनाने और पैदा करने से आजिज़ न आया वह क्या मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक क़ादिर है।

सूरः यासीन में फ़रमाया कि क्या इनसान ने नहीं देखा कि हमने उसे नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) से पैदा किया, फिर वह झगड़ालू बन बैठा। हमारे सामने मिसालें बयान करने लगा, अपनी पैदाईश भूल गया और कहने लगा कि इन बोसीदा हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? कह दे कि वही ख़ुदा जिसने इन्हें प्रथम बार पैदा किया, वह हर चीज़ की पैदाईश को बख़ूबी जानता है। उसने सब्ज़ (हरे-भरे) पेड़ से तुम्हारे लिये आग बनाई है कि तुम उसे जलाते हो, क्या आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) इन जैसों की पैदाईश पर क़ादिर नहीं? बेशक है। वही बड़ा ख़ालिक़ और सबसे बड़ा आ़लिम है। उसके इरादे के बाद उसका सिर्फ़ इतना हुक्म काफ़ी है कि 'हो जा' उसी वक़्त वह हो जाता है। वह ख़ुदा पाक है, जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और जिसकी तरफ़ तुम्हारा सबका लौटना है। उसके क़ब्ज़े में है कि अगर चाहे तो तुम सबको फ़ना कर दे, और नई मख़्लूक़ तुम्हारे स्थान पर यहाँ आबाद कर दे। उस पर यह काम भी भारी नहीं। तुम उसके हुक्म के ख़िलाफ़ करोगे तो यही होगा। जैसा कि फ़रमाया- अगर तुम मुँह मोड़ लोगे तो वह तुम्हारे बदले दूसरी क़ौम लायेगा, जो तुम्हारी तरह की न होगी। एक और आयत में है- ऐ ईमान वालो! तुममें से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाये, फिर अल्लाह तआ़ला एक ऐसी क़ौम को लायेगा जो उसकी पसन्दीदा होगी, और उससे मुहब्बत रखने वाली होगी। एक और जगह है कि अगर वह चाहे तो तुम्हें बरबाद कर दे और दूसरी क़ौम ले आये, अल्लाह इस पर क़ादिर है।

और ख़ुदा के सामने सब पेश होंगे, फिर छोटे दर्जे के लोग (यानी अ़वाम और पैरवी करने वाले) बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे कि हम (दुनिया में) तुम्हारे ताबे थे, तो क्या तुम ख़ुदा के अ़ज़ाब का कुछ हिस्सा हमसे हटा सकते हो। वे (जवाब में) कहेंगे कि अगर अल्लाह हमको कोई राह बतलाता तो हम तुमको वह राह बतला देते, (और अब तो) हम सबके हक़ में (दोनों सूरतें) बराबर हैं, चाहे हम परेशान हों चाहे संयम से काम लें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं। (21)	وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ۗ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ۗ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ۝

ع ٣ ١٥

सबसे बड़ी अ़दालत

साफ़ मैदान में सारी मख़्लूक़ ख़ुदा के सामने मौजूद होगी। उस वक़्त जो लोग मातहत (किसी के अधीन) थे उनसे कहेंगे जो सरदार और बड़े थे, और जो उन्हें अल्लाह की इबादत और रसूल की इताअ़त से रोकते थे, कि हम तो तुम्हारे हुक्म के ताबे थे, जो हुक्म देते थे हम बजा लाते थे, जो तुम फ़रमाते थे हम मानते थे। तो जैसे कि तुम हमसे वादा करते थे और हमें उम्मीद दिलाते थे, क्या आज ख़ुदा के अ़ज़ाब को हमसे हटाओगे? उस वक़्त ये पेशवा, रहबर और सरदार कहेंगे कि हम तो ख़ुद सीधी राह पर न थे, तुम्हारी

Maktab E Ashraf

रहबरी कैसे करते। इसी लिये हम पर ख़ुदा का हुक्म लागू हो गया, अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हम सब हो गये, अब न हाय-वाय और बेक़रारी फ़ायदा देगी और न सब्र व संयम। अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहने की तमाम सूरतें नामुम्किन हैं।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद फ़रमाते हैं कि दोज़ख़ी लोग कहेंगे कि देखो ये मुसलमान ख़ुदा के सामने रोते धोते थे, इस वजह से वे जन्नत में पहुँचे। आओ हम भी अल्लाह के सामने रोयें, गिड़गिड़ायें। ख़ूब रोयें पीटेंगे, चीख़ें चिल्लायेंगे लेकिन बेफ़ायदा रहेगा, तो कहेंगे जन्नतियों के जन्नत में जाने की एक वजह सब्र करना थी, आओ हम भी ख़ामोशी और सब्र इख़्तियार करें। अब ऐसा सब्र करेंगे कि ऐसा सब्र कभी देखा नहीं गया, लेकिन यह भी बेफ़ायदा रहेगा। उस वक़्त कहेंगे हाय सब्र भी बेसूद और बेक़रारी भी बेनफ़ा। ज़ाहिर तो यह है कि पेशवाओं और ताबेदारों की यह बात-चीत जहन्नम में जाने के बाद होगी जैसा कि आयत 'व इज़ य-तहाज्जू-न फ़िन्नारि.....' में है।

जब वे जहन्नम में झगड़ेंगे उस वक़्त ज़ईफ़ (कमज़ोर और दबे-कुचले) लोग तकब्बुर करने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे मातहत थे, तो क्या आग के किसी हिस्से से तुम हमें निजात दिला सकोगे? वे घमंडी लोग कहेंगे हम तो सब जहन्नम में मौजूद हैं, अल्लाह के फ़ैसले बन्दों में हो चुके हैं।

एक और आयत में है:

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ ......الخ.

फ़रमायेगा कि उन लोगों में शामिल हो जाओ जो इनसान, जिन्नात तुमसे पहले जहन्नम में पहुँच चुके हैं। जो गिरोह जायेगा वह दूसरे को लानत करता (यानी बुरा-भला कहता) जायेगा। जब सबके सब जमा हो जायेंगे तो बाद वाले पहलों के बारे में अल्लाह की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे कि परवर्दिगार! इन लोगों ने हमें तो बहका दिया, इन्हें दोहरा यानी दुगना अ़ज़ाब कर। जवाब मिलेगा हर एक को दोहरा है, लेकिन तुम नहीं जानते। और पहले वाले बाद वालों से कहेंगे कि तुम्हें हम पर कोई फ़ज़ीलत (बड़ाई) नहीं थी, अपने किये हुए कामों का अ़ज़ाब चखो। एक और आयत में है कि वे कहेंगे:

اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ..... الخ.

काश कि तू देखता जबकि ज़ालिम लोग ख़ुदा के सामने खड़े हुए एक दूसरे से लड़-झगड़ रहे होंगे। ताबेदार (यानी पैरवी करने वाले) लोग अपने बड़ों से कहते होंगे कि अगर तुम न होते तो हम तो ईमान वाले बन जाते। ये बड़े छोटों से कहते होंगे कि क्या हिदायत आ जाने के बाद हमने तुम्हें उससे रोक दिया? नहीं बल्कि तुम तो ख़ुद ही गुनाहगार और बदकार थे। ये कमज़ोर लोग फिर उन दबंगों से कहेंगे कि तुम्हारे रात दिन के दाव-घात और हमें यह हुक्म देना कि हम अल्लाह से कुफ़्र करें, उसके शरीक ठहरायें। अब सब लोग पोशीदा तौर पर अपनी-अपनी जगह नादिम (शर्मिन्दा) हो जायेंगे जबकि अ़ज़ाब को सामने देख लेंगे। हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डाल देंगे, उन्हें उनके आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा।

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ

और जब (क़ियामत में) तमाम मुक़द्दमों का फ़ैसला हो चुकेगा तो (जवाब में) शैतान कहेगा कि अल्लाह तआ़ला ने तुमसे सच्चे वायदे किए थे और मैंने भी तुमसे कुछ वायदे किए थे, सो

Maktab E Ashraf

فَاَخْلَفْتُكُمْ ۭ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ اِنِّىْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۭ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۝

मैंने वे वायदे तुमसे ख़िलाफ़ किए थे, और मेरा तुमपर और तो कुछ ज़ोर चलता न था, सिवाय इसके कि मैंने तुमको बुलाया था। सो तुमने (अपने इख़्तियार से) मेरा कहना मान लिया, तो तुम (सारी) मलामत मुझ पर मत करो, और (ज़्यादा) मलामत अपने आपको करो। न मैं तुम्हारा मददगार (हो सकता) हूँ और न तुम मेरे मददगार (हो सकते) हो, मैं ख़ुद (तुम्हारे) इस (फ़ेल) से बेज़ार हूँ कि तुम इसके पहले (दुनिया में) मुझको (ख़ुदा का) शरीक क़रार देते थे। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब (मुक़र्रर) है। (22) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएँगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, (और) वे उनमें अपने परवर्दिगार के हुक्म से हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) वहाँ उनको सलाम इस लफ्ज़ से किया जायेगा। अस्सलामु अलैकुम। (23)

शैतान मलऊन की ग़द्दारी

अल्लाह तआ़ला जब बन्दों के फ़ैसलों से फ़ारिग़ होगा, मोमिन जन्नत में और काफ़िर दोज़ख़ में पहुँच जायेंगे, उस वक़्त इब्लीस मलऊन जहन्नम में खड़ा होकर उनसे कहेगा कि ख़ुदा के वादे सच्चे और बर्हक़ थे, रसूलों की पैरवी में ही निजात और सलामती थी, मेरे वादे तो धोखे थे, मैं तो तुम्हें ग़लत राह पर डालने के लिये सब्ज़ बाग़ दिखाया करता था, मेरी बातें बेदलील थीं, मेरा कलाम बेहुज्जत था, मेरा कोई ज़ोर और ग़लबा तुम पर न था, तुम ख़्वाह-मख़्वाह मेरी एक आवाज़ पर दौड़ पड़े, मैंने कहा तुमने मान लिया, रसूलों के सच्चे वादे, उनकी दलील के साथ आवाज़, उनकी कामिल हुज्जत तुमने छोड़ दीं, उनकी मुख़ालफ़त और मेरी मुवाफ़क़त की, जिसका नतीजा आज अपनी आँखों से तुमने देख लिया, यह तुम्हारे अपने करतूत का बदला है, मुझे मलामत न करना बल्कि अपने नफ़्स को ही इल्ज़ाम देना। गुनाह तुम्हारा अपना है, तुमने दलीलें छोड़ीं, तुमने मेरी बात मानी, आज मैं तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा, न तुम्हें बचा सकूँगा, न नफ़ा पहुँचा सकूँगा। मैं तो तुम्हारे शिर्क के कारण तुम्हारा मुन्किर हूँ। मैं साफ़ कहता हूँ कि मैं ख़ुदा का शरीक नहीं। जैसा कि फ़रमाने ख़ुदा है:

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗ ...... الخ.

उससे बढ़कर गुमराह कौन है जो अल्लाह के सिवा औरों को पुकारे, जो क़ियामत तक उसकी पुकार

को कबूल न कर सकें, बल्कि उसके पुकारने से बिल्कुल ग़ाफ़िल हों, और मेहशर के दिन उनके दुश्मन और उनकी इबादत के मुन्किर बन जायें। एक और आयत में है:

كَلَّا سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ..... الخ.

यक़ीनन वे लोग उनकी इबादत से मुन्किर हो जायेंगे और उनके दुश्मन बन जायेंगे। ये ज़ालिम लोग हैं, इसलिये कि हक़ से मुँह फेर लिया, बातिल के पैरोकार बन गये, ऐसे ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब हैं।

पस ज़ाहिर है कि इब्लीस (शैतान) का यह कलाम दोज़ख़ियों से दोज़ख़ में दाख़िल होने के बाद होगा ताकि वे हसरत व अफ़सोस में और बढ़ जायें। लेकिन इब्ने अबी हातिम की एक हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब अगलों पिछलों को ख़ुदा तआ़ला जमा करेगा और उनमें फ़ैसला कर देगा, फ़ैसलों के वक़्त आ़म घबराहट होगी, मोमिन कहेंगे हममें फ़ैसले हो रहे हैं, अब हमारी सिफ़ारिश के लिये कौन खड़ा होगा? पस हज़रत आदम, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा अ़लैहिमुस्सलाम के पास जायेंगे, हज़रत ईसा फ़रमायेंगे नबी-ए-उम्मी (सल्ल.) के पास पहुँचो, चुनाँचे वे मेरे पास आयेंगे, मुझे खड़ा होने की अल्लाह तबारक व तआ़ला इजाज़त देगा। उसी वक़्त मेरी मज्लिस से पाकीज़ा तेज़ और उम्दा ख़ुशबू फैलेगी कि उससे बेहतर और उम्दा ख़ुशबू कभी किसी ने न सूँघी होगी। मैं चलकर रब्बुल-आ़लमीन के पास आऊँगा, मेरे सर के बालों से लेकर मेरे पैर के अंगूठे तक नूर ही नूर हो जायेगा।

अब मैं सिफ़ारिश करूँगा और हक़ तआ़ला कबूल फ़रमायेगा। यह देखकर काफ़िर लोग कहेंगे कि चलो भाई हम भी किसी को सिफ़ारिशी बनाकर ले चलें, और उसके लिये हमारे पास सिवाय इब्लीस के और कौन है? उसने हमको बहकाया था, चलो उसी के सामने अपनी बात रखें। वे आयेंगे, इब्लीस से कहेंगे कि मोमिनों ने तो शफ़ीअ़ (अपनी सिफ़ारिश करने वाला) पा लिया, अब तू हमारी तरफ़ से बन जा। इसलिये कि हमें गुमराह भी तूने ही किया है। यह सुनकर यह मलऊन खड़ा होगा, उसकी मज्लिस से ऐसी गन्दी बदबू फैलेगी कि उससे पहले किसी नाक में ऐसी बदबू न पहुँची हो। फिर वह कहेगा जिसका बयान इस आयत में है।

मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुर्ज़ी फ़रमाते हैं कि जब जहन्नमी अपना सब्र और बेसब्री बराबर बतलायेंगे उस वक़्त इब्लीस उनसे यह कहेगा, उस वक़्त वे अपनी जानों से बेज़ार हो जायेंगे। आवाज़ आयेगी कि तुम्हारी इस वक़्त की इस बेज़ारी से भी ज़्यादा बेज़ारी ख़ुदा की तुमसे उस वक़्त थी जबकि तुम्हें ईमान की तरफ़ बुलाया जाता था? और तुम कुफ़्र करते थे। आ़मिर शअ़बी रह. फ़रमाते हैं कि तमाम लोगों के सामने उस दिन दो शख़्स ख़ुतबा देने (यानी संबोधन करने) के लिये खड़े होंगे। हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम से ख़ुदा तआ़ला फ़रमायेगा कि क्या तूने लोगों से कहा था कि तुम ख़ुदा के सिवा मुझे और मेरी माँ को माबूद बना लेना? ये आयतें:

هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ..... الخ.

(सूरः मायदा आयत 119-120) तक इसी बयान में हैं। और इब्लीस खड़ा होकर कहेगा:

مَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ..... الخ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है)

बुरे लोगों के अन्जाम, उनके दर्द व ग़म और इब्लीस के जवाब का ज़िक्र फ़रमाकर अब नेक लोगों का

अन्जाम बयान हो रहा है, कि ईमान वाले, नेक आमाल वाले लोग जन्नतों में जायेंगे, जहाँ चाहें जायें आयें, चलें फिरें, खायें पियें, हमेशा हमेशा के लिये वहीं रहें सहें, न ग़मगीन हों न दिल भरे, न तबीयत भरे, न मारे जायें न निकाले जायें, न नेमतें कम हों। हाँ उनका तोहफ़ा सलाम ही सलाम होगा। जैसे फ़रमान है:

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا........ الخ.

यानी जब जन्नती जन्नत में जायेंगे और उसके दरवाज़े उनके लिये खोले जायेंगे और वहाँ के दरोग़ा उन्हें सलाम पेश करेंगे। एक और आयत में है कि हर दरवाज़े से उनके पास फ़रिश्ते आयेंगे और सलामु अ़लैकुम कहेंगे। एक और आयत में है कि वहाँ ख़ुशख़बरी और सलाम ही सुनाये जायेंगे। एक और आयत में है:

دَعْوٰهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ وَاٰخِرُ دَعْوٰهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٥

उनकी पुकार वहाँ ख़ुदा की पाकीज़गी का बयान होगा, और उनका तोहफ़ा वहाँ सलाम होगा, और उनकी आख़िरी आवाज़ रब्बुल-आ़लमीन की हम्द (तारीफ़) होगी।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِى السَّمَآءِ ٥ تُؤْتِىٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ٥ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ٥	**क्या आपको मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई है, कलिमा-ए-तय्यिबा (यानी कलिमा-ए-तौहीद) की कि वह एक पाकीज़ा दरख़्त के जैसा है, जिसकी जड़ ख़ूब गड़ी हुई हो और उसकी शाख़ें "यानी टहनियाँ" ऊँचाई में जा रही हों। (24) वह अपने परवर्दिगार के हुक्म से हर फ़स्ल में अपना फल देता हो, और अल्लाह तआ़ला (ऐसी) मिसालें लोगों के वास्ते इसलिए बयान फ़रमाते हैं ताकि वे ख़ूब समझ लें। (25) और गन्दे कलिमे (या कुफ़्र व शिर्क के कलिमे) की मिसाल ऐसी है जैसे एक ख़राब दरख़्त हो कि ज़मीन के ऊपर ही ऊपर से उखाड़ लिया जाए, उसको कुछ जमाव "और मज़बूती" न हो। (26)**

एक अछूती मिसाल

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि कलिमा-ए-तय्यिबा से मुराद 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' की शहादत (गवाही देना) है। पाकीज़ा दरख़्त की तरह मोमिन है, उसकी जड़ मज़बूत है। यानी मोमिन के दिल में 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' जमा हुआ है। उसकी शाख़ आसमान में है, यानी इस तौहीद के कलिमे की वजह से उसके आमाल आसमान की तरफ़ उठाये जाते हैं। और भी बहुत-से मुफ़स्सिरीन से यही मन्क़ूल है। मुराद इससे मोमिन के आमाल हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. के पास खजूर का एक ख़ोशा (गुच्छा) लाया गया तो आपने इसी आयत का पहला हिस्सा तिलावत फ़रमाया, और फ़रमाया कि पाक दरख़्त से मुराद खजूर का दरख़्त है।

Maktab-E-Ashraf

सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर से मन्क़ूल है कि हम नबी करीम सल्ल. के पास बैठे हुए थे। आपने फ़रमाया- मुझे बताओ वह कौनसा दरख़्त है जो मुसलमान के मुशाबा (जैसा) है, जिसके पत्ते झड़ते नहीं, न जाड़ों में न गर्मियों में, जो अपना फल हर मौसम में लाता रहता है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं मेरे दिल में आया कि कह दूँ वह दरख़्त खजूर का है, लेकिन मैंने देखा कि मज्लिस में हज़रत अबू बक्र हैं, हज़रत उमर हैं और वे ख़ामोश हैं तो मैं भी चुपका हो रहा। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया वह दरख़्त खजूर का है। जब यहाँ से उठकर चले तो मैंने अपने वालिद हज़रत उमर से यह ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया- प्यारे बच्चे अगर तुम यह जवाब दे देते तो मुझे तो तमाम चीज़ों के मिल जाने से भी ज़्यादा पसन्दीदा था।

हज़रत मुजाहिद रह. का क़ौल है कि मैं मदीना शरीफ़ तक हज़रत इब्ने उमर रज़ि. के साथ रहा लेकिन सिवाय एक हदीस के और कोई रिवायत उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल. से नक़ल करते हुए नहीं सुना, उसमें है कि यह सवाल आपने उस वक़्त किया था जबकि आपके सामने खजूर के दरख़्त के बीच का गूदा लाया गया था। मैं यूँ चुपका रहा कि मैं उस मज्लिस में सबसे कम-उम्र था।

एक और रिवायत में है कि जवाब देने वालों का ख़्याल उस वक़्त जंगल के दरख़्तों की तरफ़ चला गया। इब्ने अबी हातिम में है कि किसी ने रसूलुल्लाह सल्ल. से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर! मालदार लोग दर्जों में बहुत बढ़ गये। आपने फ़रमाया कि याद रखो अगर तमाम दुनिया की चीज़ें लेकर अंबार लगा दो तो भी वे आसमान तक नहीं पहुँच सकतीं, लेकिन तुझे ऐसा अ़मल बतलाऊँ जिसकी जड़ मज़बूत और जिसकी शाख़ें आसमान में हैं? उसने पूछा वह क्या? फ़रमाया 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर व सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि, हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दस बार कह लिया करो, जिसकी जड़ मज़बूत और जिसकी शाख़ें आसमान में हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं वह पाकीज़ा दरख़्त जन्नत में है, हर वक़्त अपना फल लाये, यानी सुबह शाम हर महीने में, या हर दो महीने में, या हर छह महीने में, या हर सातवें महीने, या हर साल। लेकिन अलफ़ाज़ का ज़ाहिरी मतलब तो यह है कि मोमिन की मिसाल उस दरख़्त जैसी है जिसके फल हर वक़्त जाड़े गर्मी में, दिन रात में उतरते रहते हैं। इसी तरह मोमिन के नेक आमाल दिन रात के हर वक़्त में चढ़ते रहते हैं उसके रब के हुक्म से, यानी कामिल अच्छे बहुत व उम्दा। अल्लाह तआ़ला लोगों की इबरत उनकी सोच-समझ और उनकी नसीहत के लिये मिसालें स्पष्ट तौर पर बयान फ़रमाता है।

फिर बुरे कलिमे की यानी काफ़िर की मिसाल बयान फ़रमाई जिसकी कोई असल और जड़ नहीं, जो मज़बूत नहीं। उसकी मिसाल इन्द्राईन के दर्जों से दी, जिसे हन्ज़ल और साल कहते हैं। एक मौक़ूफ़ रिवायत में हज़रत अनस रज़ि. से भी आता है, और यही रिवायत मरफ़ूअ़न आयी है, इस दरख़्त की जड़ ज़मीन की तह (गहराई) में नहीं होती, झटका मारा और उखड़ गया। इसी तरह से कुफ़्र बेजड़ और बेशाख़ है, काफ़िर का न कोई नेक अ़मल चढ़े, न मक़बूल हो।

अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को इस पक्की बात (यानी कलिमा-ए-तय्यिबा की बरकत) से दुनिया और आख़िरत में मज़बूत रखता है, और अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) को (दीन में और इम्तिहान में) बिचला देता है, और अल्लाह तआ़ला जो चाहता है करता है। (27)	يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۛ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۝

ع ١٢

Maktab E Ashraf

इस्तिक़लाल और जमाव

सही बुख़ारी शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुसलमान से जब उसकी क़ब्र में सवाल होता है तो वह गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। यही मुराद इस आयत की है। मुस्नद में है कि हम एक अन्सारी के जनाज़े में हम नबी करीम सल्ल. के साथ थे, क़ब्रिस्तान पहुँचे। अभी तक क़ब्र तैयार न थी, आप बैठ गये और हम भी आपके आस-पास ऐसे बैठ गये गोया हमारे सरों पर परिन्दे हैं।

आपके हाथ में जो तिनका था उससे आप ज़मीन पर लकीरें निकाल रहे थे, फिर सर उठाकर दो तीन मर्तबा फ़रमाया कि अ़ज़ाबे क़ब्र से ख़ुदा की पनाह चाहो। बन्दा जब दुनिया की आख़िरी और आख़िरत की पहली घड़ी में होता है तो उसके पास आसमान से नूरानी चेहरे वाले फ़रिश्ते आते हैं, गोया कि उनके चेहरे सूरज जैसे हैं। उनके साथ जन्नती कफ़न और जन्नती ख़ुशबू होती है, जहाँ तक उसकी निगाह काम करे वे वहाँ तक उसके पास बैठ जाते हैं। फिर मलकुल-मौत आकर उसके सिरहाने बैठ जाते हैं और फ़रमाते हैं ऐ पाक रूह! अल्लाह तआ़ला की मग़फ़िरत, उसकी रज़ामन्दी की तरफ़ चल। वह आसानी से निकल आती है जैसे कि मुश्क से पानी का क़तरा टपक आया हो। एक आँख झपकने के बराबर की देर भी वे फ़रिश्ते उसे उनके हाथ में नहीं रहने देते, फ़ौरन ले लेते हैं और जन्नती कफ़न व जन्नती ख़ुशबू में रख लेते हैं। ख़ुद उस रूह में से भी मुश्क से भी उम्दा ख़ुशबू निकलती है कि रू-ए-ज़मीन पर ऐसी उम्दा ख़ुशबू न सूँघी गयी हो। वे उसे लेकर आसमानों की तरफ़ चढ़ते हैं। फ़रिश्तों की जिस जमाअ़त के पास से गुज़रते हैं वे कहते हैं कि यह पाक रूह किसकी है? ये उसका जो बेहतरीन नाम दुनिया में मशहूर था वह बतलाते हैं और उसके बाप का नाम भी।

दुनिया वाले आसमान तक पहुँचकर दरवाज़े खुलवाते हैं। आसमान का दरवाज़ा खुल जाता है और वहाँ के फ़रिश्ते उसे दूसरे आसमान तक और दूसरे आसमान के तीसरे आसमान तक, इसी तरह सातवें आसमान पर वह पहुँचता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मेरे बन्दे को किताब इल्लिय्यीन में लिख लो, और इसे ज़मीन की तरफ़ लौटा दो। मैंने उसी से इसे पैदा किया है और उसी से दोबारा निकालूँगा। पस उसकी रूह उसी के जिस्म में लौटा दी जाती है। उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, उसे उठाते बैठाते हैं और सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है? वह जवाब देता है- अल्लाह तआ़ला। फिर पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह जवाब देता है कि इस्लाम। फिर सवाल होता है कि वह शख़्स कौन है जो तुममें भेजा गया था? वह कहता है वह अल्लाह के रसूल थे। फ़रिश्ते पूछते हैं तुझे कैसे मालूम हुआ? वह कहता है मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी, उस पर ईमान लाया, उसे सच्चा माना। उसी वक़्त आसमान से एक मुनादी निदा देता है कि मेरा बन्दा सच्चा है, इसके लिये जन्नती फ़र्श बिछा दो, जन्नती लिबास पहना दो, और जन्नत की तरफ़ का दरवाज़ा खोल दो। पस जन्नत की रूह-परवर ख़ुशबूदार हवाओं की लपटें उस तक आने लगती हैं। उसकी क़ब्र इतनी खुली कर दी जाती है जहाँ तक नज़र जाये। उसके पास एक शख़्स ख़ूबसूरत नूरानी चेहरे वाला उम्दा कपड़ों वाला अच्छी ख़ुशबू वाला आता है और उससे कहता है- आप ख़ुश हो जाईये, इसी दिन का वादा आपसे किया जाता था। यह उससे पूछता है कि आप कौन हैं? आपके चेहरे से भलाई नज़र आती है। वह जवाब देता है कि मैं तेरा नेक अ़मल हूँ। उस वक़्त मुसलमान आरज़ू करता है कि ख़ुदाया क़ियामत

जल्द क़ायम हो जाये तो मैं अपने घर वालों, मिलने-जुलने वालों और मुल्क व माल की तरफ़ लौट जाऊँ।

और काफ़िर बन्दा जब दुनिया की आख़िरी और आख़िरत की पहली घड़ी में होता है, उसके पास स्याह चेहरे वाले फ़रिश्ते आते हैं और उनके साथ जहन्नमी टाट होता है। जहाँ तक निगाह पहुँचे वहाँ तक वे बैठ जाते हैं। फिर हज़रत मलकुल-मौत (मौत का फ़रिश्ता) आकर उसके सिरहाने बैठकर फ़रमाते हैं ऐ ख़बीस रूह! अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व ग़ुस्से की तरफ़ चल। उसकी रूह जिस्म में छुपती फिरती है, जिसे बहुत सख़्ती के साथ निकाला जाता है। उसी वक़्त एक आँख झपकने में उसे फ़रिश्ते उनके हाथों से ले लेते हैं और उसे जहन्नमी बोरे में लपेट लेते हैं। उसमें से ऐसी बदबू निकलती है कि रू-ए-ज़मीन पर उससे ज़्यादा बदबू नहीं पाई गयी। अब ये उसे लेकर ऊपर को चढ़ते हैं, फ़रिश्तों की जिस जमाअ़त के पास से गुज़रते हैं वे पूछते हैं यह ख़बीस रूह किसकी है? वे उसका बुरे से बुरा नाम जो दुनिया में था, बतलाते हैं, और उसके बाप का नाम भी। दुनिया वाले आसमान तक पहुँचकर दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं लेकिन खोला नहीं जाता। फिर रसूलुल्लाह सल्ल. ने आयतः

لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ..... الخ.

की तिलावत फ़रमाई, कि न उनके लिये आसमान के दरवाज़े खुलें, न वे जन्नत में जा सकें। यहाँ तक कि सूई के नाके में से ऊँट गुज़र जाये।

नोटः यानी जैसे सूई के नाके में से ऊँट का गुज़रना नामुम्किन है ऐसे ही इनका जन्नत में जाना नामुम्किन है। **(मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)**

अल्लाह तआ़ला हुक्म फ़रमाता है कि इसको किताबे सिज्जीन में लिख लो, जो सबसे नीचे की ज़मीन में है। पस उसकी रूह वहीं से फेंक दी जाती है, फिर आपने आयतः

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ...... الخ.

की तिलावत फ़रमाई। यानी ख़ुदा के साथ जो शिर्क करे गोया कि वह आसमान से गिर पड़ा, या तो उसे परिन्दे उचक ले जायेंगे या आँधी किसी दूर के गड्ढे में फेंक मारेगी।

फिर उसकी रूह उसी के जिस्म में लौटाई जाती है। उसके पास दो फ़रिश्ते पहुँचते हैं जो उसे उठाकर बैठाते हैं और पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह जवाब देता है कि हाय-हाय मुझे मालूम नहीं। फिर पूछते हैं तेरा दीन क्या है? वह कहता है हाय-हाय मुझे इसका भी इल्म नहीं। फिर पूछते हैं वह कौन था जो तुममें भेजा गया था? वह कहता है हाय-हाय मुझे मालूम नहीं।

उसी वक़्त आसमान से मुनादी की निदा (आवाज़) आती है कि मेरा बन्दा झूठा है, इसके लिये जहन्नम की आग का फ़र्श बिछा दो और दोज़ख़ की तरफ़ का दरवाज़ा खोल दो। वहाँ से उसे दोज़ख़ी हवा और दोज़ख़ की तपिश पहुँचती रहती है और उसकी क़ब्र उस पर इतनी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियाँ एक दूसरे में घुस जाती हैं। फिर बहुत बुरी और डरावनी सूरत वाला, बुरे मैले कुचैले ख़राब कपड़ों वाला, बड़ी बदबू वाला एक शख़्स उसके पास आता है और कहता है कि अब ग़मगीन हो जा, इसी दिन का तुझसे वादा किया जाता था। यह पूछता है तू कौन है? तेरे चेहरे से बुराई बरसती है। वह कहता है मैं तेरे बुरे आमाल का मुजस्समा (शक्ल और मूर्ती) हूँ। तो वह दुआ़ करता है कि ख़ुदाया क़ियामत क़ायम न हो।

(अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा वग़ैरह)

मुस्नद में है कि नेक बन्दे की रूह निकलने के वक़्त आसमान व ज़मीन के बीच के फ़रिश्ते और आसमानों के फ़रिश्ते सब उस पर रहमत भेजते हैं, और आसमानों के दरवाज़े उसके लिये खुल जाते हैं। हर दरवाज़े के फ़रिश्तों की दुआ होती है कि उसकी पाक और नेक रूह उनके दरवाज़े से चढ़ाई जाये।

और बुरे शख़्स के बारे में उसमें है कि उसकी क़ब्र में एक अंधा, बहरा, गूँगा फ़रिश्ता मुक़र्रर होता है, जिसके हाथ में एक गुर्ज़ होता है, कि अगर वह किसी बड़े पहाड़ पर मार दिया जाये तो वह मिट्टी बन जाये। उससे वह उसे मारता है। यह मिट्टी हो जाता है, उसे अल्लाह तआ़ला फिर लौटाता है, जैसा था वैसा ही हो जाता है। वह उसे फिर वही गुर्ज़ मारता है। यह ऐसा चीख़ता है कि उसकी चीख़ को सिवाय इनसानों और जिन्नात के हर कोई सुनता है।

हज़रत बरा रज़ि. फ़रमाते हैं कि इसी आयत से अ़ज़ाबे क़ब्र का सुबूत मिलता है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह इसी आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि इससे मुराद क़ब्र के सवालों के जवाब में मोमिन को इस्तिक़ामत (जमे रहने) का मिलना है। मुस्नद अ़ब्द बिन हुमैद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब बन्दा क़ब्र में रखा जाता है, लोग मुँह फेरते हैं, अभी उनकी वापसी के वक़्त जूतियों की आहट उसके कानों ही में है, ज्यों ही दो फ़रिश्ते उसके पास पहुँचकर उसे बैठाकर पूछते हैं कि उस शख़्स के बारे में तू क्या कहता है? मोमिन जवाब देता है कि मेरी गवाही है कि वह ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं। उसे कहा जाता है कि देख जहन्नम में तेरा यह ठिकाना था, लेकिन अब इसे बदलकर अल्लाह ने जन्नत की यह जगह तुझे इनायत फ़रमाई है। फ़रमाते हैं कि उसे दोनों जगह नज़र आती हैं।

हज़रत क़तादा रह. का फ़रमान है कि उसकी क़ब्र सत्तर गज़ चौड़ी कर दी जाती है और क़ियामत तक हरियाली से भरी रहती है। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि इस उम्मत की आज़माईश उनकी क़ब्रों में होती है। उसमें यह भी है कि मोमिन उस वक़्त आरज़ू करता है कि मुझे छोड़ दो मैं अपने लोगों को यह ख़ुशख़बरी पहुँचा दूँ। वे कहते हैं ठहर जाओ। उसमें यह भी है कि मुनाफ़िक़ को भी उसकी दोनों जगहें दिखा दी जाती हैं, फ़रमाते हैं कि हर शख़्स जिस पर मरा है उसी पर उठाया जाता है। मोमिन अपने ईमान पर, मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ पर। मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि फ़रिश्ता जो आता है उसके हाथ में लोहे का हथोड़ा होता है। मोमिन ख़ुदा के माबूद होने और तौहीद (यानी अल्लाह के एक होने) की और मुहम्मद सल्ल. के अल्लाह के बन्दे और रसूल होने की गवाही देता है। उसमें यह भी है कि अपना जन्नत का मकान देखकर उसमें जाना चाहता है, लेकिन उसे कहा जाता है अभी यहीं आराम करो। उसके आख़िर में है कि सहाबा ने कहा या रसूलल्लाह! जब एक फ़रिश्ते को हाथ में गुर्ज़ लिये देखेंगे तो हवास कैसे क़ायम रहेंगे? आपने यही आयत पढ़ी। यानी ख़ुदा की तरफ़ से उन्हें साबित-क़दमी (अपने ईमान पर जमाव) मिलती है। एक और हदीस में है कि रूह निकलने के वक़्त मोमिन से कहा जाता है कि ऐ इत्मीनान वाली रूह! जो पाक जिस्म में थी, निकल, तारीफ़ों वाली होकर और ख़ुश हो जा, राहत व आराम और फल फूल, और रहीम व करीम ख़ुदा की रहमत के साथ। उसमें है कि आसमान के फ़रिश्ते उस रूह को मर्हबा कहते (यानी उसके आने को मुबारक कहते) हैं, और यही ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।

उसमें है कि बुरे इनसान की रूह को कहा जाता है कि ऐ ख़बीस रूह! जो ख़बीस जिस्म में थी, निकल बुरी बनकर और तैयार हो जा आग जैसा पानी पीने के लिये और लहू पीप खाने के लिये, और इसी जैसे और बेशुमार अ़ज़ाबों के लिये। उसमें है कि आसमान के फ़रिश्ते उसके लिये दरवाज़ा नहीं खोलते और

कहते हैं- बुरी होकर बुराई के साथ लौट जा। तेरे लिये दरवाज़े नहीं खुलेंगे।

एक और रिवायत में है कि आसमानी फ़रिश्ते नेक रूह के लिये कहते हैं कि अल्लाह तुझ पर रहमत करे, और उस जिस्म पर भी जिसमें तू थी। यहाँ तक कि उसे अल्लाह तआ़ला के पास पहुँचाते हैं। वहाँ से इरशाद होता है कि इसे आख़िरी मुद्दत तक के लिये ले जाओ। उसमें है कि काफ़िर की रूह की बदबू का बयान करते हुए रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपनी चादर मुबारक अपनी नाक पर रख ली। एक और रिवायत में है कि रहमत के फ़रिश्ते मोमिन की रूह के लिये जन्नती सफ़ेद रेशम लेकर उतरते हैं, एक दूसरे के हाथ से उस रूह को लेना चाहते हैं। जब ये पहले के मोमिनों की रूहों से मिलती हैं तो जैसे कोई नया आदमी सफ़र से आये और उसके घर वाले खुश होते हैं, उससे ज़्यादा ये रूहें इस रूह से मिलकर खुश होती हैं। फिर पूछती हैं कि फ़ुलाँ का क्या हाल है? लेकिन उनमें से बाज़ कहते हैं कि अभी सवाल व जवाब न करो, ज़रा आराम तो कर लेने दो, यह तो ग़म से अभी ही छूटी है। लेकिन वह जवाब देती है कि वह तो मर गया, क्या तुम्हारे पास नहीं पहुँचा? वे कहते हैं कि छोड़ो उसके ज़िक्र को, वह अपनी माँ हाविया (जहन्नम) में गया। एक और रिवायत में है कि काफ़िर की रूह को जब ज़मीन के दरवाज़े के पास लाते हैं तो वहाँ के दरोग़ा फ़रिश्ते उसकी बदबू से घबराते हैं, आख़िर उसे सबसे नीचे की ज़मीन में पहुँचाते हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मोमिनों की रूहें जाबिया में और काफ़िरों की रूहें बरहूत नाम के हुज़रे-मौत के क़ैदख़ाने में जमा रहती हैं। उसकी क़ब्र बहुत तंग हो जाती है। तिर्मिज़ी में है कि मय्यित के क़ब्र में रखे जाने के बाद उसके पास दो स्याह रंग के केरी आँखों वाले फ़रिश्ते आते हैं, एक मुन्कर दूसरा नकीर। उसके जवाब को सुनकर वे कहते हैं कि हमें इल्म था कि तुम ऐसे ही जवाब दोगे, फिर उसकी क़ब्र खुली कर दी जाती है, नूरानी बना दी जाती है और कहा जाता है सो जाओ। यह कहता है कि मैं तो अपने घर वालों से कहूँगा लेकिन वे दोनों कहते हैं कि दुल्हन के जैसी बेफ़िक्री की नींद सो जा, जिसे उसके घर वालों में से वही जगाता है जो उसे सबसे ज़्यादा प्यारा हो। यहाँ तक कि ख़ुदा ख़ुद उसे उस ख़्वाब-गाह से जगाये।

मुनाफ़िक़ जवाब में कहता है कि लोग जो कुछ कहते थे मैं भी कहता रहा, लेकिन जानता कुछ नहीं। वे कहते हैं कि हम तो जानते ही थे कि तेरा यह जवाब होगा। उसी वक़्त ज़मीन को हुक्म दिया जाता है कि सिमट जा, वह सिमटती है, यहाँ तक कि उसकी पसलियाँ इधर-उधर घुस जाती हैं। फिर उसे अ़ज़ाब होता रहता है, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत क़ायम करे और उसको उसकी क़ब्र से उठाये। एक और हदीस में है कि मोमिन के जवाब पर कहा जाता है कि इसी पर तू जिया, इसी पर तेरी मौत है और इसी पर तू उठाया जायेगा। इब्ने जरीर में फ़रमाने रसूले करीम सल्ल. है, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि मय्यित तुम्हारी जूतियों की आहट सुनती है जबकि तुम उसे दफ़नाकर वापस लौटते हो। अगर वह ईमान पर मरा है तो नमाज़ उसके सिरहाने होती है, ज़कात दायीं जानिब होती है, रोज़ा बायीं तरफ़ होता है, नेकियाँ जैसे सदक़ा ख़ैरात सिला-रहमी, भलाई लोगों से साथ एहसान वग़ैरह उसके पैरों की तरफ़ होते हैं।

जब उसके सर की तरफ़ से कोई आता है तो नमाज़ कहती है यहाँ से जाने की जगह नहीं। दायीं तरफ़ से ज़कात कहती है, बायीं तरफ़ से रोज़ा, पैरों की तरफ़ से और नेकियाँ, पस उससे कहा जाता है बैठ जाओ, वह बैठ जाता है और उसे ऐसा मालूम होता है कि गोया सूरज डूबने के क़रीब है। वे कहते हैं कि

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

देखो जो हम पूछें उसका जवाब दो। वह कहता है तुम ठहरो पहले मैं नमाज़ अदा कर लूँ। वे कहते हैं वह तो तू करेगा ही, अभी तो हमें हमारे सवालों का जवाब दे। वह कहता है अच्छा तुम क्या पूछते हो? वे कहते हैं उस शख़्स के बारे में तू क्या कहता है और क्या गवाही देता है। वह पूछता है क्या हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बारे में? जवाब मिलता है कि हाँ आप ही के बारे में। यह कहता है- मेरी गवाही है कि आप अल्लाह के रसूल हैं। आप ख़ुदा के पास से हमारे पास दलीलें लेकर आये, हमने आपको सच्चा माना।

फिर उससे कहा जाता है कि तू इसी पर ज़िन्दा रखा गया, इसी पर मरा और इन्शा-अल्लाह इसी पर दोबारा उठाया जायेगा। फिर उसकी क़ब्र सत्तर हाथ फैला दी जाती है, नूरानी कर दी जाती है, जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है और कहा जाता है देख यह है तेरा असली ठिकाना। अब तो उसे ख़ुशी और राहत ही राहत होती है। फिर उसकी रूह पाक रूहों में सब्ज़-परिन्दों के ख़ोल और जिस्म में जन्नती दरख़्तों में रहती है। और उसका जिस्म जिससे उसकी इब्तिदा की गयी थी उसी की तरफ़ लौटा दिया जाता है, यानी मिट्टी की तरफ़। यही इस आयत का मतलब है।

एक और रिवायत में है कि मौत के वक़्त की राहत व नूर को देखकर मोमिन अपनी रूह के निकल जाने की तमन्ना करता है और ख़ुदा को भी उसकी मुलाक़ात महबूब होती है। जब उसकी रूह आसमान पर चढ़ती है तो उसके पास मोमिनों की रूहें आती हैं और अपनी जान पहचान के लोगों के बारे में उससे ये सवालात करती हैं। अगर यह कहता है कि फ़ुलाँ तो ज़िन्दा है तो ख़ैर, और अगर यह कहता है कि फ़ुलाँ तो मर चुका है तो ये नाराज़ होकर कहती हैं यहाँ नहीं लाया गया (यानी वह जहन्नम में चला गया)।

मोमिन को उसकी क़ब्र में बैठाया जाता है, फिर उससे पूछा जाता है कि तेरा रब कौन है? वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है। पूछा जाता है, तेरा नबी कौन है? यह कहता है, मेरे नबी मुहम्मद सल्ल. हैं। फ़रिश्ता कहता है कि तेरा दीन क्या है? यह जवाब देता है मेरा दीन इस्लाम है। उसी रिवायत में है कि ख़ुदा के दुश्मन को जब मौत आने लगती है और यह ख़ुदा की नाराज़गी के असबाब देख लेता है तो नहीं चाहता कि उसकी रूह निकले। अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात से नाख़ुश होता है। उसमें है कि उससे सवाल जवाब और मार-पीट के बाद कहा जाता है कि ऐसा सो जैसे साँप का काटा हुआ।

एक और रिवायत में है कि जब यह हुज़ूर सल्ल. की रिसालत की गवाही देता है तो फ़रिश्ता कहता है कि तुझे कैसे मालूम हो गया? क्या तूने आपके ज़माने को पाया है? उसमें है कि काफ़िर की क़ब्र में ऐसा बहरा फ़रिश्ता अ़ज़ाब करने वाला होता है जो न कभी सुने न रहम करे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मौत के वक़्त मोमिन के पास फ़रिश्ते आकर सलाम करते हैं, जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं, उसके जनाज़े के साथ चलते हैं, लोगों के साथ उसके जनाज़े की नमाज़ में शिर्कत करते हैं। उसमें है कि काफ़िरों के पास फ़रिश्ते आते हैं, उनके चेहरों पर, उनकी कमर पर मारते हैं। उसे उसकी क़ब्र में जवाब भुला दिया जाता है। इसी तरह ज़ालिमों को ख़ुदा गुमराह कर देता है। हज़रत अबू क़तादा अन्सारी से भी ऐसा ही क़ौल मरवी है। उसमें है कि मोमिन कहता है- मेरे नबी हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हैं। कई दफ़ा उससे सवाल करते हैं और यह यही जवाब देता है। उसे जहन्नम का ठिकाना दिखाकर कहा जाता है कि अगर टेढ़ा चलता तो तेरी यह जगह थी, और जन्नत का ठिकाना दिखाकर कहा जाता है कि तौबा की वजह से तेरा यह ठिकाना है। हज़रत ताऊस फ़रमाते हैं कि दुनिया में साबित-क़दमी कलिमा-ए-तौहीद पर जमे रहना है, और आख़िरत में साबित-क़दमी मुन्कर-नकीर के जवाब की है। क़तादा रह. फ़रमाते हैं, ख़ैर और नेक अ़मल के साथ

दुनिया में रखे जाते हैं और क़ब्र में भी। अबू अ़ब्दुल्लाह हकीम तिर्मिज़ी अपनी किताब नवादिरुल-उसूल में बयान करते हैं कि सहाबा की जमाअ़त के पास आकर नबी करीम सल्ल. ने मदीना की मस्जिद में फ़रमाया कि पिछली रात मैंने अ़जीब बातें देखीं, देखा कि मेरे एक उम्मती को अ़ज़ाबे क़ब्र ने घेर रखा है, आख़िर उसके वुज़ू ने आकर उसे छुड़ा लिया। अपने एक उम्मती को देखा कि शैतान उसे परेशान किये हुए है, लेकिन ज़िक्रुल्लाह ने आकर उसे छुटकारा दिलाया। एक उम्मती को देखा कि अ़ज़ाब के फ़रिश्तों ने उसे घेर रखा है, उसकी नमाज़ ने आकर उसे बचा लिया। एक उम्मती को देखा कि प्यास की वजह से हलाक हो रहा है, जब हौज़ पर जाता है धक्के लगते हैं, उसका रोज़ा आया, उसने उसे पानी पिला दिया और आसूदा कर दिया। आपने एक और उम्मती को देखा कि अम्बिया हल्क़े बाँधकर (यानी गोल दायरा बनाकर) बैठे हैं, यह जिस हल्क़े में जाता है वहाँ वाले उसे उठा देते हैं, उसी वक़्त उसकी जनाबत (नापाकी) का ग़ुस्ल आया और उसका हाथ पकड़कर मेरे पास बैठा दिया। एक उम्मती को देखा कि चारों तरफ़ से उसे अंधेरा घेरे हुए है और ऊपर नीचे से भी वह उसी में घिरा हुआ है, तो उसका हज और उमरा आया और उसे उस अंधेरे में से निकाल कर नूर में पहुँचा दिया।

एक उम्मती को देखा कि वह मोमिनों से कलाम करना चाहता है लेकिन वे उससे बोलते नहीं। उसी वक़्त सिला-रहमी (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) आयी और ऐलान किया कि इससे बात-चीत करो, चुनाँचे वे बोलने लगे। एक उम्मती को देखा कि वह अपने मुँह पर से आग के शोले हटाने को हाथ बढ़ा रहा है, इतने में उसकी ख़ैरात आयी और उसके मुँह पर पर्दा और ओट हो गयी, और उसके सर पर साया बन गयी। अपने एक उम्मती को देखा कि अ़ज़ाब के फ़रिश्तों ने उसे हर तरफ़ से क़ैद कर लिया है, लेकिन उसका नेकी का हुक्म और बुराई से मना करना आया और उनके हाथों से छुड़ाकर रहमत के फ़रिश्तों से मिला दिया। अपने एक उम्मती को देखा कि घुटनों के बल गिरा हुआ है और ख़ुदा और उसके बीच हिजाब (पर्दा और ओट) है, उसके अच्छे अख़्लाक़ आये और उसका हाथ पकड़कर अल्लाह के पास पहुँचा आये। अपने एक उम्मती को देखा कि उसका नामा-ए-आमाल उसकी बायें तरफ़ से आ रहा है, लेकिन उसके ख़ौफ़े ख़ुदा ने आकर उसे उसके सामने कर दिया।

अपने एक उम्मती को मैंने जहन्नम के किनारे खड़ा देखा, उसी वक़्त उसका ख़ुदा से कपकपाना आया और उसे जहन्नम से बचा ले गया। मैंने अपने एक उम्मती को देखा कि उसे औंधा कर दिया गया है कि जहन्नम में डाल दें, लेकिन उसी वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा से उसका रोना आया और उन आँसुओं ने उसे बचा लिया। मैंने एक उम्मती को देखा कि पुलसिरात पर डगमगा रहा है कि उसका मुझ पर दुरूद पढ़ना आया और हाथ थामकर सीधा कर दिया, और वह पार उतर गया। एक को देखा कि जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचा लेकिन दरवाज़ा बन्द हो गया, उसी वक़्त 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' की शहादत (गवाही) पहुँची, दरवाज़े खुलवा दिये और उसे जन्नत में पहुँचा दिया।

इमाम क़ुर्तुबी रह. इस हदीस को बयान करके फ़रमाते हैं कि यह हदीस बहुत बड़ी है, इसमें उन मख़्सूस आमाल का ज़िक्र है जो मख़्सूस मुसीबतों से निजात दिलवाने वाले हैं। (तज़किरा)

इस बारे में हाफ़िज़ अबू यअ़ला मूसली रह. ने भी एक ग़रीब लम्बी हदीस रिवायत की है, जिसमें है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला मलकुल-मौत (मौत के फ़रिश्ते) से फ़रमाता है तू मेरे दोस्त के पास जा, मैंने उसे आसानी सख़्ती हर तरह से आज़मा लिया। हर एक हालत में उसे अपनी ख़ुशी में ख़ुश पाया। तू जा

Maktab E Ashraf

और उसे मेरे पास ले आ, ताकि मैं उसे हर तरह का आराम व ऐश दूँ। मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम अपने साथ पाँच सौ फ़रिश्तों को लेकर चलते हैं, उनके पास जन्नती कफ़न, वहाँ की ख़ुशबू और रेहान के गुच्छे होते हैं, जिसके सर पर बीस रंग होते हैं, हर रंग की ख़ुशबू अलग होती है। सफ़ेद रेशमी कपड़े में आला मुश्क बहुत अच्छे तरीक़े से लिपटी हुई है। ये सब आते हैं, मलकुल-मौत तो उसके सिरहाने बैठ जाते हैं और बाक़ी फ़रिश्ते उसके चारों तरफ़ बैठ जाते हैं। हर एक के साथ जो कुछ जन्नती तोहफ़ा है वह उसके आज़ा (बदन के हिस्सों) पर रख दिया जाता है और सफ़ेद रेशम और मुश्क अज़्फ़र उसकी ठोड़ी के नीचे रख दिया जाता है। उसके लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उसकी रूह कभी जन्नती फूलों से कभी जन्नती लिबास से कभी जन्नती फलों से इस तरह बहलाई जाती है जैसे रोते हुए बच्चे को लोग बहलाते हैं।

उस वक़्त उसकी हूरें हंस-हंसकर उसकी तमन्ना करती हैं। रूह इन मनाज़िर (दृश्यों) को देखकर बहुत जल्द जिस्मानी क़ैद से निकल जाने का इरादा करती है। मलकुल-मौत फ़रमाते हैं हाँ! ऐ पाक रूह बग़ैर काँटे की बेरियों की तरफ़ और लदे हुए केलों की तरफ़ और लम्बी-लम्बी छाँव की तरफ़ और पानी के झरनों की तरफ़ चल। अल्लाह की क़सम! माँ जिस क़द्र बच्चे पर मेहरबान होती है उससे भी ज़्यादा मलकुल-मौत उस पर शफ़क़त व रहमत करता है। इसलिये कि उसे इल्म है कि यह ख़ुदा का प्यारा है। अगर इसे ज़रा सी भी तकलीफ़ पहुँची तो मेरे रब की नाराज़गी मुझपर होगी। बस इस तरह उस रूह को उस जिस्म से अलग कर लेता है जैसे गुंधे हुए आटे में से बाल। उन्हीं के बारे में ख़ुदा का फ़रमान है कि उनकी रूह को तय्यिब (पाक) फ़रिश्ते निकालते हैं।

एक और जगह फ़रमान है कि अगर वह अल्लाह के क़रीबी और प्यारों में से है तो उसके लिये आराम व राहत है। यानी आराम व राहत की मौत मिलने वाली है, और दुनिया के बदले की जन्नत। मलकुल-मौत के रूह को क़ब्ज़ करते ही रूह जिस्म से कहती है कि अल्लाह तआ़ला तुझे जज़ा-ए-ख़ैर (अच्छा बदला) दे कि तू ख़ुदा की इताअ़त की तरफ़ जल्दी करने वाला और ख़ुदा की नाफ़रमानी से देर करने वाला था। तूने ख़ुद भी निजात पाई और मुझे भी निजात दिलवाई। जिस्म भी रूह को ऐसा ही जवाब देता है। ज़मीन के वे तमाम हिस्से जिन पर यह ख़ुदा की इबादत करता था इसके मरने से चालीस दिन तक रोते हैं। इसी तरह आसमान के वे तमाम दरवाज़े जिनसे इसके नेक आमाल चढ़ते थे, और जिनसे इसकी रोज़ी उतरती थी, इस पर रोते हैं। उसी वक़्त वे पाँच सौ फ़रिश्ते उस जिस्म के इर्द-गिर्द खड़े हो जाते हैं और उसके नहलाने में शामिल रहते हैं। इससे पहले कि इनसान उसकी करवट बदलें ख़ुद फ़रिश्ते बदल देते हैं और उसे नहलाकर इनसानी कफ़न से पहले अपने साथ लाया हुआ कफ़न पहना देते हैं। उनकी ख़ुशबू से पहले अपनी ख़ुशबू लगा देते हैं और उसके घर के दरवाज़े से लेकर उसकी क़ब्र तक दोनों तरफ़ क़तारें बाँधकर खड़े हो जाते हैं और उसके लिये इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ) करने लगते हैं। उस वक़्त शैतान इस ज़ोर से रंज के साथ चीख़ता है कि उसके जिस्म की हड्डियाँ टूट जायें, और कहता है मेरे लश्करियो! तुम बरबाद हो जाओ, हाय यह तुम्हारे हाथों से कैसे बच गया? वे जवाब देते हैं कि यह तो मासूम था।

जब उसकी रूह को लेकर मलकुल-मौत चढ़ते हैं तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को लेकर उसका स्वागत करते हैं। हर एक उसे अलग-अलग अल्लाह की तरफ़ से ख़ुशख़बरी सुनाता है। यहाँ तक कि उसकी रूह अल्लाह के अ़र्श के पास पहुँचती है। वहाँ जाते ही सज्दे में गिर पड़ती

है। उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला का इरशाद होता है कि मेरे बन्दे की रूह को बग़ैर काँटों की बेरियों में और तह-ब-त्तह केलों के दरख़्तों में और लम्बे-लम्बे सायों में और बहते पानियों में जगह दो। फिर जब उसे क़ब्र में रखा जाता है तो दायीं तरफ़ नमाज़ खड़ी हो जाती है, बायीं जानिब रोज़ा खड़ा हो जाता है, सर की तरफ़ क़ुरआन आ जाता है, नमाज़ों को चलकर जाना पैरों की तरफ़ होता है, एक किनारे सब्र खड़ा हो जाता है। अ़ज़ाब की एक गर्दन लपकती आती है, लेकिन दायीं जानिब से नमाज़ उसे रोक देती है कि यह हमेशा चौकन्ना रहा, अब इस क़ब्र में आकर ज़रा राहत पाई। वह बायीं तरफ़ से आती है, यहाँ से रोज़ा यही कहकर उसे आने नहीं देता। सिरहाने आती है यहाँ से क़ुरआन और ज़िक्र यही कहकर आड़े आते हैं। वह पाईतियों से आती है, यहाँ से उसका नमाज़ों के लिये चलकर जाना उसे रोक देता है। ग़र्ज़ कि चारों तरफ़ से ख़ुदा के महबूब के लिये रोक हो जाती है और अ़ज़ाब को कहीं से राह नहीं मिलती, वह वापस चला जाता है। उस वक़्त सब्र कहता है- मैं देख रहा था कि अगर तुमसे ही यह अ़ज़ाब दफ़ा हो जाये तो मुझे बोलने की क्या ज़रूरत? वरना मैं भी इसकी हिमायत करता। अब मैं पुलसिरात और मीज़ान (तराज़ू) के वक़्त इसके काम आऊँगा। अब दो फ़रिश्ते भेजे जाते हैं, एक को नकीर कहा जाता है दूसरे को मुन्कर। ये उचक ले जाने वाली बिजली जैसे होते हैं। उनके दाँत सींग जैसे होते हैं, उनके साँस से शोले निकलते हैं, उनके बाल पैरों तक लटके होते हैं, उनके दो कंधों के दरमियान इतनी इतनी दूरी और फ़ासला होता है, उनके दिल नर्मी और रहमत से बिल्कुल ख़ाली होते हैं, उनमें से हर एक के हाथ में हथोड़े होते हैं कि अगर क़बीला रबीआ़ और क़बीला मुज़र (ये अ़रब के दो बड़े बहादुर अधिक संख्या वाले क़बीले थे) जमा होकर उसे उठाना चाहें तो नामुम्किन है।

वे आते ही उसे कहते हैं, उठकर बैठ। यह उठकर सीधी तरह बैठ जाता है, उसका कफ़न उसके पहलू (करवट) पर आ जाता है। वे उससे पूछते हैं, तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? तेरा नबी कौन है? सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से न रहा गया, उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! डरावने फ़रिश्ते को कौन जवाब दे सकेगा? आपने इसी आयतः

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا...... الخ.

की तिलावत फ़रमाई। और फ़रमाया वह बेझिझक जवाब देता है कि मेरा रब अल्लाह है जिसका कोई शरीक नहीं। और मेरा दीन इस्लाम है, जो फ़रिश्तों का भी दीन है। और मेरे नबी मुहम्मद हैं, जो तमाम नबियों के सरदार और आख़िरी नबी थे। वे कहते हैं आपने सही जवाब दिया, अब तो वे उसके लिये उसकी क़ब्र को उसके आगे से, उसके दायें से, उसके बायें से, उसके पीछे से, उसके सर की तरफ़ से, उसके पाँव की तरफ़ से चालीस-चालीस हाथ खुली कर देते हैं। वे दो सौ हाथ की कुशादगी और फैलाव कर देते हैं और चालीस हाथ का इहाता कर देते हैं। और उससे फ़रमाते हैं कि अपनी नज़रें उठा, यह देखता है कि जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ है। वे कहते हैं ऐ ख़ुदा के दोस्त! चूँकि तूने ख़ुदा की बात मान ली है, तेरी मन्ज़िल यह है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, उस वक़्त जो सुरूर और राहत इससे दिल में होती है वह ला-ज़वाल (कभी ख़त्म न होने वाली) होती है। फिर उससे कहा जाता है अब अपने नीचे की तरफ़ देख, यह देखता है कि जहन्नम का दरवाज़ा खुला हुआ है, फ़रिश्ते कहते हैं देख इससे ख़ुदा ने तुझे हमेशा के लिये निजात बख़्शी। फिर तो उसका दिल इतना ख़ुश होता है कि यह ख़ुशी कभी भी उससे अलग और दूर नहीं होती।

Mahtab E Ashraf

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि उसके लिये सत्तर दरवाज़े जन्नत के खुल जाते हैं, जहाँ से सुहानी हवा की लपटें खुशबू और ठंडक के साथ आती रहती हैं। यहाँ तक कि उसे अल्लाह तआ़ला उसकी उस ख़्वाब-गाह (सोने की जगह यानी क़ब्र) से क़ियामत के क़ायम हो जाने पर उठाये।

इसी सनद से रिवायत की गयी है कि अल्लाह तआ़ला बुरे बन्दे के लिये मलकुल-मौत (मौत के फ़रिश्ते) से फ़रमाता है जा और उस मेरे दुश्मन को ले आ। उसे मैंने रोज़ी में बरकत दे रखी थी, अपनी नेमतें अ़ता फ़रमा रखी थीं, लेकिन फिर भी यह मेरी नाफ़रमानियों से न बचा, उसे ले आ ताकि मैं उससे इन्तिक़ाम (बदला) लूँ। उसी वक़्त हज़रत मलकुल-मौत अ़लैहिस्सलाम उसके सामने बहुत ही बुरी डरावनी सूरत में आते हैं, ऐसी कि किसी ने इतनी भयानक और घिनौनी सूरत न देखी हो। बारह आँखें होती हैं, जहन्नम का काँटोंदार लिबास साथ होता है, पाँच सौ फ़रिश्ते जो जहन्नमी आग के अंगारे और आग के कोड़े अपने साथ लिये होते हैं, उनके साथ होते हैं। मलकुल-मौत वह काँटोंदार खाल जो जहन्नम की आग की है उसके जिस्म पर मारते हैं, रुएँ-रुएँ में आग के काँटे घुस जाते हैं। फिर इस तरह घुमाते हैं कि उसका जोड़-जोड़ ढीला पड़ जाता है। फिर उसकी रूह उसके पाँव के अंगूठों से खींचते हैं और उसके घुटनों पर डाल देते हैं। उस वक़्त ख़ुदा का दुश्मन बेहोश हो जाता है और उसकी रूह उसकी ऐड़ियों की तरफ़ से खींचते हैं और उसके घुटनों पर डाल देते हैं। फिर उसके तहबन्द बाँधने की जगह पर डाल देते हैं। यह ख़ुदा का दुश्मन उस वक़्त फिर बेताब हो जाता है। मौत का फ़रिश्ता फिर उस बेहोशी को उठा लेता है और फ़रिश्ते फिर उसके चेहरे और कमर पर कोड़े बरसाने लगते हैं, आख़िर यहाँ तक कि रूह सीने पर चढ़ आती है। फिर हलक़ पर आ पहुँचती है, फिर फ़रिश्ते उस जहन्नमी ताँबे और जहन्नमी अंगारों को उसकी ठोड़ी के नीचे रख देते हैं और मलकुल-मौत अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं ऐ मरदूद व मलऊन रूह! चल सींक में, झुलसते पानी में और काले स्याह धुएँ के ग़ुबार में, जिसमें न ठंडक है न अच्छी जगह।

जब यह रूह क़ब्ज़ हो जाती है तो अपने जिस्म से कहती है- अल्लाह तुझे समझे, तू मुझे ख़ुदा की नाफ़रमानियों की तरफ़ भगाये लिये जा रहा था, ख़ुद भी हलाक हुआ और मुझे भी बरबाद किया। जिस्म भी रूह से यही कहता है। ज़मीन के वे तमाम हिस्से जहाँ यह ख़ुदा की नाफ़रमानी करता था, इस पर लानत करने लगते हैं। शैतानी लश्कर दौड़ता हुआ शैतान के पास पहुँचता है और कहता है कि हमने आज एक को जहन्नम में पहुँचा दिया। उसकी क़ब्र इस क़द्र तंग हो जाती है कि उसकी दायीं पसलियाँ बायीं में और बायीं दायीं में घुस जाती हैं। काले नाग बुख़्ती ऊँटों के बराबर उसकी क़ब्र में भेजे जाते हैं, जो उसके कानों और उसके पाँव के अंगूठों से डसना शुरू करते हैं और ऊपर चढ़ते आते हैं, यहाँ तक कि जिस्म के बीच में मिल जाते हैं। दो फ़रिश्ते भेजे जाते हैं, जिनकी आँखें तेज़ बिजली जैसी, जिनकी आवाज़ गरज जैसी, जिनके दाँत दरिन्दे जैसे, जिनके साँस आग के शोले के मानिन्द, जिनके बाल पैरों के नीचे तक, जिनके दो मोंढों के बीच इतनी-इतनी दूरी और फ़ासला है, जिनके दिल में रहमत व रहम का नाम व निशान भी नहीं, जिनका नाम मुन्कर-नकीर है। जिनके हाथ में लोहे के इतने बड़े हथोड़े हैं कि उन्हें रबीआ़ और मुज़र (ये अ़रब के दो बड़े बहादुर अधिक संख्या वाले क़बीले थे) मिलकर भी नहीं उठा सकते। वे उसे कहते हैं उठकर बैठ। यह सीधा बैठ जाता है और तहबन्द बाँधने की जगह उसका कफ़न आ पड़ता है। वे इससे पूछते हैं तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? तेरा नबी कौन है? यह कहता है मुझे तो कुछ ख़बर नहीं। वे कहते हैं हाँ न तूने मालूम किया न तूने पढ़ा? फिर ज़ोर से उसे हथोड़ा मारते हैं, उसकी चिंगारियाँ उसकी क़ब्र को भर देती

Maktab E Ashraf

हैं। फिर लौटकर उससे कहते हैं अपने ऊपर को देख, यह एक जन्नत का खुला हुआ दरवाज़ा देखता है, वे कहते हैं अल्लाह की कसम अगर तू ख़ुदा का फ़रमाँबरदार रहता तो तेरी यह जगह थी। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अब तो उसे ऐसी हसरत (अफ़सोस और ग़म) होती है जो कभी उसके दिल से जुदा नहीं होगी। फिर वे कहते हैं अब अपने नीचे देख। वह देखता है कि एक दरवाज़ा जहन्नम का खुला हुआ है, फ़रिश्ते कहते हैं ऐ ख़ुदा के दुश्मन! चूँकि तूने अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ काम किये हैं, अब तेरी जगह यह है। अल्लाह की कसम उस वक़्त उसका दिल रंज व अफ़सोस से बैठ जाता है। जो सदमा वह कभी भूलेगा नहीं। उसके लिये सत्तर दरवाज़े जहन्नम के खुल जाते हैं, जहाँ से गर्म हवा और भाप उसे हमेशा ही आया करती है। यहाँ तक कि उसे अल्लाह तआ़ला उठा बैठाये (यानी क़ियामत आ जाये)। यह हदीस बहुत ग़रीब है और यह मज़मून भी बहुत अ़जीब है, और इसका रावी यज़ीद रक़ाशी जो हज़रत अनस रज़ि. के नीचे का रावी है, उसकी ग़राबत व मुन्करात (यानी कमज़ोर रिवायतें बयान करना) बहुत हैं, और हदीस के इमामों के नज़दीक वह कमज़ोर रिवायत बयान करने वाला है। वल्लाहु आलम

अबू दाऊद में है, हज़रत उस्मान रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्ल. किसी शख़्स के दफ़न से फ़ारिग़ होते तो वहाँ ठहर जाते और फ़रमाते, अपने भाई के लिये इस्तिग़फ़ार करो और उसके लिये साबित-क़दमी (यानी सवाल जवाब में हिम्मत और जमे रहना) तलब करो, इस वक़्त इससे सवाल हो रहा है। हाफ़िज़ इब्ने मर्दूया ने अल्लाह तआ़ला के फ़रमानः

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ.... الخ.

की तफ़सीर में एक बहुत लम्बी हदीस बयान की है, वह भी ग़रीब मज़मून से भरी है।

क्या आपने उन लोगों (मक्का वालों) को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत पर बजाय (शुक्र करने के) कुफ़्र किया और जिन्होंने अपनी कौम को हलाकत के घर (28) (यानी) जहन्नम में पहुँचा दिया। वे उसमें दाख़िल होंगे, और वह रहने की बुरी जगह है। (29) और उन लोगों ने अल्लाह के साझी करार दिए ताकि दूसरों को भी उसके दीन से गुमराह करें। आप कह दीजिए कि थोड़ी और ऐश कर लो, क्योंकि तुम्हारा अख़ीर अन्जाम दोज़ख़ में जाना है। (30)	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۝ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ۝

एक बुरा ठिकाना

सही बुख़ारी में है कि इस आयत में 'क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा' दर असल 'क्या आप उन लोगों को नहीं जानते' के मायने में है। 'बवार' के मायने हलाकत के हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के बक़ौल इन लोगों से मक्का के काफ़िर मुराद हैं। और दूसरा क़ौल यह है कि इससे जबला बिन ऐहम और उसकी पैरवी करने वाले वे अ़रब के लोग मुराद हैं जो रोम वालों से मिल गये थे। लेकिन मशहूर और सही

Maktab E Ashraf

क़ौल इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ही है, अगरचे अलफ़ाज़ अपने उमूम के एतिबार से तमाम काफ़िरों को शामिल हों।

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तमाम आ़लम के लिये रहमत और तमाम लोगों के लिये नेमत बनाकर भेजा है, जिसने इस रहमत व नेमत की क़द्रदानी की वह जन्नती है और जिसने नाक़द्री की वह जहन्नमी है। हज़रत अ़ली रज़ि. से भी एक क़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के पहले क़ौल की मुवाफ़क़त में मन्क़ूल है। इब्ने कवा के जवाब में आपने यही फ़रमाया था कि यह बदर के दिन वाले क़ुरैश के काफ़िर हैं। एक और रिवायत में है कि एक शख़्स के सवाल पर आपने फ़रमाया, इससे मुराद क़ुरैश के मुनाफ़िक़ हैं। एक और रिवायत में है कि हज़रत अ़ली रज़ि. ने एक मर्तबा फ़रमाया- क्या मुझसे क़ुरआन के बारे में कोई कुछ बात दरियाफ़्त नहीं करता? वल्लाह मेरे इल्म में अगर कोई आज मुझसे ज़्यादा क़ुरआन का आ़लिम होता तो अगरचे समुद्रों के पार हो लेकिन मैं ज़रूर उसके पास पहुँचता। यह सुनकर अ़ब्दुल्लाह बिन कवा खड़ा हो गया और कहा ये कौन लोग हैं जिनके बारे में ख़ुदा का फ़रमान है कि उन्होंने ख़ुदा की नेमत को कुफ़्र से बदला और अपनी क़ौम को हलाकत (तबाही) के गड्ढ़े में डाल दिया। आपने फ़रमाया ये क़ुरैश के मुश्रिक लोग हैं, उनके पास अल्लाह की नेमत ईमान पहुँची, लेकिन इस नेमत को उन्होंने कुफ़्र में बदल दिया। एक और रिवायत में आपसे मन्क़ूल है कि इससे मुराद क़ुरैश के दो फ़ाजिर (बदकार) हैं बनू उमैया और बनू मुग़ीरा। बनू मग़ीरा ने अपनी क़ौम को बदर में ला खड़ा किया और उन्हें हलाकत में डाला, और बनू उमैया ने उहुद वाले दिन अपने लोगों को तबाह किया। बदर में अबू जहल था, और बदर में अबू सुफ़ियान, और हलाकत के घर से मुराद जहन्नम है।

एक और रिवायत में है कि बनू मुग़ीरा तो बदर में हलाक हुए और बनू उमैया को कुछ दिनों का फ़ायदा मिल गया। हज़रत उमर रज़ि. से भी इस आयत की तफ़सीर में यही नक़ल किया गया है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने जब आपसे सवाल किया तो आपने फ़रमाया ये दोनों क़ुरैश के बदकार हैं। मेरे मामूँ और तेरे चचा। मेरी ननिहाल वाले तो बदर के दिन नापैद हो गये और तेरे चचा वालों को ख़ुदा ने मोहलत दे रखी है। ये जहन्नम में जायेंगे जो बुरी जगह है। उन्होंने ख़ुद शिर्क किया, दूसरों को शिर्क की तरफ़ बुलाया। ऐ नबी! तुम उनसे कह दो कि दुनिया में कुछ खा पी लो, पहन ओढ़ लो, तुम्हारा आख़िरी ठिकाना तो जहन्नम है। जैसे फ़रमान है कि हम उन्हें मामूली सा आराम दे देंगे, फिर सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ बेबस कर देंगे। चाहे दुनियावी नफ़ा हो लौटेंगे तो हमारी ही तरफ़, उस वक़्त हम उनके कुफ़्र की वजह से सख़्त अ़ज़ाब करेंगे।

जो मेरे (ख़ास) ईमान वाले बन्दे हैं उनसे कह दीजिए कि वे नमाज़ की पाबन्दी रखें और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से छुपे और खुले तौर पर ख़र्च किया करें, ऐसे दिन के आने से पहले (पहले) कि जिसमें न ख़रीद व बेच होगी और न दोस्ती। (31)	قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝

एक अ़जीब व ग़रीब दिन

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को अपनी इताअ़त का, अपने हक़ मानने का और मख़्लूक़े ख़ुदा से एहसान व सुलूक करने का हुक्म दे रहा है। फ़रमाता है कि नमाज़ बराबर पढ़ते रहें, जो अल्लाह तआ़ला की इबादत है। और ज़कात ज़रूर देते रहें। रिश्तेदारों और अ़ज़ीज़ों को भी और अन्जान लोगों को भी। नमाज़ में 'क़ायम' करने से मुराद वक़्त की, हद की, रुकूअ़ की, ख़ुशूअ़ की, सज्दे की हिफ़ाज़त करना है। ख़ुदा की दी हुई रोज़ी को उसकी राह में छुपे और खुले तौर पर उसकी रज़ा हासिल करने के लिये औरों को भी देनी चाहिये, ताकि उस दिन निजात और छुटकारा मिले जिस दिन कोई ख़रीद व फ़रोख़्त न होगी, न कोई दोस्ती आशनाई होगी। कोई ख़ुदा को फ़िदया (यानी माल) देकर छुड़ाना भी चाहे तो भी नामुम्किन है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا.

यानी आज तुमसे और काफ़िरों से कोई फ़िदया और बदला न लिया जायेगा।

वहाँ किसी की दोस्ती की वजह से कोई छूटेगा नहीं, बल्कि वहाँ अ़दल व इन्साफ़ ही होगा। दुनिया में लेन-देन, मुहब्बत और दोस्ती (ताल्लुक़) काम आ जाती है, लेकिन वहाँ यह चीज़ अगर अल्लाह के लिये न हो तो बिल्कुल बेफ़ायदा रहेगी। कोई सौदागरी, कोई ताल्लुक़ वहाँ काम न आयेगा। ज़मीन भरकर सोना फ़िदया में देना चाहे लेकिन रद्द है। किसी की दोस्ती किसी की सिफ़ारिश काफ़िर को काम न देगी।

फ़रमाने ख़ुदा है:

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا... الخ.

उस दिन के अ़ज़ाब से बचने की कोशिश करो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम न आयेगा। न किसी से फ़िदया (माल) क़बूल किया जायेगा न किसी की शफ़ाअ़त नफ़ा देगी, न कोई किसी की मदद कर सकेगा। अल्लाह का फ़रमान है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ. وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ.

ईमान वालो! जो हमने तुम्हें दे रखा है तुम उसमें से हमारी राह में ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आये जिसमें न ख़रीद-फ़रोख़्त है, न दोस्ती न शफ़ाअ़त। काफ़िर ही दर असल ज़ालिम हैं।

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ	अल्लाह ऐसा है कि जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से पानी (यानी बारिश को) बरसाया, फिर उस (पानी) से फलों की क़िस्म से तुम्हारे लिए रिज़्क़ पैदा किया और तुम्हारे नफ़े के वास्ते कश्ती (और जहाज़) को तुम्हारे ताबे बनाया ताकि वह उसके (यानी ख़ुदा के) हुक्म (व क़ुदरत) से दरिया में

وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهٰرَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝ وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۝	चले, और तुम्हारे नफ़े के वास्ते नहरों को (अपनी क़ुदरत का) ताबे बनाया। (32) और तुम्हारे नफ़े के वास्ते सूरज और चाँद को (अपनी क़ुदरत का) ताबे बनाया जो हमेशा चलने ही में रहते हैं, और तुम्हारे नफ़े के वास्ते रात और दिन को (अपनी क़ुदरत का) ताबे बनाया। (33) और जो-जो चीज़ तुमने माँगी तुमको (हर चीज़) दी, और अल्लाह तआ़ला की नेमतें अगर शुमार करने लगो तो शुमार में नहीं ला सकते, (मगर) सच यह है कि आदमी बहुत ही बेइन्साफ़ और बड़ा ही नाशुक्रा है। (34)

ع 17

कैसी-कैसी निशानियाँ

अल्लाह की तरह-तरह की बेशुमार नेमतों को देखो आसमान को उसने एक महफ़ूज़ (सुरक्षित) छत बना रखा है। ज़मीन को बेहतरीन फ़र्श बना रखा है। आसमान से बारिश बरसा कर ज़मीन से मज़े-मज़े के फल खेतियाँ बाग़ात तैयार कर देता है। उसी के हुक्म से कश्तियाँ पानी के ऊपर तैरती फिरती हैं कि तुम्हें एक किनारे से दूसरे किनारे और एक मुल्क से दूसरे मुल्क पहुँचायें। तुम वहाँ का माल यहाँ, यहाँ का वहाँ ले जाओ, ले आओ। नफ़ा हासिल करो, तजुर्बा बढ़ाओ। नहरें भी उसी ने तुम्हारे काम में लगा रखी हैं, तुम उनका पानी पियो पिलाओ, उससे खेतियाँ करो, नहाओ धोओ और तरह-तरह के फ़ायदे हासिल करो। लगातार और हमेशा चलने फिरने और कभी न थकने वाले सूरज चाँद भी तुम्हारे फ़ायदे के कामों में मशग़ूल हैं। मुक़र्ररा चाल पर मुक़र्ररा जगह पर गर्दिश में लगे हुए हैं। न उनमें टक्कर होती है न एक दूसरे से आगे या पीछे हों। दिन रात उनही के आने-जाने से लगातार और एक दूसरे के पीछे आते जाते रहते हैं। सितारे उसी के हुक्म के अधीन हैं। वह रब्बुल-आ़लमीन बरकत वाला है, कभी दिनों को बड़ा कर देता है कभी रातों को बढ़ा देता है। हर चीज़ अपने काम में सर झुकाये मशग़ूल है। वह ख़ुदा सब पर ग़ालिब और ग़फ़्फ़ार है। तुम्हारी ज़रूरत की तमाम चीज़ें उसने तुम्हारे लिये मुहैया कर दी हैं, तुम अपने हाल व क़ाल (अ़मल और क़ौल) से जिन-जिन चीज़ों के मोहताज थे उसने सब कुछ तुम्हें दे दी हैं। माँगने पर भी वह देता है अैर बेमाँगे भी उसका हाथ नहीं रुकता। तुम रब की तमाम नेमतों का शुक्रिया तो क्या अदा करोगे तुमसे तो उनकी पूरी गिनती भी मुहाल है।

तलक़ बिन हबीब रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा का हक़ इससे बहुत भारी है कि बन्दे उसे अदा कर सकें और ख़ुदा की नेमतें इससे बहुत ज़्यादा हैं कि बन्दे उनकी गिनती कर सकें। लोगो! सुबह शाम तौबा इस्तिग़फ़ार करते रहो। सही बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाया करते थे- ख़ुदाया तेरे ही लिये सब तारीफ़ व हम्द शोभा है। हमारी तारीफ़ें नाकाफ़ी हैं, पूरी और बेपरवाह करने वाली नहीं, ख़ुदाया तू माफ़ फ़रमा। बज़्ज़ार में आपका फ़रमान है कि क़ियामत के दिन इनसान के तीन दीवान (दफ़्तर) निकलेंगे, एक में नेकियाँ लिखी हुई होंगी, दूसरे में गुनाह होंगे, तीसरे में ख़ुदा की नेमतें होंगी। अल्लाह तआ़ला अपनी नेमतों

में से सबसे छोटी नेमत से फ़रमायेगा कि उठ और अपना मुआवज़ा उसके नेक आमाल से ले ले। उससे उसके सारे ही अ़मल ख़त्म हो जायेंगे, फिर भी वह एक तरफ़ होकर कहेगी कि बारी तआ़ला! मेरी पूरी क़ीमत वसूल नहीं हुई।

ख़्याल कीजिए अभी गुनाहों का दीवान यूँ ही अलग-थलग रखा हुआ है और तमाम नेमतों का दीवान भी यूँ ही रखा हुआ है। अगर बन्दे पर ख़ुदा का इरादा रहम व करम का हुआ तो अब वह उसकी नेकियाँ बढ़ा देगा, और उसके गुनाहों से आगे बढ़ जायेगा, और उससे फ़रमा देगा कि मैंने अपनी नेमतें तुझे बग़ैर बदले के बख़्श दीं। इसकी सनद ज़ईफ़ (कमज़ोर) है।

नक़ल किया गया है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआ़ला से दरियाफ़्त किया कि मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ? शुक्र करना ख़ुद भी तो तेरी एक नेमत है। जवाब मिला कि दाऊद अब तू शुक्र अदा कर चुका, जबकि तूने यह जान लिया और इसका इक़रार कर लिया कि तू मेरी नेमतों के शुक्र की अदायेगी से क़ासिर (असमर्थ) है।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह ही के लिये तो तारीफ़ है, जिसकी बेशुमार नेमतों में से एक नेमत का शुक्र भी बग़ैर एक नई नेमत के हम अदा नहीं कर सकते, कि उस नई नेमत पर फिर एक शुक्र वाजिब हो जाता है। फिर उस नेमत की शुक्रगुज़ारी की तौफ़ीक़ होने पर दूसरी नेमत मिली, जिसका शुक्रिया वाजिब हुआ। एक शायर ने यही मज़मून अपने शे'रों में बाँधा है कि रोंगटे-रोंगटे पर ज़बान हो तो भी तेरी एक नेमत का शुक्र ही पूरा अदा नहीं हो सकता, तेरे एहसानात और इनामात बेशुमार हैं।

और जबकि इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब! इस शहर (यानी मक्का) को अमन वाला बना दीजिए और मुझको और मेरे ख़ास फ़रज़न्दों को बुतों की हिफ़ाज़त से बचाए रखिए। (35) ऐ मेरे परवर्दिगार! उन बुतों ने बहुत-से आदमियों को गुमराह कर दिया, फिर जो शख़्स मेरी राह पर चलेगा वह तो मेरा है ही, और जो शख़्स (इस बारे में) मेरा कहना न माने सो आप तो बहुत ज़्यादा मग़फ़िरत करने वाले (और) बहुत ज़्यादा रहमत फ़रमाने वाले हैं। (36)	وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۝ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِي فَاِنَّهٗ مِنِّي ۚ وَمَنْ عَصَانِي فَاِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की एक मक़बूल दुआ़

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि हुर्मत वाला (सम्मानित) शहर मक्का शुरू में अल्लाह की तौहीद पर ही बनाया गया था। उसके पहले संस्थापक हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के सिवा औरों की इबादत करने वालों से बरी थे। उनही ने इस शहर के शान्ति पूर्ण होने की दुआ़ की थी जो ख़ुदा तआ़ला ने क़बूल फ़रमाई। सबसे पहला बरकत और हिदायत वाला ख़ुदा का घर मक्का शरीफ़ का ही है, जिसमें और बहुत सी स्पष्ट निशानियों के अ़लावा 'मक़ामे इब्राहीम' भी है। इस शहर में जो पहुँच गया अमन व अमान में आ गया। इस शहर को बनाने के बाद ख़लीले ख़ुदा ने दुआ़ की कि ख़ुदाया! इस शहर

Maktab E Ashraf

को पुर-अमन (शान्ति वाला) बना। इसी लिये फ़रमाया कि ख़ुदा का शुक्र है जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल व इस्हाक़ जैसे बच्चे अता फ़रमाये। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हज़रत इस्हाक़ से तेरह साल बड़े थे, इससे पहले जबकि आप हज़रत इस्माईल को दूध पीता उनकी वालिदा के साथ लेकर यहाँ आये थे, जब भी आपने इस शहर के अमन वाला होने की दुआ की थी, लेकिन उस वक़्त के अलफ़ाज़ ये थे:

رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا.

कि या अल्लाह इस शहर को अमन वाला बना।

उस वक़्त तक यह शहर आबाद नहीं था, और अब चूँकि शहर आबाद हो चुका था। सूरः ब-क़रह में हम इन चीज़ों को वज़ाहत व तफ़सील के साथ ज़िक्र कर आये हैं। फिर दूसरी दुआ में अपनी औलाद को भी शरीक किया। इनसान को लाज़िम है कि अपनी दुआ में अपने माँ-बाप को और औलाद को भी शामिल रखे। फिर आपने बुतों की गुमराही, उनका फ़ितना, अक्सर लोगों का बहक जाना बयान फ़रमाकर उनसे अपनी बेज़ारी (नफ़रत और बेताल्लुक़ी) का इज़हार किया, और उन्हें ख़ुदा के हवाले किया, कि वह चाहे बख़्शे चाहे सज़ा दे। जैसे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़ियामत के दिन कहेंगे कि अगर तू इन्हें अज़ाब करे तो ये तेरे बन्दे हैं, और अगर बख़्श दे तो तू अज़ीज़ व हकीम है। यह याद रहे कि इसमें सिर्फ़ ख़ुदा की चाहत व मर्ज़ी और उसके इरादे की तरफ़ लौटना है, न कि उसके वाक़े (वास्तविक शक्ल में) होने को जायज़ समझना है। हुज़ूर सल्ल. ने ख़लीलुल्लाह का यह क़ौल और हज़रत ईसा रूहुल्लाह का क़ौल 'अगर तू इन्हें अज़ाब दे तो ये तेरे बन्दे हैं..........' तिलावत करके रो-रोकर अपनी उम्मत को याद किया तो ख़ुदा तआला ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को हुक्म फ़रमाया कि जाकर दरियाफ़्त करो कि क्यों रो रहे हो? आपने सबब बयान किया। हुक्म हुआ कि जाओ और कह दो आपको हम आपकी उम्मत के बारे में ख़ुश कर देंगे, नाराज़ न करेंगे।

رَبَّنَآ اِنِّیْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِیْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِیْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِیْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ○	ऐ हमारे रब! मैं अपनी औलाद को आपके अज़मत वाले "यानी प्रतिष्ठित" घर के क़रीब एक (चटियल और सुनसान) मैदान में जो काश्तकारी के क़ाबिल नहीं, आबाद करता हूँ। ऐ हमारे रब ताकि वे लोग नमाज़ का एहतिमाम "यानी पाबन्दी" रखें, तो आप कुछ लोगों के दिल उनकी तरफ़ माईल कर दीजिए, और उनको (महज़ अपनी क़ुदरत से) फल खाने को दीजिए ताकि ये लोग (इन नेमतों का) शुक्र करें। (37)

ग़ैर-उपजाऊ ज़मीन

यह दूसरी दुआ है, पहली दुआ इस शहर के आबाद होने से पहले जब आप हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को मय उनकी वालिदा साहिबा के यहाँ छोड़कर गये थे, तब की थी। और यह दुआ उस शहर

Maktab E Ashraf

के आबाद हो जाने के बाद की, इसलिये यहाँ 'आपके सम्मानित घर के क़रीब' का लफ़्ज़ लाये, और नमाज़ के क़ायम करने का भी ज़िक्र फ़रमाया।

इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं, यह मुताल्लिक़ है लफ़्ज़ ''अलमुहर्रम'' के साथ, यानी इसे हुर्मत व सम्मान वाला इसलिये बनाया है कि यहाँ वाले इत्मीनान से यहाँ नमाज़ें अदा कर सकें। यह नुक्ता भी याद रखने के काबिल है कि आपने फ़रमाया- कुछ लोगों के दिल इसकी तरफ़ झुका दे। अगर सब लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ झुकाने की दुआ होती तो ईरान व रोम, यहूद व ईसाई ग़र्ज़ तमाम दुनिया के लोग यहाँ उलट पड़ते। आपने सिर्फ़ मुसलमानों के लिये यह दुआ की। एक और दुआ में हैं कि उन्हें फल भी इनायत फ़रमा। यह ज़मीन खेती-बाड़ी के क़ाबिल (यानी उपजाऊ) भी नहीं, और दुआ हो रही है फलों की रोज़ी की, अल्लाह तआ़ला ने यह दुआ भी क़बूल फ़रमाई। जैसा कि इरशाद है:

اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا.

यानी क्या हमने उन्हें हुर्मत व अमन वाली ऐसी जगह इनायत नहीं फ़रमाई जहाँ हर चीज़ के फल उनकी तरफ़ खिंचे चले आते हैं, जो ख़ास हमारे पास की रोज़ी है।

पस यह ख़ुदा तआ़ला का ख़ास लुत्फ़ व करम और इनायत व रहम है कि शहर की पैदावार कुछ भी नहीं और फल हर तरह के वहाँ मौजूद हर तरफ़ से वहाँ चले आयें। यह है हज़रत इब्राहीम ख़लीलुर्रहमान अ़लैहिस्सलाम की दुआ की क़बूलियत।

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

ऐ हमारे रब! आपको तो सब कुछ मालूम है जो हम अपने दिल में रखें और जो ज़ाहिर कर दें। और अल्लाह तआ़ला से (तो) कोई चीज़ भी छुपी नहीं, (न) ज़मीन में और न आसमान में। (38) तमाम तारीफ़ (और प्रशंसा) ख़ुदा के लिए (लायक़) है जिसने मुझको बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ (दो बेटे) अ़ता फ़रमाए। हक़ीक़त में मेरा रब दुआ़ का बड़ा सुनने वाला है। (39) ऐ मेरे रब! मुझको भी नमाज़ का (ख़ास) एहतिमाम करने वाला रखिए और मेरी औलाद में भी (बाज़ों को)। ऐ हमारे रब! और मेरी (यह) दुआ़ क़बूल कीजिये। (40) (और) ऐ हमारे रब! मेरी मग़फ़िरत कर दीजिए और मेरे माँ-बाप की भी और तमाम मोमिनों की भी हिसाब के क़ायम होने के दिन। (41)

ع ١٨

Maktab E Ashraf

नेमत का शुक्र

ख़लीले ख़ुदा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी मुनाजात में फ़रमाते हैं कि ख़ुदाया तू मेरे इरादे और मेरे मक़सूद को मुझसे ज़्यादा जानता है। मेरी तमन्ना है कि यहाँ के रहने वाले तेरी रज़ा के तालिब और सिर्फ़ तेरी तरफ़ राग़िब रहें। ज़ाहिर व बातिन तुझ पर रोशन है, ज़मीन व आसमान की हर चीज़ का हाल तुझ पर खुला है। तेरा एहसान है कि इस पूरे बुढ़ापे में तूने मेरे यहाँ औलाद अ़ता फ़रमाई, और एक पर एक बच्चा दिया, इस्माईल भी इस्हाक़ भी। तू दुआ़ओं का सुनने और क़बूल करने वाला है। मैंने माँगा तूने दिया। पस तेरा शुक्र है ख़ुदाया! मुझे नमाज़ों का पाबन्द बना और मेरी औलाद में भी यह सिलसिला क़ायम रख। मेरी तमाम दुआ़यें क़बूल फ़रमा। यह दुआ़ इससे पहले की है कि आपको ख़ुदा की तरफ़ से मालूम हो जाये कि आपका वालिद ख़ुदा की दुश्मनी पर ही मरा है। जब यह ज़ाहिर हो गया तो अपने वालिद से बेज़ार हो गये। पस यहाँ आप अपने माँ-बाप की और तमाम मोमिनों की ख़ताओं की माफ़ी ख़ुदा से चाहते हैं, कि आमाल के हिसाब और बदले के दिन क़सूर माफ़ हों।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۚ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۝ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ۝	और (ऐ मुख़ातब!) जो कुछ ये ज़ालिम (काफ़िर) लोग कर रहे हैं इससे अल्लाह को बेख़बर मत समझ (क्योंकि) उनको सिर्फ़ उस दिन तक मोहलत दे रखी है जिसमें (उन लोगों की) निगाहें फटी रह जाएँगी। (42) दौड़ते होंगे, अपने सर ऊपर उठा रखे होंगे, (और) उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आएगी, और उनके दिल बिल्कुल बदहवास होंगे। (43)

परेशान दिल

कोई यह न समझे कि बुराई करने वाले की बुराई का ख़ुदा को इल्म नहीं, इसी लिये ये दुनिया में फल फूल रहे हैं। नहीं! अल्लाह एक-एक बुरे भले अ़मल से बख़ूबी वाक़िफ़ है। यह ढील ख़ुद उसकी दी हुई है, कि या तो उसमें वापस हो जाये या फिर गुनाहों में बढ़ जाये, यहाँ तक कि क़ियामत का दिन आये, जिस दिन की हौलनाकियाँ आँखें पथरा देंगी, दीदे चढ़ा देंगी, सर उठाये पुकारने वाले की आवाज़ की तरफ़ दौड़े चले जायेंगे, कहीं इधर-उधर न होंगे, सबके सब पूरे इताअ़त-गुज़ार बन जायेंगे। दौड़े भागे अल्लाह के दरबार में हाज़िरी के लिये बेताबी के साथ आयेंगे, आँखें नीचे को न झुकेंगी, घबराहट और फ़िक्र के मारे पलक से पलक न मिलेगी। दिलों का यह हाल होगा कि गोया उड़े जाते हैं, ख़ाली पड़े हैं, ख़ौफ़ के सिवा कोई चीज़ नहीं, वे हलक़ तक पहुँचे हुए हैं, अपनी जगह से हटे हुए हैं, दहशत से तबाह हो रहे हैं।

وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخِّرْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۗ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُم مِّن قَبْلُ مَا لَكُم مِّن زَوَالٍ ۝ وَسَكَنتُمْ فِي مَسَاكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ۝ وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِندَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ ۗ وَإِن كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝

और आप उन लोगों को उस दिन से डराइये जिस दिन उन पर अज़ाब आ पड़ेगा। फिर वे ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब! एक थोड़ी सी मुद्दत तक हमको (और) मोहलत दे दीजिए, हम आपका सब कहना मान लेंगे और पैग़म्बरों की इत्तिबा "यानी पैरवी" करेंगे। (जवाब में इरशाद होगा) क्या तुमने इससे पहले कसमें न खाई थीं कि तुमको कहीं जाना ही नहीं है। (44) हालाँकि तुम उन (पहले) लोगों के रहने की जगहों में रहते थे जिन्होंने अपनी ज़ात का नुकसान किया था, और तुमको (यह भी) मालूम हो गया था कि हमने उनके साथ क्योंकर मामला किया था, और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं। (45) और उन लोगों ने अपनी-सी बहुत ही बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं, और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। और वाक़ई उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएँ (मगर सब बेकार हो गईं)। (46)

बेकार की तमन्नायें

ज़ालिम और ना-इन्साफ़ लोग अज़ाबे ख़ुदा देखकर तमन्नायें करते और दुआयें माँगते हैं कि हमें ज़रा सी मोहलत मिल जाये कि अल्लाह के हुक्म की तामील कर लें, और पैग़म्बरों की इताअ़त भी कर लें। एक और आयत में है कि मौत को देखकर कहते हैं:

رَبِّ ارْجِعُوْنِ.

ख़ुदाया! अब वापस लौटा दे.....।

यह पूरा मज़मून सूरः मुनाफ़िक़ून की आयत 9-11 में बयान हुआ है।

यानी ऐ मुसलमानो! तुम्हें माल औलाद ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, ऐसा करने वाले लोग क़तई तौर पर ख़सारे में हैं। हमारा दिया हुआ हमारी राह में देते रहो, ऐसा न हो कि मौत के वक़्त आरज़ू करने लगो कि मुझे ज़रा सी देर की मोहलत मिल जाये तो मैं ख़ैरात ही कर लूँ, और नेक लोगों में मिल जाऊँ। याद रखो कि अजल (यानी मौत और मुक़र्ररा वक़्त) आने के बाद किसी को मोहलत नहीं मिलती, और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है, महशर में भी उनका यही हाल होगा। चुनाँचे सूरः सज्दा की आयतः

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُوْنَ....... الخ.

(सूरः सज्दा आयत 12) में है कि काश तुम गुनाहगारों को देखते कि वे अपने परवर्दिगार के सामने सर

Maktab E Ashraf

झुकाये कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया, तू हमें दुनिया में एक बार फिर भेज दे कि हम यक़ीन वाले होकर नेक आमाल कर लें। यही बयान आयतः

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ..... الخ.

(सूरः अन्आम आयत 30) और आयतः

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا....... الخ.

(सूरः फ़ातिर आयत 37) वग़ैरह में भी है। यहाँ उन्हें जवाब मिलता है कि तुम तो इससे पहले क़समें खा-खाकर कहते हो कि तुम्हारी नेमतों को ज़वाल (ख़ात्मा) ही नहीं। क़ियामत कोई चीज़ ही नहीं, मर कर उठना ही नहीं, अब इसका मज़ा चखो। यह कहा करते थे और ख़ूब ज़ोर देकर क़समें खा-खाकर दूसरों को भी यक़ीन दिलाते थे कि मुर्दों को ख़ुदा दोबारा ज़िन्दा न करेगा, फिर फ़रमाता है कि तुम ख़ुद देख चुके कि तुमसे पहलों के साथ हमने क्या किया, उनकी मिसालें हम तुमसे बयान भी कर चुके कि हमारे अ़ज़ाब ने कैसे उन्हें ग़ारत कर दिया, बावजूद इसके तुम उनसे इबरत (सबक़) हासिल नहीं करते, और ध्यान नहीं देते। ये चाहे कितने ही चालाक हों, लेकिन ज़ाहिर है कि ख़ुदा के सामने किसी की चालाकी नहीं चलती।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से जिसने झगड़ा किया था, उसने दो बच्चे गिद्ध के लेकर पाले, जब वे बड़े हो गये, जवानी को पहुँचे, ताक़त व क़ुव्वत वाले हो गये तो छोटी सी चौकी के एक पाये से एक को बाँध दिया, दूसरे पाये से दूसरे को बाँध दिया। उन्हें खाने को कुछ न दिया, ख़ुद अपने साथी समेत उस चौकी पर बैठ गया और एक लकड़ी के सिरे पर गोश्त बाँधकर उसे ऊपर उठाया, भूखे गिद्ध वह खाने के लिये ऊपर को उड़े और अपने ज़ोर से चौकी को भी ले उड़े। अब जबकि ये इतनी बुलन्दी पर पहुँच गये कि हर चीज़ उन्हें मक्खी की तरह नज़र आने लगी तो उसने लकड़ी झुका दी, अब गोश्त नीचे दिखाई देने लगा, इसलिये जानवरों ने पर समेट कर गोश्त लेने के लिये नीचे उतरना शुरू किया और तख़्त भी नीचा होने लगा, यहाँ तक कि ज़मीन तक पहुँच गया। पस ये हैं वे मक्कारियाँ जिनसे पहाड़ों का ज़वाल (पतन और ख़ात्मा) भी मुम्किन हो जाये।

यह क़िस्सा नमरूद का है जो किनआ़न का बादशाह था। उसने इस तरीक़े से आसमान का क़ब्ज़ा चाहा था, उसके बाद क़िबतियों के बादशह फ़िरऔ़न को भी यही ख़ब्त सवार हुआ था। एक बड़ा बुलन्द मिनारा तामीर कराया था, लेकिन दोनों की कम-हिम्मती, कमज़ोरी और आ़जिज़ी ज़ाहिर हो गयी और ज़िल्लत व ख़्वारी, पस्ती व बेबसी के साथ हक़ीर व ज़लील हुए।

कहते हैं कि जब बुख़्ते-नस्सर इस तरीक़े से अपने तख़्ते को बहुत ऊँचा ले गया, यहाँ तक कि ज़मीन और ज़मीन वाले उसकी नज़रों से ग़ायब हो गये तो उसे एक क़ुदरती आवाज़ आयी कि ऐ सरकश नाफ़रमान! क्या इरादा है? यह डर गया, ज़रा सी देर बाद फिर उसे यही ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी। अब तो इसके होश ख़राब हो गये और जल्दी से नेज़ा झुकाकर उतरना शुरू कर दिया।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ؁ يَوْمَ تُبَدَّلُ	पस अल्लाह तआ़ला को अपने रसूलों से वायदा-ख़िलाफ़ी करने वाला न समझना, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा ज़बरदस्त (और) पूरा

Maktab E Ashraf

बदला लेने वाला है। (47) जिस दिन दूसरी ज़मीन बदल दी जाएगी इस ज़मीन के अलावा और आसमान भी, और सब-के-सब एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। (48)	الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝

ख़ुदा-ए-वाहिद की अदालत

अल्लाह तआ़ला अपने वादे को एक बार फिर याद दिलाकर पुख़्ता कर रहा है कि दुनिया व आख़िरत में जो उसने अपने रसूल की मदद का वादा किया है वह कभी उसके ख़िलाफ़ करने वाला नहीं। उस पर कोई और ग़ालिब नहीं, वह सब पर ग़ालिब है। उसके इरादे से मुराद अलग नहीं (यानी उसके इरादे से कोई चीज़ अलग नहीं, कि वह चाहे और वह न हो)। उसका चाहा होकर ही रहता है। वह काफ़िरों से उनके कुफ़्र का बदला ज़रूर लेगा। क़ियामत के दिन उन पर हसरत व मायूसी तारी होगी, उस दिन ज़मीन होगी, लेकिन इसके अ़लावा दूसरी होगी, इसी तरह आसमान भी बदल दिये जायेंगे। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि ऐसी सफ़ेद साफ़ ज़मीन पर हश्र किया जायेगा, जैसे मैदे की सफ़ेद टिकिया हो, जिस पर कोई निशान और उभार न होगा।

मुस्नद अहमद में है, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि सबसे पहले मैंने ही इस आयत के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल. से सवाल किया था, कि उस वक़्त लोग कहाँ होंगे? आपने फ़रमाया पुलसिरात पर। एक और रिवायत में है कि आपने यह भी फ़रमाया कि तुमने वह बात पूछी जो मेरी उम्मत में से किसी और ने मुझसे नहीं पूछी थी। एक रिवायत में है कि यही सवाल उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ि. का आयतः

وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ.... الخ.

(सूरः ज़ुमर आयत 67) के मुताल्लिक़ था। और आपने यही जवाब दिया था।

हज़रत सोबान रज़ि. कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के पास था कि एक यहूदी आ़लिम आया और उसने आपका नाम लेकर सलामु अ़लैक कहा। मैंने उसे ऐसे ज़ोर से धक्का दिया क़रीब था कि गिर पड़े, उसने मुझसे कहा तूने मुझे क्यों धक्का दिया? मैंने कहा बेअदब या रसूलल्लाह! नहीं कहता, आपका नाम लेता है? उसने कहा हम तो जो नाम उनका उनके घराने के लोगों ने रखा है उसी नाम से पुकारेंगे। आपने फ़रमाया मेरे ख़ानदान ने मेरा नाम मुहम्मद ही रखा है। यहूदी ने कहा सुनिये मैं आपसे एक बात मालूम करने आया हूँ। आपने फ़रमाया फिर मेरा जवाब तुझे कोई नफ़ा भी देगा? उसने कहा सुन तो लूँगा। आपके हाथ में जो तिनका था उसे आपने ज़मीन पर फिराते हुए फ़रमाया- अच्छा मालूम कर लो। उसने कहा जब ज़मीन व आसमान बदले जायेंगे, उस वक़्त लोग कहाँ होंगे? फ़रमाया पुलसिरात के पास अंधेरियों में। उसने कहा सबसे पहले पुलसिरात से पार कौन होंगे? फ़रमाया ग़रीब मुहाजिर हज़रात। उसने पूछा उन्हें सबसे पहले क्या तोहफ़ा मिलेगा? आपने फ़रमाया मछली की कलेजी। उसने पूछा उसके बाद उन्हें क्या ग़िज़ा (खाने की चीज़) मिलेगी? फ़रमाया जन्नती बैल ज़िबह किया जायेगा जो जन्नत के आस-पास के इलाक़े में चरता-चुगता रहा था। उसने पूछा फिर पीने को क्या मिलेगा? आपने फ़रमाया जन्नती नहर सलसबील का

Mahtab E Ashraf

पानी। यहूदी ने कहा आपके सब जवाब सही हैं। अच्छा अब मैं एक बात और पूछता हूँ जिसे या तो नबी जानता है या दुनिया के और दो एक आदमी। आपने फ़रमाया क्या मेरा जवाब तुझे कुछ फ़ायदा देगा? उसने कहा सुन तो लूँगा। बच्चे के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया मर्द का वीर्य माद्दा (यानी मनी) सफ़ेद रंग का होता है, और जब औ़रत का पानी मर्द के पानी पर ग़ालिब आ जाये तो ख़ुदा के हुक्म से लड़की होती है।

यहूदी ने कहा बेशक आप सच्चे हैं, और यक़ीनन आप ख़ुदा के पैग़म्बर हैं। फिर वह वापस चला गया। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया उसने मुझसे सवाल किया, मुझे कोई जवाब मालूम न था, लेकिन उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने मुझे जवाब सिखला दिया। (मुस्नद अहमद)

इब्ने जरीर तबरी में है कि यहूदी आ़लिम के सवाल के जवाब में आपने फ़रमाया- उस वक़्त मख़्लूक़ ख़ुदा की मेहमानी में होगी। पस उसके पास की चीज़ उनसे आ़जिज़ न होगी। उमर इब्ने मैमून कहते हैं कि इस ज़मीन को बदल दिया जायेगा और ज़मीन सफ़ेद मैदे की टिकिया जैसी होगी, जिसमें न कोई ख़ून बहा होगा, न कोई ख़ता हुई होगी। आँखें तेज़ होंगी। दाओ़ी (बुलाने और पुकारने वाले) की आवाज़ कानों में होगी। सब नंगे पाँव नंगे बदन खड़े हुए होंगे, यहाँ तक कि पसीना एक लगाम की तरह हो जायेगा। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से भी इसी तरह एक मरफ़ूअ़ रिवायत में है कि सफ़ेद रंग की ज़मीन होगी, जिस पर न ख़ून का क़तरा गिरा होगा न उस पर किसी गुनाह का अ़मल हुआ होगा, इसे मरफ़ूअ़ करने वाले एक ही रावी हैं, यानी जरीर बिन अय्यूब, और वह मज़बूत नहीं। इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर सल्ल. ने यहूदियों के पास अपना आदमी भेजा, फिर सहाबा रज़ि. से पूछा जानते हो मैंने आदमी क्यों भेजा है? उन्होंने कहा अल्लाह ही को इल्म है और उसके रसूल को। आपने फ़रमाया आयतः

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ..... الخ.

के बारे में (यानी जिस आयत की यह तफ़सीर चल रही है) याद रखो वह उस दिन चाँदी की तरह सफ़ेद होगी। जब वे लोग आये, आपने उनसे पूछा उन्होंने कहा कि सफ़ेद होगी जैसे मैदा। वह बाग़ात में तब्दील हो जायेगा। मुहम्मद बिन क़ैस कहते हैं कि रोटी बन जायेगी कि मोमिन अपने क़दमों के नीचे से ही खा लें। सईद बिन जुबैर रह. भी यही फ़रमाते हैं कि ज़मीन बदलकर रोटी बन जायेगी। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन सारी ज़मीन आग बन जायेगी, उसके पीछे जन्नत होगी जिसकी नेमतें बाहर से ही नज़र आ रही होंगी। लोग अपने पसीनों में डूबे हुए होंगे, अभी हिसाब व किताब शुरू न हुआ होगा, इनसान का पसीना पहले तो क़दमों में ही होगा फिर बढ़कर नाक तक पहुँच जायेगा। उस सख़्ती, घबराहट और ख़ौफ़नाक मन्ज़र की वजह से जो उसकी निगाहों के सामने है। कअ़ब रज़ि. कहते हैं कि आसमान बाग़ात बन जायेंगे, समुद्र आग हो जायेंगे, ज़मीन बदल दी जायेगी।

अबू दाऊद की हदीस में है कि समुद्र का सफ़र सिर्फ़ ग़ाज़ी (अल्लाह के रास्ते का मुजाहिद) या हाजी या उमरा करने वाले ही करें, क्योंकि समुद्र के नीचे आग है, या आग के नीचे समुद्र है। सूर वाली मशहूर हदीस में है कि आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ज़मीन को फैलाकर उकाज़ी चमड़े की तरह खींचेगा, उसमें कोई ऊँच-नीच नज़र न आयेगी। फिर एक ही आवाज़ के साथ तमाम मख़्लूक़ उस नई ज़मीन पर फैल पड़ेगी। फिर इरशाद है कि तमाम मख़्लूक़ अपनी क़ब्रों से निकल कर अल्लाह वाहिद व क़स्हार के सामने पेश हो जायेगी। वह ख़ुदा जो अकेला है और जो हर चीज़ पर ग़ालिब है, सबकी गर्दनें उसके सामने झुकी

Maktab E Ashraf

हैं और सब उसके हुक्म के ताबे और अधीन हैं।

और तू मुजरिमों (यानी काफ़िरों) को ज़न्जीरों में जकड़े हुए देखेगा। (49) (और) उनके कुर्ते क़तिरान के होंगे, और आग उनके चेहरों पर लिपटी होगी। (50) ताकि अल्लाह तआला हर (मुजरिम) शख़्स को उसके किए की सज़ा दे, यक़ीनन अल्लाह तआला बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। (51)	وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ۝ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

हिसाब व किताब

ज़मीन व आसमान बदले हुए हैं, मख़्लूक़ ख़ुदा के सामने खड़ी है, उस दिन ऐ नबी! तुम देखोगे कि कुफ़्र व फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) करने वाले गुनाहगार आपस में जकड़े बंधे हुए होंगे। हर-हर क़िस्म के गुनाहगार दूसरों से मिले-जुले हुए होंगे। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ.

ज़ालिमों को और उनके जोड़ के लोगों को इकट्ठा कर दो। एक और आयत में है:

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ.

जबकि नफ़्स के जोड़ मिला दिये जायें। एक और जगह इरशाद है:

وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا.

यानी जबकि जहन्नम के तंग मकान में वे मिलाये-जुलाये डाले जायेंगे, वहाँ मौत पुकारेंगे।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के जिन्नात के बारे में भी 'मुक़र्रनी-न फ़िल-अस्फ़ाद' का लफ़्ज़ है। "असफ़ाद" कहते हैं क़ैद की ज़न्जीरों को। अ़मर बिन कुलसूम के शे'र में "मुस्फ़द" ज़न्जीरों में जकड़े हुए क़ैदी के मायने में आया है।

जो कपड़े उन्हें पहनाये जायेंगे वे गन्धक के होंगे, जो ऊँटों को लगाया जाता है। उसे आग तेज़ी से पकड़ती है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं पिघले हुए ताँबे को क़तिरान कहते हैं। उस सख़्त गर्म आग की मानिंद ताँबे के उन जहन्नमियों के लिबास होंगे। उनके मुँह भी आग में ढके हुए होंगे, चेहरों तक आग चढ़ी हुई होगी, सर से शोले बुलन्द हो रहे होंगे। मुँह बिगड़ गये होंगे।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत में चार काम जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) के हैं, जो उनसे न छूटेंगे- ख़ानदान पर फ़ख़्र, नस्ल में दूसरे को ताना देना, सितारों से बारिश माँगना, मय्यित पर बयान करके रोना। सुनो! नोहा करने (मय्यित पर बयान करके रोने) वाले ने अगर अपनी मौत से पहले तौबा न कर ली तो उसे क़ियामत के दिन गन्धक का कुर्ता और खुजली का दुपट्टा

Mahtab E Ashraf

पहनाया जायेगा। मुस्लिम में भी हदीस है। एक और रिवायत में है कि वह जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान खड़ी की जायेगी, गन्धक का कुर्ता होगा और मुँह पर आग खेल रही होगी। क़ियामत के दिन अल्लाह तआला हर एक को उसके कामों का बदला देगा, बुरों की बुराईयाँ सामने आ जायेंगी, अल्लाह तआला बहुत ही जल्द सारी मख़्लूक़ के हिसाब से फ़ारिग़ हो जायेगा। मुम्किन है यह आयत भी पारा 17 की इस पहली आयत के जैसी हो:

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ.

यानी लोगों के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया, लेकिन फिर भी वे ग़फ़लत के साथ मुँह फेरे हुए ही हैं। और मुम्किन है कि यह बन्दे के हिसाब के वक़्त का बयान हो, यानी बहुत जल्द हिसाब हो जायेगा, क्योंकि वह तमाम बातों का जानने वाला है, उस पर एक बात भी पोशीदा नहीं, जैसे एक वैसे ही सारी मख़्लूक़। जैसा कि एक जगह अल्लाह का फ़रमान है:

مَاخَلْقُكُمْ وَلَابَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ.

तुम सबकी पैदाईश (यानी पैदा करना) और मरने के बाद का ज़िन्दा कर देना मुझ पर ऐसा ही है जैसे एक को मारना और जिलाना।

यही मायने मुजाहिद रह. के क़ौल के हैं कि अल्लाह तआला बहुत जल्दी हिसाब के घेरे में लेने वाला है। हाँ यह भी हो सकता है कि दोनों मायने मुराद हों, यानी वक़्ते हिसाब भी क़रीब और ख़ुदा को हिसाब में देर भी नहीं। इधर शुरू हुआ उधर ख़त्म हुआ। वल्लाहु आलम

यह (क़ुरआन) लोगों के लिए (अहकाम का) पहुँचाना है, और ताकि इसके ज़रिये से (अ़ज़ाब से) डराए जाएँ, और ताकि इस बात का यक़ीन कर लें कि वही एक माबूद (-ए-बर्हक़) है, और ताकि समझदार लोग नसीहत हासिल करें। (52)	هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ۠ ع ۱۹

पूरी नसीहत

इरशाद है कि यह क़ुरआन दुनिया की तरफ़ ख़ुदा का खुला पैग़ाम है। जैसे एक और आयत में नबी सल्ल. की ज़बानी कहलवाया गया है कि:

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ.

यानी ताकि मैं इस क़ुरआन से तुम्हें भी होशियार कर दूँ और जिसे यह पहुँचे। यानी तमाम इनसानों और तमाम जिन्नात को भी। जैसे इस सूरः के शुरू में फ़रमाया है कि इस किताब को हमने ही तेरी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है कि तू लोगों को अंधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ लाये.....। इस क़ुरआने करीम की ग़र्ज़ यह है कि लोग होशियार कर दिये जायें, डरा दिये जायें और इसकी दलीलें, हुज्जतें देख-सुनकर पढ़-पढ़ाकर तहक़ीक़ से मालूम कर लें कि अल्लाह तआला अकेला ही है, उसका कोई शरीक नहीं और

Maktab E Ashraf

अ़क़्लमन्द लोग नसीहत व सबक़ और सीख हासिल कर लें, सोच समझ लें।

सूरः हिज्र

सूरः हिज्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 99 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सूरतों के शुरू में जो 'हुरूफ़े मुक़त्तआ़त' आये हैं उनका बयान पहले गुज़र चुका है। इस आयत में क़ुरआन की आयतों के वाज़ेह (स्पष्ट और खुला हुआ) और हर शख़्स की समझ में आने के क़ाबिल होने का बयान फ़रमाया है।

अलिफ़्-लाम-रा। ये आयतें हैं एक (कामिल) किताब और वाज़ेह क़ुरआन की। (1)	الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ○

बेवक़्त हसरत

काफ़िर अपने कुफ़्र पर जल्द ही नादिम व शर्मिन्दा होंगे और मुसलमान बनकर ज़िन्दगी गुज़ारने की तमन्ना करेंगे। यह भी मन्क़ूल है कि बदर के काफ़िर जब जहन्नम के सामने पेश किये जायेंगे तो आरज़ू करेंगे कि काश वे दुनिया में मोमिन होते। यह भी है कि हर काफ़िर अपनी मौत को देखकर अपने मुसलमान होने की तमन्ना करता है। इसी तरह क़ियामत के दिन भी हर काफ़िर की यही तमन्ना होगी। जहन्नम के पास खड़े होकर कहेंगे काश कि अब हम वापस दुनिया में भेज दिये जायें, तो न ख़ुदा की आयतों को झुठलायें, न ईमान को छोड़ें। जहन्नमी लोग औरों को जहन्नम से निकलते देखकर भी अपने मुसलमान होने की तमन्ना करेंगे।

इब्ने अ़ब्बास और हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. फ़रमाते हैं कि गुनाहगार मुसलमानों को जहन्नम में मुश्रिकों के साथ अल्लाह तआ़ला रोक लेगा तो मुश्रिक मुसलमानों से कहेंगे कि जिस ख़ुदा की तुम दुनिया में इबादत करते रहे उसने तुम्हें आज क्या फ़ायदा दिया? इस पर अल्लाह तआ़ला की रहमत जोश में आयेगी और उन मुसलमानों को जहन्नम से निकाल लेगा। उस वक़्त काफ़िर तमन्ना करेंगे कि काश वे भी दुनिया में मुसलमान होते।

एक रिवायत में है कि मुश्रिकों के इस ताने पर अल्लाह तआ़ला हुक्म देगा कि जिसके दिल में एक ज़र्रे के बराबर भी ईमान हो उसे जहन्नम से आज़ाद कर दो। तबरानी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के कहने वालों में से बाज़ लोग अपने गुनाहों की वजह से जहन्नम में जायेंगे। पस लात व उज़्ज़ा (बुतों) के पुजारी उनसे कहेंगे कि तुम्हारे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के कहने ने तुम्हें क्या नफ़ा दिया? तुम तो हमारे साथ ही जहन्नम में जल रहे हो? इस पर अल्लाह तआ़ला की रहमत को जोश आयेगा, अल्लाह उन सबको वहाँ से निकाल लेगा और 'नहर-ए-हयात' में ग़ोता देकर उन्हें ऐसा कर देगा जैसे चाँद ग्रहण से निकला हो। फिर ये सब जन्नत में जायेंगे। वहाँ उन्हें जहन्नमी कहा जायेगा। हज़रत अनस रज़ि.

से यह हदीस सुनकर किसी ने कहा क्या आपने इसे रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बानी सुना है? आपने फ़रमाया सुनो मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि मुझ पर जान-बूझकर झूठ बोलने वाला अपनी जगह जहन्नम में बना ले, इसके बावजूद मैं कहता हूँ कि मैंने यह हदीस ख़ुद रसूले करीम सल्ल. की ज़बानी सुनी है।

एक और रिवायत में है कि मुश्रिक लोग मुसलमानों से कहेंगे कि तुम तो मुसलमान थे, फिर तुम्हें इस्लाम ने क्या नफ़ा दिया? तुम तो हमारे साथ जहन्नम में जल रहे हो? वे जवाब देंगे कि हाँ हमारे गुनाह थे, जिनकी सज़ा में हम पकड़े गये। उसमें यह भी है कि छुटकारे के वक़्त काफ़िर कहेंगे काश कि हम मुसलमान होते और इनकी तरह जहन्नम से छुटकारा पाते। फिर हुज़ूर सल्ल. ने 'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' पढ़कर इस सूरत की शुरू की दो आयतें तिलावत फ़रमाईं। यही रिवायत एक और सनद से है। उसमें बजाय 'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' के 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' का पढ़ना है।

एक और रिवायत में है कि उन मुसलमान गुनाहगारों से मुश्रिक लोग कहेंगे- तुम तो दुनिया में यह ख़्याल करते थे कि तुम अल्लाह के प्यारे और दोस्त हो, फिर हमारे साथ यहाँ कैसे? यह सुनकर अल्लाह तआ़ला उनकी शफ़ाअ़त की इजाज़त देगा। पस फ़रिश्ते, नबी और मोमिन शफ़ाअ़त करेंगे और अल्लाह उन्हें जहन्नम से छोड़ता जायेगा। उस वक़्त मुश्रिक लोग कहेंगे कि काश वे भी मुसलमान होते तो शफ़ाअ़त से मेहरूम न रहते, और इनके साथ जहन्नम से छूट जाते। यही मायने इस आयत के हैं। ये लोग जब जन्नत में जायेंगे तो इनके चेहरों पर थोड़ी सी स्याही (कालापन) होगी, इस वजह से इन्हें जहन्नमी कहा जाता होगा, फिर ये दुआ करेंगे कि ख़ुदाया! यह लक़ब भी हमसे हटा दे, पस उन्हें जन्नत की एक नहर में ग़ुस्ल करने का हुक्म होगा और वह नाम भी उनसे दूर कर दिया जायेगा।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- बाज़ लोगों को आग उनके घुटनों तक पकड़ लेगी, बाज़ को रानों तक और बाज़ को गर्दन तक, जैसे जिनके गुनाह और आमाल होंगे। बाज़ एक महीने की सज़ा भुगत कर निकल आयेंगे, सबसे लम्बी सज़ा वाला वह होगा जो जहन्नम में इतनी मुद्दत रहेगा जितनी मुद्दत दुनिया की है, यानी दुनिया के पहले दिन से दुनिया के आख़िरी दिन तक। जब अल्लाह तआ़ला उनके निकालने का इरादा करेगा उस वक़्त यहूद व ईसाई और दूसरे धर्म वाले इन मुसलमानों से कहेंगे कि तुम अल्लाह पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर ईमान लाये थे, फिर भी आज हम और तुम जहन्नम में बराबर हैं।

पस अल्लाह तआ़ला को सख़्त ग़ुस्सा आयेगा कि उनकी और किसी बात पर इतना ग़ुस्सा न आया था। फिर उन ईमान वालों को जहन्नम से निकाल कर जन्नत की नहर के पास लाया जायेगा। यह है फ़रमान 'रु-बमा यवद्दुल्लज़ी-न... ' में।

फिर बतौर डाँट के फ़रमाता है कि उन्हें खाते-पीते और मज़े करते छोड़ दे, आख़िर तो उनका ठिकाना जहन्नम है। तुम खा-पी लो, तुम्हारा मुजरिम होना साबित हो चुका है। उन्हें उनकी दूर-दराज़ की (यानी लम्बी-लम्बी) ख़्वाहिशें तौबा करने से, ख़ुदा की तरफ़ झुकने से ग़ाफ़िल रखेंगी, रखें, जल्द ही हक़ीक़त खुल जायेगी।

अल्लाह का शुक्र है, तफ़सीर इब्ने कसीर का तेरहवाँ पारा ख़त्म हुआ।

Mahtab E Ashraf

पारा नम्बर चौदह

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝ ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝	काफ़िर लोग बार-बार तमन्ना करेंगे कि क्या ख़ूब होता अगर वे मुसलमान होते। (2) आप उनको (उनके हाल पर) रहने दीजिए कि वे खा लें और चैन उड़ा लें और ख़्याली मन्सूबे उनको ग़फ़लत में डाले रखें, उनको अभी हक़ीक़त मालूम हुई जाती है। (3)

निर्धारित वक़्त

हम किसी बस्ती को दलीलें पहुँचाने और उनका मुक़र्रर (निर्धारित) वक़्त ख़त्म होने से पहले हलाक नहीं करते। हाँ जब वक़्ते मुक़र्ररा आ जाता है फिर आगे-पीछे होना नामुम्किन है। इसमें मक्का वालों को तंबीह है कि वे शिर्क से, बेदीनी से, पैग़म्बर की मुख़ालफ़त से बाज़ आ जायें, वरना हलाकत के हक़दार हो जायेंगे और अपने वक़्त पर तबाह हो जायेंगे।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝ لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْآ اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝	और हमने जितनी बस्तियाँ हलाक की हैं उन सबके लिए एक मुक़र्रर (वक़्त) लिखा हुआ (होता रहा) है। (4) कोई उम्मत अपनी मुक़र्ररा मियाद से न पहले (हलाक) हुई है और न पीछे रही है। (5) और (उन काफ़िरों ने यूँ) कहा कि ऐ वह शख़्स जिस पर क़ुरआन नाज़िल किया गया है, तहक़ीक़ कि तुम मजनूँ हो। (6) अगर तुम सच्चे हो तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाते? (7) हम फ़रिश्तों को साफ़ फ़ैसले ही के लिए नाज़िल किया करते हैं, और उस वक़्त उनको मोहलत भी न दी जाती। (8) हमने क़ुरआन को नाज़िल किया है और हम इसके मुहाफ़िज़ हैं। (9)

क़ुरआन की हिफ़ाज़त

काफ़िरों का कुफ़्र, उनकी सरकशी, तकब्बुर और ज़िद का बयान हो रहा है कि वे हंसी और मज़ाक़ के तौर पर रसूले ख़ुदा सल्ल. से कहते थे- ऐ वह शख़्स जो इस बात का दावेदार है कि तुझ पर ख़ुदा का

Maktab E Ashraf

कलाम क़ुरआन उतर रहा है, हम तो देखते हैं कि तू सरासर पागल है, कि अपनी ताबेदारी (पैरवी) की तरफ़ हमें बुला रहा है। और हमसे कह रहा है कि हम अपने बाप-दादों के दीन को छोड़ दें। तू अगर सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाता? जो हमसे तेरी सच्चाई बयान करें। फ़िरऔन ने भी यही कहा थाः

لَوْلَآ اُلْقِیَ عَلَیْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ..... الخ.

कि इस पर सोने के कंगन क्यों नहीं डाले गये? इसके साथ मिलकर फ़रिश्ते क्यों नहीं आये? रब की मुलाक़ात के मुन्किरों (इनकार करने वालों) ने आवाज़ उठाई कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं नाज़िल किये जाते? या यही होता कि हम ख़ुद अपने परवर्दिगार को देख लेते। दर असल ये घमण्ड में आ गये और बहुत ही सरकश (नाफ़रमान) हो गये। फ़रिश्तों को देख लेने का दिन जब आ जायेगा उस दिन उन गुनाहगारों को कोई ख़ुशी न होगी।

यहाँ भी फ़रमान है कि हम फ़रिश्तों को हक़ के साथ उतारते हैं, यानी रिसालत या अ़ज़ाब के साथ, उस वक़्त फिर काफ़िरों को मोहलत नहीं मिलेगी। इस ज़िक्र यानी 'क़ुरआन' को हमने ही उतारा है और इसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार भी हम ही हैं। यह हमेशा तब्दीली और कम-ज़्यादा होने से बचा रहेगा। बाज़ कहते हैं कि यहाँ 'उसके मुहाफ़िज़' से मुराद नबी करीम की हिफ़ाज़त है यानी क़ुरआन ख़ुदा ही का नाज़िल किया हुआ है और नबी सल्ल. का हाफ़िज़ वही है। जैसा कि फ़रमायाः

وَاللّٰهُ یَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ.

तुझे लोगों के तकलीफ़ देने से अल्लाह महफ़ूज़ रखेगा। लेकिन पहले मायने ज़्यादा बेहतर हैं और इबारत की ज़ाहिरी रवानी भी उसी को तरजीह देती है।

और हमने आपसे पहले भी (पैग़म्बरों को) अगले लोगों के गिरोहों में भेजा था। (10) और कोई रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया जिसके साथ उन्होंने हँसी-ठट्ठा न किया हो। (11) इसी तरह हम यह (हँसी और मज़ाक़ उड़ाना) उन मुजरिमों के दिलों में डाल देते हैं। (12) (जिसकी वजह से) ये लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाते, और (यह) दस्तूर पहलों ही से होता आया है। (13)	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِیْ شِیَعِ الْاَوَّلِیْنَ ○ وَمَا یَاْتِیْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ○ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِیْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِیْنَ○ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِیْنَ○

यह दस्तूर पहले से चला आता है

अल्लाह तआ़ला अपने नबी को तस्कीन (तसल्ली) देता है कि जिस तरह लोग आपको झुठला रहे हैं इसी तरह आपसे पहले के नबियों को भी वे झुठला चुके हैं। हर उम्मत के रसूल को झुठलाया गया है, और उससे मज़ाक़ किया गया है। ज़िद्दी और घमंडी गिरोह के दिलों में उनके हद से बढ़े हुए गुनाहों के सबब रसूल को झुठलाना रचा दिया जाता है। यहाँ मुजरिमों से मुराद मुश्रिक लोग हैं। वे हक़ को क़बूल करते ही नहीं, न करेंगे। पहले गुज़रे लोगों की आ़दत उनके सामने है। जिस तरह वे हलाक और बरबाद हुए और

उनके अम्बिया निजात पा गये, और ईमान लाने वाले आ़फ़ियत (अमन और शान्ति) हासिल कर गये, वही नतीजा ये भी याद रखें। दुनिया व आख़िरत की भलाई नबी की पैरवी में और दोनों जहान की रुस्वाई नबी की मुख़ालफ़त में है।

Maktab E Ashraf

और अगर हम उनके लिए आसमान में कोई दरवाज़ा खोल दें फिर ये दिन के वक़्त उसमें चढ़ जाएँ। (14) (तब भी यूँ) कह दें कि हमारी नज़रबन्दी कर दी गई थी, बल्कि हम लोगों पर तो बिल्कुल जादू कर रखा है। (15)	وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝ لَقَالُوٓا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ۝

ع

दुश्मनी और बैर का कोई इलाज नहीं

उनकी नाफ़रमानी, ज़िद, हठधर्मी, तकब्बुर और बातिल-परस्ती की तो यह कैफ़ियत है कि फ़र्ज़ करो अगर उनके लिये आसमान का दरवाज़ा खोल भी दिया जाये और उन्हें वहाँ चढ़ा दिया जाये तो भी ये हक़ को हक़ कहकर न देंगे, बल्कि उस वक़्त भी यह कहेंगे कि हमारी नज़र बन्द कर दी गयी है, आँखें बहका दी गयी हैं, जादू कर दिया गया है, निगाह छीन ली गयी है, धोखा हो रहा है, बेवक़ूफ़ बनाया जा रहा है।

और बेशक हमने आसमान में बड़े-बड़े सितारे पैदा किए और देखने वालों के लिए उसको सजाया। (16) और उसको हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ फ़रमाया। (17) हाँ मगर कोई बात चोरी-छुपे सुन भागे तो उसके पीछे एक चमकदार शोला हो लेता है। (18) और हमने ज़मीन को फैलाया और उसमें भारी-भारी पहाड़ डाल दिए और उसमें हर क़िस्म की चीज़ एक मुतैयन मिक़दार "मात्रा" से उगाई है। (19) और हमने तुम्हारे वास्ते उसमें रोज़ी के सामान बनाए और उनको भी (रोज़ी दी) कि जिनको तुम रोज़ी नहीं देते। (20)	وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِينَ ۝ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيمٍ ۝ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ۝ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهُ بِرٰزِقِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला की अपार क़ुदरत की चन्द निशानियाँ

इस बुलन्द आसमान का जो ठहरे रहने वाले और चलने फिरने वाले सितारों से सजा हुआ है, पैदा करने वाला अल्लाह ही है। जो भी इसे ध्यान और ग़ौर से देखे वह अपने लिये बहुत से क़ुदरत के करिश्मे

और इबरत की निशानियाँ पा सकता है। 'बुरूज' से यहाँ पर सितारे मुराद हैं। जैसे एक और आयत में है:

تَبٰرَكَ الَّذِىْ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا..... الخ.

(यानी सूरः फ़ुरक़ान आयत 61 में)

बाज़ का क़ौल है कि सूरज चाँद की मन्ज़िलें मुराद हैं। अ़तिया कहते हैं वे जगहें जहाँ चौकी पहरे हैं, और जहाँ से सरकश शैतानों पर मार पड़ती है, कि वे ऊपर के फ़रिश्तों की गुफ़्तगू न सुन सकें। जो आगे बढ़ता है, शोला उसके जलाने को लपकता है। कभी तो यह नीचे वाले के कान में डाल दे इससे पहले ही उसका काम ख़त्म हो जाता है, कभी इसके उलट भी होता है (यानी उसका ख़ात्मा जब होता है कि वह नीचे के कान में कुछ डाल दे) जैसा कि सही बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में स्पष्ट तौर पर मौजूद है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बात का फ़ैसला करता है तो फ़रिश्ते आ़जिज़ी के साथ अपने पंख झुका लेते हैं, जैसे ज़न्जीर पत्थर पर, फिर जब उनके दिल मुत्मईन हो जाते हैं तो दरियाफ़्त करते हैं कि तुम्हारे रब का क्या इरशाद हुआ। वे कहते हैं जो भी फ़रमाया हक़ है, और वही बुलन्द व बाला और बहुत बड़ा है।

फ़रिश्तों की बातों को ख़ुफ़िया तौर पर सुनने के लिये जिन्नात ऊपर चढ़ते हैं और इसी तरह एक पर एक होता है। हदीस के बयान करने वाले हज़रत सफ़वान ने अपने हाथ के इशारे से इस तरह बतलाया कि दाहिने हाथ की उंगलियाँ खोलकर एक को एक पर रख लिया। इस सुनने वाले का काम शोला कभी तो उससे पहले ही ख़त्म कर देता है कि वह अपने साथी के कान में कुछ कह दे। उसी वक़्त वह जल जाता है, और कभी ऐसा भी होता है कि यह उसे और वह अपने से नीचे वाले को और इसी तरह आगे तक अपनी बात पहुँचा दे, और वह बात ज़मीन तक आ जाये, और जादूगर या काहिन के कान उससे आशना हो जायें। फिर तो वह उसके साथ सौ झूठ मिलाकर लोगों को बहकाता है। जब उसकी वह एक बात जो आसमान की बात से इत्तिफ़ाक़न पहुँच गयी थी, सही निकलती है तो लोगों में उसकी दानिशमन्दी (अ़क़्लमन्दी) के चर्चे होने लगते हैं, कि देखो फ़ुलाँ ने फ़ुलाँ दिन यह कहा था, बिल्कुल सच निकला।

फिर अल्लाह तआ़ला ज़मीन का ज़िक्र फ़रमाता है कि उसी ने इसे पैदा किया, फैलाया, इसमें पहाड़ बनाये, जंगल और मैदान क़ायम किये, खेत और बाग़ात उगाये और तमाम चीज़ें ठीक अन्दाज़े, सन्तुलन और हर-हर मुल्क, इलाक़े, मौसम और ख़ित्ते के लिहाज़ से मुनासिब पैदा कीं, जो बाज़ार की ज़ीनत और लोगों के लिये ख़ुशी का कारण हैं। ज़मीन में क़िस्म-क़िस्म की रोज़ी उसने पैदा कर दी और उस रोज़ी के बारे में उन्हें भी बता दिया जिनके रोज़ी पहुँचाने वाले तुम नहीं हो, यानी चौपाये और जानवर, बाँदी ग़ुलाम वग़ैरह। पस तरह-तरह की चीज़ें, तरह-तरह की राहत, हर तरह के आराम उसने तुम्हारे लिये मुहैया कर दिये, कमाई के तरीक़े तुम्हें सिखाये, जानवरों को तुम्हारे ताबे और अधीन कर दिया, कि खाओ भी, सवारियाँ भी करो, बाँदी ग़ुलाम दिये कि राहत व आराम हासिल करो, उनकी रोज़ियाँ भी कुछ तुम्हारे ज़िम्मे नहीं, बल्कि उनका रज़्ज़ाक़ भी ख़ुदा है, और वास्तव में वही सारी दुनिया को रोज़ी देता है। नफ़ा तुम उठाओ, रोज़ी वह पहुँचाये। वाक़ई उसकी ज़ात पाक और उसकी शान बड़ी है।

और जितनी चीज़ें हैं हमारे पास सब ख़ज़ाने (के ख़ज़ाने) हैं। और हम उस (चीज़) को एक मुतैयन मिक़दार "यानी मात्रा" से उतारते रहते हैं। (21) और हम ही हवाओं को भेजते रहते हैं	وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ ز وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ○ وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ

لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَسْقَيْنَٰكُمُوهُ وَمَآ أَنتُمْ لَهُۥ بِخَٰزِنِينَ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْىِۦ وَنُمِيتُ وَنَحْنُ ٱلْوَٰرِثُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْنَا ٱلْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا ٱلْمُسْتَـْٔخِرِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُۥ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ ع ٢	जो कि बादलों को पानी से भर देती हैं, फिर हम ही आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर वह (पानी) तुमको पीने को देते हैं, और तुम (इतना पानी) जमा करके न रख सकते थे। (22) और हम ही ज़िन्दा करते हैं और मारते हैं, और हम ही (बाक़ी) रह जाएँगे। (23) और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और हम तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। (24) और बेशक आपका रब ही उन सबको जमा फ़रमाएगा, बेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (25)

हर चीज़ का मालिक, हर तरह की ख़बर रखने वाला

तमाम चीज़ों का तन्हा मालिक अल्लाह तआ़ला है। हर काम उस पर आसान है, हर क़िस्म की चीज़ों के ख़ज़ाने उसके पास मौजूद हैं, जितना, जब और जहाँ चाहता है नाज़िल फ़रमाता है। अपनी हिक्मतों का आ़लिम (जानने वाला) वही है। बन्दों की मस्लेहतों से भी वाक़िफ़ वही है। यह महज़ उसकी मेहरबानी है वरना कौन है जो उस पर जबर (ज़बरदस्ती) कर सके।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं, हर साल बारिश बराबर ही बरसती है, हाँ तक़सीम ख़ुदा के हाथ है, फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। हकम बिन उयैना से भी यही क़ौल नक़ल किया गया है। कहते हैं कि बारिश के साथ इस क़द्र फ़रिश्ते उतरते हैं जिनकी गिनती तमाम इनसानों और जिन्नात से ज़्यादा होती है। एक-एक क़तरे का ख़्याल रखते हैं, कि वह कहाँ बरसा और उससे क्या उगा। हदीस की किताब बज़्ज़ार में है कि ख़ुदा का ख़ज़ाना सिर्फ़ कलाम है, जब कहा 'हो जा' हो गया। इस हदीस का एक रावी क़वी नहीं। हवा चलाकर हम बादलों को पानी से भर देते हैं। उसमें से पानी बरसने लगता है, यही हवायें चलकर पेड़ों पर फल लाती हैं, पत्ते और कोंपलें फूटने लगती हैं। पेड़ों पर फल आना कम से कम इन दो चीज़ों के बग़ैर नामुम्किन है।

हवा चलती है, वह आसमान से पानी उठाती है और बादलों को भर देती है। एक हवा होती है जो ज़मीन में पैदावार की क्षमता पैदा करती है, एक हवा होती है जो बादलों को इधर-उधर से उठाती है, एक हवा होती है जो उन्हें जमा करके तह-ब-तह कर देती है। एक हवा होती है जो उन्हें पानी से बोझल कर देती है, एक हवा होती है जो दरख़्तों को फलदार होने के क़ाबिल कर देती है।

इब्ने जरीर में कमज़ोर सनद से एक हदीस रिवायत की गयी है कि दक्षिणी हवा जन्नती है, इसमें लोगों के फ़ायदे हैं, और इसी का ज़िक्र अल्लाह की किताब में है। मुस्नद हुमैदी की हदीस में है कि हवाओं के सात साल बाद ख़ुदा तआ़ला ने जन्नत में एक हवा पैदा की है जो एक दरवाज़े से रुकी हुई है, उसी बन्द दरवाज़े से तुम्हें हवा पहुँचती रहती है। अगर वह खुल जाये तो ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ें हवा से उलट-पुलट हो जायें। ख़ुदा के यहाँ उसका नाम 'अज़ेब' है, तुम उसे दक्षिणी हवा कहते हो।

Maktab E Ashraf

फिर फ़रमाता है कि उसके बाद हम तुम पर मीठा पानी बरसाते हैं कि तुम पियो और काम में लो। अगर हम चाहें तो उसे कड़वा और खारी कर दें। जैसे सूरः वाक़िआ़ में फ़रमान है कि जिस मीठे पानी को तुम पिया करते हो उसे बादल से बरसाने वाले भी क्या तुम ही हो? या हम हैं? अगर हम चाहें तो उसे कड़वा कर दें। ताज्जुब है कि तुम हमारी शुक्रगुज़ारी नहीं करते हो। एक और आयत में है कि उसी ख़ुदा ने तुम्हारे लिये आसमान से पानी उतारा है, तुम उसके ख़ाज़िन यानी रोकने वाले (यानी ज़मीन में जमा करने) या हिफ़ाज़त करने वाले नहीं हो, हम ही बरसाते हैं, हम ही जहाँ चाहते हैं पहुँचाते हैं, जहाँ चाहते हैं महफ़ूज़ कर देते हैं। अगर हम चाहें ज़मीन में धंसा दें, यह सिर्फ़ हमारी रहमत है कि उसे बरसाया, बचाया, मीठा किया, सुथरा किया कि तुम पियो, अपने जानवरों को पिलाओ, अपनी खेतियाँ और बाग़ात बसाओ, अपनी ज़रूरतें पूरी करो। हम मख़्लूक़ की शुरूआ़त करने (यानी पहली बार उसे बनाने और पैदा करने) फिर उसके लौटाने (यानी मरने के बाद दौबारा ज़िन्दा करने) पर क़ादिर हैं। सबको अ़दम से वजूद में लाये, सबको फिर मादूम (नापैद) हम करेंगे, फिर क़ियामत के दिन सबको उठा बैठायेंगे। ज़मीन के और ज़मीन वालों के वारिस हम ही हैं। सबके सब हमारी तरफ़ लौटायें जायेंगे। हमारे इल्म की कोई इन्तिहा नहीं, अव्वल आख़िर सब हमारे इल्म में है, पस आगे वालों से मुराद तो इस ज़माने से पहले के लोग हैं, हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तक के, और पिछलों से मुराद इस ज़माने के और आने वाले ज़माने के लोग हैं।

मरवान बिन हकम से रिवायत है कि बाज़ लोग औ़रतों की वजह से पिछली सफ़ों में रहा करते थे, पस यह आयत उतरी। इस बारे में एक ग़रीब हदीस भी वारिद है। इब्ने जरीर में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि एक बहुत ही ख़ूबसूरत औ़रत नमाज़ में आया करती थी तो बाज़ मुसलमान इस ख़्याल से कि वह निगाह में न चढ़े आगे बढ़ जाते थे, और बाज़ उनके विपरीत और पीछे हट आते थे और सज्दे की हालत में अपने हाथों के नीचे से देखते थे। पस यह आयत उतरी। लेकिन यह रिवायत सख़्त मुन्कर (यानी बेअसल) है। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में अबुल-ज़ौज़ा का क़ौल इस आयत के बारे में मन्क़ूल है कि नमाज़ की सफ़ों में आगे बढ़ने वाले और पीछे हटने वाले, यह सिर्फ़ उनका क़ौल है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का इसमें ज़िक्र नहीं। इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं कि यही ज़्यादा सही है। वल्लाहु आलम

मुहम्मद बिन कअ़ब के सामने औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह जब यह कहते तो आप फ़रमाते यह मतलब नहीं बल्कि अगलों से मुराद वे हैं जो मर चुके और पिछलों से मुराद अब मौजूद और आईन्दा पैदा होने वाले हैं। तेरा रब सबको जमा करेगा, वह हिक्मत व इल्म वाला है। यह सुनकर हज़रत औ़न ने फ़रमाया- अल्लाह आपको तौफ़ीक़ और बेहतरीन बदला दे (यानी आपने इतना अच्छा मतलब बयान किया जिससे दिल की उलझन दूर हो गयी)।

और हमने इनसान को बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की बनी हुई थी, पैदा किया। (26) और जिन्न को इससे पहले आग से कि वह एक गर्म हवा थी, पैदा कर चुके थे। (27)	وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ۝

Maktab E Ashraf

इनसान और जिन्नात की पैदाईश

'सलसाल' से मुराद खुश्क मिट्टी है। उसी जैसी आयतः

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ. وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ.

(यानी सूरः रहमान की आयत 14 व 15) है। यह भी मन्क़ूल है कि बूदार (गंध वाली) मिट्टी को "ह-मइन्" कहते हैं। चिकनी मिट्टी को "मसनून" कहते हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि तर मिट्टी, औरों से मन्क़ूल है कि बूदार और गुंधी हुई मिट्टी।

इनसान से पहले हमने जिन्नात को जला देने वाली आग से पैदा किया। "समूम" कहते हैं आग की गर्मी को, और "हरूर" कहते हैं दिल की गर्मी को। यह भी कहा गया है कि इस गर्मी की लपटें उस गर्मी का सत्तरवाँ हिस्सा हैं जिससे जिन्न पैदा किये गये हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि जिन्न आग के शोले से बनाये गये, यानी बहुत बेहतर आग से। अ़मर कहते हैं कि सूरज की आग से। सही रिवायत में वारिद है कि फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गये हैं और जिन्न शोले वाली आग से, और आदम अ़लैहिस्सलाम उससे जो तुम्हारे सामने बयान कर दिया गया है। इस आयत से मुराद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत व शराफ़त और उनके तत्व की पाकीज़गी और तहारत का बयान है।

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ○ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِىْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ○ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ○ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ○ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَالَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ○ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ○	और (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जब आपके रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं एक बशर को बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे से बनी होगी, पैदा करने वाला हूँ। (28) सो जब मैं उसको पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी तरफ़ से जान डाल दूँ तो तुम सब उसके सामने सज्दे में गिर पड़ना। (29) सो सारे के सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया। (30) मगर इब्लीस ने (नहीं किया), उसने इस बात को क़बूल नहीं किया कि सज्दा करने वालों में शामिल हो। (31) (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया कि ऐ इब्लीस! तुझको कौनसी बात इसकी सबब हुई कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। (32) कहने लगा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर "आदमी" को सज्दा करूँ जिसको आपने बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की बनी है, पैदा किया है। (33)

शैतान का आदम अ़लैहिस्सलाम को सज्दे से इनकार

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमा रहा है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले उनकी

पैदाईश का ज़िक्र फ़रिश्तों में उसने किया, और पैदाईश के बाद उनकी बुज़ुर्गी (बड़ाई और सम्मान) ज़ाहिर करने के लिये उनके सामने फ़रिश्तों से सज्दा कराया। इस हुक्म को सब ने तो मान लिया लेकिन इब्लीस (शैतान) ने इनकार कर दिया, और कुफ़्र व हसद, इनकार व तकब्बुर की नुमाईश की। साफ़ कहा कि मैं आग का बनाया हुआ, यह ख़ाक का बनाया हुआ है। मैं इससे बेहतर हूँ। इसके सामने क्यों झुकूँ? अगरचे तूने इसे मुझ पर बड़ाई दी लेकिन मैं इन्हें गुमराह करके छोड़ूँगा।

इब्ने जरीर ने यहाँ एक अ़जीब व ग़रीब बात नक़ल की है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- जब अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों को पैदा किया, उसने फ़रमाया कि मैं मिट्टी से इनसान बनाने वाला हूँ तुम उसे सज्दा करना। उन्होंने कहा हम ऐसा न करेंगे। चुनाँचे उसी वक़्त उनको आग ने जला दिया। फिर और फ़रिश्ते पैदा किये गये, उनसे भी यही कहा गया, उन्होंने जवाब दिया कि हमने सुना और तस्लीम किया, मगर इब्लीस (शैतान) जो पहले के इनकार करने वालों में से था, अपने इनकार पर जमा रहा। लेकिन इस रिवायत का सुबूत उनसे नहीं, बज़ाहिर मालूम होता है कि यह इस्राईली रिवायत है। वल्लाहु आलम

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ٥ وَّإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّيْنِ ٥ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِيْٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ٥ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ٥ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ٥	इरशाद हुआ कि तू इस (आसमान) से निकल, क्योंकि बेशक तू मरदूद हो गया। (34) और बेशक तुझ पर लानत रहेगी क़ियामत के दिन तक। (35) कहने लगा, तो फिर मुझको मोहलत दीजिए क़ियामत के दिन तक। (36) इरशाद हुआ कि तुझको मोहलत दी गई (37) तय वक़्त की तारीख़ तक। (38)

शैतान पर हमेशा के लिये अल्लाह तआ़ला की फटकार

फिर ख़ुदा तआ़ला ने अपने हाकिम होने की हैसियत से हुक्म किया जो न टले न टाला जा सके, कि तू इस बेहतरीन और आला जमाअ़त से दूर हो जा, तू फटकारा हुआ है क़ियामत तक, तुझ पर हमेशा के लिये लानत बरसा करेगी। कहते हैं कि उसी वक़्त उसकी सूरत बदल गयी और उसने रोना-पीटना शुरू किया, दुनिया में तमाम नौहे (रोना-पीटना) उसी वक़्त से शुरू हुए हैं। अल्लाह की बारगाह से मरदूद और लानती होकर फिर जलन की आग से जलता हुआ आरज़ू करता है कि क़ियामत तक की उसे ढील दी जाये, इसी को "यौमुल-बअ़्स" (यानी दोबारा ज़िन्दा होने का दिन) कहा गया है। पस उसकी यह दरख़्वास्त मन्ज़ूर की गयी और मोहलत मिल गयी।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغْوَيْتَنِيْ لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ ٥ إِلَّا	कहने लगा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! इस सबब से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं क़सम खाता हूँ कि मैं उनको दुनिया में (गुनाहों को) पसन्दीदा करके दिखाऊँगा, और उन सबको

عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ○ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ○ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ○ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ○ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ○	गुमराह करूँगा। (39) सिवाय आपके उन बन्दों के जो उनमें से चुन लिए गए हैं। (40) इरशाद हुआ कि यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है। (41) वाक़ई मेरे उन बन्दों पर तेरा ज़रा भी बस न चलेगा, हाँ मगर जो गुमराह लोगों में से तेरी राह पर चलने लगे। (42) और उन सबसे जहन्नम का वायदा है। (43) जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। (44)

शैतानी असरात से सुरक्षित

इब्लीस (शैतान) की सरकशी (नाफ़रमानी) बयान हो रही है कि उसने अल्लाह के उसे गुमराह करने की क़सम खाकर कहा, यह भी हो सकता है कि उसने कहा कि चूँकि तूने मुझे गुमराह किया मैं भी औलादे आदम के लिये ज़मीन में तेरी नाफ़रमानियों को ख़ूब अच्छा और भला लगने वाला करके दिखाऊँगा और उन्हें तवज्जोह और दिलचस्पी दिला-दिलाकर नाफ़रमानियों में मुब्तला करूँगा। जहाँ तक हो सकेगा कोशिश करूँगा कि सबको ही बहका दूँ लेकिन हाँ तेरे मुख़्लिस (नेक) बन्दे मेरे हाथ नहीं आ सकते।

एक और आयत में यह भी है कि अगरचे तूने इसे मुझ पर बरतरी (प्राथमिकता) दी है, लेकिन अब मैं भी इसकी औलाद के पीछे पड़ जाऊँगा, चाहे कुछ थोड़े से छूट जायें बाक़ी सबको ही ले डूबूँगा। इस पर जवाब मिला कि तुम सबका लौटना तो मेरी ही तरफ़ है। आमाल का बदला मैं ज़रूर दूँगा, नेक को नेक, बद को बद। जैसे फ़रमान है कि तेरा रब ताक में है। ग़र्ज़ कि लौटना और लौटने का रास्ता ख़ुदा ही की तरफ़ है, "अलिय्युन्" भी है। जैसे आयत 'व इन्नहू फ़ी उम्मिल् किताबि लदैना ल-अ़लिय्युन् हकीम' में है, यानी बुलन्द, लेकिन पहली क़िराअत मशहूर है।

जिन बन्दों को मैंने हिदायत पर लगा दिया है उन पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, हाँ तेरा ज़ोर तेरे ताबेदारों (मानने वालों) पर है। इब्ने जरीर में है कि बस्तियों से बाहर नबियों की मस्जिदें होती थीं, जब वे अपने रब से कोई ख़ास बात मालूम करना चाहते तो वहाँ जाकर जो नमाज़ मुक़द्दर में होती अदा करके सवाल करते। एक दिन एक नबी और उसके क़िब्ले के बीच शैतान आकर बैठ गया, उस नबी ने तीन बार "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम" कहा। शैतान ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! आख़िर आप मेरे दाँव से कैसे बच जाते हैं? नबी ने कहा कि तू बता तू इनसानों पर किस दाँव से ग़ालिब आ जाता है? आख़िरकार समझौता हुआ कि हर एक सही चीज़ दूसरे को बता दे। तो अल्लाह के नबी ने कहा सुन ख़ुदा का फ़रमान है कि मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा कोई असर नहीं, सिर्फ़ उन पर है जो ख़ुद गुमराह हों और तेरी ताबेदारी करें। उस दुश्मने ख़ुदा ने कहा यह आपने क्या फ़रमाया, इसे तो मैं आपकी पैदाईश से भी पहले जानता हूँ। नबी ने कहा और सुन! ख़ुदा का फ़रमान है कि जब कोई शैतानी हरकत हो जाये तो अल्लाह से पनाह तलब कर,

Maktab E Ashraf

वह हर चीज़ का जानने वाला है। अल्लाह की क़सम तेरी आहट पाते ही मैं ख़ुदा से पनाह चाह लेता हूँ। उसने कहा सच है। इसी से आप मेरे फन्दे में नहीं फंसते।

फिर अल्लाह के नबी ने फ़रमाया अब तू बता कि तू इनसान पर कैसे ग़ालिब आ जाता है? उसने कहा कि मैं उसे गुस्से और ख़्वाहिश के वक़्त दबोच लेता हूँ।

फिर फ़रमाता है कि जो कोई भी इब्लीस (शैतान) की पैरवी करे वह जहन्नमी है। यही फ़रमान क़ुरआन से कुफ़्र करने वालों के बारे में है। फिर इरशाद हुआ कि जहन्नम के कई एक दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े से जाने वाला शैतानी गिरोह मुक़र्रर है। अपने अपने आमाल के मुताबिक़ उनके लिये दरवाज़े बंटे हुए हैं। हज़रत अ़ली रज़ि. ने अपने एक ख़ुतबे में फ़रमाया, जहन्नम के दरवाज़े इस तरह हैं यानी एक पर एक, और वे सात हैं। एक के बाद एक करके सातों दरवाज़ें पुर हो जायेंगे। इक्रिमा फ़रमाते हैं कि सात तबक़े हैं। इब्ने जरीर सात दरवाज़ों के ये नाम बतलाते हैं- जहन्नम, लज़ा, हु-तमा, सईर, सक़र, जहीम, हाविया।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी इसी तरह मरवी है। क़तादा कहते हैं कि यह आमाल के एतिबार से उनकी मन्ज़िलें हैं। ज़ह्हाक कहते हैं कि मसलन् एक दरवाज़ा यहूद का, एक ईसाईयों का, एक साबियों का, एक मजूसियों का, एक मुश्रिकों काफ़िरों का, एक मुनाफ़िक़ों का, एक ईमान वालों का। लेकिन ईमान वालों को छुटकारे की उम्मीद है। बाक़ी सब ना-उम्मीद हो गये हैं। तिर्मिज़ी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जहन्नम के सात दरवाज़े हैं, जिनमें से एक उनके लिये है जो मेरी उम्मत पर तलवार उठायें। इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं- बाज़ दोज़ख़ियों के टख़्नों तक आग होगी, बाज़ की कमर तक, बाज़ की गर्दनों तक, ग़र्ज़ कि गुनाहों की मिक़्दार पर।

बेशक ख़ुदा से डरने वाले बाग़ों और चश्मों में होंगे। (45) तुम उनमें सलामती और अमन से दाख़िल होओ। (46) और उनके दिलों में जो कीना था हम वह सब दूर कर देंगे कि सब भाई-भाई की तरह रहेंगे, तख़्तों पर आमने-सामने (बैठा करेंगे)। (47) वहाँ उनको ज़रा भी तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे वहाँ से निकाले जाएँगे। (48) आप मेरे बन्दों को इत्तिला दे दीजिए कि मैं बड़ा मग़फ़िरत वाला, बड़ा रहमत वाला (भी) हूँ। (49) और यह कि मेरी सज़ा दर्दनाक सज़ा है। (50)	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍؕ٥ اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ٥ وَنَزَعْنَا مَا فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ٥ لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ٥ نَبِّئْ عِبَادِىْۤ اَنِّىْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُۙ٥ وَاَنَّ عَذَابِىْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ٥

जन्नत में

जहन्नमियों का ज़िक्र करके अब जन्नतियों का ज़िक्र हो रहा है कि वे बाग़ों, नहरों और चश्मों में

होंगे। उनको ख़ुशख़बरी सुनाई जायेगी कि अब तुम हर आफ़त से बच गये, हर डर ख़ौफ़ और घबराहट से मुत्मईन हो गये। न नेमतों के ख़त्म होने और छिनने का डर, न यहाँ से निकाले जाने का ख़तरा। न फ़ना, न कमी। जन्नत वालों के दिलों में अगरचे दुनियावी रंजिश बाक़ी रह गयी हों, मगर जन्नत में जाते ही एक दूसरे से मिलकर तमाम कीने कपट धुल जायेंगे। हज़रत अबू उमामा रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नत में दाख़िल होने से पहले ही सीने कीनों से ख़ाली हो जायेंगे। चुनाँचे एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मोमिन जहन्नम से निजात पाकर जन्नत दोज़ख़ के बीच के पुल पर रोक लिये जायेंगे, जो आपसी विवाद, मन-मुटाव और ज़ुल्म आपस में थे, उनका अदला-बदला हो जायेगा और पाक-दिल साफ़-सीना होकर जन्नत में जायेंगे।

अश्तर ने हज़रत अ़ली रज़ि. के पास जाने की इजाज़त माँगी, उस वक़्त आपके पास हज़रत तल्हा के बेटे बैठे थे, आपने कुछ देर के बाद उसे अन्दर बुलाया, उसने कहा कि शायद इनकी वजह से मुझे आपने देर में इजाज़त दी? आपने फ़रमाया सच है। कहा फिर तो अगर आपके पास हज़रत उस्मान के बेटे हों तो भी आप मुझे इसी तरह रोक देंगे? आपने फ़रमाया बेशक, मुझे तो अल्लाह से उम्मीद है कि मैं और उस्मान उन लोगों में होंगे जिनकी शान में यह है कि उनके दिलों में जो कुछ ख़फ़गी (मन-मुटाव और नाराज़गी) थी हमने दूर कर दी, भाई-भाई होकर आमने-सामने शाही तख़्त पर बैठे हैं।

एक और रिवायत में है कि इमरान बिन तल्हा 'अस्हाबे जमल' से फ़ारिग़ होकर हज़रत अ़ली रज़ि. के पास आये, आपने उन्हें मर्हबा कहा और फ़रमाया- मैं उम्मीद रखता हूँ कि मैं और तुम्हारे वालिद उनमें से हैं जिनके दिलों के गुस्से अल्लाह दूर करके भाई-भाई बनाकर जन्नत के तख़्तों पर आमने सामने बैठायेगा। एक और रिवायत में है कि यह सुनकर फ़र्श के कोने पर बैठे हुए दो शख़्सों ने कहा कि अल्लाह का अ़दल इससे बहुत बढ़ा हुआ है कि जिन्हें आप कल क़त्ल करें आज उनके भाई बन जायें। आपने गुस्से से फ़रमाया अगर इस आयत से मुराद मेरे और तल्हा जैसे लोग नहीं तो और कौन होंगे? एक और रिवायत में है कि क़बीला हमदान के एक शख़्स ने यह कहा था और हज़रत अ़ली रज़ि. ने इस धमकी और डाँट के साथ यह जवाब दिया था कि महल हिल गया। एक और रिवायत में है कि कहने वाले का नाम हारिस आवर था, और उसकी इस बात पर आपने गुस्सा होकर जो चीज़ आपके हाथ में थी वह उसके सर पर मारकर यह फ़रमाया था।

इब्ने जरमूज़ जो हज़रत ज़ुबैर रज़ि. का क़ातिल था, जब दरबारे अ़ली में आया तो आपने बड़ी देर बाद उसे अन्दर आने की इजाज़त दी। उसने आकर हज़रत ज़ुबैर रज़ि. और उनके साथियों को बलवाई कहकर बुराई से याद किया तो आपने फ़रमाया तेरे मुँह में मिट्टी, मैं, तल्हा और ज़ुबैर तो इन्शा-अल्लाह उन लोगों में से हैं जिनके बारे में ख़ुदा का यह फ़रमान है। हज़रत अ़ली रज़ि. क़सम खाकर फ़रमाते हैं कि हम बदरियों (यानी बदर की जंग में शरीक लोगों) के बारे में यह आयत नाज़िल हुई है। कसीर बुराद कहते हैं कि मैं अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अ़ली के पास गया और कहा कि मेरे दोस्त आपके दोस्त हैं और मुझसे सुलह का समझौता रखने वाले आपसे सुलह रखने वाले हैं, मेरे दुश्मन आपके दुश्मन हैं और मुझसे लड़ाई रखने वाले आपसे लड़ाई रखने वाले हैं। वल्लाह मैं अबू बक्र और उमर से बरी हूँ। उस वक़्त हज़रत अबू जाफ़र ने फ़रमाया अगर मैं ऐसा करूँ तो यक़ीनन मुझसे बढ़कर गुमराह कोई नहीं, नामुम्किन है कि मैं उस वक़्त हिदायत पर क़ायम रह सकूँ। इन दोनों बुज़ुर्गों (यानी हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि.) से तो बहुत ज़्यादा मुहब्बत रखा कर, इसमें तुझे कुछ गुनाह हो तो मेरी गर्दन पर। फिर आपने इसी आयत के

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

आख़िरी हिस्से की तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया कि यह इन दस शख़्सों के बारे में है- अबू बक्र, उमर, उस्मान, अ़ली, तल्हा, ज़ुबैर, अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास, सईद बिन ज़ैद, अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.। ये आमने-सामने होंगे, ताकि किसी की तरफ़ किसी की पीठ न रहे। हुज़ूर सल्ल. ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के एक मजमे में आकर इसे तिलावत फ़रमाया। ये एक दूसरे को देख रहे होंगे, वहाँ इन्हें कोई मशक़्क़त तकलीफ़ और ईज़ा न होगी।

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मुझे अल्लाह का हुक्म हुआ है कि मैं ख़दीजा को जन्नत के सोने के महल की ख़ुशख़बरी सुना दूँ। जिसमें न शोर व गुल है न तकलीफ़ व मुसीबत। ये जन्नती जन्नत से कभी निकाले न जायेंगे। हदीस में है कि उनसे फ़रमाया जायेगा- ऐ जन्नतियो तुम हमेशा तन्दरुस्त रहोगे, कभी बीमार न पड़ोगे, अैर हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी न मरोगे, और हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े न बनोगे, और हमेशा यहीं रहोगे कभी निकाले न जाओगे।

एक और आयत में है कि वे मकान और जगह की तब्दीली की ख़्वाहिश ही न करेंगे। न उनकी जगह उनसे छिनेगी। ऐ नबी! आप मेरे बन्दों से कह दीजिए कि मैं अर्रहमुर्राहिमीन (तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला) हूँ। और मेरे अ़ज़ाब भी निहायत सख़्त हैं। इसी जैसी आयत और भी गुज़र चुकी है, इससे मुराद यह है कि मोमिन को उम्मीद के साथ डर भी रखना चाहिये। हुज़ूर सल्ल. अपने सहाबा के पास आते हैं और उन्हें हंसता हुआ देखकर फ़रमाते हैं- जन्नत दोज़ख़ की याद करो। उस वक़्त ये आयतें उतरीं। यह मुर्सल हदीस इब्ने अबी हातिम में है। आप बनू शैबा के दरवाज़े के पास आये और फ़रमाया कि अभी मैं जा ही रहा था कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि मेरे बन्दों को क्यों ना-उम्मीद कर रहा है? उन्हें मेरे ग़फ़ूर व रहीम (यानी माफ़ करने वाला और रहम करने वाला) होने की और मेरे अ़ज़ाब के दुखदायक होने की ख़बर दे दे।

एक और हदीस में है कि आपने फ़रमाया- अगर बन्दे ख़ुदा तआ़ला की माफ़ी को मालूम कर लें तो हराम से बचना छोड़ दें, और अगर अल्लाह के अ़ज़ाबों को मालूम कर लें तो ख़ुद को हलाक कर डालें।

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ دَخَلُوْا
عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ
وَجِلُوْنَ ۝ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ
بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى اَنْ
مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝ قَالُوْا
بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ۝

और आप उनको इब्राहीम के मेहमानों की भी इत्तिला दीजिए। (51) जबकि वे उनके पास आए, फिर उन्होंने अस्सलामु अ़लैकुम कहा, (इब्राहीम) कहने लगे कि हम तो तुमसे डर रहे हैं। (52) उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम आपको एक फ़रज़न्द "यानी लड़के" की ख़ुशख़बरी देते हैं जो बड़ा आ़लिम होगा। (53) (इब्राहीम) कहने लगे कि क्या तुम मुझको इस हालत पर ख़ुशख़बरी देते हो कि मुझ पर बुढ़ापा आ गया, सो किस चीज़ की ख़ुशख़बरी देते हो? (54) वे बोले कि हम आपको हक़ चीज़ की

Maktab E Ashraf

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ○	ख़ुशख़बरी देते हैं, सो आप नाउम्मीद न हों। (55) (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि भला अपने रब की रहमत से कौन नाउम्मीद होता है सिवाय गुमराह लोगों के। (56)

इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनके मेहमान

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के मेहमान फ़रिश्ते थे जो इनसानों की शक्ल में सलाम करके हज़रत ख़लीले ख़ुदा के पास आये थे। आपने बछड़ा काटकर उसका गोश्त भूनकर उन मेहमानों के सामने लाकर रखा। जब देखा कि वे हाथ नहीं डालते तो डर गये और कहा कि हमें तो आपसे डर लगने लगा। फ़रिश्तों ने इत्मीनान दिलाया कि डरो नहीं, फिर हज़रत इस्हाक़ के होने की ख़ुशख़बरी सुनाई, जैसा कि सूरः हूद में है। तो आपने अपने और अपनी बीवी साहिबा के बुढ़ापे को सामने रखकर अपना ताज्जुब दूर करने और वादे को साबित करने के लिये पूछा कि क्या इस हालत में हमारे यहाँ बच्चा होगा? फ़रिश्तों ने दोबारा ज़ोरदार अलफ़ाज़ में वादे को दोहराया और ना-उम्मीदी से दूर रहने की तालीम की। आपने अपने अ़क़ीदे का इज़्हार कर दिया कि मैं मायूस नहीं हूँ, ईमान रखता हूँ कि मेरा रब इससे भी बड़ी बातों पर पूरी क़ुदरत रखता है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ○ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ○ اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ○ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ○	फ़रमाने लगे कि अब तुमको क्या मुहिम पेश आई है ऐ भेजे हुए (फ़रिश्तो)! (57) (फ़रिश्तों ने) कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (58) मगर लूत का ख़ानदान, कि हम उन सबको बचा लेंगे। (59) सिवाय उनकी बीवी के कि हमने उसके बारे में तय कर रखा है कि वह ज़रूर उसी मुजरिम क़ौम में रह जाएगी। (60)

ع

मुजरिम लोग

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का जब डर ख़ौफ़ जाता रहा बल्कि ख़ुशख़बरी भी दी गयी तो अब फ़रिश्तों से उनके आने की वजह दरियाफ़्त की। उन्होंने बतलाया कि लूतियों की बस्तियाँ उलटने के लिये हम आये हैं, मगर हज़रत लूत की आल (औलाद और घर वाले) निजात पा लेगी, हाँ उस आल में से उनकी बीवी नहीं बच सकती। वह क़ौम के साथ रह जायेगी और हलाकत में उनके साथ ही हलाक होगी।

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ۨ الْمُرْسَلُوْنَ ○ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ○ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ	फिर जब भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के ख़ानदान के पास आए (61) (तो) वे कहने लगे, तुम तो अजनबी आदमी हो। (62) उन्होंने कहा, नहीं! बल्कि हम आपके पास वह चीज़ लेकर आए हैं

Maktab E Ashraf

बِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝ وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝	जिसमें ये लोग शक किया करते थे। (63) और हम आपके पास यक़ीनी (होने वाली) चीज़ लेकर आए हैं और हम बिल्कुल सच्चे हैं। (64)

लूत अ़लैहिस्सलाम की परेशानी

ये फ़रिश्ते नौजवान हसीन लड़कों की शक्ल में हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के पास गये। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने कहा तुम बिल्कुल अजनबी और अन्जान लोग हो, तो फ़रिश्तों ने राज़ खोल दिया कि हम अ़ज़ाबे ख़ुदा लेकर आये थे, आपकी क़ौम नहीं मानती थी और जिसके आने में शक व शुब्हा कर रही थी। हम हक़ बात और निश्चित हुक्म लेकर आये हैं, और फ़रिश्ते हक़्क़ानियत के साथ ही नाज़िल हुआ करते हैं, और हम हैं भी सच्चे। जो ख़बर आपको दे रहे हैं वह होकर रहेगी कि आप निजात पायेंगे और आपकी यह काफ़िर क़ौम हलाक होगी।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ۝ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ۝	सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर चले जाईये, और आप सबके पीछे हो लीजिए, और तुममें से कोई पीछे फिरकर भी न देखे, और जिस जगह का तुमको हुक्म हुआ है उस तरफ़ सब चले जाना। (65) और हमने उनके (यानी लूत अ़लैहिस्सलाम के) पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उनकी बिल्कुल जड़ ही कट जाएगी। (66)

मुकम्मल बरबादी

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम से फ़रिश्ते कह रहे थे कि रात का कुछ हिस्सा गुज़रते ही आप अपने घर वालों को लेकर यहाँ से चले जायें। ख़ुद आप उन सबके पीछे रहें, ताकि उनकी अच्छी तरह निगरानी कर सकें। यही सुन्नत रसूलुल्लाह सल्ल. की थी कि आप लश्कर के आख़िर में चला करते थे ताकि कमज़ोर और क़ाफ़िले से बिछुड़ने वालों का ख़्याल रहे। फिर फ़रमा दिया कि जब क़ौम पर अ़ज़ाब आये और उनका शोर व गुल (चीख़ पुकार) सुनाई दे तो हरगिज़ उनकी तरफ़ नज़रें न उठाना, उन्हें उसी अ़ज़ाब व सज़ा में छोड़कर तुम्हें जाने का हुक्म है, चले जाओ। गोया उनके साथ कोई था जो उन्हें रास्ता दिखाता जाये, हमने पहले ही से हज़रत लूत से फ़रमा दिया था कि सुबह के वक़्त ये लोग मिटा दिये जायेंगे। जैसा कि दूसरी आयत में है कि उनके अ़ज़ाब का वक़्त सुबह है, जो बहुत ही क़रीब है।

Mustafa Ashraf

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ قَالَ
اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِىْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ۝
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ۝ قَالُوْٓا اَوَلَمْ
نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِىْٓ
اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ؕ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِىْ
سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

और शहर के लोग ख़ूब ख़ुशियाँ करते हुए पहुँचे। (67) (लूत अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ये लोग मेरे मेहमान हैं सो मुझको फ़ज़ीहत मत करो। (68) और अल्लाह तआ़ला से डरो और मुझको रुस्वा मत करो। (69) वे कहने लगे कि क्या हम आपको दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर चुके। (70) (हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ये मेरी (बहू) बेटियाँ मौजूद हैं, अगर तुम (मेरा कहना) करो। (71) आपकी जान की क़सम वे अपनी मस्ती में मदहोश थे। (72)

गुनाहों में डूबी क़ौम

क़ौमे लूत को जब मालूम हुआ कि हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के घर नौजवान ख़ूबसूरत मेहमान आये हैं तो वे अपना बुरा इरादा लिये हुए ख़ुशियाँ मनाते हुए चढ़ दौड़े। पैग़म्बरे ख़ुदा ने उन्हें समझाना शुरू किया कि अल्लाह से डरो, मेरे मेहमानों में मुझे रुस्वा न करो। उस वक़्त ख़ुद हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को यह मालूम न था कि ये फ़रिश्ते हैं, जैसा कि सूरः हूद में है। यहाँ अगरचे इसका ज़िक्र बाद में है और फ़रिश्तों का आना पहले ज़िक्र हुआ है, लेकिन यहाँ वाक़िए को क्रमवार बयान करना मक़सूद नहीं। आप उनसे कहने लगे कि मुझे ज़लील करने पर क्यों उतारू हो। लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि जब आपको यह ख़्याल था तो उन्हें आपने अपना मेहमान क्यों बनाया? हम तो आपको इससे मना कर चुके हैं। तब आपने उन्हें और समझाते हुए फ़रमाया कि तुम्हारी औ़रतें जो मेरी लड़कियाँ हैं, वे ख़्वाहिश पूरी करने की चीज़ें हैं, न कि ये। इसका पूरा बयान काफ़ी विस्तार के साथ हम पहले कर चुके हैं, इसलिये दोहराने की ज़रूरत नहीं।

चूँकि ये लोग अपनी ख़र-मस्ती में थे और जो क़ज़ा और ख़ुदा का अ़ज़ाब उनके सरों पर झूम रहा था उससे ग़ाफ़िल थे, इसलिये ख़ुदा तआ़ला अपने नबी की उम्र की क़सम खाकर उनकी यह हालत बयान फ़रमा रहा है। इसमें हमारे नबी सल्ल. की बहुत तकरीम व सम्मान है (यानी अल्लाह तआ़ला ने आपकी ज़िन्दगी की क़सम खाई)।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी जन्नती मख़्लूक़ पैदा की है, उनमें से हुज़ूर सल्ल. से ज़्यादा बुज़ुर्ग कोई नहीं। अल्लाह ने आपकी ज़िन्दगी के सिवा किसी की ज़िन्दगी की क़सम नहीं खाई। 'सक्रत' से मुराद गुमराही है, उसी में वे खेल रहे थे और शक में थे।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۝ لا فَجَعَلْنَا
عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً

पस सूरज निकलते-निकलते उनको सख़्त आवाज़ ने आ दबाया। (73) फिर हमने उन बस्तियों का ऊपर का तख़्ता तो नीचे कर दिया और उन लोगों पर खंगर के पत्थर बरसाना

Maktab-E-Ashraf

مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ۝ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

शुरू किए। (74) इस (वाक़िए) में कई निशानियाँ हैं अक़्ल रखने वालों के लिए। (75) और ये (बस्तियाँ) एक आबाद सड़क पर (मिलती) हैं। (76) उन (बस्तियों) में ईमान वालों के लिए बड़ी इबरत है। (77)

सिर्फ़ एक चिंघाड़

सूरज निकलने के वक़्त आसमान से एक दिल दहलाने और जिगर को टुकड़े-टुकड़े कर देने वाली चिंघाड़ की आवाज़ आयी, और साथ ही उनकी बस्तियाँ ऊपर को उठीं, आसमान के क़रीब पहुँच गयीं और वहाँ से उलट दी गयीं। ऊपर का हिस्सा नीचे और नीचे का ऊपर हो गया। साथ ही उन पर आसमान से पत्थर बरसे। ऐसे जैसे पक्की मिट्टी के कंकर युक्त पत्थर हों।

सूरः हूद में इसका विस्तार से बयान हो चुका है। जो भी समझ और होश से काम ले, देखे सुने सोचे समझे, उसके लिये तो इन बस्तियों की बरबादी में बड़ी-बड़ी निशानियाँ मौजूद हैं। ऐसे पाकबाज़ लोग ज़रा ज़रा सी चीज़ों से इबरत व नसीहत हासिल करते हैं, सीख लेते हैं और ग़ौर से इन वाक़िआत को देखते हैं और इनकी हक़ीक़त तक पहुँच जाते हैं। विचार व मंथन और छान-बीन करके अपनी हालत संवार लेते हैं।

तिर्मिज़ी वग़ैरह में हदीस है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मोमिन की अ़क़्लमन्दी और दूर बीनी का लिहाज़ रखो, वह ख़ुदा के नूर के साथ देखता है। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। एक और हदीस में है कि वह अल्लाह के नूर और अल्लाह की तौफ़ीक़ से देखता है। एक और हदीस में है कि ख़ुदा के बन्दे लोगों को उनके निशानात से पहचान लेते हैं। यह बस्ती आ़म सड़क पर मौजूद है, जिस पर ज़ाहिरी और बातिनी अ़ज़ाब आया। उलट गयी, पत्थर खाये, अ़ज़ाब का निशाना बनी। अब एक गन्दे और बदमज़ा खाई की झील सी बनी हुई है। तुम रात दिन वहाँ से आते-जाते हो, ताज्जुब है कि फिर भी अ़क़्लमन्दी से काम नहीं लेते।

नोटः यह बस्ती उर्दुन में है। कई साल पहले "क़ुरआन के तारीख़ी मक़ामात" के नाम से दो वीडियो सी. डी. भी मार्केट में आयी हैं, जिनमें क़ुरआन के ऐतिहासिक स्थानों और वाक़िआ़त पेश आने की जगहों को फ़िल्माया गया है। बताया गया है कि जिन बस्तियों और चीज़ों का क़ुरआन में ज़िक्र है उनमें से कौनसी आज कहाँ है, किस हालत में है और किस मुल्क में है। जैसे क़ौमे लूत की बस्ती, मदयन का कुआँ, फ़िरऔ़न की लाश, नूह की कश्ती के किनारे लगने का स्थान वग़ैरह-वग़ैरह। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

ग़र्ज़ कि साफ़, स्पष्ट और आने-जाने के रास्ते पर यह उल्टी हुई बस्ती मौजूद है। यह भी मायने बयान किये गये हैं कि वह किताबे मुबीन में है, लेकिन यह मायने कुछ ज़्यादा उचित नहीं बैठते। वल्लाहु आलम।

ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों के लिये यह एक खुली दलील और वाज़ेह निशानी है कि किस तरह अल्लाह अपने ईमान वाले बन्दों को निजात देता है और अपने दुश्मनों को ग़ारत करता है।

Maktab E Ashraf

وَإِنْ كَانَ أَصْحٰبُ الْأَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝	और बन वाले (शुऐब की उम्मत भी) बड़े ज़ालिम थे। (78) सो हमने उनसे बदला लिया, और दोनों (बस्तियाँ) साफ़ सड़क पर हैं। (79)

एक और बद-क़िस्मत क़ौम

'अस्हाब-ए-ऐका' से मुराद शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम है। ऐका कहते हैं पेड़ों के झुण्ड को, उनका ज़ुल्म शिर्क व कुफ़्र के अ़लावा ग़ारतगरी और नाप-तौल की कमी भी थी। उनकी बस्ती लूतियों के क़रीब थी और उनका ज़माना भी उनसे बहुत क़रीब था। उन पर भी उनकी लगातार शरारतों की वजह से अ़ज़ाबे ख़ुदा आया। ये दोनों बस्तियाँ आ़म रास्ते के किनारे पर थीं। हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को डराते हुए फ़रमाया था कि लूत की क़ौम तुमसे कुछ दूर नहीं।

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ۝ فَمَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝	और हिज्र वालों ने पैग़म्बरों को झूठा बतलाया। (80) और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं, सो वे लोग उनसे मुँह मोड़ते रहे। (81) और वे लोग पहाड़ों को तराश-तराश कर उनमें घर बनाते थे कि अमन में रहें। (82) सो उनको सुबह के वक़्त सख़्त आवाज़ ने आन पकड़ा। (83) तो उनके हुनर उनके कुछ भी काम न आए। (84)

हिज्र वाले

हिज्र वालों से मुराद 'समूद' क़ौम के लोग हैं, जिन्होंने अपने नबी हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम को झुठलाया था। और यह ज़ाहिर है कि एक नबी को झुठलाने वाला गोया सब नबियों का इनकार करने वाला है। इसलिये फ़रमाया गया कि उन्होंने नबियों को झुठलाया। उनके पास ऐसे मोजिज़े पहुँचे जिनसे हज़रत सालेह की सच्चाई उन पर खुल गयी, जैसे एक सख़्त पत्थर की चट्टान से ऊँटनी का निकलना, जो उनके शहरों में चरती-चुगती थी, और एक दिन वह पानी पीती थी एक दिन शहरियों के जानवर, मगर फिर भी ये लोग नाफ़रमान और सरकश ही रहे। बल्कि उस ऊँटनी को मार डाला।

उस वक़्त हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- बस अब तीन दिन के अन्दर तुम पर अल्लाह का क़हर नाज़िल होगा। यह बिल्कुल सच्चा वादा और अटल अ़ज़ाब है। उन लोगों ने ख़ुदा की बतलाई हुई राह पर भी गुमराही को तरजीह दी। ये लोग सिर्फ़ अपनी क़ुव्वत जताने और रियाकारी ज़ाहिर करने के वास्ते तकब्बुर और तजुर्बे के तौर पर पहाड़ों में मकान तराशते थे। कभी ख़ौफ़ के सबब या ज़रूरत से यह चीज़

Maktab E Ashraf

न थी। जब रसूलुल्लाह सल्ल. तबूक जाते हुए उनके मकानों से गुज़रे तो आपने सर पर कपड़ा डाल लिया, सवारी को तेज़ चलाया और अपने साथियों से फ़रमाया कि जिन पर ख़ुदा का अ़ज़ाब उतरा है उनकी बस्तियों से रोते हुए गुज़रो। अगर रोना न आये तो रोती सूरत बनाकर चलो, ऐसा न हो कि उसी अ़ज़ाब का शिकार तुम भी बन जाओ।

आख़िर उन पर ठीक चौथे दिन की सुबह ख़ुदा का अ़ज़ाब एक चिंघाड़ की सूरत में आया। उस वक़्त उनकी कमाईयाँ कुछ काम न आयीं, जिन खेतियों और फलों की हिफ़ाज़त के लिये और उन्हें बढ़ाने के लिये उन लोगों ने ऊँटनी का पानी पीना नापसन्द करके उसे क़त्ल कर दिया था, वे आज बेफ़ायदा साबित हुए और ख़ुदा तआ़ला का हुक्म और तक़दीर अपना काम कर गयी।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝	और हमने आसमानों को और ज़मीन को और उनकी दरमियानी चीज़ों को बग़ैर मस्लेहत के पैदा नहीं किया, और ज़रूर क़ियामत आने वाली है। सो आप ख़ूबी के साथ दरगुज़र कीजिए। (85) बेशक आपका रब बड़ा ख़ालिक़, बड़ा आ़लिम है। (86)

इस क़ौम का भी हिसाब व किताब होगा

अल्लाह तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ अ़दल के साथ बनाई है। क़ियामत आने वाली है, बुरों को बुरे बदले, नेकों को नेक बदले मिलने वाले हैं। मख़्लूक़ बेकार पैदा नहीं की गयी, ऐसा गुमान काफ़िरों को होता है और काफ़िरों के लिये दोज़ख़ है। एक और आयत में है- क्या तुम समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है, और तुम हमारी तरफ़ लौटकर नहीं आओगे? बुलन्दी वाला अल्लाह है, मालिके हक़ जिसके सिवा कोई क़ाबिले इबादत नहीं। अ़र्शे करीम का मालिक वही है।

फिर अपने नबी को हुक्म देता है कि मुश्रिकों से निगाह फेर लीजिये। उनके तकलीफ़ देने, झुठलाने और बुरा कहने को सहन कर लीजिए। जैसे एक और आयत में है कि उनसे निगाह बचा लीजिये (यानी उनकी तरफ़ ज़्यादा ध्यान न दीजिये) और सलाम कह दीजिए उन्हें अभी मालूम हो जायेगा। यह हुक्म जिहाद के हुक्म से पहले था। यह आयत मक्की है और जिहाद हिजरत के बाद लागू और शुरू हुआ है। तेरा रब ख़ालिक़ है और ख़ालिक़ मार डालने के बाद भी पैदाईश पर क़ादिर है, उसे किसी चीज़ की बार बार की पैदाईश आ़जिज़ नहीं कर सकती। रेज़ों (छोटे-छोटे टुकड़ों) को जो बिखर जायें वह जमा करके जान डाल सकता है। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

اَوَلَيْسَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ..... الخ.

आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) क्या इन जैसों की पैदाईश की क़ुदरत नहीं रखता? बेशक वह पैदा करने वाला, इल्म वाला है। वह जब किसी बात का इरादा करता है तो उसे हो जाने को फ़रमा देता है, बस वह हो जाती है। पाक ज़ात है उस ख़ुदा की जिसके हाथ में हर चीज़ की

मिल्कियत है, और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाये जाओगे।

और हमने आपको सात आयतें दीं जो (नमाज़ में) बार-बार (पढ़ी जाती) हैं और क़ुरआने अज़ीम (दिया)। (87) आप अपनी आँख उठाकर उस चीज़ को न देखिए जो कि हमने उन मुख़्तलिफ़ क़िस्म के (काफ़िर) लोगों को बरतने के लिए दे रखी है, और उनपर ग़म न कीजिए और मुसलमानों पर शफ़क़त रखिए। (88)	وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ○ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ○

एक बड़ी नेमत जिसके मुक़ाबले में तमाम नेमतें मामूली हैं

ऐ नबी! हमने जब क़ुरआने अज़ीम जैसी कभी ख़त्म न होने वाली दौलत तुझे इनायत फ़रमा रखी है तो तुझे न चाहिये कि काफ़िरों के दुनियावी माल व मता और ठाठ-बाट को ललचाई हुई नज़रों से देखे। (हुज़ूरे पाक को ख़िताब करके दर असल यह आपकी उम्मत को हिदायत की जा रही है)। यह तो सब फ़ानी है और सिर्फ़ उनकी आज़माईश के लिये चन्द दिन के लिये उन्हें अ़ता हुआ है। साथ ही तुझे उनके ईमान न लाने पर सदमे और अफ़सोस की भी बिल्कुल ज़रूरत नहीं, हाँ तुझे चाहिये कि नर्मी, अच्छे अख़्लाक़, तवाज़ो और मिलनसारी के साथ मोमिनों से पेश आता रहे। जैसा कि इरशाद है:

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ...... الخ.

लोगो तुम्हारे पास तुममें से ही एक रसूल आ गये हैं, जिन पर तुम्हारी तकलीफ़ बहुत भारी गुज़रती है। जो तुम्हारी भलाई और बेहतराई के दिल से इच्छुक हैं, जो मुसलमानों पर परले दर्जे के (यानी बहुत ज़्यादा) शफ़ीक़ व मेहरबान हैं।

'सबअ़े-मसानी' के बारे में एक क़ौल तो यह है कि इससे मुराद क़ुरआने करीम की शुरू की सात लम्बी सूरतें हैं- सूरः ब-क़रह, आले इमरान, निसा, मायदा, अन्आ़म, आराफ़ और यूनुस। इसलिये कि इन सूरतों में फ़राईज़ का, हुदूद का, क़िस्सों का और अहकाम का ख़ास तरीक़े पर बयान है। इसी तरह मिसालें, ख़बरें और इबरतें (सीख की बातें) भी ज़्यादा हैं। बाज़ों ने सूरः आराफ़ तक की छह सूरतें गिनवाकर सातवीं सूरत सूरः अनफ़ाल और सूरः बराअत को बतलाया है। उनके नज़दीक ये दोनों सूरतें मिलकर एक ही सूरत है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि सिर्फ़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को इनमें से दो सूरतें मिली थीं, बाक़ी किसी नबी को सिवाय हमारे नबी सल्ल. के ये सूरतें नहीं मिलीं। एक क़ौल है कि सबसे पहले हज़रत मूसा को छह मिली थीं, लेकिन जब आपने तख़्तियाँ गिरा दीं तो दो उठ गयीं और चार रह गयीं। एक क़ौल है कि क़ुरआने अ़ज़ीम से मुराद भी यही है। ज़ियाद कहते हैं कि मैंने तुझे सात जुज़ (हिस्से) दिये हैं- 'हुक्म' 'मनाही' 'ख़ुशख़बरी' 'डर' 'मिसालें' 'नेमतों का शुमार' और 'क़ुरआनी ख़बरें'।

दूसरा क़ौल यह है कि 'सबअ़े-मसानी' से मुराद सूरः फ़ातिहा है, जिसकी सात आयतें हैं। ये सात बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम समेत हैं। उनके साथ अल्लाह ने तुम्हें मख़्सूस किया है, यह किताब का शुरू हैं

Maktab E Ashraf

और (नमाज़ की) हर रकअत में दोहराई जाती हैं। चाहे फ़र्ज़ नमाज़ हो चाहे नफ़िल नमाज़ हो। इमाम इब्ने जरीर रह. इसी क़ौल को पसन्द फ़रमाते हैं और इस बारे में जो हदीसें नक़ल की गयी हैं उनसे इस पर दलील पकड़ते हैं। हमने वे तमाम हदीसें फ़ज़ाईले सूरः फ़ातिहा के बयान में अपनी तफ़सीर के शुरू में लिख दी हैं। जिस पर अल्लाह का शुक्र दिल से निकलता है।

इमाम बुख़ारी रह. ने इस जगह दो हदीसें ज़िक्र फ़रमाई हैं, एक में हज़रत अबू सईद बिन मुअ़ल्ला रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि नबी करीम सल्ल. आये, मुझे बुलाया, लेकिन मैं आपके पास न आया। नमाज़ ख़त्म करके पहुँचा तो आपने पूछा कि उसी वक़्त क्यों न आये? मैंने कहा या रसूलल्लाह! मैं नमाज़ में था। आपने फ़रमाया क्या अल्लाह तआ़ला का यह फ़रमान नहीं:

يَـآيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَادَعَاكُمْ.

यानी ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की बात मान लो। जब भी वे तुम्हें पुकारें।

सुन अब मैं तुझे मस्जिद में से निकलने से पहले ही क़ुरआने करीम की बहुत बड़ी सूरत बतलाऊँगा। थोड़ी देर में जब हुज़ूर सल्ल. तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैंने आपका वादा याद दिलाया। आपने फ़रमाया वह सूरत 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आ़लमीन....... की है। यही 'सबअ़े-मसानी' है और यही बड़ा क़ुरआन है जो मुझको दिया गया है।

दूसरी हदीस में आपका फ़रमान है कि उम्मुल-क़ुरआन यानी सूरः फ़ातिहा ही 'सबअ़े-मसानी' और 'क़ुरआने अ़ज़ीम' है। पस साफ़ साबित है कि 'सबअ़े-मसानी' और 'क़ुरआने अ़ज़ीम' से मुराद सूरः फ़ातिहा है। लेकिन यह भी ख़्याल रहे कि उसके सिवा और भी क़ौल हैं। इसके ख़िलाफ़ ये हदीसें नहीं जबकि इनमें भी यह हक़ीक़त पाई जाये जैसे कि पूरे क़ुरआने करीम का वस्फ़ भी इसके मुख़ालिफ़ नहीं, जैसे फ़रमाने ख़ुदा है:

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ.

पस इस आयत में सारे क़ुरआन को मसानी कहा गया है। और मुतशाबा भी है। तो वह एक तरह से मसानी है। और दूसरी वजह से मुतशाबा और क़ुरआने अ़ज़ीम भी यही है जैसे कि इस रिवायत से साबित है कि हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि तक़्वे पर जिस मस्जिद की बुनियाद है वह कौनसी है? तो आपने अपनी मस्जिद की तरफ़ इशारा किया, हलाँकि यह भी साबित है कि यह आयत मस्जिदे क़ुबा के बारे में उतरी है। पस क़ायदा यही है कि किसी चीज़ का ज़िक्र दूसरी चीज़ से इनकार नहीं होता, जबकि वह भी वही सिफ़त रखती हो। वल्लाहु आलम

पस तुझे उनकी ज़ाहिरी टीप-टाप से बेनियाज़ (बेपरवाह) रहना चाहिये। इसी फ़रमान की बिना पर इमाम इब्ने उयैना रह. ने एक सही हदीस जिसमें है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- 'हममें से वह नहीं जो क़ुरआन के साथ ख़ुद को दूसरों से बेपरवाह न करे' की तफ़सीर यह लिखी है कि क़ुरआन को लेकर उसके अ़लावा हर चीज़ से अलग और बेपरवाह न हो जाये वह मुसलमान नहीं।

(मतलब यह है कि क़ुरआन पाक इतनी बड़ी दौलत है कि जिसको यह नेमत मिल गयी उसके लिये फिर दुनिया की फ़ानी और बेहक़ीक़त चीज़ों की तरफ़ मुतवज्जह होना बहुत ही बुरा है, गोया इस दौलत के मिलने के बाद इनसान को हर चीज़ से बेपरवाह हो जाना चाहिये। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktab E Ashraf

अगरचे यह तफ़सीर बिल्कुल सही है लेकिन इस हदीस से यह मक़सूद नहीं। हदीस का सही मक़सद इस हमारी तफ़सीर के शुरू में हमने बयान कर दिया है। इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. के यहाँ एक मर्तबा मेहमान आये, आपके घर में कुछ न था, आपने एक यहूदी से रजब के महीने के वादे पर आटा उधार मंगवाया, लेकिन उसने कहा बग़ैर किसी चीज़ को गिरवी रखे मैं नहीं दूँगा। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया वल्लाह मैं आसमान वालों में अमीन हूँ और ज़मीन वालों में भी, अगर यह मुझे उधार देता या मेरे हाथ फ़रोख़्त कर देता तो मैं इसे ज़रूर अदा करता। पस यह आयत (जिसकी तफ़सीर चल रही है) नाज़िल हुई और गोया आपकी दिलजोई की गयी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इनसान को मना है कि किसी के माल व मता को ललचाई हुई निगाहों से ताके। यह जो फ़रमाया कि उनकी जमाअ़तों को जो फ़ायदा हमने दे रखा है, इससे मुराद काफ़िरों के मालदार लोग हैं।

وَقُلْ إِنِّيٓ أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ٥ كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ٥ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِينَ ٥ فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ٥ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٥	और कह दीजिए कि मैं खुल्लम-खुल्ला डराने वाला हूँ (89) जैसा कि हमने उन लोगों पर (अ़ज़ाब) नाज़िल किया है जिन्होंने हिस्से कर रखे थे। (90) यानी आसमानी किताब के मुख़्तलिफ़ हिस्से क़रार दिए थे। (तुम पर भी नाज़िल करेंगे) (91) सो आपके रब की क़सम हम उन सबसे पूछताछ करेंगे (92) उनके आमाल की। (93)

आसमानी किताबें उद्देश्यों के हासिल करने का ज़रिया

हुक्म होता है कि ऐ पैग़म्बर! आप ऐलान कर दीजिए कि मैं तमाम लोगों को अ़ज़ाबे ख़ुदा से साफ़ साफ़ डरा देने वाला हूँ। याद रखो मेरे झुठलाने वाले भी अगले नबियों के झुठलाने वालों की तरह अ़ज़ाब के शिकार होंगे।

'मुक़्तसिमीन' (हिस्से करने वालों) से मुराद क़समें खाने वाले हैं, जो अम्बिया को झुठलाते और उनकी मुख़ालफ़त और तकलीफ़ देने पर आपस में क़सम खा लेते थे। जैसे कि क़ौमे सालेह का बयान क़ुरआन हकीम में है कि उन लोगों ने ख़ुदा की क़समें खाकर अ़हद किया कि रातों रात सालेह और उनके घराने को हम मौत के घाट उतार देंगे। इसी तरह क़ुरआन में है कि वे क़समें खा-खाकर कहते थे कि मुर्दे फिर ज़िन्दा नहीं होंगे। एक और जगह उनका इस बात पर क़समें खाने का ज़िक्र है कि मुसलमानों को कभी कोई रहमत नहीं मिल सकती। ग़र्ज़ कि जिस चीज़ को न मानते उस पर क़समें खाने की उन्हें आ़दत थी, इसलिये उन्हें 'मुक़्तसिमीन' कहा गया।

बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरी और इस हिदायत की मिसाल जिसे देकर ख़ुदा ने मुझे भेजा है, उस शख़्स के जैसी है जो अपनी क़ौम के पास आकर कहे कि लोगो! मैंने दुश्मन का लश्कर अपनी आँखों से देखा है। देखो होशियार हो जाओ। बचने और हलाक न होने के सामान कर लो। अब कुछ लोग उसकी बात मान लेते हैं, उसी मोहलत में चल पड़ते हैं और दुश्मन के पंजे से बच जाते हैं। लेकिन बाज़ लोग उसे झूठा समझते हैं और वहीं बेफ़िक्री से पड़े रहते हैं कि अचानक दुश्मन का

Maktab E Ashraf

लश्कर आ पहुँचता है और घेर-घारकर उन्हें कृत्ल कर देता है। यह है मिसाल मेरे मानने वालों की और न मानने वालों की।

उन लोगों ने उन खुदा की किताबों को जो उन पर उतरी थीं, पारा-पारा (टुकड़े-टुकड़े) कर दिया। जिस मसले को जी चाहा माना, जिससे दिल घबराया छोड़ दिया। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि इससे मुराद 'अहले किताब' हैं, कि किताब के बाज़ हिस्से को मानते थे और बाज़ को नहीं मानते थे। यह भी नक़ल है कि इससे मुराद काफ़िरों का अल्लाह की किताब के बारे में यह कहना है कि यह जादू है, यह कहानत है, यह पहले लोगों की कहानी है, इसका कहने वाला जादूगर है, मजनूँ है, काहिन है वग़ैरह। सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि वलीद बिन मुग़ीरा के पास क़ुरैश के सरदार जमा हुए, हज का मौसम क़रीब था और यह शख़्स उनमें बड़ा शरीफ़ और अ़क़्लमन्द समझा जाता था। उसने उन सबसे कहा कि देखो हज के मौक़े पर दूर-दराज़ से तमाम अ़रब यहाँ जमा होंगे, तुम देख रहे हो कि तुम्हारे इस साथी ने एक उधम मचा रखा है, तो इसके बारे में बाहर के लोगों से क्या कहा जाये। यह बताओ और किसी एक बात पर एक राय बना लो कि सब वही कहें, ऐसा न हो कोई कुछ कहे कोई कुछ कहे, इससे तो तुम्हारा एतिबार उठ जायेगा और वे परदेसी तुम्हें झूठा ख़्याल करेंगे। उन्होंने कहा अ़ब्दुश्शम्स साहिब आप ही कोई ऐसी बात तजवीज़ कर दीजिए। उसने कहा पहले तुम अपनी तो कहो, ताकि मुझे भी सोच-विचार का मौक़ा मिले। उन्होंने कहा फिर हमारी राय में तो हर शख़्स इसे काहिन (यानी ज्योतिषी) बतलाये। उसने कहा ये तो वास्तविकता के ख़िलाफ़ है, लोगों ने कहा फिर मजनूँ कहना बिल्कुल दुरुस्त है। उसने कहा यह भी ग़लत है। कहा अच्छा तो शायर कहें? उसने जवाब दिया कि वह शे'र जानता ही नहीं। कहा अच्छा फिर जादूगर कहें? कहा इसे जादू से कोई मतलब नहीं। उसने कहा सुनो! वल्लाह इसकी बातों में अ़जीब मिठास है, इन बातों में से तुम जो कहोगे दुनिया समझ लेगी कि बिल्कुल ग़लत और सफ़ेद झूठ है। अगरचे कोई बात नहीं बनती लेकिन कुछ कहना ज़रूरी है, अच्छा भाई सब उसे जादूगर बतलायें। इस बात पर यह मजमा उठकर चला गया और इसी का ज़िक्र इन आयतों में है। उनके आमाल का सवाल उनसे उनका रब ज़रूर करेगा, यानी कलिमा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' से।

इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि उस खुदा की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं कि तुममें से हर-हर शख़्स क़ियामत के दिन तन्हा-तन्हा खुदा के सामने पेश होगा, जैसे हर-हर शख़्स चौदहवीं रात के चाँद को अकेला-अकेला देखता है। अल्लाह फ़रमायेगा ऐ इनसान! तू मुझसे मग़रूर (घमंडी) क्यों हो गया? तूने अपने इल्म पर कहाँ तक अ़मल किया? तूने मेरे रसूलों को क्या जवाब दिया? अबुल-आ़लिया फ़रमाते हैं कि दो चीज़ों का सवाल हर एक से होगा- माबूद किसे बना रखा था? और रसूल की मानी या नहीं? इब्ने उयैना रह. फ़रमाते हैं कि अ़मल और माल का सवाल होगा।

हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. से हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मुआ़ज़ इनसान से क़ियामत के दिन हर-हर अ़मल का सवाल होगा, यहाँ तक कि उसके आँख के सुर्मे और उसके हाथ की गुंधी हुई मिट्टी के बारे में भी उससे सवाल होगा। देख मुआ़ज़ ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन खुदा की नेमतों के बारे में तू कमी वाला रह जाये।

इस आयत में तो है कि हर एक से उसके अ़मल के बारे में सवाल होगा, और सूरः रहमान की आयत में है कि:

Mahtab E Ashraf

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ.

कि उस दिन किसी इनसान या जिन्न से उसके गुनाहों का सवाल न होगा।

इन दोनों आयतों में बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. मुवाफ़क़त यह है कि यह सवाल न होगा कि तूने यह अ़मल किया? बल्कि यह सवाल होगा कि क्यों किया?

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ○ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ○ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ○ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ○ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ○ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ○ ع	ग़र्ज़ कि आपको जिस बात का हुक्म किया गया है उसको साफ़-साफ़ सुना दीजिए, और (उन) मुश्रिकों की परवाह न कीजिए। (94) हँसी उड़ाने वालों के लिए हम काफ़ी हैं। (95) ये लोग जो अल्लाह के साथ दूसरा माबूद क़रार देते हैं, उनसे आपके लिए हम काफ़ी हैं, सो उनको अभी मालूम हुआ जाता है। (96) और वाक़ई हमको मालूम है कि ये लोग जो बातें करते हैं उनसे आप तंगदिल होते हैं। (97) सो आप अपने परवर्दिगार की तस्बीह व तारीफ़ करते रहिए, और नमाज़ें पढ़ने वालों में रहिए। (98) और अपने रब की इबादत करते रहिए यहाँ तक कि आपको मौत आ जाए। (99)

आ़म ऐलान कर दीजिए

हुक्म हो रहा है कि ऐ पैग़म्बरे ख़ुदा! आप ख़ुदा की बातें लोगों को साफ़-साफ़ बेझिझक पहुँचा दें। न किसी की रियायत कीजिए न किसी का डर ख़ौफ़ कीजिए। मुश्रिकों के सामने तौहीद (अल्लाह का एक होना) खुल्लम-खुल्ला बयान कर दीजिए। ख़ुद अ़मल करके दूसरों तक भी पहुँचाईये। नमाज़ में क़ुरआन की बुलन्द आवाज़ से तिलावत कीजिए।

इस आयत के उतरने से पहले तक हुज़ूर सल्ल. पोशीदा (छुपे तौर पर) तब्लीग़ फ़रमाते थे, लेकिन इसके बाद आप अैर आपके सहाबा ने खुले तौर पर दीन का प्रचार व प्रसार शुरू कर दिया। इन मज़ाक़ उड़ाने वालों को हम पर छोड़ दे, हम ख़ुद उनसे निपट लेंगे, तू अपनी तब्लीग़ के फ़रीज़े में कोताही न कर। ये तो चाहते हैं कि ज़रा सी सुस्ती आपकी तरफ़ से देखें तो ख़ुद भी इससे अलग हो जायें। तो उनसे बिल्कुल भी ख़ौफ़ न करें। अल्लाह तआ़ला तेरा हाफ़िज़ व मददगार है, वह तुझे उनके शर से बचायेगा। जैसे एक और आयत में है कि ऐ रसूल! जो कुछ तेरी जानिब उतारा गया है तू उसे पहुँचा दे, अगर तूने ऐसा न किया तो तूने अपने रब की रिसालत नहीं पहुँचाई। अल्लाह तआ़ला ख़ुद ही लोगों की बुराई से तुझे महफ़ूज़ रखेगा।

चुनाँचे एक दिन हुज़ूर सल्ल. रास्ते से जा रहे थे कि बाज़ मुश्रिकों ने आपको छेड़ा, उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और उन्हें चोट मारी, जिससे उनके जिस्मों में ऐसा हो गया जैसे नेज़े के ज़ख़्म

हों, उसी में वे मर गये, और ये लोग मुश्रिकों के बड़े-बड़े सरदारों में थे, बड़ी उम्र के थे और निहायत सम्मानित गिने जाते थे। बनू असद के कबीले में से तो अस्वद बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब, अबू ज़मआ़ यह हुज़ूर सल्ल. का बड़ा ही दुश्मन था, तकलीफ़ें दिया करता था और मज़ाक़ उड़ाया करता था, आपने तंग आकर उसके लिये बद्दुआ़ भी की थी कि खुदाया इसे अंधा कर दे, बेऔलाद कर दे। बनी ज़ोहरा में से अस्वद था और बनी मख़्ज़ूम में से वलीद था, और बनी सहम में से आ़स बिन वाईल था, और खुज़ाआ़ में से हारिस था। ये लोग बराबर हुज़ूर सल्ल. को तकलीफ़ देने के पीछे लगे रहते थे, लोगों को आपके ख़िलाफ़ उभारा करते थे और जो तकलीफ़ उनके बस में होती आपको पहुँचाया करते।

जब ये अपने अत्याचारों में हद से गुज़र गये और बात-बात में हुज़ूर सल्ल. का मज़ाक़ उड़ाने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने ये आयतें (यानी सूरः हिज्र की आयत 94-96) नाज़िल फ़रमायीं। कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. तवाफ़ कर रहे थे कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये, बैतुल्लाह शरीफ़ में आपके पास खड़े हो गये। इतने में अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस आपके पास से गुज़रा तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने उसके पेट की तरफ़ इशारा किया, उसे पेट की बीमारी हो गयी और उसी में वह मरा। इतने में वलीद बिन मुग़ीरा गुज़रा, उसकी ऐड़ी एक खुज़ाई शख़्स के तीर के फल से कुछ मामूली सी छिल गयी थी और उसे भी दो साल गुज़र चुके थे, हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने उसी की तरफ़ इशारा किया, वह फूल गयी, पकी और उसी में वह मरा। फिर आ़स बिन वाईल गुज़रा। उसके तलवे की तरफ़ इशारा किया, कुछ दिनों बाद यह ताईफ़ जाने के लिये अपने गधे पर सवार चला, रास्ते में गिर पड़ा और तलवे में कील घुस गयी, जिसने उसकी जान ली। हारिस के सर की तरफ़ इशारा किया, उसे ख़ून आने लगा और वह उसी में मरा। इन सब मूज़ियों (तकलीफ़ देने वालों) का सरदार वलीद बिन मुग़ीरा था, उसी ने इन्हें जमा किया था।

पस ये पाँच-सात शख़्स थे जो बदबख़्त थे और इनके इशारों से और ज़लील लोग भी कमीनेपन की हरकतें करते रहते थे। ये लोग इस बेहूदा हरकत के साथ ही यह भी करते थे कि खुदा के साथ दूसरों को शरीक करते थे। उन्हें अपने करतूत का मज़ा अभी-अभी आ जायेगा। और भी जो रसूल का मुख़ालिफ़ हो खुदा के साथ शिर्क करे उसका यही हाल है। हमें ख़ूब मालूम है कि उनकी बेहूदगी से ऐ नबी! तुम्हें तकलीफ़ होती है, दिल तंग होता है, लेकिन तुम उनका ख़्याल भी न करो। अल्लाह तुम्हारा मददगार है। तुम अपने रब के ज़िक्र और उसकी तस्बीह और तारीफ़ में लगे रहो। उसकी इबादत जी भरकर करो, नमाज़ का ख़्याल रखो, सज्दा करने वालों का साथ दो।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह तबारक व तआ़ला का इरशाद है कि ऐ आदम के बेटे! शुरू दिन की चार रक्अ़त से आ़जिज़ न हो, मैं तुझे आख़िर दिन तक किफ़ायत करूँगा। हुज़ूर सल्ल. की आ़दते मुबारक थी कि जब कोई घबराहट का मामला आ पड़ता तो आप नमाज़ शुरू कर देते। यक़ीन से मुराद इस आख़िरी आयत में मौत है, इसकी दलील सूरः मुद्दस्सिर की वे आयतें हैं जिनमें बयान है कि जहन्नमी अपनी बुराईयाँ बयान करते हुए कहेंगे कि हम नमाज़ी न थे, मिस्कीनों को खिलाते न थे, बातें बनाया करते थे और क़ियामत को झुठलाते थे, यहाँ तक कि मौत आ गयी। यहाँ भी मौत की जगह लफ़्ज़ 'यक़ीन' है।

एक सही हदीस में है कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि. के इन्तिक़ाल के बाद जब हुज़ूर सल्ल. उनके पास गये तो अन्सार की एक औ़रत उम्मुल-उला ने कहा कि ऐ अबुस्साईब! अल्लाह की तुझ पर

Maktab E Ashraf

रहमतें हों। बेशक अल्लाह तआ़ला ने तेरी इज़्ज़त व सम्मान किया है। हुज़ूर सल्ल. ने यह सुनकर फ़रमाया तुझे यक़ीन हो गया कि अल्लाह ने इसका इकराम किया? उन्होंने जवाब दिया कि आप पर मेरे माँ-बाप क़ुरबान हों, फिर कौन होगा जिसका इकराम हो? आपने फ़रमाया सुनो! इसे मौत आ चुकी और मुझे इसके लिये भलाई की उम्मीद है। इस हदीस में भी मौत की जगह यक़ीन का लफ़्ज़ है। इस आयत से दलील ली गयी है कि नमाज़ वग़ैरह इबादत इनसान पर फ़र्ज़ है जब तक कि उसकी अ़क्ल बाक़ी रहे और होश व हवास क़ायम हों, जैसी उसकी हालत हो उसी के मुताबिक़ नमाज़ अदा कर ले। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि खड़े होकर नमाज़ अदा कर, यह न हो सके तो बैठकर, यह न हो सके तो करवट पर लेटकर।

बाज़ जाहिल लोगों ने इससे अपने मतलब की बात गढ़ ली है कि जब तक इनसान दर्जा-ए-कमाल तक न पहुँचे उस पर इबादतें फ़र्ज़ रहती हैं, लेकिन जब वह मारिफ़त (यानी बुज़ुर्गी) की मन्ज़िलें तय कर चुका तो इबादत का हुक्म अब उस पर लागू नहीं रहा, यह सरासर कुफ़्र व गुमराही और जहालत है। ये लोग इतना नहीं समझते कि अम्बिया और ख़ुसूसन अम्बिया के सरदार हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा मारिफ़त (अल्लाह की पहचान और बुज़ुर्गी) के तमाम दर्जे तय कर चुके थे और ख़ुदाई इल्म व इरफ़ान में सब दुनिया से कामिल थे, रब की सिफ़ात और ज़ात का सबसे ज़्यादा इल्म रखते थे, इसके बावजूद सबसे ज़्यादा ख़ुदा की इबादत करते थे, रब की इताअ़त में तमाम दुनिया से ज़्यादा मशग़ूल थे और दुनिया के आख़िरी दम तक इसी में लगे रहे।

पस साबित है कि यहाँ 'यक़ीन' से मुराद मौत है। तमाम मुफ़स्सिरीन सहाबा व ताबिईन वग़ैरह का यही मज़हब है। अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है, उसने जो हमें हिदायत फ़रमाई है उस पर हम उसकी तारीफ़ें करते हैं। उसी से नेक कामों में मदद चाहते हैं, उसी की पाक ज़ात पर हमारा भरोसा है। हम उस मालिक व हाकिम से दुआ़ करते हैं कि वह बेहतरीन और कामिल इस्लाम, ईमान और नेकी पर हमें मौत दे, वह जव्वाद और करीम है।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः हिज्र की तफ़सीर ख़त्म हुई।

सूरः नहल

सूरः नहल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 128 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, सो तुम उसमें जल्दी मत मचाओ। वह लोगों के शिर्क से पाक और बरतर है। (1)	اَتٰٓى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ○

Maktab E Ashraf

ख़ुदा का हुक्म

अल्लाह तआला क़ियामत के क़रीब होने की ख़बर दे रहा है और गोया कि वह क़ायम हो चुकी इसलिये माज़ी (भूतकाल) के लफ़्ज़ से बयान फ़रमाता है। जैसे एक और जगह फ़रमाया कि लोगों का हिसाब क़रीब आ लगा फिर भी वे ग़फ़लत के साथ मुँह मोड़े हुए हैं। एक और आयत में है कि क़ियामत क़रीब आ लगी, चाँद फट गया। फिर फ़रमाया उस क़रीब वाली चीज़ के और क़रीब होने की तमन्नायें न करो। 'उस' से मुराद या तो लफ़्ज़ अल्लाह है यानी अल्लाह से जल्दी न चाहो, या अ़ज़ाब है यानी अ़ज़ाब की जल्दी न मचाओ। दोनों मायने एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। जैसे एक और आयत में है कि ये लोग अ़ज़ाब के लिये जल्दी मचा रहे हैं, अगर हमारी तरफ़ से उसका वक़्त मुक़र्रर न होता तो बेशक उन पर अ़ज़ाब आ पड़ता, लेकिन अ़ज़ाब उन पर आयेगा ज़रूर और वह भी एक दम से उनकी गफ़लत में। ये अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं और जहन्नम उन सब काफ़िरों को घेरे हुए है।

हज़रत ज़ह्हाक रह. ने इस आयत का एक अ़जीब मतलब बयान किया है, यानी वे कहते हैं कि मुराद यह है कि ख़ुदा के फ़राईज़ और हदें नाज़िल हो चुके। इमाम इब्ने जरीर ने इसे ख़ूब रद्द किया है और फ़रमाया है कि एक भी तो हमारे इल्म में ऐसा नहीं जिसने शरीअ़त के वजूद से पहले उसके माँगने में उसकी जल्दी मचाई हो। मुराद इससे अ़ज़ाबों की जल्दी है, जो काफ़िरों की आ़दत थी। क्योंकि वे उन्हें मानते ही न थे, जैसा कि क़ुरआन पाक ने फ़रमाया है:

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ..... الخ.

बेईमान तो उसकी जल्दी मचा रहे हैं और ईमान वाले उससे डर और काँप रहे हैं, क्योंकि वे उसको बर्हक़ मानते हैं। बात यह है कि अ़ज़ाबे ख़ुदा में शक करने वाले दूर की गुमराही में जा पड़ते हैं।

इब्ने अबी हातिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के क़रीब मग़रिब (पश्चिम) की तरफ़ से ढाल की तरह स्याह बादल ज़ाहिर होगा और वह बहुत जल्द आसमान पर चढ़ेगा। फिर उसमें से एक मुनादी आवाज़ करेगा, लोग ताज्जुब से एक दूसरे से कहेंगे मियाँ कुछ सुना भी? बाज़ हाँ कहेंगे और बाज़ बात को उड़ा देंगे। फिर दोबारा आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा और कहेगा ऐ लोगो! अब तो सब कहेंगे हाँ साहिब आवाज़ तो आई। फिर तीसरी दफ़ा मुनादी करेगा और कहेगा ऐ लोगो! अल्लाह का हुक्म और मामला आ पहुँचा, अब जल्दी न करो। ख़ुदा की क़सम दो शख़्स जो किसी कपड़े को फैलाये हुए होंगे समेटने भी न पायेंगे कि क़ियामत क़ायम हो जायेगी। कोई अपने हौज़ को ठीक कर रहा होगा, अभी पानी भी पिलाने नहीं पाया होगा कि क़ियामत आयेगी। दूध दूहने वाले पी भी न सकेंगे कि क़ियामत आ जायेगी, हर एक आपा धापी में लग जायेगा। फिर अल्लाह तआ़ला अपनी पाक ज़ात की ग़ैर की शिर्कत और इबादत से पाकीज़गी बयान फ़रमाता है, वास्तव में वह इन तमाम बातों से पाक, बहुत दूर और बहुत बुलन्द है। यही मुश्रिक हैं जो क़ियामत के इनकारी भी हैं। अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला उनके शिर्क से पाक है।

वह फ़रिश्तों को 'वही' यानी अपना हुक्म देकर अपने बन्दों में से जिस पर चाहें नाज़िल	يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى

Maktab E Ashraf

مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ○	फ़रमाते हैं, कि ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो मुझसे डरते रहो। (2)

रिसालत एक ख़ुदाई देन है

रूह से मुराद यहाँ 'वही' (यानी अल्लाह की तरफ़ से आने वाला पैग़ाम) है, जैसे आयतः

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا.... الخ.

हमने इसी तरह तेरी तरफ़ अपने हुक्म से 'वही' नाज़िल फ़रमाई, हालाँकि तुझे तो यह भी पता न था कि किताब क्या होती है और ईमान की हक़ीक़त क्या है? हाँ हमने इसे नूर बनाकर जिसे चाहा अपने बन्दों में से रास्ता दिखा दिया।

यहाँ फ़रमान है कि हम अपने जिन बन्दों को चाहें पैग़म्बरी अ़ता फ़रमाते हैं, हमें ही इसका पूरा इल्म है कि उसके लायक़ कौन है। हम ही फ़रिश्तों में से भी इस ऊँचे रुतबे के फ़रिश्ते छाँट लेते हैं और इनसानों में भी। ख़ुदा अपनी 'वही' अपने हुक्म से अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उतारता है ताकि वे मुलाक़ात के दिन से होशियार कर दें, जिस दिन सबके सब ख़ुदा के सामने होंगे। कोई चीज़ उससे छुपी न होगी, उस दिन मुल्क किसका होगा? सिर्फ़ अल्लाह वाहिद व क़स्हार का। यह इसलिये कि वे लोगों में अल्लाह के एक होने का ऐलान कर दें और पारसाई से दूर मुश्रिकों को दौड़ायें और लोगों को समझा दें कि वे मुझसे डरते रहा करें।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ○ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ○	आसमानों को और ज़मीन को हिक्मत से बनाया, वह उनके शिर्क से पाक है। (3) इनसान को नुत्फ़े से बनाया फिर वह यकायक खुल्लम-खुल्ला झगड़ने लगा। (4)

ज़मीन व आसमान को ख़ुदा ही ने पैदा किया

ऊपर की दुनिया और इस नीचे की दुनिया का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) अल्लाह करीम है। बुलन्द आसमान और फैली हुई ज़मीन मय तमाम मख़्लूक़ के उसी के पैदा की हुई है, और यह सब हक़ के तौर पर है न कि बेकार। नेकों को जज़ा और बदों को सज़ा होगी, वह तमाम माबूदों और मुश्रिकों से बरी और बेज़ार है। वह अकेला है उसको कोई शरीक नहीं है। वह तन्हा ही तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है, इसलिये अकेला ही इबादत का हक़दार है। उसने इनसान की नस्ल का सिलसिला नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) से जारी रखा है, जो एक हक़ीर व ज़लील (यानी घटिया और नापाक) पानी है। यह जब ठीक-ठाक बना दिया जाता है तो अकड़-फूँ में आ जाता है, रब से झगड़ने लगता है, रसूलों की मुख़ालफ़त पर तुल जाता है। बन्दा था चाहिये था कि बन्दगी में लगा रहता, लेकिन यह नाफ़रमानी करने लगा।

Maktab E Ashraf

एक और आयत में है कि अल्लाह ने इनसान को पानी से बनाया, इसका ख़ानदान और ससुराल क़ायम किया, ख़ुदा क़ादिर है, रब के सिवा ये उनकी पूजा करने लगे हैं जो न कोई नफ़ा दे सकते हैं और न नुक़सान, काफ़िर कुछ ख़ुदा से छुपे नहीं। सूरः यासीन में फ़रमाया- क्या इनसान नहीं देखता कि हमने इसे नुत्फ़े (पानी के क़तरे) से पैदा किया, फिर वह तो बड़ा ही झगड़ालू निकला। हम पर भी बातें बनाने लगा और अपनी पैदाईश भी भूल गया। कहने लगा कि इन गली-सड़ी हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? ऐ नबी! तुम उनसे कह दो कि उन्हें वह ख़ालिक़े अकबर पैदा करेगा जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया। वह तो हर तरह की मख़्लूक़ को हर अन्दाज़ से पैदाईश (यानी बनाने) का पूरा जानकार है। मुस्नद अहमद और इब्ने माजा में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपनी हथेली पर थूक कर फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ इनसान! क्या तू मुझे आ़जिज़ कर सकता है? हालाँकि मैंने तो तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया है, जब तू पूरा हो गया, ठीक-ठाक हो गया, लिबास मकान मिल गया तो लगा समेटने और मेरी राह से रोकने, और जब दम गले में अटका तो तो कहने लगा कि अब मैं सदक़ा करता हूँ, अल्लाह की राह में देता हूँ, बस अब सदक़ा ख़ैरात का वक़्त निकल गया।

और उसी ने चौपायों को बनाया, उनमें तुम्हारे जाड़े का (भी) सामान है, और (भी) बहुत-से फ़ायदे हैं और उनमें से खाते भी हो। (5) और उनकी वजह से तुम्हारी रौनक़ भी है, जबकि शाम के वक़्त लाते हो और जबकि सुबह के वक़्त छोड़ देते हो। (6) और वे तुम्हारे बोझ भी ऐसे शहर को ले जाते हैं जहाँ तुम जान को मेहनत में डाले बिना नहीं पहुँच सकते थे, वाक़ई तुम्हारा रब बड़ी शफ़क़त वाला, बड़ी रहमत वाला है। (7)	وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ○ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ○ وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ○

तरह-तरह के जानवर

जो चौपाये (पशु वग़ैरह) ख़ुदा तआ़ला ने पैदा किये हैं और इनसान उनसे अनेक फ़ायदे उठा रहा है, इस नेमत को रब्बुल-आ़लमीन बयान फ़रमा रहा है। जैसे ऊँट, गाय, बकरी जिसका विस्तृत बयान सूरः अन्आ़म की आयत में आठ क़िस्मों में बयान किया है। उनके बाल ऊन सूफ़ वग़ैरह का गर्म लिबास और जड़ावल (जाड़े के गर्म कपड़े) बनती है। दूध पीते हैं गोश्त खाते हैं। शाम को जब वे चर-चुगकर वापस आते हैं भरी हुई कोखों वाले भरे हुए थनों वाले, ऊँची कोहानों वाले कितने भले मालूम होते हैं। और जब चरागाह की तरफ़ जाते हैं कैसे प्यारे मालूम होते हैं। फिर तुम्हारे भारी-भारी बोझ एक शहर से दूसरे शहर तक अपनी कमर पर लाद कर ले जाते हैं कि तुम्हारा वहाँ पहुँचना बग़ैर आधी जान किये (यानी परेशानी और थकन के बग़ैर) मुश्किल था। हज, उमरे, जिहाद, तिजारत के और ऐसे ही और सफ़र इन पर होते हैं, तुम्हें ले जाते हैं, तुम्हारे बोझ ढोते हैं। जैसे आयतः

Mahtab E Ashraf

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً...... الخ.

(सूरः नहल की आयत 66) में है कि ये चौपाये जानवर भी तुम्हारी इबरत का सबब हैं। इनके पेट से हम तुम्हें दूध पिलाते हैं और इनसे बहुत से फ़ायदे पहुँचाते हैं। इनका गोश्त भी तुम खाते हो। इन पर सवारियाँ भी करते हो, समुद्र की सवारी के लिये कश्तियाँ हमने बना दी हैं।

एक और आयत में है:

اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ...... الخ.

अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये चौपाये (मवेशी जानवर) पैदा किये हैं कि तुम उन पर सवारी करो, उन्हें खाओ, उनसे नफ़ा उठाओ, दिली हाजतें पूरी करो और तुम्हें कश्तियों पर भी सवार कराया, और बहुत सी निशानियाँ दिखायीं। पस तुम किस-किस निशानी का इनकार करोगे? यहाँ अपनी ये नेमतें जताकर फ़रमाया कि तुम्हारा वह रब जिसने इन जानवरों को तुम्हारा ताबेदार और अधीन बना दिया है, वह तुम पर बहुत ही शफ़क़त व रहमत वाला है। जैसे सूरः यासीन में फ़रमाया है- क्या वे नहीं देखते कि हमने उनके लिये अपने हाथों से चौपाये बनाये और उन्हें उनका मालिक कर दिया, और उन्हें इनका ताबे और अधीन बना दिया कि बाज़ को खायें, बाज़ पर सवार हों।

एक और आयत में है:

وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَاتَرْكَبُوْنَ. الخ.

उस ख़ुदा ने तुम्हारे लिये कश्तियाँ बना दीं और चौपाये (मवेशी) पैदा कर दिये कि तुम उन पर सवार होकर अपने रब का फ़ज़्ल व शुक्र अदा करो और कहो वह पाक है जिसने इन्हें हमारा मातहत (क़ब्ज़े में) कर दिया, हालाँकि हममें यह ताक़त न थी, हम मानते हैं कि हम उसी की तरफ़ लौटेंगे।

'दिफ़्उन्' के मायने कपड़े, और फ़ायदों से मुराद खाना-पीना, नस्ल हासिल करना, सवारी करना, गोश्त खाना, दूध पीना है।

और घोड़े और ख़च्चर और गधे भी पैदा किए ताकि तुम उन पर सवार होओ और यह कि ज़ीनत के लिए भी और वह ऐसी-ऐसी चीज़ें बनाता है जिनकी तुमको ख़बर भी नहीं। (8)	وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَالَا تَعْلَمُوْنَ٥

बहुत से फ़ायदे

अपनी एक और नेमत बयान फ़रमा रहा है कि ज़ीनत (सजने-संवरने) के लिये और सवारी के लिये उसने घोड़े ख़च्चर और गधे पैदा किये हैं। बड़ा मक़सद इन जानवरों की पैदाईश से इनसान का ही फ़ायदा है। चूँकि उन्हें और चौपायों पर बरतरी दी और अलग से ज़िक्र किया, इस वजह से बाज़ उलेमा ने घोड़े के गोश्त की हुर्मत (हराम होने) की दलील इस आयत से ली है, जैसे इमाम अबू हनीफ़ा और उनकी मुवाफ़क़त करने वाले फ़ुक़हा कहते हैं कि ख़च्चर और गधे के साथ घोड़े का ज़िक्र है, और पहले के दोनों जानवर हराम हैं, इसलिये यह भी हराम हुआ। चुनाँचे ख़च्चर और गधे का हराम होना हदीसों में आया है, और

अक्सर उलेमा का मज़हब भी है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इन तीनों की हुर्मत (हराम होना) नक़ल की गयी है, वह फ़रमाते हैं कि इस आयत से पहले की आयत में चौपायों का ज़िक्र करके ख़ुदा तआ़ला ने फ़रमाया है कि उन्हें तुम खाते हो, पस यह तो हुए खाने के जानवर, और इन तीनों का बयान करके फ़रमाया कि उन पर तुम सवारी करते हो, पस ये हुए सवारी के जानवर। मुस्नद की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने घोड़ों, ख़च्चरों और गधों के गोश्त को मना फ़रमाया है, लेकिन उसके रावियों में एक रावी सालेह बिन यहया मिक़दाम हैं जिनके बारे में कलाम है। मुस्नद की एक और हदीस में मिक़दाम बिन मादी-करब से मन्क़ूल है कि हम हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. के साथ तायफ़ा की जंग में थे। मेरे पास मेरे साथी गोश्त लाये, मुझसे एक पत्थर माँगा, मैंने दिया। उन्होंने उसमें उसे बाँधा, मैंने कहा ठहरो मैं हज़रत ख़ालिद से दरियाफ़्त कर आऊँ। उन्होंने फ़रमाया हम रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में थे, लोगों ने यहूदियों के खेतों पर जल्दी शुरू कर दी, हुज़ूर सल्ल. ने मुझे हुक्म दिया कि लोगों में ऐलान कर दो कि नमाज़ के लिये आ जायें और मुसलमानों के सिवा कोई न आये। फिर फ़रमाया ऐ लोगो! तुमने यहूदियों के बाग़ात में घुसने में जल्द-बाज़ी की। सुनो! जिससे मुआ़हिदा और समझौता हो उसका माल बग़ैर हक़ के हलाल नहीं, और पालतू गधों, घोड़ों और ख़च्चरों के गोश्त और हर एक कुचलियों (नोकदार दाँतों) वाला दरिन्दा और हर एक पंजे से शिकार खेलने वाला परिन्दा हराम है। हुज़ूर सल्ल. की मनाही यहूद के बाग़ात से शायद उस वक़्त थी जब उनसे मुआ़हिदा हो गया। पस अगर यह हदीस सही होती तो बेशक घोड़े की हुर्मत के बारे में मज़बूत दलील थी, लेकिन इसमें बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस के मुक़ाबले की मज़बूती नहीं, जिसमें हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने पालतू गधों के गोश्त को मना फ़रमा दिया और घोड़ों के गोश्त की इजाज़त दी।

एक और हदीस में है कि हमने ख़ैबर वाले दिन घोड़े, ख़च्चर और गधे ज़िबह किये तो हमें हुज़ूर सल्ल. ने ख़च्चर और गधे के गोश्त से तो मना कर दिया लेकिन घोड़े के गोश्त से नहीं रोका। सही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत असमा बिन्ते अबी बक्र रज़ि. से नक़ल है कि हमने मदीना में हुज़ूर सल्ल. की मौजूदगी में घोड़ा ज़िबह किया और उसका गोश्त खाया। पस यह सबसे बड़ी, सबसे मज़बूत और सबसे ज़्यादा सुबूत वाली हदीस है, और यही मज़हब जमहूर उलेमा का है। इमाम मालिक, शाफ़ई, अहमद के सब साथी और अक्सर पहले और बाद के उलेमा यही कहते हैं। वल्लाहु आलम

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि पहले घोड़ों में वहशत और जंगलियत थी, अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के लिये उसे ताबे और फ़रमाँबरदार कर दिया। वहब ने इस्राईली रिवायतों में बयान किया है कि दक्षिणी हवा से घोड़े पैदा होते हैं। वल्लाहु आलम

इन तीनों जानवरों पर सवारी लेने का जवाज़ (जायज़ होना) क़ुरआन के लफ़्ज़ों से साबित है। हुज़ूर सल्ल. को ख़च्चर हदिये में दिया गया था जिस पर आप सवारी करते थे। हाँ यह आपने मना फ़रमाया है कि घोड़ों को गधियों से मिलाया (संभोग कराया) जाये। यह मनाही इसलिये है कि नस्ल ख़त्म न हो जाये। हज़रत दिहया कल्बी रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि अगर आप इजाज़त दें तो हम घोड़े और गधी के मिलाप से ख़च्चर हासिल कर लें और आप उस पर सवार हों? आपने फ़रमाया यह काम वे करते हैं जो इल्म से कोरे हैं।

Maktaba E Ashraf

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ۭ وَلَوْشَآءَ لَهَدٰكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝	और सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुँचता है, और बाज़े रास्ते टेढ़े भी हैं। और अगर वह (यानी ख़ुदा) चाहता तो सबको मक़सूद तक पहुँचा देता। (9)

ع

सीधा और सही रास्ता

दुनियावी राहें तय करने के असबाब बयान फ़रमा कर अब दीनी राह पर चलने के असबाब बयान फ़रमाता है। महसूस चीज़ों से ग़ैर-महसूस चीज़ों की तरफ़ लौटता है। क़ुरआन में इस क़िस्म के अक्सर बयानात मौजूद हैं। हज के सफ़र के तोशे (रास्ते के खाने और ज़रूरत की चीज़ों) का ज़िक्र करके तक़वा के तोशे का जो आख़िरत में काम दे बयान हुआ है, ज़ाहिरी लिबास का ज़िक्र फ़रमाकर परहेज़गारी के लिबास की अच्छाई बयान की है। इसी तरह यहाँ हैवानों (जानवरों) से दुनिया के कठिन रास्ते और दूर-दराज़ के सफ़र तय होने का बयान फ़रमाकर आख़िरत के रास्ते, दीनी राहें बयान फ़रमायीं कि हक़ रास्ता ख़ुदा से मिलाने वाला है। रब की सीधी राह वही है, उसी पर चलो, दूसरे रास्तों पर न लगो वरना बहक जाओगे और सीधी राह से अलग हो जाओगे। फ़रमाया मेरी तरफ़ पहुँचने की सीधी राह यही है जो मैंने बतलाई है, हक़ रास्ता जो ख़ुदा से मिलाने वाला है ख़ुदा ने ज़ाहिर कर दिया है, और वह दीने इस्लाम है, जिसे ख़ुदा ने वाज़ेह (स्पष्ट) कर दिया है और साथ ही दूसरे रास्तों की गुमराही (ग़लत होना) भी बयान फ़रमा दी है।

पस सच्चा रास्ता एक ही है जो अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह सल्ल. की सुन्नत से साबित है, इसके अ़लावा बाक़ी दूसरे रास्ते ग़लत हैं, हक़ से अलग हैं, लोगों की अपनी ईजाद (बनाये हुए) हैं, जैसे यहूदियत, ईसाईयत, मजूसियत वग़ैरह। फिर फ़रमाता है कि हिदायत रब के क़ब्ज़े की चीज़ है, अगर वह चाहे तो पूरी दुनिया के लोगों को नेक राह पर लगा दे, ज़मीन के तमाम रहने वाले मोमिन बन जायें, सब लोग एक ही दीन पर चलने वाले हो जायें, लेकिन यह इख़्तिलाफ़ (मतभेद और भिन्नता) बाक़ी ही रहेगा। मगर जिस पर ख़ुदा रहम फ़रमाये, इसी के लिये उन्हें पैदा किया है, तेरे रब की बात पूरी होकर रहेगी कि जहन्नम और जन्नत इनसान व जिन्नात से भर जाये।

هُوَالَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝	वह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाया, जिससे तुमको पीने को मिलता है और उस (के सबब) से दरख़्त (पैदा होते) हैं जिनमें तुम (अपने मवेशियों को) चरने छोड़ देते हो। (10) (और) उस (पानी) से तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है, बेशक इसमें सोचने वालों के लिए दलील है। (11)

Mahtab E Ashraf

पानी कितनी बड़ी नेमत है

चौपाये और दूसरे जानवरों की पैदाईश का एहसान बयान फ़रमाकर एक और एहसान बयान फ़रमाता है कि ऊपर से पानी वही बरसाता है जिससे तुम खुद फ़ायदा उठाते हो और तुम्हारे फ़ायदे के जानवर भी उससे फ़ायदा उठाते हैं। मीठा साफ़ स्वच्छ, ख़ुशगवार अच्छे ज़ायक़े का पानी तुम्हारे पीने के काम आता है, उसका एहसान न हो तो वह खारी और कड़वा बना दे। उसी बारिश के पानी से पेड़ उगते हैं और वे पेड़ तुम्हारे जानवरों का चारा बनते हैं।

इब्ने माजा की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने सूरज निकलने से पहले जानवर चराने को मना फ़रमाया है। फिर उसकी क़ुदरत देखो कि एक ही पानी से विभिन्न ज़ायक़े के, विभिन्न शक्ल व सूरत के, विभिन्न ख़ुशबू के, तरह-तरह के फल-फूल वह तुम्हारे लिये पैदा करता है। पस ये सब निशानियाँ एक शख़्स को ख़ुदा के एक होने को जानने के लिये काफ़ी हैं। इसी का बयान दूसरी आयतों में इस तरह हुआ है कि आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़, बादलों से पानी बरसाने वाला, उनसे हरे-भरे बाग़ात पैदा करने वाला, जिनके पैदा करने से तुम आजिज़ थे अल्लाह ही है, उसके साथ और कोई माबूद नहीं, फिर भी लोग हक़ से इधर-उधर हो रहे हैं।

और उसने रात और दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारे ताबे "यानी अधीन" किया, और सितारे उसके हुक्म से ताबे हैं। बेशक इसमें अक़्ल रखने वाले लोगों के लिए चन्द दलीलें हैं। (12) और उन चीज़ों को भी जिनको तुम्हारे लिए ज़मीन में इस तौर पर पैदा किया कि उनकी क़िस्में मुख़्तलिफ़ "यानी अलग-अलग और विभिन्न" हैं, बेशक इसमें समझदार लोगों के लिए दलील है। (13)	وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌ ۢ بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۙ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ

बेशुमार दलीलें

अल्लाह तआ़ला अपनी दूसरी नेमतें याद दिलाता है कि रात दिन बराबर तुम्हारे फ़ायदे के लिये आते जाते हैं, सूरज चाँद हरकत और चलने में हैं, सितारे चमक-चमक कर तुम्हें रोशनी पहुँचा रहे हैं। हर एक का एक ऐसा सही अन्दाज़ा ख़ुदा ने मुक़र्रर कर रखा है जिससे वे न इधर उधर हों, न तुम्हें कोई नुक़सान हो। हर एक रब की क़ुदरत में और उसके मातहत है। उसने छह दिन में आसमान व ज़मीन पैदा किये फिर अ़र्श पर मुस्तवी (यानी अपनी शान के मुताबिक़ अ़र्श पर क़ायम) हुआ। दिन रात बराबर एक दूसरे के पीछे आते रहते हैं। सूरज चाँद, सितारे उसके हुक्म से काम में लगे हुए हैं। हर चीज़ के पैदा करने और अपने हुक्म से बनाने का मालिक वही है। वह रब्बुल-आ़लमीन बड़ी बरकतों वाला है। जो सोच समझ रखता हो उसके लिये तो इसमें अल्लाह की क़ुदरत व सल्तनत की बड़ी निशानियाँ हैं। इन आसमानी चीज़ों के बाद

Maktab E Ashraf

अब तुम ज़मीनी चीज़ें देखो कि हैवानात (जानवर), नबातात (पेड़-पौधे वग़ैरह), जमादात (बेजान चीज़ें) वग़ैरह विभिन्न और अनेक रंग व रूप की चीज़ें, बेशुमार फ़ायदों की चीज़ें उसी ने तुम्हारे लिये ज़मीन पर पैदा कर रखी हैं, जो लोग ख़ुदा की नेमतों को सोचें और क़द्र करें उनके लिये तो यह ज़बरदस्त निशानी है।

وَهُوَ الَّذِىْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○ وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ○ وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ○ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ○ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○	और वह ऐसा है कि उसने दरिया को ताबे किया ताकि उसमें से ताज़ा-ताज़ा गोश्त खाओ, और उसमें से गहना निकालो जिसको तुम पहनते हो, और तू कश्तियों को देखता है कि वे पानी चीरती हुई चली जा रही हैं। और ताकि तुम उसकी (यानी ख़ुदा की) रोज़ी तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14) और उसने ज़मीन में पहाड़ रख दिए ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे, और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम मन्ज़िले-मक़सूद तक पहुँच सको। (15) और बहुत-सी निशानियाँ (बनाईं) और तारों से भी लोग रास्ता मालूम करते हैं। (16) सो क्या जो शख़्स पैदा करता हो वह उस जैसा हो जाएगा जो पैदा नहीं कर सकता, फिर क्या तुम नहीं समझते। (17) और अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को गिनने लगो तो न गिन सको। वाक़ई अल्लाह तआला बड़ी मग़फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (18)

ख़ुशकी की नेमतों के बाद पानी के इनामों का तज़किरा

ख़ुदा तआला अपने और एहसानों का ज़िक्र करता है कि समुद्र पर दरिया पर भी उसने तुम्हें क़ाबिज़ कर दिया। बावजूद अपनी गहराई और मौजों के वह तुम्हारे ताबे है। तुम्हारी कश्तियाँ उसमें चलती हैं। इसी तरह उसमें से मछलियाँ निकाल कर उनके तरोताज़ा गोश्त तुम खाते हो। मछली के हलाल होने की हालत में, एहराम की हालत में ज़िन्दा हो या मुर्दा हो, ख़ुदा की तरफ़ से हलाल है, क़ीमती मोती और जवाहिरात उसने तुम्हारे लिये उसमें पैदा किये हैं, जिन्हें तुम आसानी से निकाल लेते हो और ज़ेवर के तौर पर अपने काम में लाते हो। फिर उसमें कश्तियाँ हवाओं को हटाती, पानी को चीरती अपने सीनों के बल पर तैरती चली जाती हैं, सबसे पहले हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम कश्ती में सवार हुए उन्हीं को कश्ती बनाना ख़ुदा तआ़ला ने सिखाया, फिर लोग बराबर बनाते चले आये और उन पर लम्बे-लम्बे समुद्री सफ़र तय होने लगे। इस पार की चीज़ें उस पार और उस पार की चीज़ें इस पार आने जाने लगीं। इसी का बयान इसमें है कि तुम ख़ुदा का फ़ज़्ल यानी अपनी रोज़ी तिजारत के ज़रिये ढूँढो, उसकी नेमत व एहसान का शुक्र अदा करो

और क़द्रदानी करो।

मुस्नद बज़्ज़ार में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने पश्चिमी दरिया से कहा कि मैं अपने बन्दों को तुझमें सवार करने वाला हूँ तू उनके साथ क्या करेगा? उसने कहा डुबो दूँगा। फ़रमाया तेरी तेज़ी तेरे किनारे पर है और उन्हें मैं अपने हाथ में ले चलूँगा, तुझे मैंने ज़ेवर (हीरे-मोती) और शिकार से मेहरूम किया। फिर पूर्वी समुद्र से यही बात कही, उसने कहा मैं अपने हाथों पर उन्हें उठाऊँगा और जिस तरह माँ अपने बच्चे का ख़्याल रखती है मैं उनकी ख़बरगीरी करता रहूँगा। तो उसे अल्लाह तआ़ला ने ज़ेवर भी दिये और शिकार भी। इस हदीस का रावी सिर्फ़ अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह है और वह नाक़ाबिले एतिबार है। अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अ़मर से भी यह रिवायत मरफ़ूअ़न नक़ल की गयी है।

इसके बाद ज़मीन का ज़िक्र हो रहा है कि उसके ठहराने और हिलने से बचाने के लिये उस पर मज़बूत और वज़नी पहाड़ जमा दिये कि उसके हिलने की वजह से उस पर रहने वालों की ज़िन्दगी दुश्वार न हो जाये, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَالْجِبَالَ اَرْسٰهَا.

और पहाड़ों को उस पर क़ायम कर दिया।

हज़रत हसन रह. का क़ौल है कि जब अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन बनाई तो वह हिल रही थी, यहाँ तक कि फ़रिश्तों ने कहा इस पर तो कोई ठहर ही नहीं सकता। सुबह देखते हैं कि पहाड़ इस पर गाड़ दिये गये और इसका हिलना रुक गया है। पस फ़रिश्तों को यह भी न मालूम हो सका कि पहाड़ किस चीज़ से पैदा किये गये। क़ैस बिन उबादा से भी यही नक़ल किया गया है।

हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि ज़मीन ने कहा- तू मुझ पर इनसानों को बसाता है जो मेरी पीठ पर गुनाह करेंगे और बुराई फैलायेंगे। वह काँपने लगी, पस अल्लाह तआ़ला ने पहाड़ों को उस पर जमा दिया, जिन्हें तुम देख रहे हो, और बाज़ को देखते ही नहीं हो। यह भी उसका करम है कि उसने हर तरफ़ नहरें चश्मे और दरिया बहा दिये। कोई तेज़ है कोई धीमा, कोई लम्बा है कोई छोटा, कभी पानी कम है कभी ज़्यादा, कभी बिल्कुल सूखा पड़ा है। पहाड़ों पर, जंगलों में, रेत में, पत्थरों में बराबर ये चश्मे बहते रहते हैं और रेल-पेल कर देते हैं। यह सब उसका फ़ज़्ल व करम, लुत्फ़ व रहम है, न उसके सिवा कोई परवर्दिगार न उसके सिवा कोई इबादत के लायक़, वही रब है वही माबूद है। उसने रास्ते बना दिये हैं। ख़ुश्की में, पानी में, पहाड़ में, जंगल में, बस्ती में, उजाड़ में, हर जगह उसके फ़ज़्ल व करम से रास्ते मौजूद हैं, कि इधर से उधर लोग जा-आ सकें। कोई तंग रास्ता है कोई खुला हुआ, कोई आसान कोई सख़्त। और भी निशानियाँ उसने मुक़र्रर कर दीं, जैसे पहाड़ हैं, टीले हैं वग़ैरह वग़ैरह, जिनसे तरी ख़ुश्की के मुसाफ़िर और रास्ता चलने वाले रास्ता मालूम कर लेते हैं और भटके हुए सीधे रास्ते पर लग जाते हैं।

सितारे भी रहनुमाई के लिये हैं, रात के अन्धेरे में उन्हीं से रास्ता और दिशा मालूम होती है। मालिक से मन्क़ूल है कि 'नुजूम' (सितारों) से मुराद पहाड़ हैं। फिर अपनी बड़ाई व किब्रियाई जताता है और फ़रमाता है कि इबादत के लायक़ उसके सिवा और कोई नहीं। ख़ुदा के सिवा जिन-जिनकी लोग इबादत करते हैं वे बिल्कुल बेबस हैं, किसी चीज़ के पैदा करने की उन्हें ताक़त नहीं, और ख़ुदा तआ़ला सबका ख़ालिक़ है। ज़ाहिर है कि ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) और ग़ैर-ख़ालिक़ (पैदा न करने वाला) बराबर नहीं। फिर दोनों की इबादत करना किस क़द्र सितम है। इतना भी बेहोश हो जाना इनसानियत की शान के

Maktaba E Ashraf

Maktab E Ashraf

मुनासिब नहीं।

फिर अपनी नेमतों की अधिकता और बोहतात बयान फ़रमाता है कि तुम्हारी गिनती में भी तो नहीं आ सकतीं इतनी नेमतें मैंने तुम्हें दे रखी हैं। यह भी तुम्हारी ताक़त से बाहर है कि मेरी नेमतों की गिनती कर सको। अल्लाह तआ़ला तुम्हारी ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमाता रहता है। अगर अपनी तमाम की तमाम नेमतों का शुक्र भी तुमसे तलब करे तो तुम्हारे बस का नहीं। अगर उन नेमतों के बदले तुमसे चाहे तो तुम्हारी ताक़त से ख़ारिज है। सुनो! अगर वह तुम सबको अ़ज़ाब करे तो भी वह ज़ुल्म नहीं होगा, लेकिन ग़फ़ूर व रहीम ख़ुदा तुम्हारी बुराईयों को माफ़ फ़रमा देता है, तुम्हारी कोताहियों को नज़र-अन्दाज़ कर देता है। तौबा, अल्लाह की तरफ़ रुजू, इताअ़त और उसकी रज़ा की तलब के साथ जो गुनाह हो जायें उनसे चश्म-पोशी कर लेता है, बड़ा ही रहीम है। तौबा के बाद अ़ज़ाब नहीं करता।

और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे छुपे और ज़ाहिरी हालात सब जानते हैं। (19) और ख़ुदा के अ़लावा जिनकी ये लोग इबादत करते हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद ही मख़्लूक़ "यानी पैदा किए हुए" हैं। (20) मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, और उनको ख़बर नहीं कि (मुर्दे) कब उठाए जाएँगे। (21)	وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝

ع ٢ / ٨

ख़ालिस बेवक़ूफ़ी

छुपा-खुला सब कुछ अल्लाह तआ़ला जानता है, दोनों उस पर बराबर हैं, हर आ़मिल (अ़मल करने वाले) को उसके अ़मल का बदला क़ियामत के दिन देगा, नेकों को जज़ा बदों को सज़ा। जिन बातिल और झूठे माबूदों से लोग अपनी हाजतें तलब करते हैं वे किसी चीज़ के ख़ालिक़ नहीं, बल्कि वे ख़ुद मख़्लूक़ (पैदा हुए) हैं। जैसा कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था कि:

اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

तुम उन्हें पूजते हो जिन्हें ख़ुद बनाते हो। दर हक़ीक़त तुम्हारा और तुम्हारे कामों का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) सिर्फ़ अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला है। बल्कि तुम्हारे माबूद जो ख़ुदा के अ़लावा हैं बेजान चीज़ें हैं, बेरूह चीज़ें हैं, सुनते देखते और शऊर नहीं रखते। उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि क़ियामत कब होगी, तो उनसे नफ़े और सवाब की उम्मीद कैसे रखते हो? यह तो उस ख़ुदा से होनी चाहिये जो हर चीज़ का आ़लिम और तमाम कायनात का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) है।

तुम्हारा माबूद (-ए-बर्हक़) एक ही माबूद है, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल मुन्किर हो रहे हैं और वे तकब्बुर	اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ

Maktab E Ashraf

مُسْتَكْبِرُوْنَ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝	करते हैं। (22) ज़रूरी बात है कि अल्लाह तआ़ला उनके छुपे व ज़ाहिरी सब हालात जानते हैं, यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करते। (23)

गुरूर और घमंड शोभा नहीं देता

अल्लाह ही माबूदे बर्हक़ है, उसके सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं। वह अकेला, तन्हा और सबसे बेनियाज़ है। काफ़िरों के दिल भली बात से इनकारी हैं, वे इस हक़ कलिमे को सुनकर सख़्त हैरान हो जाते हैं, अल्लाह वाहिद का ज़िक्र सुनकर उनके दिल मुर्झा जाते हैं, हाँ औरों का ज़िक्र हो तो खिल जाते हैं। ये ख़ुदा की इबादत से घमंड और गुरूर करते हैं। न उनके दिल में ईमान, न इबादत के आ़दी। ऐसे लोग ज़िल्लत के साथ जहन्नम में दाख़िल होंगे। यक़ीनन ख़ुदा तआ़ला हर छुपे-खुले का आ़लिम (जानने वाला) है, हर अ़मल पर जज़ा (अच्छा बदला) और सज़ा देगा, वह मग़रूर (घमंडी) लोगों से बेज़ार है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ۝ ع	और जब उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल फ़रमाई है, तो कहते हैं कि वे तो महज़ बेसनद बातें हैं जो पहलों से चली आ रही हैं। (24) (नतीजा इसका यह होगा) कि उन लोगों को क़ियामत के दिन अपने गुनाहों का पूरा बोझ और जिनको ये लोग बेइल्मी से गुमराह कर रहे थे उन (के गुनाहों) का भी कुछ बोझ अपने ऊपर उठाना पड़ेगा। ख़ूब याद रखो जिस (गुनाह) को ये अपने ऊपर लाद रहे हैं वह बुरा (बोझ) है। (25)

काफ़िरों की बकवास

उन क़ुरआन के इनकारियों से जब सवाल किया जाये कि कलामुल्लाह (क़ुरआन पाक) में क्या नाज़िल हुआ? तो असल जवाब से हटकर बक देते हैं कि सिवाय गुज़रे हुए अफ़सानों के क्या रखा है? वही लिख लिये हैं और सुबह शाम दोहरा रहे हैं। पस रसूल पर बोहतान बाँधते हैं। कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ। दर असल किसी बात पर जम ही नहीं सकते, और यह बहुत बड़ी दलील है उनके तमाम अक़्वाल के बातिल होने की। हर एक जो हक़ से हट जाये वह यूँही मारा-मारा बहका-बहका फिरता है।

कभी हुज़ूर सल्ल. को जादूगर कहते, कभी शायर, कभी काहिन (नजूमी), कभी मजनूँ। फिर उनके बूढ़े गुरु वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी ने उन्हें बड़े सोच-विचार के बाद कहा कि सब मिलकर इस कलाम (क़ुरआन पाक) को दिल पर असर करने वाला जादू कहा करो। उनके इस क़ौल का नतीजा यह होगा और हमने उन्हें

Maktab E Ashraf

इस राह पर इसलिये लगा दिया है कि ये अपने पूरे गुनाहों के साथ उनके भी कुछ गुनाह अपने ऊपर लादें जो उनके मुक़ल्लिद (पैरवी करने वाले) हैं और उनके पीछे-पीछे चल रहे हैं। हदीस शरीफ़ में हिदायत की दावत देने वाले को अपने अज्र के साथ अपने पैरोकार और बात मानने वाले लोगों का अज्र भी मिलता है, लेकिन उनके अज्र कम नहीं होते। और बुराई की तरफ़ बुलाने वालों को उनके मानने वालों के गुनाह भी मिलते हैं, लेकिन मानने वालों के गुनाह कम होकर नहीं। क़ुरआने करीम की एक और आयत में है:

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ .....الخ.

ये अपने गुनाहों के बोझ के साथ ही साथ और बोझ भी उठायेंगे, और उनके बोहतान बाँधने का सवाल उनसे क़ियामत के दिन होना ज़रूरी है। पस मानने वालों के बोझ अगरचे उनकी गर्दनों पर हैं लेकिन वे भी हल्के नहीं होंगे।

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ○ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِ يَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ○

जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उन्होंने (बड़ी-बड़ी) तदबीरें कीं, सो अल्लाह तआला ने उनका (बना-बनाया) घर जड़-बुनियाद से ढहा दिया, फिर ऊपर से उनपर छत आ पड़ी और उनपर अज़ाब ऐसी तरह आया कि उनको ख़्याल भी न था। (26) फिर क़ियामत के दिन वह (यानी अल्लाह तआला) उनको रुस्वा करेगा और यह कहेगा कि मेरे शरीक जिनके बारे में तुम लड़ा-झगड़ा करते थे, कहाँ हैं? जानने वाले कहेंगे कि आज काफ़िरों पर पूरी रुस्वाई और अज़ाब है। (27)

पिछली उम्मतें

बाज़ तो कहते हैं कि इस मक्कार से मुराद नमरूद है, जिसने बालाख़ाना (चौबारा) तैयार किया था। सबसे पहले सबसे बड़ी सरकशी उसी ने ज़मीन में की, ख़ुदा तआ़ला ने उसे हलाक करने को एक मच्छर भेजा जो उसके नथुने में घुस गया और चार सौ साल तक उसका भेजा चाटता रहा, इस मुद्दत में उसे उस वक़्त थोड़ा सा सुकून मालूम होता था जब उसके सर पर हथौड़े मारे जायें। ख़ूब दोनों हाथों के ज़ोर से उसके सर पर हथौड़े पड़ते रहते थे। उसने चार सौ साल तक हुकूमत भी की थी और ख़ूब फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) फैलाया था।

बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद बुख़्ते-नस्सर है, यह भी बड़ा मक्कार था, लेकिन ख़ुदा को कोई क्या नुक़सान पहुँचा सकता है, चाहे उसका मक्र पहाड़ों को भी अपनी जगह से सरका देने वाला हो। बाज़ कहते

Maktab E Ashraf

हैं कि यह तो काफ़िरों और मुश्रिकों ने ख़ुदा के साथ जो ग़ैरों की इबादत की उनके अ़मल के बरबादी की मिसाल है, जैसे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया थाः

وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا.

उन काफ़िरों ने बड़ा ही मक्र किया।

हर हीले और तरीक़े से लोगों को गुमराह किया, हर वसीले से उन्हें शिर्क पर आमादा किया। चुनाँचे उनके हीले क़ियामत के दिन उनसे कहेंगे कि तुम्हारा रात दिन का मक्र कि हमसे कुफ़्र व शिर्क को कहना, उनकी इमारत की जड़ और नींव से अ़ज़ाबे ख़ुदा आया, यानी बिल्कुल ही खो दिया, असल से काट दिया, जैसे फ़रमान है- जब लड़ाई की आग भड़काना चाहते हैं तो अल्लाह तआ़ला उसे बुझा देता है। एक और जगह फ़रमाया- उनके पास अल्लाह ऐसी जगह से आया जहाँ का उन्हें ख़्याल भी न था, उनके दिलों में ऐसा रौब डाल दिया कि ये अपने हाथों अपने मकानात तबाह करने लगे। और दूसरी तरफ़ से मोमिनों के हाथों मिटे। अ़क़्लमन्दो! सबक़ हासिल करो।

यहाँ फ़रमाया कि अल्लाह उनकी इमारत की नींव से आ गया और उन पर ऊपर से छत आ पड़ी और ऐसी जगह से उन पर अ़ज़ाब उतर आया जिसका उन्हें अन्दाज़ा भी न था। क़ियामत के दिन की रुस्वाई और फ़ज़ीहत अभी बाक़ी है। उस वक़्त छुपा हुआ सब खुल जायेगा। सारा मामला सामने होगा। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर ग़द्दार के लिये उसके पास ही झण्डा गाड़ दिया जायेगा जो उसके ग़दर (धोखे और मक्कारी) के मुताबिक़ होगा, और मशहूर कर दिया जायेगा कि फ़ुलाँ का यह ग़दर है, जो फ़ुलाँ का लड़का था, इसी तरह उन लोगों को भी मैदाने मेहशर में सबके सामने रुस्वा किया जायेगा। उनसे उनका परवर्दिगार डाँट-डपट कर दरियाफ़्त फ़रमायेगा कि जिनकी हिमायत में तुम मेरे बन्दों से उलझते रहते थे वे आज कहाँ हैं? तुम्हारी मदद क्यों नहीं करते? आज बेसहारा और बेमददगार क्यों हो? ये चुप हो जायेंगे क्या जवाब दें लाचार हो जायेंगे। कौनसी झूठी दलील पेश करें? उस वक़्त उलेमा-ए-किराम जो दुनिया और आख़िरत में ख़ुदा के और मख़्लूक़ के पास इज़्ज़त रखते हैं जवाब देंगे कि रुस्वाई और अ़ज़ाब आज काफ़िरों को घेरे हुए हैं और उनके झूठे माबूद उनसे मुँह फेरे हुए हैं।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ۭ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ○	जिनकी जान फ़रिश्तों ने कुफ़्र की हालत में निकाली थी, फिर वे (काफ़िर) लोग सुलह का (पैग़ाम) डालेंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे। क्यों नहीं? बेशक अल्लाह को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। (28) सो जहन्नम के दरवाज़ों में (से) दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा-हमेशा को रहो। ग़र्ज़ कि तकब्बुर करने वालों का (वह) बुरा ठिकाना है। (29)

काफ़िर लोग और मौत के वक़्त उनकी हालत

मुश्रिकों की जान निकलने के वक़्त का हाल बयान हो रहा है कि जब फ़रिश्ते उनकी जान लेने के

Maktaba Ashraf

लिये आते हैं तो ये उस वक़्त सुनने, अ़मल करने और मान लेने का इक़रार करते हैं। साथ ही अपने करतूत छुपाते हुए अपनी बेगुनाही बयान करते हैं। क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने भी क़समें खाकर अपना मुश्रिक न होना बयान करेंगे, जिस तरह दुनिया में अपनी बेगुनाही पर लोगों के सामने झूठी क़समें खाते थे। उन्हें जवाब मिलेगा कि तुम झूठे हो, बुरे आमाल जी खोलकर कर चुके हो, अल्लाह ग़ाफ़िल नहीं जो तुम्हारी बातों में आ जाये, हर एक अ़मल उस पर रोशन है, अब अपने करतूतों का ख़मियाज़ा भुगतो और जहन्नम के दरवाज़ों से जाकर हमेशा उसी बुरी जगह में पड़े रहो। मक़ाम बुरा, मकान बुरा, ज़िल्लत व रुस्वाई वाला, यह है बदला ख़ुदा की आयतों से तकब्बुर करने और उसके रसूलों की बात मानने से जी चुराने का।

मरते ही उनकी रूहें जहन्नम-रसीद हुईं और जिस्मों पर क़ब्रों में जहन्नम की गर्मी और उसकी लपक आने लगी। क़ियामत के दिन रूहें जिस्मों से मिलकर जहन्नम की आग में गयीं। अब न तो मौत और अ़ज़ाब में कोई कमी। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

اَلنَّارُيُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّاوَّعَشِيًّا...... الخ.

ये दोज़ख़ की आग के सामने हर सुबह शाम लाये जाते हैं, क़ियामत के क़ायम होते ही कहा जायेगा कि ऐ आले फ़िरऔ़न! तुम बहुत सख़्त अ़ज़ाब में चले जाओ।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَا ذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ط قَالُوْا خَيْرًا ط لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ط وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ط وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ط كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ لا يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ لا ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝	और जो लोग (शिर्क से) बचते हैं उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल फ़रमाई है, वे कहते हैं कि बड़ी ख़ैर नाज़िल फ़रमाई है। जिन लोगों ने नेक काम किए हैं उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत की दुनिया तो (और ज़्यादा) बेहतर है, और वाक़ई (वह शिर्क से) बचने वालों का अच्छा घर है। (30) (वह घर) हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें ये दाख़िल होंगे, उन (बाग़ों) के नीचे से नहरें जारी होंगी। जिस चीज़ को उनका जी चाहेगा वहाँ उनको मिलेगी। इसी तरह का बदला अल्लाह (सब शिर्क से) बचने वालों को देगा। (31) जिनकी रूह फ़रिश्ते इस हालत में निकालते हैं कि वे पाक होते हैं और कहते जाते हैं, अस्सलामु अलैकुम, तुम जन्नत में चले जाना अपने आमाल के सबब। (32)

मोमिन और उसकी मौत की हालत

बुरे लोगों के हालात बयान फ़रमाकर नेकों के हालात जो उनके बिल्कुल उलट और विपरीत हैं बयान फ़रमा रहा है। बुरे लोगों का जवाब तो यह था कि ख़ुदा की उतारी हुई किताब सिर्फ़ अगलों के क़िस्से

Maktab E Ashraf

कहानियों की नक़ल है, लेकिन ये नेक लोग जवाब देते हैं कि वह सरासर बरकत व रहमत है। जो भी उसे माने और उस पर अ़मल करे वह बरकत व रहमत से मालामाल हो जाये। फिर ख़बर देता है कि मैं अपने रसूलों से वादा कर चुका हूँ कि नेकों को दोनों जहान की ख़ुशी हासिल होगी। जैसा कि फ़रमाया है कि जो शख़्स नेक अ़मल करे चाहे मर्द हो चाहे औ़रत, हाँ यह ज़रूरी है कि हो मोमिन, तो हम उसे बड़ी पाक ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेंगे और उसके बेहतरीन आमाल का बदला भी ज़रूर देंगे, दोनों जहान में वह जज़ा (सवाब और नेक बदला) पायेगा। याद रहे कि आख़िरत का घर दुनिया के घर से बहुत ही अफ़ज़ल व अच्छा है, वहाँ की जज़ा (बदला) निहायत आला और हमेशा रहने वाला है। जैसे क़ारून के माल की तमन्ना करने वालों से उलेमा-ए-किराम ने फ़रमाया था कि ख़ुदा का सवाब बेहतर है.....। क़ुरआन फ़रमाता है:

وَمَاعِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ.

ख़ुदा के पास की चीज़ें नेक काम करने वालों के लिये बहुत आला (अच्छी और उम्दा) हैं।

एक और जगह है कि आख़िरत ख़ैर और बाक़ी रहने वाली है। अपने नबी सल्ल. से ख़िताब करके फ़रमाया- तेरे लिये आख़िरत दुनिया से आला (बेहतर और अच्छी) है। फिर फ़रमाता है कि आख़िरत का घर मुत्तक़ियों के लिये बहुत ही अच्छा है। 'जन्नते अ़दन' से मुराद 'मुत्तक़ियों का घर' है यानी उनके लिये आख़िरत में जन्नते अ़दन है, जहाँ वे रहेंगे, जिसके पेड़ों और महलों के नीचे से बराबर चश्में हर वक़्त जारी हैं, वे जो चाहेंगे पायेंगे। आँखों की हर ठंडक मौजूद होगी और वह भी हमेशगी वाली। हदीस में है कि जन्नत वाले बैठे होंगे, सर पर बादल उठेगा और ये जो ख़्वाहिश करेंगे वह उन पर बरसायेगा, यहाँ तक कि कोई कहेगा इससे हम-उम्र कुंवारी लड़कियाँ बरसें तो यह भी होगा।

परहेज़गार तक़वे वाले लोगों के बदले अल्लाह ऐसे ही देता है जो ईमान वाले हों, डरने वाले हों और नेक अ़मल करने वाले हों। उनके इन्तिक़ाल के वक़्त ये शिर्क की गंदगी से पाक होते हैं, फ़रिश्ते आते हैं, सलाम करते हैं, जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ..... الخ.

जिन लोगों ने अल्लाह को रब माना, फिर इस पर जमे रहे, उनके पास फ़रिश्ते आते हैं और कहते हैं तुम डर, ग़म मत रखो, जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनो, जिसका तुमसे वादा था। हम दुनिया व आख़िरत में तुम्हारे वाली हैं, जो तुम चाहोगे पाओगे, जो माँगोगे मिलेगा। तुम तो अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम के मेहमान हो। इस मज़मून की हदीसें हम आयतः

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ...... الخ.

(यानी सूरः इब्राहीम की आयत 27) की तफ़सीर में बयान कर चुके हैं।

क्या ये लोग इसी बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या आपके परवर्दिगार का हुक्म आ जाए। ऐसा ही उनसे पहले जो लोग थे उन्होंने भी किया था, और उनपर अल्लाह ने ज़रा भी ज़ुल्म न किया लेकिन	هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ

Maktab E Ashraf

كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ○ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَاعَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّاكَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ○	वे आप ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे। (33) आख़िर उनको उनके बुरे आमाल की सज़ाएँ मिलीं और जिस (अ़ज़ाब) पर वे हँसते थे उनको उसी ने आन घेरा। (34)

ع ١٠

इन्तिज़ार और किस चीज़ का इन्तिज़ार!

अल्लाह तबारक व तआ़ला मुश्रिकों को डाँटते हुए फ़रमाता है कि इन्हें तो उन फ़रिश्तों का इन्तिज़ार है जो उनकी रूह क़ब्ज़ करने के लिये आयें, या क़ियामत का इन्तिज़ार है और उसकी हौलनाकियों और घबराहटों का। इन जैसे इनसे पहले के मुश्रिकों का भी यही तरीक़ा रहा, यहाँ तक कि उन पर अ़ज़ाबे ख़ुदा आ पड़ा। अल्लाह तआ़ला ने अपनी हुज्जत पूरी करके, उनके उ़ज़्र ख़त्म करके, किताबें उतारकर, रसूल भेजकर फिर भी उनके इनकार के इसरार पर उन पर अ़ज़ाब मुसल्लत किये। अल्लाह के रसूलों की धमकियों को मज़ाक़ में उड़ाने के वबाल में घिर गये। ख़ुदा ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि ख़ुद उन्होंने अपने को तबाह किया। इसी लिये उनसे क़ियामत के दिन कहा जायेगा कि यह है वह आग जिसे तुम झुठलाते रहे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْشَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَاحَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّاالْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ○ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ○ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى	और मुश्रिक लोग (यूँ) कहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो उसके सिवा किसी चीज़ की न हम इबादत करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम उसके (हुक्म के) बग़ैर किसी चीज़ को हराम कह सकते। जो लोग उनसे पहले हुए हैं ऐसी ही हरकत उन्होंने भी की थी, सो पैग़म्बरों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। (35) और हम हर उम्मत में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते रहे हैं कि तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो और शैतान से बचते रहो। सो उनमें बाज़े वे हुए हैं कि जिनको अल्लाह तआ़ला ने हिदायत दी, और बाज़े उनमें वे हुए जिनपर गुमराही साबित हो गई। तो (अच्छा) ज़मीन में चलो-फिरो, देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ। (36)

उनके सही रास्ते पर आने की अगर आपको तमन्ना हो तो अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं करता जिसको गुमराह करता है, और उनका कोई हिमायती न होगा। (37)	هُدٰهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ۝

Mahtab E Ashraf

एक मुकम्मल उज़्र

मुश्रिकों की हिमाक़त (बेवक़ूफ़ी) देखिये- गुनाह करें, शिर्क पर जमे हों, हलाल को हराम करें, जैसे जानवरों को अपने ख़ुदाओं के नाम करना और तक़दीर को हुज्जत (दलील) बनायें और कहें कि अगर अल्लाह को हमारे और हमारे बड़ों के ये काम बुरे लगते तो हमें इसी वक़्त सज़ा मिलती। उन्हें जवाब दिया जाता है कि यह हमारा दस्तूर नहीं, हमें तुम्हारे ये काम सख़्त नापसन्द हैं और इनकी नापसन्दीदगी का इज़हार हम अपने सच्चे पैग़म्बरों की ज़बानी कर चुके। सख़्त ताकीदी तौर पर तुम्हें इनसे रोक चुके, हर बस्ती में हर जमाअ़त हर शहर में अपने पैग़म्बर भेजे, सबने अपना फ़र्ज़ अदा किया। ख़ुदा के बन्दों में ख़ुदा के अहकाम की तब्लीग़ मुकम्मल कर दी। सबसे कह दिया कि एक अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा दूसरे को न पूजो, सबसे पहले जब शिर्क का ज़ुहूर ज़मीन पर हुआ अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को नुबुव्वत देकर भेजा और सबसे आख़िर में ख़त्मुल-मुर्सलीन का लक़ब देकर रहमतुल्-लिल्आ़लमीन सल्ल. को अपना नबी बनाया, जिनकी दावत तमाम इनसानों व जिन्नात के लिये, ज़मीन के इस कोने से उस कोने तक थी, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِىْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ.

यानी तुझसे पहले हमने जितने रसूल भेजे सबकी तरफ़ 'वही' नाज़िल फ़रमाई कि मेरे सिवा कोई और माबूद नहीं, पस तुम सिर्फ़ मेरी इबादत करो।

एक और आयत में है- तुझसे पहले के रसूलों से पूछ ले कि क्या हमने उनके लिये सिवाय अपने और माबूद मुक़र्रर किये थे, जिनकी वे इबादत करते हों? यहाँ भी फ़रमाया कि हर उम्मत के रसूलों की दावत तौहीद (यानी अल्लाह के एक होने) की तालीम और शिर्क से बेज़ारी ही रही। पस मुश्रिकों को अपने शिर्क पर ख़ुदा की रज़ा की दलील लाना कैसे मुनासिब मालूम होता है? ख़ुदा की रज़ा उसकी शरीअ़त से मालूम होती है, वह शुरू ही से शिर्क की जड़ उखाड़ना और तौहीद की मज़बूती है। तमाम रसूलों की ज़बानी उसने यही पैग़ाम भेजा। हाँ उन्हें शिर्क करते हुए छोड़ देना यह और बात है जो क़ाबिले हुज्जत नहीं, ख़ुदा ने जहन्नम और जहन्नमी भी तो बनाये हैं, शैतान काफ़िर सब उसी के पैदा किये हुए हैं, वह अपने बन्दों से उनके कुफ़्र पर राज़ी नहीं। इसमें भी उसकी कामिल हिक्मत और पूरी हुज्जत है।

फिर फ़रमाता है कि रसूलों को आगाह कर देने के बाद दुनियावी सज़ायें भी काफ़िरों और मुश्रिकों पर आयीं। बाज़ को हिदायत भी हुई, बाज़ अपनी गुमराही में ही बहकते रहे। तुम रसूलों के मुख़ालिफ़ों का ख़ुदा के साथ शिर्क करने वालों का अन्जाम ज़मीन में चल-फिरकर ख़ुद देख लो। पहले के वाक़िआ़त का जिन्हें इल्म है, उनसे मालूम कर लो कि किस तरह अ़ज़ाबे ख़ुदा ने मुश्रिकों को ग़ारत किया। इस वक़्त के काफ़िरों के लिये उन काफ़िरों में मिसालें और इबरतें मौजूद हैं। देख लो ख़ुदा के इनकार का नतीजा कितना घातक

और तबाहकुन हुआ।

फिर अपने रसूल सल्ल. से फ़रमाता है कि अगरचे आप उनकी हिदायत के कैसे ही हरीस (चाहने और तमन्ना करने वाले) हों, लेकिन बेफ़ायदा है। अल्लाह उनकी गुमराहियों की वजह से उन्हें अपनी रहमत के दरवाज़े से दूर डाल चुका है। जैसे फ़रमान है:

وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا.

जिसे अल्लाह ही फ़ितने (आज़माईश) में डालना चाहे तू उसे कुछ भी नफ़ा नहीं पहुँचा सकता।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था- अगर अल्लाह का इरादा तुम्हें बहकाने का है तो मेरी नसीहत और ख़ैरख़्वाही (यानी तुम्हारा भला चाहना) तुम्हारे लिये बिल्कुल बेसूद है। इस आयत में भी फ़रमाता है कि ख़ुदा के गुमराह किये हुए को कोई सही रास्ते पर नहीं ला सकता। जैसे एक और आयत में है कि जिसे अल्लाह तआ़ला गुमराह करे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता। वे तो दिन-ब-दिन अपनी सरकशी और गुमराही में बढ़ते रहते हैं। अल्लाह फ़रमाता है:

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَايُؤْمِنُوْنَ..... الخ.

जिन पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है, उन्हें ईमान नसीब नहीं होगा चाहे तमाम निशानियाँ उनके पास आ जायें, यहाँ तक कि वे दर्दनाक अ़ज़ाब का मुँह देख लें।

यह है अल्लाह की शान और उसकी तक़दीर। इसलिये कि जो वह चाहता है वह होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता। पस फ़रमाता है कि वह अपने गुमराह किये हुए को राह नहीं दिखाता, न कोई और उसकी रहबरी कर सकता है, न कोई उसकी मदद के लिये उठ सकता है, कि अ़ज़ाबे ख़ुदा से बचा सके। हर तरह का इख़्तियार व क़ुदरत अल्लाह ही का है, वह रब्बुल-आ़लमीन है, उसकी ज़ात बरकत वाली है, वही सच्चा माबूद है।

और ये लोग बड़े ज़ोर लगा-लगाकर अल्लाह की क़समें खाते हैं कि जो मर जाता है अल्लाह उसे दोबारा ज़िन्दा न करेगा। क्यों नहीं (ज़िन्दा करेगा)। इस वायदे को तो उसने (यानी अल्लाह तआ़ला ने) अपने ज़िम्मे लाज़िम कर रखा है, लेकिन अक्सर लोग यक़ीन नहीं लाते। (38) ताकि जिस चीज़ में ये लोग इख़्तिलाफ़ किया करते थे उनके सामने उसको ज़ाहिर कर दे, और ताकि काफ़िर लोग यक़ीन कर लें कि वाक़ई वही झूठे थे। (39) हम जिस चीज़ को चाहते हैं, तो हमारा उससे इतना ही कहना होता है कि तू हो जा, पस वह हो जाती है। (40)	وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَايَعْلَمُوْنَ ۝ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِىْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ۝ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَىْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝

ع

Maktab E Ashraf

क़ियामत और दोबारा ज़िन्दा होने का इनकार

चूँकि काफ़िर क़ियामत के क़ायल नहीं, इसलिये वे दूसरों को भी इस अ़क़ीदे से हटाने के लिये पूरी कोशिश करते हैं। वे ईमान बेचकर ख़ुदा की ताकीदी क़समें खाकर कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला मुर्दों को ज़िन्दा न करेगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि क़ियामत ज़रूर आयेगी, अल्लाह का यह वादा बर्हक़ है, लेकिन अक्सर लोग अपनी जहालत और अज्ञानता के सबब रसूलों का विरोध करते हैं, ख़ुदा की बातों को नहीं मानते और कुफ़्र के गड्ढे में गिरते हैं।

फिर क़ियामत के आने और जिस्मों के दोबारा उठने की बाज़ हिक्मतें ज़ाहिर फ़रमाता है, जिनमें से एक यह है कि दुनियावी झगड़ों और विवादों में हक़ क्या था वह ज़ाहिर हो जाये, बुरों को सज़ा और नेकों को जज़ा (अच्छा बदला) मिले। काफ़िरों का अपने अ़क़ीदे में अपने क़ौल में अपनी क़सम में झूठा होना खुल जाये। उस वक़्त सब देख लेंगे कि उन्हें धक्के देकर जहन्नम में झोंका जायेगा और कहा जायेगा कि यही है वह जहन्नम जिसका तुम इनकार करते रहे। अब बतलाओ यह जादू है या तुम अंधे हो? इसमें अब पड़े रहो, बरदाश्त से रहो या हाय-वाय करो सब बराबर है। आमाल का बदला भुगतना ज़रूरी है।

फिर अपनी बेहिसाब क़ुदरत का बयान फ़रमाता है कि वह जो चाहे उस पर क़ादिर है, कोई बात उसे आ़जिज़ नहीं कर सकती, कोई चीज़ उसके इख़्तियार से बाहर नहीं, वह जो करना चाहे फ़रमा देता है कि हो जा, उसी वक़्त वह काम हो जाता है। क़ियामत भी उसके फ़रमान का अ़मल है। इधर कहा हो जा उधर हो गया। उसे तो दोबारा कहने या ताकीद करने की भी ज़रूरत नहीं, उसके इरादे से मुराद अलग नहीं, कोई नहीं जो उसके हुक्म के ख़िलाफ़ कर सके, उसकी आज्ञा का पालन न करे, उसके हुक्म के ख़िलाफ़ ज़बान हिला सके, वह वाहिद व क़ह्हार है, वह अ़ज़मतों और इज़्ज़तों वाला है। सल्तनत और ताक़त वाला है, उसके सिवा न कोई माबूद न हाकिम न रब न क़ादिर।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है- इनसान मुझे गालियाँ देता है उसे ऐसा नहीं चाहिये था। वह मुझे झुठला रहा है हालाँकि यह भी उसे लायक़ न था। उसका झुठलाना तो यह है कि ताकीदी क़समें खाकर कहता है कि ख़ुदा मुर्दों को फिर ज़िन्दा न करेगा, मैं कहता हूँ यक़ीनन ज़िन्दा होंगे। यह सच्चा वादा है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। और उसका मुझे गालियाँ देना यह है कि कहता है- ख़ुदा तीन में का तीसरा है, हालाँकि मैं अहद (एक) हूँ, मैं अल्लाह हूँ, मैं बेनियाज़ हूँ, जिसका हम-जिन्स कोई और नहीं। इब्ने अबी हातिम में तो यह हदीस मरफ़ूअ़न रिवायत है, बुख़ारी व मुस्लिम में दूसरे लफ़्ज़ों के साथ मरफ़ूअ़न रिवायत भी आयी है।

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِى اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ط وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝	और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन छोड़ दिया उसके बाद कि उनपर ज़ुल्म किया गया, हम उनको दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे, और आख़िरत का सवाब तो कई दर्जे बड़ा है, काश उनको ख़बर होती। (41) वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (42)

Maktab E Ashraf

हिजरत और उसका बेइन्तिहा अज्र

जो लोग महज़ खुदा के लिये अपने वतन को छोड़कर, दोस्त अहबाब, रिश्ते, कुनबे, तिजारत को नामे खुदा पर छोड़कर दीने खुदा की पासबानी में हिजरत कर जाते हैं उनके अज्र बयान हो रहे हैं, कि दोनों जहान में ये खुदा के यहाँ इज़्ज़त व सम्मान वाले बन्दे हैं। बहुत मुम्किन है कि इसका सबबे नुज़ूल हब्शा के मुहाजिर हों, जो मक्का में मुश्रिकों की यातनायें सहने के बाद हिजरत करके हब्शा चले गये, कि आज़ादी से दीने खुदा पर अ़मल करें। उनमें कुछ लोग ये थे- हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि., आपके साथ आपकी बीवी साहिबा हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा भी थीं जो रसूलुल्लाह सल्ल. की बेटी थीं, और हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि., जो रसूलुल्लाह सल्ल. के चचाज़ाद भाई थे, और हज़रत अबू सलमा बिन अ़ब्दुल-असद रज़ि. वग़ैरह, क़रीब क़रीब अस्सी आदमी थे, मर्द भी औ़रतें भी, जो सब सिद्दीक़ और सिद्दीक़ा थे, अल्लाह उन सबसे खुश हो और उन्हें भी खुश रखे।

पस खुदा तआ़ला ऐसे सच्चों से वादा फ़रमाता है कि वह उन्हें अच्छी जगह इनायत फ़रमायेगा, जैसे मदीना और पाक रोज़ी। माल का भी बदला मिला और वतन का भी। हक़ीक़त यह है कि जो शख़्स ख़ौफ़े खुदा से जैसी चीज़ को छोड़े अल्लाह तआ़ला उसी जैसी उससे बहुत ज़्यादा बेहतर पाक और हलाल चीज़ उसे अ़ता फ़रमाता है। इन बेवतन मुहाजिरों को देखिये कि खुदा तआ़ला ने इन्हें हाकिम व बादशाह बना दिया और दुनिया पर इनकी हुकूमत क़ायम कर दी, अभी आख़िरत का अज्र व सवाब बाक़ी है।

पस हिजरत से जान चुराने वाले, मुहाजिरों के सवाब से वाक़िफ़ होते तो हिजरत में आगे बढ़ते। अल्लाह तआ़ला हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. से खुश हो कि आप जब कभी किसी मुहाजिर को उसका ग़नीमत वग़ैरह का हिस्सा देते तो फ़रमाते- लो अल्लाह तुम्हें बरकत दे। यह तो खुदा का दुनिया का वादा है, और अभी आख़िरत का अज्र जो बहुत अ़ज़ीमुश्शान है, बाक़ी है। फिर इसी आयते पाक की तिलावत करते।

उन नेक हज़रात की सिफ़ात और ख़ूबियाँ बयान फ़रमाता है कि जो तकलीफ़ें राहे खुदा में उन्हें पहुँचती हैं ये उन्हें झेल लेते हैं और खुदा तआ़ला पर जो उन्हें तवक्कुल (भरोसा) है उसमें कभी फ़र्क़ नहीं आता। इसी लिये दोनों जहान की भलाईयाँ ये लोग अपने दोनों हाथों से समेट लेते हैं।

और हमने आपसे पहले सिर्फ़ आदमी ही (रसूल बनाकर और मोजिज़े और किताबें देकर) भेजे हैं, कि हम उनपर 'वही' भेजा करते थे, सो अगर तुमको इल्म नहीं तो जानने वालों से पूछ देखो। (43) और आप पर भी यह क़ुरआन उतारा है, ताकि जो मज़ामीन लोगों के पास भेजे गए उनको आप उनसे ज़ाहिर कर दें, और ताकि वे "ग़ौर व" फ़िक्र किया करें। (44)	وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۭ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝

Maktab E Ashraf

यह सिलसिला पहले से चला आता है

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को रसूल बनाकर भेजा, अ़रब ने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि ख़ुदा की शान इससे बहुत आला और बुलन्द है वह किसी इनसान को अपना रसूल बनाये। जिसका ज़िक्र क़ुरआन में भी है। फ़रमाता हैः

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا..... الخ.

क्या लोगों को इस बात पर ताज्जुब मालूम हुआ कि हमने किसी इनसान की तरफ़ अपनी 'वही' नाज़िल फ़रमाई, कि वह लोगों को आगाह कर दे।

एक जगह फ़रमाया- हमने तुझसे पहले भी जितने रसूल भेजे सभी इनसान थे, जिन पर हमारी 'वही' आती थी। तुम पहली आसमानी किताब वालों से पूछ लो कि वे इनसान थे कि फ़रिश्ते? अगर वे भी इनसान हों तो फिर अपने इस क़ौल से बाज़ आओ। हाँ अगर साबित हो कि नुबुव्वत का सिलसिला फ़रिश्तों में ही रहा तो बेशक इस नबी का इनकार करते हुए तुम अच्छे लगोगे। एक और आयत में "मिन् अहलिल् क़ुरा" का लफ़्ज़ भी फ़रमाया, यानी वे रसूल भी ज़मीन के बाशिन्दे थे, कोई आसमानी मख़्लूक़ न थी।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'ज़िक्र वालों' से मुराद 'किताब वाले' हैं। मुजाहिद रह. का क़ौल भी यही है। अ़ब्दुर्रहमान रह. फ़रमाते हैं कि ज़िक्र से मुराद क़ुरआन है जैसेः

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ ٥

(यानी सूरः हिज्र की आयत 9) में है। यह क़ौल अपनी जगह ठीक है लेकिन इस आयत में ज़िक्र से मुराद 'क़ुरआन' लेना दुरुस्त नहीं, क्योंकि क़ुरआन के तो वे लोग मुन्किर थे, फिर क़ुरआन वालों से पूछकर उनको तशफ़्फ़ी (सन्तुष्टी) कैसे हो सकती थी? इसी तरह इमाम अबू जाफ़र बाक़िर रह. से मन्क़ूल है कि हम 'अहले ज़िक्र' हैं, यानी यह उम्मत। यह क़ौल भी अपनी जगह दुरुस्त है, वास्तव में यह उम्मत पहली तमाम उम्मतों से ज़्यादा इल्म वाली है और अहले बैत के उलेमा दूसरे उलेमा से बहुत ज़्यादा बढ़कर हैं, जबकि वे सही रास्ते पर साबित-क़दम हों, जैसे अ़ली बिन अ़ब्बास, हसन हुसैन, मुहम्मद बिन हनफ़िया, अ़ली बिन हुसैन, ज़ैनुल-आ़बिदीन, अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह, इब्ने अ़ब्बास, अबू जाफ़र बाक़िर, मुहम्मद बिन अ़ली बिन हुसैन और उनके बेटे जाफ़र और इन जैसे और बुज़ुर्ग हज़रात, ख़ुदा की रहमत व रज़ा उन्हें हासिल हो, जो कि ख़ुदा की रस्सी को मज़बूत थामे हुए और सिराते-मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) पर क़दम जमाये हुए और हर हक़दार के हक़ बजा लाने वाले और हर एक को उसकी सच्ची जगह उतारने वाले, हर एक की क़द्र व इज़्ज़त करने वाले थे, और वे ख़ुद ख़ुदा के तमाम नेक बन्दों के दिलों में अपनी मक़बूलियत रखते हैं, यह तो बेशक सही है लेकिन इस आयत में यह मुराद नहीं। यहाँ बयान हो रहा है कि आप भी इनसान हैं और आपसे पहले भी अम्बिया इनसानों में से ही होते रहे, जैसे क़ुरआन का फ़रमान हैः

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا.

कह दे कि मेरा रब पाक है, मैं सिर्फ़ एक इनसान हूँ जो ख़ुदा का रसूल हूँ। लोग सिर्फ़ यह बहाना करके रसूलों का इनकार कर बैठे कि कैसे मुम्किन है कि ख़ुदा तआ़ला किसी इनसान को अपनी रिसालत

Maktab E Ashraf

दे? एक और आयत में है कि तुझसे पहले जितने रसूल हमने भेजे सभी खाने पीने और बाज़ारों में चलने फिरने वाले थे। एक और आयत में है कि हमने उन्हें कुछ ऐसे जिस्म नहीं दिये थे कि वे खाने पीने से बेनियाज़ हों, या यह कि मरने वाले ही न हों।

एक और जगह इरशाद है:

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ.

मैं कोई शुरू का, पहला और नया रसूल तो नहीं।

एक और आयत में है कि मैं तुम जैसा इनसान हूँ मेरी जानिब 'वही' उतारी जाती है.....। पस यहाँ भी इरशाद हुआ कि पहली किताबों वालों से पूछ लो कि नबी इनसान होते थे या ग़ैर-इनसान? फिर यहाँ फ़रमाता है कि वह रसूलों को दलीलें (मोजिज़े और निशानियाँ) अ़ता फ़रमाकर भेजता है, उन पर किताबें नाज़िल फ़रमाता है, उन्हें सहीफ़े अ़ता फ़रमाता है। 'ज़ुबुर' से मुराद किताबें हैं जैसे कि क़ुरआन में एक दूसरी जगह है:

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ.

जो कुछ उन्होंने किया किताबों में है। एक और आयत में है:

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ..... الخ.

हमने तो ज़बूर में लिख दिया.....।

फिर फ़रमाता है कि हमने तेरी तरफ़ ज़िक्र नाज़िल फ़रमाया, यानी 'क़ुरआन'। इसलिये कि तू इसके मायने-मतलब से अच्छी तरह वाक़िफ़ है, इसे लोगों को समझा-बुझा दे। ऐ नबी! वास्तव में आप ही इस पर सबसे ज़्यादा इच्छुक हैं (यानी यह चाहते हैं कि लोग सही राह पर आ जायें), आप ही इसके सबसे बड़े आ़लिम हैं और आप ही इसके सबसे ज़्यादा आ़मिल (अ़मल करने वाले) हैं। इसलिये कि आप तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा अफ़ज़ल हैं, आदम की औलाद के सरदार हैं। इस किताब में जो कुछ मुख़्तसर या संक्षिप्त में बयान किया गया है उसकी तफ़सील (व्याख्या) आपके ज़िम्मे है। लोगों पर जो मुश्किल हो आप उसे समझा दें ताकि वे सोचें, समझें, राह पायें और फिर निजात और दोनों जहान की भलाई हासिल करें।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ
يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ اَوْ
يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ۝ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ۭ
فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

जो लोग बुरी (बुरी) तदबीरें करते हैं क्या (ऐसे लोग) फिर भी इस बात से बेफ़िक्र हैं कि अल्लाह तआ़ला उनको ज़मीन में धँसा दे या उन पर ऐसी जगह से अ़ज़ाब आ पड़े जहाँ से उनको गुमान भी न हो। (45) या उनको चलते-फिरते पकड़े, सो ये लोग (अल्लाह तआ़ला) को हरगिज़ हरा नहीं सकते। (46) या उनको घटाते-घटाते पकड़ ले, सो तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक़, मेहरबान है। (47)

Maktab E Ashraf

क्या ये लोग बेफ़िक्र हो गये?

खुदा तआला जो इस कायनात का ख़ालिक़, ज़मीन व आसमान का मालिक है, अपने हिल्म (संयम व बरदाश्त) का बावजूद इल्म के, और अपनी मेहरबानी का बावजूद गुस्से के, बयान फ़रमाता है कि वह अगर चाहे अपने गुनाहगार बुरे आमाल वाले बन्दों को ज़मीन में धंसा सकता है। बेख़बरी में उन पर अ़ज़ाब ला सकता है, लेकिन अपनी हद से ज़्यादा मेहरबानी से माफ़ी का मामला फ़रमाये हुए है। जैसे सूरः मुल्क में फ़रमाया- खुदा जो आसमान में है क्या तुम उसके ग़ज़ब से नहीं डरते? कि कहीं ज़मीन को दलदल बनाकर तुम्हें उसमें न धंसा दे, कि वह तुम्हें हिचकोले ही लगाती रहा करे। क्या तुम्हें आसमानों वाले खुदा से डर नहीं लगता कि कहीं वह तुम पर आसमान से पत्थर न बरसा दे, उस वक़्त तुम्हें मालूम हो जाये कि मेरा डराना कैसा था।

और यह भी हो सकता है कि खुदा तआ़ला ऐसे मक्कार बदकार लोगों को उनके चलते-फिरते आते-जाते खाते-कमाते ही पकड़ ले। सफ़र और घर पर होने की हालत में, रात-दिन में जिस वक़्त चाहे पकड़ ले, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰی..... الخ.

क्या बस्ती वाले इससे निडर हो गये हैं कि उनके पास हमारा अ़ज़ाब रात ही रात में उनके सोते सुलाते ही आ जाये, या दिन चढ़े उनके खेल-कूद के वक़्त ही आ जाये। खुदा को कोई शख़्स और कोई काम आ़जिज़ नहीं कर सकता, वह हारने और नाकाम होने वाला नहीं।

और यह भी मुम्किन है कि बावजूद डर और ख़ौफ़ के उन्हें पकड़ ले तो दोनों अ़ज़ाब एक साथ हो जायें, डर और फिर पकड़, एक मरे दूसरा डरे फिर मरे। लेकिन रब्बुल-आ़लमीन रब्बे कायनाम बड़ा ही करीम व रहीम है, इसलिये जल्दी नहीं पकड़ता। सहीहैन में है कि ख़िलाफ़े मिज़ाज बातें सुनकर सब्र करने में खुदा से बढ़कर कोई नहीं, लोग उसकी औलादें ठहरायें और वह उन्हें रिज़्क़ व आ़फ़ियत इनायत फ़रमाये। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिम को मोहलत देता है लेकिन जब पकड़ नाज़िल फ़रमाता है फिर वह अचानक तबाह हो जाता है। फिर हुज़ूर सल्ल. ने आयतः

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ..... الخ.

(सूरः हूद आयत 102) पढ़ी। क़ुरआन की एक और आयत में हैः

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ..... الخ.

कि बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें मैंने कुछ मोहलत दी, लेकिन आख़िरकार उनके ज़ुल्म की बिना पर उन्हें गिरफ़्तार कर लिया, लौटना तो मेरी ही तरफ़ है।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَىْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ	क्या उन लोगों ने अल्लाह की उन पैदा की हुई चीज़ों को नहीं देखा जिनके साये कभी एक तरफ़ को कभी दूसरी तरफ़ को इस तौर पर झुक जाते हैं कि खुदा के ताबे "अधीन" हैं, और वे

Maktaba E Ashraf

سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ○ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ○ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ○ السجدة	चीज़ें भी आजिज़ हैं। (48) और अल्लाह तआला ही की ताबेदार हैं जितनी चीज़ें चलने वाली आसमानों में और ज़मीन में मौजूद हैं और (ख़ास तौर पर) फ़रिश्ते और वे तकब्बुर नहीं करते। (49) वे अपने रब से डरते हैं जो कि उनपर हाकिम है, और उनको जो कुछ हुक्म किया जाता है वे उसको करते हैं। (50) ✿ (सज्दा)

सारी मख़्लूक़ अल्लाह के सामने सज्दे में है

अल्लाह तआला की बड़ाई व जलाल और अज़मत का ख़्याल कीजिए कि सारी मख़्लूक़ अ़र्श से फ़र्श तक उसके सामने मुतीअ़ और गुलाम है। बेजान व जानदार, इनसान व जिन्नात, फ़रिश्ते और समस्त कायनात उसकी फ़रमाँबरदार, हर चीज़ सुबह शाम उसके सामने हर तरह से अपनी आजिज़ी और बेबसी का सुबूत पेश करने वाली, झुक-झुककर उसके सामने सज्दे करने वाली है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- सूरज ढलते ही तमाम चीज़ें ख़ुदा के सामने सज्दे में गिर पड़ती हैं, हर एक रब्बुल-आलमीन के सामने ज़लील व पस्त और आजिज़ व बेबस है। पहाड़ वग़ैरह का सज्दा उनका साया है, समुद्र की मौजें उसकी नमाज़ है, उन्हें गोया अक़्ल व शऊर वाला समझकर सज्दे की निस्बत उनकी तरफ़ की और फ़रमाया ज़मीन व आसमान के कुल जानदार उसके सामने सज्दे में हैं, जैसे फ़रमान है:

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا.... الخ.

ख़ुशी से या नाख़ुशी से हर चीज़ रब्बुल-आलमीन के सामने सज्दे में (यानी उसके सामने झुकी हुई) है। उनके साये सुबह व शाम सज्दे करते हैं। फ़रिश्ते भी बावजूद अपनी क़ुदरत व रुतबे के ख़ुदा के सामने पस्त हैं, उसकी इबादत से मुँह नहीं फेर सकते। अल्लाह तआला से काँपते और लरज़ते रहते हैं और जो हुक्म है उसके पूरा करने में मशग़ूल हैं, न नाफ़रमानी करते हैं न सुस्ती।

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ○ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۭ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ○ وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ	और अल्लाह ने फ़रमाया है कि दो माबूद मत बनाओ, बस एक माबूद वही है, तो तुम लोग ख़ास मुझ ही से डरा करो। (51) और सब चीज़ें उसी की हैं जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं, और लाज़िमी तौर पर इताअ़त बजा लाना उसी का हक़ है, तो क्या फिर भी अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कुछ भी नेमत है वह सब अल्लाह ही की तरफ़ से है, फिर जब तुमको तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी से फ़रियाद करते हो। (53) फिर

✿ सज्दा नम्बर - 3

Maktab E Ashraf

जब तुमसे उस तकलीफ़ को हटा देता है तो तुममें की एक जमाअ़त अपने रब के साथ शिर्क करने लगती है। (54) (जिसका हासिल यह है) कि वे हमारी दी हुई नेमत की नाशुक्री करते हैं। ख़ैर कुछ दिन ऐश उड़ा लो अब जल्दी ही तुम को ख़बर हुई जाती है। (55)	الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْئَرُوْنَ ۝ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوْا ۗ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝

एक ख़ुदा

अल्लाह वाहिद के सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं। वह तन्हा है कोई उसका शरीक नहीं, वह हर चीज़ का ख़ालिक़ है मालिक है पालनहार है। उसी की इबादत इख़्लास के साथ हमेशा वाजिब है, उसके सिवा दूसरों की इबादत के तरीक़े इख़्तियार न करने चाहियें। आसमान व ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ ख़ुशी से या नाख़ुशी से उसकी मातहत है, सबका लौटाया जाना उसी की तरफ़ है। ख़ुलूस के साथ उसी की इबादत करो, उसके साथ दूसरों को शरीक करने से बचो। दीने ख़ालिस सिर्फ़ अल्लाह का है। आसमान व ज़मीन की हर चीज़ का मालिक तन्हा वही है। नफ़ा नुक़सान उसी के इख़्तियार में है। जो कुछ नेमतें बन्दों के हाथ में हैं सब उसी की तरफ़ से हैं। रिज़्क़, नेमत, आ़फ़ियत, मदद उसी की तरफ़ से है, बन्दों पर उसी के फ़ज़्ल व एहसान हैं। और अब भी इन नेमतों के पा लेने के बाद भी तुम उसके वैसे ही मोहताज हो। मुसीबतें अब भी सर पर मंडला रही हैं। सख़्ती के वक़्त वही याद आता है और गिड़गिड़ाकर पूरी आ़जिज़ी के साथ कठिन वक़्त में उसी की तरफ़ झुकते हो।

ख़ुद मक्का के मुश्रिकों का भी यही हाल था कि जब समुद्र में घिर जाते, मुख़ालिफ़ हवाओं के झोंके कश्ती को पत्ते की तरह हिचकोले देने लगते तो अपने ठाकुरों, देवताओं, बुतों, पीरों, फ़क़ीरों, वलियों, नबियों सबको भूल जाते और ख़ालिस ख़ुदा से लौ लगाकर सच्चे दिल से उससे बचाव और निजात तलब करते। लेकिन कश्ती के किनारे पर लगते ही अपने सब पुराने ख़ुदा याद आ जाते और माबूदे हक़ीक़ी के साथ फिर उनकी पूजा-पाठ होने लगती। इससे बढ़कर नाशुक्री, कुफ़्र और नेमतों की फ़रामोशी और क्या हो सकती है? यहाँ भी फ़रमाया कि मतलब निकल जाते ही बहुत से लोग आँखें फेर लेते हैं।

अल्लाह फ़रमा रहा है कि हमने उनकी यह ख़स्लत इसलिये कर दी है कि वे ख़ुदा की नेमत पर पर्दे डालें और उसका इनकार करें, हालाँकि वास्तव में नेमतों का देने वाला, मुसीबतों का दूर करने वाला उसके सिवा कोई नहीं। फिर उन्हें धमकाता है कि अच्छा दुनिया में तो अपना काम चला लो और मामूली फ़ायदा उठा लो, लेकिन इसका अन्जाम तुमको मालूम हो जायेगा।

और ये लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुताल्लिक़ उनको कुछ इल्म नहीं, क़सम है ख़ुदा की! तुमसे तुम्हारी इन बोहतान-बाज़ियों की ज़रूर बाज़पुर्स	وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۗ تَاللّٰهِ لَتُسْئَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ

तَفْتَرُوْنَ ○ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ○ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ○ يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ○ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○	"यानी पूछताछ" होगी। (56) और अल्लाह तआला के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते हैं, सुब्हानल्लाह! और अपने लिए पसन्दीदा चीज़ (यानी बेटे)। (57) और जब उनमें से किसी को औरत (यानी बेटी) की ख़बर दी जाए तो सारे दिन उसका चेहरा बेरौनक़ रहे, और वह दिल ही दिल में घुटता रहे। (58) जिस चीज़ की उसको ख़बर दी गई है उसकी शर्म से लोगों से छुपा-छुपा फिरे कि आया उसको ज़िल्लत पर लिए रहे या उसको मिट्टी में गाड़ दे। ख़ूब सुन लो उनकी यह तजवीज़ बहुत ही बुरी है। (59) जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते उनकी बुरी हालत है, और अल्लाह तआला के लिए तो बड़ी आला दर्जे की सिफ़तें (साबित) हैं, और वह बड़े ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले हैं। (60)

ع ١٣

कितनी बड़ी गुस्ताख़ी

मुश्रिकों की बेअक़्ली और हिमाक़त बयान हो रही है कि देने वाला अल्लाह, सब कुछ उसी का दिया हुआ, और ये उसमें से अपने झूठे माबूदों के नाम करें जिनका सही इल्म भी इन्हें नहीं। फिर उसमें सख़्ती ऐसी बरतें कि ख़ुदा के नाम का तो चाहे उनके माबूदों के नाम हो जाये लेकिन उनके माबूदों के नाम का ख़ुदा के नाम न हो सके। ऐसे लोगों से ज़रूर पूछगछ होगी, और इस बोहतान बाँधने का बदला उन्हें पूरा पूरा मिलेगा। जहन्नम की आग होगी और ये होंगे।

फिर उनकी दूसरी बेइन्साफ़ी और हिमाक़त बयान हो रही है कि ख़ुदा के क़रीबी ग़ुलाम फ़रिश्ते उनके नज़दीक ख़ुदा की बेटियाँ हैं, उनकी इबादत करते हैं जो बड़ी ग़लती और खुला शिर्क है। यहाँ तीन जुर्म उनसे सर्ज़द हुए- पहला तो यह कि ख़ुदा के लिये औलाद ठहराना, जो इससे बिल्कुल पाक है। फिर औलाद में से भी वह क़िस्म उसे देना जिसे ख़ुद अपने लिये भी पसन्द नहीं करते यानी लड़कियाँ। क्या ही उल्टी बात है कि अपने लिये तो लड़के और ख़ुदा के लिये लड़कियाँ। फिर उनकी इबादत करना, यह उनका सरासर बोहतान है, महज़ झूठ है। कैसे मुम्किन है कि ख़ुदा के औलाद हो, फिर औलाद भी वह जो इनके नज़दीक निहायत रद्दी और नापसन्दीदा चीज़ है। क्या हिमाक़त है कि इन्हें तो ख़ुदा लड़के दे और अपने लिये लड़कियाँ रखे। अल्लाह इससे बल्कि औलाद से पाक है। इन्हें जब ख़बर मिले कि इनके यहाँ लड़की हुई तो मारे नदामत व शर्म के मुँह काला पड़ जाये, ज़बान बन्द हो जाये, ग़म से कमर झुक जाये, ज़हर के घूँट पीकर ख़ामोश हो जायें। लोगों से मुँह छुपाता फिरे, इस सोच में रहे कि अब क्या करूँ अगर लड़की को

ज़िन्दा छोड़ता हूँ तो बड़ी रुस्वाई है, न वह वारिस बने न कोई चीज़ समझी जाये, लड़के उस पर तरजीह दिये जायें। ग़र्ज़ कि ज़िन्दा रखे तो निहायत ज़िल्लत से, वरना साफ़ बात है कि जीते जी गड्ढा खोदा और दबा दी। यह हालत तो अपनी है, फिर ख़ुदा के लिये यही चीज़ साबित करते हैं। कैसे बुरे फ़ैसले करते हैं, कितनी बेहयाई की तक़सीम करते हैं। ख़ुदा के लिये जो बात करने बैठे उसे अपने लिये सख़्त तौहीन व अपमान का सबब समझें। असल यह है कि बुरी मिसाल और नुक़सान उन्हीं काफ़िरों के लिये है, अल्लाह के लिये कमाल है, वह हर चीज़ पर ग़ालिब है, हकीम है और बड़ाई व सम्मान वाला है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ
عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى
اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا
يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝
وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ
اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا
جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ۝

और अगर अल्लाह तआला लोगों पर उनके जुल्म के सबब दारोगीर "यानी पकड़" फ़रमाते तो ज़मीन के ऊपर कोई हरकत करने वाला न छोड़ते, लेकिन एक मुक़र्ररा वक़्त तक मोहलत दे रहे हैं। फिर जब उनका मुक़र्ररा वक़्त आ पहुँचेगा उस वक़्त एक घड़ी "पल" न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (61) और अल्लाह तआला के लिए वे बातें तजवीज़ करते हैं जिनको ख़ुद नापसन्द करते हैं और अपनी ज़बान से झूठे दावे करते जाते हैं कि उनके लिए हर तरह की भलाई है, लाज़िमी बात है कि उनके लिए दोज़ख़ है, और बेशक वे लोग सबसे पहले भेजे जाएँगे। (62)

शाने रहमत के तक़ाज़े

अल्लाह तआला के संयम व करम, लुत्फ़ व मेहरबानी का बयान हो रहा है कि बन्दों के गुनाह देखता है और फिर भी उन्हें मोहलत देता है। अगर फ़ौरन ही पकड़े तो आज ज़मीन पर कोई चलता फिरता नज़र न आये। इनसानों की ख़ताओं में जानवर भी हलाक हो जायें, गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाये, बुरों के साथ भले भी पकड़ में आ जायें। लेकिन अल्लाह सुब्हानहू व तआला अपने सयंम व करम, लुत्फ़ व रहम से पर्दापोशी कर रहा है, दरगुज़र फ़रमा रहा है, माफ़ी दे रहा है, एक ख़ास वक़्त तक मोहलत दिये हुए है वरना कीड़े और भुनगे (कीट) भी न बचते। इनसानों के गुनाहों की अधिकता की वजह से अज़ाबे ख़ुदा ऐसे आते कि सबको ग़ारत कर जाते।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने सुना कि कोई साहिब फ़रमा रहे हैं- ज़ालिम अपना ही नुक़सान करता है, तो आपने फ़रमाया नहीं नहीं! बल्कि परिन्द अपने घौंसलों में उसके ज़ुल्म की वजह से हलाक हो जाते हैं। हज़रत अबू दर्दा रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम एक मर्तबा नबी करीम सल्ल. के सामने कुछ ज़िक्र कर रहे थे कि आपने फ़रमाया- ख़ुदा किसी नफ़्स को ढील नहीं देता, उम्र की ज़्यादती नेक औलाद से होती है जो अल्लाह तआला अपने बन्दों को इनायत फ़रमाता है, फिर उन बच्चों की दुआयें उनकी क़ब्र में उन्हें पहुँचती रहती हैं, यही उनकी उम्र की ज़्यादती है।

Maktab E Ashraf

ये ज़ालिम अपने लिये लड़कियाँ नापसन्द करें, शिर्कत न चाहें और ख़ुदा के लिये यह सब मुनासिब और सही जानें? फिर यह ख़्याल करें कि ये दुनिया में भी अच्छाईयाँ हासिल करने वाले हैं और अगर कियामत कायम हुई तो वहाँ भी भलाई इनके लिये है? ये कहा करते थे कि नफ़े (फ़ायदे और लाभ) के मुस्तहिक़ इस दुनिया में तो हम हैं ही, और सही बात तो यह है कि कियामत तो आनी नहीं, और मान लो अगर आयी भी तो वहाँ की भलाई भी हमारे लिये ही है। इन काफ़िरों को जल्द ही सख़्त अ़ज़ाब चखने पड़ेंगे। हमारी आयतों से कुफ़्र, फिर आरज़ू यह कि माल व औलाद हमें वहाँ भी मिलेगा?

सूरः कहफ़ में दो साथियों का ज़िक्र करते हुए क़ुरआन ने फ़रमाया कि वह ज़ालिम अपने बाग़ में जाते हुए अपने नेक साथी से कहता है- मैं तो उसे हलाक (तबाह और ख़त्म) होने वाला जानता ही नहीं, न कियामत का कायल हूँ और अगर फ़र्ज़ कर लो कि मैं दोबारा ज़िन्दा किया गया तो वहाँ इससे भी बेहतर चीज़ दिया जाऊँगा। काम बुरे करें और आरज़ू नेकी की रखें? काँटे बोयें और फल चाहें?

कहते हैं कि काबा शरीफ़ की इमारत को नये सिरे से बनाने के लिये जब ढाया तो नींव में से एक पत्थर निकला जिस पर एक तहरीर लिखी हुई थी, जिसमें यह भी लिखा था कि तुम बुराईयाँ करते हो और नेकियों की उम्मीद रखते हो? यह तो ऐसा है जैसे काँटे बोकर अंगूर की उम्मीद रखना। पस उनकी उम्मीदें थीं कि दुनिया में भी उन्हें शान व शौकत, इ़ज़्ज़त व रुतबा और लौंडी-ग़ुलाम मिलेंगे और आख़िरत में भी। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- दर असल उनके लिये दोज़ख़ की आग तैयार है, वहाँ ये रहमते रब से भुला दिये जायेंगे और ज़ाया व बरबाद हो जायेंगे। आज ये हमारे अहकाम भुला बैठे हैं कल हम इन्हें अपनी नेमतों से भुला देंगे। ये जल्दी ही जहन्नम में जाने वाले हैं।

तَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ○ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ○ ع	ख़ुदा तआ़ला की क़सम! आपसे पहले जो उम्मतें हो गुज़री हैं उनके पास भी हमने (रसूलों को) भेजा था, सो उनको भी शैतान ने उनके आमाल अच्छे बना करके दिखलाए, पस वह आज उनका रफ़ीक़ "यानी साथी" था, और उनके वास्ते दर्दनाक सज़ा है। (63) और हमने आप पर यह किताब सिर्फ़ इसलिए नाज़िल की है कि जिन उमूर (चीज़ों और बातों) में लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं आप (आ़म) लोगों पर उसको ज़ाहिर फ़रमा दें, और ईमान वालों की हिदायत और रहमत की ग़रज़ से (नाज़िल फ़रमाया) (64) और अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा किया, इसमें ऐसे लोगों के लिए बड़ी दलील है जो सुनते हैं। (65)

शैतान मर्दूद की साज़िशें

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आप तसल्ली रखें, आपको आपकी क़ौम का झुठलाना कोई नई

बात नहीं, कौनसा नबी आया जो झुठलाया न गया? बाक़ी रहे झुठलाने वाले तो वे शैतान के मुरीद हैं। बुराईयाँ उन्हें शैतानी वस्वसों से भलाईयाँ दिखाई देती हैं। उनका वली शैतान है, वह उन्हें कोई नफ़ा नहीं पहुँचायेगा, हमेशा के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब में छोड़कर उनसे अलग हो जायेगा। क़ुरआन हक़ व बातिल में, सच झूठ में फ़र्क़ कराने वाली किताब है। हर झगड़े और हर इख़्तिलाफ़ (विवाद) का फ़ैसला इसमें मौजूद है। यह दिलों के लिये हिदायत है और ईमान वाले जो इस पर आ़मिल हैं उनके लिये रहमत है। इस क़ुरआन से किस तरह मुर्दा दिल जी उठते हैं इसकी मिसाल मुर्दा ज़मीन और बारिश की है। जो लोग बात को सुनें समझें वे तो इससे बहुत कुछ इबरत (नसीहत और सीख) हासिल कर सकते हैं।

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ○ وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ○	और (साथ ही) तुम्हारे लिए मवेशियों में भी ग़ौर करने का मक़ाम है। उनके पेट में जो गोबर और ख़ून है उसके दरमियान में से साफ़ और (गले में) आसानी से उतरने वाला दूध हम तुमको पीने को देते हैं। (66) और खजूर और अंगूरों के फलों से तुम लोग नशे की चीज़ और उम्दा खाने की चीज़ें बनाते हो। बेशक इसमें उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो अ़क़्ल रखते हैं। (67)

क़ुदरत की निशानियों को देखो

ऊँट गाय बकरियाँ वग़ैरह भी अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की क़ुदरत व हिक्मत की निशानियाँ हैं। अल्लाह की क़ुदरत तो देखिये कि हैवानों के पेट में जो अला-बला भरी हुई होती है उसी में से परवर्दिगारे आ़लम तुम्हें निहायत स्वादिष्ट, लतीफ़ और ख़ुशगवार दूध पिलाता है। जानवर के बातिन (पेट) में जो गोबर ख़ून वग़ैरह है उनसे बचाकर दूध तुम्हारे लिये निकालता है, न उसकी सफ़ेदी में फ़र्क़ आये न मिठास और ज़ायके में। मेदे (पेट) में गिज़ा पहुँची वहाँ से ख़ून रगों की तरफ़ दौड़ गया, दूध थन की तरफ़ पहुँचा, पेशाब ने मसाने का रास्ता पकड़ा, गोबर अपने निकलने की जगह की तरफ़ इकट्ठा हुआ। न एक दूसरे से मिले न एक दूसरे को बदले। ख़ालिस दूध जो पीने वाले के हलक़ में आराम से उतर जाये उसकी ख़ास नेमत है।

इस नेमत के बयान के साथ ही दूसरी नेमत बयान फ़रमाई कि खजूर और अंगूर के शीरे (बाखर) से तुम शराब बना लेते हो। यह शराब के हराम होने से पहले की बात है, और इससे मालूम होता है कि इन दोनों चीज़ों की शराब एक ही हुक्म में है। जैसे इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद और जमहूर उलेमा का मज़हब है, और यही हुक्म है दूसरी शराबों का जो गेहूँ जवार और शहद से बनाई जायें, जैसा कि हदीसों में तफ़सीली तौर पर इसका बयान आ चुका है। यह जगह इसके बयान की नहीं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि शराब बनाते हो जो हराम है, और दूसरी तरह खाते पीते हो जो हलाल है। मिसाल के तौर पर ख़ुश्क खजूरें किशमिश वग़ैरह और नबीज़ शर्बत बनाकर सिरका बनाकर

Maktab E Ashraf

और दूसरी तरह, पस जिन लोगों को अ़क्ल का हिस्सा दिया गया है वे ख़ुदा की क़ुदरत व बड़ाई को इन चीज़ों और इन नेमतों से भी पहचान सकते हैं। दर असल इनसानियत का असल जौहर और कमाल अ़क्ल ही है, इसकी हिफ़ाज़त के लिये शरीअ़ते पाक ने नशे वाली शराबें इस उम्मत पर हराम कर दीं। इसी नेमत का बयान सूरः यासीन की आयतः

وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ...... الخ.

में है। यानी ज़मीन में हमने खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगा दिये और उनमें पानी के चश्मे बहा दिये, ताकि लोग उसका फल खायें। ये उनके अपने बनाये हुए नहीं, क्या फिर भी ये शुक्रगुज़ारी नहीं करेंगे? पाक ज़ात है वह जिसने ज़मीन की पैदावार में, ख़ुद इनसानों में और उस मख़्लूक़ में जिसे ये जानते ही नहीं, हर तरह की जोड़ा-जोड़ा चीज़ें पैदा कर दी हैं।

और आपके रब ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाली की तू पहाड़ों में घर बना ले और दरख़्तों में और जो लोग इमारतें बनाते हैं, उनमें। (68) फिर हर क़िस्म के फूलों से चूसती फिर, फिर अपने रब के रास्तों में चल जो आसान हैं, उसके पेट में से पीने की एक चीज़ निकलती है जिसकी रंगतें मुख़्तलिफ़ होती हैं, कि उसमें लोगों के लिए शिफ़ा है, इसमें उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो सोचते हैं। (69)	وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِىْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۝ ثُمَّ كُلِىْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۗ يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

एक मक्खी और उसका बड़ा कारनामा

'वही' से मुराद यहाँ पर इल्हाम, हिदायत और इरशाद (यानी दिल में बात डालना और किसी चीज़ की रहनुमाई करना) है। शहद की मक्खियों को ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से यह बात समझाई गयी कि वे पहाड़ों में दरख़्तों में और छतों में शहद के छत्ते बनायें। इस कमज़ोर मख़्लूक़ के इस घर को देखिये कितना मज़बूत, कैसा ख़ूबसूरत और कैसी कुछ कारीगरी का होता है। फिर वापस लौटते वक़्त सीधी अपने छत्ते को पहुँच जाये। चाहे बुलन्द पहाड़ की चोटी हो चाहे बयाबान के दरख़्त हों, चाहे आबादी के बुलन्द मकानात और वीराने के सुनसान खंडर हों। ये न रास्ता भूले न भटकती फिरे। चाहे कितनी ही दूर निकल जाये लौटकर अपने छत्ते में अपने बच्चों अण्डों और शहद में पहुँच जाये। अपने पंखों से मोम बनाये, अपने मुँह से शहद जमा करे और दूसरी जगह से बचे। यानी अपने छत्ते से जुड़ी रहती है और फ़रमाँबरदारी इसकी तबीयत में शामिल है। यही वजह है कि लोग शहद के छत्ते को एक शहर से दूसरे शहर तक ले जाते हैं।

अबू यअ़ला मूसली में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मक्खी की उम्र चालीस दिन की होती है और आपने यह फ़रमाया कि सिवाय शहद की मक्खी के बक़िया मक्खियाँ आग में हैं।

(लेकिन उलेमा ने इस रिवायत को ज़्यादा क़ाबिले एतिबार नहीं माना है। हिन्दी अनुवादक)

शहद के रंग विभिन्न और अनेक होते हैं- सफ़ेद, ज़र्द, सुर्ख़ वग़ैरह। जैसे फल फूल और जैसी ज़मीन। इस ज़ाहिरी ख़ूबी और रंग की चमक के साथ इसमें शिफ़ा भी है। बहुत सी बीमारियों को ख़ुदा तआ़ला इससे दूर कर देता है। यहाँ "फ़ीहिश्शिफ़ा-उ लिन्नासि" (कि इसी में लोगों के लिये शिफ़ा है) नहीं फ़रमाया वरना हर बीमारी की दवा यही ठहरती। बल्कि फ़रमाया "इसमें शिफ़ा है लोगों के लिये" पस यह सर्द (ठंडी) बीमारियों की दवा है। इलाज हमेशा बीमारियों के ख़िलाफ़ होता है। पस शहद गर्म है सर्दी की बीमारी में मुफ़ीद है।

मुजाहिद और इब्ने जरीर से मन्क़ूल है कि इससे मुराद क़ुरआन है, यानी क़ुरआन में शिफ़ा है। यह क़ौल अगरचे अपने तौर पर सही है और वाक़ई क़ुरआन शिफ़ा है, लेकिन इस आयत में यह मुराद लेना मज़मून के मुताबिक़ नहीं। इसमें तो शहद का ज़िक्र है, इसी लिये मुजाहिद के इस क़ौल की ताईद नहीं की गयी। हाँ क़ुरआन के शिफ़ा होने का ज़िक्र आयतः

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَاهُوَ شِفَآءٌ..... الخ.

(सूरः बनी इस्राईल आयत 82) में है, और आयतः

شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ.

(सूरः यूनुस आयत 57) में है। इस आयत में तो मुराद शहद है। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि किसी ने आकर रसूले ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मेरे भाई को बहुत जुल्लाब (दस्त) आ रहे हैं। आपने फ़रमाया उसे शहद पिलाओ। वह गया शहद दिया, फिर आया और कहा हुज़ूर! उसे तो बीमारी और बढ़ गयी। आपने फ़रमाया जा शहद पिला। उसने जाकर फिर पिलाया, फिर हाज़िर होकर यही अ़र्ज़ किया कि दस्त और बढ़ गये। आपने फ़रमाया ख़ुदा सच्चा है और तेरे भाई का पेट झूठा है, जा फिर शहद दे। तीसरी मर्तबा शहद से अल्लाह के फ़ज़्ल से शिफ़ा हासिल हो गयी।

बाज़ तबीबों (हकीमों) ने कहा है कि मुम्किन है उसके पेट में फ़ुज़ले (रद्दी और माद्दे) की ज़्यादती हो, शहद ने अपनी गर्मी की वजह से उसको घुला दिया, फ़ुज़ला ख़ारिज होना शुरू हुआ, दस्त बढ़ गये। देहाती ने इसे मर्ज़ का बढ़ना समझा। हुज़ूर सल्ल. से शिकायत की, आपने और शहद देने को फ़रमाया, उससे और ज़ोर से फ़ुज़ला ख़ारिज होना शुरू हुआ। फिर शहद दिया और पेट साफ़ हो गया, बला निकल गयी और पूरी शिफ़ा अल्लाह के फ़ज़्ल से हासिल हो गयी, और हुज़ूर सल्ल. की बात जो इशारा-ए-ख़ुदावन्दी से थी पूरी हो गयी।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक और हदीस में है कि नबी करीम सल्ल. को मिठास से और शहद से बहुत चाव था। आपका फ़रमान है कि तीन चीज़ों में शिफ़ा है- पछने (सींगी-फोकी) लगाने में, शहद के पीने में और दाग़ लगवाने में, लेकिन मैं अपनी उम्मत को दाग़ लगवाने से रोकता हूँ। बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि तुम्हारी दवाओं में से किसी में अगर शिफ़ा है तो पछने लगाने में, शहद के पीने में और आग से दग़वाने में है, जो बीमारी के मुनासिब हो, लेकिन मैं इसे पसन्द नहीं करता। एक हदीस में है कि मैं इसे पसन्द नहीं करता बल्कि नापसन्द रखता हूँ। इब्ने माजा में है कि तुम इन दोनों शिफ़ा के नुस्ख़ों की क़द्र करते रहो

Maktab E Ashraf

यानी शहद और क़ुरआन की।

फ़ायदाः इब्ने जरीर में हज़रत अ़ली रज़ि. का फ़रमान है कि जब तुम में से कोई शिफ़ा चाहे तो क़ुरआने करीम की किसी आयत को किसी सहीफ़े (काग़ज़) पर लिख ले और उसे बारिश के पानी से धो ले और अपनी बीवी के माल से उसकी अपनी रज़ामन्दी से पैसे लेकर शहद ख़रीद ले, और उसे पी ले। पस उसमें कई वजह से शिफ़ा आ जायेगी। ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान है:

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَاهُوَشِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ.

यानी हमने क़ुरआन में वह नाज़िल फ़रमाया है जो शिफ़ा है और रहमत है मोमिनों के लिये। एक और आयत में है:

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا.

कि हम आसमान से बरकत वाला पानी बरसाते हैं। एक और जगह फ़रमान है:

فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًافَكُلُوْهُ هَنِيْٓئًامَّرِيْٓئًا.

यानी अगर औ़रतें अपने मेहर के माल में से अपनी ख़ुशी से तुम्हें कुछ दे दें तो बेशक तुम उसे खाओ पियो, सहता पचता। शहद के बारे में फ़रमाने ख़ुदा है:

فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ.

शहद में लोगों के लिये शिफ़ा है।

इब्ने माजा में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हर महीने में तीन दिन सुबह को शहद चाट ले उसे कोई बड़ी बला (बीमारी) नहीं पहुँचेगी। इसका एक रावी ज़ुबैर इब्ने सईद मतरूक है (यानी उसकी हदीसें नहीं ली जातीं)। इब्ने माजा की एक और हदीस में आपका फ़रमान है कि तुम सना और सनूत का इस्तेमाल किया करो इनमें हर बीमारी की शिफ़ा है सिवाय 'साम' के। लोगों ने पूछा साम क्या है? फ़रमाया मौत। सनूत के मायने शब्त के हैं। कुछ लोगों ने कहा है कि सनूत शहद है जो घी की मश्क में रखा हुआ हो। शायर के शे'र में भी यह लफ़्ज़ इस मायने में आया है।

फिर फ़रमाता है कि मक्खी जैसी बेताक़त (कमज़ोर) चीज़ का तुम्हारे लिये शहद और मोम बनाना, उसका इस तरह आज़ादी से फिरना, अपने घर को न भूलना वग़ैरह ये सब चीज़ें ग़ौर व फ़िक्र करने (सोचने) वालों के लिये मेरी बड़ाई, मेरे ख़ालिक़ व मालिक होने की बड़ी निशानियाँ हैं। इसी से लोग अपने ख़ुदा के क़ादिर, हकीम, अ़लीम, करीम रहीम होने पर दलील हासिल कर सकते हैं।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰكُمْ ۙ وَمِنْكُمْ مَّنْ
يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ
عِلْمٍ شَيْــًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝ ع ۹ ۱۵

और अल्लाह तआ़ला ने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हारी जान निकालता है। और बाज़े तुममें वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुँचाए जाते हैं, (जिसका यह असर होता है) कि एक चीज़ से बाख़बर होकर फिर बेख़बर हो जाता है, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़ी क़ुदरत वाले हैं। (70)

Maktab E Ashraf

बुढ़ापे का ज़माना

तमाम बन्दों पर कब्ज़ा अल्लाह तआला का है, वही उन्हें अदम से वजूद में लाया है, वही उन्हें फिर मौत देगा। बाज़ लोगों को बहुत बड़ी उम्र तक पहुँचाता है कि वे फिर से बच्चों जैसे कमज़ोर बन जाते हैं। हज़रत अली रज़ि. फ़रमाते हैं कि पछत्तर (75) साल की उम्र में उमूमन इनसान ऐसा ही हो जाता है, ताक़त नहीं रहती, याददाश्त जाती रहती है, इल्म की कमी हो जाती है, आलिम (चीज़ों का जानने वाला) होने के बाद बेइल्म हो जाता है (यानी भूलने की बीमारी हो जाती है)। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्ल. अपनी दुआ में फ़रमाते थे:

اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْكَسْلِ وَالْهَرَمِ وَاَرْذَلِ الْعُمُرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الدَّجَّالِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ.

यानी ख़ुदाया मैं बख़ीली से, आजिज़ी से, बुढ़ापे से, ज़लील उम्र से, क़ब्र के अज़ाब से, दज्जाल के फ़ितने से, ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से तेरी पनाह तलब करता हूँ।

और अल्लाह तआला ने तुममें बाज़ों को बाज़ों पर रिज़्क़ में फ़ज़ीलत दी है। सो जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई है वे अपने हिस्से का माल अपने ग़ुलामों को इस तरह कभी देने वाले नहीं कि वे सब उसमें बराबर हो जाएँ, क्या फिर भी ख़ुदा तआला की नेमत का इनकार करते हैं? (71)	وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّىْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۗ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ○

यह फ़र्क़ क्यों?

मुश्रिकों की जहालत और उनके कुफ़्र का बयान हो रहा है कि बावजूद अपने माबूदों को ख़ुदा के ग़ुलाम जानने के उनकी इबादत में लगे हुए हैं। चुनाँचे वे हज के मौक़े पर कहा करते थे:

لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ اِلَّاشَرِيْكٌ هُوَلَكَ تَمْلِكُهٗ وَمَامَلَكَ.

यानी ख़ुदाया मैं तेरे पास हाज़िर हूँ तेरा कोई शरीक नहीं, मगर वह जो ख़ुद तेरे ग़ुलाम हैं, उनका और उनकी मातहत चीज़ों का असली मालिक तू ही है।

पस अल्लाह तआला उन्हें इल्ज़ाम देता है कि जब तुम अपने ग़ुलामों के लिये अपनी बराबरी और अपनी आल में शिर्कत पसन्द नहीं करते तो फिर मेरे ग़ुलामों को मेरी ख़ुदाई में कैसे शरीक ठहरा रहे हो? यही मज़मून आयतः

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ...... الخ.

में बयान हुआ है, कि जब तुम अपने ग़ुलामों को अपने माल में, अपनी बीवियों में अपना शरीक

Maktab E Ashraf

बनाने से नफ़रत करते हो तो फिर मेरे गुलामों को मेरी ख़ुदाई में कैसे शरीक समझ रहे हो? यही ख़ुदा की नेमतों से इनकार है कि ख़ुदा के लिये वह पसन्द करना जो अपने लिये भी पसन्द न हो। यह है मिसाल झूठे माबूदों की। जब तुम ख़ुद इससे अलग हो फिर ख़ुदा तो इससे बहुत ज़्यादा बेज़ार है। रब की नेमतों का कुफ़्र (इनकार) और क्या होगा? कि खेतियाँ और चौपाये (मवेशी) एक ख़ुदा के पैदा किये हुए और तुम उन्हें उसके सिवा औरों के नाम का करो। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. को एक ख़त लिखा, जिसमें तहरीर था कि अपनी रोज़ी पर क़नाअ़त (सब्र और जो मिल जाये उसी पर बस) इख़्तियार करो। अल्लाह तआ़ला ने एक को एक से ज़्यादा अमीर कर रखा है, यह भी उसकी तरफ़ से एक आज़माईश है, ताकि वह देखे कि अमीर और मालदार लोग किस तरह शुक्रे ख़ुदा अदा करते हैं और जो हुक़ूक़ दूसरों के उन पर अल्लाह तआ़ला ने मुक़र्रर किये हैं उन्हें कहाँ तक अदा करते हैं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝	**और अल्लाह तआ़ला ने तुम ही में से तुम्हारे लिए बीवियाँ बनाईं, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए, और तुमको अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने (पीने) को दीं, क्या फिर भी बेबुनियाद चीज़ पर ईमान रखेंगे और अल्लाह तआ़ला की नेमत की नाशुक्री करते रहेंगे। (72)**

अल्लाह का एक और इनाम

अपने बन्दों पर अपना एक और एहसान जताता है कि उन्हीं की जिन्स से, उन्हीं की हम-शक्ल, उन्हीं के जैसी औ़रतें हमने उनके लिये पैदा कीं। अगर जिन्स दूसरी होती तो दिली मेल-जोल, मुहब्बत व ताल्लुक़ क़ायम न रहता। लेकिन उसने अपनी रहमत से मर्द औ़रत हम-जिन्स बनाये, फिर इस जोड़े से नस्ल बढ़ाई, औलाद फैलाई, लड़के हुए लड़कों के लड़के हुए। 'ह-फ़-दतन्" के एक मायने तो यही पोतों के हैं, दूसरे मायने ख़ादिम और मददगार के हैं। पस लड़के और पोते भी एक तरह से ख़िदमत-गुज़ार होते हैं, और अ़रब में यही दस्तूर भी था।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि इनसान की बीवी की पहले घर की औलाद उसकी नहीं होती। "ह-फ़-दतन्" उस शख़्स को भी कहते हैं जो किसी के सामने उसके लिये काम-काज करे। यह मायने भी बयान किये गये हैं कि इससे मुराद दामादी रिश्ता है, मायने के तहत में ये सब दाख़िल हैं। चुनाँचे दुआ़-ए-क़ुनूत में यह जुमला आता है "व इलै-क नस्आ़ व नह़्फ़िदु' (हमारी कोशिश और ख़िदमत तेरे लिये ही है) और यह ज़ाहिर है कि औलाद से गुलाम से ससुराल वालों से ख़िदमत हासिल होती है। पस इन सबसे नेमते ख़ुदा हमें मिलती है। हाँ जिनके नज़दीक "व ह-फ़-दतन्" का ताल्लुक़ "बीवियों" से है उनके नज़दीक तो मुराद औलाद और औलाद की औलाद और दामाद और बीवी की औलाद हैं। पस यह सब बहुत सी बार उस शख़्स की हिफ़ाज़त में उसकी गोद में और उसकी ख़िदमत में होते हैं, और मुम्किन है कि यही मतलब सामने रखकर नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया हो कि औलाद तेरी गुलाम है, जैसा कि अबू दाऊद में है। और

Maktab E Ashraf

जिन्होंने "ह-फ्-दतन्" से मुराद ख़ादिम लिया है उनके नज़दीक यह अल्लाह के फ़रमानः

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا.

के साथ जुड़ा हुआ है। यानी अल्लाह तआला ने तुम्हारी बीवियों और औलाद को तुम्हारा ख़ादिम बना दिया है, और तुम्हें खाने पीने की बेहतरीन ज़ायकेदार चीज़ें इनायत फ़रमाई हैं। पस बातिल पर यक़ीन रखकर ख़ुदा की नेमतों की नाशुक्री न करनी चाहिये, कि रब की नेमतों पर पर्दा डाल दिया और उन्हें दूसरों की तरफ़ मन्सूब कर दीं। सही हदीस में है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अपने बन्दों को अपने एहसान जताते हुए फ़रमायेगा- क्या मैंने तुझे बीवी नहीं दी थी? क्या मैंने तुझे इज़्ज़त वाला नहीं बनाया था? क्या मैंने तेरे ताबे घोड़ों और ऊँटों को नहीं किया था? क्या मैंने तुझे सरदारी और आराम में नहीं छोड़ा था?

और अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते रहेंगे जो उनको न आसमान में से रिज़्क़ पहुँचाने का इख़्तियार रखती हैं और न ज़मीन में से, और न क़ुदरत रखती हैं। (73) सो तुम अल्लाह तआला के लिए मिसालें मत घड़ो, (और) अल्लाह तआला जानते हैं और तुम नहीं जानते। (74)	وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْئًا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ط اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

और फिर नेमत की नाशुक्री

नेमतें देने वाला, पैदा करने वाला, रोज़ी पहुँचाने वाला सिर्फ़ अकेला अल्लाह तआला है, जिसका कोई शरीक नहीं है। और ये मुश्रिक लोग उसके साथ औरों को पूजते हैं, जो न आसमान से बारिश बरसा सकें न ज़मीन से खेत और दरख़्त उगा सकें। वे अगर सब मिलकर भी चाहें तो भी न एक बूँद बारिश पर क़ादिर, न एक पत्ते के पैदा करने की उनमें हिम्मत व ताक़त। पस तुम अल्लाह के लिये मिसालें न बयान करो, उसके शरीक, साझी और उस जैसे दूसरों को न समझो। अल्लाह आ़लिम है और वह अपने इल्म की बिना पर अपनी तौहीद (एक होने) पर गवाही देता है। तुम जाहिल हो अपनी जहालत से दूसरों को ख़ुदा के शरीक ठहरा रहे हो।

अल्लाह तआला एक मिसाल बयान फ़रमाते हैं, कि एक ग़ुलाम है जो दूसरे की मिल्क में है कि किसी चीज़ का इख़्तियार नहीं रखता। और एक शख़्स है जिसको हमने अपने पास से ख़ूब रोज़ी दी है, तो वह उसमें से छुपे और खुले तौर पर ख़र्च करता है, क्या (इस क़िस्म के शख़्स) आपस में बराबर हो सकते हैं। सारी तारीफ़ें अल्लाह तआला ही के लिए लायक़ हैं, बल्कि उनमें से अक्सर तो जानते नहीं। (75)	ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ط هَلْ يَسْتَوٗنَ ط اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ط بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

Maktab E Ashraf

एक मिसाल

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि यह काफ़िर और मोमिन की मिसाल है। पस मिल्कियत के ग़ुलाम से मुराद काफ़िर, अच्छी रोज़ी वाले और ख़र्च करने वाले से मुराद मोमिन है। मुजाहिद फ़रमाते हैं कि इस मिसाल से बुत और ख़ुदा तआ़ला के अलग और जुदा होने को समझाना मक़सूद है, कि ये और वह बराबर के नहीं। इस मिसाल का फ़र्क़ इस क़द्र वाज़ेह (स्पष्ट) है जिसके बतलाने की ज़रूरत नहीं, इसी लिये फ़रमाया कि तारीफ़ों के लायक़ अल्लाह ही है। अक्सर मुश्रिक बेइल्मी (जहालत और नादानी) पर तुले हुए हैं।

और अल्लाह तआ़ला एक और मिसाल बयान फ़रमाते हैं, कि दो शख़्स हैं जिनमें एक तो गूँगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक वबाले जान है, वह उसको जहाँ भेजता है कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता, क्या यह शख़्स और ऐसा शख़्स आपस में बराबर हो सकते हैं जो अच्छी बातों की तालीम करता हो और ख़ुद भी एक सही रास्ते पर हो। (76)	وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۧ ع ١٠ / ١٦

दूसरी मिसाल

हो सकता है कि यह मिसाल भी उस फ़र्क़ को वाज़ेह करने के लिये हो जो अल्लाह तआ़ला में और मुश्रिकों के बुतों में है। ये बुत गूँगे हैं, न कलाम कर सकें, न कोई बात कह सकें, न किसी चीज़ पर क़ुदरत रखें, क़ौल व फ़ेल दोनों से ख़ाली, फिर महज़ बोझ, अपने मालिक पर भार, कहीं भी जाये कोई भलाई न लाये। पस एक तो यह, और एक वह जो अ़दल (इन्साफ़) का हुक्म करता रहे और ख़ुद भी सही राह पर हो, यानी क़ौल व फ़ेल दोनों के एतिबार से बेहतर, ये दोनों कैसे बराबर हो जायेंगे?

एक क़ौल है कि गूँगा हज़रत उस्मान रज़ि. का ग़ुलाम था। और हो सकता है कि यह मिसाल भी काफ़िर व मोमिन की हो, जैसे इससे पहले की आयत में थी।

कहते हैं कि क़ुरैश के एक शख़्स के ग़ुलाम का ज़िक्र पहले है, और दूसरे शख़्स से मुराद हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. हैं। और गूँगे ग़ुलाम से मुराद हज़रत उस्मान रज़ि. का वह ग़ुलाम है जिस पर आप ख़र्च करते थे, जो आपको तकलीफ़ पहुँचाता रहता था और आपने उसे काम-काज से आज़ाद कर रखा था, लेकिन फिर भी यह इस्लाम से चिढ़ता था, मुन्किर था और आपको सदक़ा करने और नेकियों से रोकता था। उनके बारे में यह आयत नाज़िल हुई है।

और आसमानों और ज़मीन की (तमाम) छुपी बातें अल्लाह ही के साथ ख़ास हैं, और	وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَآ

Maktab E Ashraf

اَمْرُالسَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِاَوْهُوَ اَقْرَبُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ٥ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ٥ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَاۗءِ ۭ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ٥	क़ियामत का मामला बस ऐसा (झटपट) होगा जैसे आँख झपकना, बल्कि इससे भी जल्दी, यकीनन अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। (77) और अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माओं के पेट से इस हालत में निकाला कि तुम कुछ भी न जानते थे, और उसने तुमको कान दिए और आँख और दिल ताकि तुम शुक्र करो। (78) क्या लोगों ने परिन्दों को नहीं देखा कि आसमान के (नीचे) मैदान में ताबे हो रहे हैं, उनको सिवाय अल्लाह के कोई नहीं थामता। इसमें ईमान वालों के लिए कई दलीले हैं। (79)

क़ियामत बहुत क़रीब है

अल्लाह तआला अपने कामिल इल्म और मुकम्मल क़ुदरत को बयान फ़रमा रहा है, कि ज़मीन व आसमान का ग़ैब (यानी तमाम छुपी चीज़ों और बातों को) वही जानता है, कोई नहीं जो ग़ैब का जानने वाला हो। खुदा जिसे चाहे जिस चीज़ पर चाहे इत्तिला दे दे, हर चीज़ उसकी क़ुदरत में है। न कोई उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कर सके न कोई उसे रोक सके। जिस काम का जब इरादा करे क़ादिर है, वह काम पूरा होकर ही रहता है। आँख बन्द करके खोलने में तो तुम्हें देर लगती होगी लेकिन हुक्मे ख़ुदा के पूरा होने में इतनी देर भी नहीं लगती।

क़ियामत का आना भी ऐसा ही आसान है, वह भी हुक्म होते ही आ जायेगी। एक का पैदा करना और सद का पैदा करना उस पर बराबर है। अल्लाह का एहसान देखो कि उसने लोगों को उनकी माँओं के पेट से निकाला, ये बिल्कुल नादान थे फिर इन्हें कान दिये जिससे सुनें, आँखें दीं जिससे देखें, दिल दिये जिससे सोचें समझें, अ़क्ल की जगह दिल है और दिमाग़ भी। कहा गया है कि अ़क्ल से ही नफ़ा-नुक़सान मालूम होता है। ये बदनी क़ुव्वतें और ये हवास इनसान को धीरे-धीरे थोड़े-थोड़े होकर मिलते हैं, उम्र के साथ-साथ इनमें भी इज़ाफ़ा होता रहता है, यहाँ तक कि वे कामिल (पूरे) हो जाते हैं। यह सब इसलिये है कि इनसान अपनी ताक़तों को खुदा की मारिफ़त (पहचानने) और इबादतों में लगाये रहे।

सही बुख़ारी में हदीसे क़ुदसी है कि जो मेरे दोस्तों से दुश्मनी करता है वह गोया कि मुझसे लड़ाई का ऐलान कर रहा है। बन्दा जिस क़द्र मेरे फ़रीज़े की अदायेगी करके मेरी नज़दीकी हासिल कर सकता है उतनी किसी और चीज़ से नहीं कर सकता। नवाफ़िल ख़ूब ज़्यादा पढ़ने से पढ़ते-पढ़ते बन्दा मेरे नज़दीक और मेरा महबूब हो जाता है। जब मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं ही उसके कान बन जाता हूँ

Maktab E Ashraf

जिनसे वह सुनता है, मैं उसकी निगाह बन जाता हूँ जिससे वह देखता है, मैं उसके हाथ बन जाता हूँ जिनसे वह थामता है और मैं उसके पैर बन जाता हूँ जिनसे वह चलता है। वह अगर मुझसे माँगे तो मैं देता हूँ, अगर दुआ करे तो मैं क़बूल करता हूँ, अगर पनाह चाहे तो मैं पनाह देता हूँ। और मुझे किसी काम के करने में इतना पसोपेश नहीं होता जितना मोमिन की रूह के क़ब्ज़ करने में। वह मौत को नापसन्द करता है, मैं उसे नाराज़ करना नहीं चाहता, और मौत ऐसी चीज़ ही नहीं जिससे किसी रूह वाले को निजात मिल सके।

इस हदीस का मतलब यह है कि जब मोमिन बन्दा इख़्लास और इताअ़त में कामिल हो जाता है तो उसके तमाम अफ़आ़ल (काम और आमाल) पूरी तरह अल्लाह के लिये हो जाते हैं। वह सुनता है तो अल्लाह के लिये, देखता है तो अल्लाह के लिये, यानी शरीअ़त की बातें सुनता है, शरीअ़त ने जिन चीज़ों का देखना जायज़ किया है उन्हीं को देखता है। इसी तरह उसका हाथ बढ़ाना, पाँव चलाना भी अल्लाह की रज़ामन्दी के कामों के लिये ही होता है। अल्लाह पर उसका भरोसा होता है, उसी से मदद चाहता है, उसके तमाम काम अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहने के लिये ही होते हैं। इसलिये बाज़ ग़ैर-सही हदीसों में इसके बाद यह भी आया है कि फिर वह मेरे लिये ही सुनता है, मेरे लिये ही देखता है, मेरे लिये ही पकड़ता है और मेरे लिये ही चलता फिरता है। आयत में बयान है कि माँ के पेट से वह निकालता है, कान, आँख, दिल व दिमाग़ वह देता है, ताकि तुम शुक्र अदा करो। एक और आयत में फ़रमान है:

قُلْ هُوَ الَّذِىْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ..... الخ.

यानी अल्लाह ही ने तुम्हें पैदा किया है और तुम्हारे लिये कान, आँख और दिल बनाये हैं, लेकिन तुम बहुत ही कम शुक्रगुज़ारी करते हो। उसी ने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया है और उसी की तरफ़ तुम्हारा हश्र किया जाने वाला (यानी मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना) है।

फिर अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन अपने बन्दों से फ़रमाता है कि उन परिन्दों की तरफ़ देखो जो आसमान व ज़मीन के बीच फ़िज़ा में परवाज़ करते फिरते हैं। उन्हें परवर्दिगार ही अपनी क़ुदरते कामिला से थामे हुए है। यह उड़ने की क़ुव्वत उसी ने उन्हें दे रखी है, और हवाओं को उनके ताबे बना रखा है। सूरः मुल्क में भी यही फ़रमान है कि क्या वे अपने सरों पर उड़ते हुए परिन्दों को नहीं देखते? जो पंख खोल हुए हैं और पंख सिमटे हुए भी हैं। उन्हें अल्लाह रहमान व रहीम के अ़लावा कौन थामता है? वह ख़ुदा तमाम मख़्लूक़ को बख़ूबी देख रहा है। यहाँ भी समापन पर फ़रमाया कि इसमें ईमान वालों के लिये बहुत से निशान हैं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَا اَثَاثًا

और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारे घरों में रहने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिनको तुम अपने कूच के दिन और ठहरने के दिन हल्का (फुल्का) पाते हो, और उनकी ऊन और उनके रुओं और उनके बालों से घर का सामान और फ़ायदे की चीज़ें एक मुद्दत तक के लिए

Maktab E Ashraf

وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ٥ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ٥ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ٥ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ٥ ع

बनाईं। (80) और अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए अपनी बाज़ मख़्लूक़ात के साये बनाए, और तुम्हारे लिए पहाड़ों में पनाह की जगह बनाई, और तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते बनाए जो गर्मी से तुम्हारी हिफ़ाज़त करें, और ऐसे कुर्ते बनाए जो तुम्हारी लड़ाई से तुम्हारी हिफ़ाज़त करें। अल्लाह तुम पर इसी तरह अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फ़रमाँबरदार रहो। (81) फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो आपके ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। (82) वे लोग ख़ुदा की नेमत को पहचानते हैं फिर उसके इनकारी होते हैं, और ज़्यादा उनमें नाशुक्रे हैं। (83)

एहसानों की एक मुख़्तसर सूची

इन आयतों में अपनी नेमतों का ज़िक्र फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाता है कि हम ही ने इनसान के रहने सहने, आराम व राहत हासिल करने के लिये उन्हें मकानात दे रखे हैं। इसी तरह चौपाये जानवर की खालों के ख़ेमे, डेरे, तम्बू उसने अ़ता फ़रमा रखे हैं, कि सफ़र में काम आयें। न ले जाना दूभर न लगाना मुश्किल न उखेड़ने में कोई तकलीफ़। फिर बकरियों के बाल, ऊँटों के बाल, भेड़ों और दुंबों की ऊन व्यापार तिजारत के लिये माल की शक्ल में उसने बना दी है, वह घर के बरतने की चीज़ भी है, उससे कपड़े भी बनते हैं, फ़र्श भी तैयार होते हैं, कारोबार के तौर पर व्यापार का माल है, फ़ायदे की चीज़ है जिससे लोग मुक़र्ररा वक़्त तक फ़ायदा उठाते हैं।

उसने तुम्हारे फ़ायदे और राहत के लिये पेड़ों के साये बनाये हैं, पहाड़ों पर ग़ार, क़िले वग़ैरह उसने तुम्हें दे रखे हैं कि उनमें पनाह हासिल करो। छुपने और रहने सहने की जगह बना लो। उसने तुम्हें सूती, ऊनी और बालों के कपड़े दे रखे हैं कि उन्हें पहनकर सर्दी गर्मी से हिफ़ाज़त के साथ अपना सतर छुपाओ और सजो संवरो। और उसने तुम्हें ज़िरहें, ख़ुद बक्तर (यानी लोहे के लिबास और टोपी) अ़ता फ़रमाये हैं जो दुश्मनों के हमले और लड़ाई के वक़्त तुम्हें काम दें। इसी तरह वह तुम्हें तुम्हारी ज़रूरत की पूरी-पूरी नेमतें दिये चला जाता है कि तुम राहत व आराम पाओ और इत्मीनान से अपने असली नेमत देने वाले की इबादत में लगे रहो। "तुस्लिमू-न" की दूसरी क़िराअत "तुस्लमू-न" भी है, यानी तुम सलामत रहो। और पहली क़िराअत के मायने हैं- ताकि तुम फ़रमाँबरदार बन जाओ।

इस सूरत का नाम सूरतुन्निअ़म भी है। लाम की ज़बर वाली क़िराअत से यह भी मुराद है कि तुमको उसने लड़ाई में काम आने वाली चीज़ें दीं, कि तुम सलामत रहो, दुश्मन के वार से बचो। बेशक जंगल में

बयाबान भी ख़ुदा की बड़ी नेमत है, लेकिन यहाँ पहाड़ों की नेमत इसलिये बयान की कि जिनसे कलाम है (यानी जिनकी बात हो रही है) वे पहाड़ों के रहने वाले थे, तो उनकी मालूमात के मुताबिक़ उनसे कलाम हो रहा है। इसी तरह चूँकि वे भेड़ बकरियों और ऊँटों वाले थे, उन्हें यही नेमतें याद दिलायीं, हालाँकि इनसे बढ़कर और भी ख़ुदा की नेमतें मख़्लूक़ के हाथों में बेशुमार हैं। और यही वजह है कि सर्दी के उतारने के एहसान को बयान फ़रमाया, हालाँकि इससे भी और बड़े एहसान मौजूद हैं। लेकिन यह उनके सामने की और उनकी मालूमात की चीज़ थी।

इसी तरह चूँकि ये लड़ने-भिड़ने वाले जंगजू लोग थे, लड़ाई के बचाव की चीज़ नेमत के तौर पर उनके सामने रखी, हालाँकि इससे सैंकड़ों बड़ी नेमतें मख़्लूक़ के हाथ में मौजूद हैं। इसी तरह चूँकि उनका मुल्क गर्म था, फ़रमाया कि लिबास से तुम गर्मी की तकलीफ़ दूर करते हो, वरना क्या इससे बेहतर उस नेमत देने वाले की और नेमतें बन्दों के पास नहीं? इसलिये इन नेमतों और रहमतों के इज़हार के बाद ही फ़रमाता है कि अगर अब भी ये लोग मेरी इबादत और तौहीद (मेरे एक होने) के और मेरे बेशुमार एहसानों के क़ायल न हों तो तुझे इनकी ऐसी क्या पड़ी है? छोड़ दे, अपने काम में लग जा। तेरे ज़िम्मे तो सिर्फ़ तब्लीग़ (बात का पहुँचाना) ही है, वह किये जा। ये ख़ुद जानते हैं कि अल्लाह तआ़ला ही नेमतों का देने वाला है और उसकी बेशुमार नेमतें उनके हाथों में हैं, लेकिन बावजूद इल्म के मुन्किर हो रहे हैं और उसके साथ दूसरों की इबादत करते हैं, बल्कि उसकी नेमतों को दूसरों की तरफ़ मन्सूब करते हैं। समझते हैं कि मददगार फ़ुलाँ है, रिज़्क़ देने वाला फ़ुलाँ है, ये अक्सर लोग काफ़िर हैं, ख़ुदा के नाशुक्रे हैं।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक देहाती रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया। आपने उसके सामने इस आयत की तिलावत की कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें रहने सहने की जगह के लिये घर और मकानात दिये। उसने कहा सच है। फिर आपने पढ़ा कि उसने तुम्हें चौपायों (जानवरों) की खालों के ख़ेमे दिये, उसने कहा यह भी सच है। इसी तरह आप इन आयतों को पढ़ते गये और वह हर-हर नेमत का इक़रार करता रहा। आख़िर में आपने पढ़ा- ताकि तुम मुसलमान और फ़रमाँबरदार (अल्लाह और उसके रसूल के अहकाम को मानने वाले) हो जाओ। उस वक़्त वह पीठ फेरकर चल दिया तो अल्लाह तआ़ला ने आख़िरी आयत उतारी कि इक़रार के बाद इनकार करके काफ़िर हो जाते हैं।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ○ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ○ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا	और जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर उन काफ़िरों को इजाज़त न दी जाएगी और न उनको हक़ तआ़ला के राज़ी करने की फ़रमाईश की जाएगी। (84) और जब ज़ालिम लोग अ़ज़ाब को देखेंगे तो वह अ़ज़ाब न उनसे कुछ हल्का किया जाएगा और न वे कुछ मोहलत दिए जाएँगे। (85) और जब वे मुश्रिक लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! वे हमारे शरीक यही हैं कि आपको छोड़कर हम इनको पूजा करते थे। सो वे उनकी

Maktab E Ashraf

الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ۣ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ۝	तरफ़ बात को मुतवज्जह करेंगे कि तुम झूठे हो। (86) और ये लोग उस दिन अल्लाह के सामने इताअ़त की बातें करने लगेंगे और जो कुछ बोहतान बाज़ियाँ करते थे वे सब गुम हो जाएँगी। (87) जो लोग कुफ़्र करते थे और अल्लाह की राह से रोकते थे उनके लिए हम एक सज़ा पर दूसरी सज़ा उनके फ़साद की वजह से बढ़ा देंगे। (88)

क़ियामत और उस दिन के अ़ज़ाब

क़ियामत के दिन मुश्रिकों की जो दुर्गत बनेगी उसका ज़िक्र हो रहा है कि उस दिन हर उम्मत पर उसका नबी गवाही देगा कि उसने कलामे ख़ुदा (यानी ख़ुदा का पैग़ाम) उन्हें पहुँचा दिया था। फिर काफ़िरों को उज़्र व माज़िरत की भी इजाज़त न मिलेगी, क्योंकि उनका ग़लती पर होना और झूठ बिल्कुल ज़ाहिर है। सूरः मुर्सलात में भी यही फ़रमान है कि उस दिन न वे बोलेंगे न उन्हें उज़्र व माज़िरत की इजाज़त मिलेगी। मुश्रिक लोग अ़ज़ाब को देखेंगे लेकिन फिर कोई कमी न होगी, एक घड़ी के लिये भी अ़ज़ाब हल्का न होगा, न उन्हें कोई मोहलत मिलेगी। अचानक पकड़ लिये जायेंगे, जहन्नम आन मौजूद होगी जो सत्तर हज़ार लगामों वाली होगी, जिसकी एक लगाम पर सत्तर-सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे, उसमें से एक गर्दन निकलेगी जो इस तरह भिनभिनायेगी कि मेहशर के तमाम लोग ख़ौफ़ज़दा होकर घुटनों के बल गिर पड़ेंगे। उस वक़्त जहन्नम अपनी ज़बान से बुलन्द आवाज़ से ऐलान करेगी कि मैं हर उस सरकश ज़िद्दी के लिये मुक़र्रर की गयी हूँ जिसने ख़ुदा के साथ किसी और को शरीक किया हो और ऐसे-ऐसे काम किये हों। चुनाँचे वह कई क़िस्म के गुनाहगारों का ज़िक्र करेगी जैसा कि हदीस में है। फिर वह उन तमाम लोगों को लिपट जायेगी और मैदाने मेहशर में से उन्हें लपक लेगी, जैसे कि परिन्दा दाना चुगता है।

अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ ۢ بَعِيْدٍ...... الخ.

जबकि वह दूर से दिखाई देगी तो उसका शोर व गुल, कड़कना, भड़कना ये सुनने लगेंगे। और जब उसके तंग और अंधेरे मकान में झोंक दिये जायेंगे तो मौत को पुकारेंगे, आज एक छोड़ कई एक मौतों को भी पुकारें तो क्या हो सकता है?

एक और आयत में है:

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ.......

गुनाहगार जहन्नम को देखकर समझ लेंगे कि वे उसमें झोंक दिये जायेंगे, लेकिन वे अपना कोई बचाव

न देखेंगे। एक और आयत में है:

لَوْيَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا.......

काश! काफ़िर उस वक़्त को जान लेते जबकि वे अपने चेहरों पर से और अपनी कमरों पर से जहन्नम की आग को दूर न कर सकेंगे, न किसी को मददगार पायेंगे। अचानक अ़ज़ाबे ख़ुदा उन्हें हैरान कर देगा। न उन्हें उसके दूर करने की ताक़त होगी न एक मिनट की मोहलत मिलेगी। उस वक़्त उनके झूठे माबूद जिनकी उम्र भर इबादतें और नज़्रें-नियाज़ें करते रहे, उनसे बिल्कुल बेज़ार हो जायेंगे, और उनकी ज़रूरत के वक़्त उनके बिल्कुल भी काम न आयेंगे। उन्हें देखकर ये कहेंगे कि ख़ुदाया! ये हैं जिन्हें हम दुनिया में पूजते रहे। वे कहेंगे तुम झूठे हो, हमने कब तुमसे कहा था कि ख़ुदा को छोड़कर हमारी पूजा और इबादत करो? इसी को अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ..... الخ.

यानी उससे ज़्यादा कोई गुमराह नहीं जो अल्लाह के सिवा उन्हें पुकारता है जो उसे क़ियामत तक जवाब न दें, बल्कि वे उनके पुकारने से भी बेख़बर हों और हश्र के दिन उनके दुश्मन होने वाले हों और उनकी इबादत का इनकार कर जाने वाले हों। एक और आयत में है कि अपना हिमायती और इ़ज़्ज़त का ज़रिया जानकर जिन्हें ये पुकारते रहे वे इनकी इबादतों के मुन्किर हो जायेंगे और इनके मुख़ालिफ़ बन जायेंगे। हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने भी यही फ़रमाया कि:

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ..... الخ.

यानी क़ियामत के दिन एक दूसरे के मुन्किर हो जायेंगे। एक और आयत में है कि उन्हें क़ियामत के दिन हुक्म होगा कि अपने शरीकों को पुकारो। अल्लाह के कलाम में इस मज़मून की और भी बहुत सी आयतें मौजूद हैं। उस दिन सब के सब मुसलमान (बात मानने वाले) और फ़रमान के ताबे हो जायेंगे जैसा कि फ़रमान है:

اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا......

यानी जिस दिन ये हमारे पास आयेंगे उस दिन ख़ूब ही सुनते देखते बन जायेंगे।

एक और आयत में है:

وَلَوْتَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ..... الخ.

तू देखेगा कि उस दिन गुनाहगार लोग अपने सर झुकाये कह रहे होंगे कि ख़ुदाया हमने देख लिया सुन लिया....।

एक और आयत में है कि सब चेहरे उस दिन ख़ुदा तआ़ला के सामने झुके हुए होंगे, ताबे और मुतीअ़ (हुक्म मानने वाले) होंगे, फ़रमान के ताबे होंगे। उनके सारे बोहतान व इल्ज़ाम जाते रहेंगे, सारी चालाकियाँ ख़त्म हो जायेंगी, कोई नासिर व मददगार खड़ा न होगा। जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें उनके कुफ़्र की सज़ा होगी और अपने कुफ़्र में औरों को घसीटने की और डबल सज़ा होगी। ये वे हैं जो हक़ से ख़ुद भी दूर भागते थे और दूसरों को भी हक़ से दूर भगाते रहते थे। दर असल वे आप ही हलाकत की दलदल में फंस रहे थे, लेकिन थे बेवक़ूफ़। इससे मालूम होता है कि काफ़िरों के अ़ज़ाब के भी दर्जे होंगे, जिस तरह मोमिनों

Maktab E Ashraf

के जज़ा (सवाब और अच्छे बदले) के दर्जे होंगे। जैसे कि अल्लाह का फ़रमान है:

لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّاتَعْلَمُوْنَ.

कि हर एक के लिये दोहरा है, लेकिन तुम्हें इल्म नहीं।

अबू यअ़ला में हज़रत अ़ब्दुल्लाह से नक़ल किया गया है कि अ़ज़ाबे जहन्नम के साथ ही ज़हरीले साँपों का डसना बढ़ जायेगा, जो इतने बड़े-बड़े होंगे जितने खजूर के बड़े पेड़ होते हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि अ़र्श के नीचे से पाँच नहरें आती हैं जिनसे जहन्नमियों को अ़ज़ाब होगा, रात को भी और दिन को भी।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ۠ ع ١٢ ١٨	और जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह जो उन्हीं में का होगा, उनके मुक़ाबले में खड़ा करेंगे, और उन लोगों के मुक़ाबले में आपको गवाह बनाकर लाएँगे। और हमने आप पर क़ुरआन उतारा है कि (दीन की) तमाम बातों का बयान करने वाला है, और मुसलमानों के वास्ते बड़ी हिदायत और बड़ी रहमत और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला है। (89)

हर उम्मत में एक नबी

अल्लाह तआ़ला अपने सम्मानित रसूल सल्ल. से ख़िताब करके फ़रमा रहा है कि उस दिन को याद कर और उस दिन जो तेरी बड़ाई व सम्मान होने वाला है उसका भी ज़िक्र कर। यह आयत भी वैसी ही है जैसी सूरः निसा के शुरू की आयत है:

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ ۢبِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا.

यानी क्योंकर गुज़रेगी जबकि हम हर उम्मत में से गवाह लायेंगे और तुझे उन पर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे।

हुज़ूर सल्ल. ने एक बार हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से सूरः निसा पढ़वाई। जब वह इस आयत तक पहुँचे तो आपने फ़रमाया- बस कर, काफ़ी है। इब्ने मसऊद रज़ि. ने देखा कि उस वक़्त आप सल्ल. की आँखों से आँसू बह रहे थे। फिर फ़रमाता है कि इस हमारी उतारी हुई किताब में हमने तेरे सामने सब कुछ बयान फ़रमा दिया है, हर इल्म और हर चीज़ इस क़ुरआन में है, हर हलाल हराम, हर एक नफ़ा देने वाला इल्म, हर भलाई, पहले ज़माने और पहली उम्मतों की ख़बरें, आईन्दा के वाक़िआत, दीन व दुनिया, खाने-कमाने और आख़िरत की ज़िन्दगी के ज़रूरी अहकाम व अहवाल इसमें मौजूद हैं। यह दिलों की हिदायत है, यह रहमत है, यह ख़ुशख़बरी है।

इमाम औज़ाई रह. फ़रमाते हैं कि यह किताब सुन्नते रसूल सल्ल. को मिलाकर हर चीज़ का बयान है। इस आयत का ऊपर वाली आयत से ग़ालिबन यह ताल्लुक़ है कि जिसने तुझ पर इस किताब की तब्लीग़

Maktab E Ashraf

फ़र्ज़ की है और इसे नाज़िल किया है, वह क़ियामत के दिन तुझसे इसके बारे में सवाल करने वाला है। जैसे फ़रमान है कि उम्मतों और रसूलों से सबसे सवाल होगा। अल्लाह हम सबसे उनके आमाल की पूछताछ करेंगे। रसूलों को जमा करके उनसे सवाल होगा कि तुम्हें क्या जवाब मिला? वे कहेंगे हमें कोई इल्म नहीं, तू तमाम ग़ैबों का जानने वाला है। एक और आयत में है:

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰی مَعَادٍ.

यानी जिसने तुझ पर क़ुरआन की तब्लीग़ (पहुँचाना) फ़र्ज़ की है, वह तुझे क़ियामत के दिन अपने पास लौटाकर अपने सौंपे हुए फ़रीज़े के बारे में तुझसे पूछने वाला है। यह एक क़ौल भी इस आयत की तफ़सीर में है और है भी माक़ूल और उम्दा।

اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْیِ ۚ یَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ۝	बेशक अल्लाह तआ़ला एतिदाल और एहसान और अहले क़राबत "यानी रिश्तेदारों और क़रीबी ताल्लुक़ वालों" को देने का हुक्म फ़रमाते हैं, और खुली बुराई और मुतलक़ बुराई और ज़ुल्म करने से मना फ़रमाते हैं। अल्लाह तआ़ला तुमको इसलिए नसीहत फ़रमाते हैं कि तुम नसीहत क़ुबूल करो। (90)

बुराईयों से रोकिये

अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला अपने बन्दों को अ़दल व इन्साफ़ का हुक्म देता है और अच्छे सुलूक व एहसान की रहनुमाई कर देता है, अगरचे बदला लेना भी जायज़ है। जैसे एक आयत में है:

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا......... الخ.

कि अगर बदला लो तो पूरे इन्साफ़ से बदला ले सकते हो, लेकिन अगर सब्र कर लो तो क्या ही कहना है, यह बड़ी मर्दानगी की बात है।

एक और आयत में फ़रमाया कि इसका अज्र अल्लाह के यहाँ मिलेगा। एक और आयत में है कि ज़ख़्मों का क़िसास (बदला) है, लेकिन जो माफ़ कर दे तो यह उसके गुनाहों की माफ़ी है। पस अ़दल तो फ़र्ज़ है और एहसान करना नफ़िल। कलिमा-ए-तौहीद की गवाही भी अ़दल है, ज़ाहिर बातिन की एक-रंगी (यानी इनसान के अन्दर बाहर का एक जैसा होना) भी अ़दल है। और एहसान यह है कि बातिन की सफ़ाई ज़ाहिर से भी ज़्यादा हो। और बुराई व बेहयाई यह है कि बातिन में खोट हो और ज़ाहिर में बनावट हो। वह सिला-रहमी का भी हुक्म देता है जैसे साफ़ लफ़्ज़ों में इरशाद है:

وَاٰتِ ذَاالْقُرْبٰی حَقَّهٗ..... الخ.

कि रिश्तेदारों को, मिस्कीनों को, मुसाफ़िरों को उनका हक़ दो और फ़ुज़ूलख़र्ची में और बेजा न उड़ाओ। हराम की गयी और ग़लत जगहों से वह तुम्हें रोकता है, बुराईयों से वह मना करता है, ज़ाहिरी व बातिनी तमाम बुराईयाँ हराम हैं, लोगों पर ज़ुल्म व ज़्यादती हराम है। हदीस में है कि कोई गुनाह ज़ुल्म व

ज़्यादती व रिश्ता तोड़ने से बढ़कर ऐसा नहीं कि दुनिया में भी जल्द ही उसका बदला मिले और आख़िरत में सख़्त पकड़ हो। अल्लाह के ये अहकाम और ये मना की हुई बातें तुम्हारी नसीहत के लिये हैं।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि सारे क़ुरआन में सूरः नहल की यह आयत जामे है (यानी ये अपने अन्दर सारी चीज़ों को लिये हुए है)। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि जो अच्छी आ़दतें हैं उनका हुक्म क़ुरआन ने दिया है और जो बुरी ख़स्लतें लोगों में हैं उनसे अल्लाह तआ़ला ने रोक दिया है। बद-अख़्लाक़ी और बुराई से मनाही कर दी है। हदीस शरीफ़ में है कि बेहतरीन अख़्लाक़ अल्लाह को पसन्द हैं और बद-ख़ुल्क़ी को वह नापसन्द रखता है।

अक्सम बिन सैफ़ी को जब रसूलुल्लाह सल्ल. के बारे में इत्तिला हुई तो उसने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने की ठान ली, लेकिन उसकी क़ौम उसके सर पर सवार हो गयी और उसे रोक लिया। उसने कहा- अच्छा मुझे नहीं जाने देते तो क़ासिद लाओ जिन्हें मैं वहाँ भेजूँ। दो शख़्स इस ख़िदमत को अन्जाम देने के लिये तैयार हुए। यहाँ आकर उन्होंने कहा कि हम अक्सम बिन सैफ़ी के क़ासिद हैं, वह आपसे पूछता है कि आप कौन हैं और क्या हैं? आप सल्ल. ने फ़रमाया पहले सवाल का जवाब तो यह है कि मैं मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हूँ (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)। और दूसरे सवाल का जवाब यह है कि मैं ख़ुदा का बन्दा और उसका रसूल हूँ। फिर आपने यही आयत उन्हें पढ़कर सुनाई। उन्होंने कहा, दोबारा पढ़िये, आप सल्ल. ने फिर पढ़ी, यहाँ तक कि उन्होंने याद कर ली। फिर वापस जाकर अक्सम को सब ख़बर दी और कहा, अपने नसब (ख़ानदान) पर उसने कोई फ़ख़्र नहीं किया, सिर्फ़ अपना और अपने वालिद का नाम बता दिया। लेकिन हैं वह बड़े नसब वाले। मुज़र में से आला ख़ानदान के हैं, और फिर ये कलिमात हमें तालीम फ़रमाये जो आपकी ज़बानी हमने सुने। यह सुनकर अक्सम ने कहा कि वह तो बड़ी अच्छी और आला बातें सिखाते हैं और बुरी व घटिया बातों से रोकते हैं, मेरे क़बीले के लोगो! तुम इस्लाम की तरफ़ सबक़त (दौड़ो और पहल) करो, ताकि तुम दूसरों पर सरदारी करो और दूसरों के हाथों में दुमें बनकर न रह जाओ।

इस आयत के शाने नुज़ूल में एक हसन हदीस मुस्नद इमाम अहमद में वारिद हुई है। इब्ने अ़ब्बास फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. अपनी अंगनाई में बैठे हुए थे कि उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि. आपके पास से गुज़रे। आपने फ़रमाया बैठते नहीं हो? वह बैठ गये। आप उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर बातें कर रहे थे कि हुज़ूर सल्ल. ने अचानक अपनी नज़रें आसमान की जानिब उठा लीं। कुछ देर ऊपर ही को देखते रहे फिर निगाहें आहिस्ता-आहिस्ता नीचे कीं और अपनी दायीं तरफ़ की ज़मीन को देखने लगे और उसी तरफ़ अपना रुख़ भी कर लिया, और इस तरह सर हिलाने लगे गोया किसी से कुछ समझ रहे हैं और कोई आप सल्ल. से कुछ कह रहा है। थोड़ी देर तक यही हालत तारी रही, फिर आपने निगाहें ऊँची करनी शुरू कीं, यहाँ तक कि आसमान तक आपकी निगाहें पहुँचीं, फिर आप ठीक-ठाक हो गये और उसी पहले के अन्दाज़ पर हज़रत उस्मान की तरफ़ मुतवज्जह होकर बैठ गये।

वह यह सब देख रहे थे, उनसे सब्र न हो सका, पूछा कि हज़रत के पास कई बार बैठने का इत्तिफ़ाक़ हुआ लेकिन आज जैसा मन्ज़र तो कभी नहीं देखा। आपने पूछा तुमने क्या देखा? कहा यह कि आपने अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाई फिर नीचे कर ली, और अपनी दायीं तरफ़ देखने लगे और उसी तरफ़ घूमकर बैठ गये, मुझे छोड़ दिया। फिर इस तरह सर हिलाने लगे जैसे आपसे कोई कुछ कह रहा हो और आप उसे अच्छी तरह सुन समझ रहे हों।

Maktaba Ashraf

आप सल्ल. ने फ़रमाया- अच्छा तुमने यह सब कुछ देखा? उन्होंने कहा बराबर देखता ही रहा। आपने फ़रमाया- मेरे पास ख़ुदा का भेजा हुआ फ़रिश्ता 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) लेकर आया था। उन्होंने कहा ख़ुदा का भेजा हुआ? आपने फ़रमाया हाँ! ख़ुदा का भेजा हुआ। पूछा फिर उसने आपसे क्या कहा? आपने यही आयत पढ़कर सुनाई।

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसी वक़्त मेरे दिल में ईमान बैठ गया और हुज़ूर सल्ल. की मुहब्बत ने मेरे दिल में जगह पकड़ ली। एक और रिवायत में हज़रत उस्मान बिन अबुल-आस रज़ि. से रिवायत है कि मैं हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में बैठा हुआ था कि आपने अपनी निगाहें ऊपर को उठायीं और फ़रमाया- जिब्राईल मेरे पास आये और मुझे हुक्म दिया कि मैं इस आयत को इस सूरत में इस जगह रखूँ। यह रिवायत भी सही है। वल्लाहु आलम

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝

और तुम अल्लाह के अ़हद को पूरा करो जबकि तुम उसको अपने ज़िम्मे कर लो, और क़समों को उनके मज़बूत करने के बाद मत तोड़ो, और तुम अल्लाह तआ़ला को गवाह भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह तआ़ला को मालूम है जो कुछ तुम करते हो। (91) और तुम उस औरत के जैसे मत बनो जिसने अपना सूत कातने के बाद बोटी-बोटी करके नोच डाला, कि तुम अपनी क़समों को आपस में फ़साद डालने का ज़रिया बनाने लगो, महज़ इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए, बस इससे अल्लाह तआ़ला तुम्हारी आज़माइश करता है। और जिन चीज़ों में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे क़ियामत के दिन उन सबको तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर देगा। (92)

अ़हद और वादे का पूरा करना

अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को हुक्म देता है कि वे अ़हद व पैमान की हिफ़ाज़त करें, क़समों को निभायें, तोड़ें नहीं। यहाँ क़समों को न तोड़ने की ताकीद की। एक और आयत में फ़रमाया कि अपनी क़समों का निशाना ख़ुदा को न बनाओ। इससे भी क़समों की हिफ़ाज़त करानी मक़सूद है। एक और आयत में है कि क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा है, क़समों की पूरी हिफ़ाज़त करो। पस आयतों में यह हुक्म है और बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है, नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं ख़ुदा की क़सम! मैं जिस चीज़ पर क़सम खा लूँ और फिर उसके ख़िलाफ़ में बेहतरी देखूँ तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला उस नेक काम को करूँगा और

अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दूँगा।

ऊपर बयान हुई आयतों और हदीसों में कुछ फ़र्क़ न समझा जाये। वे क़समें और अ़हद व पैमान जो आपस के मुआ़हिदे (समझौते) और वादे के तौर पर हों उनका पूरा करना तो बेशक बेहद ज़रूरी है, और जो क़समें तवज्जोह और दिलचस्पी दिलाने, रोकने के लिये ज़बान से निकल जायें वे बेशक कफ़्फ़ारा देकर टूट सकती हैं। पस इस आयत में जाहिलीयत के ज़माने जैसी क़समें मुराद हैं। चुनाँचे मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि इस्लाम में दो जमाअ़तों की आपस में एक रहने की क़सम कोई चीज़ नहीं, हाँ जाहिलीयत में ऐसी इमदाद व सहयोग की जो क़समें आपस में हो चुकी हैं, इस्लाम उनको और मज़बूत करता है। इस हदीस के पहले जुमले के यह मायने हैं कि इस्लाम क़बूल करने के बाद अब इसकी ज़रूरत नहीं कि एक बिरादरी वाले दूसरी बिरादरी वालों से अ़हद व पैमान करें कि हम तुम एक हैं, राहत व रंज में शरीक हैं वग़ैरह, क्योंकि इस्लाम का रिश्ता तमाम मुसलमानों को एक बिरादरी कर देता है। पूरब व पश्चिम के मुसलमान एक दूसरे के हमदर्द व ग़मख़्वार हैं।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि हज़रत अनस रज़ि. के घर में रसूले करीम सल्ल. ने अन्सार व मुहाजिरीन को आपस में क़सम दी। इससे यह वर्जित भाई-बन्दी मुराद नहीं। यह तो भाईचारा था जिसकी बिना पर आपस में एक दूसरे के वारिस होते थे। आख़िर में यह हुक्म मन्सूख़ (निरस्त और ख़त्म) हो गया और मीरास क़रीबी रिश्तेदारों के साथ मख़्सूस हो गयी। कहते हैं कि इस फ़रमाने ख़ुदा से मतलब उन मुसलमानों को इस्लाम पर जमे रहने का हुक्म देना है जो हुज़ूर सल्ल. के हाथ पर बैअ़त करके इस्लाम के अहकाम की पाबन्दी का इक़रार करते थे, तो उन्हें फ़रमाता है कि ऐसी ताकीदी क़सम और पूरे अ़हद के बाद कहीं ऐसा न हो कि मुसलमानों की जमाअ़त की कमी और मुश्रिकों की जमाअ़त की अधिकता देखकर तुम इसे तोड़ दो।

फ़ायदाः मुस्नद अहमद में है कि जब लोग यज़ीद बिन मुआ़विया की बैअ़त तोड़ने लगे तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने अपने तमाम घराने के लोगों को जमा किया और ख़ुदा की तारीफ़ बयान करने के बाद फ़रमाया कि हमने यज़ीद की बैअ़त अल्लाह व रसूल की बैअ़त पर की है, और मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि हर ग़द्दार के लिये क़ियामत के दिन एक झण्डा गाड़ा जायेगा और ऐलान किया जायेगा कि यह ग़द्दार है, फ़ुलाँ जो पुत्र है फ़ुलाँ का। अल्लाह के साथ शरीक करने के बाद सबसे बड़ा और सबसे बुरा ग़द्दार यह है कि अल्लाह और रसूल की बैअ़त किसी के हाथ पर करके फिर तोड़ देना। याद रखो! तुममें से कोई यह बुरा काम न करे, और इस बारे में हद से न बढ़े, वरना मुझमें और उसमें जुदाई है।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- जो शख़्स किसी मुसलमान भाई से कोई शर्त करे और उसे पूरा करने का इरादा न रखता हो तो वह उस शख़्स के जैसा है जो अपने पड़ोसी को अमन देने के बाद बेपनाह (बेसहारा) छोड़ दे। फिर उन्हें धमकाता है जो अ़हद व पैमान की हिफ़ाज़त न करें, कि उनके इस फ़ेल से ख़ुदा तआ़ला अच्छी तरह वाक़िफ़ है।

मक्का शरीफ़ में एक औ़रत थी जिसकी अ़क्ल में फ़तूर था, सूत कातने के बाद ठीक-ठाक और मज़बूत हो जाने के बाद बिना किसी कारण के तोड़कर फिर टुकड़े कर देती। तो यह मिसाल है उसकी जो अ़हद को मज़बूत करके फिर तोड़ दे, यही बात ठीक है। अब इसे जाने दीजिए कि वास्तव में कोई ऐसी औ़रत थी भी या नहीं, जो यह करती हो, यहाँ तो सिर्फ़ मिसाल मक़सूद है।

फिर फ़रमाता है कि क़समों को मक्र व फ़रेब का ज़रिया न बनाओ, कि अपने से बड़ों को अपनी

क़समों से इत्मीनान दिलाओ और अपनी ईमानदारी और नेक-नीयती का सिक्का बैठाकर फिर ग़द्दारी और बेईमानी कर जाओ। उनकी कसरत (अधिकता) देखकर झूठे वादे करके सुलह कर लो और फिर मौक़ा पाकर लड़ाई शुरू कर दो, ऐसा न करो। पस जबकि इस हालत में भी अ़हद तोड़ना हराम कर दिया तो अपने ग़लबे और अपनी अधिकता के वक़्त तो और भी ज़्यादा हराम हुआ।

अल्हम्दु लिल्लाह हम सूरः अनफ़ाल में हज़रत मुआ़विया रज़ि. का क़िस्सा लिख आये हैं कि उनमें और रोम के बादशाह में एक मुद्दत तक के लिये सुलह-नामा हो गया था। उस मुद्दत के ख़ात्मे के क़रीब आपने मुजाहिदों को रोम की सरहद की तरफ़ रवाना किया, ताकि वे सरहद पर पडाव डालें और मुद्दत के ख़त्म होते ही धावा बोल दें, ताकि रोमियों को तैयारी का मौक़ा न मिले। जब हज़रत अ़मर बिन अ़म्बसा रज़ि. को यह ख़बर हुई तो आप हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ि. के पास आये और कहने लगे अल्लाहु अकबर! ऐ मुआ़विया अ़हद पूरा कर, धोखा देने और अ़हद के ख़िलाफ़ करने से बच। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि जिस क़ौम से मुआ़हिदा हो जाये तो जब तक कि सुलह की मुद्दत ख़त्म न हो जाये कोई गिरह खोलने की भी इजाज़त नहीं। यह सुनते ही हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने अपने लश्करों को वापस बुलवा लिया।

"अरबा" से मुराद अक्सर (ज़्यादा होना) है। इस जुमले का यह मतलब भी है कि अगर देखा कि दुश्मन ताक़तवर और ज़्यादा है, सुलह कर ली, और उस सुलह को धोखे और फ़रेब का ज़रिया बनाकर उन्हें ग़ाफ़िल करके चढ़ दौड़े। और यह भी मतलब है कि एक क़ौम से समझौता कर लिया, फिर देखा कि दूसरी क़ौम उनसे ज़्यादा ताक़तवर है, उससे मामला कर लिया और पहले समझौते को तोड़ दिया। यह सब मना है। इस कसरत (संख्या के अधिक होने) से अल्लाह तुम्हें आज़माता है, या यह कि अपने इस हुक्म से यानी वादे की पाबन्दी के हुक्म से अल्लाह तुम्हारी आज़माईश करता है, और तुम में सही फ़ैसले क़ियामत के दिन वह ख़ुद कर देगा। हर एक को उसके आमाल का बदला देगा। नेकों को नेक, बुरों को बुरा।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰـكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْـَٔـلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ

और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता तो तुम सबको एक ही तरीक़े का बना देते, लेकिन जिसको चाहते हैं बेराह कर देते हैं और जिसको चाहते हैं राह पर डाल देते हैं। और तुमसे तुम्हारे आमाल की ज़रूर पूछताछ और सवाल होगा। (93) और तुम अपनी क़समों को आपस में फ़साद डालने का ज़रिया मत बनाओ कि (कभी किसी और का) क़दम जमने के बाद न फिसल जाए। फिर तुमको इस सबब से कि तुम राहे ख़ुदा से रुकावट हुए, तकलीफ़ भुगतना पड़े, और तुमको बड़ा अज़ाब होगा। (94) और तुम लोग अल्लाह के अ़हद के बदले में थोड़ा-सा फ़ायदा मत हासिल करो, बस अल्लाह के पास की जो चीज़ है वह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है

Maktab-E-Ashraf

اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۝ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝	अगर तुम समझना चाहो। (95) और जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह हमेशा रहेगा। और जो लोग साबित क़दम हैं हम उनके अच्छे कामों के बदले उनका अज्र उनको ज़रूर देंगे। (96)

एक उम्मत

अगर अल्लाह चाहता तो दुनिया भर का एक ही मज़हब व मस्लक (दीन और विचार धारा) होता, जैसा कि फ़रमायाः

وَلَوْشَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اَيُّهَاالنَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً.

यानी अल्लाह की मन्शा (मर्ज़ी) होती तो ऐ लोगो! तुम सबको वह एक ही गिरोह कर देता।

एक और आयत में है कि अगर तेरा रब चाहता तो रू-ए-ज़मीन के सब लोग ईमान वाले ही होते। यानी उनमें मुवाफ़क़त, एकता होती, मतभेद, विवाद, बुग़ज़ बिल्कुल न होता। तेरा रब क़ादिर है कि अगर चाहे सब लोगों को एक ही उम्मत कर दे, लेकिन ये तो अलग-अलग और भिन्न ही रहेंगे, मगर जिन पर तेरे रब का रहम है। इसी लिये उन्हें पैदा किया है। हिदायत व गुमराही उसी के हाथ में है, क़ियामत के दिन वह हिसाब लेगा, पूछ-गछ करेगा और छोटे-बड़े, नेक व बद तमाम आमाल का बदला देगा।

फिर मुसलमानों को हिदायत करता है कि क़समों को, अ़हद को, फ़रेब और धोखा देने का ज़रिया न बनाओ, वरना साबित-क़दमी के बाद फिसल जाओगे, जैसे कोई सीधी राह से भटक जाये। और तुम्हारा यह काम औरों के ख़ुदा के रास्ते से रुकने का सबब बन जायेगा, जिसका तुम पर बहुत बुरा वबाल पड़ेगा। क्योंकि काफ़िर जब देखेंगे कि मुसलमानों ने अ़हद करके तोड़ दिया, वादे के ख़िलाफ़ किया तो उन्हें दीन के साथ भरोसा और एतिमाद न रहेगा। पस वे इस्लाम को क़बूल करने से रुक जायेंगे और उनके रुकने के सबब चूँकि तुम बनोगे इसलिये तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब होगा, और सख़्त सज़ा दी जायेगी। ख़ुदा को बीच में रखकर जो वादे करो, उसकी क़समें खाकर जो अ़हद व पैमान हों उन्हें दुनियावी लालच से तोड़ देना, बदल देना तुम पर हराम है, चाहे सारी दुनिया हासिल हो जाये फिर भी उस हराम फ़ेल के करने वाले न बनो। क्योंकि दुनिया बेहक़ीक़त है, ख़ुदा के पास जो है वही बेहतर है। उस जज़ा और उस सवाब की उम्मीद रखो। जो अल्लाह की इस बात पर यक़ीन रखे, उसी का तालिब रहे और हुक्मे ख़ुदा की पाबन्दी के मातहत अपने वादों का लिहाज़ और पाबन्दी करे उसके लिये जो अज्र व सवाब ख़ुदा के पास है वह सारी दुनिया से बहुत ज़्यादा और बहुत बेहतर है। इसे अच्छी तरह जान लो, नादानी से ऐसा न करो कि आख़िरत का सवाब ज़ाया हो जाये, बल्कि लेने के देने पड़ जायें। सुनो! दुनिया की नेमतें ख़त्म और फ़ना होने वाली हैं और आख़िरत की नेमतें लाफ़ानी और हमेशा रहने वाली हैं। मुझे क़सम है कि जिन लोगों ने दुनिया में सब्र किया मैं उन्हें क़ियामत के दिन उनके बेहतरीन आमाल का निहायत आला सिला अ़ता फ़रमाऊँगा और उन्हें बख़्श दूँगा।

नोटः ऊपर जो मज़मून बयान हुआ इसमें आज के दौर के मुसलमानों के लिये एक सबक़ और चेतावनी है। बता दिया गया कि एक मुसलमान की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। उसे न सिर्फ़ अपनी निजात की फ़िक्र ही लाज़िम है बल्कि साथ ही अपने आमाल व किरदार को इस तौर पर भी सही रखना है कि दूसरे लोग उसकी वजह से इस्लाम से दूर न हो जायें। अपने व्यवहार अख़्लाक़ और मामलात को ऐसा रखना है जिससे इस्लाम और अल्लाह के दीन की तरफ़ लोग आकर्षित हों, न यह कि मुसलमान के आमाल व अख़्लाक़ और रवैये से इस्लाम से बेज़ार हों। गोया सिर्फ़ ज़बान ही से नहीं बल्कि अपने किरदार से भी एक मुसलमान को इस्लाम की तब्लीग़ और प्रचार करना है। अल्लाह हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

जो शख़्स कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औ़रत हो, शर्त यह है कि ईमान वाला हो, तो हम उस शख़्स को मज़ेदार ज़िन्दगी देंगे, और उनके अच्छे कामों के बदले में उनका अज्र देंगे। (97)	مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

पाकीज़ा ज़िन्दगी

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों से जो ख़ुदा पर, उसके रसूल पर पूरा ईमान रखें और किताब व सुन्नत के तहत नेक आमाल करें, वादा करता है कि वह उन्हें दुनिया में भी बेहतरीन और पाकीज़ा ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेगा। अच्छी तरह से उनकी उम्र बसर होगी चाहे मर्द हों या औ़रतें हों, साथ ही आख़िरत में भी उनके नेक आमाल का बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमायेगा। दुनिया में पाक और हलाल रोज़ी, क़नाअ़त, अच्छी हालत, नेकबख़्ती, पाकीज़गी, इबादत का लुत्फ़, इताअ़त का मज़ा, दिल की ठंडक, दिल का इत्मीनान सब ही कुछ ख़ुदा की तरफ़ से ईमान वाले नेक बन्दे को अ़ता होती है। चुनाँचे मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- उसने फ़लाह (कामयाबी) हासिल कर ली जो मुसलमान हो गया और बराबर-सराबर रोज़ी दिया गया, और जो मिला उस पर क़नाअ़त (सब्र और दिल का इत्मीनान) नसीब हुई।

एक और हदीस में है कि जिसे इस्लाम की राह दिखा दी गयी, और जिसे पेट पालने का टुकड़ा मयस्सर हो गया और ख़ुदा ने उसके दिल को क़नाअ़त (जो मिल जाये उस पर सब्र व ख़ुशी) से भर दिया, उसने निजात पा ली। (तिर्मिज़ी)

सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने मोमिन बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता बल्कि उसकी नेकी का बदला दुनिया में अ़ता फ़रमाता है और उसे आख़िरत में नेकियाँ भी देता है। हाँ काफ़िर अपनी नेकियाँ दुनिया में ही खा लेता है, आख़िरत के लिये उसके हाथ में कोई नेकी बाक़ी नहीं रहती।

(काफ़िर को उसके अच्छे आमाल का बदला दुनिया ही में माल व औलाद की ज़्यादती के रूप में दे दिया जाता है, आख़िरत में ग़ैर-ईमान वाले के लिये कोई भलाई नहीं। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

Maktab E Ashraf

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ
الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ
عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝ ع ١٣ ١٩

तो जब आप क़ुरआन पढ़ना चाहें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँग लिया करें। (98) यक़ीनन उसका क़ाबू उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान रखते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (99) बस उसका क़ाबू तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर चलता है जो उससे ताल्लुक़ रखते हैं, और उन लोगों पर जो उसके (यानी अल्लाह के) साथ शिर्क करते हैं। (100)

ख़ुदा की पनाह

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. के ज़रिये अपने मोमिन बन्दों को हुक्म फ़रमाता है कि क़ुरआने करीम की तिलावत से पहले वे 'अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' पढ़ लिया करें। यह हुक्म फ़र्ज़ होने के तौर पर नहीं है। इब्ने जरीर वग़ैरह ने इस पर इजमा (यानी उलेमा की सहमति और इत्तिफ़ाक़े राय) नक़ल किया है। 'अऊ़ज़ु बिल्लाहि....' की पूरी बहस मय मायने वग़ैरह के हम अपनी तफ़सीर के शुरू में लिख आये हैं। इस हुक्म की मस्लेहत यह है कि क़ुरआन का पढ़ने वाला इसमें ग़ौर व फ़िक्र करने में बहक जाने और ग़लती करने से रुक जाये और शैतानी वस्वसों के आने से बच जाये। इसी लिये जमहूर उलेमा कहते हैं कि क़िराअत (क़ुरआन पढ़ना) शुरू करने से पहले 'अऊ़ज़ु बिल्लाह...' पढ़ लिया करे। किसी का क़ौल यह भी है कि क़िराअत के ख़त्म के बाद पढ़े, उनकी दलील यही आयत है, लेकिन सही क़ौल पहला ही है और हदीसों की दलालत भी इसी पर है। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि ईमान वालों और अल्लाह पर भरोसा करने वालों को वह (यानी शैतान) ऐसे गुनाहों में फाँस नहीं सकता जिनसे वे तौबा ही न करें। उसकी कोई हुज्जत उनके सामने चल नहीं सकती। ये मुख़्लिस बन्दे उसके गहरे फ़रेब और धोखे से महफ़ूज़ रहते हैं। हाँ जो उसकी इताअ़त करें, उसके कहने में आ जायें, उसे अपना दोस्त और हिमायती ठहरा लें, उसे ख़ुदा की इबादतों में शरीक करने लगें, उन पर तो यह छा जाता है। यह मतलब भी हो सकता है कि "ब" को सबब के लिये बतलायें, यानी वे उसकी फ़रमाँबरदारी के सबब ख़ुदा के साथ शिर्क करने लगें। यह मायने भी हैं कि वे उसे अपने माल में, अपनी औलाद में ख़ुदा का शरीक ठहरा लें।

وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ

और जब हम किसी आयत को दूसरी आयत की जगह बदलते हैं, और हालाँकि अल्लाह तआ़ला जो हुक्म भेजता है उसको वही ख़ूब जानता है, तो ये लोग कहते हैं कि आप घड़ने वाले हैं, बल्कि उन्हीं में अक्सर लोग जाहिल हैं। (101) आप फ़रमा दीजिए कि

Maktab E Ashraf

رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ٥	उसको रूहुल-क़ुदुस आपके रब की तरफ़ से हिक्मत के मुवाफ़िक़ लाए हैं, ताकि ईमान वालों को साबित-क़दम रखे और मुसलमानों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी हो जाए। (102)

एक बोहतान

मुश्रिकों की कम-अक़्ली, एक जगह न जमने और बे-यक़ीनी का बयान हो रहा है कि उन्हें ईमान कैसे नसीब हो? ये तो हमेशा के और पहले दिन से बद-नसीब हैं। नासिख़ मन्सूख़ से अहकाम की तब्दीली देखकर बकने लगते हैं कि लो साहिब! इनका बोहतान खुल गया। इतना नहीं जानते कि हर तरह की क़ुदरत व ताक़त रखने वाला ख़ुदा जो चाहे करे, जो इरादा करे हुक्म दे। एक हुक्म को उठा दे दूसरे को उसकी जगह रख दे। जैसे आयतः

مَانَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْنُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَا..... الخ.

(सूरः ब-क़रह की आयत 106) में फ़रमाया है। पाक रूह यानी हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम उसे ख़ुदा की तरफ़ से हक़्क़ानियत व सदाक़त (यानी सच्चाई) और अ़दल व इन्साफ़ के साथ लेकर तेरी जानिब आते हैं, ताकि ईमान वाले साबित-क़दम हो जायें, अब उतरा माना, फिर उतरा फिर माना, उनके दिल रब की तरफ़ झुकते रहें, ताज़ा-ताज़ा कलामे ख़ुदा सुनते रहें, मुसलमानों के लिये हिदायत व ख़ुशख़बरी हो जाये, ख़ुदा और रसूले ख़ुदा के मानने वाले राह पाने वाले होकर ख़ुश हो जायें।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ٥	और हमको मालूम है कि ये लोग यह भी कहते हैं कि उनको तो आदमी सिखला जाता है, जिस शख़्स की तरफ़ उसकी निस्बत करते हैं उसकी ज़बान तो अ़ज्मी "यानी ग़ैर-अ़रबी" है, और यह क़ुरआन तो साफ़ अ़रबी है। (103)

यह कितनी बेहूदा और ग़लत बात है

काफ़िरों की एक बोहतान-बाज़ी (झूठा इल्ज़ाम) बयान हो रही है कि वे कहते हैं कि इसे यह क़ुरआन एक इनसान सिखाता है। क़ुरैश के किसी क़बीले का एक अ़जमी (ग़ैर-अ़रबी) ग़ुलाम था, सफ़ा पहाड़ के पास ख़रीद व फ़रोख़्त किया करता था। हुज़ूर सल्ल. कभी-कभी उसके पास बैठ जाया करते थे और कुछ बातें कर लिया करते थे। यह शख़्स सही अ़रबी भाषा बोलने पर भी क़ादिर न था, टूटी-फूटी भाषा में मुश्किल से अपना मतलब अदा कर लिया करता था।

इस बोहतान का जवाब अल्लाह तआ़ला देता है कि वह क्या सिखायेगा जो ख़ुद बोलना नहीं जानता, ग़ैर-अ़रबी भाषा का आदमी है, और यह क़ुरआन तो अ़रबी भाषा में है। फिर अपने बयान व अन्दाज़ और भाषाई उस्लूब के शिखर पर है, अपने अन्दर ज़बान व बयान की वह उम्दगी और बुलन्दी लिये हुए जिससे

दुनिया का हर कलाम ख़ाली है। मायने मतलब, अलफ़ाज़ व वाक़िआत में सबसे निराला, बनी इस्राईल की आसमानी किताबों से भी अपनी शान व रुतबे और इज़्ज़त व सम्मान में ज़्यादा है। तुम में अगर ज़रा सी अक़्ल होती तो यूँ हथेली पर चिराग़ रखकर चोरी करने को न निकलते, ऐसा झूठ न बकते जो बेवक़ूफ़ों के यहाँ भी न चल सके।

सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि एक ईसाई ग़ुलाम जिसे जुबैर कहा जाता था, जो बनू हज़रमी क़बीले के किसी शख़्स का ग़ुलाम था, उसके पास रसूलुल्लाह सल्ल. मरवा पहाड़ी के पास बैठ जाया करते थे। इस पर मुश्रिकों ने उड़ाई कि यह क़ुरआन उसी का सिखाया हुआ है। इसके जवाब में यह आयत उतरी। कहते हैं कि उसका नाम यईश था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि मक्का शरीफ़ में एक लुहार था, जिसका नाम बलआ़म था। यह अ़जमी (अ़रब से बाहर का) शख़्स था। उसे हुज़ूर सल्ल. तालीम देते थे तो आपका उसके पास आना-जाना देखकर क़ुरैश मशहूर करने लगे कि यही शख़्स आपको कुछ सिखाता है, और फिर आप उसे अल्लाह के कलाम के नाम से अपने हलक़े (दायरे और मिलने-जुलने वालों) में सिखाते हैं।

किसी ने कहा है कि इससे मुराद हज़रत सलमान फ़ारसी हैं। लेकिन यह क़ौल तो बिल्कुल ही ग़लत है क्योंकि हज़रत सलमान तो आपसे मदीना में मिले और यह आयत मक्का में उतरी। उबैदुल्लाह बिन मुस्लिम कहते हैं कि हमारे दो कामी आदमी रोम के रहने वाले थे जो अपनी ज़बान (भाषा) में अपनी किताब पढ़ते थे। हुज़ूर सल्ल. भी जाते-आते कभी उनके पास खड़े होकर सुन लिया करते। इस पर मुश्रिकों ने उड़ाया कि उन्हीं से आप क़ुरआन सीखते हैं। इस पर यह आयत उतरी। सईद बिन मुसैयब रह. फ़रमाते हैं कि मुश्रिकों में से एक शख़्स था जो 'वही' लिखा करता था, उसके बाद वह इस्लाम से मुर्तद हो गया (इस्लाम से फिर गया) और यह बात गढ़ ली। उस पर ख़ुदा की लानत।

जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते उनको अल्लाह तआ़ला कभी राह पर न लाएँगे, और उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी। (104) पस झूठ घड़ने वाले तो यही लोग हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और ये लोग हैं पूरे झूठे। (105)	إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ○

ये लोग झूठे हैं

जो ख़ुदा के ज़िक्र से मुँह मोड़े, अल्लाह की किताब से लापरवाही करे, ख़ुदा की बातों पर ईमान लाने का इरादा ही न रखे ऐसे लोगों को ख़ुदा भी दूर डाल देता है। उन्हें दीने हक़ की तौफ़ीक़ ही नहीं होती, आख़िरत में सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब में फंसते हैं। फिर बयान फ़रमाया कि यह रसूल ख़ुदा पर झूठ बोहतान बाँधने वाले नहीं, यह काम तो मख़्लूक़ में से बुरे लोगों का है, जो बेदीन और काफ़िर हों, उनका झूठ लोगों में मशहूर होता है और नबी करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. तो तमाम मख़्लूक़ से बेहतर व अफ़ज़ल, दीनदार, ख़ुदा के पहचानने वाले सच्चों के सच्चे हैं। इल्म व ईमान और अ़मल व नेकी में आप सबसे ज़्यादा कामिल हैं। सच्चाई में, भलाई में, यक़ीन में, मारिफ़त में आपका कोई सानी नहीं। इन काफ़िरों से ही पूछ

लो ये भी आपकी सच्चाई के क़ायल हैं, आपकी अमानतदारी के प्रशंसक हैं। आप उनमें 'मुहम्मद अमीन' के विशेष लक़ब से मशहूर व परिचित हैं। रोम के बादशाह हिरक़्ल ने जब अबू सुफ़ियान से नबी करीम सल्ल. के बारे में बहुत से सवाल किये, उनमें एक यह भी था कि नुबुव्वत का दावा करने से पहले तुमने उसकी कभी झूठ की तरफ़ निस्बत की है? अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया कभी नहीं। इस पर बादशाह ने कहा यह कैसे हो सकता है कि एक वह शख़्स जिसने दुनियावी मामलात में लोगों के बारे में कभी भी झूठ की गन्दगी से अपनी ज़बान ख़राब न की हो, वह ख़ुदा पर झूठ बाँधने लगे?

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَأَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِينَ ۝ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُونَ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝	जो शख़्स ईमान लाने के बाद अल्लाह के साथ कुफ़्र करे, मगर जिस शख़्स पर ज़बरदस्ती की जाए, शर्त यह है कि उसका दिल ईमान पर मुत्मईन हो, लेकिन हाँ जो जी खोलकर कुफ़्र करे तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उनको बड़ी सज़ा होगी। (106) यह इस सबब से होगा कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में अज़ीज़ रखा, और इस सबब से होगा कि अल्लाह ऐसे काफ़िरों को हिदायत नहीं किया करता। (107) ये वे लोग हैं कि अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों पर और कानों पर और आँखों पर मोहर लगा दी है, और ये लोग बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। (108) लाज़िमी बात है कि आख़िरत में ये लोग बिल्कुल घाटे में रहेंगे। (109)

यही नुक़सान में रहेंगे

अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला बयान फ़रमाता है कि जो लोग ईमान के बाद कुफ़्र करें, देखकर अंधे हो जायें, फिर कुफ़्र पर उनका सीना खुल जाये (यानी उसको दिल से क़बूल कर लें और उस पर संतुष्ट हो जायें), उस पर इत्मीनान कर लें, ये ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार होते हैं, कि ईमान हासिल करके फिर उससे फिर गये और उन्हें आख़िरत में बड़े भारी अ़ज़ाब होंगे। क्योंकि उन्होंने आख़िरत बिगाड़ कर दुनिया से मुहब्बत की और मुर्तद होने (इस्लाम से फिर जाने) को इस्लाम पर तरजीह दी, और वह भी सिर्फ़ दुनिया की तलब की वजह से। चूँकि उनके दिल हिदायत व हक़ से ख़ाली थे ख़ुदा की तरफ़ से साबित-क़दमी (जमाव) उन्हें न मिली, दिलों पर मोहरें लग गयीं, नफ़े की कोई बात समझ में नहीं आती, कान और आँखे भी बेकार हो गयीं, न हक़ सुन सकें न देख सकें। पस किसी चीज़ ने उन्हें कोई फ़ायदा न पहुँचाया और अपने

Maktab E Ashraf

अन्जाम से ग़ाफ़िल हो गये। यक़ीनन ऐसे लोग क़ियामत के दिन अपना नुक़सान करने वाले हैं।

पहली आयत के बयान में जिन लोगों को इस हुक्म से अलग किया है, यानी वे जिन पर जबर किया जाये और उनके दिल ईमान पर जमे हुए हैं, इससे मुराद वे लोग हैं जो मार-पीट और यातनाओं से मजबूर होकर ज़बान से मुश्रिकों की मुवाफ़क़त करें, लेकिन उनका दिल वह न कहता हो बल्कि दिल में ख़ुदा और उसके रसूल पर पूरे इत्मीनान के साथ पुख़्ता ईमान हो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत अ़म्मार बिन यासिर के बारे में उतरी है, जबकि आपको मुश्रिकों ने तकलीफ़ देनी शुरू की और कहा कि जब तक तुम मुहम्मद (सल्ल.) के साथ कुफ़्र न करोगे हम तुम्हें न छोड़ेंगे। पस दिल के न चाहते हुए मजबूरन और ज़बरदस्ती आपने उनकी बात मान ली। फिर अल्लाह के नबी सल्ल. के पास आकर उज़्र बयान करने लगे। तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी। शअ़बी, क़तादा और अबू मालिक रह. भी यही कहते हैं। इब्ने जरीर में है कि मुश्रिकों ने आपको पकड़ा और यातनायें देनी शुरू कीं, यहाँ तक कि आप उनके इरादों के क़रीब हो गये (यानी जो कुछ उन्होंने कहलवाना चाहा आपने ऊपरी ज़बान से कह दिया, दिल ईमान पर जमा रहा), फिर हुज़ूर सल्ल. के पास आकर इसकी शिकायत करने लगे तो आपने पूछा तुम अपने दिल का हाल कैसा पाते हो? जवाब दिया कि वह तो ईमान पर मुत्मईन है, जमा हुआ है। आपने फ़रमाया अगर वे फिर लौटें तो तुम भी लौटना।

बैहक़ी में इससे भी ज़्यादा तफ़सील से है। उसमें है कि आपने हुज़ूर सल्ल. को बुरा-भला कहा और उनके माबूदों का ज़िक्र भलाई के साथ किया। फिर आपके पास आकर अपना यह दुख बयान किया कि या रसूलल्लाह! मैं अ़ज़ाब से न छोड़ा गया जब तक कि मैंने आपको बुरा-भला न कह लिया और उनके माबूदों का ज़िक्र भलाई से न किया। आपने फ़रमाया तुम अपना दिल कैसा पाते हो? जवाब दिया कि ईमान पर मुत्मईन। फ़रमाया अगर वे फिर करें तो तुम भी कर लेना। इसी पर यह आयत उतरी।

पस उलेमा-ए-किराम का इत्तिफ़ाक़ है कि जिस पर ज़ोर ज़बरदस्ती की जाये उसे जायज़ है कि अपनी जान बचाने के लिये उनकी मुवाफ़क़त कर ले, और यह भी जायज़ है कि उस मौक़े पर भी उनकी न माने, जैसे कि हज़रत बिलाल रज़ि. ने करके दिखाया कि मुश्रिकों की एक न मानी, हालाँकि वे इन्हें बहुत सख़्त तकलीफ़ें देते थे, यहाँ तक कि सख़्त गर्मियों में पूरी तेज़ धूप में आपको लेटाकर आपके सीने पर भारी वज़नी पत्थर रख दिया कि अब भी शिर्क करो तो निजात पाओ, लेकिन आपने फिर भी उनकी न मानी, साफ़ इनकार कर दिया और ख़ुदा की तौहीद (एक होना) अहद-अहद के लफ़्ज़ में बयान फ़रमाते रहे। बल्कि फ़रमाया करते थे कि वल्लाह अगर इससे भी ज़्यादा तुम्हें चुभने वाला कोई लफ़्ज़ मेरे इल्म में होता तो मैं वही कहता। अल्लाह उनसे राज़ी रहे और उन्हें भी हमेशा राज़ी रखे।

इसी तरह हज़रत हबीब बिन ज़ैद अन्सारी रज़ि. का वाक़िआ़ है कि जब उनसे मुसैलमा कज़्ज़ाब ने कहा कि क्या तू मुहम्मद (सल्ल.) की रिसालत की गवाही देता है? तो आपने फ़रमाया हाँ। फिर उसने आपसे पूछा कि क्या मेरे रसूल होने की भी गवाही देता है? तो आपने फ़रमाया मैं नहीं सुनता। इस पर नुबुव्वत के इस झूठे दावेदार ने उनके जिस्म के एक अंग के काट डालने का हुक्म दिया। फिर यही सवाल व जवाब हुआ, फिर जिस्म का दूसरा अंग कट गया, यूँ ही होता रहा लेकिन आख़िरी दम तक इसी पर क़ायम रहे। ख़ुदा आपसे ख़ुश हो और आपको भी ख़ुश रखे।

मुस्नद अहमद में है कि जो चन्द लोग मुर्तद हो गये (यानी इस्लाम लाने के बाद फिर बेदीन हो गये) थे उन्हें हज़रत अ़ली रज़ि. ने आग में जलवा दिया। जब हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. को यह वाक़िआ़ मालूम

Muftah E Ashraf

हुआ तो आपने फ़रमाया मैं तो उन्हें आग में न जलाता, इसलिये कि रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि अल्लाह के अ़ज़ाब से तुम अ़ज़ाब न करो। हाँ बेशक मैं उन्हें क़त्ल करा देता, इसलिये कि फ़रमाने रसूल है कि जो अपने दीन को बदल दे उसे क़त्ल कर दो। जब यह ख़बर हज़रत अ़ली रज़ि. को हुई तो आपने फ़रमाया इब्ने अ़ब्बास की माँ पर अफ़सोस है। इसे इमाम बुख़ारी रह. ने भी नक़ल किया है।

मुस्नद में है कि हज़रत अबू मूसा रज़ि. के पास यमन में मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि. तशरीफ़ ले गये, देखा कि एक शख़्स उनके पास है। पूछा यह क्या? जवाब मिला कि यह एक यहूदी था, फिर मुसलमान हो गया, अब फिर यहूदी हो गया है। हम तक़रीबन दो माह से इसे इस्लाम पर लाने की कोशिश में हैं। आपने फ़रमाया अल्लाह की क़सम! मैं बैठूँगा भी नहीं जब तक कि तुम इसकी गर्दन न उड़ा दो। यही फ़ैसला है ख़ुदा और उसके रसूल सल्ल. का, कि जो अपने दीन से लौट जाये उसे क़त्ल कर दो, या फ़रमाया जो अपने दीन को बदल दे। यह वाक़िआ़ बुख़ारी व मुस्लिम में भी है, लेकिन अलफ़ाज़ दूसरे हैं। पस अफ़ज़ल और बेहतर यह है कि मुसलमान अपने दीन पर क़ायम और जमा रहे चाहे उसे क़त्ल भी कर दिया जाये। चुनाँचे हाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर रह. अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी सहाबी रज़ि. के हालात में लिखते हैं कि आपको रोम के काफ़िर ने क़ैद कर लिया और अपने बादशाह के पास पहुँचा दिया। उसने आपसे कहा कि तुम ईसाई हो जाओ। मैं तुम्हें अपनी हुकूमत में शरीक कर लेता हूँ और अपनी शहज़ादी तुम्हारे निकाह में देता हूँ। सहाबी ने जवाब दिया कि यह तो क्या अगर तू अपनी तमाम बादशाहत मुझे दे दे और तमाम अ़रब की हुकूमत भी मुझे सौंप दे और यह चाहे कि मैं एक आँख झपकने के बराबर भी दीने मुहम्मदी से फिर जाऊँ तो यह नामुम्किन है। बादशाह ने कहा फिर मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने जवाब दिया कि हाँ यह तुझे इख़्तियार है। चुनाँचे उसी वक़्त बादशाह ने हुक्म दिया और उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया और तीर-अन्दाज़ों ने बादशाह के हुक्म से क़रीब से उनके हाथ पाँव और जिस्म छेदना शुरू किया, बार-बार कहा जाता था कि अब भी ईसाईयत क़बूल कर लो और आप पूरे इस्तिक़लाल (जमाव और दिली इत्मीनान) और सब्र से फ़रमाते जाते थे कि हरगिज़ नहीं। आख़िर बादशाह ने कहा इसे सूली से उतार लो, फिर हुक्म दिया कि पीतल की देग या पीतल की बनी हुई गाय ख़ूब तपाकर आग बनाकर लाई जाये, चुनाँचे वह पेश हुई। बादशाह ने एक और मुसलमान क़ैदी के बारे में हुक्म दिया कि उसे इसमें डाल दो। उसी वक़्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. की मौजूदगी में आपके देखते हुए उस मुसलमान क़ैदी को उसमें डाल दिया गया। वह मिस्कीन उसी वक़्त चुरमुर होकर रह गये। गोश्त-पोस्त जल गया, हड्डियाँ चमकने लगीं। फिर बादशाह ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से कहा कि देखो अब भी हमारी मान लो और हमारा मज़हब क़बूल कर लो वरना इस आग की देग में इसी तरह तुम्हें भी डालकर जला दिया जायेगा। आपने फिर भी अपने ईमानी जोश से काम लेकर फ़रमाया यह नामुम्किन है कि मैं ख़ुदा के दीन को छोड़ दूँ।

उसी वक़्त बादशाह ने हुक्म दिया कि इन्हें चर्ख़ी पर चढ़ाकर उसमें डाल दो। जब यह उस आग की देग में डाले जाने के लिये चर्ख़ी पर उठाये गये तो बादशाह ने देखा कि इनकी आँखों से आँसू निकल रहे हैं। उसी वक़्त उसने हुक्म दिया कि रुक जायें, इन्हें अपने पास बुला लिया, इसलिये कि उसे उम्मीद बंध गयी थी कि शायद इस अ़ज़ाब को देखकर अब इनके ख़्यालात पलट गये हैं, मेरी मान लेंगे और मेरा मज़हब क़बूल करके मेरी दामादी में आकर मेरी बादशाहत में शरीक बन जायेंगे। लेकिन बादशाह की यह तमन्ना और यह ख़्याल महज़ बेसूद निकला। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि. ने फ़रमाया- मैं सिर्फ़ इस वजह से रोया था कि आह आज एक ही जान है जिसे राहे ख़ुदा में इस अ़ज़ाब के साथ मैं क़ुरबान कर रहा

Maktab E Ashraf

हूँ काश कि मेरे रुएँ-रुएँ में एक-एक जान होती कि आज मैं सब जानें राहे ख़ुदा में इसी तरह एक-एक करके फ़िदा करता। बाज़ रिवायतों में है कि आपको क़ैदख़ाने में रखा, खाना-पीना बन्द कर दिया, कई दिन के बाद शराब और ख़िन्ज़ीर (सुअर) का गोश्त भेजा लेकिन आपने इस भूख पर भी उसकी तरफ़ तवज्जोह तक न फ़रमाई। बादशाह ने बुलवा भेजा और उसे न खाने का सबब दरियाफ़्त किया तो आपने जवाब दिया कि इस हालत में यह मेरे लिये हलाल तो हो गया है लेकिन मैं तुझ जैसे दुश्मन को अपने बारे में ख़ुश होने का मौक़ा देना ही नहीं चाहता।

अब बादशाह ने कहा अच्छा तू मेरे सर का बोसा ले तो मैं तुझे और तेरे साथ के और तमाम मुसलमान क़ैदियों को रिहा कर देता हूँ। आपने इसे क़ुबूल फ़रमा लिया, उसके सर का बोसा ले लिया और बादशाह ने अपना वादा पूरा किया, आपको और आपके तमाम साथियों को छोड़ दिया। जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि. यहाँ से आज़ाद होकर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. के पास पहुँचे तो आपने फ़रमाया हर मुसलमान पर हक़ है कि अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा का माथा चूमे और मैं इसकी शुरूआत करता हूँ। यह फ़रमाकर पहले आपने उनके सर को बोसा दिया।

फिर बेशक आपका रब ऐसे लोगों के लिए कि जिन्होंने (कुफ़्र में) मुब्तला होने के बाद (ईमान लाकर) हिजरत की, फिर जिहाद किया और क़ायम रहे, तो आपका रब इन (आमाल) के बाद बड़ी मग़फ़िरत करने वाला, बड़ी रहमत करने वाला है। (110)	ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
जिस दिन हर शख़्स अपनी ही तरफ़दारी में गुफ़्तगू करेगा, और हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (111)	يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

ع ١٤ ٢٠

वह दिन भी आने वाला है

ये दूसरी क़िस्म के लोग हैं जो अपनी कमज़ोरी व मिस्कीनी के सबब मुश्रिकों के ज़ुल्म के शिकार थे और इनको दीन से हटाने की हर वक़्त कोशिश की जाती थी। आख़िर इन्होंने हिजरत की, माल व औलाद, मुल्क व वतन को छोड़कर राहे ख़ुदा में चल खड़े हुए और मुसलमानों की जमाअ़त में मिलकर फिर जिहाद के लिये निकल पड़े और सब्र व हिम्मत से ख़ुदा के कलिमे की बुलन्दी में मश्ग़ूल हो गये। इन्हें अल्लाह तआ़ला इन कामों यानी फ़ितने और आज़माईश की क़ुबूलियत के बाद भी बख़्शने वाला और उन पर मेहरबानियाँ करने वाला है। क़ियामत के दिन हर शख़्स अपने छुटकारे की फ़िक्र में लगा होगा, कोई न होगा जो अपने माँ, बाप, भाई या बीवी की तरफ़ से कुछ कह सके। उस दिन हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा-पूरा बदला मिलेगा, किसी पर कोई ज़ुल्म न होगा, न सवाब घटेगा न गुनाह बढ़ेगा, अल्लाह ज़ुल्म से पाक है।

Maktaba E Ashraf

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ٥ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ٥	**और अल्लाह तआ़ला एक बस्ती वालों की (अ़जीब) हालत बयान फ़रमाते हैं कि वे अमन व इत्मीनान में थे। उनके खाने-पीने की चीज़ें बड़ी फ़रागत से हर (चार) तरफ़ से उनके पास पहुँचा करती थीं। सो उन्होंने ख़ुदा की नेमतों की बेक़द्री की। उस पर अल्लाह ने उनको इन हरकतों के सबब (एक घेरने वाले) क़हत और ख़ौफ़ का मज़ा चखा दिया। (112) और उनके पास उन्हीं में का एक रसूल भी आया। सो उसको उन्होंने झूठा बतलाया। तब उनको अ़ज़ाब ने आन पकड़ा, जबकि वे बिल्कुल ही ज़ुल्म पर कमर बाँधने लगे। (113)**

एक मिसाल

इससे मुराद मक्का वाले हैं, ये अमन व इत्मीनान में थे, आस-पास लड़ाईयाँ होतीं, यहाँ कोई आँख भरकर भी न देखता। जो यहाँ आ जाये अमन में समझा जाता। जैसे क़ुरआन ने फ़रमाया है कि ये लोग कहते हैं कि अगर हम हिदायत की पैरवी करें तो अपनी ज़मीन से उचक लिये जायें, क्या हमने उन्हें अमन व अमान का हरम नहीं दे रखा? जहाँ हमारी रोज़ियाँ तरह-तरह के फलों की शक्ल में उनके पास हर तरफ़ से खिंची चली आती हैं। यहाँ भी इरशाद होता है कि उम्दा सहती-पचती रोज़ी इस शहर के लोगों के पास हर तरफ़ से आ रही थी लेकिन फिर भी ये ख़ुदा की नेमतों के मुन्किर रहे, जिनमें सबसे आला नेमत नबी करीम सल्ल. का नबी बनकर तशरीफ़ लाना था, जैसा कि इरशादे बारी है:

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ كُفْرًا...... الخ.

क्या तूने उनको देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत को कुफ़्र से बदल दिया और अपनी क़ौम को हलाकत व तबाही के घर पहुँचा दिया, जो जहन्नम है। जहाँ ये दाख़िल होंगे और जो बुरा ठिकाना है।

उनकी इस सरकशी की सज़ा में दोनों नेमतें दो ज़हमतों से बदल दी गयीं, अमन ख़ौफ़ से, इत्मीनान भूख और घबराहट से। उन्होंने अल्लाह के रसूल की न मानी, आपके ख़िलाफ़ करने पर कमर कस ली तो आपने उनके लिये सात क़हत-सालियों (सूखे और अकालों) की बददुआ़ की, जैसे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में थीं। इस सूखे और क़हत में उन्होंने ऊँट के ख़ून में लुथड़े हुए बालों तक को खाया। अमन के बाद ख़ौफ़ आया, हर वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. और आपके लश्कर से ख़ौफ़ज़दा (भयभीत) रहने लगे। आपकी दिन दूनी तरक़्क़ी और आपके लश्करों की कसरत को सुनते और सहमे जाते थे, यहाँ तक कि आख़िरकार ख़ुदा के पैग़म्बर सल्ल. ने उनके शहर मक्का पर चढ़ाई की और उसे फ़तह करके वहाँ क़ब्ज़ा कर लिया। यह था उनके बुरे आमाल का फल कि ये ज़ुल्म व ज़्यादती पर अड़े हुए थे और ख़ुदा के रसूल को झुठलाते रहे थे, जिसे अल्लाह तआ़ला ने उनमें ख़ुद उनमें से ही भेजा था। जिस एहसान का बयान आयतः

Maktab-E-Ashraf

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ.... الخ.

(सूरः आले इमरान आयत 164) में फ़रमाया है, और इसी का बयान आयतः

فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ...... الخ.

(सूरः मायदा आयत 100) में है, और इसी मायने की आयतः

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ.......... تَكْفُرُوْنَ٥

(सूरः ब-क़रह आयत 151-152) में है:

इस लतीफ़े को भी न भूलिये कि जैसे कुफ़्र की वजह से अमन के बाद ख़ौफ़ आया और फ़राख़ी के बाद भूख आयी, ईमान की वजह से ख़ौफ़ के बाद अमन मिला और भूख के बाद हुकूमत, सरदारी मिली। वाक़ई अल्लाह की ज़ात पाक और उसकी शान बुलन्द है।

सलीम बिन नुमैर कहते हैं कि हम हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा (नबी करीम की पाक बीवी मोहतरमा) के साथ हज से लौटते हुए आ रहे थे। उस वक़्त मदीना शरीफ़ में मुसलमानों के ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ि. घिरे हुए थे। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा अक्सर आने-जाने वालों से उनके बारे में दरियाफ़्त फ़रमाया करती थीं। दो सवारियों को जाते हुए देखकर आदमी भेजा कि उनसे ख़लीफ़ा-ए-रसूल का हाल पूछो। उन्होंने ख़बर दी कि अफ़सोस आप शहीद कर दिये गये। उसी वक़्त आपने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! यही वह शहीद है जिसके बारे में ख़ुदा तआ़ला ने फ़रमाया है:

وَضَرَبَ اللّٰهُ..... الخ.

(यानी यह आयत जिसकी यह तफ़सीर चल रही है) उबैदुल्लाह बिन मुग़ीरा की सनद से भी यही क़ौल नक़ल किया गया है।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ٥ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ٥ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا	सो जो चीज़ें अल्लाह तआ़ला ने तुमको हलाल और पाक दी हैं उनको खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो। (114) तुमपर तो सिर्फ़ मुर्दार को हराम किया है, और ख़ून को, और सुअर के गोश्त को, और जिस चीज़ को अल्लाह के अ़लावा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो। फिर जो शख़्स बिल्कुल बेक़रार हो जाए, शर्त यह कि लज़्ज़त का तालिब न हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो अल्लाह बख़्श देने वाला, मेहरबानी करने वाला है। (115) और जिन चीज़ों के बारे में तुम्हारा महज़ झूठ ज़बानी दावा है, उनके बारे में यूँ मत कह

Mahtab E Ashraf

تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○	दिया करो कि (फ़ुलानी चीज़) हलाल है और यह (फ़ुलानी चीज़) हराम है, (जिसका हासिल यह होगा) कि अल्लाह पर झूठी तोहमत लगा दो (गे), बिला शुब्हा जो लोग अल्लाह पर झूठ तोहमत लगाते हैं वे फ़लाह न पाएँगे। (116) (यह) कुछ दिन का ऐश है, और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है। (117)

खाओ पियो

अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दों को अपनी दी हुई पाक रोज़ी हलाल करता है और शुक्र करने की हिदायत करता है। इसलिये कि नेमतों का देने वाला वही है, इसी लिये इबादत के लायक़ भी सिर्फ़ वही एक है, उसका कोई शरीक और साझी नहीं। फिर उन चीज़ों का बयान फ़रमा रहा है जो उसने मुसलमानों पर हराम कर दी हैं, जिसमें उनके दीन का नुक़सान भी है और उनकी दुनिया का नुक़सान भी है। जैसे अपने आप मरा हुआ जानवर, ज़िबह के वक़्त बहा हुआ ख़ून, सुअर का गोश्त और जो जानवर ख़ुदा के सिवा दूसरे के नाम पर ज़िबह किया जाये। लेकिन जो शख़्स इनके खाने की तरफ़ बेबस लाचार आ़जिज़ मोहताज बेक़रार हो जाये और इन्हें खा ले तो अल्लाह बख़्शिश व रहमत से काम लेने वाला है। सूरः ब-क़रह में इस जैसी आयत गुज़र चुकी है और वहीं इसकी पूरी और विस्तार से तफ़सीर भी बयान कर दी है, अब दोबारा दोहराने की हाजत नहीं।

फिर काफ़िरों के रवैये से मुसलमानों को रोक रहा है कि जिस तरह उन्होंने अपने आप चीज़ों और अफ़आ़ल (कामों) का हराम व हलाल होना क़ायम कर लिया है, तुम न करो। आपस में तय कर लिया कि फ़ुलाँ के नाम का जानवर हुर्मत व इज़्ज़त वाला है, बहीरा, सायबा, वसीला, हाम वग़ैरह। तो फ़रमान है कि अपनी ज़बानों से ख़ुदा के ज़िम्मे ग़लत इल्ज़ाम रखकर ख़ुद ही हलाल व हराम न ठहरा लो। इसमें यह भी दाख़िल है कि कोई अपनी तरफ़ से किसी बिदअ़त को निकाले, जिसकी कोई शरई दलील न हो, या ख़ुदा के हराम को हलाल करे, या जायज़ को हराम क़रार दे और अपनी राय और अ़क़्ल से अहकाम ईजाद करे। ऐसे लोग दुनिया की फ़लाह से आख़िरत की निजात से मेहरूम हो जाते हैं। दुनिया में अगरचे कुछ मामूली सा फ़ायदा उठा लें लेकिन मरते ही दर्दनाक अ़ज़ाब का लुक़्मा बनेंगे। यहाँ कुछ चखा-चखी (यानी मज़े) कर लें वहाँ सख़्त अ़ज़ाब बेबसी के साथ बरदाश्त करने पड़ेंगे। जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधने वाले निजात से मेहरूम हैं, दुनिया में कुछ थोड़ी सी पूँजी ले लें फिर तो हम उनको उनके कुफ़्र की वजह से सख़्त अ़ज़ाब चखायेंगे।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَاقَصَصْنَا	और यहूदियों पर हमने वे चीज़ें हराम कर दी थीं जिनका बयान हम इससे पहले आपसे

Maktab E Ashraf

عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ○ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ ۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْ ۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ ع ١٥ ٢١	कर चुके हैं और हमने उनपर कोई ज़्यादती नहीं की, लेकिन वे ख़ुद ही अपने ऊपर ज़्यादती किया करते थे। (118) फिर आपका रब ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुरा काम कर लिया, फिर उसके बाद तौबा कर ली और अपने आमाल दुरुस्त कर लिए, तो आपका रब उसके बाद बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला, बड़ी रहमत करने वाला है। (119)

यहूदियों की गुमराही

ऊपर बयान गुज़रा कि इस उम्मत पर मुर्दार ख़ून, सुअर का गोश्त और ख़ुदा के सिवा दूसरों के नाम की चीज़ें हराम हैं। फिर जो रुख़्सत (रियायत और छूट) इस बारे में थी उसे ज़ाहिर फ़रमाकर जो आसानी इस उम्मत पर की गयी है उसे बयान फ़रमाया। यहूदियों पर उनकी शरीअ़त में जो हराम था और जो तंगी और हर्ज उन पर था, उसे बयान फ़रमा रहा है कि हमने उन पर हराम हुई चीज़ों को पहले ही से तुझे बता दी हैं। सूरः अन्आ़म की आयतः

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ.

में उन हराम चीज़ों का ज़िक्र हुआ है। यानी यहूदियों पर हमने तमाम नाख़ुन वाले जानवरों को हराम कर दिया था और गाय और बकरियों की चर्बी को सिवाय उस चर्बी के जो उनकी पीठ पर लगी हो, अंतड़ियों पर या हड्डियों से मिली हुई हो। यह बदला था उनकी सरकशी का, हम अपने फ़रमान में बिल्कुल सच्चे हैं। हमने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया था, हाँ वे ख़ुद नाइन्साफ़ थे, उनके ज़ुल्म की वजह से हमने वे पाकीज़ा चीज़ें जो उन पर हलाल थीं हराम कर दीं। दूसरी वजह उनका राहे ख़ुदा से औरों को रोकना भी था।

फिर अल्लाह तआ़ला अपने उस रहम व करम की ख़बर देता है जो वह गुनाहगार मोमिनों के साथ करता है, कि इधर उसने तौबा की उधर रहमत भरी गोद उसके लिये फैल गयी। बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि जो अल्लाह की नाफ़रमानी करता है वह जाहिल ही होता है। तौबा कहते हैं गुनाह से हट जाने को। और इस्लाह (सुधार) कहते हैं इताअ़त पर कमर बाँध लेने को। पस जो ऐसा करे उसके गुनाह और उसकी ख़ता के बाद भी अल्लाह उसे बख़्श देता और उस पर रहम फ़रमाता है।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ○ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ	बेशक इब्राहीम बड़े मुक़्तदा 'यानी पेशवा और रहनुमा' थे अल्लाह तआ़ला के फ़रमाँबरदार थे, बिल्कुल एक तरफ़ के हो रहे थे, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। (120) यानी अल्लाह की नेमतों के शुक्रगुज़ार थे, अल्लाह

مُسْتَقِيْمٍ ○ وَاٰتَيْنٰـهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ○ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ○	तआ़ला ने उनको चुन लिया था और उनको सीधे रास्ते पर डाल दिया था। (121) और हमने उनको दुनिया में भी ख़ूबियाँ दी थीं और वे आख़िरत में भी अच्छे लोगों में होंगे। (122) फिर हमने आपके पास 'वही' भेजी कि आप इब्राहीम के तरीक़े पर जो कि बिल्कुल एक तरफ़ के हो रहे थे चलिए, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। (123)

हज़रत इब्राहीम की सिफ़तें और ख़ूबियाँ

अम्बिया के बाप और सही राह पर चलने वालों के इमाम, अल्लाह के दोस्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तारीफ़ बयान हो रही है और मुश्रिकों, यहूदियों और ईसाईयों से उन्हें अ़लैहदा किया जा रहा है। "उम्मतन्" के मायने इमाम के हैं, जिसकी पैरवी की जाये। "क़ानित" कहते हैं इताअ़त-गुज़ार फ़रमाँबरदार को। "हनीफ़" के मायने हैं शिर्क से हटकर तौहीद की तरफ़ आ जाने वाला। इसी लिये फ़रमाया कि वह मुश्रिकों से बेज़ार था। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से जब "उम्मते क़ानित" के मायने दरियाफ़्त किये गये तो फ़रमाया लोगों को भलाई सिखाने वाला और अल्लाह व रसूल की इताअ़त करने वाला। इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं "उम्मत" के मायने हैं लोगों को उनका दीन सिखाने वाला।

एक बार हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हज़रत मुआ़ज़ उम्मते क़ानित हनीफ़ थे। इस पर किसी ने अपने दिल में सोचा कि अ़ब्दुल्लाह ग़लती कर गये, क़ुरआन पाक के बयान के मुताबिक़ ऐसे तो हज़रत इब्राहीम थे। फिर ज़बानी कहा कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम को उम्मत फ़रमाया है, तो आपने फ़रमाया जानते भी हो उम्मत के क्या मायने हैं और क़ानित के क्या मायने? उम्मत कहते हैं उसे जो लोगों को भलाई सिखाये, और क़ानित कहते हैं उसे जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त में लगा रहे। बेशक हज़रत मुआ़ज़ ऐसे ही थे।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि वह तन्हा उम्मत थे, अल्लाह के फ़रमान के ताबे थे, वह अपने ज़माने में तन्हा तौहीद वाले मोमिन थे, उस वक़्त बाक़ी तमाम लोग काफ़िर थे। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि वह हिदायत के इमाम और ख़ुदा के ग़ुलाम थे। ख़ुदा की नेमतों के क़द्रदान और शुक्रगुज़ार थे, और रब के तमाम अहकाम पर आ़मिल थे। जैसे ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰى.

वह इब्राहीम जिसने पूरा किया। यानी ख़ुदा के तमाम अहकाम माने और उन पर अ़मल किया।

उसे ख़ुदा ने मुख़्तार और मुस्तफ़ा (यानी अपना चुना हुआ और पसन्दीदा बन्दा) बना लिया। जैसा कि फ़रमान हैः

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ.

हमने पहले ही से इब्राहीम को हिदायत दे रखी थी और हम उसे ख़ूब जानते थे। उन्हें हमने सीधे रास्ते

की रहबरी की थी, सिर्फ़ एक अल्लाह जिसका कोई शरीक नहीं की वह इबादत व इताअ़त करते थे, और ख़ुदा की पसन्दीदा शरीअ़त (दीन और मज़हब) पर क़ायम थे। हमने उन्हें दीन व दुनिया की ख़ैर का जामे बनाया था, अपनी पाकीज़ा ज़िन्दगी के तमाम ज़रूरी और अच्छे औसाफ़ (ख़ूबियाँ) उनमें थे। साथ ही आख़िरत में भी नेकों के साथ और बेहतराई वाले थे। उनका पाक ज़िक्र दुनिया में भी बाक़ी रहा और आख़िरत में बड़े अ़ज़ीमुश्शान दर्जे मिले। उनका कमाल, उनकी बड़ाई, उनकी मुहब्बत, तौहीद और उनके पाक तरीक़े पर ऐ रसूलों के सरदार! इससे भी रोशनी पड़ती है कि तुझे भी हमारा हुक्म हो रहा है कि मिल्लते इब्राहीम हनीफ़ की पैरवी करो। जो मुश्रिकों से अलग और बेताल्लुक़ था।

सूरः अन्आम में इरशाद है:

قُلْ اِنَّنِیْ ھَدٰنِیْ رَبِّیْٓ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ.

कह दे कि मुझे मेरे रब ने सिराते मुस्तक़ीम (सीधे और सही रास्ते) की रहबरी की है, मज़बूत और क़ायम, दीने इब्राहीम हनीफ़ की जो मुश्रिकों में से न था। फिर यहूदियों पर इनकार हो रहा है और फ़रमाया जा रहा है।

बस हफ़्ते की ताज़ीम तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर लाज़िम की गई थी जिन्होंने उसमें झगड़ा किया था, बेशक आपका रब क़ियामत के दिन उनमें आपस में फ़ैसला कर देगा जिस बात में ये इख़्तिलाफ़ (झगड़ा) किया करते थे। (124)	اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ۝

हफ़्ते का दिन

हर उम्मत के लिये हफ़्ते में एक दिन अल्लाह तआ़ला ने ऐसा मुक़र्रर किया है जिसमें वे जमा होकर ख़ुदा की इबादत की ख़ुशी मनायें। इस उम्मत के लिये वह दिन जुमे का है, इसलिये कि वह छठा दिन है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ की तकमील की और सारी मख़्लूक़ पैदा हो चुकी और अपने बन्दों को उनकी ज़रूरत की अपनी पूरी नेमत अ़ता फ़रमा दी। रिवायत है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़रिये यही दिन बनी इस्राईल के लिये मुक़र्रर फ़रमाया गया था लेकिन वे इससे हटकर हफ़्ते (शनिवार) के दिन को ले बैठे, यह समझ कर कि जुमे को मख़्लूक़ पूरी हो गयी, शनिवार के दिन ख़ुदा ने कोई चीज़ पैदा नहीं की। पस जब तौरात उतरी उन पर भी वही हफ़्ते का दिन मुक़र्रर हुआ और उन्हें हुक्म मिला कि अब इस पर क़ायम रहें। हाँ यह ज़रूर फ़रमा दिया गया था कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. जब भी आयें तो वे सबके सब को छोड़कर सिर्फ़ आपकी ही की इत्तिबा करें। इस बात पर उनसे वादा भी ले लिया था। पस हफ़्ते (शनिवार) का दिन उन्होंने ख़ुद ही अपने लिये चुन लिया था और ख़ुद ही जुमे को छोड़ा था।

हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने तक यह इसी पर रहे। कहा जाता है कि फिर आपने उन्हें इतवार के दिन की तरफ़ दावत दी। एक क़ौल है कि आपने तौरात की शरीअ़त छोड़ी न थी सिवाय कुछ मन्सूख़ (निरस्त) अहकाम के, और हफ़्ते (शनिवार) के दिन की अहमियत आपने भी बराबर जारी रखी। फिर जब आपको आसमान पर उठा लिया गया तो आपके बाद क़ुस्तुनतीन बादशाह के ज़माने में

Maktab E Ashraf

सिर्फ़ यहूदियों की ज़िद में आकर उन्होंने सख़रा से पूरब की दिशा को अपना क़िब्ला मुक़र्रर कर लिया और हफ़्ते (शनिवार) के बजाय इतवार का दिन मुक़र्रर कर लिया। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- हम सबसे आख़िर वाले हैं और क़ियामत के दिन सबसे आगे वाले हैं। हाँ उन्हें अल्लाह की किताब हमसे पहले दी गयी। यह दिन भी अल्लाह ने उन पर फ़र्ज़ किया लेकिन उनके इख़्तिलाफ़ (विवाद और मतभेद) ने उन्हें खो दिया और अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने हमें इसकी हिदायत दी। पस ये सब लोग हमारे पीछे ही पीछे हैं। यहूद एक दिन पीछे, ईसाई दो दिन।

आप फ़रमाते हैं कि हमसे पहले की उम्मतों को अल्लाह ने इस दिन से मेहरूम कर दिया। यहूद ने हफ़्ते (शनिवार) का दिन रखा, ईसाईयों ने इतवार का और जुमा हमारा हुआ। पस जिस तरह दिनों के एतिबार से वे हमारे पीछे हैं इसी तरह क़ियामत के दिन भी हमारे पीछे ही होंगे। हम दुनिया के एतिबार से पिछले हैं और क़ियामत के एतिबार से पहले हैं, यानी तमाम मख़्लूक़ में सबसे पहले फ़ैसले हमारे होंगे।

(मुस्लिम शरीफ़)

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ٥	आप अपने रब की राह की तरफ़ इल्म की बातों और अच्छी नसीहतों के ज़रिये से बुलाईए, और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बहस कीजिए। आपका रब ख़ूब जानता है उस शख़्स को भी जो उसके रास्ते से गुम हुआ और वही राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। (125)

दावत व तब्लीग़ करो लेकिन सलीक़े के साथ

अल्लाह रब्बुल-आलमीन अपने रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. को हुक्म फ़रमाता है कि आप अल्लाह की मख़्लूक़ को उसकी राह की तरफ़ हिक्मत के साथ बुलायें। हिक्मत से मुराद बक़ौल इमाम इब्ने जरीर रह. कलामुल्लाह और हदीसे रसूलुल्लाह सल्ल. है। और अच्छे वअ़ज़ से मुराद जिस्में डर और धमकी भी हो कि लोग उससे नसीहत हासिल करें, और ख़ुदा के अ़ज़ाब से पनाह तलब करें। हाँ यह भी ख़्याल रहे कि अगर किसी से मुनाज़रे (बहस और दीनी हुज्जत पेश करने) की ज़रूरत पड़ जाये तो वह नर्मी और अच्छे अलफ़ाज़ व अन्दाज़ के साथ हो, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ...... الخ.

'अहले किताब' से मुनाज़रे और झगड़ने का बेहतरीन तरीक़ा ही बरता करो....।

इसी तरह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को नर्मी का हुक्म हुआ था। दोनों भाईयों को यह कहकर फ़िरऔ़न की तरफ़ भेजा गया था कि उसे नर्म बात कहना, ताकि इबरत हासिल करे और होशियार हो जाये, राह भटके और राह लगे सब ख़ुदा के इल्म में हैं, बदबख़्त व नेकबख़्त सब उस पर स्पष्ट हैं, वहाँ लिखे जा चुके हैं और तमाम कामों के अन्जाम से फ़राग़त हो चुकी है। आप तो ख़ुदा की राह की दावत देते रहें लेकिन न मानने वालों के पीछे अपनी जान तबाही में न डालें। आप हिदायत के ज़िम्मेदार नहीं, आप सिर्फ़

Maktaba-E-Ashraf

आगाह करने वाले हैं। आप पर पैग़ाम का पहुँचा देना है, हिसाब हम लेंगे, हिदायत आपके बस की चीज़ नहीं, कि जिसे महबूब (प्यारा) समझें हिदायत पर ला खड़ा कर दें। लोगों की हिदायत के ज़िम्मेदार आप नहीं, यह ख़ुदा के क़ब्ज़े और उसके हाथ की चीज़ है।

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم بِهِ ۖ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ۝ ع 16 22	और अगर बदला लेने लगो तो इतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बर्ताव किया गया, और अगर सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के हक़ में बहुत ही अच्छी बात है। (126) और आप सब्र कीजिए और आपका सब्र करना ख़ुदा ही की तौफ़ीक़ से है, और उनपर ग़म न कीजिए। और जो कुछ ये तदबीरें किया करते हैं उससे तंगदिल न होईये। (127) अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों के साथ (होता) है जो परहेज़गार (होते) हैं और जो नेक काम करने वाले (होते) हैं। (128)

सब्र क्या ही अच्छी चीज़ है

क़िसास (बदला लेने) और हक़ के हासिल करने में मसावात (बराबरी) और इन्साफ़ का हुक्म हो रहा है। इमाम इब्ने सीरीन रह. फ़रमाते हैं कि पहले तो मुश्रिकों से दरगुज़र करने का हुक्म था, जब ज़रा हैसियत वाले लोग मुसलमान हुए तो उन्होंने कहा कि अगर ख़ुदा की तरफ़ से बदले की छूट हो जाये तो हम भी इन कुत्तों पर निपट लिया करें, इस पर यह आयत उतरी। आख़िर यह भी हुक्मे जिहाद से मन्सूख़ हो गयी। हज़रत अ़ता बिन यसार रह. फ़रमाते हैं कि सूरः नहल पूरी मक्का शरीफ़ में उतरी है मगर इसकी ये तीन आख़िरी आयतें मदीना शरीफ़ में उतरी हैं, जबकि जंगे उहुद में हज़रत हमज़ा रज़ि. शहीद कर दिये गये और आपके बदन के अंग भी शहादत के बाद काट लिये गये, जिस पर रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बान से बेसाख़्ता निकल गया कि अब जब मुझे अल्लाह तआ़ला उन मुश्रिकों पर ग़लबा देगा तो मैं उनमें से तीस शख़्सों के हाथ-पाँव इसी तरह काटूँगा। मुसलमानों के कान में जब अपने मोहतरम नबी के ये अलफ़ाज़ पड़े तो उनका जोश बहुत बढ़ गया और कहने लगे कि अल्लाह की क़सम हम उन पर ग़ालिब आकर उनकी लाशों के वह टुकड़े टुकड़े करेंगे कि अ़रब वालों ने कभी ऐसा देखा ही न हो। इस पर ये आयतें उतरीं।

(सीरत इब्ने इस्हाक़)

लेकिन यह रिवायत मुर्सल है और इसमें एक रावी ऐसा है जिसका नाम ही नहीं लिया गया, ग़ैर-स्पष्ट छोड़ा गया है, हाँ दूसरी सनद से यह मुत्तसिल भी नक़ल की गयी है। बज़्ज़ार में है कि जब हज़रत हमज़ा बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब रज़ि. शहीद कर दिये गये, आप पास आकर खड़े होकर देखने लगे, आह इससे ज़्यादा दिल दुखाने वाला मन्ज़र और क्या होगा कि मोहतरम चचा की लाश के टुकड़े आँखों के सामने बिखरे पड़े हैं। आपकी ज़बाने मुबारक से निकला कि आप पर अल्लाह की रहमत हो, जहाँ तक मेरा इल्म है मैं जानता हूँ कि आप रिश्ते-नाते के जोड़ने वाले, नेकियों को बढ़कर करने वाले थे। वल्लाह दूसरे लोगों के दर्द व ग़म

का ख़्याल न होता तो मैं आपके इस जिस्म को यूँ ही छोड़ देता, यहाँ तक कि आपको अल्लाह तआ़ला दरिन्दों के पेटों में से निकालता, या और कोई ऐसा ही कलिमा फ़रमाया। जब उन मुश्रिकों ने यह हरकत की है तो वल्लाह मैं भी उनके सत्तर शख़्सों की यही दुर्गत बना दूँगा। उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम 'वही' लेकर आये और ये आयतें उतरीं तो आप अपनी क़सम को पूरा करने से रुक गये और क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया। लेकिन सनद इसकी भी कमज़ोर है, इसके रावी सालेह बशीर मुर्री हैं जो हदीस के उलेमा के नज़दीक ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं बल्कि इमाम बुख़ारी तो इन्हें 'मुन्करुल-हदीस' कहते हैं।

इमाम शअ़बी और इब्ने जुरैज कहते हैं कि मुसलमानों की ज़बान से निकला था कि उन लोगों ने जो हमारे शहीदों की बेहुर्मती (बेक़द्री) की है और उनके बदन के हिस्से काट दिये हैं, वल्लाह हम भी उनसे इसका बदला लेकर ही छोड़ेंगे। पस अल्लाह ने उनके बारे में ये आयतें उतारीं। मुस्नद अहमद में है कि जंगे उहुद में साठ अन्सारी सहाबा शहीद हुए और छह मुहाजिर। रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा की ज़बान से निकल गया कि जब हम उन मुश्रिकों पर ग़लबा पायेंगे तो हम भी उनके टुकड़े किये बग़ैर न रहेंगे। चुनाँचे फ़त्हे मक्का वाले दिन एक शख़्स ने कहा कि आज के दिन के बाद क़ुरैश पहचाने भी न जायेंगे। उसी वक़्त आवाज़ लगाई गयी, अल्लाह के रसूल सल्ल. ने उसी वक़्त फ़रमाया कि हम सब्र करते हैं और बदला नहीं लेते।

इस आयते करीमा की क़ुरआने करीम में और भी बहुत सी नज़ीरें हैं। इसमें अ़दल व इन्साफ़ का जायज़ होना बयान हुआ है और अफ़ज़ल तरीक़े की तरफ़ इशारा किया गया है। जैसे आयतः

جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا...... الخ.

में है, कि बुराई का बदला लेने की रुख़्सत (छूट और इजाज़त) अ़ता फ़रमाकर फिर फ़रमाया कि जो दरगुज़र कर ले और इस्लाह कर ले तो उसका अज्र अल्लाह तआ़ला पर है।

इसी तरह आयतः

وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ.

में भी ज़ख़्मों का बदला लेने की इजाज़त देकर फ़रमाया है कि जो बतौर सदक़े के माफ़ कर दे। यह माफ़ी उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जायेगी।

इसी तरह इस आयत में भी बराबर का बदला लेने के जवाज़ का ज़िक्र फ़रमाकर फिर इरशाद हुआ है कि अगर सब्र कर लो तो यह बहुत ही बेहतर है।

फिर सब्र की और ज़्यादा ताकीद की और इरशाद फ़रमाया कि यह हर एक के बस का काम नहीं, उनसे ही हो सकता है जिनकी मदद पर ख़ुदा हो और जिन्हें उसकी तरफ़ से तौफ़ीक़ नसीब हुई हो।

फिर इरशाद होता है कि अपने मुख़ालिफ़ों के ग़म न खा, उनकी क़िस्मत में ही मुख़ालफ़त लिख दी गयी है, न उनके फ़रेब देने की आ़दत से परेशान और ग़मगीन हो। अल्लाह तुझे काफ़ी है, वही तेरा मददगार है, वही तुझे उन सब पर ग़ालिब करने वाला और उनकी मक्कारियों व चालाकियों से बचाने वाला है। उनकी दुश्मनी व बैर और उनके बुरे इरादे तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह तआ़ला की मदद और उसकी ताईद, हिदायत और उसकी तौफ़ीक़ उनके साथ है जिनके दिल ख़ुदा के डर से और जिनके आमाल एहसान (अल्लाह के ध्यान) के जौहर से भरे हुए हों। चुनाँचे जिहाद के मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों की तरफ़ 'वही' उतारी थीः

Maktab E Ashraf

اَنِّیْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا.

कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। पस तुम ईमान वालों को साबित-क़दम रखो।

इसी तरह हज़रत मूसा और हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम से फ़रमाया थाः

لَا تَخَافَآ اِنَّنِیْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰی.

कि तुम ख़ौफ़ न करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ, देखता सुनता हूँ।

ग़ारे सौर में रसूले करीम सल्ल. ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से फ़रमाया थाः

لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا.

ग़म न करो अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है।

पस यह साथ तो ख़ास था और मुराद इससे अल्लाह की ताईद और मदद का साथ होना है। और आ़म साथ का बयान आयतः

وَهُوَ مَعَكُمْ اَیْنَمَا كُنْتُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ.

(सूरः हदीद आयत 4) और आयतः

مَا یَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰی ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ... الخ.

(सूरः मुजादला आयत 7) और आयतः

وَمَا تَكُوْنُ فِیْ شَاْنٍ...... الخ.

(सूरः यूनुस आयत 61) में है। यानी अल्लाह तआ़ला तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो और वह तुम्हारे आमाल देखने वाला है। और जब तीन शख़्स कोई सरगोशी (कानाफूसी) करने लगें तो उनमें चौथा अल्लाह होता है, और पाँच में छठा वह होता है, और इससे कम व ज़्यादा में भी जहाँ वे हों अल्लाह उनके साथ होता है। और तू किसी हाल में हो, क़ुरआन के पढ़ने में हो या तुम किसी और काम में लगे हुए हो, हम तुम पर शाहिद (गवाह और देखने वाले) होते हैं।

पस इन आयतों में 'साथ' से मुराद सुनने देखने का साथ है। 'तक़वा' के मायने हैं हराम कामों और गुनाहों के कामों को अल्लाह के फ़रमान पर छोड़ देने के। और 'एहसान' के मायने हैं परवर्दिगार की इताअ़त व इबादत को बजा लाना। जिन लोगों में ये दोनों सिफ़तें हों वे अल्लाह तआ़ला की हिफ़्ज़ व अमान (सुरक्षा) में रहते हैं, अल्लाह तआ़ला उनकी ताईद और मदद फ़रमाता रहता है, उनके मुख़ालिफ़ और दुश्मन उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते, बल्कि अल्लाह तआ़ला उन्हें उन सब पर कामयाबी अ़ता फ़रमाता है।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत मुहम्मद बिन हातिब रह. से रिवायत है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु उन लोगों में से थे जो ईमान वाले, परहेज़गार और नेकोकार हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः नहल की तफ़सीर ख़त्म हुई

और इसी के साथ तफ़सीर इब्ने कसीर का चौदहवाँ पारा भी मुकम्मल हुआ।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर पन्द्रह

सूरः बनी इस्राईल

सूरः बनी इस्राईल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सूरः बनी इस्राईल के फ़ज़ाईल

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. की रिवायत है कि सूरः बनी इस्राईल, सूरः कहफ़ और सूरः मरियम सबसे पहली, सबसे बेहतर और बड़ी फ़ज़ीलत वाली हैं। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं- रसूलुल्लाह सल्ल. नफ़्ली रोज़े कभी तो इस तरह लगातार रखते चले जाते कि हम अपने दिल में कहते शायद हुज़ूर यह पूरा महीना रोज़ों ही में गुज़ार देंगे, और कभी-कभी बिल्कुल ही न रखते, यहाँ तक कि हम समझ लेते कि शायद आप इस महीने में रोज़े रखेंगे ही नहीं। और आपकी आ़दत मुबारक थी कि हर रात सूरः बनी इस्राईल और सूरः ज़ुमर पढ़ा करते थे।

नोटः हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का रोज़ाना इस सूरत को तिलावत फ़रमाना इसकी फ़ज़ीलत की बहुत बड़ी दलील है। फिर इस सूरत में आपके सफ़र-ए-मेराज का बयान है जो आपकी ज़िन्दगी का एक महत्तवपूर्ण वाक़िआ़ और आसमानों की सैर और वहाँ की मख़्लूक़ात को देखने, अम्बिया व फ़रिश्तों से मुलाक़ात और बहुत से अ़जायबात पर आधारित है इस लिये भी इस सूरत से आपको ख़ास लगाव होगा। रोज़ों को कभी लगातार रखने और कभी छोड़ने से आपका मक़सद अपनी उम्मत को एतिदाल की तालीम और उम्मत को सहूलत की तालीम देना था कि नफ़्ली इबादतों में जहाँ ख़ूब कोशिश करके आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा जमा करने की ज़रूरत है वहीं अल्लाह की दी हुई रुख़्सत और आसानी से फ़ायदा उठाना भी मतलूब है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

वह पाक (ज़ात) है जो अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को रात के वक़्त मस्जिदे हराम (यानी काबा की मस्जिद) से मस्जिदे अक़्सा (यानी बैतुल-मुक़द्दस) तक, जिस के चारों तरफ़ (यानी मुल्क शाम में) हमने बरकतें कर रखी हैं, ले गया, ताकि हम उनको अपनी (क़ुदरत के) कुछ अ़जायबात (आश्चर्य) दिखलाएँ, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े सुनने वाले, बड़े देखने वाले हैं। (1)	سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ○

Maktab E Ashraf

नबी करीम सल्ल. की तरक़्क़ी व बुलन्दी की इन्तिहा

अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ाते पाक की इज़्ज़त व बड़ाई और अपनी पाकीज़गी व क़ुदरत का बयान फ़रमाता है कि वह हर चीज़ पर क़ादिर है, उस जैसी क़ुदरत किसी में नहीं। वही इबादत के लायक़ और सिर्फ़ वही सारी मख़्लूक़ की परवरिश करने वाला है। वह अपने बन्दे यानी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. को एक ही रात के एक हिस्से में मक्का शरीफ़ की मस्जिद से बैतुल-मुक़द्दस की मस्जिद तक ले गया, जो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम के ज़माने से अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का मर्कज़ (केन्द्र) रहा। इसी लिये तमाम अम्बिया वहीं आपके पास जमा किये गये और आपने वहीं उन्हीं की जगह उन सबकी इमामत की, जो दलील है इस बात की कि सबसे बड़े इमाम और सम्मानित आप ही हैं। आप पर और तमाम अम्बिया व रसूलों पर दुरूद व सलाम हो।

उस मस्जिद के इर्द-गिर्द हमने बरकत दे रखी है, फल फूल खेत और बाग़ात वग़ैरह से। यह इसलिये कि हमारा इरादा अपने सम्मानित रसूल को अपनी ज़बरदस्त निशानियाँ दिखाने का था, जो आपने इस रात मुलाहिज़ा फ़रमायीं। ख़ुदा तआ़ला अपने बन्दों की मोमिनों और काफ़िरों की, यक़ीन वालों और मुन्किरों की सबकी बातें सुनने वाला है और सबको देख रहा है। हर एक को वही देगा जिसका वह मुस्तहिक़ है। दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

मेराज के बारे में बहुत सी हदीसें हैं जिनकी तफ़सील यह है। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि मेराज वाली रात जबकि काबा शरीफ़ से आपको बुलाया गया, आपके पास तीन फ़रिश्ते आये, इससे पहले कि आपकी तरफ़ 'वही' की जाये। उस वक़्त आप बैतुल्लाह शरीफ़ में सोये हुए थे, उनमें से अगले ने पूछा कि यह उन सब में से कौन हैं? बीच वाले ने जवाब दिया कि यह उन सब में बेहतर हैं। तो सबसे आख़िर वाले ने कहा फिर इनको ले चलो। बस उस रात तो इतना ही हुआ। फिर आपने उन्हें न देखा। दूसरी रात फिर ये तीनों आये, उस वक़्त भी आप सो रहे थे, और इस तरह सो रहे थे कि आँखें सोई हुई थीं और दिल जाग रहा था। तमाम अम्बिया की नींद इसी तरह की होती है।

उस रात उन्होंने आपसे कोई बात नहीं की। आपको उठाकर ज़मज़म के कुएँ के पास लिटाया, आपका सीना गर्दन तक ख़ुद जिब्राईल ने अपने हाथ से चाक किया और सीने और पेट की तमाम चीज़ें निकाल कर उन्हें अपने हाथ से ज़मज़म के पानी से धोया। जब ख़ुद पाक साफ़ कर चुके तो आपके पास एक सोने का तश्त लाया गया, जिसमें सोने का एक बड़ा प्याला था जो हिक्मत और ईमान से भरा हुआ था, उससे आपके सीने और गले की रगों को पुर कर दिया। फिर सीने को सी दिया गया।

फिर आपको दुनिया वाले आसमान की तरफ़ लेकर चढ़े, वहाँ के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खटखटाया। फ़रिश्तों ने पूछा कौन है? आपने फ़रमाया जिब्राईल। पूछा आपके साथ कौन हैं? फ़रमाया मेरे साथ मुहम्मद (सल्ल.) हैं। पूछा क्या आपको बुलवाया गया है? जवाब दिया कि हाँ। सब बहुत ख़ुश हुए और मर्हबा कहते हुए आपको ले गये। आसमानी फ़रिश्ते भी कुछ नहीं जानते कि ज़मीन पर ख़ुदा तआ़ला क्या कुछ करना चाहता है, जब तक कि उन्हें मालूम न करा दिया जाये। आपने दुनिया वाले आसमान पर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पाया। जिब्राईल ने परिचय कराया कि यह आपके वालिद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हैं, इन्हें सलाम कीजिए। आपने सलाम किया। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया मर्हबा कहा और फ़रमाया आप मेरे बहुत ही अच्छे बेटे हैं। वहाँ दो नहरें जारी देखकर आपने हज़रत

जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से दरियाफ़्त किया कि ये नेहरें क्या हैं? आपने जवाब दिया कि नील और फ़ुरात का एक हिस्सा। फिर आपको आसमान में ले चले। आपने एक और नहर देखी जिस पर लुअ्लुअ् और मोतियों के बालाख़ाने थे, जिसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क थी। पूछा यह कौनसी नहर है? जवाब मिला कि यह कौसर नहर है, यह आपके परवर्दिगार ने आपके लिये तैयार कर रखी है।

फिर आपको दूसरे आसमान पर ले गये, वहाँ के फ़रिश्तों से वही बातें हुईं। फिर आपको तीसरे आसमान पर ले गये, वहाँ के फ़रिश्तों से भी वही सवाल व जवाब हुए जो पहले और दूसरे आसमान पर हुए थे। फिर आपको चौथे आसमान पर चढ़ाया गया। उन फ़रिश्तों ने भी इसी तरह पूछा और जवाब पाया वग़ैरह। फिर पाँचवें आसमान पर चढ़ाये गये, वहाँ भी वही कहा सुना गया। फिर छठे पर, फिर सातवें आसमान पर गये। वहाँ भी यही बातचीत हुई। हर आसमान पर वहाँ के नबियों से मुलाक़ातें हुयीं जिनके नाम हुज़ूर सल्ल. ने बतलाये, जिनमें से मुझे यह याद हैं कि दूसरे आसमान में हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम, चौथे आसमान में हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम, पाँचवें आसमान वाले का नाम मुझे याद नहीं। छठे में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, सातवें में हज़रत मूसा कलीमुल्लाह। उन सब पर अल्लाह की रहमतें हों।

जब आप यहाँ से भी ऊपर चले तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा- ख़ुदाया! मेरा ख़्याल था कि मुझसे बुलन्द तू किसी को न करेगा। अब आप उस बुलन्दी पर पहुँचे जिसका इल्म ख़ुदा ही को है, यहाँ तक कि सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुँचे और ख़ुदा तआ़ला आपसे बहुत ही नज़दीक हुआ दो कमान के बराबर, बल्कि इससे भी कम फ़ासले पर। फिर ख़ुदा की तरफ़ से आपकी जानिब 'वही' की गयी, जिसमें आपकी उम्मत पर हर दिन रात में पचास नमाज़ फ़र्ज़ हुयीं।

जब आप वहाँ से उतरे तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने आपको रोका और पूछा कि क्या हुक्म मिला? फ़रमाया दिन रात में पचास नमाज़ों का। कलीमुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह आपकी उम्मत की ताक़त से बाहर है, आप वापस जाईये और कमी को तलब कीजिए। आपने हज़रत जिब्राईल की तरफ़ देखा कि गोया आप उनसे मश्विरा ले रहे हैं। उनका भी इशारा पाया कि अगर आपकी मर्ज़ी हो तो क्या हर्ज है। आप फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला की तरफ़ गये और अपनी जगह ठहर कर दुआ़ की- ख़ुदाया! हमें कमी अ़ता हो, मेरी उम्मत इसकी ताक़त नहीं रखती। पस अल्लाह तआ़ला ने दस नमाज़ें कम कर दीं। फिर आप वापस लौटे। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फिर आपको रोका और यह सुनकर फ़रमाया जाओ और कम कराओ। आप फिर गये फिर कम हुयीं। यहाँ तक कि आख़िर में पाँच रह गयीं। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फिर भी फ़रमाया कि देखो मैं बनी इस्राईल में अपनी उम्र गुज़ार आया हूँ। उन्हें इससे भी कम का हुक्म था लेकिन फिर भी वे बोदे और कम-हिम्मत साबित हुए और उसे छोड़ बैठे। आपकी उम्मत तो उनसे भी कमज़ोर है, जिस्म के एतिबार से भी और दिल बदन आँख कान के एतिबार से भी। आप फिर जाईये और अल्लाह तआ़ला से कमी की तलब कीजिए। आपने फिर आ़दत के मुताबिक़ हज़रत जिब्राईल की तरफ़ देखा। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आपको फिर ऊपर ले गये। आपने अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ की कि ख़ुदाया मेरी उम्मत के जिस्म दिल कान आँखें और बदन कमज़ोर हैं, हमसे और भी कमी कर। उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- ऐ मुहम्मद! आपने जवाब दिया 'लब्बैक व सअ़दैक' (यानी मैं हाज़िर हूँ) फ़रमाया सुन! मेरी बातें बदलती नहीं। जो मैंने अब मुक़र्रर किया है यही मैं उम्मुल-किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) में लिख चुका हूँ। यह पढ़ने के एतिबार से पाँच हैं और सवाब के एतिबार से पचास हैं।

जब आप वापस आये, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा कहो सवाल मन्ज़ूर हुआ? आपने फ़रमाया

हाँ कमी हो गयी, यानी पाँच पर सवाब पचास का मिल गया। हर नेकी का सवाब दस गुना अ़ता फ़रमाये जाने का वादा हो गया। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फिर फ़रमाया कि मैं बनी इस्राईल का तजुर्बा कर चुका हूँ उन्होंने इससे भी हल्के अहकाम को छोड़ दिया था। आप फिर जाईये और परवर्दिगार से कमी तलब कीजिए। रसूलुल्लाह सल्ल. ने जवाब दिया कि ऐ कलीमुल्लाह! मैं गया आया, अब तो मुझे शर्म आती है। आपने फ़रमाया अच्छा फिर तशरीफ़ ले जाईये, बिस्मिल्लाह कीजिए।

अब जब आप जागे तो मस्जिदे हराम में थे। सही बुख़ारी शरीफ़ में यह हदीस किताबुत्तौहीद में भी है और सिफ़तुन्नबी में भी है। यही रिवायत शुरैक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबू नमर से मन्क़ूल है, लेकिन उन्होंने इसमें कमज़ोरी पैदा कर दी, अपने हाफ़िज़े की कमज़ोरी की वजह से बिल्कुल ठीक तरह याद नहीं रखा। इन हदीसों के आख़िर में इसका बयान आयेगा इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

बाज़ ख़्वाब का वाक़िआ़ बयान करते हैं, शायद इस जुमले की बिना पर जो इसके आख़िर में आया है कि 'जब आप जागे'। वल्लाहु आलम। हाफ़िज़ अबू बक्र बैहक़ी रह. इस हदीस के इस जुमले को जिसमें है कि फिर अल्लाह तआ़ला क़रीब हुआ और उतर आया, पस दो कमान के बराबर क़रीब हो गया बल्कि और नज़दीक, शुरैक नाम के रावी की वह ज़्यादती बतलाते हैं जिसमें वह अकेले हैं। इसी लिये बाज़ हज़रात ने कहा है कि आपने उस रात अल्लाह तआ़ला को देखा, लेकिन हज़रत आ़यशा, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हुम इन आयतों को इस पर महमूल करते हैं कि आपने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को देखा, यही ज़्यादा सही है। और इमाम बैहक़ी रह. का फ़रमान बिल्कुल हक़ है।

एक और रिवायत में है कि जब आपसे हज़रत अबूज़र रज़ि. ने सवाल किया कि आपने अल्लाह तआ़ला को देखा है? तो आपने फ़रमाया वह नूर है, मैं उसे कैसे देख सकता हूँ। एक और रिवायत में है कि मैंने नूर देखा है जो सूरः नज्म में है:

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰی.

यानी फिर वह नज़दीक हुआ और उतर आया।

इससे मुराद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं, जैसे कि इन तीनों सहाबियों का बयान है। सहाबा में से तो कोई इस आयत की इस तफ़सीर में उनका मुख़ालिफ़ (विरोधी) नज़र नहीं आता।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरे पास बुराक़ लाया गया जो गधे से ऊँचा और ख़च्चर से नीचा था, जो एक-एक क़दम इतनी-इतनी दूर रखता था जितनी दूर उसकी निगाह पहुँचे। मैं उस पर सवार हुआ, वह मुझे ले चला। बैतुल-मुक़द्दस में पहुँचा और उसी कुन्डे में उसे बाँध दिया जहाँ अम्बिया बाँधा करते थे। फिर मैंने मस्जिद में जाकर दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। जब वहाँ से निकला तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मेरे पास एक बरतन में शराब और एक में दूध लाये। मैंने दूध को पसन्द किया। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम फ़ितरत (हक़ीक़त) तक पहुँच गये। फिर ऊपर वाली हदीस की तरह पहले आसमान पर पहुँचना, उसका खुलवाना, फ़रिश्तों का दरियाफ़्त करना, जवाब पाना, हर आसमान पर इसी तरह होना बयान है। पहले आसमान पर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई जिन्होंने मर्हबा कहा और दुआ़-ए-ख़ैर की। दूसरे आसमान पर हज़रत यहया और हज़रत ईसा अ़लैहिमस्सलाम से मुलाक़ात होने का ज़िक्र है, जो दोनों आपस में ख़ालाज़ाद भाई थे। उन दोनों ने भी आपको मर्हबा कहा और दुआ़ दी। फिर तीसरे आसमान पर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई जिन्हें आधा हुस्न दिया गया है।

आपने भी मर्हबा कहा, नेक दुआ दी। फिर चौथे आसमान पर हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। छठे आसमान पर हज़रत मूसा से मुलाक़ात हुई। सातवें आसमान पर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को बैतुल-मामूर से तकिया (टेक) लगाये बैठे हुए देखा।

बैतुल-मामूर में हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं मगर जो आज गये उनकी बारी फिर क़ियामत तक नहीं आयेगी। फिर सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुँचे जिसके पत्ते हाथी के कानों के बराबर थे और जिसके फल मटके जैसे। उसे ख़ुदा के हुक्म ने ढक रखा था, उसकी ख़ूबी का कोई बयान नहीं कर सकता। फिर 'वही' होने, पचास नमाज़ों के फ़र्ज़ होने और हज़रत मूसा के मश्विरे से वापस जा-जाकर कमी करा-करा कर पाँच तक पहुँचने का बयान है। इसमें हर बार के सवाल पर पाँच की कमी का ज़िक्र है, उसमें यह भी है कि आख़िर में आप से फ़रमाया गया कि जो नेकी का इरादा करे, अगर वह उसको न कर सके तब भी उसे एक नेकी का सवाब मिल जाता है और अगर कर ले तो दस नेकियों का सवाब मिलता है। और गुनाह के सिर्फ़ इरादे से गुनाह नहीं लिखा जाता, और कर लेने से एक ही गुनाह लिखा जाता है। (मुस्लिम)

इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि जिस रात आपको बैतुल्लाह से बैतुल-मुक़द्दस तक सफ़र कराया गया उसी रात मेराज भी हुई और यही हक़ है, जिसमें कोई शक व शुब्हा नहीं। मुस्नद अहमद में है कि बुराक़ की लगाम भी थी और ज़ीन भी। जब वह सवारी के वक़्त कसमसाया तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा क्या कर रहा है? अल्लाह की क़सम तुझ पर आपसे पहले आपसे ज़्यादा बुज़ुर्ग (रुतबे वाला) शख़्स कोई सवार नहीं हुआ। पस बुराक़ पसीना-पसीना हो गया।

आप फ़रमाते हैं कि जब मुझे मेरे रब तआ़ला की तरफ़ चढ़ाया गया तो मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ जिनके ताँबे के नाख़ुन थे, जिनसे वे अपने चेहरों और सीनों को नोच और छील रहे थे। मैंने दरियाफ़्त किया कि ये कौन लोग हैं? तो जवाब दिया गया कि वे हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे (यानी ग़ीबत और चुग़ली करते थे) और उनकी इ़ज़्ज़त व आबरू के पीछे पड़े रहते थे। अबू दाऊद में है कि मेराज वाली रात जब मैं हज़रत मूसा की क़ब्र से गुज़रा तो मैंने उन्हें वहाँ नमाज़ में खड़ा पाया। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने आपसे मस्जिदे अक़्सा के निशान पूछे जो आपने बताने शुरू किये ही थे कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. कहने लगे आप सही इरशाद फ़रमा रहे हैं और सच्चे हैं। मेरी गवाही है कि आप अल्लाह के रसूल हैं। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने उसे देख रखा था।

मुस्नद बज़्ज़ार में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इरशाद फ़रमाया- मैं सोया हुआ था कि हज़रत जिब्राईल आये और मेरे दोनों कन्धों के बीच हाथ रख दिया, पस मैं खड़ा होकर एक दरख़्त में बैठ गया जिसमें परिन्दों के मकान जैसे थे। एक में हज़रत जिब्राईल बैठ गये, वह दरख़्त फूल गया और ऊँचा होना शुरू हुआ, यहाँ तक कि अगर मैं चाहता तो आसमान को छू लेता, मैं तो अपनी चादर ठीक कर रहा था लेकिन मैंने देखा कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम बहुत ज़्यादा विनम्रता और आ़जिज़ी की हालत में हैं, तो मैं जान गया कि ख़ुदा की मारिफ़त (पहचान) के इल्म में यह मुझसे अफ़ज़ल (बेहतर) हैं। आसमान का एक दरवाज़ा मेरे लिये खोला गया। मैंने एक ज़बरदस्त अ़ज़ीमुश्शान नूर देखा जो हिजाब (पर्दे) में था और उसके उस तरफ़ याक़ूत और मोती थे। फिर मेरी तरफ़ बहुत कुछ 'वही' की गयी।

किताब दलाईल-ए-बैहक़ी में है कि हुज़ूर सल्ल. अपने सहाबा की जमाअ़त में बैठे हुए थे कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और आपकी पीठ को उंगली से इशारा किया। आप सल्ल. उनके साथ एक दरख़्त की जानिब चले, जिसमें परिन्दों के जैसे घौंसले थे........। उसमें यह भी है कि जब हमारी तरफ़ नूर उतरा तो

हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम तो बेहोश होकर गिर पड़े....। मेरी तरफ़ 'वही' की गयी कि नबी और बादशाह होना चाहते हो या नबी और बन्दा होना चाहते हो और जन्नती? हज़रत जिब्राईल ने इसी तरह तवाज़ो (विनम्रता) से गिरे हुए मुझसे इशारे से फ़रमाया कि तवाज़ो (यानी बन्दा होना) इख़्तियार करो। मैंने जवाब दिया कि ख़ुदाया मैं नबी और बन्दा बनना मन्ज़ूर करता हूँ। अगर यह रिवायत सही हो जाये तो मुम्किन है कि यह वाक़िआ़ मेराज के अ़लावा का हो। क्योंकि इसमें न बैतुल-मुक़द्दस का ज़िक्र है, न आसमान पर चढ़ने का। वल्लाहु आलम

बज़्ज़ार की एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने रब तआ़ला को देखा, लेकिन यह रिवायत ग़रीब है। इब्ने जरीर में है कि बुराक़ ने जब हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम की बात सुनी और फिर वह आपको सवार कराकर ले चला तो आपने रास्ते के एक किनारे पर एक बुढ़िया को देखा। पूछा यह कौन है? जवाब मिला कि चले चलिये। फिर आपने चलते-चलते देखा कि कोई रास्ते से एक तरफ़ को है और आप को बुला रहा है। फिर आप आगे बढ़े तो देखा कि ख़ुदा की एक मख़्लूक़ है और बुलन्द आवाज़ से कह रही है 'अस्सलामु अ़लै-क या अव्वलस्सलामि अ़लै-क या आख़िरस्सलामि अ़लै-क या हाशिरु'।

जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- जवाब दीजिए। आपने उनके सलाम का जवाब दिया। फिर दोबारा ऐसा ही हुआ। फिर तीसरी मर्तबा भी यही हुआ, यहाँ तक कि आप बैतुल-मुक़द्दस पहुँचे। वहाँ आपके सामने पानी, शराब और दूध पेश किया गया। आपने दूध ले लिया। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया आपने फ़ितरत का राज़ पा लिया। अगर आप पानी का बरतन लेकर पी लेते तो आपकी उम्मत ग़र्क़ हो जाती। और अगर आप शराब पी लेते तो आपकी उम्मत बहक जाती। फिर आपके पास हज़रत आदम से लेकर आपके ज़माने तक के तमाम अम्बिया भेजे गये। रसूलुल्लाह सल्ल. ने उनकी इमामत कराई और उस रात सबने नमाज़ आपकी इक़्तिदा (इमामत) में पढ़ी। फिर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया रास्ते के किनारे जिस बुढ़िया को आपने देखा था वह गोया यह दिखाया गया था कि दुनिया की उम्र अब सिर्फ़ इतनी ही बाक़ी है जैसे बुढ़िया की उम्र, और जिसकी आवाज़ पर आप तवज्जोह करने वाले थे वह ख़ुदा का दुश्मन इब्लीस (शैतान) था, और जिनके सलाम की आवाज़ें आपने सुनीं वह इब्राहीम, मूसा और ईसा अ़लैहिमुस्सलाम थे। इस रिवायत में भी बाज़ अलफ़ाज़ ग़रीब व मुन्कर हैं। वल्लाहु आलम

एक और रिवायत में है कि जब मैं बुराक़ पर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के साथ चला तो एक जगह उन्होंने मुझसे फ़रमाया- यहीं उतर कर नमाज़ अदा कीजिए। जब मैं नमाज़ पढ़ चुका तो फ़रमाया जानते हो यह कौनसी जगह है? यह तैबा यानी मदीना है। यही हिजरत का स्थान है। फिर एक और जगह मुझसे नमाज़ पढ़वाई और फ़रमाया यह तूरे-सीना है, जहाँ अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा से कलाम किया। फिर एक और जगह नमाज़ पढ़वाकर फ़रमाया यह बैतुल-लहम है, जहाँ हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए। फिर मैं बैतुल-मुक़द्दस पहुँचा वहाँ तमाम अम्बिया जमा हुए। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने मुझे इमाम बनाया। मैंने उनकी इमामत की, फिर मुझे आसमान की तरफ़ चढ़ा ले गये, फिर आपका एक-एक आसमान पर पहुँचना, वहाँ पैग़म्बरों से मिलना बयान किया गया है। फ़रमाते हैं कि जब मैं सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुँचा तो मुझे एक नूरानी बादल ने ढाँक लिया, मैं उसी वक़्त सज्दे में गिर पड़ा। फिर आप पर पचास नमाज़ों का फ़र्ज़ होना और कम होने वग़ैरह का बयान है। आख़िर में हज़रत मूसा के बयान में है कि मेरी उम्मत पर तो सिर्फ़ दो नमाज़ें मुक़र्रर हुई थीं लेकिन वे उन्हें भी न बजा लाये। आप फिर पाँच से भी कमी चाहने के लिये गये तो फ़रमाया कि मैंने तो आसमान और ज़मीन की पैदाईश वाले दिन ही तुझ पर और तेरी उम्मत पर ये

Maktaba Ashraf

पाँच नमाज़ें मुक़र्रर कर दी थीं। ये पढ़ने में पाँच हैं और सवाब में पचास हैं। पस तू और तेरी उम्मत इसकी हिफ़ाज़त करे। आप फ़रमाते हैं कि अब मुझे यक़ीन हो गया कि ख़ुदा का यही आख़िरी हुक्म है। फिर जब मैं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँचा तो आपने मुझे फिर वापस लौटने का मश्विरा दिया लेकिन चूँकि मैं मालूम कर चुका था कि यह ख़ुदा तआ़ला का आख़िरी हुक्म है, इसलिये मैं फिर ख़ुदा के पास न गया।

इब्ने अबी हातिम में भी मेराज के वाक़िए की लम्बी हदीस है, उसमें यह भी है कि जब हुज़ूर सल्ल. बैतुल-मुक़द्दस की मस्जिद के पास उस दरवाज़े पर पहुँचे जिसे बाबे मुहम्मद कहा जाता है, वहीं एक पत्थर था जिसे हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने अपनी उंगली लगाई तो उसमें सुराख़ हो गया, वहीं आपने बुराक़ को बाँधा और मस्जिद पर चढ़ गये। मध्य तक पहुँच जाने के बाद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा आपने अल्लाह तआ़ला से यह आरज़ू की है कि वह आपको हूरें दिखाये? आपने फ़रमाया हाँ, कहा आईये वो ये हैं। सलाम कीजिए वे सख़रा की बायीं तरफ़ बैठी हुई थीं। मैंने वहाँ पहुँचकर उन्हें सलाम किया, सब ने मेरे सलाम का जवाब दिया। मैंने पूछा तुम सब कौन हो? उन्होंने कहा हम नेक-सीरत ख़ूबसूरत हूरें हैं, हम बीवियाँ हैं ख़ुदा के उन परहेज़गार बन्दों की जो नेक काम करने वाले हैं, जो गुनाहों के मैल-कुचैल से दूर हैं, जो पाक करके हमारे पास लाये जायेंगे। फिर न निकाले जायेंगे, हमारे पास ही रहेंगे, कभी जुदा न होंगे, हमेशा ज़िन्दा रहेंगे, कभी न मरेंगे। मैं उनके पास से चला आया, वहीं लोग जमा होना शुरू हो गये और थोड़ी ही देर में बहुत से आदमी जमा हो गये। मुअज़्ज़िन ने अज़ान कही, तकबीर हुई और हम सब खड़े हो गये। मुन्तज़िर थे कि इमामत कौन करेगा कि जिब्राईल ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे आगे कर दिया। मैंने उन्हें नमाज़ पढ़ाई। जब फ़ारिग़ हुआ तो जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा जानते भी हो आपने किनको नमाज़ पढ़ाई है? मैंने कहा नहीं। फ़रमाया आपके पीछे ये सब मुतक़्क़ी ख़ुदा के पैग़म्बर थे, जिन्हें अल्लाह तआ़ला दुनिया में भेज चुका है। फिर मेरा हाथ थामकर आसमान की तरफ़ चले। फिर बयान है कि आसमानों के दरवाज़े खुलवाये। फ़रिश्तों ने सवाल किया, जवाब पाकर दरवाज़े खोले वग़ैरह।

पहले आसमान पर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। उन्होंने फ़रमाया मेरे बेटे और नेक नबी को मर्हबा हो। इसमें चौथे आसमान पर हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात करने का ज़िक्र भी है। सातवें आसमान पर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से मिलने और उनके भी वही फ़रमाने का ज़िक्र है जो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया था। फिर मुझे वहाँ से भी ऊपर ले गये। मैंने एक नहर देखी जिसमें लुअ्लुअ् याक़ूत और ज़बर्जद के जाम थे और बेहतरीन अच्छे रंग के सब्ज़ परिन्दे थे, मैंने कहा यह तो बहुत ही नफ़ीस और उम्दा परिन्दे हैं। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया हाँ! इनके खाने वाले इनसे भी अच्छे हैं। फिर फ़रमाया मालूम भी है यह कौनसी नहर है? मैंने कहा नहीं, फ़रमाया वह नहरे कौसर है जो ख़ुदा ने आपको अ़ता कर रखी है। इसमें सोने चाँदी के आबख़ोरे (प्याले) थे जो याक़ूत व ज़मर्रुद से जड़े हुए थे। उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद था, मैंने एक सोने का प्याला लेकर पानी भरकर पिया तो वह शहद से भी ज़्यादा मीठा और मुश्क से भी ज़्यादा ख़ुशबूदार था।

जब मैं उससे भी ऊपर पहुँचा तो एक बहुत ही ख़ूबसूरत बादल ने मुझे आ घेरा, जिसमें विभिन्न और अनेक रंग थे। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने मुझे छोड़ दिया और मैं ख़ुदा के सामने सज्दे में गिर पड़ा। फिर पचास नमाज़ों के फ़र्ज़ होने का बयान है। फिर आप वापस हुए। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने तो कुछ न फ़रमाया लेकिन हज़रत मूसा ने आपको समझा-बुझाकर वापस कमी की दरख़्वास्त के लिये भेजा। ग़र्ज़ कि

इसी तरह आपका बार-बार आना, बादल में ढक जाना, दुआ करना, नमाज़ में कमी होना, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से मिलते हुए आना और हज़रत मूसा से बयान करना, यहाँ तक कि पाँच नमाज़ों का रह जाना बयान किया गया है, वग़ैरह।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि फिर जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मुझे लेकर नीचे उतरे। मैंने उनसे पूछा कि जिस आसमान पर मैं पहुँचा वहाँ के फ़रिश्तों ने ख़ुशी ज़ाहिर की, हंस-हंसकर मुस्कुराते हुए मुझसे मिले सिवाय एक फ़रिश्ते के कि उसने मेरे सलाम का जवाब तो दिया, मुझे मर्हबा भी कहा, लेकिन मुस्कुराये नहीं। यह कौन हैं और इसकी क्या वजह है? हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया वह 'मालिक' जहन्नम के दरोग़ा हैं। अपने पैदा होने से लेकर आज तक वह हंसे ही नहीं, और क़ियामत तक हंसेंगे भी नहीं, क्योंकि उनकी ख़ुशी का यही एक बड़ा मौक़ा था। वापसी में क़ुरैश वालों के एक क़ाफ़िले को देखा जो ग़ल्ला लादे जा रहा था। उसमें एक ऊँट था जिस पर एक सफ़ेद और एक काला बोरा था। जब आप उसके क़रीब से गुज़रे तो वह चमक गया और मुड़ गया, गिर पड़ा और लंगड़ा हो गया। आप इसी तरह अपनी जगह पहुँचा दिये गये।

सुबह आपने अपनी इस मेराज का ज़िक्र लोगों से किया। मुश्रिकों ने जब यह सुना तो वे सीधे हज़रत अबू बक्र रज़ि. के पास पहुँचे और कहने लगे लो तुम्हारे पैग़म्बर तो कहते हैं कि वह आजकी एक ही रात में महीने भर के फ़ासले के मक़ाम तक हो आये। आपने जवाब दिया अगर वास्तव में आपने यह फ़रमाया हो तो आप सच्चे हैं। हम तो इससे भी बड़ी बात में आपको सच्चा जानते हैं। हम मानते हैं कि आपको आन की आन में आसमान से ख़बरें पहुँचती हैं। मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्ल. से कहा कि आप अपनी सच्चाई की कोई निशानी भी पेश कर सकते हैं? आपने फ़रमाया हाँ मैंने रास्ते में फ़ुलाँ फ़ुलाँ क़ुरैश का क़ाफ़िला देखा है, उनका एक ऊँट जिस पर सफ़ेद और काले रंग के दो बोरे हैं, वह हमें देखकर भड़का, घूमा, चक्कर खाकर गिर पड़ा और टाँग टूट गयी। जब वह क़ाफ़िला आया तो लोगों ने उनसे जाकर पूछा कि रास्ते में कोई नई बात तो नहीं हुई? उन्होंने कहा हाँ हुई। फ़ुलाँ ऊँट फ़ुलाँ जगह इस तरह गिरा, वग़ैरह। कहते हैं कि अबू बक्र रज़ि. की इसी तस्दीक़ की वजह से उन्हें सिद्दीक़ कहा गया है।

फिर आपसे लोगों ने सवाल किया कि आपने तो हज़रत ईसा और हज़रत मूसा से भी मुलाक़ात की है, उनके हुलिये तो बयान कीजिए। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हाँ! मूसा तो गन्दुमी रंग के हैं जैसे इज़्दे ओमान के आदमी होते हैं और ईसा दरमियानी क़द के कुछ सुर्ख़ी माईल रंग के हैं, और ऐसा मालूम होता था कि गोया उनके बालों से पानी के क़तरे टपक रहे हैं। इस सिलसिले के मज़्मून में भी बहुत सी अ़जीब व ग़रीब बातें हैं।

मुस्नद अहमद में है मैं हतीम (काबे के इहाते में एक जगह) में, और एक रिवायत में है कि सख़र में सोया हुआ था कि आने वाला आया। एक ने बीच वाले से कहा और वह मेरे पास आया और यहाँ से यहाँ तक चाक कर डाला। यानी गले के पास से नाफ़ तक। फिर ऊपर दर्ज हदीसों के मुताबिक़ बयान है। उसमें है कि छठे आसमान पर हज़रत मूसा को मैंने सलाम किया। आपने जवाब दिया और फ़रमाया नेक भाई और नेक नबी को मर्हबा हो। जब मैं वहाँ से आगे बढ़ गया तो आप रो दिये, पूछा गया कैसे रोये? जवाब दिया इसलिये कि जो बच्चा मेरे बाद नबी बनाकर भेजा गया उसकी उम्मत मेरी उम्मत के मुक़ाबले में जन्नत में ज़्यादा तादाद में जायेगी। उसमें है कि सिद्रतुल-मुन्तहा के पास चार नहरें देखीं, दो ज़ाहिरी और दो बातिनी। मैंने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा। आपने मुझे बताया कि बातिनी तो जन्नत की नहरें हैं, और

Maktab-e-Ashraf

ज़ाहिरी नील व फ़ुरात हैं। फिर मेरी तरफ़ बैतुल-मामूर बुलन्द किया गया। फिर मेरे पास शराब का, दूध का और शहद का बरतन आया, मैंने दूध का बरतन ले लिया। फ़रमाया यह फ़ितरत है, जिस पर तू है, और तेरी उम्मत। उसमें है कि जब पाँच नमाज़ें ही रह गयीं और फिर भी हज़रत मूसा ने वापसी का मश्विरा दिया तो आपने फ़रमाया मैं तो अपने रब से सवाल करते-करते शर्मा गया। अब मैं राज़ी हूँ और तस्लीम कर लेता हूँ। एक और रिवायत में है कि मेरे घर की छत खोल दी गयी, मैं उस वक़्त मक्का में था.....। उसमें है कि जब मैं जिब्राईल के साथ दुनिया वाले आसमान पर चढ़ा तो मैंने देखा कि एक साहिब बैठे हुए हैं जिनके दायें-बायें बड़ी-बड़ी जमाअ़त है, वह दाहिनी जानिब देखकर मुस्कुरा देते और हंसने लगते हैं, और जब बायीं जानिब निगाह उठती है तो रो देते हैं। मैंने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से दरियाफ़्त किया कि यह कौन हैं? और इनके दायें-बायें कौन हैं? फ़रमाया यह आदम अ़लैहिस्सलाम हैं और यह इनकी औलाद है। दायीं जानिब वाले जन्नती हैं और बायीं जानिब वाले जहन्नमी हैं। इन्हें देखकर ख़ुश होते हैं और उन्हें देखकर ग़मगीन।

इस रिवायत में है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से छठे आसमान पर मुलाक़ात हुई। इसमें है कि सातवें आसमान से मैं और ऊपर पहुँचाया गया। 'मुस्तवा' में पहुँचकर मैंने क़लमों के लिखने की आवाज़ें सुनीं। इसमें है कि जब हज़रत मूसा के मश्विरे से मैं कमी की तलब के लिये गया तो अल्लाह तआ़ला ने आधी माफ़ फ़रमा दीं। फिर गया फिर आधी माफ़ हुई। फिर गया तो पाँच मुक़र्रर हुयीं। इसमें है कि सिद्रतुल-मुन्तहा से होकर मैं जन्नत में पहुँचाया गया, जहाँ सच्चे मोतियों के ख़ेमे थे और जहाँ की मिट्टी ख़ालिस मुश्क थी। यह पूरी हदीस सही बुख़ारी शरीफ़ की किताबुस्सलात में है, बनी इस्राईल के ज़िक्र में भी है और हज के बयान में और अहादीसे अम्बिया में भी है। इमाम मुस्लिम ने सही मुस्लिम किताबुल-ईमान में भी यह रिवायत नक़ल की है।

मुस्नद अहमद में है, अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ रह. ने हज़रत अबूज़र से कहा कि अगर मैं रसूलुल्लाह सल्ल. को देखता तो कम से कम एक बात तो ज़रूर पूछ लेता। आपने दरियाफ़्त किया वह क्या बात है? कहा यही कि आप सल्ल. ने अल्लाह को देखा है कि नहीं? हज़रत अबूज़र ने फ़रमाया यह तो मैंने आप सल्ल. से पूछा था, आपने जवाब दिया कि मैंने उसके नूर को देखा, मैं उसे कैसे देख सकता हूँ?

एक और रिवायत में है कि वह नूर है, मैं उसे कहाँ से देख सकता हूँ? एक रिवायत में है कि मैंने नूर देखा। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जब मैंने मेराज के वाक़िए का लोगों से ज़िक्र किया और क़ुरैश ने मुझे झुठलाया तो मैं उस वक़्त हतीम में खड़ा हुआ था, अल्लाह तआ़ला ने बैतुल-मुक़द्दस मेरी निगाहों के सामने कर दिया और उसे बिल्कुल ज़ाहिर कर दिया। अब जो निशानियाँ वे मुझसे पूछते थे मैं देखता जाता था और बतलाता जाता था।

बैहक़ी में है कि बैतुल-मुक़द्दस में आपने हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अ़लैहिमुस्सलाम से मुलाक़ात की। उसमें है कि जब वापस आकर आपने लोगों में यह क़िस्सा बयान फ़रमाया तो बहुत लोग फ़ितने (आज़माईश) में पड़ गये, जिन्होंने आपके साथ नमाज़ पढ़ी थी। काफ़िर क़ुरैश की जमाअ़त उसी वक़्त दौड़ी भागी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के पास पहुँची और कहने लगे लो और सुनो! आज तो तुम्हारे साथी एक अ़जीब ख़बर सुना रहे हैं। कहते हैं कि एक ही रात में वह बैतुल-मुक़द्दस से होकर आ भी गये? आपने फ़रमाया वह फ़रमाते हैं तो सच है, वाक़ई हो आये हैं। उन्होंने कहा, यानी तुम इसे भी मान लेते हो कि रात को जाये और सुबह से पहले मुल्के शाम से वापस मक्का पहुँच जाये? आपने फ़रमाया इससे भी

ज़्यादा बड़ी बात को मैं इससे बहुत पहले से मानता चला आया हूँ यानी मैं मानता हूँ कि उनके पास आसमान से ख़बरें आती हैं और वह उन तमाम में सच्चे हैं। उसी वक़्त से आपका लक़ब अबू बक्र सिद्दीक़ हुआ (रज़ियल्लाहु अन्हु)।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत ज़ुर बिन हुबैश रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत हुज़ैफ़ा के पास आया उस वक़्त आप मेराज का वाक़िआ बयान फ़रमा रहे थे कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हम चले यहाँ तक कि बैतुल-मुक़द्दस पहुँचे। दोनों हज़रात अन्दर नहीं गये। मैंने यह सुनते ही कहा ग़लत है। रसूलुल्लाह सल्ल. अन्दर गये बल्कि उस रात आपने वहाँ नमाज़ भी पढ़ी, आपने फ़रमाया तेरा क्या नाम है? मैं तुझे जानता तो हूँ लेकिन नाम याद नहीं पड़ता। मैंने कहा मेरा नाम ज़ुर बिन हुबैश है। फ़रमाया तुमने यह बात कैसे मालूम कर ली? मैंने कहा यह तो क़ुरआन की ख़बर है। आपने फ़रमाया जिसने क़ुरआन से बात कही उसने निजात पाई। पढ़िये वह कौनसी आयत है? मैंने "सुब्हानल्लज़ी....." की यह आयत पढ़ी। आपने फ़रमाया इसमें किस लफ़्ज़ के मायने हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने वहाँ नमाज़ अदा की? आपने उस रात वहाँ नमाज़ नहीं पढ़ी, और अगर पढ़ लेते तो तुम पर इसी तरह वहाँ की नमाज़ लिख दी जाती जिस तरह बैतुल्लाह की है। वल्लाह वे दोनों बुराक़ पर ही रहे, यहाँ तक कि आसमान के दरवाज़े उनके लिये खुल गये, पस जन्नत व दोज़ख़ देख ली और आख़िरत के वादे की और तमाम चीज़ें भी वैसे ही, वैसे ही लौट आये। फिर आप ख़ूब हंसे और फ़रमाने लगे मज़ा तो है, ये लोग कहते हैं कि वहाँ आपने बुराक़ बाँधा ताकि कहीं भाग न जाये। हालाँकि ख़ुदा तआ़ला ने उसे आपके क़ब्ज़े में किया था।

मैंने पूछा क्यों जनाब यह बुराक़ क्या है? कहा एक जानवर है, सफ़ेद रंग, लम्बे क़द का, जो एक-एक क़दम इतनी-इतनी दूर रखता है जितनी दूर निगाह काम करे। लेकिन यह याद रहे कि महज़ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. के इनकार से वे रिवायतें जिनमें बैतुल-मुक़द्दस की नमाज़ का सुबूत है, मुक़द्दम हैं (वल्लाहु आलम)

हाफ़िज़ अबू बक्र बैहक़ी रह. की किताब दलाईलुन्नुबुव्वत में है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा ने आप से मेराज के वाक़िआत के ज़िक्र की दरख़्वास्त की तो आपने पहले तो यही आयत "सुब्हानल्लज़ी......" की तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया कि मैं इशा के बाद मस्जिद में सोया हुआ था कि एक आने वाले ने आकर मुझे जगाया, मैं उठ बैठा, लेकिन कोई नज़र न पड़ा, हाँ कुछ जानवर सा नज़र आया। मैंने ग़ौर से उसे देखा और बराबर देखता हुआ मस्जिद के बाहर चला गया तो मुझे एक अ़जीब जानवर नज़र पड़ा, हमारे जानवरों में से तो उसके जैसा कुछ-कुछ ख़च्चर है, हिलते हुए और ऊपर को उठे हुए कानों वाला था, उसका नाम बुराक़ है, मुझसे पहले अम्बिया भी उसी पर सवार होते रहे।

मैं उस पर सवार होकर चला ही था कि मेरी दायीं जानिब से किसी ने आवाज़ दी कि ऐ मुहम्मद! मेरी तरफ़ देख, मैं तुझसे कुछ पूछूँगा। लेकिन न मैंने जवाब दिया न ठहरा। फिर जो ज़रा और आगे बढ़ा तो बायीं तरफ़ से भी आवाज़ आयी, लेकिन मैं वहाँ भी न ठहरा, न देखा न जवाब दिया। फिर कुछ आगे गया तो देखा कि एक औरत दुनिया भर की ज़ीनत (बनाव-सिंघार) किये बाँहें खोले खड़ी हुई है, उसने मुझे इसी तरह आवाज़ दी कि मैं कुछ दरियाफ़्त करना चाहती हूँ। लेकिन मैंने न उसकी तरफ़ तवज्जोह की न ठहरा। फिर आपका बैतुल-मुक़द्दस पहुँचना, दूध का बरतन लेना और हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के फ़रमाने से ख़ुश होकर दो दफ़ा तकबीर कहना है। फिर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने पूछा- आपके चेहरे पर फ़िक्र कैसा है? मैंने रास्ते के वे दोनों वाक़िए बयान किये तो आपने फ़रमाया- पहला शख़्स तो यहूदी था, अगर आप उसे जवाब देते या वहाँ ठहरते तो आपकी उम्मत यहूद हो जाती। दूसरा ईसाईयत की दावत देने वाला

Maktab E Ashraf

था, अगर आप वहाँ ठहरते और उससे बातें करते तो आपकी उम्मत ईसाई हो जाती। और वह जो औ़रत थी वह दुनिया थी। अगर आप उसे जवाब देते या वहाँ ठहरते तो आपकी उम्मत दुनिया को आख़िरत पर तरजीह देकर गुमराह हो जाती।

फिर मैं और जिब्राईल बैतुल-मुक़द्दस में गये, हम दोनों ने दो-दो रक्अ़तें अदा कीं। फिर हमारे सामने मेराज (सीढ़ी) लाई गयी, जिससे इनसानों की रूहें चढ़ती हैं। दुनिया में ऐसी अच्छी कभी नहीं देखी, तुम नहीं देखते कि मरने वाले की आँखें आसमान की तरफ़ चढ़ जाती हैं, यह उसी सीढ़ी को देखते हुए ताज्जुब के साथ होता है। हम दोनों ऊपर चढ़ गये, मैंने इस्माईल नाम के फ़रिश्ते से मुलाक़ात की जो दुनिया वाले आसमान का सरदार है, जिसके तहत सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हैं जिनमें से हर एक फ़रिश्ते के साथ उसके लश्करी फ़रिश्तों की तादाद एक लाख है। फ़रमाने ख़ुदा है- तेरे रब के लश्करों को सिर्फ़ वही जानता है। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने इस आसमान का दरवाज़ा खुलवाना चाहा। पूछा गया कौन है? कहा जिब्राईल, पूछा गया आपके साथ और कौन हैं? बतलाया गया कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) हैं। कहा गया क्या आपको उनकी तरफ़ भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ। वहाँ मैंने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को देखा उसी शक्ल व सूरत में जिसमें वह उस दिन थे जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने उन्हें पैदा किया था। उनकी असली सूरत पर। उनके सामने उनकी औलाद की रूहें पेश की जाती हैं, नेक लोगों की रूहों को देखकर फ़रमाते हैं- पाक रूह है और पाक जिस्म भी है। इसे 'इल्लिय्यीन' में ले जाओ। और बदकारों की रूहों को देखकर फ़रमाते हैं- ख़बीस रूह है, जिस्म भी ख़बीस है, इसे 'सिज्जीन' में ले जाओ।

मैं कुछ ही चला हूँगा, मैंने देखा कि ख़्वान लगे हुए हैं जिन पर बहुत ही उम्दा भुना हुआ गोश्त है, और दूसरी जानिब और ख़्वान लगे हुए हैं जिन पर बदबूदार और सड़ा-भुसा गोश्त रखा हुआ है। कुछ लोग हैं जो उम्दा गोश्त के तो पास भी नहीं आते और उस सड़े हुए गोश्त को खा रहे हैं। मैंने पूछा ऐ जिब्राईल! ये कौन हैं? जवाब दिया कि आपकी उम्मत के वे लोग हैं जो हलाल को छोड़कर हराम की रग़बत (रुचि) करते थे। फिर मैं कुछ और चला तो कुछ और लोगों को देखा कि उनके होंठ ऊँट की तरह के हैं। उनके मुँह फाड़-फाड़कर फ़रिश्ते उन्हें उस गोश्त के लुक़्मे दे रहे हैं जो उनके दूसरे रास्ते से वापस निकल जाता है। वे चीख़-चिल्ला रहे हैं और ख़ुदा के सामने आ़जिज़ी कर रहे हैं। मैंने पूछा जिब्राईल! ये कौन हैं? फ़रमाया ये आपकी उम्मत के वे लोग हैं जो यतीमों का माल नाहक़ खा जाया करते थे। जो लोग यतीमों का माल नाहक़ खायें वे अपने पेट में आग भर रहे हैं और वे ज़रूर भड़कती हुई जहन्नम की आग में जायेंगे।

मैं कुछ दूर और चला। देखा कि कुछ औ़रतें अपने सीनों के बल अधर में लटकी हुई हैं और हाय-वाय कर रही हैं। मेरे पूछने पर जवाब मिला कि ये आपकी उम्मत की ज़िना करने वाली औ़रतें हैं। मैं कुछ दूर और गया तो देखा कि कुछ लोगों के पेट बड़े-बड़े घड़ों जैसे हैं। जब वे उठना चाहते हैं तो गिर पड़ते हैं और बार-बार कह रहे हैं कि ख़ुदाया क़ियामत क़ायम न हो। फ़िरऔ़नी जानवरों से वे रौंदे जाते हैं और ख़ुदा के सामने रोना व फ़रियाद कर रहे हैं। मैंने पूछा ये कौन लोग हैं? तो जिब्राईल ने फ़रमाया ये आपकी उम्मत के वे लोग हैं जो सूद खाते थे, सूदख़्वार उन लोगों की तरह ही खड़े होंगे जिन्हें शैतान ने बावला बना रखा है। मैं कुछ दूर और चला तो देखा कुछ लोग हैं कि जिनके पहलू (करवट) से गोश्त काट-काटकर फ़रिश्ते उन्हें खिला रहे हैं और कहते जाते हैं कि जिस तरह तू अपने भाई का गोश्त अपनी ज़िन्दगी में खाता रहा अब भी खा। मैंने पूछा- जिब्राईल ये कौन लोग हैं? आपने फ़रमाया ये आपकी उम्मत के वे लोग

हैं जो दूसरों के ऐब तलाश करते और दूसरों पर आवाज़ें कसते थे।

फिर हम दूसरे आसमान पर चढ़े तो मैंने वहाँ एक बहुत ही हसीन शख़्स को देखा। जो हसीन लोगों पर वही अहमियत रखता है जो फ़ज़ीलत चाँद को दूसरे सितारों पर है। मैंने पूछा जिब्राईल! यह कौन साहिब हैं? उन्होंने फ़रमाया यह आपके भाई हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम हैं, और उनके साथ उनकी क़ौम के कुछ लोग हैं। मैंने उन्हें सलाम किया, जिसका उन्होंने जवाब दिया। फिर हम तीसरे आसमान की तरफ़ चढ़े, उसे खुलवाया, वहाँ हज़रत यहया और हज़रत ईसा अ़लैहिमस्सलाम को देखा, उनके साथ उनकी क़ौम के कुछ आदमी थे, मैंने उन्हें सलाम किया और उन्होंने मुझे जवाब दिया।

फिर मैं चौथे आसमान की तरफ़ चढ़ा, वहाँ हज़रत इदरीस को पाया। जिन्हें ख़ुदा तआ़ला ने बुलन्द मकान पर उठा लिया है। मैंने सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया। फिर पाँचवें आसमान की तरफ़ चढ़ा। वहाँ हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम थे, जिनकी आधी दाढ़ी सफ़ेद थी और आधी काली, और बहुत लम्बी दाढ़ी थी, क़रीब-क़रीब नाफ़ तक। मैंने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से सवाल किया, उन्होंने बतलाया कि यह अपनी क़ौम के लोकप्रिय हज़रत हारून बिन इमरान अ़लैहिस्सलाम हैं। उनके साथ उनकी क़ौम की जमाअ़त है, उन्होंने भी मेरे सलाम का जवाब दिया। फिर मैं छठे आसमान की तरफ़ चढ़ा। वहाँ हज़रत मूसा बिन इमरान अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। आपका गन्दुमी रंग था, बाल बहुत थे। अगर दो कुर्ते भी पहन लें तो बाल उनसे निकल आयें। आप फ़रमाने लगे लोग यह ख़्याल करते हैं कि मैं अल्लाह तआ़ला के पास उनके बड़े मर्तबे का हूँ हालाँकि यह मुझसे बड़े मर्तबे के हैं। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से दरियाफ़्त करने पर मुझे मालूम हुआ कि आप हज़रत मूसा बिन इमरान हैं। आपके पास भी आपकी क़ौम के लोग थे। आपने भी मेरे सलाम का जवाब दिया।

फिर मैं सातवें आसमान की तरफ़ चढ़ा। वहाँ मैंने अपने वालिद हज़रत इब्राहीम ख़लीलुर्रहमान अ़लैहिस्सलाम को अपनी पीठ बैतुल-मामूर से लगाये हुए बैठा देखा। आप बहुत ही बेहतर आदमी हैं। पूछने पर मुझे आपका नाम भी मालूम हुआ। मैंने सलाम किया, आपने जवाब दिया। मैंने अपनी उम्मत को आधी-आधी देखा। आधों के तो सफ़ेद बुगले जैसे कपड़े थे और आधों के बहुत ज़्यादा काले कपड़े थे। मैं बैतुल-मामूर में गया, मेरे साथ ही सफ़ेद कपड़े वाले सब गये और दूसरे जिनके स्याह कपड़े थे वे सब रोक दिये गये। फिर हम सबने वहाँ नमाज़ अदा की और वहाँ से सब बाहर आये, उस बैतुल-मामूर में हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन जो एक दिन पढ़ गये उनकी बारी फिर क़ियामत तक नहीं आती। फिर मैं सिद्‌रतुल-मुन्तहा की जानिब उठाया गया। जिसका हर-हर पत्ता इतना बड़ा था कि मेरी सारी उम्मत को ढाँक ले। उसमें से एक नहर जारी थी, जिसका नाम सलूसबील है। फिर उसमें से दो चश्मे फूटे हैं एक नहरे कौसर, दूसरा नहरे रहमत। मैंने उसमें गुस्ल किया। मेरे अगले पिछले सब गुनाह माफ़ हो गये।

फिर मैं जन्नत की तरफ़ चढ़ाया गया। वहाँ मैंने एक हूर देखी, उससे पूछा तू किसकी है? उसने कहा ज़ैद बिन हारिसा की। वहाँ मैंने ख़राब न होने वाले पानी की और ज़ायक़ा न बदलने वाले दूध की और नशा न करने वाली मज़ेदार शराब और साफ़ सुथरे शहद की नहरें देखीं। उसके अनार बड़े-बड़े डोलों के बराबर थे। उसके परिन्दे तुम्हारे इन बुख़्ती ऊँटों जैसे थे। बेशक अल्लाह तआ़ला ने अपने नेक बन्दों के लिये वे नेमतें तैयार की हैं जो न किसी आँख ने देखीं न किसी कान ने सुनीं, न किसी इनसान के दिल में उनका ख़्याल तक गुज़रा।

फिर मेरे सामने जहन्नम पेश की गयी, जहाँ अल्लाह का ग़ज़ब, उसका अ़ज़ाब, उसकी नाराज़गी थी।

उसमें अगर पत्थर और लोहा डाला जाये तो वह उसे भी खा जाये। फिर मेरे सामने से वह बन्द कर दी गयी। मैं फिर सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुँचा दिया गया और मुझे ढाँप लिया। बस मेरे और उसके दरमियान सिर्फ़ दो कमानों के बराबर फ़ासला रह गया, बल्कि और क़रीब। और सिद्रतुल-मुन्तहा के हर एक पत्ते पर फ़रिश्ते आ गये और मुझ पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गयीं, और फ़रमाया कि तेरे लिये हर नेकी के बदले दस हैं, तू जब किसी नेकी का इरादा करेगा चाहे उस पर अ़मल न कर पाये फिर भी नेकी लिखी जायेगी। और जब उस पर अ़मल कर ले तो दस नेकियाँ लिखी जायेंगी। और बुराई के सिर्फ़ इरादे पर बग़ैर किये हुए कुछ भी न लिखा जायेगा, और अगर कर ली तो सिर्फ़ एक ही बुराई शुमार होगी। फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आने और आपके मश्विरे से जाने और कमी होने का ज़िक्र है। जैसा कि बयान गुज़र चुका। आख़िर जब पाँच रह गयीं तो फ़रिश्ते ने आवाज़ लगाई कि मेरा फ़रीज़ा पूरा हो गया, मैंने अपने बन्दों पर कमी कर दी, और उन्हें हर नेकी के बदले ऐसी दस नेकियाँ दीं। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने वापसी पर अब की बार भी मुझे वापस जाने का मश्विरा दिया लेकिन मैंने कहा अब तो मुझे जाते हुए शर्म मालूम होती है।

फिर आपने सुबह को मक्का में इन अ़जायबात (आश्चर्यों) का ज़िक्र किया कि मैं इस रात बैतुल-मुक़द्दस पहुँचा, आसमान पर चढ़ाया गया और यह-यह देखा। इस पर अबू जहल बिन हिशाम कहने लगा- लो ताज्जुब की बात सुनो! ऊँटों को मारते पीटते हम तो बैतुल-मुक़द्दस महीने भर में पहुँचें और महीना भर ही वापसी में लग जाये, यह कहते हैं कि दो माह की मुसाफ़त (दूरी) एक ही रात में तय कर आये? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया सुनो! जाते वक़्त मैंने तुम्हारे क़ाफ़िले को फ़ुलाँ जगह देखा था और आते वक़्त वह मुझे अ़क़बा में मिला। सुनो! उसमें फ़ुलाँ-फ़ुलाँ शख़्स हैं। फ़ुलाँ इस रंग के ऊँट पर है और उसके पास यह असबाब (सामान) हैं। अबू जहल ने कहा जो ख़बरें तू दे रहा है देखिये कैसी निकलें। इस पर उनसे एक शख़्स ने कहा, मैं बैतुल-मुक़द्दस का हाल तुम सबसे ज़्यादा जानता हूँ। उसकी इमारत का हाल, उसकी शक्ल व सूरत, पहाड़ से उसकी नज़दीकी वग़ैरह। पस रसूलुल्लाह सल्ल. से रास्ते के पर्दे और रुकावटें दूर कर दिये गये और जैसे हम घर में बैठे घर की चीज़ों को देखते हैं इसी तरह आपके सामने बैतुल-मुक़द्दस कर दिया गया। आप फ़रमाने लगे उसकी बनावट इस तरह की है, उसकी शक्ल व सूरत इस तरह की है, वह पहाड़ से इस क़द्र नज़दीक है वग़ैरह। उसने कहा बेशक आप सच फ़रमाते हैं। फिर उसने काफ़िरों के मजमे की तरफ़ देखकर कहा "मुहम्मद अपनी बात में सच्चे हैं" या कुछ ऐसे ही अलफ़ाज़ कहे। यह रिवायत और बहुत सी किताबों में है। हमने बावजूद इसके ग़रीब, कमज़ोर और मुन्कर होने के इसे इसलिये बयान किया है कि इसमें और हदीसों के बहुत से मज़ामीन की ताईद हैं और इसलिये भी कि बैहक़ी में है कि हज़रत अबुल-अज़हर यज़ीद बिन अबी हकीम कहते हैं- मैंने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्ल. को देखा। पूछा कि हुज़ूर! आपकी उम्मत में एक शख़्स हैं जिन्हें सुफ़ियान सौरी कहा जाता है, उसमें कोई हर्ज तो नहीं है? आपने फ़रमाया कोई हर्ज नहीं। मैंने फिर और रावियों के नाम बयान करके पूछा कि वह आपकी हदीस बयान करते हैं कि आपने फ़रमाया है कि आपको एक रात मेराज हुई, आपने आसमान की तरफ़ देखा, आपने फ़रमाया हाँ ठीक है। मैंने कहा हुज़ूर! आपकी उम्मत के लोग आपकी तरफ़ से मेराज वाले वाक़िए में बहुत सी अ़जीब व ग़रीब बातें बयान करते हैं। आपने फ़रमाया हाँ वे बातें क़िस्सा कहने वालों की हैं।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि. फ़रमाते हैं- हमने हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि या रसूलल्लाह! अपनी मेराज की कैफ़ियत तो बयान फ़रमाईये। आपने फ़रमाया सुनो! मैंने अपने सहाबा को

मक्का में इशा की नमाज़ देर से पढ़ाई। फिर जिब्राईल मेरे पास सफ़ेद रंग का एक जानवर लाये, गधे से ऊँचा ख़च्चर से नीचा, और मुझसे फ़रमाया कि इस पर सवार हो जाईये। उसने कुछ सख़्ती की तो आपने उसका कान मोड़ा और मुझे उस पर सवार करा दिया। उसमें मदीना में नमाज़ पढ़ने का फिर मद्यन में उस दरख़्त के पास नमाज़ पढ़ने का ज़िक्र है जहाँ हज़रत मूसा ठहरे थे। फिर बैतुल-लहम में नमाज़ पढ़ने का ज़िक्र है, जहाँ हज़रत ईसा पैदा हुए थे। फिर बैतुल-मुक़द्दस में नमाज़ पढ़ने का, वहाँ सख़्त प्यास लगने का और दूध और शहद के बरतन आने का और पेट भरकर दूध पीने का ज़िक्र है। फ़रमाते हैं कि वहीं एक शैख़ (बूढ़े आदमी) तकिया लगाये बैठे थे, जिन्होंने कहा यह फ़ितरत तक पहुँच गये और राह पाने वाले हुए। फिर हम एक वादी पर आये जहाँ जहन्नम को मैंने देखा जो सख़्त दहकते हुए अंगारे की तरह थी, फिर लौटते हुए फ़ुलाँ जगह क़ुरैश का क़ाफ़िला हमें मिला, जो अपने किसी गुमशुदा ऊँट की तलाश में था। मैंने उन्हें सलाम किया, बाज़ लोगों ने मेरी आवाज़ भी पहचान ली और आपस में कहने लगे यह आवाज़ तो बिल्कुल मुहम्मद की है। फिर सुबह से पहले मैं अपने सहाबा के पास मक्का शरीफ़ पहुँच गया। मेरे पास अबू बक्र आये और कहने लगे या रसूलल्लाह! आप रात में कहाँ थे? जहाँ-जहाँ ख़्याल पहुँचा मैंने सब जगह तलाश किया, लेकिन आप न मिले। मैंने कहा मैं तो रात बैतुल-मुक़द्दस हो आया। कहा वह तो यहाँ से महीने भर के फ़ासले पर है। अच्छा वहाँ के कुछ निशानात बयान फ़रमाईये। उसी वक़्त वह मेरे सामने कर दिया गया, गोया कि मैं उसे देख रहा हूँ। अब जो भी मुझसे सवाल होता मैं देखकर जवाब दे देता। पस अबू बक्र ने कहा मेरी गवाही है कि आप ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं, लेकिन क़ुरैश के काफ़िर बातें बनाने लगे कि इब्ने अबी कबशा को देखो कहता फिरता है कि एक ही रात में बैतुल-मुक़द्दस हो आया। आपने फ़रमाया सुनो! मैं तुम्हें एक निशान बतलाऊँगा, तुम्हारे क़ाफ़िले को मैंने फ़ुलाँ मक़ाम पर देखा। उनका एक ऊँट गुम हो गया था जिसे फ़ुलाँ शख़्स ले आया। अब वे इतने फ़ासले पर हैं, एक मन्ज़िल उनकी फ़ुलाँ जगह होगी, दूसरी फ़ुलाँ जगह, और वे फ़ुलाँ दिन यहाँ पहुँचेंगे। उनके क़ाफ़िले में सबसे पहले गन्दुमी रंग का ऊँट है जिस पर काली झूल पड़ी हुई है और दो काली बोरियाँ सामान की दोनों तरफ़ लदी हुई हैं।

जब वह दिन आया जो दिन उस क़ाफ़िले के वापस पहुँचने का हुज़ूर सल्ल. ने बयान फ़रमाया था, दोपहर को लोग दौड़ते हुए शहर के बाहर गये कि क्या ये सब बातें सच हैं? उन्होंने देखा कि क़ाफ़िला आ रहा है और वाक़ई वही ऊँट आगे है। यही रिवायत और किताबों में बहुत विस्तार से भी मौजूद है और इसमें बहुत सी बातें मुन्कर भी हैं। मिसाल के तौर पर बैतुल-लहम में आपका नमाज़ अदा करना और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. का बैतुल-मुक़द्दस की निशानियाँ मालूम करना वग़ैरह। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत में है कि जब आप मेराज वाली रात जन्नत में तशरीफ़ ले गये तो एक तरफ़ से पैरों की चाप की आवाज़ आयी। आपने पूछा- जिब्राईल! यह कौन हैं? जवाब मिला कि हज़रत बिलाल मुअज़्ज़िन हैं। आपने वापस आकर फ़रमाया- बिलाल तो निजात पा चुके, मैंने इस-इस तरह देखा। उसमें है कि हज़रत मूसा ने मुलाक़ात के वक़्त फ़रमाया- नबी-ए-उम्मी को मर्हबा हो। हज़रत मूसा गन्दुमी रंग के, लम्बे क़द के, कानों तक या कानों से थोड़े ऊँचे बाल वाले थे। उसमें है कि हर नबी ने आपको पहले सलाम किया। जहन्नम को देखने के वक़्त आपने देखा कि कुछ लोग मुर्दार खा रहे हैं। पूछा ये कौन लोग हैं? जवाब मिला जो लोगों का गोश्त खाया करते थे (यानी ग़ीबत करते थे)। वहीं आपने एक शख़्स को देखा जो ख़ुद आग जैसा सुर्ख़ हो रहा था, आँखें डेढ़ी तिरछी थीं। पूछा यह कौन है? जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह वही है जिसने हज़रत सालेह की ऊँटनी को मार डाला था।

Maktaba Ashraf

मुस्नद अहमद में है कि जब आपको बैतुल-मुक़द्दस पहुँचाकर वहाँ से वापस लाकर एक ही रात में मक्का शरीफ़ पहुँचा दिया गया और आपने यह ख़बर लोगों को सुनाई, बैतुल-मुक़द्दस के निशान बतलाये, उनके क़ाफ़िले की ख़बर दी तो बाज़ लोग यह कहकर कि हम ऐसी बातों में इन्हें सच्चा नहीं मान सकते, इस्लाम से फिर गये। फिर यह सब अबू जहल के साथ क़त्ल किये गये। अबू जहल कहने लगा कि यह हमें ज़क़्क़ूम के पेड़ से डरा रहा है, लाओ खजूर और मक्खन लाओ और उन्हें मिलाकर खा लो।

आपने उस रात दज्जाल को उसकी असली सूरत में देखा। हज़रत ईसा, हज़रत मूसा, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिमुस्सलाम को भी देखा। दज्जाल का हुलिया और सूरत आपने बयान फ़रमाई, वह भद्दा ख़बीस चूँधा है और उसकी एक आँख ऐसी क़ायम है जैसी तारा, और बाल ऐसे हैं जैसे किसी दरख़्त की घनी शाख़ें। हज़रत ईसा का वस्फ़ (ख़ूबी और सिफ़त) आपने इस तरह बयान फ़रमाया कि वह सफ़ेद रंग के, घुंघरियाले बाल और दरमियानी क़द के हैं, हज़रत मूसा गन्दुमी रंग के और मज़बूत व ताक़तवर आदमी हैं। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम तो बिल्कुल मुझ जैसे ही थे....। एक रिवायत में है कि उन निशानियों में जो अल्लाह तआ़ला ने आपको दिखायीं आपने मालिक को भी देखा जो जहन्नम का दरोग़ा है। फिर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. आपके चचाज़ाद भाई ने आयते क़ुरआनः

فَلَا تَكُنْ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ.

पढ़ी, जिसकी तफ़सीर हज़रत क़तादा रह. इस तरह करते हैं कि मूसा की मुलाक़ात के होने में तू शक न कर, हमने उसे यानी मूसा को बनी इस्राईल की हिदायत के लिये भेजा था।

यह रिवायत सही मुस्लिम शरीफ़ में है, लेकिन एक दूसरी सनद से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मेराज की रात एक मक़ाम से मुझे बहुत ही उम्दा और भीनी ख़ुशबू की महक आने लगी। मैंने पूछा यह ख़ुशबू कैसी है? जवाब मिला कि फ़िरऔ़न की लड़की के बाल संवारने वाली और उसकी औलाद के महल की है। फ़िरऔ़न की शहज़ादी को कंघी करते हुए उसके हाथ से इत्तिफ़ाक़न कंघी गिर पड़ी तो उसकी ज़बान से बेसाख़्ता "बिस्मिल्लाह" निकल गया। इस पर शहज़ादी ने उससे कहा- अल्लाह (ख़ुदा) तो मेरे बाप ही हैं। उसने जवाब दिया नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला वह है जो मुझे और तुझे और ख़ुद फ़िरऔ़न को रोज़ियाँ देता है। उसने कहा अच्छा तो क्या तू मेरे बाप के सिवा किसी और को अपना रब मानती है? उसने जवाब दिया कि हाँ! मेरा, तेरा और तेरे बाप सबका रब अल्लाह तआ़ला है। उसने अपने बाप से कहलवाया। वह सख़्त नाराज़ और गुस्से में हुआ और उसी वक़्त उसे भरे दरबार में बुलवा भेजा और कहा क्या तू मेरे सिवा और किसी को अपना रब मानती है? उसने कहा हाँ! मेरा और तेरा रब अल्लाह तआ़ला ही है, जो बुलन्दियों और बड़ाईयों वाला है। फ़िरऔ़न ने उसी वक़्त हुक्म दिया कि ताँबे की जो गाय बनी हुई है उसे ख़ूब तपाया जाये और जब वह बिल्कुल आग जैसी हो जाये तो इसके बच्चों को एक-एक करके उसमें डाल दिया जाये। आख़िर में ख़ुद इसे भी उसी तरह डाल दिया जाये। चुनाँचे वह गर्म की गयी, जब आग जैसी हो गयी तो हुक्म दिया कि इसके बच्चों को एक-एक करके उसमें डालना शुरू करो। उसने कहा बादशाह मेरी एक दरख़्वास्त मन्ज़ूर करो। वह यह कि मेरी और मेरे इन बच्चों की हड्डियाँ एक जगह डाल देना। उसने कहा अच्छा तेरे कुछ हुक़ूक़ हमारे ज़िम्मे हैं इसलिये यह मन्ज़ूर है। जब और सब बच्चे उसमें डाल दिये गये और सब जलकर राख हो गये तो सबसे छोटे की बारी आयी, जो माँ की छाती से लगा हुआ दूध पी रहा था। फ़िरऔ़न के सिपाहियों ने उसे जब घसीटा तो उस नेक बन्दी की आँखों तले अन्धेरा छा

गया। खुदा तआ़ला ने उस बच्चे को उसी वक़्त ज़बान दे दी और उसने बुलन्द आवाज़ से कहा- अम्मा जान! अफ़सोस न करो, अम्मा जान ज़रा भी पसोपेश न करो, हक़ पर जान देना ही सबसे बड़ी नेकी है। चुनाँचे उन्हें सब्र आ गया, उसे भी उसमें डाल दिया और आख़िर में उन बच्चों की माँ को भी।

यह ख़ुशबू की महक उसी के जन्नती महल से आ रही है। आपने इस वाक़िए के साथ ही बयान फ़रमाया कि चार छोटे बच्चों ने गहवारे (पालने यानी बचपने) ही में बातचीत की, एक तो यही बच्चा, एक वह बच्चा जिसने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की पाकदामनी की गवाही दी थी, एक वह बच्चा जिसने हज़रत जुरैज अल्लाह के वली की पाकदामनी की गवाही दी थी और ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम। इस रिवायत की सनद में किसी तरह की ख़ामी और कमज़ोरी नहीं।

एक और रिवायत में है कि मेराज वाली रात की सुबह मुझे यक़ीन था कि जब मैं यह ज़िक्र लोगों से करूँगा तो वे मुझे झुठलायेंगे। चुनाँचे आप एक तरफ़ ग़मगीनी की हालत में बैठ गये। उसी वक़्त आपके पास से अल्लाह का दुश्मन अबू जहल गुज़रा और पास बैठकर बतौर मज़ाक़ कहने लगा कहिये कोई नई बात है? आपने फ़रमाया हाँ है। उसने कहा क्या? आपने फ़रमाया रात को मुझे सैर कराई गयी। उसने पूछा कहाँ तक पहुँचे? फ़रमाया बैतुल-मुक़द्दस तक। कहा और सुबह को फिर आप यहाँ मौजूद भी हैं? आपने फ़रमाया हाँ। अब इस ज़ालिम के दिल में ख़्याल आया कि इस वक़्त इन्हें झुठलाना अच्छा नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों के मजमे में फिर यही बात न कहें, इसलिये उसने कहा क्यों साहिब! अगर मैं उन सब लोगों को जमा कर लूँ तो सबके सामने भी आप यही कहेंगे? आपने फ़रमाया क्यों नहीं। सच्ची बात छुपाने की नहीं होती। उसी वक़्त उसने आवाज़ लगाई कि ऐ बनी कअ़ब लूई की औलाद वालो! आओ। सब लोग उठ खड़े हुए और आपके पास बैठ गये तो इस मलऊन ने कहा अब अपनी क़ौम के लोगों के सामने वह बात बयान करो जो मुझसे कह रहे थे। आपने फ़रमाया हाँ सुनो! मुझे आज रात सैर कराई गयी। सब ने पूछा कहाँ तक गये। आपने फ़रमाया बैतुल-मुक़द्दस तक। लोगों ने कहा अच्छा! और सुबह को हम में मौजूद हैं? आपने फ़रमाया हाँ। अब तो किसी ने तालियाँ पीटनी शुरू कर दीं, कोई ताज्जुब के साथ अपना हाथ अपने माथे पर रखकर बैठ रहा और सख़्त हैरत के साथ उन्होंने सर्वसम्मति से आपको झूठा समझा। फिर कुछ देर के बाद कहने लगे- अच्छा तुम वहाँ की कैफ़ियत और जो निशानात हम पूछें बता सकते हो? उनमें वे लोग भी थे जो बैतुल-मुक़द्दस हो आये थे और वहाँ के चप्पे-चप्पे से वाक़िफ़ थे। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया पूछो क्या पूछते हो? वे पूछने लगे आप बतलाने लगे। फ़रमाते हैं कि बाज़ ऐसे बारीक सवाल उन्होंने किये कि ज़रा घबराहट मुझे होने लगी, उसी वक़्त मस्जिद मेरे सामने कर दी गयी। अब मैं देखता जाता था और बताता जाता था। आपके उन निशानात के बतलाने के बाद सब कहने लगे आपने वहाँ की बातें तो साफ़ और ठीक-ठीक बतलायीं। खुदा की क़सम एक बात में भी ग़लती नहीं की। यह हदीस (हदीस की किताब) नसाई शरीफ़ वग़ैरह में भी मौजूद है।

बैहक़ी में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. की रिवायत से है कि जब हुज़ूर सल्ल. को मेराज कराई गयी तो आप सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुँचे जो सातवें आसमान पर है। जो चीज़ चढ़े वह यहीं तक पहुँचती है, फिर यहाँ से उठा ली जाती है, और जो उतरे वह यहीं तक उतरती है फिर यहाँ से ले ली जाती है। इस पेड़ पर सोने की टिड्डियाँ छा रही थीं। हुज़ूर सल्ल. को पाँच वक़्त की नमाज़ें और सूरः ब-क़रह के आख़िर की आयतें दी गयीं और यह कि आपकी उम्मत में से जो शिर्क न करेगा उसके कबीरा (बड़े) गुनाह भी बख़्श दिये जायेंगे। मुस्लिम वग़ैरह में भी यह रिवायत है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से मेराज की लम्बी

हदीस भी रिवायत है, जिसका कुछ हिस्सा ग़रीब है। हसन बिन अ़रफ़ा ने अपने मशहूर 'जुज़' में इसे बयान किया है। हज़रत अबू ज़िबयान कहते हैं कि हम हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के बेटे हज़रत अबू उबैदा के पास बैठे हुए थे, आपके पास मुहम्मद बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. भी थे तो हज़रत मुहम्मद बिन सअ़द ने अबू उबैदा से कहा तुमने मेराज के बारे में जो कुछ अपने वालिद साहिब से सुना हो वह सुनाओ। उन्होंने कहा मैं नहीं, आप ही सुनाईये जो आपने अपने वालिद से सुना हो। पस आपने रिवायत बयान करनी शुरू की। उसमें यह भी है कि जब बुराक़ ऊँचाई पर चढ़ता उसके हाथ-पाँव बराबर के हो जाते। इसी तरह जब नीचे की तरफ़ उतरता तब भी बराबर ही रहते जिससे सवार को तकलीफ़ न हो।

हम एक शख़्स के पास से गुज़रे जो लम्बे क़द के, सीधे बालों वाले, गन्दुमी रंग के थे। ऐसे ही जैसे इज़्द शनवा क़बीले के आदमी होते हैं। वह बुलन्द आवाज़ से कह रहे थे कि तूने इसका इकराम किया और इसे फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई। हमने उन्हें सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया। पूछा कि जिब्राईल यह तुम्हारे साथ कौन हैं? जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा यह अहमद हैं (सल्ल.)। उन्होंने फ़रमाया नबी-ए-उम्मी अ़रबी को मर्हबा हो, जिसने अपने रब की रिसालत पहुँचाई और अपनी उम्मत की ख़ैरख़्वाही (भलाई और हमदर्दी) की। फिर हम लौटे। मैंने पूछा जिब्राईल! यह कौन हैं? आपने फ़रमाया यह मूसा बिन इमरान हैं। मैंने कहा और यह ऐसे लफ़्ज़ों से बातें किससे कर रहे थे? फ़रमाया अल्लाह तआ़ला से आपके बारे में। मैंने कहा ख़ुदा तआ़ला से और इतनी बुलन्द आवाज़ से? फ़रमाया हाँ ख़ुदा तआ़ला को उनकी तेज़ी मालूम है।

फिर हम एक पेड़ के पास से निकले, जिसके फल चिराग़ों जैसे थे, उसके नीचे एक बुज़ुर्ग शख़्स बैठे हुए थे जिनके पास बहुत से छोटे बच्चे थे। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने मुझसे फ़रमाया चलो अपने वालिद हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से सलामु अ़लैक करो। हमने वहाँ पहुँचकर उन्हें सलाम किया, जवाब पाया। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से आपने मेरे बारे में पूछा, उन्होंने जवाब दिया कि यह आपके लड़के अहमद हैं, तो आपने फ़रमाया मर्हबा हो नबी-ए-उम्मी को, जिसने अपने रब की पैग़म्बरी पूरी की और अपनी उम्मत की ख़ैरख़्वाही की। मेरे ख़ुशनसीब बेटे आज रात आपकी मुलाक़ात अपने परवर्दिगार से होने वाली है, आपकी उम्मत सबसे आख़िरी उम्मत है और सबसे कमज़ोर भी है। ख़्याल रखना ऐसे ही काम हों जो उन पर आसान रहें। फिर हम मस्जिदे अक़्सा पहुँचे। मैंने उतरकर बुराक़ को उसी दायरे में बाँधा जिसमें और अम्बिया बाँधा करते थे। फिर मस्जिद में गया। वहाँ मैंने नबियों को पहचाना, कोई नमाज़ में खड़ा है, कोई रुकूअ़ में है, कोई सज्दे में। फिर मेरे पास शहद और दूध का बरतन लाया गया। मैंने दूध का बरतन लेकर पी लिया। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने मेरे मोंढे पर हाथ रखकर फ़रमाया आप फ़ितरत को पहुँच गये। मुहम्मद के रब की क़सम! फिर नमाज़ की तकबीर हुई और मैंने उन सबको नमाज़ पढ़ाई। फिर हम वापस लौट आये। इसकी सनद ग़रीब हैं, इसके मतन में भी बाज़ ग़रीब चीज़ें हैं, मिसाल के तौर पर यह कि अम्बिया का आपकी शनाख़्त का सवाल, फिर आपके उनके पास से जाने के बाद उनकी मारिफ़त का सवाल वग़ैरह, हालाँकि सही हदीसों में है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम पहले ही आपको बतला दिया करते थे कि यह फ़ुलाँ नबी हैं, ताकि पहचान के बाद सलाम हो। फिर उसमें है कि अम्बिया से मुलाक़ात बैतुल- मुक़द्दस की मस्जिद में दाख़िल होने से पहले ही हुई हालाँकि सही रिवायतों में है कि उनसे मुलाक़ात आसमानों पर हुई। फिर आप दोबारा उतरते हुए वापसी में बैतुल-मुक़द्दस की मस्जिद में आये। वे सब भी आपके साथ थे और यहाँ आपने उन्हें नमाज़ पढ़ाई। फिर बुराक़ पर सवार होकर मक्का शरीफ़ वापस

Maktaba E Ashraf

आये। वल्लाहु आलम।

मुस्नद अहमद में इब्ने मसऊद रज़ि. की रिवायत में है कि मैं मेराज की रात में हज़रत इब्राहीम, मूसा और ईसा अ़लैहिमुस्सलाम से मिला। वहाँ क़ियामत के क़ायम होने के ख़ास वक़्त के बारे में मुज़ाकरा हुआ। हज़रत इब्राहीम ने ला-इल्मी (अज्ञानता) ज़ाहिर की और कहा मूसा से पूछो। उन्होंने भी बेख़बरी ज़ाहिर की, फिर तय हुआ कि हज़रत ईसा पर रखो। आपने फ़रमाया उसके सही वक़्त का इल्म तो सिवाय ख़ुदा के किसी को नहीं। हाँ यह तो मुझसे फ़रमाया गया है कि दज्जाल निकलने वाला है, उस वक़्त मेरे साथ दो छड़ियाँ होंगी। वह मुझे देखते ही सीसे की तरह घुलने लगेगा, आख़िर मेरी वजह से अल्लाह तआ़ला उसे हलाक करेगा। फिर तो दरख़्त पत्थर भी बोल उठेंगे कि ऐ मुसलमान! देख यहाँ मेरे नीचे एक काफ़िर छुपा हुआ है, आ और इसे क़त्ल कर। पस अल्लाह तआ़ला उन सबको हलाक करेगा। लोग इत्मीनान के साथ अपने शहरों, अपने वतनों में लौट जायेंगे। उसी ज़माने में याजूज माजूज निकलेंगे जो हर ऊँचाई (बुलन्द जगह) से कूदते फाँदते आयेंगे, जो चीज़ पायेंगे तबाह व बरबाद कर देंगे, जो पानी देखेंगे पी जायेंगे। आख़िर लोग तंग आकर मुझसे शिकायत करेंगे, मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करूँगा, अल्लाह तआ़ला उन सबको एक साथ ही हलाक कर देगा, लेकिन ज़मीन पर उनकी लाशों की बदबू की वजह से चलना फिरना मुश्किल हो जायेगा। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला बारिश बरसायेगा जो उनकी लाशों को बहाकर समुद्र में डाल देगी। मुझे यह ख़ूब मालूम है कि उसके बाद ही फ़ौरन क़ियामत आ जायेगी, जैसे पूरे दिन के हमल (गर्भ) वाली औरत, कि न जाने सुबह फ़ारिग़ हो जाये या रात ही को।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. को जिस रात मस्जिदे हराम से बैतुल-मुक़द्दस की मस्जिद तक पहुँचाया गया उस रात आप ज़मज़म और मक़ामे इब्राहीम के बीच थे कि जिब्राईल दायीं और मीकाईल बायीं तरफ़ से आपको उड़ा ले गये, यहाँ तक कि आप आसमान की बुलन्दियों तक पहुँचे। लौटते हुए आपने उनकी तस्बीहें मय और तस्बीहों के सुनीं। यह रिवायत इसी सूरत की आयतः

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ...... الخ.

(यानी आयत 44) की तफ़सीर में आयेगी। मुस्नद में है कि अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. जानिबीया में थे, बैतुल-मुक़द्दस की फ़तह का ज़िक्र हुआ, आपने हज़रत कअ़ब रज़ि. से पूछा कि तुम्हारे ख़्याल में मुझे वहाँ किस जगह नमाज़ पढ़नी चाहिये? उन्होंने फ़रमाया मुझसे पूछते हो तो मैं कहूँगा कि सख़रा के पीछे नमाज़ पढ़िये ताकि सारा बैतुल-मुक़द्दस आपके सामने रहे। आपने फ़रमाया- तुमने वही यहूदियत से मिलती-जुलती बात की। मैं तो उस जगह नमाज़ पढूँगा जहाँ रसूलुल्लाह सल्ल. ने पढ़ी है। पस आपने आगे बढ़कर क़िब्ले की तरफ़ नमाज़ अदा की। नमाज़ अदा करने के बाद आपने सख़रा के आस पास से तमाम कूड़ा समेटना और अपनी चादर में बाँधकर बाहर फेंकना शुरू किया, और लोगों ने भी आपका हाथ बटाया। पस आपने सख़रा की ऐसी ताज़ीम (सम्मान व इज़्ज़त) न की जैसी यहूद करते थे कि नमाज़ भी उसी के पीछे पढ़ते थे, बल्कि उसी को क़िब्ला बना रखा था। चूँकि हज़रत कअ़ब रज़ि. भी इस्लाम से पहले यहूदी थे इसी लिये आपने ऐसी राय पेश की थी जिसे हज़रत उमर ने ठुकरा दिया, और न आपने ईसाईयों की तरह सख़रा की तौहीन व अपमान किया कि उन्होंने तो उसे कूड़ा-करकट डालने की जगह बना रखा था, बल्कि आपने ख़ुद उसके पास से कूड़ा उठाकर फेंका। यह बिल्कुल उस हदीस के जैसी है जिसमें है कि न तो क़ब्रों पर बैठो न उनकी तरफ़ नमाज़ अदा करो।

मेराज के बारे में एक लम्बी रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से ऐसी भी नकल की गयी है जिसके बाज़ हिस्से ग़रीब हैं। उसमें है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने मीकाईल अलैहिस्सलाम से कहा कि मेरे पास ज़मज़म के पानी का तश्त भर लाओ कि मैं इनके दिल को पाक करूँ और इनके सीने को खोल दूँ। फिर आपका पेट चाक किया और उसे तीन बार धोया और तीनों बार हज़रत मीकाईल के लाये हुए पानी के तश्त से उसे धोया और आपके सीने को खोल दिया। उसको हर तरह की नामुनासिब चीज़ों से साफ़ किया और इल्म व बरदाश्त, ईमान व यक़ीन से उसे भर दिया। इस्लाम उसमें भर दिया और आपके दोनों मोंढों के बीच नुबुव्वत की मोहर लगा दी। और एक घोड़े पर बैठाकर आपको हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ले चले। देखा कि एक क़ौम है, इधर खेती काटती है उधर बढ़ जाती है। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से आपने पूछा ये कौन हैं? फ़रमाया ये राहे ख़ुदा के मुजाहिद हैं, जिनकी नेकियाँ सात-सात सौ तक बढ़ती हैं और जो ख़र्च करें उसका बदला पाते हैं। अल्लाह तआला बेहतरीन रज़्ज़ाक़ है।

फिर आपका गुज़र उस क़ौम पर हुआ जिनके सर पत्थरों से कुचले जा रहे थे। हर बार ठीक हो जाते और फिर कुचले जाते। दम भर के लिये उन्हें मोहलत न मिलती थी। मैंने पूछा ये कौन लोग हैं? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ये वे लोग हैं कि फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त इनके सर भारी हो जाया करते थे। फिर कुछ लोगों को मैंने देखा कि उनके आगे पीछे धज्जियाँ लटक रही हैं और ऊँट और जानवरों की तरह काँटोंदार जहन्नमी दरख़्त चर-चुग रहे हैं, जहन्नम के पत्थर और अंगारे खा रहे हैं। मैंने कहा ये कैसे लोग हैं? फ़रमाया अपने माल की ज़कात न देने वाले। अल्लाह ने इन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि ये ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। फिर मैंने ऐसे लोगों को देखा कि उनके सामने एक हंडिया में तो साफ़ सुथरा गोश्त है, दूसरी में ख़बीस सड़ा-भुसा गन्दा गोश्त है। ये उस अच्छे गोश्त से तो रोक दिये गये हैं और उस बदबूदार बदमज़ा सड़े हुए गोश्त को खा रहे हैं। मैंने सवाल किया ये किस गुनाह के करने वाले हैं? जवाब मिला कि ये वे मर्द हैं जो अपनी हलाल बीवियों को छोड़कर हराम औरतों के पास रात गुज़ारते थे, और वे औरतें हैं जो अपने हलाल शौहरों को छोड़कर औरों के यहाँ रात गुज़ारती थीं।

फिर आपने देखा कि रास्ते में एक लकड़ी है जो हर कपड़े को फाड़ती और हर चीज़ को ज़ख़्मी कर देती है। पूछा यह क्या है? फ़रमाया यह आपके उन उम्मितयों की मिसाल है जो रास्ते रोककर बैठ जाते हैं। फिर इस आयत को पढ़ाः

وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ.

यानी हर-हर रास्ते पर लोगों को डराने और अल्लाह की राह से रोकने को न बैठा करो.....।

फिर देखा कि एक शख़्स बहुत बड़ा ढेर जमा किये हुए है जिसे उठा नहीं सकता, फिर भी वह और बढ़ा रहा है। पूछा ऐ जिब्राईल यह क्या है? फ़रमाया यह आपकी उम्मत का वह शख़्स है जिसके ऊपर लोगों के हुक़ूक़ इस क़द्र हैं कि वह हरगिज़ अदा नहीं कर सकता, फिर भी वह और हुक़ूक़ चढ़ा रहा है और अमानतें ले रहा है। फिर आपने एक जमाअत को देखा जिनकी ज़बान और होंठ लोहे की कैंचियों से काटे जा रहे हैं। इधर कटे उधर दुरुस्त हो गये, फिर कटे, यही हाल बराबर जारी है। पूछा ये कौन लोग हैं? फ़रमाया ये फ़ितने के वाइज़ और ख़तीब हैं (यानी ऐसे तक़रीर व वअ़ज़ करने वाले जो ख़ुद अ़मल न करते थे, औरों को नसीहत करते थे)।

फिर देखा कि एक छोटे से पत्थर के सुराख़ में से एक बड़ा भारी बैल निकल रहा है, फिर वह लौटना

Maktab E Ashraf

चाहता है लेकिन नहीं जा सकता। पूछा ऐ जिब्राईल यह क्या है? फ़रमाया यह वह शख़्स है जो कोई बड़ा बोल बोलता था, फिर उस पर नादिम (शर्मिन्दा) तो होता था लेकिन लौटा नहीं सकता था। फिर आप एक वादी में पहुँचे वहाँ बहुत ही उम्दा ख़ुशगवार ठंडी हवा और दिल ख़ुश करने वाली ख़ुशबूदार राहत व सुकून की मुबारक सदायें सुनकर आपने पूछा यह क्या है? हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह जन्नत की आवाज़ है, वह कह रही है कि ख़ुदाया मुझसे अपना वादा पूरा कर, मेरे बालाख़ाने की रेशम, मोती, मोंगे, सोना, चाँदी, जाम, कटोरे, शहद, पानी, दूध, शराब वग़ैरह वग़ैरह नेमतें बहुत ज़्यादा हो गयी हैं। उसे ख़ुदा की तरफ़ से जवाब मिला कि हर एक मुसलमान मोमिन मर्द औ़रत जो मुझे और मेरे रसूलों को मानता हो, नेक अ़मल करता हो, न मेरे साथ किसी को शरीक करता हो, न मेरे बराबर किसी को समझता हो, वे सब तुझमें दाख़िल होंगे। सुन! जिसके दिल में मेरा डर है वह हर ख़ौफ़ से महफ़ूज़ है, जो मुझसे सवाल करता है वह मेहरूम नहीं रहता। जो मुझे क़र्ज़ देता है मैं उसे बदला देता हूँ। जो मुझ पर तवक्कुल करता है उसे किफ़ायत करता हूँ। मैं सच्चा माबूद हूँ। मेरे सिवा और कोई माबूद नहीं, मेरे वादे ख़िलाफ़ नहीं होते, मोमिन निजात पाने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला बरकत वाला है जो सबसे बेहतर ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) है। यह सुनकर जन्नत ने कहा बस मैं ख़ुश हो गयी।

फिर आप एक दूसरी वादी में पहुँचे जहाँ बहुत ही बुरी और भयानक मक्रूह आवाज़ें आ रही थीं और सख़्त बदबू थी। आपने उसके बारे में भी जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा। उन्होंने बतलाया कि यह जहन्नम की आवाज़ है। वह कह रही है कि ख़ुदाया मुझसे अपना वादा पूरा कर और मुझे वो दे। मेरे तौक़ व ज़न्जीर मेरे शोले और गर्मी की शिद्दत और लहू पीप मेरे अ़ज़ाब और सज़ा के सामान बहुत बड़ी मात्रा में और ज़्यादा हो गये हैं। मेरी गहराई बहुत ज़्यादा है। मेरी आग बहुत तेज़ है। मुझे वो दे जिसका वादा मुझसे हुआ है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हर मुश्रिक व काफ़िर, ख़बीस मेरा मुन्किर बेईमान मर्द औ़रत तेरे लिये है। यह सुनकर जहन्नम ने अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर की।

आप फिर चले यहाँ तक कि बैतुल-मुक़द्दस पहुँचे। उतरकर सख़रा में अपने घोड़े को बाँधा, अन्दर जाकर फ़रिश्तों के साथ नमाज़ अदा की। फ़राग़त के बाद उन्होंने पूछा कि जिब्राईल! यह आपके साथ कौन हैं? आपने फ़रमाया मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) हैं। उन्होंने कहा क्या आपकी तरफ़ भेजा गया था? फ़रमाया हाँ, सब ने मर्हबा कहा कि बेहतरीन भाई और बहुत ही अच्छे ख़लीफ़ा हैं, और बहुत अच्छाई और इ़ज़्ज़त से आये हैं। फिर आपकी मुलाक़ात नबियों की रूहों से हुई, सबने अपने परवर्दिगार की तारीफ़ व हम्द बयान की।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा का शुक्र है जिसने मुझे अपना ख़लील (दोस्त) बनाया, मुझे बहुत बड़ा मुल्क दिया और मेरी उम्मत ऐसी फ़रमाँबरदार बनाई कि उनकी इक़्तिदा (पैरवी) की जाती है। उसी ने मुझे आग से बचा लिया और उसे मेरे लिये ठंडक और सलामती बना दी। हज़रत मूसा ने फ़रमाया- ख़ुदा तआ़ला ही की मेहरबानी है कि उसने मुझसे कलाम किया, मेरे दुश्मनों आले फ़िरऔ़न को हलाक किया। बनी इस्राईल को मेरे हाथों निजात दे दी, मेरी उम्मत में ऐसी जमाअ़त रखी जो हक़ की हादी और हक़ के साथ अ़दल करने वाली थी। फिर हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआ़ला की तारीफ़ बयान करनी शुरू की कि अल्हम्दु लिल्लाह ख़ुदा ने मुझे विशाल मुल्क दिया, मुझे ज़बूर का इल्म दिया, मेरे लिये लोहा नर्म कर दिया। पहाड़ों को मेरे ताबे कर दिया और परिन्दों को भी जो मेरे साथ अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान) करते थे, मुझे हिक्मत और ज़ोरदार कलाम अ़ता फ़रमाया। फिर हज़रत सुलैमान ने

अल्लाह की तारीफ़ बयान करनी शुरू की, कि अल्हम्दु लिल्लाह ख़ुदा ने हवाओं को मेरे ताबे कर दिया और शैतानों को भी, कि वे मेरे फ़रमान के मातहत बड़े-बड़े महल, नक़्शे और बरतन वग़ैरह बनाते थे। उसने मुझे जानवरों की गुफ़्तगू के समझने का इल्म अ़ता फ़रमाया, हर चीज़ में मुझे फ़ज़ीलत दी। इनसानों के, जिन्नों के, परिन्दों के लश्कर मेरे मातहत (अधीन और क़ब्ज़े में) कर दिये और अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर मुझे फ़ज़ीलत दी, और मुझे वह सल्तनत दी जो मेरे बाद किसी के लायक़ नहीं, और वह भी ऐसी जिसमें पाकीज़गी ही पाकीज़गी थी और कोई हिसाब न था।

फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआ़ला की तारीफ़ बयान करनी शुरू की, कि उसने मुझे अपना कलिमा बनाया और मेरी मिसाल हज़रत आदम की सी है, जिसे मिट्टी से पैदा करके कह दिया था कि हो जा और वह हो गये थे। उसने मुझे किताब व हिक्मत तौरात व इंजील सिखाई। मैं मिट्टी का पक्षी बनाता था फिर उसमें फूँक मारता तो वह ख़ुदा के हुक्म से ज़िन्दा परिन्दा बनकर उड़ जाता। मैं पैदाईशी अन्धों और कोढ़ियों को अल्लाह के हुक्म से अच्छा कर देता था, मुर्दे अल्लाह की इजाज़त से ज़िन्दा हो जाते थे, मुझे उसने उठा लिया, मुझे पाक साफ़ कर दिया। मुझे और मेरी वालिदा को शैतान से बचा लिया। हम पर शैतान का कुछ दख़्ल (यानी ज़ोर) न था।

अब जनाब रसूले आख़िरुज़्ज़माँ सल्ल. ने फ़रमाया- तुम सबने अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ें बयान कर लीं अब मैं करता हूँ। अल्लाह ही के लिये हम्द व सना है जिसने मुझे तमाम जहानों के लिये रहमत और अपनी तमाम मख़्लूक़ के लिये डराने और ख़ुशख़बरी देने वाला बनाकर भेजा। मुझ पर क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया, जिसमें हर चीज़ का बयान है। मेरी उम्मत को दूसरी तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल बनाया जो कि औरों की भलाई के लिये बनाई गयी है, उसे बेहतरीन उम्मत बनाया उन्हीं को पहली और बाद की उम्मत बनाया, मेरा सीना खोल दिया, मेरे बोझ दूर कर दिये, मेरा ज़िक्र बुलन्द कर दिया, मुझे शुरू करने वाला और ख़त्म करने वाला बनाया।

इब्राहीम नख़ई ने फ़रमाया इन्हीं कारणों से नबी करीम सल्ल. तुम सबसे अफ़ज़ल हैं। इमाम अबू जाफ़र राज़ी रह. फ़रमाते हैं कि शुरू करने वाले आप हैं, यानी क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त आप ही से शुरू होगी। फिर आपके सामने तीन ढके हुए बरतन पेश किये गये, पानी के बरतन में से आपने थोड़ा सा पीकर वापस कर दिया, दूध का बरतन लेकर आपने पेट भरकर दूध पिया। फिर शराब का बरतन लाया गया तो आपने उसके पीने से इनकार कर दिया कि मैं फ़ारिग़ हो चुका अब तमन्ना नहीं। हज़रत जिब्राईल ने फ़रमाया यह आपकी उम्मत पर हराम की जाने वाली है और अगर आप इसे पी लेते तो आपकी उम्मत में से आपके ताबेदार बहुत ही कम होते। फिर आपको आसमान की तरफ़ चढ़ाया गया, दरवाज़ा खुलवाना चाहा तो पूछा गया यह कौन हैं? जिब्राईल ने कहा मुहम्मद हैं। पूछा गया क्या आपकी तरफ़ भेज दिया गया था? फ़रमाया हाँ, उन्होंने कहा अल्लाह तआ़ला इस भाई और ख़लीफ़ा को ख़ुश रखे, यह बड़े अच्छे भाई और बहुत ही उम्दा ख़लीफ़ा हैं। उसी वक़्त दरवाज़ा खोल दिया गया। आपने देखा कि एक शख़्स हैं पूरी पैदाईश के (यानी जिस्मानी एतिबार से किसी तरह की कमी और नुक़्स उनमें नहीं), आ़म लोगों की तरह उनकी पैदाईश में कोई नुक़सान नहीं, उनकी दायीं तरफ़ एक दरवाज़ा है जहाँ से ख़ुशबू की लपटें आ रही हैं, और बायीं तरफ़ एक दरवाज़ा जहाँ से ख़बीस (बुरी और बदबूदार) हवा आ रही है। दाहिनी तरफ़ के दरवाज़े को देखकर हंस देते और ख़ुश होते हैं, और बायीं तरफ़ के दरवाज़े को देखकर रो देते और ग़मगीन हो जाते हैं। मैंने कहा जिब्राईल! यह बुज़ुर्ग पूरी पैदाईश वाले कौन हैं? जिनकी पैदाईश में कुछ भी कमी

नहीं है। और ये दोनों दरवाज़े कैसे हैं? जवाब मिला कि यह आपके वालिद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हैं। दायीं जानिब जन्नत का दरवाज़ा है, अपनी जन्नती औलाद को देखकर ख़ुश होकर हंस देते हैं और बायीं तरफ़ जहन्नम का दरवाज़ा है, अपनी दोज़ख़ी औलाद को देखकर रो देते और ग़मगीन हो जाते हैं।

फिर दूसरे आसमान की तरफ़ चढ़े, इसी तरह के सवाल व जवाब के बाद दरवाज़ा खुला, वहाँ आपने दो जवानों को देखा, पूछने पर मालूम हुआ कि यह हज़रत ईसा बिन मरियम और हज़रत यहया बिन ज़करिया अ़लैहिमस्सलाम हैं। ये दोनों आपस में ख़ालाज़ाद भाई होते हैं। इसी तरह तीसरे आसमान पर पहुँचे वहाँ हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को पाया, जिन्हें हुस्न में और लोगों पर वही फ़ज़ीलत थी जो चाँद को बाक़ी सितारों पर। फिर चौथे आसमान पर इसी तरह पहुँचे वहाँ हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम को पाया जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने बुलन्द मकान पर चढ़ा लिया है। फिर आप पाँचवें आसमान पर भी इन्हीं सवालात व जवाबात के बाद पहुँचे। देखा कि एक साहिब बैठे हुए हैं। उनके आस-पास कुछ लोग हैं जो उनसे बातें कर रहे हैं। पूछा यह कौन हैं? जवाब मिला कि हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम हैं जो अपनी क़ौम में बहुत ही मक़बूल और लोकप्रिय थे और ये लोग बनी इस्राईल हैं। फिर इसी तरह छठे आसमान पर पहुँचे। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को देखा, आपके उनसे भी आगे निकल जाने पर वह रो दिये। मालूम करने पर सबब यह मालूम हुआ कि बनी इस्राईल मेरे बारे में यह समझते थे कि तमाम औलादे आदम में ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग (रुतबे वाला) मैं हूँ लेकिन यह मेरे ख़लीफ़ा जो दुनिया में हैं और मैं आख़िरत में हूँ। ख़ैर सिर्फ़ यही होते तो भी कोई हर्ज न था, लेकिन हर नबी के साथ उनकी उम्मत है।

फिर आप इसी तरह सातवें आसमान पर पहुँचे, वहाँ एक साहिब को देखा जिनकी दाढ़ी में कुछ सफ़ेद बाल थे, वह जन्नत के दरवाज़े पर एक कुर्सी लगाये बैठे हुए हैं। उनके पास कुछ और लोग भी हैं। बाज़ के चेहरे तो रोशन हैं और बाज़ के चेहरों पर कुछ कम चमक है, बल्कि रंग में कुछ और भी है, ये लोग उठे और नहर में एक ग़ोता लगाया जिससे रंग किसी क़द्र निखर गया। फिर दूसरी नहर में नहाये कुछ और निखर गये, फिर तीसरी में ग़ुस्ल किया तो बिल्कुल रोशन सफ़ेद चेहरे वाले हो गये। आकर दूसरों के साथ मिलकर बैठ गये और उन्हीं जैसे हो गये। आपके सवाल पर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने बतलाया कि यह आपके वालिद हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हैं। रू-ए-ज़मीन पर सफ़ेद बाल सबसे पहले इन्हीं के निकले। यह सफ़ेद मुँह वाले वे ईमान वाले लोग हैं जो बुराईयों से बिल्कुल बचे रहे और जिनके चेहरों के रंग में कुछ कदूरत थी ये वे लोग हैं जिनसे नेकियों के साथ कुछ बुराईयाँ भी हो गयी थीं। उनकी तौबा पर अल्लाह तआ़ला मेहरबान हो गया। पहली नहर अल्लाह तआ़ला की रहमत है, दूसरी नहर अल्लाह तआ़ला की नेमत है, तीसरी नहर शराबे तहूर की है जो जन्नितयों की ख़ास शराब है।

फिर आप सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुँचे तो आपसे कहा गया कि आप ही की सुन्नतों पर जो पाबन्दी करे वह यहाँ तक पहुँचाया जाता है, इसकी जड़ से पाकीज़ा पानी की साफ़ सुथरे दूध की लज़ीज़, बिना नशे की शराब की और साफ़ शहद की नहरें जारी थीं। इस दरख़्त के साये में कोई सवार अगर सत्तर साल भी चलता जाये फिर भी इसका साया ख़त्म नहीं होता। इसका एक-एक पत्ता इतना बड़ा है कि एक-एक उम्मत को ढाँप ले। अल्लाह तआ़ला के नूर ने इसे हर तरफ़ से ढक रखा था और परिन्दे की शक्ल के फ़रिश्तों ने इसे छुपा लिया था। जो अल्लाह तबारक व तआ़ला की मुहब्बत में वहाँ थे। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आपसे बातें कीं। फ़रमाया कि माँगो क्या माँगते हो? आपने गुज़ारिश की कि ख़ुदाया तूने इब्राहीम को अपना ख़लील (दोस्त) बनाया और उन्हें बड़ा मुल्क दिया। मूसा से तूने बातें कीं, दाऊद को अज़ीमुश्शान

Maktab E Ashraf

सल्तनत दी और उनके लिये लोहे को नर्म कर दिया, सुलैमान को तूने बादशाहत दी जिन्नात, इनसान, शैतान, हवायें उनके हुक्म के ताबे कर दीं और वह बादशाहत दी जो उनके सिवा किसी के लायक़ नहीं। ईसा को तूने तौरात व इन्जील सिखाई, अपने हुक्म से अंधों और कोढ़ियों को अच्छा करने वाला और मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला बनाया, उन्हें और उनकी माँ को शैतान मर्दूद से बचाया कि उसे उन पर कोई दख़ल (ज़ोर) न था। मेरे बारे में फ़रमान हो। रब्बुल-आलमीन ने फ़रमाया तू मेरा ख़लील (प्यारा और दोस्त) है, तौरात में मैंने तुझे ख़लीलुर्रहमान का लक़ब दिया है, तुझे तमाम लोगों की तरफ़ बशीर व नज़ीर (ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला) बनाकर भेजा है, तेरा सीना खोल दिया है, तेरा बोझ उतार दिया है, तेरा ज़िक्र बुलन्द कर दिया है, जहाँ मेरा ज़िक्र आये वहाँ तेरा ज़िक्र भी होता है, और तेरी उम्मत को मैंने सब उम्मतों से बेहतर बनाया है, जो लोगों के लिये निकाली गयी है। तेरी उम्मत को मैंने बेहतरीन उम्मत बनाया है। तेरी ही उम्मत को सबसे पहली और सबसे आख़िरी बनाया है, उनका ख़ुतबा जायज़ नहीं जब तक कि वे मेरे एक माबूद और तेरे बन्दा और रसूल होने की शहादत (गवाही) न दे लें। मैंने तेरी उम्मत में ऐसे लोग बनाये हैं जिनके दिल में उनकी किताबें हैं, तुझे पैदाईश के हिसाब से सबसे अव्वल किया और दुनिया में भेजने के एतिबार से सबसे आख़िरी बनाया और फ़ैसले के एतिबार से भी सबसे अव्वल (प्रथम) किया। तुझे मैंने सात ऐसी आयतें दीं जो बार-बार दोहराई जाती हैं (यानी सूरः अल्हम्दु शरीफ़), जो तुझसे पहले किसी नबी को नहीं मिलीं। तुझे मैंने अपने अ़र्श के नीचे से सूरः ब-क़रह के आख़िर की आयतें दीं जो तुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गयीं। मैंने तुझे कौसर नहर अ़ता फ़रमाई और मैंने तुझे इस्लाम के आठ हिस्से दिये- इस्लाम, हिजरत, जिहाद, नमाज़, सदक़ा, रमज़ान के रोज़े, नेकी का हुक्म, बुराई से मनाही, और मैंने तुझे शुरू करने वाला और ख़त्म करने वाला बनाया।

पस आप फ़रमाने लगे- मुझे मेरे रब ने छह बातों की फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई- कलाम की इब्तिदा (शुरूआत) और उसकी इन्तिहा दी, जामे बातें दीं, तमाम लोगों की तरफ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और आगाह करने वाला बनाकर भेजा। मेरे दुश्मन मुझसे महीने भर की दूरी पर हों वहीं से उनके दिल मे मेरा रौब डाल दिया गया। मेरे लिये ग़नीमतें हलाल की गयीं जो मुझसे पहले किसी के लिये हलाल नहीं हुयीं। मेरे लिये सारी ज़मीन मस्जिद और वुज़ू (यानी पानी न होने पर तयम्मुम का स्थान) बनाई गयी, फिर आप पर पचास नमाज़ों के फ़र्ज़ होने का और हज़रत मूसा के मश्विरे से उसमें कमी तलब करने का और आख़िर में पाँच रह जाने का ज़िक्र है, जैसे कि इससे पहले गुज़र चुका है। पस ये पाँच हैं और सवाब पचास का। जिससे आप बहुत ख़ुश हुए। जाते वक़्त हज़रत मूसा सख़्त थे और आते वक़्त बहुत ही नर्म और सबसे बेहतर।

एक और किताब की इस हदीस में यह भी है कि इसी आयत "सुब्हानल्लज़ी......" की तफ़सीर में आपने यह वाक़िआ बयान फ़रमाया। यह भी वाज़ेह रहे कि इस लम्बी हदीस के एक रावी अबू जाफ़र राज़ी बज़ाहिर हाफ़िज़े (याददाश्त) के कुछ ऐसे अच्छे मालूम नहीं होते, इसके बाज़ अलफ़ाज़ बहुत ज़्यादा ग़रीब और मुन्कर हैं उन्हें कमज़ोर भी कहा गया है। और सिर्फ़ इन्हीं की रिवायत वाली हदीस नज़र (ग़ौर व फ़िक्र और विचार) से ख़ाली नहीं। एक और बात यह है कि ख़्वाब वाली हदीस का कुछ हिस्सा भी इसमें आ गया है और यह भी मुम्किन है कि यह बहुत सी हदीसों का मजमूआ हो, या ख़्वाब या मेराज के सिवा किसी वाक़िए की इसमें रिवायत हो। वल्लाहु आलम।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में आपका हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिमुस्सलाम के हुलिये वग़ैरह भी बयान करना नक़ल किया गया है। सही मुस्लिम की हदीस में हतीम में

Maktab E Ashraf

आप से बैतुल-मुक़द्दस के सवालात किये जाने और फिर उसके ज़ाहिर हो जाने का वाक़िआ भी है, उसमें भी इन तीनों नबियों से मुलाक़ात करने और उनके हुलिये का बयान है, और यह भी कि आपने उन्हें नमाज़ में खड़ा पाया। आपने जहन्नम के दरोग़ा मालिक को भी देखा और उन्होंने ही शुरू में आपसे सलाम किया।

बैहक़ी वग़ैरह में कई एक सहाबा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. हज़रत उम्मे हानी के मकान पर सोये हुए थे, आप इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो गये थे, वहीं से आपको मेराज हुई। फिर इमाम हाकिम ने बहुत लम्बी हदीस बयान फ़रमाई है जिसमें दर्जों और फ़रिश्तों वग़ैरह का ज़िक्र है, ख़ुदा की क़ुदरत से तो कोई चीज़ बईद नहीं बशर्ते कि वह रिवायत सही साबित हो जाये। इमाम बैहक़ी रह. इस रिवायत को बयान करके फ़रमाते हैं कि मक्का शरीफ़ से बैतुल-मुक़द्दस तक जाने और मेराज के बारे में इस हदीस में पूरी किफ़ायत है, लेकिन इस रिवायत को हदीस के बहुत से इमामों ने मुर्सल बयान किया है। वल्लाहु आलम।

अब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस सुनिये। बैहक़ी में है कि जब सुबह के वक़्त लोगों से हुज़ूर सल्ल. ने इस बात का ज़िक्र किया तो बहुत से लोग मुर्तद हो गये (यानी दीन इस्लाम से फिर गये) जो उससे पहले ईमान वाले और तस्दीक़ करने वाले थे। फिर हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उनका जाना और आपका सच्चा मानना और सिद्दीक़ लक़ब पाना मरवी है। ख़ुद हज़रत उम्मे हानी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. को मेराज मेरे ही मकान से कराई गयी है, उस रात आप नमाज़े इशा के बाद मेरे मकान पर ही आराम फ़रमा रहे थे। आप भी सो गये और हम सब भी, सुबह से कुछ ही पहले हमने हुज़ूर सल्ल. को जगाया, फिर आपके साथ ही हमने सुबह की नमाज़ अदा की तो आपने फ़रमाया ऐ उम्मे हानी! मैंने तुम्हारे साथ ही इशा की नमाज़ अदा की और अब सुबह की नमाज़ में भी तुम्हारे साथ यहीं हूँ। इस दरमियान में अल्लाह तआ़ला ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस पहुँचाया और मैंने वहाँ नमाज़ पढ़ी। इस रिवायत का एक रावी कलबी मुहद्दिसीन के नज़दीक मोतबर नहीं, लेकिन इसे अबू यअ़ला में दूसरी सनद से ख़ूब तफ़सील के साथ रिवायत किया है। तबरानी में हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा से मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्ल. मेराज की रात को मेरे यहाँ सोये हुए थे। मैंने रात को आपकी बहुत तलाश की लेकिन न पाया। डर था कि कहीं क़ुरैश वालों ने कोई धोखा न किया हो, लेकिन हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि जिब्राईल मेरे पास आये और मेरा हाथ थामकर मुझे ले चले, दरवाज़े पर एक जानवर था जो ख़च्चर से छोटा और गधे से ऊँचा था। मुझे उस पर सवार किया। फिर मुझे बैतुल-मुक़द्दस पहुँचाया। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को दिखाया, वह अख़्लाक़ और सूरत व शक्ल में बिल्कुल मेरे जैसे थे। हज़रत मूसा को दिखलाया लम्बे क़द के सीधे बालों वाले ऐसे थे जैसे इज़्दे शनूअत के क़बीले के लोग हुआ करते हैं। इसी तरह मुझे हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को भी दिखाया। दरमियानी क़द के सफ़ेद सुर्ख़ी माईल रंग के बिल्कुल ऐसे जैसे उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी हैं। दज्जाल को दिखाया और उसकी आँख बिल्कुल मिटी हुई थी। ऐसा था जैसे क़ुतन बिन उज़्ज़ा। इतना इरशाद फ़रमाने के बाद फ़रमाया कि अच्छा मैं जाता हूँ और जो देखा है वह क़ुरैश के लोगों से बयान करता हूँ। मैंने आपका दामन थाम लिया और अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा के लिये अपनी क़ौम में इसको बयान न करें वे आपको झुठलायेंगे, वे आपकी बात हरगिज़ न मानेंगे और अगर बस चला तो आपकी बेअदबी करेंगे। लेकिन आपने झटका मारकर अपना दामन मेरे हाथ से छुड़ा लिया और सीधे क़ुरैश के मजमे में पहुँचकर सारी बातें बयान फ़रमा दीं।

जुबैर बिन मुतइ़म कहने लगा- बस जनाब हमें मालूम हो गया अगर आप सच्चे होते तो ऐसी बात हममें बैठकर न कहते। एक शख़्स ने कहा क्यों हज़रत! रास्ते में हमारा क़ाफ़िला भी मिला था? आपने

Maktab E Ashraf

फ़रमाया वह भी मिले थे, फ़ुलाँ मक़ाम पर थे, उसमें एक सुर्ख़ रंग की ऊँटनी थी जिसका पाँव टूट गया था। उनके पास एक बड़े प्याले में पानी था जिसे मैंने पिया भी। उन्होंने कहा अच्छा उनके ऊँटों की गिनती बतलाओ। उनमें चरवाहे कौन-कौन थे यह भी बतलाओ? उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने क़ाफ़िला आपके सामने कर दिया, आपने सारी गिनती भी बतला दी और चरवाहों के नाम भी बतला दिये। एक चरवाहा उनमें इब्ने अबी क़हाफ़ा था, और यह भी फ़रमा दिया कि कल सुबह को वह सनिय्या पहुँच जायेंगे। चुनाँचे उस वक़्त अक्सर लोग बतौर आज़माईश सनिय्या जा पहुँचे। देखा कि वाक़ई क़ाफ़िला आ गया। उनसे पूछा कि क्या तुम्हारा ऊँट खो गया था? उन्होंने कहा दुरुस्त है, खो गया था। दूसरे क़ाफ़िले वालों से पूछा क्या किसी सुर्ख़ रंग की ऊँटनी का पाँव टूट गया है? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ यह भी सही है। पूछा क्या तुम्हारे पास बड़ा प्याला पानी का भी था? अबू बक्र ने कहा हाँ ख़ुदा की क़सम उसे तो मैंने ख़ुद रखा था और उसमें से न किसी ने पिया न वह पानी गिराया गया। बेशक मुहम्मद सच्चे हैं। यह आप पर ईमान लाये और उस दिन से इनका नाम सिद्दीक़ रखा गया।

इन तमाम हदीसों की वाक़फ़ियत के बाद जिनमें सही भी हैं, हसन भी हैं, कमज़ोर भी हैं, कम से कम इतना ज़रूर मालूम हो गया कि नबी करीम सल्ल. का मक्का शरीफ़ से बैतुल-मुक़द्दस तक ले जाना वाक़े हुआ था और यह भी मालूम हो गया कि यह सिर्फ़ एक ही मर्तबा हुआ है, अगरचे रावियों की इबारतें इस संदर्भ में अलग-अलग अलफ़ाज़ से हैं। अगरचे उनमें ज़्यादती-कमी भी है। यह कोई बात नहीं, सिवाय अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के ख़ता से पाक कौन है। बाज़ लोगों ने हर-हर ऐसी रिवायत को एक अलग वाक़िआ़ कहा है और इसके क़ायल हुए हैं कि यह वाक़िआ़ कई बार हुआ, लेकिन ये लोग बहुत दूर निकल गये और बिल्कुल अनोखी बात कही, और न जाने की जगह चले गये, और फिर भी मतलब हासिल नहीं हुआ। बाद के उलेमा में से बाज़ ने एक और ही तौजीह पेश की है और उन्हें उस पर बड़ा नाज़ है। वह यह कि एक बार तो आपको मक्का से सिर्फ़ बैतुल-मुक़द्दस तक की सैर हुई, एक बार मक्का से आसमानों पर चढ़ाये गये और एक बार मक्का से बैतुल-मुक़द्दस और बैतुल-मुक़द्दस से आसमानों तक, लेकिन यह क़ौल भी बहुत दूर का और बिल्कुल ग़रीब है। पहले उलेमा और बुज़ुर्गों में से तो इसका क़ायल कोई नहीं। अगर ऐसा होता तो ख़ुद नबी करीम सल्ल. ख़ुद ही इसे खोलकर बयान फ़रमा देते, और रावी आपसे इसके बार-बार होने की रिवायत करते। बक़ौल हज़रत इमाम ज़ोहरी- मेराज का यह वाक़िआ़ हिजरत से एक साल पहले का है, उर्वा भी यही कहते हैं। बैहक़ी कहते हैं कि छह माह पहले का है। पस सही बात यह है कि नबी करीम सल्ल. को जागते में, न कि ख़्वाब में, मक्का शरीफ़ से बैतुल-मुक़द्दस तक की सैर कराई गयी। उस वक़्त आप बुराक़ पर सवार थे, मस्जिदे क़ुदुस के दरवाज़े पर आपने बुराक़ को बाँधा, वहाँ जाकर उसके क़िब्ले-रुख़ तहिय्यतुल-मस्जिद के तौर पर दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। फिर मेराज लाये गये, जो दर्जों वाली और बतौर सीढ़ी के है, उससे आप दुनिया वाले आसमान पर चढ़ाये गये, फिर सातों आसमानों पर पहुँचाये गये। हर आसमान में ख़ुदा के ख़ास और क़रीबी हज़रात से मुलाक़ातें हुई। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से उनके मक़ाम और दर्जों के मुताबिक़ सलामु-अ़लैक हुई। छठे आसमान में कलीमुल्लाह हज़रत मूसा से और सातवें आसमान में ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम से मिले। फिर उनसे भी आगे बढ़ गये। यहाँ तक कि आप 'मुस्तवा' में पहुँचे जहाँ क़ज़ा व क़द्र (तक़दीरी फ़ैसलों) की क़लमों की आवाज़ें आपने सुनीं। सिद्रतुल-मुन्तहा को देखा जिस पर अल्लाह की अ़ज़मत व बड़ाई छा रही थी। सोने की टिड्डियाँ और तरह-तरह के रंग उस पर नज़र आ रहे थे, फ़रिश्ते चारों तरफ़ से घेरे हुए थे। वहीं पर आपने हज़रत जिब्राईल

अ़लैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत में देखा। छह सौ पर थे। वहीं आपने हर तरफ़ सब्ज़ रंग को देखा जिसने आसमानों के किनारों को ढक रखा था। बैतुल-मामूर की ज़ियारत की, जो ख़लीलुल्लाह के ज़मीनी काबे के ठीक ऊपर आसमानों पर है, यानी आसमानी काबा। उससे ख़लीले ख़ुदा हज़रत इब्राहीम टेक लगाये बैठे हुए थे। उसमें हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इबादते ख़ुदा के लिये जाते हैं मगर जो आज गये फिर उनकी बारी क़ियामत तक नहीं आती। आपने जन्नत व दोज़ख़ देखीं। यही अल्लाह तआ़ला ने पचास नमाज़ें फ़र्ज़ करके फिर कमी कर दी और पाँच रखीं जो ख़ास उसकी रहमत थी। इससे नमाज़ की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत भी साफ़ तौर पर ज़ाहिर है। फिर आप वापस बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ उतरे और आपके साथ तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम भी उतरे, वहाँ आपने उन सबको नमाज़ पढ़ाई, जबकि नमाज़ का वक़्त हो गया, मुम्किन है वह उस दिन की सुबह की नमाज़ हो।

बाज़ हज़रात का क़ौल है कि अम्बिया की इमामत आपने आसमान में की। लेकिन सही रिवायत से बज़ाहिर यह वाक़िआ़ बैतुल-मुक़द्दस का मालूम होता है, अगरचे बाज़ रिवायतों में यह भी आया है कि जाते हुए आपने यह नमाज़ पढ़ाई लेकिन ज़ाहिर यह है कि आपने वापसी में इमामत कराई। इसकी एक दलील तो यह है कि जब आसमानों पर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से आपकी मुलाक़ातें हुईं तो आप हर एक के बारे में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछते हैं कि ये कौन हैं? अगर बैतुल-मुक़द्दस में ही उनकी इमामत आपने कराई होती तो अब इस सवाल की कोई ज़रूरत नहीं रहती। दूसरे यह कि सबसे पहले और सबसे बड़ी ग़र्ज़ तो बुलन्दी पर अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर में होना था, तो बज़ाहिर यही बात सब पर मुक़द्दम थी, जब यह हो चुका और आप पर और आपकी उम्मत पर उस रात में जो नमाज़ का फ़रीज़ा मुक़र्रर होना था वह भी हो चुका, अब आपको अपने भाईयों (अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम) के साथ जमा होने का मौक़ा मिला और उन सबके सामने आपकी बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत ज़ाहिर करने के लिये हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के इशारे से आपने इमाम बनकर उन्हें नमाज़ पढ़ाई। फिर बैतुल-मुक़द्दस से सवारी बुराक़ के ज़रिये आप वापस रात के अन्धेरे और सुबह के कुछ मामूली ही से उजाले के वक़्त मक्का शरीफ़ पहुँच गये। वल्लाहु आलम।

अब यह जो नक़ल किया गया है कि आपके सामने दूध और शहद या दूध और शराब या दूध और पानी पेश किया गया, इन चारों ही चीज़ों के बारे में रिवायतों में यह भी है कि यह वाक़िआ़ बैतुल-मुक़द्दस का है, और यह भी है कि यह वाक़िआ़ आसमानों का है। लेकिन यह हो सकता है कि दोनों ही जगह यह चीज़ आपके सामने पेश हुई हो, इसलिये कि जैसे किसी आने वाले के सामने मेहमान नवाज़ी के तौर पर कुछ चीज़ रखी जाती है उसी तरह यह था। वल्लाहु आलम।

फिर इसमें भी लोगों ने इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया है कि मेराज आपके जिस्म व रूह समेत कराई गयी थी या सिर्फ़ रूहानी तौर पर? अक्सर उलेमा-ए-किराम तो यही फ़रमाते हैं कि जिस्म व रूह समेत आपको मेराज हुई। और हुई भी जागते में, न कि बतौर ख़्वाब के। हाँ इसका इनकार नहीं कि हुज़ूर सल्ल. को पहले ख़्वाब में यही चीज़ें दिखाई गयी हों। आप जो कुछ ख़्वाब में देख लेते उसी तरह फिर वास्तव में जागते हुए भी मुलाहिज़ा फ़रमा लेते। इसकी बड़ी दलील एक तो यह है कि इस वाक़िए के बयान फ़रमाने से पहले अल्लाह तआ़ला ने अपनी पाकीज़गी बयान फ़रमाई। बयान के इस अन्दाज़ का तक़ाज़ा यह है कि इसके बाद की बात कोई बड़ी अहम है, अगर यह वाक़िआ़ ख़्वाब का माना जाये तो ख़्वाब में ऐसी बातें देख लेना इतना अहम नहीं कि उसको बयान फ़रमाते हुए अल्लाह तआ़ला पहले से एहसान और अपनी क़ुदरत व इख़्तियार के तौर पर अपनी तस्बीह (पाकीज़गी) बयान करे। फिर अगर यह वाक़िआ़ ख़्वाब (सपने) का ही

था तो काफ़िर इस तरह जल्दी से आपको न झुठलाते। एक शख़्स अपना ख़्वाब और ख़्वाब में देखी हुई अजीब और आश्चर्य-जनक चीज़ें बयान कर रहा है, करे कोई वजह नहीं थी कि भड़-भड़ाकर आ जायें और सुनते ही सख़्ती से इनकार करने लगें। फिर जो लोग इससे पहले आप पर ईमान ला चुके थे और आपकी रिसालत को कुबूल कर चुके थे, क्या वजह है कि वह मेराज के वाक़िए को सुनकर इस्लाम से फिर जाते हैं। इससे भी ज़ाहिर है कि हुज़ूर सल्ल. ने ख़्वाब का क़िस्सा बयान नहीं फ़रमाया था। फिर क़ुरआन के लफ़्ज़ "बि-अ़ब्दिही" पर ग़ौर कीजिए "अ़ब्द" (बन्दे) का इतलाक़ (हुक्म) रूह और जिस्म दोनों के मजमूए पर आता है। फिर 'अस्रा बि-अ़ब्दिही लैलन्' का फ़रमाना इस चीज़ को और स्पष्ट कर देता है कि वह अपने बन्दे को रात के थोड़े हिस्से में ले गया। इस देखने को लोगों की आज़माईश (इम्तिहान) का सबब आयतः

وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِىٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ.

(यानी इसी सूरः की आयत 60 में) फ़रमाया गया है। अगर यह ख़्वाब ही था तो इसमें लोगों की ऐसी कौनसी बड़ी आज़माईश थी जिसे मुस्तक़िल तौर पर बयान फ़रमाया जाता?

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि यह आँखों का देखना था जो रसूलुल्लाह सल्ल. को दिखाया गया। (बुख़ारी) ख़ुद क़ुरआन फ़रमाता है:

مَازَاغَ الْبَصَرُ وَمَاطَغٰى.

कि न तो निगाह भटकी न बहकी।

ज़ाहिर है कि 'बसर' यानी निगाह इनसान की ज़ात का एक बड़ा वस्फ़ है, न कि सिर्फ़ रूह का। फिर बुराक़ की सवारी का लाया जाना और उस सफ़ेद चमकीले जानवर पर सवार कराकर आपको ले जाना भी इसकी दलील है कि यह वाक़िआ जागते का और जिस्मानी है, वरना सिर्फ़ रूह के लिये सवारी की ज़रूरत नहीं। वल्लाहु आलम।

कुछ लोग कहते हैं कि यह मेराज सिर्फ़ रूहानी थी न कि जिस्मानी। चुनाँचे मुहम्मद बिन इस्हाक़ लिखते हैं कि हज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान रज़ि. का यही क़ौल नक़्ल किया गया है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जिस्म ग़ायब नहीं हुआ था, बल्कि रूहानी मेराज थी। इस क़ौल का इनकार नहीं किया गया, क्योंकि हसन रह. फ़रमाते हैं कि आयतः

وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِىٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ.

(सूरः बनी इस्राईल आयत 60) उतरी है, और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बारे में ख़बर दी है कि उन्होंने फ़रमाया मैंने ख़्वाब में तेरा ज़िबह करना देखा है। अब तू सोच ले क्या देखता है? फिर यही हाल रहा है। पस ज़ाहिर है कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर 'वही' जागते में भी आती है और ख़्वाब में भी। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाया करते थे कि मेरी आँखें सो जाती हैं और दिल जागता रहता है। वल्लाहु आलम।

इसमें से कौनसी सच्ची बात है? आप गये और आपने बहुत सी बातें देखीं, जिस हाल में भी आपने सोते या जागते सब हक़ और सच है। यह तो था मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. का क़ौल।

इमाम इब्ने जरीर रह. ने इसकी बहुत कुछ तरदीद की है (यानी उनकी इस बात को नकारा और रद्द किया है) और इसे ख़िलाफ़े ज़ाहिर क़रार दिया है कि यह क़ौल क़ुरआनी अलफ़ाज़ के सरासर ख़िलाफ़ है, फिर इसके ख़िलाफ़ बहुत सी दलीलें क़ायम कीं जिनमें से चन्द हमने भी ऊपर बयान कर दी हैं। वल्लाहु

Maktaba-E-Ashraf

आलम।

एक निहायत ही उम्दा और ज़बरदस्त फ़ायदा इस बयान में उस रिवायत से होता है जो हाफ़िज़ अबू नईम अस्बहानी किताब 'दलाईलुन्नुबुव्वत' में लाये हैं, कि जब वजीह बिन ख़लीफ़ा को रसूलुल्लाह सल्ल. ने रोम के बादशाह क़ैसर के पास बतौर क़ासिद के अपने मुबारक पत्र के साथ भेजा, यह पहुँचे और अ़रब ताजिरों को जो मुल्के शाम में थे हिरक़्ल ने जमा किया, उनमें अबू सुफ़ियान बिन हरब था और उसके साथी मक्का के दूसरे काफ़िर भी थे। फिर उसने इनसे बहुत से सवालात किये जो बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में मज़कूर हैं। अबू सुफ़ियान की शुरू से आख़िर तक यही कोशिश रही कि किसी तरह हुज़ूर सल्ल. की बुराई और अपमान उसके सामने करे, ताकि बादशाह के दिल का मैलान हुज़ूर पाक सल्ल. की तरफ़ न हो। वह ख़ुद कहता है कि मैं सिर्फ़ इस ख़ौफ़ से ग़लत बातें करने और तोहमतें धरने से बाज़ रहा कि कहीं मेरा कोई झूठ उस पर न खुल जाये, फिर तो यह मेरी बात को झुठला देगा और बड़ी शर्मिन्दगी होगी।

उसी वक़्त दिल में ख़्याल आ गया और मैंने कहा बादशाह सलामत सुनिये! मैं एक वाक़िआ़ बयान करता हूँ जिससे आप पर यह बात खुल जायेगी कि मुहम्मद बड़े झूठे आदमी हैं। सुनिये! एक दिन वह कहने लगे कि आजकी रात वह मक्का से चले और आपकी इस मस्जिद में यानी बैतुल-मुक़द्दस की मस्जिदे क़ुदुस में आये और फिर वापस सुबह से पहले मक्का पहुँच गये। मेरी यह बात सुनते ही बैतुल-मुक़द्दस का लाट पादरी जो रोम के बादशाह की उस मज्लिस में उसके पास बड़ी इज़्ज़त से बैठा था फ़ौरन ही बोल उठा कि यह बिल्कुल सच है, मुझे उस रात का इल्म है। क़ैसर ने ताज्जुब और आश्चर्य-जनक नज़र से उसकी तरफ़ देखा और अदब से पूछा जनाब को कैसे मालूम हुआ? उसने कहा सुनिये! मेरी आ़दत थी और यह काम मैंने ख़ुद से मुताल्लिक़ कर रखा था कि जब तक मस्जिद शरीफ़ के तमाम दरवाज़े अपने हाथ से बन्द न कर लूँ सोता न था। उस रात मैं दरवाज़े बन्द करने को खड़ा हुआ, सब दरवाज़े अच्छी तरह बन्द कर दिये, लेकिन एक दरवाज़ा मुझसे बन्द न हो सका। मैंने बहुत ज़ोर लगाये लेकिन किवाड़ अपनी जगह से सरका भी नहीं। मैंने उसी वक़्त अपने आदमियों को आवाज़ दी, वे आये, हम सबने मिलकर ताक़त लगाई लेकिन सबके सब नाकाम रहे। बस यह मालूम हो रहा था कि गोया हम किसी पहाड़ को उसकी जगह से सरकाना चाहते हैं। वह चसका तक नहीं, हिला भी तो नहीं। मैंने बढ़ई बुलवाये, उन्होंने देखा भाला, तरकीबें कीं कोशिशें कीं लेकिन वे भी हार गये और कहने लगे सुबह पर रखिये, दरवाज़ा इस रात यूँही रहा, दोनों किवाड़ बिल्कुल खुले रहे। मैं सुबह ही उस दरवाज़े के पास गया तो देखा कि उसके पास कोने में पत्थर की चट्टान थी उसमें एक सुराख़ है और ऐसा मालूम होता है कि उसमें रात को किसी ने कोई जानवर बाँधा है, उसके असर और निशान मौजूद थे। मैं समझ गया और मैंने उसी वक़्त अपनी जमाअ़त से कहा कि आज की रात यह हमारी मस्जिद किसी नबी के लिये खुली रखी गयी थी, और उसने यहाँ ज़रूर नमाज़ अदा की है। यह हदीस बहुत लम्बी है।

नोटः मेराज के वाक़िए में यह ख़्याल रहे कि यह कोई ख़्वाब का वाक़िआ़ नहीं बल्कि जिस्म के साथ आपका बैतुल-मुक़द्दस और फिर आसमानों पर तशरीफ़ लेजाना है। आजके तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में इन चीज़ों का समझना कुछ मुश्किल नहीं। अल्लाह की दी हुई नन्ही सी अ़क्ल से आज इनसान ने ऐसे ऐसे जहाज़ और रॉकेट तैयार कर लिये हैं जो मिन्टों में हज़ारों मील का फ़ासला तय करते हैं। ख़ुद इनसान की निगाह की तेज़-रफ़्तारी देखिये कि वह लाखों मील दूर आसमान तक पहुँचने में सैकिंडों का वक़्त लेती और एक आन में उसको देख लेती है तो क्या मुश्किल है अपार क़ुदरत रखने वाले के लिये कि वह अपने ख़ास बन्दे को थोड़े से वक़्त में लाखों मील दूर ले जाये और अपनी क़ुदरत के बेशुमार

Maktaba Ashraf

अ़जायबात दिखाये। रही वक़्त की बात तो वक़्त भी तो उसी की मख़्लूक़ और उसके हुक्म के ताबे है। बहरहाल इसमें ज़रा भी शक व शुब्हा न करना चाहिये कि इतने थोड़े से वक़्त में इतना लम्बा सफ़र कैसे तय हो गया। यह जिस्मानी सफ़र था तभी तो मक्का के काफ़िरों ने इसका इनकार किया, ख़्वाब का कौन इनकार करता?

और जहाँ इस बात का ज़िक्र हुआ कि बैतुल-मुक़द्दस को आपकी नज़रों के सामने कर दिया गया। आज इस बात को समझने के लिये ज़्यादा दिमाग़ पर ज़ोर डालने की ज़रूरत नहीं। हवा और फ़िज़ा के ज़रिये लाखों और करोड़ों मील तस्वीरें और आवाज़ें टी. वी. और फ़ोनों के ज़रिये कैसे पहुँच रही हैं यह हम रात-दिन खुली आँखों से देख रहे हैं। फिर इस वाक़िए में कौनसी ताज्जुब की बात है? **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

फ़ायदाः हज़रत अबुल-ख़त्ताब उमर बिन दहिया अपनी किताब 'अत्तनवीर फ़ी मौलदिस्सिराजिल् मुनीर' में हज़रत अनस की रिवायत से मेराज की हदीस नक़ल करके उसके मुताल्लिक़ बहुत ही उम्दा कलाम करके फिर फ़रमाते हैं कि मेराज की हदीस मुतवातिर है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब, हज़रत अ़ली, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत अबूज़र, हज़रत मालिक बिन सअ़सआ़, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत अबू सईद, हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत शद्दाद बिन औस, हज़रत उबई बिन कअ़ब, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन क़रदा, हज़रत अबू हब्बा, हज़रत अबू यअ़ला, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर, हज़रत जाबिर, हज़रत हुज़ैफ़ा, हज़रत बरीदा, हज़रत अबू अय्यूब, हज़रत अबू उमामा, हज़रत समुरा बिन जुन्दुब, हज़रत अबुल-ख़मरा, हज़रत सुहैब रूमी, हज़रत उम्मे हानी, हज़रत आ़यशा, हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरह से नक़ल की गयी है।

इनमें से बाज़ ने तो इसे बहुत तफ़सील से बयान किया है और बाज़ ने मुख़्तसर। अगरचे इनमें से बाज़ रिवायतें सनद के एतिबार से सही नहीं लेकिन कुल मिलाकर सेहत के साथ मेराज का वाक़िआ़ साबित है और मुसलमान इजमाली तौर पर इसके क़ायल हैं। हाँ बेशक ज़िन्दीक़ और मुल्हिद (यानी बेदीन और गुमराह) लोग इसके मुन्किर (इनकारी) हैं, वे ख़ुदा के नूरानी चिराग़ को अपने मुँह की फूँकों से बुझाना चाहते हैं लेकिन वह पूरी रोशनी के साथ चमकता हुआ ही रहेगा, चाहे काफ़िरों को बुरा लगे।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝ ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝	और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को किताब (यानी तौरात) दी, और हमने उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया कि तुम मेरे सिवा (अपना) कोई कारसाज़ मत क़रार दो। (2) ऐ उन लोगों की नस्ल! जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था, वह (नूह अ़लैहिस्सलाम) बड़े शुक्रगुज़ार बन्दे थे। (3)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा

हुज़ूरे पाक सल्ल. के मेराज के वाक़िए को बयान करने के बाद अपने पैग़म्बर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र बयान फ़रमाता है। आ़म तौर पर क़ुरआने करीम में यह दोनों बयान एक साथ आये हैं। इसी तरह तौरात और क़ुरआन का बयान भी मिला-जुला होता है। हज़रत मूसा की किताब का नाम तौरात है, वह किताब बनी इस्राईल के लिये हादी (हक़ राह दिखाने वाली) थी। उन्हें हुक्म हुआ था कि

Maktab E Ashraf

ख़ुदा के सिवा किसी और को वली, मददगार और माबूद न समझें। हर एक नबी तौहीदे ख़ुदा (अल्लाह के एक होने का पैग़ाम) लेकर आता है। फिर उन्हें कहा जाता है कि ऐ उन बुज़ुर्गों की औलाद! जिन्हें हमने अपने इस एहसान से नवाज़ा था कि तूफ़ाने नूह की विश्व-व्यापी हलाकत से उन्हें बचा लिया और अपने प्यारे पैग़म्बर हज़रत नूह के साथ कश्ती पर चढ़ा लिया था। तुम्हें अपने बड़ों की तरह हमारी शुक्रगुज़ारी करनी चाहिये। देखो मैंने तुम्हारी तरफ़ अपने आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. को भेजा है। नक़ल है कि हज़रत नूह चूँकि खाते, पीते, पहनते ग़र्ज़ कि हर वक़्त ख़ुदा की हम्द व तारीफ़ बयान फ़रमाते रहते थे, इसलिये आपको शुक्रगुज़ार बन्दा कहा गया।

मुस्नद अहमद वग़ैरह में अल्लाह के रसूल सल्ल. का फ़रमान है कि अल्लाह तआ़ला अपने उस बन्दे से बहुत ही ख़ुश होता है जो निवाला खाये तो अल्लाह का शुक्र बजा लाये और पानी का घूँट पिये तो ख़ुदा का शुक्र अदा करे। यह भी रिवायत किया गया है कि आप हर हाल में ख़ुदा का शुक्र अदा करते रहिये। शफ़ाअ़त वाली लम्बी हदीस जो बुख़ारी वग़ैरह में है उसमें है कि जब लोग शफ़ाअ़त की तलब के लिये अल्लाह के नबी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पास आयेंगे तो उनसे कहेंगे कि ज़मीन वालों की तरफ़ आप ही पहले रसूल हैं, अल्लाह तआ़ला ने आपका नाम शुक्रगुज़ार बन्दा रखा है, आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश कीजिए.....।

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِى
الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِى الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ
وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ
اُوْلٰهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِىْ
بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ط
وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ
الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّ
بَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝ اِنْ
اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ قف وَاِنْ
اَسَاْتُمْ فَلَهَا ط فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ
لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا

और हमने बनी इस्राईल को किताब में (भविष्यवाणी के तौर पर यह बात) बतला दी थी कि तुम (मुल्क शाम की) सरज़मीन में दो बार ख़राबी करोगे, और बड़ा ज़ोर चलाने लगोगे। (4) फिर जब उन दो (बार) में से पहली (बार की शरारत की सज़ा) की मियाद आएगी हम तुम पर अपने ऐसे बन्दों को मुसल्लत करेंगे जो बड़े जंगजू होंगे, फिर वे तुम्हारे घरों में घुस पड़ेंगे (और तुमको क़त्ल करेंगे) और यह एक वायदा है जो ज़रूर होकर रहेगा। (5) फिर (जब तुम तौबा करोगे तो) उनपर तुम्हारा ग़लबा कर देंगे, और माल और बेटों से हम तुम्हारी मदद करेंगे, और हम तुम्हारी जमाअ़त को बढ़ा देंगे। (6) अगर अच्छे काम करते रहोगे तो अपने ही नफ़े के लिए अच्छे काम करोगे, और अगर (फिर) तुम बुरे काम करोगे तो भी अपने ही लिए, फिर जब पिछली (बार) की मियाद आएगी (हम फिर दूसरों को मुसल्लत करेंगे) ताकि (मार-मारकर) तुम्हारे मुँह बिगाड़ दें, और जिस तरह वे लोग

الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ٥ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ٥	पहली बार मस्जिद (बैतुल-मक्दिस) में घुसे थे ये (पिछले) लोग भी उसमें घुस पड़ें और जिस-जिसपर उनका ज़ोर चले सबको बरबाद कर डालें। (7) (और अगर आईन्दा इस्लाम का इत्तिबा करोगे तो) अजब नहीं कि तुम्हारा रब तुम पर रहम फ़रमाए, और अगर फिर वही (शरारत) करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे, और हमने जहन्नम को (ऐसे) काफ़िरों का जेलख़ाना बना (ही) रखा है। (8)

एक फ़ैसला और तक़दीरी मामलात

जो किताब बनी इस्राईल पर उतरी थी उसमें अल्लाह तआ़ला ने उन्हें पहले ही से ख़बर दे दी थी कि वे ज़मीन पर दो बार सरकशी करेंगे और सख़्त फ़साद बरपा करेंगे। पस यहाँ परः

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآئِيْلَ......

के मायने मुक़र्रर कर देने और पहले ही से ख़बर दे देने के हैं। जैसे आयतः

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ.

में यही मायने हैं। पस उनके पहले फ़साद (ख़राबी और बिगाड़ फैलाने) के वक़्त हमने अपनी मख़्लूक़ में से उन लोगों को उन पर मुसल्लत किया जो बड़े ही लड़ने वाले, बहादुर और साज़ व सामान से पूरे लैस थे। वे उन पर छा गये, उनके शहर छीन लिये, लूट-मार करके उनके घरों तक को ख़ाली करके बेख़ौफ़ व ख़तर वापस चले गये। ख़ुदा का वादा पूरा होना ही था। कहते हैं कि यह जालूत का लश्कर था। फिर अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल की मदद की और ये हज़रत तालूत की बादशाहत में फिर लड़े और हज़रत दाऊद ने जालूत को क़त्ल किया। यह भी कहा गया है कि मूसल का बादशाह सख़ारीब और उसके लश्कर ने उन पर फ़ौजी चढ़ाई की थी। बाज़ कहते हैं कि बाबिल का बादशाह बुख़्ते-नस्सर चढ़ आया था।

इब्ने अबी हातिम ने यहाँ एक अ़जीब व ग़रीब क़िस्सा नक़ल किया है कि किस तरह उस शख़्स ने धीरे-धीरे तरक़्क़ी की थी। पहले यह एक फ़क़ीर था, पड़ा रहता था और भीख माँगकर गुज़ारा करता था। फिर बाद में बैतुल-मुक़द्दस तक उसने फ़तह कर लिया था और वहाँ पर बनी इस्राईल को बिना रोक-टोक के क़त्ल किया। इब्ने जरीर ने इस आयत की तफ़सीर में एक लम्बी मरफ़ूअ़ हदीस बयान की है जो मन-गढ़त है और उसके गढ़ा हुआ होने में किसी को शक नहीं हो सकता। ताज्जुब है कि बावजूद इस क़द्र बड़ा आ़लिम होने के इमाम इब्ने जरीर साहिब ने यह हदीस नक़ल कर दी। हमारे उस्ताद शैख़ हाफ़िज़ अ़ल्लामा अबुल-हुज्जाज मुज़्ज़ी रह. ने इसके बेहक़ीक़त होने की वज़ाहत की है और किताब के हाशिये पर भी लिख दिया है। इस बारे में बनी इस्राईल की रिवायतें भी बहुत सी हैं लेकिन हम उन्हें ज़िक्र करके बेफ़ायदा अपनी किताब को बढ़ाना नहीं चाहते, क्योंकि उनमें से बाज़ तो बेहक़ीक़त और गढ़ी हुई हैं और बाज़ अगरचे ऐसी न हों लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह हमें उन रिवायतों की कोई ज़रूरत नहीं। किताबुल्लाह

Maktab E Ashraf

(क़ुरआन पाक) हमें और तमाम किताबों से बेनियाज़ कर देने वाली है, अल्लाह की किताब और उसके रसूल की हदीसों ने हमें इन चीज़ों का मोहताज नहीं रखा।

मतलब सिर्फ़ इस क़द्र है कि बनी इस्राईल की सरकशी के वक़्त अल्लाह ने उनके दुश्मन उन पर मुसल्लत कर दिये, जिन्होंने उन्हें ख़ूब मज़ा चखाया, बुरी दुर्गत बनाई, उनके बाल-बच्चों को क़त्ल किया, उन्हें इस क़द्र ज़लील किया कि उनके घरों तक में घुसकर उनका सर्वनाश किया और उनकी सरकशी की पूरी सज़ा दी। उन्होंने भी ज़ुल्म व ज़्यादती में कोई कसर नहीं रखी थी। अ़वाम तो अ़वाम उन्होंने तो नबियों तक को सताया, उलेमा को भरे बाज़ार में क़त्ल किया था। बुख़्ते नस्सर मुल्के शाम पर ग़ालिब आया, बैतुल-मुक़द्दस को वीरान कर दिया, वहाँ के रहने वालों को क़त्ल किया, फिर दमिश्क़ पहुँचा। यहाँ देखा कि एक सख़्त पत्थर पर ख़ून जोश मार रहा है। पूछा यह क्या है? लोगों ने कहा हमने तो इसे बाप-दादों के ज़माने से इसी तरह देखा है, यह ख़ून बराबर उबलता रहता है, ठहरता नहीं। उसने वहीं पर क़त्ले आ़म शुरू कर दिया। सत्तर हज़ार मुसलमान वग़ैरह उसके हाथों यहाँ क़त्ल हुए। पस वह ख़ून ठहर गया। उसने उलेमा, हाफ़िज़ों और तमाम शरीफ़ व सम्मानित लोगों को बेदर्दी से क़त्ल किया, उनमें कोई हाफ़िज़े तौरात न बचा। फिर बन्दी बनाना (क़ैद करना) शुरू किया। उन क़ैदियों में नबी की औलाद भी थे। ग़र्ज़ कि ज़बरदस्त हंगामा हुआ। लेकिन चूँकि सही रिवायतों से तफ़सीलात नहीं मिलतीं इसलिये हमने उन्हें छोड़ दिया है। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाता है कि नेकी करने वाला दर असल अपना ही भला करता है, और बुराई करने वाला हक़ीक़त में अपना ही बुरा करता है। जैसे इरशाद है:

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا.

जो शख़्स नेक काम करे वह उसके अपने लिये है, और जो बुराई करे उसका बोझ भी उसी पर है। फिर जब दूसरा वादा आया और फिर बनी इस्राईल ने ख़ुदा की नाफ़रमानियों पर खुले आ़म कमर कस ली, और बेबाकी व बेहयाई के साथ ज़ुल्म करने शुरू कर दिये तो फिर उनके दुश्मन चढ़ दौड़े ताकि उनकी शक्लें बिगाड़ दें और बैतुल-मुक़द्दस की मस्जिद जिस तरह पहले उन्होंने अपने क़ब्ज़े में कर ली थी अब फिर दोबारा कर लें, और जहाँ तक बन पड़े हर चीज़ को तबाह कर दें। चुनाँचे यह भी होकर रहा। तुम्हारा रब तो है ही रहम व करम करने वाला और उससे नाउम्मीदी हराम है। बहुत मुम्किन है कि फिर से दुश्मनों को पस्त (नीचा और ज़लील) कर दे। हाँ यह याद रहे कि इधर तुमने सर उठाया उधर हमने तुम्हारा सर कुचला। इधर तुमने फ़साद मचाया उधर हमने तुम्हें बरबाद कर दिया। यह तो हुई दुनियावी सज़ा, अभी आख़िरत की ज़बरदस्त और कभी ख़त्म न होने वाली सज़ा बाक़ी है। जहन्नम काफ़िरों का क़ैदख़ाना (बन्दीग्रह) है, जहाँ से न वे निकल सकेंगे न भाग सकेंगे। हमेशा के लिये उनका ओढ़ना बिछौना यही है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं फिर भी उन्होंने सर उठाया, पूरी तरह अल्लाह के फ़रमान को छोड़ा और मुसलमानों से भिड़ गये तो अल्लाह तआ़ला ने उम्मते मुहम्मदिया को उन पर ग़ालिब किया और उन्हें ज़लील होकर जिज़्या (मुस्लिम हुकूमत में रहने का टैक्स) देना पड़ा।

बेशक यह क़ुरआन ऐसे (तरीक़े) की हिदायत करता है जो बिल्कुल सीधा है (यानी इस्लाम) और उन ईमान वालों को जो कि नेक	اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

Maktaba E Ashraf

الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝ وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝	काम करते हैं (यह) ख़ुशख़बरी देता है कि उनको बड़ा भारी सवाब मिलेगा। (9) और (यह भी बतलाता है कि) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके लिए एक दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। (10)

ع

यह क़ुरआन बेहतरीन रहनुमा है

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी पाक किताब की तारीफ़ में फ़रमाता है कि यह क़ुरआन बेहतरीन राह की तरफ़ रहबरी करता है, ईमान वाले जो ईमान के मुताबिक़ हुज़ूर सल्ल. के फ़रमान पर भी अ़मल करें उन्हें यह बशारतें (ख़ुशख़बरियाँ) सुनाता है कि उनके लिये ख़ुदा के पास बहुत बड़ा अज्र है, उन्हें बेशुमार सवाब मिलेगा। और जो ईमान से ख़ाली हैं उन्हें यह क़ुरआन क़ियामत के दिन के दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर देता है। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ.

कि उन्हें दुखदायी अ़ज़ाब की ख़बर पहुँचा दे।

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ط وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝	और (बाज़ा) इनसान बुराई (यानी अ़ज़ाब) की ऐसी दरख़्वास्त करता है जिस तरह भलाई की दरख़्वास्त, और इनसान (कुछ तबई तौर पर ही) जल्दबाज़ (होता) है। (11)

इनसान का अ़जीब हाल है

यानी इनसान कभी-कभी मायूस, ग़मगीन और नाउम्मीद होकर अपनी सख़्त ग़लती से ख़ुद अपने लिये बुराई की दुआ़ माँगने लगता है, कभी अपने माल व औलाद के लिये बददुआ़ करने लगता है, कभी मौत की कभी हलाकत की, कभी बरबादी और लानत की। लेकिन उसका ख़ुदा उस पर ख़ुद उससे भी ज़्यादा मेहरबान है, इधर वह दुआ़ करे उधर वह क़बूल फ़रमा ले तो अभी हलाक हो जाये। हदीस में भी है कि अपनी जान व माल के लिये बददुआ़ न करो, ऐसा न हो कि किसी क़बूलियत की घड़ी में ऐसा कोई बुरा कलिमा ज़बान से निकल जाये। इसकी वजह सिर्फ़ इनसान की परेशानी व बेक़रारी की हालत और उसकी जल्दबाज़ी है।

"यह है ही जल्दबाज़" हज़रत सलमान फ़ारसी और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने इस मौक़े पर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ ज़िक्र किया है कि अभी पैरों तक रूह नहीं पहुँची थी कि आपने खड़े होने का इरादा किया। रूह सर की तरफ़ से आ रही थी, नाक तक पहुँची तो छींक आयी। आपने कहा अल्हम्दु लिल्लाह, तो अल्लाह ने फ़रमाया:

يَرْحَمُكَ رَبُّكَ يَاٰدَمُ.

Maktab E Ashraf

"ऐ आदम तुझ पर तेरा रब रहम करे"

जब आँखों तक पहुँची तो आँखें खोलकर देखने लगे। जब और नीचे के अंगों में पहुँची तो ख़ुशी से अपने आपको देखने लगे। अभी पैरों तक नहीं पहुँची थी कि चलने का इरादा किया, लेकिन न चल सके तो दुआ करने लगे कि ख़ुदाया रात से पहले रूह आ जाये।

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلاً مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلاً ○	और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया, सो रात की निशानी को तो हमने धुंधला बनाया और दिन की निशानी को हमने रोशन बनाया ताकि (दिन को) तुम अपने रब की रोज़ी तलाश करो और ताकि बरसों का शुमार और हिसाब मालूम कर लो। और हमने हर चीज़ को ख़ूब तफ़सील के साथ बयान किया है। (12)

दो निशानियाँ

अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुदरत की बड़ी-बड़ी निशानियों में से यहाँ दो का बयान फ़रमाता है कि दिन रात उसने अलग-अलग और भिन्न बनाये। रात आराम के लिये, दिन रोज़ी की तलाश के लिये, कि उसमें काम-काज करो, अपना हुनर व कारीगरी करो, सैर व सफ़र करो। रात दिन के अलग-अलग और भिन्न होने से दिनों की, जुमों की, महीनों की, बरसों की गिनती मालूम कर सको। ताकि लेन-देन में, मामलात में, क़र्ज़ में, मुद्दत में, इबादत के कामों में सहूलत और पहचान हो जाये। अगर एक ही वक़्त रहता तो बड़ी मुश्किल हो जाती, सच है अगर ख़ुदा चाहता तो हमेशा रात ही रात रखता कोई इतनी क़ुदरत नहीं रखता कि दिन कर दे, और अगर वह हमेशा दिन रखता तो किसकी मजाल थी कि रात ला दे। क़ुदरत की ये निशानियाँ सुनने देखने के क़ाबिल हैं। यह उसी की रहमत है कि रात सुकून के लिये बनाई और दिन रोज़ी कमाने के लिये। इन दोनों को एक दूसरे के पीछे लगातार आने वाले बनाये, ताकि शुक्र व नसीहत का इरादा रखने वाले कामयाब हो सकें। उसी के हाथ रात दिन का अलग-अलग करना है, वह रात का पर्दा दिन पर और दिन का लिफ़ाफ़ा रात पर चढ़ा देता है। सूरज चाँद उसी की मातहती में हैं, हर एक अपने निर्धारित वक़्त पर चल रहा है, वह ख़ुदा ग़ालिब और ग़फ़्फ़ार है, वह सुबह को ज़ाहिर करने वाला है, उसी ने रात को सुकून वाली बनाई है और सूरज चाँद को मुक़र्रर किया है। ख़ुदा तआ़ला का मुक़र्रर किया हुआ अन्दाज़ है। रात अपने अन्धेरे से चाँद के ज़ाहिर होने से पहचानी जाती है और दिन रोशनी और सूरज के चढ़ने से मालूम हो जाता है। सूरज चाँद दोनों ही रोशन और मुनव्वर हैं, लेकिन उनमें भी पूरा फ़र्क़ रखा कि हर एक पहचाना जा सके। सूरज को बहुत रोशन और चाँद को नूरानी उसी ने किया है। मन्ज़िलें उसी ने मुक़र्रर की हैं ताकि हिसाब और साल मालूम रहें। अल्लाह तआ़ला की यह पैदाईश (इन सब चीज़ों को बनाना) हक़ है।

क़ुरआन पाक में है कि लोग तुझसे चाँद के बारे में पूछते हैं। कह दे कि वह लोगों के लिये औक़ात

Maktab E Ashraf

(समय) हैं और हज के लिये भी....। रात का अन्धेरा हट जाता और दिन का उजाला आ जाता है। सूरज दिन की पहचान है, चाँद रात का निशान है। अल्लाह तआ़ला ने चाँद को कुछ स्याही वाला पैदा किया है पस रात की निशानी यह है कि चाँद को सूरज के मुक़ाबले में कुछ धूमिल कर दिया है, उसमें एक तरह का धब्बा रख दिया है। इब्नुल-कवा ने अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अ़ली रज़ि. से पूछा कि चाँद में यह झाँईं कैसी है? आपने फ़रमाया- इसी का बयान इस आयत में है कि हमने रात के निशान यानी चाँद में धुंधलका डाल दिया और दिन का निशान (यानी सूरज) ख़ूब रोशन है, या चाँद से ज़्यादा रोशन और चाँद से बहुत बड़ा है। दिन, रात को दो निशानियाँ मुक़र्रर कर दी हैं। पैदाईश (बनावट) ही उनकी इस तरह की है।

और हमने हर इनसान का अ़मल उसके गले का हार करके रखा है, और (फिर) क़ियामत के दिन हम उसका आमालनामा उसके वास्ते निकाल (कर सामने कर) देंगे, जिसको वह खुला हुआ देख लेगा। (13) अपना आमालनामा (ख़ुद) पढ़ ले, आज तू ख़ुद अपना आप ही हिसाब लेने वाला काफ़ी है। (14)	وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۝ اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝

आमाल का दफ़्तर

ऊपर की आयतों में ज़माने का ज़िक्र किया जिसमें इनसान के आमाल होते हैं। अब यहाँ फ़रमाता है कि उसका जो अ़मल होता है भला हो या बुरा, वह उस पर चिपक जाता है। नेकी का नेक बदला मिलेगा, बुराई का बुरा। चाहे वह कितनी ही कम मात्रा में क्यों न हो। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि ज़र्रा बराबर की ख़ैर (नेकी और भलाई) और इतनी ही शर (बुराई) हर शख़्स क़ियामत के दिन देख लेगा। और जैसे कि फ़रमान है कि दाहिनी और बायीं तरफ़ वे बैठे हुए हैं जो बात मुँह से निकले वह उसी वक़्त लिख लेते हैं। एक और जगह है:

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ. الخ.

कि तुम पर निगराँ हैं जो सम्मानित हैं और लिखने वाले हैं, तुम्हारे हर-हर फ़ेल (अ़मल और काम) से बाख़बर हैं।

एक और आयत में है कि तुम्हें सिर्फ़ तुम्हारे किये हुए आमाल का बदला मिलेगा। एक और जगह है कि हर बुराई करने वाले को सज़ा दी जायेगी। मक़सूद यह है कि इनसान के छोटे बड़े, छुपे खुले, नेक व बद आमाल सुबह व शाम दिन रात बराबर लिखे जा रहे हैं। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अलबत्ता हर इनसान की आमाल की शामत उसकी गर्दन में है। इब्ने लहीआ़ फ़रमाते हैं कि यहाँ तक कि शगुन लेना भी, लेकिन इस हदीस की यह वज़ाहत ग़रीब है। वल्लाहु आलम।

उसके आमाल के मजमूए की किताब क़ियामत के दिन या तो उसके दायें हाथ में दी जायेगी या बायें में। नेकों के दायें हाथ में और बुरों के बायें हाथ में खुली हुई होगी ताकि वह भी पढ़ ले और दूसरे भी देख लें। उसके तमाम उम्र के कुल आमाल उसमें लिखे हुए होंगे जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ ۢبِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ..... الخ.

उस दिन इनसान को उसके अगले-पिछले तमाम आमाल से ख़बरदार कर दिया जायेगा। इनसान तो अपने मामले में ख़ुद ही हुज्जत है चाहे वह अपनी बेगुनाही में कितने ही बहाने पेश कर दे। उस वक़्त उससे फ़रमाया जायेगा कि तू ख़ूब जानता है कि तुझ पर ज़ुल्म न किया जायेगा। इसमें वही लिखा गया है जो तूने किया है। उस वक़्त चूँकि भूली-बिसरी चीज़ें भी याद आ जायेंगी इसलिये दर हक़ीक़त कोई उज़्र पेश करने की गुंजाईश न रहेगी। फिर सामने किताब है जो पढ़ रहा है चाहे वह दुनिया में अनपढ़ ही था लेकिन आज हर शख़्स उसे पढ़ लेगा, गर्दन का ज़िक्र ख़ास तरीक़े पर इसलिये किया कि वह एक मख़्सूस हिस्सा है उसमें जो चीज़ लटका दी गयी वह चिपक गयी, ज़रूरी हो गयी। शायरों ने भी इस ख़्याल को ज़ाहिर किया है। रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि बीमारी का मुतादृदी (एक से दूसरे को लगने वाली) होना कोई चीज़ नहीं, फ़ाल (शगुन लेना, ग़ैब की बात मालूम करना) कोई चीज़ नहीं, हर इनसान का अ़मल उसके गले का हार है (यानी अ़मल इनसान के साथ चिपके हुए है)।

एक और रिवायत में है कि शगुन हर इनसान का उसके गले का हार है। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि हर दिन के अ़मल पर मोहर लग जाती है। जब मोमिन बीमार पड़ता है तो फ़रिश्ते कहते हैं ख़ुदाया तूने फ़ुलाँ को तो रोक लिया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है उसके जो अ़मल थे वे बराबर लिखते जाओ, यहाँ तक कि मैं उसे तन्दुरुस्त कर दूँ या मौत दे दूँ।

क़तादा रह. कहते हैं कि इस आयत में 'ताईर' से मुराद अ़मल है। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं ऐ इनसान! तेरी दायीं और बायीं तरफ़ फ़रिश्ते बैठे हैं, रजिस्टर खुले रखे हैं। दाहिनी जानिब वाला नेकियाँ और बायीं तरफ़ वाला बुराईयाँ लिख रहा है। अब तुझे इख़्तियार है ज़्यादा नेकी कर या ज़्यादा बुराई। तेरी मौत पर ये दफ़्तर (रजिस्टर) लपेट दिये जायेंगे और तेरी क़ब्र में तेरी गर्दन में लटका दिये जायेंगे। क़ियामत के दिन खुले हुए तेरे सामने पेश कर दिये जायेंगे और तुझसे कहा जायेगा ले अपना नामा-ए-आमाल ख़ुद पढ़ ले और तू ही हिसाब और इन्साफ़ कर ले। ख़ुदा की क़सम वह बड़ा ही आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) है जो तेरा मामला तेरे ही सुपुर्द कर रहा है।

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝	जो शख़्स (दुनिया में) राह पर चलता है वह अपने नफ़े के लिए राह पर चलता है, और जो शख़्स बेराही करता है सो वह भी अपने ही नुक़सान के लिए बेराह होता है। और कोई शख़्स किसी (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा। और हम (कभी) सज़ा नहीं देते जब तक किसी रसूल को नहीं भेज लेते। (15)

नफ़ा और नुक़सान

जिसने सही रास्ता इख़्तियार किया, हक़ की पैरवी की, नबी की बात मानी, यह उसके अपने ही हक़ में अच्छाई है। और जो हक़ से हटा, सही राह से फिरा, उसका वबाल उसी पर है। कोई किसी के गुनाह में

Maktab E Ashraf

पकड़ा न जायेगा। हर एक का अ़मल उसी के साथ है, कोई न होगा जो दूसरे का बोझ उठाये। क़ुरआन पाक में एक और जगह है:

وَلَيَحۡمِلُنَّ اَثۡقَالَهُمۡ وَاَثۡقَالًا مَّعَ اَثۡقَالِهِمۡ.

एक और आयत में है:

وَمِنۡ اَوۡزَارِ الَّذِيۡنَ يُضِلُّوۡنَهُمۡ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ.

यानी अपने बोझ के साथ ये उनके बोझ भी उठायें जिन्हें इन्होंने बहका रखा था। पस इन दोनों मज़मूनों में कोई टकराव न समझा जाये, इसलिये कि गुमराह करने वालों पर उनके गुमराह करने का बोझ है, न उनके बोझ हल्के किये जायेंगे और न उन पर दूसरों के बोझ लादे जायें। हमारा आ़दिल ख़ुदा ऐसा नहीं करता।

फिर अपनी एक और रहमत बयान फ़रमाता है कि वह रसूल के पहुँचने से पहले किसी उम्मत को अ़ज़ाब नहीं करता। चुनाँचे सूरः तबारकल्लज़ी में है कि जहन्नमियों से दरोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास डराने वाले नहीं आये थे? वे जवाब देंगे बेशक आये थे, लेकिन हमने उन्हें सच्चा न माना, उन्हें झुठलाया और साफ़ कह दिया कि तुम तो यूँही बहक रहे हो। यह बात ही क़तई तौर पर ग़ैर-मुम्किन है कि ख़ुदा किसी पर कुछ उतारे। इसी तरह जब ये लोग जहन्नम की तरफ़ खींचकर पहुँचाये जा रहे होंगे उस वक़्त भी जहन्नम के दरोग़ा इनसे पूछेंगे कि क्या तुममें से ही रसूल नहीं आये थे जो तुम्हारे रब की आयतें तुम्हारे सामने पढ़ते हों और तुम्हें इस दिन की मुलाक़ात से डराते हों? ये जवाब देंगे कि हाँ यक़ीनन आये लेकिन अ़ज़ाब का कलिमा काफ़िरों पर साबित हो गया।

एक और आयत में है कि काफ़िर जहन्नम में पड़े चीख़ रहे होंगे कि ख़ुदा अगर हमें इससे निकाल दे तो हम अपने पुराने करतूत छोड़कर अब नेक आमाल करेंगे, तो उनसे कहा जायेगा कि क्या मैंने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि अगर नसीहत हासिल करना चाहते तो कर सकते थे, और मैंने तुममें अपने रसूल भी भेजे थे जिन्होंने ख़ूब आगाह कर दिया था, अब तो अ़ज़ाब बरदाश्त करो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। ग़र्ज़ कि और भी बहुत सी आयतों से साबित है कि अल्लाह तआ़ला बग़ैर रसूल भेजे किसी को जहन्नम में नहीं भेजता। सही बुख़ारी में आयतः

اِنَّ رَحۡمَتَ اللّٰهِ قَرِيۡبٌ مِّنَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ.

की तफ़सीर में एक लम्बी हदीस मन्क़ूल है, जिसमें जन्नत दोज़ख़ का कलाम है। आगे है कि जन्नत के बारे में अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म न करेगा और वह जहन्नम के लिये एक नई मख़्लूक़ पैदा करेगा जो उसमें डाल दी जायेगी। वह कहती रहेगी कि क्या अभी और ज़्यादा है? इसके बारे में उलेमा की एक जमाअ़त ने बहुत कुछ कलाम किया है, दर असल यह जन्नत के बारे में है इसलिये कि वह मेहरबानी व करम की जगह है और जहन्नम इन्साफ़ व अ़दल का स्थान है, उसमें बग़ैर उ़ज़्र तोड़े, बग़ैर हुज्जत ज़ाहिर किये कोई दाख़िल न किया जायेगा। इसलिये हदीस के उलेमा की एक जमाअ़त का ख़्याल है कि रावी (हदीस नक़ल करने वाले) को इसमें उल्टा याद रह गया और इसकी दलील बुख़ारी व मुस्लिम की वह रिवायत है जिसमें इसी हदीस के आख़िर में है कि दोज़ख़ न भरेगी यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला उसमें अपना क़दम रख देगा। उस वक़्त वह कहेगी बस-बस, उस वक़्त भर जायेगी और चारों तरफ़ से सिमट

Maktaba Ashraf

जायेगी। ख़ुदा तआ़ला किसी पर ज़ुल्म न करेगा। हाँ जन्नत के लिये एक नई मख़्लूक़ पैदा करेगा।

(अल्लाह के इस अ़मल की कैफ़ियत को वही बेहतर जानता है, इसमें अ़क़्ली घोड़े दौड़ाना सही नहीं, उसकी शान बड़ी है, वह अपनी शान के मुताबिक़ अपने कामों को अन्जाम देता है, इसलिये ज़ाहिरे मज़मून पर ईमान लाये और अल्लाह तआ़ला के क़दम को अपने जैसा क़दम न समझे इसी में आ़फ़ियत है, खोज व तहक़ीक़ करना उलेमा का काम है, यह उनका मक़ाम है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**)

बाक़ी रहा यह मसला कि काफ़िरों के जो नाबालिग़ छोटे बच्चे छुटपन (बचपन की उम्र) में मर जाते हैं और जो दीवाने (बेअ़क़्ल और पागल) लोग हैं और बिल्कुल बहरे, और जो ऐसे ज़माने में गुज़रे हैं जिस वक़्त ज़मीन पर कोई रसूल या दीन की सही तालीम नहीं होती और उन्हें इस्लाम की दावत नहीं पहुँचती और जो बिल्कुल बूढ़े हो जाते और अपने हवास खो बैठते हों उनके लिये क्या हुक्म है? इस बारे में शुरू से इख़्तिलाफ़ (मतभेद) चला आ रहा है। उनके बारे में जो हदीसें हैं वे आपके सामने बयान करता हूँ फिर इमामों का कलाम भी ख़ुलासे के तौर पर ज़िक्र करूँगा। अल्लाह तआ़ला मदद करे।

पहली हदीस मुस्नद अहमद में है कि चार क़िस्म के लोग क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला से गुफ़्तगू करेंगे। एक तो बिल्कुल बहरा आदमी जो कुछ भी नहीं सुनता। दूसरा बिल्कुल अहमक़ पागल आदमी जो कुछ भी नहीं जानता। तीसरा बिल्कुल बूढ़ा आदमी जिसके हवास दुरुस्त नहीं। चौथे वे लोग जो ऐसे ज़मानों में गुज़रे हैं जिनमें कोई पैग़म्बर या उसकी तालीम मौजूद न थी। बहरा तो कहेगा कि इस्लाम आया लेकिन मेरे कान में कोई आवाज़ न पहुँची, दीवाना कहेगा कि इस्लाम आया लेकिन मेरी हालत तो यह थी कि बच्चे मुझ पर मैंगनियाँ फेंक रहे थे। और बिल्कुल बूढ़े बेहवास आदमी कहेंगे कि इस्लाम आया लेकिन मेरे होश व हवास ही दुरुस्त न थे जो मैं समझ सकता। रसूलों के ज़मानों का और उनकी तालीम को मौजूद न पाने वाले का क़ौल यह होगा कि न रसूल आये, न मैंने हक़ पाया, फिर मैं कैसे अ़मल करता? अल्लाह तआ़ला उनकी तरफ़ पैग़ाम भेजेगा कि अच्छा जाओ जहन्नम में कूद जाओ। ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर वे हुक्म मान लें और जहन्नम में कूद पड़ें तो जहन्नम की आग उन पर ठण्डक और सलामती हो जायेगी। एक और रिवायत में है कि जो कूद पड़ेंगे उन पर तो सलामती और ठण्डक हो जायेगी और जो रुकेंगे उन्हें हुक्म न मानने के सबब घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जायेगा।

इब्ने जरीर में इस हदीस के बयान के बाद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. का यह फ़रमान भी है कि अगर तुम चाहो तो इसकी तस्दीक़ में कलामुल्लाह की आयतः

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا..... الخ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है) पढ़ लो। दूसरी हदीस अबू दाऊद तियालिसी में है कि हमने हज़रत अनस रज़ि. से सवाल किया कि ऐ अबू हमज़ा! मुश्रिकों के बच्चों के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि वे (मुश्रिकों के बच्चे) गुनाहगार नहीं कि दोज़ख़ में अ़ज़ाब किये जायें, और नेक काम करने वाले नहीं कि जन्नत में बदला दिये जायें।

तीसरी हदीस अबू यअ़्ला में है कि इन चारों के उ़ज़्र सुनकर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि औरों के पास तो मैं अपने रसूल भेजता था लेकिन तुमसे मैं अब कहता हूँ जाओ इस जहन्नम में चले जाओ। जहन्नम में से भी अल्लाह के फ़रमान से एक गर्दन ऊँची होगी। इस फ़रमान को सुनते ही वे लोग जो नेक तबीयत वाले हैं फ़ौरन दौड़कर उसमें कूद पड़ेंगे। और जो बुरी तबीयत वाले हैं, वे कहेंगे अल्लाह पाक हम

Maktab E Ashraf

इसी से बचने के लिये तो यह उज़्र माज़िरत कर रहे थे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा जब तुम ख़ुद मेरी नहीं मानते तो मेरे रसूलों की क्या मानकर देते। अब तुम्हारे लिये फ़ैसला यही है कि तुम जहन्नमी हो। और उन फ़रमाँबरदारों से कहा जायेगा कि तुम बेशक जन्नती हो, तुमने इताअ़त कर ली। चौथी हदीस मुस्नद अबू यअ़ला मूसली में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से मुसलमानों की औलाद के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया वे अपने बाल-बच्चों के साथ हैं, फिर मुश्रिकों की औलाद के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया वे अपने बापों के साथ हैं। कहा गया या रसूलल्लाह! उन्होंने अ़मल तो नहीं किया? आपने फ़रमाया हाँ लेकिन अल्लाह तआ़ला उनको अच्छी तरह जानता है।

पाँचवीं हदीस अबू बक्र अहमद बिन अ़मर बिन अ़ब्दुल-ख़ालिक़ बज़्ज़ार रह. अपनी मुस्नद में रिवायत करते हैं कि क़ियामत के दिन जाहिलीयत (इस्लाम के आने से पहले के ज़माने) वाले अपने बोझ अपनी कमरों पर लादे हुए आयेंगे और अल्लाह के सामने उज़्र करेंगे कि न हमारे पास तेरे रसूल पहुँचे न हमें तेरा कोई हुक्म पहुँचा। अगर ऐसा होता तो हम दिल खोलकर मान लेते। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अच्छा अब अगर हुक्म करूँ तो मान लोगे? वे कहेंगे हाँ हाँ बेशक बिना कुछ कहे-सुने। अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमायेगा अच्छा जाओ जहन्नम के पास जाकर उसमें दाख़िल हो जाओ। ये चलेंगे यहाँ तक कि उसके पास पहुँच जायेंगे, अब जो उसका जोश, उसकी आवाज़ और उसके अ़ज़ाब देखें तो वापस आ जायेंगे और कहेंगे ख़ुदाया तू हमें उससे बचा ले। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा देखो तुम इक़रार कर चुके हो कि मेरा हुक्म मानोगे, फिर यह नाफ़रमानी क्यों? वे कहेंगे अच्छा अबकी बार मान लेंगे और कर गुज़रेंगे, चुनाँचे उनसे मज़बूत अ़हद व पैमान लिये जायेंगे फिर यही हुक्म होगा। ये जायेंगे और फिर ख़ौफ़ खाकर वापस लौटेंगे और कहेंगे ख़ुदाया! हम तो डर गये, हमसे तो इस फ़रमान पर अ़मल नहीं किया जाता। अब अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- तुम नाफ़रमानी कर चुके अब जाओ ज़िल्लत के साथ जहन्नमी बन जाओ।

आप (नबी पाक) फ़रमाते हैं कि अगर पहली बार ही ये अल्लाह के हुक्म से उसमें कूद जाते तो दोज़ख़ की आग उन पर ठंडी पड़ जाती और उनका एक रुवाँ (बदन का बाल) भी न जलाती। इमाम बज़्ज़ार रह. फ़रमाते हैं कि इस हदीस का मतन मारूफ़ नहीं। अय्यूब से सिर्फ़ इबाद ही रिवायत करते हैं और इबाद से सिर्फ़ रैहान बिन सईद ही रिवायत करते हैं। मैं कहता हूँ कि इसे इब्ने हिब्बान ने मोतबर बतलाया है। यहया बिन मईन और नसाई कहते हैं कि इनमें कोई डर ख़ौफ़ की बात नहीं। अबू दाऊद ने इनसे रिवायत नहीं की। अबू हातिम कहते हैं कि यह शैख़ हैं इनमें कोई हर्ज नहीं। इनकी हदीसें लिख ली जायें, अलबत्ता इनसे दलील नहीं ली जाती।

छठी हदीस इमाम मुहम्मद बिन यहया ज़ोहली की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- उस ज़माने के आदमी जिसमें कोई नबी मबऊस नहीं हुआ, यानी फ़त्रत के दौर के और मजनूँ और बच्चे ख़ुदा के सामने आयेंगे। एक कहेगा- मेरे पास तेरी किताब पहुँची ही नहीं। मजनूँ (पागल और अ़क़्ल से ख़ाली) कहेगा- मैं भलाई बुराई की तमीज़ ही नहीं रखता था। बच्चा कहेगा मैंने समझ का, बालिग़ होने का ज़माना पाया ही नहीं। उसी वक़्त उनके सामने आग शोले मारने लगेगी, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा इसे हटा दो, तो जो आगे चलकर नेकी करने वाले थे वे तो इताअ़त गुज़ारी कर लेंगे और जो इस उज़्र के हट जाने के बाद भी नाफ़रमानी करने वाले थे वे रुक जायेंगे, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा जब तुम डायरेक्ट मेरी ही नहीं मानते तो मेरे पैग़म्बरों की क्या मानकर देते?

सातवीं हदीस इन्हीं तीन शख़्सों के बारे में ऊपर वाली हदीसों की तरह है। उसमें यह भी है कि जब ये

जहन्नम के पास पहुँचेंगे तो उसमें ऐसे शोले बुलन्द होंगे कि ये समझ लेंगे कि यह तो सारी दुनिया को जलाकर भस्म कर देंगे। दौड़ते हुए वापस लौट आयेंगे, फिर दोबारा भी यही होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तुम्हारी पैदाईश से पहले ही तुम्हारे आमाल की मुझे ख़बर थी। मैंने इल्म होते हुए तुम्हें पैदा किया था। उसी इल्म के मुताबिक़ तुम हो। ऐ जहन्नम! इन्हें दबोच ले। चुनाँचे उसी वक़्त आग उन्हें लुक़्मा बना लेगी।

आठवीं हदीस हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की रिवायत उनके अपने क़ौल से पहले बयान हो चुकी है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में आप ही से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- हर बच्चा दीने इस्लाम पर पैदा होता है, फिर उसके माँ-बाप उसे यहूदी, ईसाई, मजूसी बना लेते हैं, जैसे कि बकरी के सही सालिम बच्चे के कान काट दिया करते हैं। लोगों ने कहा हुज़ूर! अगर वह बचपन में ही मर जाये तो? आपने फ़रमाया अल्लाह को उनके आमाल की सही और पूरी ख़बर थी।

मुस्नद की हदीस में है कि मुसलमान बच्चों की देखभाल जन्नत में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के सुपुर्द है। सही मुस्लिम में हदीसे क़ुदसी है कि मैंने अपने बन्दों को तौहीद वाला एक तरफ़ा ख़ालिस बनाया है। एक रिवायत में इसके साथ ही मुसलमान का लफ़्ज़ भी है।

नौवीं हदीस- हाफ़िज़ अबू बक्र यज़दानी अपनी किताब 'अल्-मुस्तख़्रज अ़लल्-बुख़ारी' में रिवायत लाये हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा किया जाता है। लोगों ने बुलन्द आवाज़ से दरियाफ़्त किया कि मुश्रिकों के बच्चे भी? आपने फ़रमाया मुश्रिकों के बच्चे भी। तबरानी की हदीस में है कि मुश्रिकों के बच्चे जन्नत वालों के ख़ादिम बनाये जायेंगे। दसवीं हदीस- मुस्नद अहमद में है कि एक सहाबी ने पूछा या रसूलल्लाह! जन्नत में कौन-कौन जायेंगे? आपने फ़रमाया- नबी, शहीद, बच्चे और ज़िन्दा दफ़न किये गये बच्चे। उलेमा में से बाज़ का मस्लक तो यह है कि उनके बारे में हम ख़ामोश हैं, उनकी दलील भी गुज़र चुकी। बाज़ कहते हैं कि ये जन्नती हैं, उनकी दलील मेराज वाली वह हदीस है जो सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ि. से रिवायत है कि आपने अपने उस ख़्वाब में एक शख़्स को एक जन्नती दरख़्त के नीचे देखा जिनके पास बहुत से बच्चे थे। सवाल पर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने बतलाया कि यह हज़रत इब्राहीम हैं और इनके पास ये बच्चे मुसलमानों और मुश्रिकों की औलाद हैं। लोगों ने कहा हुज़ूर! मुश्रिकों की औलाद भी? आपने फ़रमाया हाँ मुश्रिकों की औलाद भी।

बाज़ उलेमा फ़रमाते हैं ये दोज़ख़ी हैं, क्योंकि एक हदीस में है कि वे अपने बाप के साथ हैं। बाज़ उलेमा कहते हैं कि उनका इम्तिहान क़ियामत के मैदान में हो जायेगा, इताअ़त-गुज़ार जन्नत में जायेंगे, ख़ुदा अपने साबिक़ (पहले से मौजूद) इल्म का इज़्हार करके फिर उन्हें जन्नत में पहुँचायेगा, और बाज़ अपनी नाफ़रमानी की वजह से जो उस इम्तिहान के वक़्त उनसे ज़ाहिर होगी और ख़ुदा तआ़ला अपना पहले से मौजूद इल्म ज़ाहिर कर देगा उस वक़्त उन्हें जहन्नम का हुक्म होगा। इस मज़हब से तमाम हदीसों और मुख़्तलिफ़ दलीलों में जमा हो जाती है और पहले की हदीसें जो एक दूसरे को मज़बूती पहुँचाती हैं, इस मायने की अनेक हैं। शैख़ अबुल-हसन अ़ली बिन इस्माईल अश्अ़री रह. ने यही मज़हब अहले सुन्नत वल्-जमाअ़त का नक़ल फ़रमाया है और इसी की ताईद इमाम बैहक़ी रह. ने 'किताबुल-एतिक़ाद' में की है। और भी बहुत से मुहक़्क़िक़ीन उलेमा और हदीस के परखने वाले उलेमा ने यही फ़रमाया है। शैख़ अबू उमर ने इम्तिहान की बाज़ रिवायतें बयान करके लिखा है कि इस सिलसिले की हदीसें मज़बूत नहीं हैं और उनको दलील नहीं बनाया जा सकता, तथा उलेमा उनका इनकार करते हैं, इसलिये कि आख़िरत जज़ा और बदले

का घर है, अ़मल की जगह नहीं है, और न इम्तिहान का मक़ाम है, और जहन्नम में जाने का इल्म भी तो इनसानी ताक़त से बाहर का हुक्म है, और अल्लाह तआ़ला की यह आ़दत नहीं।

इमाम साहिब के इस क़ौल का जवाब भी सुन लीजिए। इस बारे में जो हदीसें हैं उनमें से बाज़ तो बिल्कुल सही हैं जैसे कि उलेमा और हदीस के इमामों ने स्पष्ट किया है। बाज़ हसन हैं, और बाज़ ज़ईफ़ (कमज़ोर) भी हैं लेकिन वे सही और हसन हदीसों के सबब क़वी (मज़बूत) हो जाती हैं। और जब यह है तो ज़ाहिर है कि ये हदीसें हुज्जत व दलील के क़ाबिल हो गयीं। अब रहा इमाम साहिब का यह इरशाद कि आख़िरत अ़मल और इम्तिहान की जगह नहीं, वह जज़ा और बदले की जगह है, यह बेशक सही है, लेकिन इससे इसकी नफ़ी (इनकार) कैसे हो गयी कि क़ियामत के मुख़्तलिफ़ मैदानों की पेशियों में जन्नत दोज़ख़ में दाख़िल होने से पहले कोई हुक्म अहकाम न दिये जायेंगे। शैख़ अबुल-हसन अश्अ़री रह. ने तो अहले सुन्नत वल-जमाअ़त के मज़हब में अ़क़ायद में बच्चों के इम्तिहान को दाख़िल किया है, इसके अतिरिक्त क़ुरआन पाक की आयतः

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ.

(कि जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी) इसकी खुली दलील है कि मुनाफ़िक़ व मोमिन का फ़र्क़ ज़ाहिर करने के लिये पिंडली खोल दी जायेगी और सज्दे का हुक्म होगा। 'सिहाह' की हदीसों में है कि मोमिन तो सज्दा कर लेंगे और मुनाफ़िक़ उल्टे मुँह के बल गिर पड़ेंगे। सहीहैन में उस शख़्स का क़िस्सा भी है जो सबसे आख़िर में जहन्नम से निकलेगा कि वह अल्लाह से वादा करेगा कि और कुछ सवाल न करेगा सिवाय इस सवाल के, इसके पूरा होने के बाद वह अपने क़ौल व क़रार से फिर जायेगा और एक और सवाल कर बैठेगा, वग़ैरह। आख़िर में अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ इनसान! तू बड़ा ही वादे को तोड़ने वाला है, अच्छा जा जन्नत में चला जा। फिर इमाम साहिब का यह फ़रमाना कि उन्हें उनकी ताक़त से बाहर की बात का यानी जहन्नम में कूद पड़ने का हुक्म कैसे होगा? ख़ुदा तआ़ला किसी को उसकी हिम्मत व ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ (हुक्म और ज़िम्मेदारी) नहीं देता। यह भी हदीस के सही होने में कोई बड़ी बाधा नहीं है। ख़ुद इमाम साहिब और तमाम मुसलमान मानते हैं कि पुलसिरात पर से गुज़रने का हुक्म सबको होगा, जो जहन्नम के ऊपर होगा, तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक होगा। मोमिन उस पर से अपनी नेकियों के हिसाब से गुज़र जायेंगे। बाज़ बिजली की तरह, बाज़ हवा की तरह, बाज़ घोड़ों की तरह, बाज़ ऊँटों की तरह, बाज़ भागने वालों की तरह, बाज़ पैदल चलने वालों की तरह, बाज़ घुटनों के बल सरक-सरक कर, बाज़ कट-कटकर जहन्नम में गिर पड़ेंगे। पस जब यह चीज़ वहाँ है तो उन्हें जहन्नम में कूद पड़ने का हुक्म तो इससे कोई बड़ा नहीं, बल्कि यह उससे बड़ा और बहुत भारी है।

और सुनिये एक हदीस में है कि दज्जाल के साथ आग और बाग़ होगा। नबी करीम अ़लैहिस्सलाम ने मोमिनों को हुक्म दिया है कि वे जिसे आग देख रहे हैं उसमें उनके लिये ठंडक और सलामती की चीज़ है। पस यह साफ़ नज़ीर है इस वाक़िए की। और लीजिए बनी इस्राईल ने जब गौसाला परस्ती की (यानी बछड़े को पूजना शुरू किया) इसकी सज़ा में ख़ुदा ने हुक्म दिया कि वे आपस में एक दूसरे को क़त्ल करें। एक बादल ने आकर उन्हें ढाँप लिया। अब जो तलवार चली तो सुबह ही सुबह बादल फटने से पहले उनमें से सत्तर हज़ार आदमी क़त्ल हो चुके थे, बेटे ने बाप को और बाप ने बेटे को क़त्ल किया। क्या यह हुक्म इस हुक्म से कम था? क्या इसका अ़मल नफ़्स पर भारी नहीं? फिर तो इसके बारे में भी कह देना चाहिये था

कि ख़ुदा किसी नफ़्स को उसकी बरदाश्त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता। इन तमाम बहसों के साफ़ होने के बाद अब सुनिये! मुश्रिकों के बचपन में मरे हुए बच्चों के बारे में भी बहुत से अक्वाल हैं, एक यह कि ये सब जन्नती हैं, उनकी दलील वही मेराज में हज़रत इब्राहीम के पास मुश्रिकों और मुसलमानों के बच्चों को हुज़ूर पाक सल्ल. का देखना है। एक और दलील उनकी मुस्नद की वह रिवायत है जो पहले गुज़र चुकी कि आपने फ़रमाया- बच्चे जन्नत में हैं। हाँ इम्तिहान होने की जो हदीसें गुज़रीं वे उनमें से मख़्सूस (विशेष) हैं। पस जिनके बारे में रब्बुल-आ़लमीन को मालूम है कि वे हुक्म मानने वाले और फ़रमाँबरदार हैं, उनकी रूहें आ़लमे बर्ज़ख़ में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास हैं और मुसलमानों के बच्चों की रूहें भी। और जिनके बारे में ख़ुदा तआ़ला जानता है कि वे हक़ को क़बूल करने वाली नहीं, उनका मामला अल्लाह के सुपुर्द है। वे क़ियामत के दिन जहन्नमी होंगे जैसे कि इम्तिहान वाली हदीसों से ज़ाहिर है। इमाम अश्अ़री रह. ने इसे अहले सुन्नत से नक़ल किया है। अब कोई तो कहता है कि ये मुस्तक़िल तौर पर जन्नती हैं। कोई कहता है कि ये जन्नत वालों के ख़ादिम हैं, अगरचे ऐसी हदीस अबू दाऊद तियालिसी में है लेकिन उसकी सनद कमज़ोर है। वल्लाहु आलम।

दूसरा क़ौल यह है कि मुश्रिकों के बच्चे भी अपने बाप-दादों के साथ जहन्नम में जायेंगे जैसे कि मुस्नद वग़ैरह की हदीस में है कि वे अपने बाप-दादों के ताबे, तहत और हुक्म में हैं। यह सुनकर हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा भी कि बावजूद बेअ़मल होने के? आपने फ़रमाया वे जो अ़मल करने वाले थे उसे ख़ुदा तआ़ला बख़ूबी जानता है। अबू दाऊद में है, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से मुसलमानों की औलाद के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया- वे अपने बाप-दादों के साथ हैं। मैंने कहा और मुश्रिकों की औलाद? आपने फ़रमाया वे अपने बाप-दादों के साथ हैं। मैंने कहा बग़ैर इसके कि उन्होंने कोई अ़मल किया हो? आपने फ़रमाया वे क्या करते यह अल्लाह तआ़ला के इल्म में है। मुस्नद की हदीस में है कि आपने फ़रमाया- अगर तू चाहे तो मैं उनका रोना पीटना, चीख़ना चिल्लाना भी तुझे सुना दूँ। इमाम अहमद रह. के बेटे एक रिवायत नक़ल करते हैं कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने रसूले ख़ुदा सल्ल. से अपने उन दो बच्चों के बारे में सवाल किया जो जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के ज़माने में मर गये थे। आपने फ़रमाया वे दोनों दोज़ख़ में हैं। जब आपने देखा कि इस बात से उनके दिल को रंज हुआ तो आपने फ़रमाया अगर तुम उनकी जगह देख लेतीं तो तुम ख़ुद उनसे बेज़ार हो जातीं।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा अच्छा जो बच्चा आपसे हुआ था? आपने फ़रमाया सुनो! मोमिन और उनकी औलाद जन्नती हैं, और मुश्रिक और उनकी औलाद जहन्नमी। फिर आपने यह आयत पढ़ीः

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ.

जो लोग ईमान लाये और उनकी औलादों ने ईमान के साथ उनकी पैरवी की, हम उनकी औलाद उन्हीं के साथ मिला देंगे।

यह हदीस ग़रीब है, इसकी सनद में मुहम्मद बिन उस्मान रावी ऐसे हैं जिनके हालात मालूम नहीं, और उनके शैख़ ज़ादान ने हज़रत अ़ली को नहीं पाया। वल्लाहु आलम।

अबू दाऊद में हदीस है कि ज़िन्दा दफ़न की जाने वाली और ज़िन्दा दफ़नाये गये बच्चे दोज़ख़ी हैं (यहाँ बात यह चल रही है कि बच्चे अपने बाप-दादों के हुक्म में हैं)। अबू दाऊद में हसन सनद से मौजूद है कि हज़रत सलमा बिन क़ैस अश्जई रज़ि. फ़रमाते हैं- मैं अपने भाई को लिये हुए रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत

में हाज़िर हुआ और कहा कि हुज़ूर! हमारी माँ जहिलीयत (इस्लाम आने से पहले) के ज़माने में मर गयी है वह सिला-रहमी करने वाली और मेहमान-नवाज़ थीं। हमारी एक नाबालिग़ बहन को उन्होंने ज़िन्दा दफ़न कर दिया था। आप सल्ल. ने फ़रमाया ऐसा करने वाली और जिसके साथ ऐसा किया गया है दोनों दोज़ख़ी हैं, यह और बात है कि वह इस्लाम को पा ले और उसे क़बूल कर ले।

तीसरा क़ौल यह है कि उनके बारे में कुछ राय ज़ाहिर न की जाये, कोई फ़ैसलाकुन (निश्चित) बात एक तरफ़ा न कहनी चाहिये, उनका एतिमाद आप सल्ल. के इस फ़रमान पर है कि उनके आमाल का सही और पूरा इल्म अल्लाह तआ़ला को है। बुख़ारी में है कि मुश्रिकों की औलाद के बारे में जब आप सल्ल. से सवाल हुआ तो आपने इन्हीं लफ़्ज़ों में जवाब दिया था। बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि ये "आराफ़" (जन्नत और दोज़ख़ के बीच एक स्थान) में रखे जायेंगे। इस क़ौल का भी नतीजा यही है कि ये जन्नती हैं, इसलिये कि आराफ़ कोई रहने सहने की जगह नहीं, यहाँ वाले आख़िरकार जन्नत में ही जायेंगे, जैसा कि सूरः आराफ़ की तफ़सीर में हम इसकी तक़रीर कर आये हैं। वल्लाहु आलम।

यह तो था मतभेद मुश्रिकों की औलाद के बारे में, लेकिन मोमिनों की नाबालिग़ औलाद के बारे में तो उलेमा का बिना किसी मतभेद के यही क़ौल है कि वे जन्नती हैं, जैसा कि हज़रत इमाम अहमद का क़ौल है और यही लोगों में मशहूर भी है, और इन्शा-अल्लाह हमें भी यही उम्मीद है। लेकिन बाज़ उलेमा से मन्क़ूल है कि वे उनके बारे में कोई राय ज़ाहिर करने से ख़ामोश रहते हैं और कहते हैं कि सब बच्चे ख़ुदा की मर्ज़ी और उसकी रज़ा के मातहत हैं, फ़ुक़हा (दीनी मसाईल के उलेमा) और मुहद्दिसीन (हदीस के उलेमा) की एक जमाअ़त इस तरफ़ भी गयी है। मुवत्ता इमाम मालिक की 'अबवाबुल-क़द्र' की हदीसों में भी कुछ इसी जैसा है। अगरचे इमाम मालिक का कोई फ़ैसला उसमें नहीं है, लेकिन बाज़ बाद के उलेमा का क़ौल है कि मुसलमान बच्चे तो जन्नती हैं और मुश्रिकों के बच्चे अल्लाह की मशीयत व मर्ज़ी के मातहत हैं। इब्ने अ़ब्दुल-बर्र ने इस बात को इसी वज़ाहत से बयान किया है, लेकिन यह क़ौल ग़रीब है। 'किताबुत्तज़किरा' में इमाम क़ुतबी रह. ने भी यही फ़रमाया है। वल्लाहु आलम।

इस बारे में उन बुज़ुर्गों ने एक हदीस भी ज़िक्र की है कि अन्सारियों के एक बच्चे के जनाज़े में हुज़ूर सल्ल. को बुलाया गया तो उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया- इस बच्चे को मर्हबा हो, यह तो जन्नत की चिड़िया है, न बुराई का कोई काम किया न उस ज़माने को पहुँचा, तो आप सल्ल. ने फ़रमाया इसके सिवा कुछ और भी। ऐ आ़यशा सुनो! अल्लाह तबारक व तआ़ला ने जन्नत और जन्नतियों को मुक़र्रर कर दिया है, हालाँकि वे अपने बाप की पीठ में थे। इसी तरह उसने जहन्नम को पैदा किया और उसमें जलने वाले पैदा किये हैं हालाँकि वे अभी अपने बापों की पीठों में हैं। मुस्लिम और सुनन की यह हदीस है। चूँकि यह मसला सही दलील के बग़ैर साबित नहीं हो सकता और लोग अपनी बेइल्मी के कारण और शरीअ़त के किसी सुबूत के बग़ैर इसमें कलाम करने लगे हैं इसलिये उलेमा की एक जमाअ़त ने इसमें कलाम करना ही नापसन्द रखा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास, क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बक्र सिद्दीक़ और मुहम्मद बिन हनफ़िया वग़ैरह का मज़हब यही है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने तो मिम्बर पर ख़ुतबे में फ़रमाया था कि हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है- इस उम्मत का काम ठीक-ठाक रहेगा जब तक कि ये बच्चों के बारे में और तक़दीर के बारे में कुछ कलाम न करेंगे। (इब्ने हिब्बान) इमाम इब्ने हिब्बान कहते हैं कि इससे मुश्रिकों के बच्चों के बारे में कलाम न करना मुराद है, दूसरी किताबों में यह रिवायत हज़रत अ़ब्दुल्लाह के अपने क़ौल से मौक़ूफ़न मौजूद है।

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ○	और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके ख़ुशहाल लोगों को हुक्म देते हैं, फिर (जब) वे लोग वहाँ शरारत मचाते हैं तो उनपर हुज्जत पूरी हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को तबाह और ग़ारत कर डालते हैं। (16)

Maktab E Ashraf

अ़य्याशी दुनिया की तबाही की निशानी

मशहूर क़िराअत "अमृरना" है, इस अमृर से मुराद तक़दीरी अमृर है, जैसे एक और आयत में है:

اَتٰـهَا اَمْرُنَا.

यानी वहाँ हमारा मुक़र्रर किया हुआ 'अमृर' आ जाता है, रात को या दिन को। याद रहे कि अल्लाह बुराईयों का हुक्म नहीं करता। मतलब यह है कि वे ग़लत और बुरे कामों में मुब्तला हो जाते और इस वजह से अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हो जाते हैं। यह भी मायने किये गये हैं कि हम उन्हें अपनी इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) के अहकाम करते हैं वे बुराईयों में लग जाते हैं। फिर हमारा सज़ा का क़ौल उन पर सही साबित हो जाता है। जिनकी क़िराअत "अमर्रना" है वे कहते हैं कि मतलब यह है कि हम बदकारों को वहाँ के सरदार (बड़े लोग) बना देते हैं, वे वहाँ ख़ुदा की नाफ़रमानियाँ करने लगते हैं, यहाँ तक कि अ़ज़ाबे ख़ुदा उन्हें उस बस्ती समेत तहस-नहस कर देता है। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا..... الخ.

हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े मुजरिम रखे हैं।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- यानी हम उनके दुश्मन बढ़ा देते हैं, वहाँ सरकशों की ज़्यादती (अधिकता) कर देते हैं। मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि बेहतर माल वह जानवर है जो ज़्यादा बच्चे देने वाला हो, या वह रास्ता है जो खजूर के दरख़्तों से पटा हुआ हो। बाज़ कहते हैं कि यह तनासुब (दो चीज़ों के दरमियान एक ताल्लुक़) है जैसे कि आपका क़ौल है 'गुनाह वालियाँ न कि अज्र पाने वालियाँ'।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ بَصِيْرًا ○	और नूह के बाद हमने बहुत-सी उम्मतों को (कुफ़्र व नाफ़रमानी के सबब) हलाक किया है। और आपका रब अपने बन्दों के गुनाहों को जानने वाला, देखने वाला काफ़ी है। (17)

पहली उम्मतों की तबाही

ऐ क़ुरैश के लोगो! होश संभालो, मेरे इस सम्मानित रसूल को झुठलाकर बेख़ौफ़ न हो जाओ। अपने से पहले नूह अ़लैहिस्सलाम के बाद के लोगों को देखो कि रसूलों को झुठलाने ने उनका नाम व निशान मिटा दिया। इससे यह भी मालूम होता है कि नूह से पहले के हज़रत आदम तक के लोग दीने इस्लाम पर थे।

Mahtab E Ashraf

पस ऐ क़ुरैशियो! तुम उनसे ज़्यादा साज़ व सामान और संख्या व ताक़त वाले नहीं हो, इसके बावजूद तुम तमाम नबी व रसूलों के सरदार और सबसे अफ़ज़ल रसूल को झुठला रहे हो, पस तुम अ़ज़ाबों और सज़ाओं के ज़्यादा हक़दार हो। अल्लाह तआ़ला पर अपने किसी बन्दे का कोई अ़मल छुपा नहीं। ख़ैर व शर सब उस पर ज़ाहिर है, खुला छुपा वह सब जानता है। हर अ़मल को ख़ुद देख रहा है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ○ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ○	जो शख़्स दुनिया (के नफ़े) की नीयत रखेगा, हम ऐसे शख़्स को दुनिया में जितना चाहेंगे (और) जिसके वास्ते चाहेंगे फ़िलहाल ही दे देंगे, फिर हम उसके लिए जहन्नम तजवीज़ करेंगे, वह उसमें बदहाल (बारगाह से) निकाला हुआ होकर दाख़िल होगा। (18) और जो शख़्स आख़िरत (के सवाब) की नीयत रखेगा और उसके लिए जैसी कोशिश करना चाहिए वैसी ही कोशिश भी करेगा, शर्त यह है कि वह शख़्स मोमिन भी हो, सो ऐसे लोगों की यह कोशिश मक़बूल होगी। (19)

दुनिया की लज़्ज़तें या आख़िरत की नेमतें

कुछ ज़रूरी नहीं कि दुनिया के इच्छुक की हर-हर तमन्ना पूरी ही हो, जिसकी तमन्ना ख़ुद पूरी करनी चाहे कर दे, लेकिन हाँ ऐसे लोग आख़िरत में ख़ाली हाथ रह जायेंगे। ये तो वहाँ जहन्नम के गड्ढे में गिरे हुए होंगे, बहुत ही बुरे हालों, ज़िल्लत व ख़्वारी में होंगे, क्योंकि यहाँ उन्होंने यही कहा था, फ़ानी को बाक़ी पर दुनिया को आख़िरत पर तरजीह दी थी, इसलिये वहाँ अल्लाह की रहमत से दूर हैं। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में घर न हो, यह उसका माल है जिसका आख़िरत में माल न हो। इसे वही जमा करता रहता है जिसके पास अपनी अ़क़्ल न हो। हाँ जो आख़िरत की दुनिया के दीदार का तालिब हो जाये और सही तरीक़े से आख़िरत में काम आने वाली नेकियाँ सुन्नत के मुताबिक़ करता रहे और उसके दिल में भी ईमान, तस्दीक़ और यक़ीन हो, अ़ज़ाब व सवाब के वादे सही जानता हो, ख़ुदा और रसूल को जानता हो, उनकी कोशिश क़द्रदानी से देखी जायेगी। नेक बदला मिलेगा।

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ○ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۭ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ○	आपके परवर्दिगार की (इस दुनियावी) अ़ता में से तो हम इनकी भी इमदाद करते हैं और उनकी भी, और आपके रब की (यह दुनियावी) अ़ता (किसी पर) बन्द नहीं। (20) आप देख लीजिए हमने एक को दूसरे पर किस तरह बरतरी दी है, और अलबत्ता आख़िरत दर्जों के एतिबार से भी बहुत बड़ी है और फ़ज़ीलत के एतिबार से भी बहुत बड़ी है। (21)

Maktab E Ashraf

आख़िरत के जहान के क्या कहने

यानी इन दोनों क़िस्म के लोगों को, एक वे जिनका मतलब सिर्फ़ दुनिया है, दूसरे वे जो आख़िरत के तालिब हैं, दोनों क़िस्म के लोगों को हम बढ़ाते रहते हैं। जिसमें भी वे हैं यह तेरे रब की अ़ता है। वह ऐसा है जो हर चीज़ का मुख़्तार और हाकिम है जो कभी ज़ुल्म नहीं करता। नेकबख़्ती के हक़दार को नेकबख़्ती और बदबख़्ती के हक़दार को बदबख़्ती दे देता है। उसके अहकाम कोई रद्द नहीं कर सकता। उसके रोकते हुए कोई दे नहीं सकता। उसके इरादों को कोई टाल नहीं सकता। तेरे रब की नेमतें आ़म हैं, न किसी के रोके रुकें न किसी के हटाये हटें, वे न कम होती हैं न घटती हैं।

देख लो कि हमने दुनिया में इनसानों के मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) दर्जे रखे हैं, उनमें अमीर भी हैं फ़क़ीर भी हैं और दरमियानी हालत के भी। अच्छे भी हैं बुरे भी और दरमियानी दर्जे के भी। कोई बचपन में मरता है कोई बड़ा बूढ़ा होकर, कोई इसके दरमियान। आख़िरत दर्जों के एतिबार से दुनिया से भी बढ़ी हुई है। कुछ तो जहन्नम के गड्ढ़ों में होंगे, तौक़ व ज़न्जीर पहने हुए। कुछ जन्नत के दर्जों में होंगे, बुलन्द बालाख़ानों में, नेमत व राहत और सुरूर व ख़ुशी में। फिर ख़ुद जन्नतियों में भी दर्जों का फ़र्क़ होगा। एक-एक दर्जे में ज़मीन व आसमान का-सा फ़र्क़ होगा। जन्नत में ऐसे एक सौ दर्जे हैं। बुलन्द दर्जों वाले इल्लिय्यीन वालों को इस तरह देखेंगे जैसे तुम किसी चमकते सितारे को आसमान की ऊँचाई पर देखते हो। पस आख़िरत दर्जों और फ़ज़ीलत के एतिबार से बहुत बड़ी है। तबरानी में है कि जो बन्दा दुनिया में जो दर्जा बढ़ना चाहेगा और अपनी तमन्ना में कामयाब हो जायेगा वह आख़िरत का दर्जा घटा देगा, जो इससे बहुत बड़ा है। फिर हुज़ूर सल्ल. ने यही आयत पढ़ी।

अल्लाह (बर्हक़) के साथ कोई और माबूद मत तजवीज़ कर (यानी शिर्क मत कर) वरना तू बदहाल बेमददगार होकर बैठ रहेगा। (22)	لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ۝

ع ۲

शिर्क मत करो

यह ख़िताब हर एक मुकल्लफ़ (जिस पर शरीअ़त के अहकाम लागू हैं) से है। आप सल्ल. की तमाम उम्मत को अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करो, अगर ऐसा करोगे तो ज़लील हो जाओगे, अल्लाह की मदद हट जायेगी। जिसकी इबादत करोगे उसी के सुपुर्द कर दिये जाओगे। और यह ज़ाहिर है कि ख़ुदा के सिवा कोई नफ़े नुक़सान का मालिक नहीं, वह वाहिद व ला शरीक है। मुस्नद अहमद में रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जिसे फ़ाक़ा (तंगदस्ती) पहुँचे और वह उसे लोगों से बन्द करना चाहे (यानी यह चाहे कि अपनी ज़रूरत दूसरों के सामने बयान करके अपनी इस ग़ुर्बत को दूर कर लूँ) तो उसका फ़ाक़ा बन्द न होगा, और जो अल्लाह तआ़ला से इसके बारे में दुआ़ करे अल्लाह उसके पास मालदारी और ख़ुशहाली भेज देगा, या तो जल्दी या देर से। यह हदीस अबू दाऊद व तिर्मिज़ी में है, इसे हसन सही ग़रीब बतलाते हैं।

Maktab E Ashraf

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝	और तेरे रब ने हुक्म कर दिया है कि सिवाय उसके किसी और की इबादत मत करो, और तुम (अपने) माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया करो, अगर तेरे पास उनमें से एक या दोनों के दोनों बुढ़ापे में पहुँच जाएँ तो उनको कभी (हाँ से) हूँ भी मत करना और न उनको झिड़कना, और उनसे ख़ूब अदब से बात करना। (23) और उनके सामने नर्मी से इन्किसारी के साथ झुके रहना, और (यूँ) दुआ करते रहना कि मेरे परवर्दिगार! इन दोनों पर रहमत फ़रमाईए जैसा कि इन्होंने मुझको बचपन में पाला, परवरिश किया है। (24)

कुछ और अहकाम

यहाँ "क़ज़ा" हुक्म फ़रमाने के मायने में है। अल्लाह तआला का ताकीदी हुक्म जो कभी टलने वाला नहीं यही है कि इबादत अल्लाह ही की हो और माँ-बाप की इताअ़त में ज़रा सी भी कोताही न हो। उबई बिन कअ़ब, इब्ने मसऊद और ज़ह्हाक बिन मुज़ाहिम की क़िराअत में "क़ज़ा" के बदले "वस्सा" है, यह दोनों हुक्म एक साथ जैसे यहाँ हैं ऐसे ही और भी बहुत सी आयतों में हैं, जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

اَنِ اشْكُرْلِيْ وَلِوَالِدَيْكَ.......الخ

मेरा शुक्र कर और अपने माँ-बाप का भी एहसान मानने वाला रह। ख़ुसूसन उनके बुढ़ापे के ज़माने में उनका पूरा अदब करना, कोई बुरी बात ज़बान से न निकालना, यहाँ तक कि उनके सामने "हूँ" भी न करना, न कोई ऐसा काम करना जो उन्हें बुरा मालूम हो। अपना हाथ उनकी तरफ़ बेअदबी से न बढ़ाना बल्कि अदब, इज़्ज़त और एहतिराम के साथ उनसे बातचीत करना, नर्मी और तहज़ीब से गुफ़्तगू करना, उनकी रज़ामन्दी के काम करना, दुख न देना, सताना नहीं, उनके सामने तवाज़ो आजिज़ी विनम्रता और ख़ाकसारी से रहना। उनके लिये उनके बुढ़ापे में उनके इन्तिक़ाल के बाद दुआयें करते रहना, ख़ुसूसन यह दुआ कि ख़ुदाया उन पर रहम कर जैसे रहम से उन्होंने मेरे बचपन के ज़माने में मेरी परवरिश की। हाँ ईमान वालों को काफ़िरों के लिये दुआ करनी मना हो गयी है अगरचे वे माँ-बाप ही क्यों न हों।

माँ-बाप से अच्छा सुलूक और एहसान का मामला करने की हदीसें बहुत सी हैं। एक रिवायत में है कि आपने मिम्बर पर चढ़ते हुए तीन दफ़ा आमीन कही, जब आपसे वजह दरियाफ़्त की गयी तो आपने फ़रमाया मेरे पास जिब्राईल आये और कहा ऐ नबी! उस शख़्स की नाक मिट्टी से भर जाये (अ़रब में यह एक बद्दुआ का मुहावरा है) जिसके पास तेरा ज़िक्र हो और उसने तुझ पर दुरूद न पढ़ी हो, कहिये आमीन! चुनाँचे मैंने आमीन कही। फिर फ़रमाया उस शख़्स की नाक भी ख़ुदा तआ़ला मिट्टी से भर दे जिसकी ज़िन्दगी में रमज़ान का महीना आया और चला भी गया और उस शख़्स की बख़्शिश न हुई। आमीन

Maktaba Ashraf

कहिये, चुनाँचे मैंने इस पर भी आमीन कही। फिर फ़रमाया ख़ुदा उसे भी बरबाद करे जिसने अपने माँ-बाप को या उनमें से एक को पा लिया और फिर भी उनकी ख़िदमत करके जन्नत में न पहुँच सका, कहिये आमीन! मैंने कहा आमीन।

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि जिसने किसी मुसलमान माँ-बाप के यतीम बच्चों को पाला और खिलाया पिलाया, यहाँ तक कि वह बेनियाज़ हो गया (यानी उसे किसी की मदद और सहारे की ज़रूरत न रही) उसके लिये यक़ीनन जन्नत वाजिब है, और जिसने किसी मुसलमान गुलाम को आज़ाद किया अल्लाह उसे जहन्नम से आज़ाद करेगा, उसके एक-एक अंग के बदले उसका एक-एक अंग जहन्नम से आज़ाद होगा। इस हदीस की एक सनद में है कि जिसने अपने माँ-बाप को या दोनों में से किसी एक को पा लिया फिर भी दोज़ख़ में गया अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से दूर करे। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में ये तीनों चीज़ें एक साथ बयान हुई हैं, यानी आज़ाद की गयी गर्दन, माँ-बाप की ख़िदमत और यतीम की परवरिश। एक रिवायत में माँ-बाप के बारे में यह भी है कि ख़ुदा उसे दूर और बरबाद करे....।

एक रिवायत में तीन बार उसके लिये यह बद्दुआ है। एक रिवायत में हुज़ूर का नाम सुनकर दुरूद न पढ़ने वाले और रमज़ान के महीने में अल्लाह तआ़ला की बख़्शिश से मेहरूम रह जाने वाले, और माँ-बाप की ख़िदमत और रज़ामन्दी से जन्नत में न पहुँचने वाले के लिये ख़ुद हुज़ूर का यह बद्दुआ करना मन्क़ूल है। एक अन्सारी ने हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया कि मेरे माँ-बाप के इन्तिक़ाल के बाद भी क्या मैं उनके साथ कोई सुलूक (अच्छा मामला) कर सकता हूँ? आपने फ़रमाया हाँ चार सुलूक, उनके जनाज़े की नमाज़, उनके लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार, उनके वादों को पूरा करना, उनके दोस्तों की इज़्ज़त करना, और वह सिला रहमी (रिश्तों का जोड़ना) जो सिर्फ़ उनकी वजह से हो। यह है वह सुलूक जो उनकी मौत के बाद भी तू उनके साथ कर सकता है। (अबू दाऊद, इब्ने माजा)

एक शख़्स ने आकर हुज़ूरे पाक से कहा या रसूलल्लाह! मैं जिहाद के इरादे से आपकी ख़िदमत में ख़ुशख़बरी लेकर आया हूँ। आपने फ़रमाया तेरी माँ है? उसने कहा हाँ, फ़रमाया जा उसी की ख़िदमत में लगा रह, जन्नत उसके पैरों के नीचे है। दोबारा तिबारा उसने विभिन्न मौक़ों पर अपनी यही बात दोहराई और यही जवाब हुज़ूर ने भी दोहराया। (नसाई, इब्ने माजा वग़ैरह)

फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें तुम्हारे बापों के बारे में वसीयत फ़रमाता है, अल्लाह तुम्हें तुम्हारी माओं के बारे में वसीयत फ़रमाता है। पिछले जुमले को तीन बार बयान फ़रमाकर फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला तुम्हें तुम्हारे रिश्तेदारों के बारे में वसीयत करता है, सबसे ज़्यादा नज़दीक वाला फिर उसके पास वाला।

(इब्ने माजा, मुस्नद अहमद)

फ़रमाते हैं कि देने वाले का हाथ ऊँचा है। अपनी माँ से सुलूक (अच्छा मामला) कर और अपने बाप से और अपनी बहन से और अपने भाई से, फिर जो उसके बाद क़रीब हो इसी तरह दर्जा बदर्जा। (मुस्नद अहमद) बज़्ज़ार की मुस्नद में कमज़ोर सनद से नक़ल किया गया है कि एक साहिब अपनी माँ को उठाये हुए तवाफ़ कर रहे थे, हुज़ूरे पाक से दरियाफ़्त करने लगे कि अब तो मैंने अपनी वालिदा का हक़ अदा कर दिया? आपने फ़रमाया कि मामूली सा भी नहीं। वल्लाहु आलम

Mahtab E Ashraf

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ○	तुम्हारा रब तुम्हारे दिल की बात को ख़ूब जानता है, अगर तुम नेक-बख़्त हो तो वह तौबा करने वालों की ख़ता माफ़ कर देता है। (25)

अल्लाह तआ़ला सब कुछ जानता है

इससे मुराद वे लोग हैं जिनसे जल्दी में अपने माँ-बाप के साथ कोई ऐसी बात हो जाती है जिसे वे अपने नज़दीक ऐब और गुनाह की बात नहीं समझते, चूँकि उनकी नीयत ख़ैर की और अच्छी होती है, इससे ख़ुदा उन पर रहमत करता है। जो माँ-बाप का फ़रमाँबरदार और नमाज़ी हो उसकी ख़तायें ख़ुदा के यहाँ माफ़ हैं। कहते हैं कि "अव्वाबीन" वे लोग हैं जो मग़रिब व इशा के बीच नवाफ़िल पढ़ें। बाज़ कहते हैं कि जो चाश्त की नमाज़ अदा करते रहें, जो हर गुनाह के बाद तौबा कर लिया करें, जो जल्दी से भलाई की तरफ़ लौट आया करें, तन्हाई में अपने गुनाहों को याद करके ख़ुलूसे दिल से इस्तिग़फ़ार कर लिया करें। अ़बीद कहते हैं जो बराबर हर मज्लिस से उठते हुए यह दुआ़ पढ़ लिया करें:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ مَا اَصَبْتُ فِيْ مَجْلِسِيْ هٰذَا.

"अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली मा असब्तु फ़ी मज्लिसी हाज़ा"

इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि अव्वाब वे हैं जो गुनाहों से तौबा कर लिया करें, नाफ़रमानी से नेकी की तरफ़ आ जाया करें, ख़ुदा के नापसन्दीदा कामों को छोड़कर उसकी रज़ामन्दी और पसन्दीदगी के काम करने लगें। यही क़ौल बहुत ठीक है, क्योंकि "अव्वाब" लफ़्ज़ 'औब' से लिया गया है और उसके मायने रुजू करने के हैं।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ○ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ○ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ○	और क़राबतदार "यानी रिश्तेदार" को उसका (माली व ग़ैर-माली) हक़ देते रहना, और मोहताज और मुसाफ़िर को भी देते रहना, और (माल को) बेमौक़ा मत उड़ाना। (26) (क्योंकि) बेशक बेमौक़ा उड़ाने वाले शैतानों के भाई (बन्द यानी उनके जैसे) हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। (27) और अगर अपने परवर्दिगार की तरफ़ से जिस रिज़्क़ के आने की उम्मीद हो, उसके इन्तिज़ार में तुझको उनसे अलग होना पड़े तो उनसे नर्मी की बात कह देना। (28)

Maktab E Ashraf

हुक़ूक़ का ख़्याल रखिये

माँ-बाप के साथ अच्छे सुलूक व एहसान का हुक्म देकर अब रिश्तेदारों के साथ सिला-रहमी का हुक्म देता है। हदीस में है कि अपनी माँ से सुलूक करो और अपने बाप से। फिर जो ज़्यादा क़रीब हो और जो ज़्यादा क़रीब हो। एक और हदीस में है कि जो अपने रिज़्क़ और अपनी उम्र की तरक़्क़ी (ज़्यादती और अधिकता) चाहता हो उसे सिला-रहमी करनी (यानी रिश्तों को जोड़ना) चाहिये। बज़्ज़ार में है कि इस आयत के उतरते ही रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाकर फ़िदक (एक गाँव का नाम जहाँ हुज़ूर सल्ल. का सरकारी बाग़ था) अ़ता फ़रमाया। इस हदीस की सनद सही नहीं, और वाक़िआ़ भी कुछ ठीक नहीं मालूम होता। इसलिये कि यह आयत मक्किया है और उस वक़्त तक बाग़े फ़िदक हुज़ूर सल्ल. के क़ब्ज़े में न था। सन् 7 हिजरी में ख़ैबर फ़तह हुआ तब बाग़े फ़िदक आपके क़ब्ज़े में आया। पस यह क़िस्सा ठीक नहीं बैठता। मिस्कीनों और मुसाफ़िरों की पूरी तफ़सीर सूरः बराअत में गुज़र चुकी, यहाँ दोहराने की कोई ज़रूरत नहीं। ख़र्च करने का हुक्म करके फिर फ़ुज़ूलख़र्ची से मना फ़रमाता है। न तो इनसान को बख़ील (कन्जूस) होना चाहिये, न ख़्वाह-म-ख़्वाह उड़ाने वाला, बल्कि एतिदाल (दरमियानी रास्ता) इख़्तियार करे। जैसा कि एक और आयत में है:

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا...... الخ.

यानी ईमान वाले अपने ख़र्च में न तो हद से गुज़रते हैं न बिल्कुल हाथ रोक लेते हैं।

फिर फ़ुज़ूलख़र्ची की बुराईयाँ बयान फ़रमाता है कि ऐसे लोग शैतान जैसे हैं। 'तबज़ीर' कहते हैं ग़ैर-हक़ में ख़र्च करने को, अपना तमाम माल भी अगर अल्लाह की राह में दे दे तो यह तबज़ीर व फ़ुज़ूलख़र्ची नहीं। और ग़ैर-हक़ में (यानी ग़लत जगह पर) थोड़ा सा भी देना तबज़ीर है। बनू तमीम के एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल. से कहा या रसूलल्लाह! मैं मालदार आ़दमी हूँ बाल-बच्चों और ख़ानदान कुनबे वाला हूँ तो मुझे बतलाईये कि मैं क्या तरीक़ा और रविश इख़्तियार करूँ? आपने फ़रमाया अपने माल की ज़कात अलग कर, इससे तू पाक-साफ़ हो जायेगा। अपने रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक कर, माँगने वाले का हक़ पहुँचाता रह और पड़ोसी व मिस्कीन का भी। उसने कहा हुज़ूर! और थोड़े अलफ़ाज़ में पूरी बात समझा दीजिए। आपने फ़रमाया- रिश्तेदारों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों का हक़ अदा कर और बेजा ख़र्च न कर। उसने कहा 'हस्बियल्लाहु' (यानी मुझे अल्लाह काफ़ी है)। अच्छा हुज़ूर जब मैं आपके क़ासिद को ज़कात अदा कर दूँ तो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के नज़दीक मैं बरी हो गया? आपने फ़रमाया हाँ जब तूने मेरे क़ासिद को दे दिया तो तू बरी हो गया और तेरे लिये उज्र साबित हो गया। अब जो इसे बदल डाले उसका गुनाह उसके ज़िम्मे है।

यहाँ फ़रमान है कि फ़ुज़ूलख़र्ची, बेवक़ूफ़ी, अल्लाह की इताअ़त के छोड़ने और नाफ़रमानी करने की वजह से फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले लोग शैतान के भाई बन जाते हैं। शैतान में यही बुरी ख़स्लत है कि वह रब की नेमतों का नाशुक्रा, उसकी इताअ़त को छोड़ने वाला, उसकी नाफ़रमानी और मुख़ालफ़त का हामिल है। फिर फ़रमाता है कि इन रिश्तेदारों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों में से कोई कभी तुझसे कुछ सवाल कर बैठे और उस वक़्त तेरे हाथ में कुछ न हो और इस वजह से तुझे उनसे मुँह फेर लेना पड़े तो भी जवाब नर्मी से दे

Maktab-E-Ashraf

कि भाई जब अल्लाह हमें देगा इन्शा-अल्लाह तआ़ला हम आपके हक़ को न भूलेंगे, वग़ैरह।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ بَصِيْرًا ۝	और न तो अपना हाथ गर्दन ही से बाँध लेना चाहिए और न बिल्कुल ही खोल देना चाहिए, वरना इल्ज़ाम लिए हुए ख़ाली हाथ होकर बैठ रहोगे। (29) बेशक तेरा रब जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़्क़ देता है, और वही तंगी कर देता है। बेशक वह अपने बन्दों को ख़ूब जानता है, देखता है। (30)

ع ٣ / ٨

कन्जूसी और हाथ रोक लेने की निंदा

हुक्म हो रहा है कि अपनी ज़िन्दगी में बीच की चाल रखो, न बख़ील (कन्जूस) बनो, न फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले, हाथ गर्दन से न बाँध लो, यानी बख़ील न बनो कि किसी को न दो। यहूदियों ने भी इस मुहावरे को इस्तेमाल किया है और कहा है कि ख़ुदा के हाथ बंधे हुए हैं। उन पर ख़ुदा की लानत हो कि ये ख़ुदा को बख़ील कहते हैं, जिससे अल्लाह तआ़ला बहुत दूर है, वह तो बहुत देने वाला है। पस बुख़्ल से मना करके फिर फ़ुज़ूलख़र्ची से रोकता है कि ऐसा भी न करो कि अपनी ताक़त से ज़्यादा दे डालो। फिर इन दोनों हुक्मों का सबब बयान फ़रमाता है कि बख़ीली (कन्जूसी) से तो काहिल बन जाओगे। हर एक की उंगली उठेगी कि यह बड़ा बख़ील (कन्जूस) है, हर एक दूर हो जायेगा कि यह तो ऐसा आदमी है जिससे किसी को कोई फ़ैज़ और फ़ायदा नहीं पहुँचता। जैसे अ़रब के एक मशहूर शायर ज़ुहैर ने अपने एक शे'र में कहा है:

وَمَنْ كَانَ ذَامَالٍ وَّيَبْخَلْ بِمَالِهٖ ☆ عَلٰى قَوْمِهٖ يُسْتَغْنَ عَنْهُ وَيُذَمَّمْ

यानी जो मालदार होकर बुख़्ल करे लोग उससे बेनियाज़ (बेपरवाह और बेताल्लुक़) होकर उसकी बुराई करते हैं।

पस बख़ीली की वजह से इनसान बुरा बन जाता और लोगों की नज़रों से गिर जाता है। हर एक उसे मलामत करने लगता है। और जो हद से ज़्यादा ख़र्च कर गुज़रता है वह थक कर बैठ जाता है, उसके हाथ में कुछ नहीं रहता, कमज़ोर और आ़जिज़ हो जाता है। जैसे कोई जानवर जो चलते-चलते थक जाये और रास्ते में बेदम होकर पड़ जाये।

बख़ील (कन्जूस) और सख़ी (दानवीर) की मिसाल उन दो शख़्सों जैसी है जिन पर दो लोहे के जुब्बे हों सीने से गले तक। सख़ी तो जैसे-जैसे ख़र्च करता है उसकी कड़ियाँ ढीली होती जाती हैं और उसके हाथ खुलते जाते हैं, और वह जुब्बा बढ़ जाता है, यहाँ तक कि उसके पौरों तक पहुँच जाता है, और उसके असर को मिटाता है। और बख़ील जब कभी ख़र्च का इरादा करता है तो उसके जुब्बे की कड़ियाँ और सिमट जाती हैं, वह उसे ढीला और बड़ा करने की लाख कोशिश करता है लेकिन उसमें कोई गुंजाईश नहीं निकलती।

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अबू बक्र की लड़की हज़रत असमा से फ़रमाया ख़ुदा की राह में ख़र्च करती रह, जमा न रखा कर वरना अल्लाह भी रोक लेगा। बन्द बाँधकर रोक न लिया कर, वरना फिर ख़ुदा भी अपनी तरफ़ से बन्द लगा देगा। एक और रिवायत में है कि गिन-गिनकर न रखा करो, वरना अल्लाह तआ़ला भी गिनती करके रोक लेगा। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- हर सुबह दो फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं, एक दुआ़ करता है ख़ुदाया! सख़ी को बदला दे, और दूसरा दुआ़ करता है कि ख़ुदाया! बख़ील का माल तबाह व बरबाद कर। मुस्लिम शरीफ़ में है कि सदके ख़ैरात से किसी का माल नहीं घटता और हर सख़ावत करने वाले को अल्लाह तआ़ला इज़्ज़त व सम्मान से नवाज़ता है, और जो शख़्स अल्लाह के हुक्म की वजह से दूसरों से आ़जिज़ी का (यानी नर्मी वाला) बर्ताव करे अल्लाह उसे बुलन्द दर्जे वाला बना देता है। एक और हदीस में है कि लालच से बचो, इसी ने तुमसे पहले लोगों को हलाक किया है। लालच का पहला हुक्म यह होता है कि बख़ीली करो, उन्होंने बख़ीली की फिर इसने उन्हें सिला-रहमी तोड़ने (यानी रिश्ते तोड़ने) को कहा, उन्होंने वह भी किया। फिर बुराईयों और गुनाहों का हुक्म दिया, यह इस पर भी लग गये। बैहक़ी में है कि जब इनसान ख़ैरात करता है तो सत्तर शैतानों के जबड़े टूट जाते हैं। मुस्नद की हदीस में है कि दरमियानी चाल से ख़र्च रखने वाला कभी फ़क़ीर नहीं होता।

फिर फ़रमाता है कि रिज़्क़ देने वाला, कुशादगी करने वाला, तंगी में डालने वाला, अपनी मख़्लूक़ में अपनी मंशा और मर्ज़ी के मुताबिक़ हेर-फेर करने वाला, जिसे चाहे मालदार और जिसे चाहे फ़क़ीर करने वाला अल्लाह ही है। हर बात में उसकी हिक्मत है, वही अपनी हिक्मतों का जानने वाला है, वह ख़ूब जानता और देखता है कि अमीरी का मुस्तहिक़ कौन है और फ़क़ीरी का हक़दार कौन है। हदीसे क़ुदसी में है कि मेरे बाज़ बन्दे वे हैं कि फ़क़ीरी ही के क़ाबिल हैं, अगर मैं उन्हें अमीर बना दूँ तो उनका दीन तबाह हो जाये। और मेरे बाज़ बन्दे ऐसे भी हैं जो अमीरी के लायक़ हैं, अगर मैं उन्हें फ़क़ीर बना दूँ तो उनका दीन बिगड़ जाये। हाँ यह याद रहे कि बाज़ लोगों के हक़ में मालदारी ख़ुदा की तरफ़ से ढील के तौर पर होती है और बाज़ों के लिये फ़क़ीरी अ़ज़ाब के रूप में होती है। अल्लाह तआ़ला हमें इन दोनों से बचाये।

और अपनी औलाद को नादारी के अन्देशे से क़त्ल मत करो, (क्योंकि) हम उनको भी रिज़्क़ देते हैं और तुमको भी, बेशक उनका क़त्ल करना बड़ा भारी गुनाह है। (31)	وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ○

औलाद को क़त्ल मत करो

देखो ख़ुदा तआ़ला अपने बन्दों पर उनके माँ-बाप से भी ज़्यादा मेहरबान है। एक तरफ़ माँ-बाप को हुक्म देता है कि अपना माल अपने बच्चों को बतौर मीरास के दो, और दूसरी जानिब फ़रमाता है कि उन्हें मार न डाला करो। इस्लाम से पहले ज़माने में लोग न तो लड़कियों को मीरास में से हिस्सा देते थे, न उनका ज़िन्दा रखना पसन्द करते थे, बल्कि लड़कियों को मारना उनकी क़ौम का एक आ़म रिवाज था। क़ुरआन इस बुरे और ज़ालिमाना रिवाज की तरदीद करता है कि यह ख़्याल किस क़द्र ग़लत है कि उन्हें

Maktab E Ashraf

खिलायेंगे कहाँ से? किसी की रोज़ी किसी के ज़िम्मे नहीं, सबको रोज़ी देने वाला अल्लाह तआ़ला ही है। सूरः अन्आ़म में फ़रमायाः

وَلَاتَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ.

फ़कीरी और तंगदस्ती के ख़ौफ़ से अपनी औलाद की जान न लिया करो। तुम्हें और उन्हें रोज़ियाँ देने वाले हम हैं। उनका क़त्ल करना बहुत बड़ा जुर्म और गुनाहे कबीरा है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. ने पूछा या रसूलल्लाह! ख़ुदा के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह क्या है? आपने फ़रमाया यह कि तू किसी को ख़ुदा का शरीक ठहराये हालाँकि उस अकेले ने तुझे पैदा किया है। मैंने पूछा इसके बाद? फ़रमाया यह कि तू अपनी औलाद को इस ख़ौफ़ से मार डाले कि वे तेरे साथ खायेंगे। मैंने कहा उसके बाद? फ़रमाया यह कि तू अपनी पड़ोसन से ज़िनाकारी करे।

और ज़िना के पास भी मत फटको, बिला शुब्हा वह बड़ी बेहयाई (की बात) है, और बुरी राह है। (32)	وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

सामाजिक ज़िन्दगी का एक रिस्ता हुआ नासूर

ज़िनाकारी और उसकी तरफ़ ले जाने वाली तमाम बुराईयों और हरकतों से क़ुरआन रोक रहा है। ज़िना को शरीअ़त ने कबीरा और बहुत सख़्त गुनाह बतलाया है। वह बदतरीन तरीक़ा और निहायत बुरी राह है। मुस्नद अहमद में है कि एक नौजवान ने आपसे ज़िनाकारी की इजाज़त चाही। लोग उस पर झुक पड़े कि चुप रह क्या कह रहा है? क्या कर रहा है? हुज़ूर सल्ल. ने उसे अपने क़रीब बुलाकर फ़रमाया बैठ जा। जब वह बैठ गया तो आपने फ़रमाया क्या तू इस काम को अपनी माँ के लिये पसन्द करता है? उसने कहा नहीं, ख़ुदा की क़सम नहीं या रसूलल्लाह मुझे आप पर अल्लाह फ़िदा करे हरगिज़ नहीं। आपने फ़रमाया फिर सोच ले कि कोई और कैसे पसन्द करेगा? आपने फ़रमाया अच्छा तू इसे अपनी बेटी के लिये पसन्द करता है? उसने इसी तरह ताकीद से इनकार किया। आपने फ़रमाया ठीक इसी तरह कोई भी इसे अपनी बेटियों के लिये पसन्द नहीं करता। अच्छा अपनी बहन के लिये इसे पसन्द करेगा? उसने इसी तरह इनकार किया। आपने फ़रमाया इसी तरह दूसरे भी अपनी बहनों के लिये इसे मक्रूह (बुरा) समझते हैं। बता क्या तू चाहेगा कि कोई तेरी फूफी से ऐसा करे? उसने इसी सख़्ती से इनकार किया। आपने फ़रमाया इसी तरह कोई और भी इसे अपनी फूफी के लिये न चाहेगा। अच्छा अपनी ख़ाला के लिये? उसने कहा हरगिज़ नहीं। फ़रमाया इसी तरह और सब लोग भी। फिर आपने अपना हाथ उसके सर पर रखकर दुआ़ की इलाही! इसके गुनाह बख़्श, इसके दिल को पाक कर, इसे आबरू और पाकदामनी वाला बना। फिर तो यह हालत थी कि यह नौजवान किसी की तरफ़ नज़र भी न उठाता था। इब्ने अबिद्दुन्या में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- शिर्क के बाद कोई गुनाह ज़िनाकारी से बढ़कर नहीं, कि आदमी अपना नुत्फ़ा किसी ऐसे रहम

(गर्भ) में डाले जो उसके लिये हलाल नहीं।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝	और जिस शख़्स (के क़त्ल) को अल्लाह तआ़ला ने हराम फ़रमाया है उसको क़त्ल मत करो, हाँ मगर हक़ पर। और जो शख़्स नाहक़ क़त्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख़्तियार दिया है। सो उसको क़त्ल के बारे में (शरीअ़त की) हद से आगे न बढ़ना चाहिए। वह शख़्स तरफ़दारी के क़ाबिल है। (33)

किसी को क़त्ल करना

बग़ैर शरई हक़ के किसी को क़त्ल करना हराम है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि जो मुसलमान ख़ुदा के एक होने और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के रसूल होने की गवाही देता हो उसका क़त्ल तीन बातों में से एक के सिवा हलाल नहीं। या तो उसने किसी को क़त्ल किया हो, या शादीशुदा हो और फिर ज़िना किया हो, या दीन को छोड़कर जमाअ़त को छोड़ दिया हो (यानी इस्लाम लाने के बाद इस्लाम से फिर गया हो)।

सुनन में है कि सारी दुनिया का फ़ना हो जाना अल्लाह के नज़दीक एक मोमिन के क़त्ल से ज़्यादा आसान है। अगर कोई शख़्स नाहक़ दूसरे के हाथों क़त्ल किया गया है तो उसके वारिसों को अल्लाह तआ़ला ने क़ातिल पर ग़ालिब कर दिया है, उससे क़िसास लेने, दियत लेने और बिल्कुल माफ़ कर देने में से एक का इख़्तियार है। एक अ़जीब बात यह है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने इस आयत के हुक्म में आ़म होने से हज़रत मुआ़विया रज़ि. की सल्तनत पर इस्तिदलाल किया है कि वह बादशाह बन जायेंगे इसलिये कि हज़रत उस्मान रज़ि. के वली आप ही थे और हज़रत उस्मान रज़ि. अत्यंत मज़्लूमी के साथ शहीद किये गये थे। हज़रत मुआ़विया रज़ि. हज़रत उस्मान रज़ि. के क़ातिलों को हज़रत अ़ली रज़ि. से तलब करते थे कि उनसे क़िसास लें, इसलिये कि यह भी उमवी थे और हज़रत उस्मान रज़ि. भी उमवी थे। हज़रत अ़ली रज़ि. इसमें ज़रा ढील कर रहे थे। उधर हज़रत अ़ली रज़ि. का मुतालबा हज़रत मुआ़विया रज़ि. से यह था कि मुल्के शाम उनके सुपुर्द कर दें। हज़रत मुआ़विया रज़ि. फ़रमाते थे कि जब तक आप हज़रत उस्मान के क़ातिलों को न दें मैं मुल्के शाम को आपकी हुकूमत के अधीन न करूँगा। चुनाँचे आपने हज़रत अ़ली की बैअ़त से इनकार कर दिया और आपके साथ ही मुल्के शाम के तमाम लोगों ने भी। इस झगड़े ने तूल पकड़ा और हज़रत मुआ़विया रज़ि. शाम के हुक्मराँ बन गये। (हज़रत अ़ली का ख़्याल था कि पहले मुसलमानों की हुकूमत व ख़िलाफ़त को मज़बूत किया जाये बाद में क़ातिलों को सज़ा दी जाये, अगर हाकिम किसी मामले को किसी मस्लेहत की वजह से वक़्ती तौर पर टाल दे तो यह कोई जुर्म नहीं)।

मोजम तबरानी में यह रिवायत है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने रात की गुफ़्तगू में एक बार फ़रमाया कि आज मैं तुम्हें एक बात सुनाता हूँ न तो वह ऐसी छुपी हुई है न ऐसी आ़म और खुली हुई। हज़रत उस्मान के साथ जो कुछ किया गया उस वक़्त मैंने हज़रत अ़ली को मश्विरा दिया कि आप इस मामले से किनारा कर लें, वल्लाह अगर आप किसी पत्थर में भी छुपे हुए होंगे तो निकाल लिये जायेंगे,

Maktab E Ashraf

लेकिन उन्होंने मेरी बात न मानी। अब एक और सुनो! ख़ुदा की क़सम मुआविया तुम पर बादशाह हो जायेंगे, इसलिये कि अल्लाह का फ़रमान है जो मज़्लूम मार डाला जाये हम उसके वारिसों को ग़लबा और ताक़त देते हैं। फिर उन्हें क़त्ल के बदले में क़त्ल में हद से न गुज़रना चाहिये....।

सुनो! ये क़ुरैश वाले तो तुम्हें फ़ारस व रोम के तरीक़ों पर आमादा कर देंगे और सुनो! तुम पर ईसाई, यहूद और मजूसी खड़े हो जायेंगे, उस वक़्त जिसने इसको थाम लिया जो मारूफ़ (यानी सही और अच्छा रास्ता) है उसने निजात पा ली और जिसने इसे छोड़ दिया और अफ़सोस कि तुम छोड़ने वाले ही हो तो तुम भी आ़म दुनिया वालों की तरह होगे कि वे भी हलाक होने वालों में हलाक हो गये।

अब फ़रमाया कि वली (मक़्तूल के वारिस) को क़त्ल के बदले में हद से न गुज़रना चाहिये कि वह क़त्ल के साथ मुसला (यानी लाश की बेक़द्री) करे, कान नाक काटे या क़ातिल के सिवा और से बदला ले। मक़्तूल (क़त्ल होने वाले शख़्स) के वली की शरीअ़त, ग़लबे और ताक़त के लिहाज़ से हर तरह मदद की गयी है।

और यतीम के माल के पास न जाओ मगर ऐसे तरीक़े से जो कि पसन्दीदा है, यहाँ तक कि वह अपने बालिग़ होने की उम्र को पहुँच जाए, और (जायज़) अ़हद को पूरा किया करो, बेशक (ऐसे) अ़हद की (क़ियामत में) पूछताछ और बाज़पुर्स होने वाली है। (34) और जब नाप-तौलकर दो तो पूरा नापो और सही तराज़ू से तौलकर दो। यह (अपने आप में भी) अच्छी बात है और इसका अन्जाम भी अच्छा है। (35)	وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۖ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا ○ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ○

यतीम का माल और नाप-तौल

यतीम के माल में बुरी नीयत से हेर-फेर न करो, उनके माल उनके बालिग़ होने से पहले साफ़ कर डालने के नापाक इरादों से बचो। जिसकी परवरिश में यतीम बच्चे हों अगर वह ख़ुद मालदार है तब तो उसे उन यतीमों के माल से बिल्कुल अलग रहना चाहिये और अगर वह फ़क़ीर मोहताज है तो ख़ैर! ज़रूरत के हिसाब से ले ले। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अबूज़र रज़ि. से फ़रमाया मैं तो तुझे बहुत कमज़ोर देख रहा हूँ और तेरे लिये वही पसन्द करता हूँ जो ख़ुद अपने लिये चाहता हूँ। ख़बरदार कभी दो शख़्सों का वाली न बनना, और न कभी यतीम के माल का मुतवल्ली (ज़िम्मेदार) बनना (हज़रत अबूज़र को ख़िताब करके दर असल यह सारी उम्मत को तालीम है, ख़ास उनको नहीं)।

फिर फ़रमाता है कि वादे पूरे किया करो। जो वादा व अ़हद जो लेन-देन हो जाये उसकी पासबानी करो। उसके बारे में क़ियामत के दिन जवाबदेही होगी। नाप का पैमाना (बरतन) पूरा भरकर दिया करो। लोगों को उनकी चीज़ घटाकर कम न दो। फिर हुक्म होता है कि बग़ैर पासंग के, सही वज़न बतलाने वाली सीधी तराज़ू से बग़ैर डंडी मारे तौला करो। दोनों जहान में तुम सबके लिये यही बेहतर है। दुनिया में यह

तुम्हारे व्यापार की रौनक़ है (यानी ईमानदारी से काम लोगे तो कारोबार बढ़ेगा) और आख़िरत में यह तुम्हारी निजात की दलील है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- ऐ ताजिरो! तुम्हें उन दो चीज़ों को सौंपा गया है जिनकी वजह से तुमसे पहले के लोग बरबाद हो गये, यानी नाप तौल। नबी सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी हराम पर क़ुदरत रखते हुए सिर्फ़ ख़ौफ़े ख़ुदा से उसे छोड़ दे तो अल्लाह तआ़ला उसे उससे बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमायेगा।

Maktab E Ashraf

और जिस बात की तुझको तहक़ीक़ न हो उस पर अ़मल दरामद मत किया कर, क्योंकि कान, आँख और दिल हर शख़्स से इन सबकी (क़ियामत के दिन) पूछ होगी। (36)	وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ۝

बग़ैर तहक़ीक़ के कुछ मत कहो

यानी जिस बात का इल्म न हो उसमें ज़बान न हिलाओ। बिना इल्म के किसी पर ऐब न लगाओ और बोहतान बाज़ी न करो। झूठी गवाहियाँ न देते फिरो, बिना देखे न कह दिया करो कि मैंने देखा, न बिना सुने सुनना बयान करो, न बेइल्मी पर अपना जानना बयान करो। क्योंकि इन तमाम बातों की जवाबदेही ख़ुदा के यहाँ होगी। ग़र्ज़ वहम, ख़्याल और गुमान के तौर पर कुछ कहने की मनाही हो रही है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

اِجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ..... الخ.

ज़्यादा गुमान से बचो, बाज़े गुमान गुनाह हैं।

हदीस में है कि गुमान (किसी के बारे में ख़्वाह-म-ख़्वाह राय बाँधने) से बचो, गुमान बदतरीन झूठ है। अबू दाऊद की हदीस में है कि इनसान का यह तकिया-ए-कलाम बहुत ही बुरा है कि 'लोग ख़्याल करते हैं'। एक और हदीस में है कि सबसे बुरा बोहतान यह है कि इनसान झूठ-मूट कोई ख़्वाब गढ़ ले। एक और सही हदीस में है कि जो शख़्स ऐसा ख़्वाब अपने आप गढ़ ले क़ियामत के दिन उसे यह तकलीफ़ दी जायेगी कि वह दो जौ के दरमियान गिरह लगाये और यह उससे हरगिज़ नहीं होगा। क़ियामत के दिन आँख, कान, दिल सबसे पूछताछ होगी, सबको जवाबदेही करनी होगी।

और ज़मीन पर इतराता हुआ मत चल, (क्योंकि) तू न ज़मीन को फाड़ सकता है और न (बदन को तानकर) पहाड़ों की लम्बाई को पहुँच सकता है। (37) ये सारे बुरे काम तेरे रब के नज़दीक बिल्कुल नापसन्द हैं। (38)	وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝

Muktab E Ashraf

अकड़ और घमंड

अकड़ कर इतरा कर तकब्बुर के साथ चलने से अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को मना फ़रमाता है। यह आ़दत सरकश और घमंडी लोगों की होती है। फिर उसे नीचा दिखाने के लिये फ़रमाता है कि चाहे कितने ही सर उठाकर चलो लेकिन पहाड़ों की बुलन्दी से पस्त (नीचे) ही रहोगे, और चाहे कैसे ही खट-पट करते हुए पाँव मार-मारकर चलो लेकिन ज़मीन को फाड़ने से रहे, बल्कि ऐसे लोगों का बरअ़क्स (उल्टा) हाल होता है। जैसा कि हदीस में आया है कि एक शख़्स चादर के जोड़े में घमंड करता हुआ चला जा रहा था कि वहीं ज़मीन में धंसा दिया गया जो आज तक धंसता हुआ चला जा रहा है। क़ुरआन में क़ारून का क़िस्सा मौजूद है कि वह मय अपने महलों के ज़मीन में धंसा दिया गया। हाँ तवाज़ो, नर्मी, विनम्रता और आ़जिज़ी करने वालों को अल्लाह तआ़ला बुलन्द रुतबे वाला बनाता है। हदीस में है कि झुकने वालों को ख़ुदा बुलन्द करता है, वह अपने को हक़ीर समझता है और लोग उसे रुतबे वाला और इज़्ज़तदार समझते हैं। तकब्बुर करने वाला ख़ुद को बड़ा आदमी समझता है और लोगों की निगाहों में वह ज़लील व ख़्वार होता है, यहाँ तक कि वे उसे कुत्तों और सुअरों से भी ज़्यादा हक़ीर जानते हैं। अबू बक्र बिन अबिद्दुन्या रह. अपनी किताब 'अल-ख़मूल वत्तवाज़ो' में लिखते हैं कि इब्ने ऐहम मन्सूर के दरबार में जा रहा था, रेशमी जुब्बा पहने हुए था और पिंडलियों के ऊपर से उसे दोहरा सिलवाया था कि नीचे से क़बा भी दिखाई दे और अकड़ता ऐंठता जा रहा था। हज़रत हसन रह. ने उसे इस हालत में देखकर फ़रमाया- ओफ़्फ़ोह नकचढ़ा बल खाया गाल-फूला अपने डंटर बाज़ू देखता अपने को तौलता नेमतों के ज़िक्र शुक्र को भूला, रब के अहकाम को छोड़ा, अल्लाह के हक़ को तोड़ा दीवानों की चाल चलता अंग-अंग में किसी की दी हुई नेमत रखता शैतान की लानत का मारा वह देखो जा रहा है। इब्ने ऐहम ने सुन लिया, उसी वक़्त लौट आया और उज़्र माज़िरत करने लगा। आपने फ़रमाया मुझसे क्या माज़िरत करता है, अल्लाह तआ़ला से तौबा कर और अपने इस तरीक़े को छोड़। क्या तूने ख़ुदा तआ़ला का यह फ़रमान नहीं सुनाः

وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا...... الخ.

और ज़मीन पर इतराता हुआ मत चल..........। (यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है)

आ़बिद बुख़्तरी रह. ने हज़रत अ़ली की औलाद में से एक शख़्स को अकड़ता हुआ चलते देखकर फ़रमाया- ऐ शख़्स! जिसने तुझे यह इकराम (इज़्ज़त व सम्मान) दिया है उसकी रविश (तरीक़ा और अ़मल) ऐसी न थी। उसने उसी वक़्त तौबा कर ली। इब्ने उमर रज़ि. ने एक ऐसे शख़्स को देखकर फ़रमाया कि शैतान के यही भाई होते हैं। हज़रत ख़ालिद बिन मादान रह. फ़रमाते हैं- लोगो! अकड़-अकड़कर चलना छोड़ दो।

इब्ने अबिद्दुन्या में हदीस है कि जब मेरी उम्मत अकड़ और तकब्बुर की चाल चलने लगेगी और फ़ारसियों और रोमियों को अपनी ख़िदमत में लगायेगी तो अल्लाह तआ़ला एक को एक पर मुसल्लत कर देगा। "सय्यिउहू" की दूसरी क़िराअत "सय्यि-अतन्" है, तो मायने यह हुए कि जिन कामों से हमने तुम्हें रोका है ये सब काम बहुत बुरे हैं और ख़ुदा तआ़ला के नापसन्दीदा हैं यानी अपनी औलाद को क़त्ल न करे से लेकर अकड़ कर न चलो तक तमाम काम। और "सय्यिउहू" की क़िराअत पर मतलब यह है कि "व क़ज़ा रब्बु-क" से यहाँ तक जो हुक्म अहकाम और मनाहियाँ और रोक बयान हुईं, इसमें जिन बुरे कामों का

Maktaba E Ashraf

ज़िक्र है ये सब अल्लाह के नज़दीक मकरूह और बुरे काम हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. ने यही तौजीह बयान फ़रमाई है।

ये बातें उस हिक्मत में की हैं जो ख़ुदा तआ़ला ने आप पर 'वही' के ज़रिये से भेजी हैं, और अल्लाह बर्हक़ के साथ कोई और माबूद तजवीज़ मत करना, वरना तू इल्ज़ाम खाया हुआ और मरदूद होकर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (39)	ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝

क़ीमती बातें

ये अहकाम जो हमने दिये हैं सब बेहतरीन और साफ़ हैं, और जिन बातों से हमने रोका है वे बड़ी ज़लील ख़स्लतें हैं। हम ये सब बातें तेरी तरफ़ 'वही' के ज़रिये नाज़िल फ़रमा रहे हैं कि तू लोगों को हुक्म दे और मना करे। देख मेरे साथ किसी को माबूद न ठहराना वरना वह वक़्त आयेगा कि ख़ुद अपने को मलामत करने लगेगा और ख़ुदा की तरफ़ से भी मलामत होगी, बल्कि तमाम मख़्लूक़ की तरफ़ से भी, और तू हर भलाई से दूर कर दिया जायेगा। इस आयत में रसूलुल्लाह सल्ल. के वास्ते से आपकी उम्मत से ख़िताब है, क्योंकि हुज़ूर सल्ल. तो मासूम (गुनाह और ख़ता से अल्लाह की हिफ़ाज़त में) हैं।

तो क्या तुम्हारे रब ने तुमको तो बेटों के साथ ख़ास किया है और ख़ुद फ़रिश्तों को (अपनी) बेटियाँ बनाई हैं, बेशक तुम बड़ी (सख़्त) बात कहते हो। (40)	اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝

ख़ालिस बेवक़ूफ़ी

मलऊन मुश्रिकों की तरदीद हो रही है कि यह तुमने ख़ूब तक़सीम की है कि बेटे तुम्हारे, बेटियाँ अल्लाह की, जो तुम्हें नापसन्द जिनसे तुम जलो कुढ़ो, बल्कि ज़िन्दा उनको दफ़न कर दो, उन्हें अल्लाह के लिये साबित करो? दूसरी आयतों में भी उनका यह कमीनापन बयान हुआ है कि ये कहते हैं- ख़ुदा-ए-रहमान की औलाद है। वास्तव में उनका यह क़ौल निहायत ही बुरा है, बहुत मुम्किन है कि इससे आसमान फट जाये, ज़मीन फट जाये, पहाड़ चूरा-चूरा हो जायें कि ये ख़ुदा तआ़ला की औलाद ठहरा रहे हैं हालाँकि ख़ुदा को यह किसी तरह लायक़ ही नहीं, क्योंकि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ उसकी गुलाम है, सब उसकी गिनती में हैं और एक-एक उसके सामने क़ियामत के दिन तन्हा पेश होने वाला है।

और हमने इस क़ुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि (उसको) अच्छी तरह से	وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ

Maktab E Ashraf

وَمَايَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۝	समझ लें, और उनको (इस तौहीद से) नफ़रत ही बढ़ती जाती है। (41)

हक़ से नफ़रत

इस पाक किताब में हमने तमाम मिसालें खोल-खोलकर (यानी स्पष्ट तौर पर) बयान फ़रमा दी हैं। वादे वईद साफ़ तौर पर मज़कूर हैं, ताकि लोग बुराईयों और खुदा की नाराज़गी से बचें। लेकिन फिर भी ज़ालिम लोग तो हक़ से नफ़रत रखने और उससे दूर भागने में ही बढ़ रहे हैं।

قُلْ لَّوْكَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ۝ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝	आप फ़रमाईए कि अगर उसके साथ और माबूद भी होते जैसे कि ये लोग कहते हैं तो उस हालत में अ़र्श वाले तक उन्होंने रास्ता ढूँढ लिया होता। (42) ये लोग जो कुछ कहते हैं अल्लाह तआ़ला उससे पाक और बहुत ज़्यादा बरतर है। (43)

जवाब दो

जो मुश्रिक अल्लाह तआ़ला के साथ औरों की भी इबादत करते हैं, उन्हें खुदा का शरीक मानते हैं और समझते हैं कि उन्हीं की वजह से हम खुदा तआ़ला की निकटता हासिल कर सकते हैं, उनसे कहो कि अगर तुम्हारा यह फ़ासिद गुमान कुछ भी जान रखता होता और खुदा के साथ वाक़ई कोई ऐसे माबूद होते कि वे जिसे चाहें अल्लाह की निकटता प्राप्त करा दें और जिसकी चाहें सिफ़ारिश कर दें तो खुद वे माबूद ही उसकी इबादत करते, उसकी निकटता तलाश करते। पस तुम्हें सिर्फ़ उसी की इबादतें करनी चाहियें न कि उसके सिवा दूसरों की इबादतें, न दूसरे माबूद की कोई ज़रूरत कि खुदा में और तुममें वह वास्ता बने, क्योंकि खुदा को ये वास्ते सख़्त नापसन्द मालूम होते हैं और इनसे वह इनकार करता है। अपने तमाम नबियों और रसूलों की ज़बान से इससे मना फ़रमाता रहा। उसकी ज़ात ज़ालिमों के बयान किये हुए इस वस्फ़ से बिल्कुल पाक है और उसके सिवा कोई माबूद नहीं। इन गंदगियों से हमारा मौला पाक है, वह अकेला और सबसे बेनियाज़ है, वह माँ-बाप और औलाद से पाक है, उसकी जिन्स का (यानी उसके जैसा) कोई नहीं।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝	(तमाम) सातों आसमान और ज़मीन और उनमें जितने हैं उसकी पाकी बयान कर रहे हैं, और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो कि तारीफ़ के साथ उसकी पाकी (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) बयान न करती हो, लेकिन तुम लोग उनके पाकी बयान करने को समझते नहीं हो, वह बड़ा हलीम है, बड़ा ग़फ़ूर है। (44)

Maktab E Ashraf

एक ही इबादत

सातों आसमान और ज़मीन और उनमें बसने वाली तमाम मख़्लूक़ उसकी पाकी व तारीफ़ और पाकीज़गी व बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान करती है, और मुश्रिक लोग जो निकम्मे और बातिल औसाफ़ अल्लाह की ज़ात के लिये मानते हैं उनसे यह तमाम मख़्लूक़ बरी होने का इज़हार करती है, और उसके माबूद व रब होने में उसे वाहिद (एक और तन्हा) और ला-शरीक मानती है। हर हस्ती ख़ुदा की तौहीद (एक होने) की ज़िन्दा शहादत है। उन नालायक़ लोगों के अक़्वाल से मख़्लूक़ तकलीफ़ में है, क़रीब है कि आसमान फट जाये, ज़मीन धंस जाये, पहाड़ टूट जायें। तबरानी में है कि मेराज की रात में रसूलुल्लाह सल्ल. को मक़ामे इब्राहीम और ज़मज़म के दरमियान से जिब्राईल व मीकाईल मस्जिदे अक़्सा तक ले गये। जिब्राईल आपके दायें थे और मीकाईल बायें। आपको सातों आसमान तक उड़ा ले गये, वहाँ से आप लौटे। आप फ़रमाते हैं कि मैंने बुलन्द आसमानों में बहुत सी तस्बीहों के साथ यह तस्बीह सुनी किः

سَبَّحَتِ السَّمٰوٰتُ الْعُلٰى مِنْ ذِى الْمُهَابَةِ مُشْفِقَاتِ الذُّوِىِّ الْعُلُوِّ بِمَاعَلَا. سُبْحٰنَ الْعَلِيِّ الْاَعْلٰى. سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى.

कि मख़्लूक़ में से हर-हर चीज़ उसकी पाकीज़गी और तारीफ़ बयान करती है, लेकिन ऐ लोगो! तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते। इसलिये कि वह तुम्हारी भाषा में नहीं। जानदार मख़्लूक़, पेड़-पौधे वग़ैरह और तमाम बेजान चीज़ें उसकी तस्बीह (पाकी) बयान करती हैं।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से सही बुख़ारी में साबित है कि खाना खाने में खाने की तस्बीह हम सुनते रहते थे। हज़रत अबूज़र रज़ि. वाली हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपनी मुट्ठी में चन्द कंकरियाँ लीं, मैंने ख़ुद सुना कि वे शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट की तरह अल्लाह की तस्बीह कर रही थीं, इसी तरह हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ि. के हाथ में भी।

यह हदीस सही में और मुस्नदों में मशहूर है। कुछ लोगों को हुज़ूर सल्ल. ने अपनी ऊँटनियों और जानवरों पर सवार खड़े हुए देखकर फ़रमाया कि सवारी सलामती के साथ लो और फिर अच्छाई से छोड़ दिया करो, रास्तों और बाज़ारों में लोगों से बातें करने की कुर्सियाँ अपनी सवारियों को न बना लिया करो। सुनो! बहुत सी सवारियाँ अपने सवारों से भी ज़्यादा ज़िक्रुल्लाह करने वाली और उनसे भी बेहतर व अफ़ज़ल होती हैं। (मुस्नद अहमद)

सुनन नसाई में है कि हुज़ूर सल्ल. ने मेंढक के मार डालने को मना फ़रमाया और फ़रमाया उसका बोलना अल्लाह की तस्बीह है। एक और हदीस में है कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' का इख़्लास वाला कलिमा कहने के बाद ही किसी की नेकी क़ाबिले क़बूल होती है। 'अल्हम्दु लिल्लाह' शुक्र का कलिमा है, इसका न कहने वाला ख़ुदा का नाशुक्रा है। 'अल्लाहु अकबर' ज़मीन व आसमान की फ़िज़ा भर देता है, 'सुब्हानल्लाह' का कलिमा मख़्लूक़ की तस्बीह है। अल्लाह ने किसी मख़्लूक़ को तस्बीह और नमाज़ के इक़रार से बाक़ी नहीं छोड़ा। जब कोई 'ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह' पढ़ता है तो अल्लाह फ़रमाता है मेरा बन्दा फ़रमाँबरदार हुआ और ख़ुद को मेरी सुपुर्दगी में दे दिया।

मुस्नद अहमद में है कि एक देहाती तियालिसी जुब्बा पहने हुये जिसमें रेशमी कफ़ और रेशमी घुण्डियाँ थीं, नबी करीम सल्ल. के पास आया और कहने लगा कि इस शख़्स का इरादा इसके सिवा कुछ नहीं कि

चरवाहों के लड़कों को ऊँचा करे, और सरदारों के लड़कों को ज़लील करे। आपको गुस्सा आ गया और उसका दामन घसीटते हुए फ़रमाया कि तुझे मैं जानवरों का लिबास पहने हुए तो देखता नहीं हूँ? फिर हुज़ूर सल्ल. वापस चले आये और बैठकर फ़रमाने लगे कि हज़रत नूह ने अपनी वफ़ात के वक़्त अपने बच्चों को बुलाकर फ़रमाया कि मैं तुम्हें बतौर वसीयत के दो हुक्म देता हूँ और दो चीज़ों से रोकता हूँ। एक तो मैं तुम्हें अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने से मना करता हूँ। दूसरे तकब्बुर से रोकता हूँ। और पहला हुक्म तो तुम्हें यह करता हूँ कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहते रहो, इसलिये कि आसमान व ज़मीन और इनमें की तमाम चीज़ें एक पलड़े में रख दी जायें और दूसरे में सिर्फ़ यही कलिमा हो तो भी यही कलिमा वज़नी रहेगा। सुनो! अगर तमाम आसमान व ज़मीन एक हल्क़ा (गोल चीज़/छल्ला) बना दिये जायें और उनपर इसको रख दिया जाये तो वह उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दे। मेरा दूसरा हुक्म 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' पढ़ने का है, क्योंकि यह हर चीज़ की नमाज़ है और इसी की वजह से हर एक को रिज़्क़ दिया जाता है।

इब्ने जरीर में है कि आपने फ़रमाया- आओ मैं तुम्हें बतलाऊँ कि हज़रत नूह ने अपने लड़के को क्या हुक्म दिया। फ़रमाया कि प्यारे बच्चे मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि 'सुब्हानल्लाह' कहा करो। यह तमाम मख़्लूक़ की तस्बीह है, और इसी से मख़्लूक़ को रोज़ी दी जाती है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हर चीज़ उसकी तस्बीह व तहमीद (पाकी और तारीफ़) बयान करती है। इसकी सनद ज़नदी रावी की वजह से ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। हज़रत इक्रिमा रज़ि. फ़रमाते हैं कि सुतून, दरख़्त, दरवाज़ों की चोलें उनके बन्द होने खुलने की आवाज़, पानी की खड़खड़ाहट यह सब अल्लाह की तस्बीह है। ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि हर चीज़ तारीफ़ व सस्बीह के बयान में मशग़ूल है। इब्राहीम कहते हैं कि खाना भी तस्बीह पढ़ता है। सूरः हज की आयत भी इसकी ताईद करती है और मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि हर जानदार चीज़ तस्बीह पढ़ रही है जैसे हैवानात (जानवर) और नबातात (पेड़ पौधे सब्ज़ा वग़ैरह)।

एक मर्तबा हज़रत हसन रह. के पास ख़्वान आया तो अबू यज़ीद रक़ाशी ने कहा- ऐ अबू सईद! क्या यह ख़्वान भी तस्बीह पढ़ रहा है? आपने फ़रमाया हाँ था। मतलब यह है कि जब तक गीली लकड़ी की सूरत में था तस्बीह पढ़ने वाला था, जब कटकर सूख गया तस्बीह जाती रही। इस क़ौल की ताईद में इस हदीस से भी मदद ली जा सकती है कि हुज़ूर सल्ल. दो क़ब्रों के पास से गुज़रते हैं तो फ़रमाते हैं इन्हें अज़ाब किया जा रहा है और किसी बड़ी चीज़ में नहीं एक तो पेशाब के वक़्त पर्दे का ख़्याल नहीं करता था और दूसरा चुग़लख़ोर था। फिर आपने एक तर टहनी लेकर उसके दो टुकड़े करके दो क़ब्रों पर गाड़ दिये और फ़रमाया कि शायद जब तक ये ख़ुश्क न हों इनके अज़ाब में कमी रहे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

इसलिये बाज़ उलेमा ने कहा है कि जब तक ये तर रहेंगी तस्बीह पढ़ती रहेंगी, जब ख़ुश्क हो जायेंगी तस्बीह बन्द हो जायेगी। वल्लाहु आलम।

अल्लाह तआ़ला हलीम व ग़फ़ूर है, अपने गुनाहगारों को सज़ा देने में जल्दी नहीं करता, देर करता है, ढील देता है फिर भी अगर कुफ़्र व फ़िस्क़ पर अड़ा रहे तो बेपनाह पंकड़ नाज़िल फ़रमा देता है। सहीहैन में है कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिम को मोहलत देता है, फिर जब पकड़ करता है तो नहीं छोड़ता। देखो क़ुरआन में है कि जब तेरा रब किसी बस्ती के लोगों को उनके मज़ालिम (अत्याचारों) पर पकड़ता है तो फिर ऐसी ही पकड़ होती है। एक और आयत में है कि बहुत सी ज़ालिम बस्तियों को हमने मोहलत दी, फिर अंततः पकड़ लिया। एक और आयत में है:

Maktabah E Ashraf

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ...... الخ.

और कितनी ही बस्तियों को उनके ज़ुल्म के सबब हमने तबाह कर दिया.......।

हाँ जो गुनाहों से रुक जाये, उनसे हट जाये, तौबा कर ले तो अल्लाह भी उस पर रहम और मेहरबानी करता है। जैसे क़ुरआन की एक आयत में है कि जो शख़्स बुराई करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर इस्तिग़फ़ार करे तो अल्लाह तआ़ला को बख़्शने वाला और मेहरबान पायेगा। सूरः फ़ातिर के आख़िर की आयतों में भी यही बयान है।

وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۝ وَّ جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ۝	और जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं तो हम आपके और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दरमियान एक पर्दा आड़ कर देते हैं। (45) और (वह पर्दा यह है कि) हम उनके दिलों पर इससे पर्दा डाल देते हैं कि वे इस (क़ुरआन के मक़सद) को समझें, और उनके कानों में डाट दे देते हैं, और जब आप क़ुरआन में सिर्फ़ अपने रब का ज़िक्र करते हैं तो वे लोग नफ़रत करते हुए पीठ फेरकर चल देते हैं। (46)

एक पर्दा और रोक

फ़रमाता है कि क़ुरआन की तिलावत के वक़्त उनके दिलों पर पर्दे पड़ जाते हैं, कोई असर उनके दिलों तक नहीं पहुँचता, वह पर्दा उन्हें छुपा लेता है। वे पर्दे अगरचे बज़ाहिर नज़र न आयें लेकिन हिदायत और उनके बीच एक रोक और आड़ बन जाते हैं। मुस्नद अबू यअ़ला मूसली में है कि सूरः "तब्बत् यदा" के उतरने पर अबू लहब की बीवी उम्मे जमील शोर मचाती धारदार पत्थर हाथ में लिये यह कहती हुई आयी कि इस (बुराई और निंदा करने वाले) को हम नहीं मानेंगे। हमें इसका दीन पसन्द नहीं, हम इसकी बातों के मुख़ालिफ़ हैं। उस वक़्त रसूले करीम सल्ल. बैठे हुए थे। हज़रत अबू बक्र रज़ि. आपके पास थे, कहने लगे हुज़ूर! यह आ रही है और आपको देख लेगी। आपने फ़रमाया बेफ़िक्र रहो यह मुझे नहीं देख सकती और आपने उससे बचने के लिये क़ुरआन की तिलावत शुरू कर दी, यही आयत तिलावत फ़रमाई। वह आयी और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. से पूछने लगी कि मैंने सुना है तुम्हारे नबी ने मेरी बुराई की है, आपने फ़रमाया नहीं! रब्बे काबा की क़सम तेरी कोई बुराई हुज़ूर ने नहीं की, वह यह कहती हुई लौटी कि तमाम क़ुरैश जानते हैं कि मैं उनके सरदार की लड़की हूँ।

इस पर्दे ने उनके दिलों को ढक रखा है जिससे यह क़ुरआन समझ नहीं सकते, उनके कानों में बोझ है जिससे वे क़ुरआन इस तरह सुन नहीं सकते कि उन्हें फ़ायदा पहुँचे, और जब तू क़ुरआन में ख़ुदा के एक होने का ज़िक्र पढ़ता है तो ये बुरी तरह भाग खड़े होते हैं। जैसे एक और आयत में है कि ख़ुदा तआ़ला के ज़िक्र से बेईमानों के दिल उचाट हो जाते हैं। मुसलमानों का 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहना मुश्रिकों पर बहुत

Maktab E Ashraf

भारी गुज़रता था। इब्लीस और उसका लश्कर उससे बहुत चिढ़ता था, उसके दबाने की पूरी कोशिश करता था लेकिन ख़ुदा का इरादा उनकी कोशिश के विपरीत उसे बुलन्द करने, इज़्ज़त देने और फैलाने का था, यही वह कलिमा है कि इसका क़ायल (कहने वाला) कामयाबी पाता है, इसका आ़मिल (अ़मल करने वाला) मदद पा जाता है। देख लो इस इलाक़े (यानी सऊदी अ़रब और हिजाज़ के इलाक़े) के हालात तुम्हारे सामने हैं कि यहाँ से वहाँ तक यह पाक कलिमा फैल गया। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद शैतानों का भागना है, अगरचे बात यह ठीक है कि ख़ुदा के ज़िक्र से, अज़ान से, तिलावते क़ुरआन से शैतान भागता है लेकिन इस आयत की यह तफ़सीर एक दूर की बात होगी।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝

जिस वक़्त ये लोग आपकी तरफ़ कान लगाते हैं तो हम ख़ूब जानते हैं जिस ग़रज़ से ये सुनते हैं, और जिस वक़्त ये लोग आपस में सरगोशियाँ "यानी चुपके-चुपके बातें" करते हैं, जबकि ये ज़ालिम यूँ कहते हैं कि तुम लोग महज़ ऐसे शख़्स का साथ दे रहे हो जिस पर जादू का असर हो गया है। (47) आप देखिए तो ये लोग आपके लिए कैसे-कैसे लक़ब तजवीज़ करते हैं। सो ये लोग गुमराह हो गए, रास्ता नहीं पा सकते। (48)

गुमराही

काफ़िरों के सरदार आपस में जो बातें बनाते थे वे नबी करीम सल्ल. को बतलाई जा रही हैं कि आप तो तिलावत में मशग़ूल होते हैं ये चुपके-चुपके कहा करते हैं कि इस पर किसी ने जादू कर दिया है, और हो सकता है यह मतलब हो कि यह तो एक इनसान है जो खाने पीने का मोहताज है। अगरचे यह लफ़्ज़ इस मायने में शे'र में भी है और इमाम इब्ने जरीर ने इसी को ठीक भी बतलाया है लेकिन है यह ग़ौर-तलब। उनका इरादा इस मौक़े पर इस कहने से यह था ख़ुद यह जादू में मुब्तला है कोई है जो इसे इस मौक़े पर कुछ पढ़ा जाता है। काफ़िर लोग आपके बारे में तरह-तरह के ख़्यालात ज़ाहिर करते थे। कोई कहता आप शायर हैं, कोई कहता काहिन हैं, कोई मजनूँ बतलाता, कोई जादूगर वग़ैरह। इसलिये फ़रमाता है कि देखो ये कैसे बहक रहे हैं कि हक़ की तरफ़ आ ही नहीं सकते।

सीरते मुहम्मद इस्हाक़ में है कि अबू सुफ़ियान बिन हरब, अबू जहल बिन हिशाम, अख़्नस बिन शुरैक़ रात के वक़्त अपने-अपने घरों से कलामुल्लाह शरीफ़ हुज़ूर सल्ल. की ज़बानी सुनने के लिये निकले। आप अपने घर में रात को नमाज़ पढ़ रहे थे, ये लोग आकर इधर उधर बैठ गये। एक को दूसरे की ख़बर न थी। रात को सुनते रहे, फ़जर होते ही यहाँ से चले तो इत्तिफ़ाक़न रास्ते में सबकी मुलाक़ात हो गयी, एक दूसरे को मलामत करने लगे और कहने लगे अब से यह हरकत न करना वरना और लोग तो बिल्कुल इसी के हो जायेंगे। लेकिन रात को फिर ये तीनों आ गये और अपनी-अपनी जगह बैठकर क़ुरआन सुनने में रात गुज़ार दी। सुबह वापस चले, रास्ते में ये फिर से मिले, कल की बातें दोहरायीं और आज पुख़्ता अ़हद किया कि

Maktab E Ashraf

अब से हरगिज़ कोई ऐसा काम न करेगा। तीसरी रात फिर यही हुआ। अब के उन्होंने कहा आओ अ़हद कर लें कि अब नहीं आयेंगे। चुनाँचे क़ौल व क़रार करके जुदा हुए सुबह को अख़्नस अपनी लाठी संभाले अबू सुफ़ियान के घर पहुँचा और कहने लगा- अबू हन्ज़ला! मुझे बतलाओ तुम्हारी अपनी राय मुहम्मद के बारे में क्या है? उसने कहा अबू सअ़लबा जो आयतें क़ुरआन की मैंने सुनी हैं उनमें से बहुत सी आयतों का तो मतलब मायने मैं जान गया, लेकिन बहुत सी आयतों की मुराद मुझे मालूम नहीं हुई। अख़्नस ने कहा वल्लाह मेरा भी यही हाल है। यहाँ से होकर अख़्नस अबू जहल के पास पहुँचा। उससे भी यही सवाल किया। उसने कहा सुनिये शराफ़त व सरदारी (लीडरी और चौधराहट) के बारे में हमारा बनू अ़ब्दे मुनाफ़ (यानी नबी पाक के ख़ानदान) से मुद्दत का झगड़ा चला आता है, उन्होंने खिलाया हमने भी खिलाना शुरू कर दिया, उन्होंने सवारियाँ दीं हमने भी उन्हें सवारियों के जानवर दिये, उन्होंने लोगों के साथ सुलूक किये और उन्हें इनाम दिये हमने भी उनसे पीछे रहना पसन्द न किया। अब जबकि इन तमाम बातों में वे और हम बराबर हैं और दौड़ में जब वे बाज़ी न ले जा सके तो झट से उन्होंने कहा कि हम में नुबुव्वत है, हम में एक शख़्स है जिसके पास आसमानी 'वही' आती है। अब बताओ इसको हम कैसे मान लें? वल्लाह न इस पर हम ईमान लायेंगे न कभी इसे सच्चा कहेंगे। उस वक़्त अख़्नस उसे छोड़कर चल दिया।

और ये लोग कहते हैं कि क्या जब हम (मरने के बाद) हड्डियाँ और चूरा हो जाएँगे, तो क्या हम नए सिरे से पैदा और ज़िन्दा किए जाएँगे। (49) आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि तुम पत्थर या लोहा (50) या और कोई ऐसी मख़्लूक़ होकर देख लो जो तुम्हारे ज़ेहन में बहुत ही दूर की चीज़ हो। इसपर पूछेंगे कि वह कौन है जो हमको दोबारा ज़िन्दा करेगा? आप फ़रमा दीजिए कि वह वह है जिसने तुमको पहली बार पैदा किया था। इसपर आपके आगे सर हिला-हिलाकर कहेंगे कि (अच्छा बतलाओ) यह कब होगा? आप फ़रमा दीजिए कि अ़जब नहीं यह क़रीब ही आ पहुँचा हो। (51) यह उस दिन होगा कि अल्लाह तुमको पुकारेगा और तुम (बिना इख़्तियार) उसकी तारीफ़ करते हुए हुक्म का पालन कर लोगे, और तुम यह ख़्याल करोगे कि तुम बहुत ही कम रहे थे। (52)	وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۝ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۝ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ۭ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۭ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ ع

बाज़ शुब्हात और उनके जवाबात

काफ़िर जो क़ियामत के क़ायल न थे और मरने के बाद की ज़िन्दगी को मुहाल जानते थे, वे बतौर इनकार पूछा करते थे कि क्या हम जब हड्डी और मिट्टी हो जायेंगे, गुबार बन जायेंगे, कुछ न रहेंगे

Maktab E Ashraf

बिल्कुल मिट जायेंगे, फिर भी नई पैदाईश से पैदा होंगे? सूरः नाज़िआत में इन मुन्किरों का क़ौल बयान हुआ है कि क्या हम मरने के बाद उल्टे पाँव ज़िन्दगी में लौटाये जायेंगे? और वह भी ऐसी हालत में कि हमारी हड्डियाँ भी गल-सड़ गयी हों? भाई यह तो बड़े ही ख़सारे की बात है।

सूरः यासीन में है कि यह हमारे सामने मिसालें बयान करने बैठ गया और अपनी पैदाईश को फ़रामोश कर गया (भूल गया)......। पस उन्हें जवाब दिया जाता है कि हड्डियाँ तो क्या तुम चाहे पत्थर बन जाओ, चाहे लोहा बन जाओ, चाहे इससे भी ज़्यादा सख़्त चीज़ें बन जाओ जैसे पहाड़ या ज़मीन या आसमान बल्कि तुम ख़ुद मौत ही क्यों न बन जाओ, अल्लाह तआ़ला के लिये तुम्हारा जिलाना मुश्किल नहीं। जो चाहो हो जाओ, दोबारा उठोगे ज़रूर।

हदीस में है कि भेड़िये की सूरत में मौत को क़ियामत के दिन जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान लाया जायेगा और दोनों जगह के रहने वालों से कहा जायेगा कि इसे पहचानते हो? सब कहेंगे हाँ। फिर उसे वहीं ज़िबह कर दिया जायेगा और मुनादी हो जायेगी कि ऐ जन्नतियो! अब हमेशगी है मौत नहीं। और ऐ जहन्नमियो! अब हमेशगी (सदा इसी हाल में रहना) है मौत नहीं। यहाँ फ़रमान है कि ये पूछते हैं कि अच्छा जब हम हड्डियाँ और चूरा हो जायेंगे या पत्थर या लोहा हो जायेंगे या जो हम चाहें और जो बड़ी से बड़ी चीज़ हो वही हम हो जायें तो यह बतलाओ कि यह किसके इख़्तियार में है कि अब हमें फिर से उस ज़िन्दगी की तरफ़ लौटा दे? उनके इस सवाल और बेजा एतिराज़ के जवाब में तो उन्हें समझाया कि तुम्हें लौटाने वाला तुम्हारा सच्चा ख़ालिक़ अल्लाह तआ़ला है, जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है कि तुम कुछ न थे। फिर उस पर दूसरी बार की पैदाईश क्या भारी है, बल्कि बहुत आसान है, तुम चाहे कुछ भी बन जाओ। यह जवाब चूँकि लाजवाब है इसलिये भौंचक्के तो हो जायेंगे लेकिन फिर भी अपनी शरारत से बाज़ न आयेंगे, अपने बुरे अ़क़ीदों को न छोड़ेंगे, और बतौर मज़ाक़ सर हिलाते हुए कहेंगे कि अच्छा यह होगा कब? सच्चे हो तो वक़्त का निर्धारण कर दो। बेईमानों का यह शेवा है कि वे जल्दी मचाते रहते हैं, हाँ है तो वह वक़्त क़रीब ही तुम उसके लिये इन्तिज़ार कर लो, ग़फ़लत न बरतो, उसके आने में कोई शक नहीं। आने वाली चीज़ को आई हुई समझा करो। ख़ुदा की एक आवाज़ के साथ ही तुम ज़मीन से निकल खड़े होगे। एक आँख झपकने की देर भी तो न लगेगी। ख़ुदा के फ़रमान के साथ ही तुमसे मैदाने हश्र भर जायेगा। क़ब्रों से उठकर ख़ुदा की तारीफ़ें करते हुए उसके अहकाम का पालन करने में खड़े हो जाओगे। तारीफ़ के लायक़ वही है, तुम उसके हुक्म और इरादे से बाहर नहीं हो।

हदीस में है कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहने वालों पर उनकी क़ब्र में कोई वहशत नहीं होगी, गोया कि मैं उन्हें देख रहा हूँ कि वे क़ब्रों से उठ रहे हैं, अपने सर से मिट्टी झाड़ते हुए "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कहते हुए उठ खड़े होंगे। कहेंगे ख़ुदा की तारीफ़ है जिसने हमसे ग़म दूर कर दिया। सूरः फ़ातिर की तफ़सीर में यह बयान आ रहा है इन्शा-अल्लाह तआ़ला। उस वक़्त तुम्हारा यक़ीन होगा कि तुम बहुत ही कम मुद्दत दुनिया में रहे, गोया सुबह या शाम। कोई कहेगा दस दिन, कोई कहेगा एक दिन, कोई समझेगा एक घड़ी ही। सवाल पर यही कहेंगे कि एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा। और इस पर क़समें खायेंगे। इसी तरह दुनिया में भी अपने झूठ पर क़समें खाते रहते थे।

और आप मेरे (मुसलमान) बन्दों से कह दीजिए कि ऐसी बात कहा करें जो बेहतर हो,	وَقُلْ لِّعِبَادِیْ یَقُوْلُوا الَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ؕ

Maktaba Ashraf

शैतान (सख़्त-कलामी कराके) लोगों में फ़साद डलवा देता है, वाक़ई शैतान इनसान का खुला दुश्मन है। (53)	اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝

इनसान का दुश्मन

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि आप मोमिन बन्दों से फ़रमा दें कि वे अच्छे लफ़्ज़ों, बेहतर जुमलों और तहज़ीब से कलाम करते रहें, वरना शैतान उनमें आपस में झगड़ा और विवाद करा देगा, बुराई डलवा देगा, लड़ाई झगड़े शुरू हो जायेंगे, वह इनसान का दुश्मन है, घात में लगा रहता है। इसलिये हदीस में मुसलमान भाई की तरफ़ किसी हथियार से इशारा करना भी हराम है, कि कहीं शैतान उसे लगा न दे और यह जहन्नमी न बन जाये। मुलाहिज़ा हो मुस्नद अहमद।

हुज़ूर सल्ल. ने लोगों के एक मजमे में फ़रमाया कि सब मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं, कोई किसी पर ज़ुल्म व सितम न करे, कोई किसी को बेइज़्ज़त न करे। फिर आपने अपने सीने की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया- तक़वा यहाँ है। जो दो शख़्स आपस में दीनी दोस्त हों फिर उनमें जुदाई हो जाये उस जुदाई को उनमें से जो बयान करे वह बयान करने वाला बुरा है, वह बदतर है वह निहायत शरीर है। (मुस्नद)

तुम सबका हाल तुम्हारा परवर्दिगार ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तुमपर रहमत फ़रमाए या अगर वह चाहे तुमको अ़ज़ाब देने लगे। और हमने आप (तक) को उन (की हिदायत) का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा। (54) और आपका परवर्दिगार ख़ूब जानता है उनको जो कि आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं, और हमने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है, और हम दाऊद को ज़बूर दे चुके हैं। (55)	رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝

अम्बिया की जमाअ़त

तुम्हारा रब तुमसे अच्छी तरह वाक़िफ़ है, वह हिदायत के मुस्तहिक़ लोगों को बख़ूबी जानता है। वह जिस पर चाहता है रहम करता है, अपनी इताअ़त की तौफ़ीक़ देता है और अपनी जानिब झुका लेता है। इसी तरह जिसे चाहे बुरे आमाल के सबब पकड़ लेता है और सज़ा देता है। हमने तुझे उनका ज़िम्मेदार नहीं बनाया, तेरा काम सिर्फ़ होशियार कर देना है, तेरे मानने वाले जन्नती होंगे और न मानने वाले दोज़ख़ी बनेंगे। ज़मीन व आसमान के तमाम इनसान, जिन्नात, फ़रिश्तों का उसे इल्म है, हर एक के मरतबों का उसे इल्म है। एक को एक पर फ़ज़ीलत (बड़ाई) है। नबियों में भी दर्जे हैं, कोई कलीमुल्लाह है, कोई बुलन्द दर्जे वाला है। एक हदीस में है कि नबियों में फ़ज़ीलतें क़ायम न किया करो (यानी एक को दूसरे पर इस तरह

Maktaba Ashraf

तरजीह न दो किसी का अपमान या हल्कापन महसूस हो)। इससे मतलब सिर्फ़ तास्सुब और नफ़्स परस्ती है, अपने तौर पर फ़ज़ीलत कायम करना है न यह कि क़ुरआन व हदीस से साबित-शुदा फ़ज़ीलत से भी इनकार। जो फ़ज़ीलत जिस नबी को दलील से साबित हो जायेगी उसका मानना वाजिब है। मानी हुई बात है कि तमाम अम्बिया से रसूल अफ़ज़ल हैं, और रसूलों में पाँच रसूल बड़े रुतबे वाले हैं, जो दूसरे रसूलों में सबसे अफ़ज़ल हैं, जिनका नाम सूरः अहज़ाब की आयत में है- यानी मुहम्मद, नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा अ़लैहिमुस्सलाम।

सूरः शूरा की आयतः

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّيْنِ...... الخ.

(यानी सूरः शूरा आयत 13) में भी इन पाँचों के नाम मौजूद हैं। जिस तरह ये सब चीज़ें सारी उम्मत मानती है इसी तरह बग़ैर इख़्तिलाफ़ (यानी बिना किसी मतभेद) के यह भी साबित है कि उनमें भी सबसे अफ़ज़ल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. हैं। फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जैसा कि मशहूर है। हमने इसकी दलीलें दूसरी जगह पर तफ़सील व विस्तार से बयान की हैं।

फिर फ़रमाता है कि हमने दाऊद पैग़म्बर को ज़बूर दी, यह भी उनकी फ़ज़ीलत और शर्फ़ (सम्मान व बुलन्द रुतबे) की दलील है। सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर क़ुरआन इतना आसान कर दिया गया था कि जानवर पर ज़ीन कसी जाये इतनी सी देर में आप क़ुरआन पढ़ लिया करते थे।

नोटः पहले भी तफ़सीर में बयान आ चुका है कि पहली आसमानी किताबों को भी क़ुरआन कहा जाता है। अब यह जो आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर नाज़िल हुआ यह जामे क़ुरआन है इसमें पहली तमाम आसमानी किताबों की तालीमात व मज़ामीन भी मौजूद हैं। इसलिये ज़बूर अपने दौर का क़ुरआन था, गोया जो आसमानी 'वही' आती थी और उसको किताब की शक्ल में नाज़िल किया जाता था उस पर भी क़ुरआन होने का हुक्म लगाया जाता है।

मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ۝

आप फ़रमा दीजिए कि जिनको तुम अल्लाह तआ़ला के सिवा (माबूद) क़रार दे रहे हो, ज़रा उनको पुकारो तो सही। सो (यक़ीनन) वे न तुमसे तकलीफ़ को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न (उसके) बदल डालने का। (56) ये लोग जिनको ये (मुश्रिक लोग) पुकार रहे हैं, वे ख़ुद ही अपने रब की तरफ़ ज़रिया ढूँढ रहे हैं, कि उनमें कौन ज़्यादा मुक़र्रब "यानी क़रीबी" (बनता) है। और वे उसकी रहमत के उम्मीदवार हैं और उसके अ़ज़ाब से डरते हैं। (और) वाक़ई आपके रब का अ़ज़ाब है भी डरने के क़ाबिल। (57)

Maktab E Ashraf

सब ख़ुदा तआ़ला के मोहताज हैं

ख़ुदा के सिवा औरों की इबादत करने वालों से कहिये कि तुम उन्हें ख़ूब पुकार कर देख लो कि क्या वे तुम्हारे कुछ भी काम सकते हैं? न उनके बस की बात है कि किसी मुश्किल को हल कर दें, न यह बात कि उसे किसी और पर टाल दें, वे बिल्कुल बेबस हैं। क़ादिर और ताक़त वाला सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला है जो एक है, मख़्लूक़ का ख़ालिक़ और सबका हुक्मराँ वही है। ये मुश्रिक कहा करते थे कि हम फ़रिश्तों की, मसीह (हज़रत ईसा) की और उज़ैर की इबादत करते हैं। इनके माबूद तो ख़ुद एक तरफ़ नज़दीकी (अल्लाह की निकटता) की जुस्तजू में हैं। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि जिन जिन्नात की ये मुश्रिक लोग पूजा करते थे वे ख़ुद मुसलमान हो गये थे। लेकिन यह अब तक अपने कुफ़्र पर जमे हुए हैं, इसलिये इन्हें ख़बरदार किया गया कि तुम्हारे माबूद ख़ुद अल्लाह की तरफ़ झुक गये।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं कि ये जिन्नात फ़रिश्तों की एक क़िस्म में से थे। हज़रत ईसा, हज़रत मरियम, हज़रत उज़ैर अ़लैहिमुस्सलाम, सूरज, चाँद, फ़रिश्ते सब अल्लाह तआ़ला की निकटता की तलाश में हैं। इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि ठीक मतलब यह है कि जिन जिन्नात को ये पूजते थे आयत में वही मुराद हैं, क्योंकि हज़रत मसीह वग़ैरह का ज़माना तो गुज़र चुका था और फ़रिश्ते पहले ही से अल्लाह की इबादत करने वाले थे, तो यहाँ भी जिन्नात मुराद हैं। 'वसीला' के मायने नज़दीकी व निकटता के हैं जैसे कि हज़रत क़तादा रह. का क़ौल है। ये सब बुज़ुर्ग (यानी हज़रत ईसा, मरियम, उज़ैर वग़ैरह) इस धुन में हैं कि कौन ख़ुदा से ज़्यादा नज़दीकी हासिल कर ले। वे ख़ुदा की रहमत के इच्छुक और उसके अ़ज़ाब से डरने वाले हैं। हक़ीक़त में बग़ैर इन दोनों बातों के इबादत नामुकम्मल है। ख़ौफ़ गुनाहों से रोकता है और उम्मीद इताअ़त (नेक आमाल के पालन) पर आमादा करती है। वास्तव में उसके अ़ज़ाब हैं ही डर के क़ाबिल, अल्लाह हमें बचाये। आमीन

وَإِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُورًا ○	और (काफ़िरों की) ऐसी कोई बस्ती नहीं जिसको हम क़ियामत से पहले हलाक न करेंगे, या (क़ियामत के दिन) उसको सख़्त अ़ज़ाब न देंगे। यह (बात) किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) में लिखी हुई है। (58)

क़ियामत से पहले

वह तहरीर जो 'लौहे महफ़ूज़' में लिख दी गयी है, वह हुक्म जो जारी कर दिया गया है, उसका बयान इस आयत में है कि गुनाहगारों की बस्तियाँ यक़ीनन वीरान कर दी जायेंगी या उनके गुनाहों की वजह से तबाही के क़रीब हो जायेंगी, इसमें हमारी जानिब से कोई ज़ुल्म न होगा बल्कि उनके अपने करतूत का ख़मियाज़ा होगा। उनके आमाल का वबाल होगा। रब की आयतों और उसके रसूलों से सरकशी (नाफ़रमानी) करने का फल होगा।

Maktaba-E-Ashraf

وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۭ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ۭ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ○	और हमको ख़ास (फ़रमाईशी) मोजिज़ों के भेजने से यही बात रोक हुई कि पहले लोग उनको झुठला चुके हैं, और हमने क़ौमे समूद को ऊँटनी दी थी जो कि बसीरत "यानी समझ और दानाई" का ज़रिया थी, सो उन लोगों ने उसके साथ ज़ुल्म किया, और हम ऐसे मोजिज़ों को साफ़ डराने के लिए भेजा करते हैं। (59)

अल्लाह की आयतों और निशानियों का इनकार

हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में काफ़िरों ने आपसे कहा कि हज़रत आप से पहले के अम्बिया में से कुछ के ताबे हवा हुआ करती थी, बाज़ मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे वग़ैरह। अब अगर आप चाहते हैं कि हम भी आप पर ईमान लायें तो आप इस सफ़ा पहाड़ को सोने का कर दीजिए हम आपकी सच्चाई के क़ायल हो जायेंगे। आप पर 'वही' आयी कि अगर आपकी भी यही ख़्वाहिश हो तो मैं इस पहाड़ को अभी सोने का बना देता हूँ लेकिन यह ख़्याल रहे कि अगर फिर भी ये ईमान न लाये तो फिर इन्हें मोहलत न मिलेगी, बिना किसी देरी और विलम्ब के इन पर अ़ज़ाब आ जायेगा और तबाह कर दिये जायेंगे। और अगर आपको इन्हें मोहलत और सोचने का मौक़ा देना मन्ज़ूर है तो मैं ऐसा ही करूँ। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ख़ुदाया मैं इन्हें बाक़ी रखने में ही ख़ुश हूँ।

मुस्नद में इतना और भी है कि उन्होंने यह भी कहा था कि बाक़ी और पहाड़ियाँ यहाँ से खिसक जायें ताकि हम यहाँ खेती-बाड़ी कर सकें.....। इस पर यह आयत नाज़िल हुई। एक और रिवायत में है कि आपने दुआ़ माँगी। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और कहा आपका परवर्दिगार आपको सलाम कहता है और फ़रमाता है कि अगर आप चाहें तो सुबह ही को यह पहाड़ सोने का हो जायेगा, लेकिन अगर फिर भी इनमें से कोई ईमान न लाया तो उसे वह सज़ा होगी जो इससे पहले किसी को न हुई हो, और अगर आपका इरादा हो तो मैं उन पर तौबा और रहमत के दरवाज़े खुले छोड़ूँ? आपने दूसरी सूरत इख़्तियार की। मुस्नद अबू यअ़्ला में है कि आयतः

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ.

(सूरः शुअ़रा आयत 214) जब उतरी तो इस हुक्म के पालन के लिये आप अबू क़ुबीस पहाड़ पर चढ़ गये और फ़रमाने लगे। ऐ अ़ब्दे मुनाफ़! मैं तुम्हें डराने वाला हूँ। क़ुरैश यह आवाज़ सुनते ही जमा हो गये। फिर कहने लगे सुनिये! आप नुबुव्वत के दावेदार हैं। सुलैमान नबी के ताबे हवा थी, मूसा नबी के ताबे दरिया हो गया था, ईसा नबी मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे। तू भी नबी है अल्लाह से कह कि यह पहाड़ यहाँ से हटाकर ज़मीन को खेती के क़ाबिल बना दे ताकि हम खेती-बाड़ी करें। यह नहीं तो हमारे मुर्दों की ज़िन्दगी की दुआ़ अल्लाह से कर कि हम और वे मिलकर बैठें और आपस में बातें करें। यह भी नहीं तो इस पहाड़ को सोने का बनवा दे कि हम जाड़े गर्मियों के सफ़र से निजात पायें। उसी वक़्त आप पर 'वही' उतरनी शुरू हो गयी। उसके ख़ात्मे पर आपने फ़रमाया उसकी क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान

है कि तुमने जो कुछ मुझसे तलब किया था मुझे उसके होने में और इस बात में कि तुम रहमत के दरवाज़े में दाख़िल हो जाओ इख़्तियार दिया गया कि ईमान व इस्लाम के बाद तुम रहमते ख़ुदा समेट लो या तुम यह निशानियाँ देख लो, लेकिन फिर न मानो तो गुमराह हो जाओ और रहमत के दरवाज़े तुम पर बन्द हो जायें, तो मैं तो डर गया और मैंने रहमत का दरवाज़ा खुला रहना ही पसन्द किया, क्योंकि दूसरी सूरत में तुम्हारे ईमान न लाने पर तुम पर वह अ़ज़ाब उतरते जो तुमसे पहले किसी पर न उतरे हों। इस पर ये आयतें उतरीं। और आयतः

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ.

(सूरः रअ़द आयत 31) नाज़िल हुई। यानी आयतों (निशानियों) के भेजने और मुँह माँगे मोजिज़ों के दिखाने से हम आ़जिज़ तो नहीं, बल्कि यह हम पर बहुत आसान है जो तेरी क़ौम चाहती है। हम उन्हें दिखा देते लेकिन उस सूरत में उनके न मानने पर फिर हमारे अ़ज़ाब न अटकते, अपने से पहलों को देखो कि इसी में बरबाद हुए। चुनाँचे सूरः मायदा में है कि मैं तुम पर दस्तरख़्वान उतार रहा हूँ लेकिन इसके बाद जो कुफ़्र करेगा उसे वह सज़ा दी जायेगी जो उससे पहले किसी को न हुई हो। क़ौमे समूद वालों को देखो कि उन्होंने एक ख़ास पत्थर में से ऊँटनी का निकलना तलब किया। हज़रत सालेह की दुआ़ पर वह निकली, लेकिन वे न माने बल्कि उस ऊँटनी को मार डाला और रसूल को झुठलाते रहे, जिस पर उन्हें तीन दिन की मोहलत मिली और आख़िर तबाह कर दिये गये। उनकी यह ऊँटनी भी ख़ुदा की वहदानियत (एक होने) की एक निशानी थी और उसके रसूल की सदाक़त (सच्चाई) की अ़लामत थी। लेकिन उन लोगों ने फिर भी कुफ़्र किया। उसका पानी बन्द किया। आख़िरकार उसे मार डाला, जिसके नतीजे और सज़ा में अव्वल से लेकर आख़िर तक सब मार डाले गये और ख़ुदा तआ़ला की पकड़ में आ गये। आयतें सिर्फ़ धमकाने के लिये होती हैं कि वे इबरत व नसीहत हासिल कर लें।

रिवायत है कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के ज़माने में कूफ़ा में ज़लज़ला आया तो आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला चाहता है कि तुम उसकी जानिब झुको। तुम्हें फ़ौरन उसकी तरफ़ मुतवज्जह होना चाहिये। हज़रत उमर रज़ि. के ज़माने में मदीना शरीफ़ में कई बार झटके महसूस हुए तो आपने फ़रमायाः अल्लाह की क़सम तुमने ज़रूर कोई नई बात की है। देखो अगर अब ऐसा हुआ तो मैं तुम्हें सख़्त सज़ा दूँगा। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि आपने फ़रमाया- सूरज चाँद ख़ुदा की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं। ये किसी की मौत व हयात से ग्रहण में नहीं आते, बल्कि अल्लाह तआ़ला इनसे अपने बन्दों को डराता है, जब तुम यह देखो तो अल्लाह का ज़िक्र, दुआ़ और इस्तिग़फ़ार में लग जाओ। ऐ उम्मते मुहम्मद! अल्लाह की क़सम! अल्लाह से ज़्यादा ग़ैरत वाला कोई नहीं कि उसके बाँदी गुलाम ज़िनाकारी करें (यानी अल्लाह तआ़ला को यह पसन्द नहीं कि उसके बन्दे ज़िना और बदफ़ेली में लिप्त हों)। ऐ उम्मते मुहम्मद! वल्लाह जो मैं जानता हूँ अगर तुम जानते तो बहुत कम हंसते और बहुत ज़्यादा रोते।

وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ط وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً	**और (आप वह वक़्त याद कर लीजिए) जबकि हमने आपसे कहा था कि आपका रब अपने इल्म से तमाम लोगों को घेरे हुए है, और हमने जो तमाशा आपको (जागने की हालत में**

لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ۭ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝	मेराज के अन्दर) दिखलाया था, और जिस दरख़्त की क़ुरआन में मज़म्मत "यानी निंदा" की गई है, हमने तो उन (दोनों चीज़ों) को उन लोगों के लिए गुमराही का सबब कर दिया, और हम उनको डराते रहते हैं लेकिन उनकी बड़ी सरकशी बढ़ती ही चली जाती है। (60)

बुरा और नापसन्दीदा पेड़

अल्लाह सुब्हानहू व तआला अपने रसूल सल्ल. को दीन की तब्लीग़ की रग़बत दिला रहा है और आपकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ले रहा है कि सब लोग उसी की क़ुदरत के तहत हैं। वह सब पर ग़ालिब है, सब उसके मातहत हैं। वह उन सबसे तुझे बचाता रहेगा, जो हमने तुझे दिखाया वह लोगों की एक खुली आज़माईश है। यह दिखाना मेराज वाली रात में था, जो आपकी आँखों ने देखा। नापसन्दीदा पेड़ से मुराद ज़क़्क़ूम का पेड़ है। बहुत से ताबिईन और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल है कि यह दिखाना आँख का दिखाना था, जो मेराज की रात में दिखाया गया था। मेराज की हदीसें पूरी तफ़सील के साथ इस सूरत के शुरू में बयान हो चुकी हैं। यह भी गुज़र चुका है कि मेराज के वाक़िए को सुनकर बहुत से मुसलमान मुर्तद हो गये (यानी इस्लाम से फिर गये) और हक़ से फिर गये, क्योंकि अ़क़्ल में यह न आया तो अपनी जहालत से इसे झूठा जाना और दीन को छोड़ बैठे। उनके उलट कामिल ईमान वाले अपने यक़ीन में और बढ़ गये और उनके ईमान और मज़बूत हो गये। दीन पर जमाव और मज़बूती में ज़्यादा हो गये। पस अल्लाह तआ़ला ने इस वाक़िए को लोगों की आज़माईश और उनके इम्तिहान का ज़रिया बना दिया।

हुज़ूर सल्ल. ने जब ख़बर दी और क़ुरआन में आयत उतरी कि दोज़ख़ियों को ज़क़्क़ूम का पेड़ खिलाया जायेगा और आपने उसे देखा भी, तो काफ़िरों ने इसे सच न माना और अबू जहल मलऊन मज़ाक़ उड़ाते हुए कहने लगा- लाओ खजूर और मक्खन लाओ और उसका ज़क़्क़ूम करो, यानी दोनों को मिला दो और ख़ूब शौक़ से खाओ, बस यही ज़क़्क़ूम है। फिर इस ख़ुराक से घबराने के क्या मायने? एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद बनू उमैया हैं, लेकिन यह क़ौल बिल्कुल कमज़ोर और ग़रीब है, तमाम मुफ़स्सिरीन पहले क़ौल के ही क़ायल हैं जो इस आयत को मेराज के बारे में मानते हैं। जैसे इब्ने अ़ब्बास, मसरूक़, अबू मालिक, हसन बसरी रह. वग़ैरह।

सहल बिन सईद कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़ुलाँ क़बीले वालों को अपने मिम्बर पर बन्दरों की तरह नाचते हुए देखा और आपको इससे बहुत रंज हुआ। फिर इन्तिक़ाल तक आप पूरी हंसी से हंसते हुए नहीं दिखाई दिये। इसी की तरफ़ इस आयत में इशारा है। (इब्ने जरीर) लेकिन यह सनद बिल्कुल कमज़ोर है। मुहम्मद बिन हसन बिन ज़बाला मतरूक है (यानी इनकी हदीसें नहीं ली जातीं) और इनके उस्ताद भी बिल्कुल ज़ईफ़ हैं। ख़ुद इमाम इब्ने जरीर रह. का पसन्दीदा क़ौल भी यही है कि इससे मेराज की रात और और ज़क़्क़ूम का पेड़ मुराद है, क्योंकि मुफ़स्सिरीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है। हम काफ़िरों को अपने अ़ज़ाब से डरा रहे हैं लेकिन वे अपनी ज़िद, घमंड, हठधर्मी और बेईमानी में और बढ़े जा रहे हैं।

Maktaba Ashraf

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۚ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ۡ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝	और जबकि हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, सो उन सबने सज्दा किया मगर इब्लीस "यानी शैतान" ने (न किया और) कहा कि क्या मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूँ जिसको आपने मिट्टी से बनाया है। (61) कहने लगा कि इस शख़्स को जो आपने मुझ पर फ़ौक़ियत "यानी बरतरी" दी है तो भला बताईए (तो, ख़ैर) अगर आपने मुझको क़ियामत के ज़माने तक मोहलत दे दी तो मैं (भी) सिवाय थोड़े-से लोगों के इसकी तमाम औलाद को अपने बस में करूँगा। (62)

शैतान की सरकशी

शैतान की पुरानी और पहले दिन से दुश्मनी से इनसान को आगाह किया जा रहा है कि वह तुम्हारे बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का खुला दुश्मन था। उसकी औलाद बराबर इसी तरह तुम्हारी दुश्मन है। सज्दे का हुक्म सुनकर सब फ़रिश्तों ने तो सर झुका दिया लेकिन उसने तकब्बुर किया, उसे (हज़रत आदम को) हक़ीर समझा और साफ़ इनकार कर दिया कि नामुम्किन है कि मेरा सर किसी मिट्टी से बने हुए के सामने झुके। मैं इससे कहीं ज़्यादा बेहतर व अफ़ज़ल हूँ। मैं आग हूँ यह मिट्टी है। फिर उसकी जुर्रत देखिये कि ख़ुदा तआ़ला के दरबार में गुस्ताख़ी के लहजे में कहता है कि अच्छा इसे अगर तूने मुझ पर फ़ज़ीलत (बड़ाई और बड़ा रुतबा) दी तो क्या हुआ मैं भी इसकी औलाद को बरबाद करके ही छोड़ूँगा। सबको अपना ताबेदार (बात मानने वाला) बना लूँगा और बहका दूँगा। कुछ मामूली से तो मेरे फन्दे से छूट जायेंगे बाक़ी सबको तबाह कर दूँगा।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ۝ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ۝	इरशाद हुआ, जा जो शख़्स उनमें से तेरे साथ हो लेगा, सो तुम सबकी सज़ा जहन्नम है, सज़ा पूरी। (63) और उनमें से जिस-जिसपर तेरा क़ाबू चले, अपनी चीख़- पुकार से उसका क़दम उखाड़ देना, और उनपर अपने सवार और प्यादे चढ़ा लाना, और उनके माल और औलाद में अपना साझा कर लेना, और उनसे वायदा करना (कि गुनाहों पर पकड़ न होगी) और शैतान उन लोगों से बिल्कुल झूठे वायदे करता है। (64) मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा ज़रा क़ाबू न चलेगा और आपका रब काफ़ी कारसाज़ है। (65)

Maktab E Ashraf

ख़ुदा तआ़ला का जवाब

शैतान ने ख़ुदा तआ़ला से मोहलत चाही, अल्लाह तआ़ला ने मन्ज़ूर फ़रमा ली और इरशाद हुआ कि एक तयशुदा वक़्त तक के लिये तुझे मोहलत है, तेरी और तेरे ताबेदारों की बुराईयों का बदला जहन्नम है जो पूरी सज़ा है। अपनी आवाज़ से जिसे तू बहका सके बहका ले। यानी गानों से और तमाशों से उन्हें बहकाता फिर, जो भी ख़ुदा की नाफ़रमानी की तरफ़ बुलाने वाली आवाज़ हो वह शैतानी आवाज़ है। इसी तरह तू अपने प्यादे और सवार लेकर जिस पर तुझसे हमला हो सके हमला कर ले, जिस क़द्र तुझसे हो सके उन पर अपना क़ब्ज़ा और इक़्तिदार जमा। यह तक़दीरी मामला है न कि हुक्म। शैतानों की यही ख़स्लत है कि वे अल्लाह के बन्दों को भड़काते और बहकाते हैं, उन्हें गुनाहों पर आमादा करते रहते हैं, ख़ुदा की नाफ़रमानी में चाहे सवारी पर हो या पैदल हो वह शैतानी लश्कर में है। ऐसे जिन्नात भी हैं और इनसान भी हैं जो उसके ताबेदार हैं।

उनके मालों में और औलादों में भी तू शरीक रह, यानी अल्लाह की नाफ़रमानियों में उनका माल ख़र्च करा, उनसे सूदख़ोरी करा, बुराई से माल जमा करें और हराम कामों में ख़र्च करें, हलाल जानवरों को अपनी इच्छा से हराम क़रार दें वग़ैरह। औलाद में शिर्कत यह है कि जैसे ज़िनाकारी हो जिससे औलाद हो, जो औलाद बचपन में बेवक़ूफ़ी की वजह से उनके माँ-बाप ने ज़िन्दा दफ़न कर दी हो, या मार डाली हो, उसे यहूदी ईसाई मजूसी वग़ैरह बना दिया हो। औलाद के नाम अ़ब्दुल-हारिस, अ़ब्दुश्शम्स और अ़ब्दे फ़ुलाँ (यानी अल्लाह के अ़लावा दूसरों की तरफ़ बन्दा होने की निस्बत करके नाम) रखा हो। ग़र्ज़ किसी सूरत में भी शैतान को उसमें दाख़िल किया हो, या उसको साथ किया हो, यही शैतान की शिर्कत है। सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मैंने अपने बन्दों को तौहीद पर (यानी अल्लाह को एक मानने वाला होने पर) एक तरफ़ा पैदा किया फिर शैतान ने आकर उन्हें बहका दिया और हलाल चीज़ें हराम कर दीं। बुख़ारी व मुस्लिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुम में से जो अपनी बीवी के पास जाने का इरादा करे तो यह पढ़ लेः

اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطٰنَ وَجَنِّبِ الشَّيْطٰنَ مَارَزَقْتَنَا.

अल्लाहुम्-म जन्निब्नश्शैता-न व जन्निबिश्शैता-न मा रज़क़्तना।

यानी या अल्लाह! तू हमें शैतान से बचा और उसे भी जो तू हमें अ़ता फ़रमाये।

तो अगर उसमें (यानी उस मिलने में) कोई बच्चा अल्लाह की तरफ़ से ठहर जायेगा तो उसे हरगिज़-हरगिज़ कभी भी शैतान कोई नुक़सान न पहुँचा सकेगा। फिर फ़रमाता है कि जा तू उन्हें धोखे के झूठे वादे दिया कर। चुनाँचे क़ियामत के दिन यह ख़ुद कहेगा कि अल्लाह के वादे तो सब सच्चे थे और मेरे वादे सब ग़लत थे। फिर फ़रमाता है कि मेरे मोमिन बन्दे मेरी हिफ़ाज़त में हैं, उन्हें शैतान मलऊन से बचाता रहूँगा। ख़ुदा की वकालत, उसकी हिफ़ाज़त, उसकी मदद, उसकी ताईद बन्दों को काफ़ी है।

फ़ायदाः मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मोमिन अपने शैतान पर इस तरह क़ाबू पा लेता है जैसे यह शख़्स जो किसी जानवर को लगाम चढ़ाये हुए हो।

Maktab E Ashraf

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ○	तुम्हारा रब ऐसा (नेमत देने वाला) है कि तुम्हारे लिए कश्ती को दरिया में ले चलता है ताकि तुम उसके रिज़्क़ की तलाश करो, बेशक वह तुम्हारे हाल पर बहुत मेहरबान है। (66)

क़ुदरत की शान

अल्लाह तआ़ला अपना एहसान बतलाता है कि उसने अपने बन्दों की आसानी और सहूलत के लिये और उनकी तिजारत व सफ़र के लिये दरियाओं में कश्तियाँ चला दी हैं। उसके फ़ज़्ल व करम, लुत्फ़ व रहम का एक निशान यह भी है कि तुम दूर-दराज़ के मुल्कों में आ-जा सकते हो और ख़ुदा का फ़ज़्ल यानी अपनी रोज़ियाँ हासिल कर सकते हो।

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ○	और जब तुमको दरिया में कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो सिवाय उस (ख़ुदा) के और जितनों की तुम इबादत करते थे, सब ग़ायब हो जाते हैं, फिर जब तुमको ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है तो तुम फिर (पहली आ़दत के मुताबिक़) फिर जाते हो, और (वाक़ई) इनसान है बड़ा नाशुक्रा। (67)

मुश्किलों को हल करने वाला

अल्लाह तबारक व तआ़ला का इरशाद हो रहा है कि बन्दे मुसीबत के वक़्त तो ख़ुलूस के साथ अपने परवर्दिगार की तरफ़ झुकते हैं और उससे दिली दुआ़यें करने लगते हैं, और जहाँ वह मुसीबत ख़ुदा तआ़ला ने टाल दी ये आँखें फेर लेते हैं। फ़त्हे मक्का के वक़्त जबकि अबू जहल का लड़का इक्रिमा हब्शा जाने के इरादे से भागा और कश्ती में बैठकर चला। इत्तिफ़ाक़न कश्ती तूफ़ान में फंस गयी, मुख़ालिफ़ दिशा की हवा के झोंके उसे पत्ते की तरह हिलाने लगे, उस वक़्त कश्ती में जितने काफ़िर थे सब एक दूसरे से कहने लगे इस वक़्त सिवाय अल्लाह तआ़ला के और कोई कुछ काम नहीं आयेगा, उसी को पुकारो। इक्रिमा के दिल में उसी वक़्त ख़्याल आया कि जब पानी में सिर्फ़ वही काम कर सकता तो ज़ाहिर है कि ख़ुश्की में भी वही काम आ सकता है। ख़ुदाया मैं नज़्र (मन्नत) मानता हूँ कि अगर तूने मुझे इस आफ़त से बचा लिया तो मैं सीधा जाकर मुहम्मद के हाथ में हाथ दे दूँगा और यक़ीनन वह मुझ पर मेहरबानी और रहम व करम फ़रमायेंगे। चुनाँचे समुद्र से पार होते ही वह सीधे रसूले करीम सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम क़बूल किया। फिर तो इस्लाम के वफ़ादार ख़ादिम साबित हुए।

पस फ़रमाता है कि समुद्र की इस मुसीबत के वक़्त तो ख़ुदा के सिवा सबको भूल जाते हो लेकिन फिर मुसीबत के दूर होते ही ख़ुदा की तौहीद (एक होना) हटा देते हो और दूसरों से इल्तिजायें करने लगते हो,

इनसान है ही ऐसा नाशुक्रा कि नेमतों को भुला बैठता है बल्कि उनका इनकारी हो जाता है। हाँ जिसे ख़ुदा बचा ले और भलाई की तौफ़ीक़ दे।

तो क्या तुम इस बात से बेफ़िक्र हो (बैठे हो) कि तुमको ख़ुश्की की तरफ़ लाकर ज़मीन में धँसा दे, या तुमपर कोई ऐसी तेज़ हवा भेज दे जो कंकर पत्थर बरसाने लगे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओ। (68)	اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ۝

अल्लाह का इख़्तियार हर जगह है

रब्बुल-आलमीन लोगों को डरा रहा है कि जो तरी में डुबो सकता था वह ख़ुश्की में धंसाने की क़ुदरत भी रखता है। फिर वहाँ तो सिर्फ़ उसी को पुकारना और यहाँ उसके साथ औरों को शरीक करना, यह किस क़द्र नाइन्साफ़ी है? वह तो तुम पर पत्थरों की बारिश भी बरसा कर हलाक कर सकता है, जैसे कि हज़रत लूत की क़ौम पर हुई थी, जिसका बयान ख़ुद क़ुरआन में कई जगह है। सूरः मुल्क में फ़रमाया कि क्या तुम्हें उस ख़ुदा का डर नहीं जो आसमानों में है कि कहीं वह तुम्हें ज़मीन में न धंसा दे, कि अचानक ज़मीन हरकत करने लगे, क्या तुम्हें आसमानों वाले ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं कि कहीं वह तुम पर पत्थर न बरसा दे, फिर जान लो कि डराने का अन्जाम क्या कुछ होता है। फिर फ़रमाता है कि उस वक़्त तुम न अपना मददगार पाओगे न दस्तगीर, न वकील न कारसाज़, न निगहबान न पासबान।

या तुम इससे बेफ़िक्र हो गए कि वह (अल्लाह) फिर तुमको दरिया ही में दोबारा ले जाए, फिर तुम पर हवा का सख़्त तूफ़ान भेज दे, फिर तुमको तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे, फिर इस बात पर कोई हमारा पीछा करने वाला तुमको न मिले। (69)	اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ۝

ऐसा भी हो सकता है

इरशाद हो रहा है कि ऐ मुन्किरो! समुद्रों में तुम मेरी तौहीद के क़ायल हुए, बाहर आकर फिर इनकार कर बैठे तो क्या यह नहीं हो सकता कि फिर तुम दोबारा सफ़र करो और मुख़ालिफ़ हवा के थपेड़े तुम्हारी कश्ती को डगमगा दें और आख़िर डुबो दें, और तुम्हें तुम्हारे कुफ़्र का मज़ा आ जाये। फिर तो कोई मददगार खड़ा न हो न कोई ऐसा मिल सके कि हमसे तुम्हारे बदले ले, हमारा पीछा कोई नहीं कर सकता, किसकी मजाल है कि हमारे फ़ेल (किसी काम या फ़ैसले) पर उंगली उठाये।

और हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त दी, और हमने उनको ख़ुश्की और दरिया में	وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِى

Maktab E Ashraf

الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۞	सवार किया और उम्दा-उम्दा चीज़ें उनको अ़ता फ़रमाईं। और हमने उनको अपनी बहुत-सी मख़्लूक़ पर बरतरी दी। (70)

ع

इनसान की बरतरी

सबसे अच्छी पैदाईश इनसान की है। जैसा कि फ़रमान हैः

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ.

हमने इनसान को बेहतरीन साख़्त (नमूने और अन्दाज़) पर बनाया है। वह अपने पैरों पर सीधा खड़ा होकर सही चाल चलता है। अपने हाथों से तमीज़ के साथ अपनी गिज़ा खाता है, दूसरे हैवान हाथ-पाँव से चलते हैं, मुँह से चारा चुगते हैं। फिर उसे समझ-बूझ दी जिससे नफ़े-नुक़सान भलाई-बुराई सोचता है, दीनी दुनियावी फ़ायदे मालूम कर लेता है। उसकी सवारी के लिये ख़ुश्की में जानवर मवेशी दिये, घोड़े ख़च्चर ऊँट वग़ैरह, और पानी के सफ़र के लिये उसे कश्तियाँ बनानी सिखा दीं, इसे बेहतरीन बहुत सी अच्छे ज़ायके वाली, लज़ीज़, मज़ेदार चीज़ें दीं, फिर उम्दा मकानात रहने को अच्छे ख़ुशनुमा लिबास पहनने को, तरह-तरह के रंग-बिरंग के, यहाँ की चीज़ें दीं, यहाँ की वहाँ और वहाँ की चीज़ें यहाँ ले जाने, ले आने के असबाब (साधन) इसके लिये मुहैया कर दिये और मख़्लूक़ में से उमूमन हर एक पर इसे बरतरी बख़्शी।

इस आयते करीमा से इस बात पर दलील पकड़ी गयी है कि इनसान फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है। हज़रत ज़ैद बिन असलम कहते हैं कि फ़रिश्तों ने कहा- ख़ुदाया तूने आदम की औलाद को दुनिया दे रखी है, वे खाते पीते हैं और मज़े कर रहे हैं, तो तू उसके बदले हमें आख़िरत में ही अ़ता फ़रमा, क्योंकि हम उस दुनिया से मेहरूम हैं। इसके जवाब में अल्लाह जल्ल शानुहू ने इरशाद फ़रमाया- मुझे अपनी इ़ज़्ज़त और अपने जलाल की क़सम! उसकी नेक औलाद को जिसे मैंने अपने हाथ से पैदा किया उसके बराबर में हरगिज़ न करूँगा जिसे मैंने कलिमा 'कुन' से पैदा किया है। यह रिवायत मुर्सल है लेकिन दूसरी सनद से मुत्तसिल भी नक़ल की गयी है। इब्ने अ़साकिर में है कि फ़रिश्तों ने कहा- ऐ हमारे परवर्दिगार! हमें भी तूने पैदा किया और इनसानों का ख़ालिक़ भी तू ही है, उन्हें तू खाना पीना दे रहा है, वे कपड़े लत्ते पहनते हैं, निकाह शादियाँ करते हैं, सवारियाँ उनके लिये हैं, राहत व आराम उन्हें हासिल है, इनमें से किसी चीज़ के हिस्सेदार हम नहीं। ख़ैर अगर दुनिया में उनके लिये हैं तो ये चीज़ें आख़िरत में हमारे लिये कर दे। इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जिसे मैंने अपने हाथ से पैदा किया है और अपनी रूह जिसमें मैंने फूँकी है, उसे मैं उस जैसा न करूँगा जिसे मैंने कह दिया कि हो जा और वह हो गया। तबरानी में है कि क़ियामत के दिन इब्ने आदम (यानी इनसान) से बुज़ुर्ग (रुतबे वाला) अल्लाह के यहाँ कोई न होगा। पूछा गया कि फ़रिश्ते भी नहीं? फ़रमाया फ़रिश्ते भी नहीं। दोनों मजबूर हैं, जैसे सूरज, चाँद। यह रिवायत बहुत ही ग़रीब है।

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

जिस दिन हम तमाम आदमियों को उनके आमालनामे समेत बुलाएँगे। फिर जिसका आमाल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा ऐसे लोग अपना आमाल-नामा पढ़ेंगे, और उनका ज़रा भी नुक़सान न किया जाएगा। (71) और जो शख़्स दुनिया में (निजात का रास्ता देखने से) अन्धा रहेगा, सो वह आख़िरत में भी (निजात की मन्ज़िल तक पहुँचने से) अन्धा रहेगा, और ज़्यादा भटका हुआ होगा। (72)

क़ियामत का दिन

इमाम से मुराद यहाँ नबी हैं। हर उम्मत क़ियामत के दिन अपने नबी के साथ बुलाई जायेगी। जैसे इस आयत में है:

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ.... الخ.

हर उम्मत का रसूल है। फिर जब उनके रसूल आयेंगे तो उनके दरमियान अ़दल (इन्साफ़) के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा।

बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि इसमें हदीस का इल्म रखने वालों की बहुत बड़ी बुज़ुर्गी बयान हुई है, इसलिये कि उनके इमाम नबी करीम सल्ल. हैं। इब्ने ज़ैद कहते हैं कि यहाँ इमाम से मुराद अल्लाह की किताब है जो उनकी शरीअ़त के बारे में उतरी थी। इब्ने जरीर इस तफ़सीर को बहुत पसन्द फ़रमाते हैं और इसी को मुख़्तार (पसन्दीदा) कहते हैं। मुजाहिद रह. कहते हैं कि इससे उनकी किताबें मुराद हैं, मुम्किन है किताब से मुराद या तो अहकाम की किताबे ख़ुदा हो या नामा-ए-आमाल, चुनाँचे इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इससे आमाल-नामा मुराद लेते हैं। अबुल-आ़लिया, हसन, ज़ह्हाक भी यही कहते हैं और यही ज़्यादा तरजीह वाला क़ौल है, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ.

हमने हर चीज़ का ज़ाहिर किताब में इहाता कर लिया है। एक और आयत में है:

وَوُضِعَ الْكِتَابُ....... الخ.

किताब यानी नामा-ए-आमाल दरमियान में रख दिया जायेगा। उस वक़्त तू देखेगा कि गुनाहगार उसकी तहरीर (लिखे हुए मज़मून) से ख़ौफ़ खा रहे होंगे.....।

एक और आयत में है कि हर उम्मत को तू घुटनों के बल गिरी हुई देखेगा। हर उम्मत अपनी किताब की जानिब बुलाई जा रही होगी। आज तुम्हें तुम्हारे किये हुए आमाल का बदला दिया जायेगा। यह है हमारी किताब जो तुम पर हक़ व इन्साफ़ के साथ बोलेगी, जो कुछ तुम करते रहे हम बराबर लिखते रहे थे। यह याद रहे कि यह तफ़सीर पहली तफ़सीर के ख़िलाफ़ नहीं, एक तरफ़ नामा-ए-आमाल हाथ में होगा और दूसरी तरफ़ ख़ुद नबी सामने मौजूद होगा। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِایْٓءَ بِالنَّبِیّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ

कि ज़मीन अपने रब के नूर से चमकने लगेगी, नामा-ए-आमाल रख दिया जायेगा और नबियों को और गवाहों को मौजूद कर दिया जायेगा। एक और आयत में है:

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا.

यानी क्या कैफ़ियत होगी उस वक़्त जबकि हर उम्मत का हम गवाह लायेंगे और तुझे तेरी उम्मत पर गवाह करके लायेंगे।

लेकिन यहाँ इमाम से मुराद नामा-ए-आमाल है, इसी लिये उसके बाद ही फ़रमाया कि जिनके दायें हाथ में दे दिया गया वे तो अपनी नेकियाँ ख़ुशी और राहत से पढ़ने लगेंगे बल्कि दूसरों को दिखाते और पढ़वाते फिरेंगे। इसी का मज़ीद बयान सूरः अलहाक़्क़ह् में है।

''फ़तील'' से मुराद लम्बा धागा है जो खजूर की गुठली के बीज में होता है। बज़्ज़ार में है, नबी सल्ल. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि एक शख़्स को बुलवाकर उसका नामा-ए-आमाल उसके दायें हाथ में दिया जायेगा, उसका जिस्म बढ़ जायेगा, चेहरा चमकने लगेगा, सर पर चमकते हुए हीरों का ताज रख दिया जायेगा, यह अपने गिरोह (जमाअ़त और समूह) की तरफ़ बढ़ेगा, उसे इस हालत में आता देखकर वे सब आरज़ू करने लगेंगे कि ख़ुदाया हमें भी यह अ़ता फ़रमा और हमें इसमें बरकत दे। वह आते ही कहेगा कि ख़ुश हो जाओ तुम में से हर एक को यही मिलना है। लेकिन काफ़िर का चेहरा स्याह हो जायेगा, उसका जिस्म बढ़ जायेगा, उसे देखकर उसके साथी कहने लगेंगे इससे ख़ुदा की पनाह या इसकी बुराई से पनाह, ख़ुदाया इसे हमारे पास न ला। वहीं वह आ जायेगा। ये कहेंगे अल्लाह इसे रुस्वा कर, यह जवाब देगा ख़ुदा तुम्हें ग़ारत करे तुममें से हर शख़्स के लिये यही ख़ुदाई मार है। इस दुनिया में जिसने ख़ुदा की आयतों से, उसकी किताब से, राहे हिदायत से नज़र फेरी (यानी क़बूल न किया) वह आख़िरत में सचमुच अंधा होगा और दुनिया से भी ज़्यादा राह भूला हुआ होगा। अल्लाह हमें इससे अपनी पनाह में रखे।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِیْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِیَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖۗ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيْلًا ۝ۙ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝

और ये (काफ़िर) आपको उस चीज़ से बिचलाने ही लगे थे जो हमने आप पर 'वही' के ज़रिये से भेजी है, ताकि आप उसके सिवा हमारी तरफ़ ग़लत बात की निस्बत करें, और ऐसी हालत में आपको गहरा दोस्त बना लेते। (73) और अगर हमने आपको साबित क़दम न बनाया होता तो आप उनकी तरफ़ कुछ-कुछ झुकने के क़रीब जा पहुँचते। (74) (अगर ऐसा होता) तो हम आपको ज़िन्दगी की हालत में और मौत के बाद दोहरा (अ़ज़ाब) चखाते, फिर आप हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार भी न पाते। (75)

Maktab E Ashraf

अल्लाह का फ़ज़्ल व करम

मक्कार व बदकार लोगों की चालाकियों से अल्लाह तआ़ला हमेशा अपने रसूल को बचाता रहा। आपको मासूम और साबित-क़दम ही रखा, ख़ुद ही आपका वली और मददगार रहा, अपनी हिफ़ाज़त और सुरक्षा में हमेशा आपको रखा। आपकी ताईद और मदद बराबर करता रहा। आपके दीन को दुनिया के तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दिया। आपके मुख़ालिफ़ों के बड़बोले इरादों को पस्त कर दिया, पूरब से पश्चिम तक आपका कलिमा (यानी दीन इस्लाम) फैला दिया। इसी का बयान इन दोनों आयतों में है। अल्लाह तआ़ला आप पर क़ियामत तक बेशुमार दुरूद व सलाम भेजता रहे, आमीन।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ٥ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ٥	और ये लोग इस सरज़मीन से आपके क़दम ही उखाड़ने लगे थे, ताकि आपको इससे निकाल दें, और (अगर ऐसा हो जाता तो) आपके बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। (76) जैसा कि उन (हज़रात) के बारे में (हमारा) क़ायदा रहा है जिनको आपसे पहले हमने रसूल बनाकर भेजा था, और आप हमारे (इस) क़ायदे में बदलाव न पाएँगे। (77)

ع ८

अल्लाह के तरीक़े में कोई तब्दीली नहीं

कहते हैं कि यहूदियों ने हुज़ूर सल्ल. से कहा था कि आपको मुल्के शाम चले जाना चाहिये, वही नबियों का वतन है। इस शहर मदीना को छोड़ देना चाहिये। इस पर यह आयत उतरी। लेकिन यह क़ौल ज़ईफ़ (कमज़ोर) है, इसलिये कि यह आयत मक्की है और मदीना में आपकी रिहाईश इसके बाद हुई है। कहते हैं कि तबूक के बारे में यह आयत उतरी है, यहूदियों के कहने से कि शाम जो नबियों की और मेहशर की ज़मीन है, आपको वहीं रहना चाहिये, अगर आप सच्चे पैग़म्बर हैं तो वहाँ चले जाईये। आपने उन्हें एक हद तक सच्चा समझा। ग़ज़वा-ए-तबूक से आपकी नीयत यही थी लेकिन तबूक पहुँचते ही सूरः बनी इस्राईल की आयतें उतरीं (यानी यही दोनों आयतें जिनकी तफ़सीर चल रही है) और अल्लाह तआ़ला ने आपको मदीने की वापसी का हुक्म दिया और फ़रमाया- वहीं आपका मरना और जीना है और वहीं से दोबारा उठकर खड़ा होना है। लेकिन इस रिवायत की सनद भी इश्काल से ख़ाली नहीं। और साफ़ ज़ाहिर है कि यह वाक़िआ भी ठीक नहीं, तबूक का ग़ज़वा (लड़ाई) यहूद के कहने से न था, बल्कि ख़ुदा का फ़रमान मौजूद है:

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ

जो काफ़िर तुम्हारे इर्द-गिर्द (आस-पास) हैं उनसे जिहाद करो।

एक और आयत में है कि ज़ो क़ियामत पर और तुम पर ईमान नहीं रखते, ख़ुदा व रसूल के हराम किये हुए को हराम नहीं समझते और हक़ को क़बूल नहीं करते ऐसे अहले किताब से अल्लाह की राह में जिहाद करो, यहाँ तक कि वे ज़िल्लत के साथ जिज़या देना मन्ज़ूर कर लें। और वजह इस ग़ज़वे (लड़ाई) की यह थी कि आपके जो सहाबा (साथी) जंगे-मूता में शहीद कर दिये गये थे उनका बदला लिया जाये।

Maktaba Ashraf

वल्लाहु आलम।

और अगर ऊपर बयान हुआ वाक़िआ सही साबित हो जाये तो इसी पर वह हदीस महमूल की जायेगी जिसमें है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मक्का मदीना और शाम में क़ुरआन नाज़िल हुआ है। वलीद तो इसकी शरह (व्याख्या) में लिखते हैं कि शाम (सीरिया) से मुराद बैतुल-मुक़द्दस है, लेकिन शाम से मुराद तबूक क्यों न लिया जाये जो बिल्कुल साफ़ और बहुत दुरुस्त है। वल्लाहु आलम

एक क़ौल यह है कि इससे मुराद काफ़िरों का वह इरादा है जो उन्होंने मक्का से जिला-वतन करने के बारे में किया था। चुनाँचे यही हुआ भी कि जब उन्होंने आपको निकाला फिर ये भी वहाँ ज़्यादा मुद्दत न गुज़ार सके, अल्लाह तआ़ला ने फ़ौरन ही आपको ग़ालिब किया। डेढ़ साल ही गुज़रा था कि बदर की लड़ाई बग़ैर किसी तैयारी और इत्तिला के अचानक हो गयी और वहीं काफ़िरों और कुफ़्र का ज़ोर टूट गया। उनके बड़े और सरदार लोग तलवार के नीचे आये, उनकी शान व शौकत ख़ाक में मिल गयी। उनके सरदार क़ैद में हो गये। पस फ़रमाया कि यही तरीक़ा पहले से जारी है, पहले रसूलों के साथ भी यही हुआ कि काफ़िरों ने जब उन्हें तंग किया और देस से निकाल दिया फिर वे भी बच न सके, अल्लाह के अ़ज़ाब ने उन्हें ग़ारत और बेनिशान कर दिया। हाँ चूँकि हमारे पैग़म्बर रसूले रहमत थे इसलिये कोई आसमानी आ़म अ़ज़ाब उन काफ़िरों पर न आया, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ.

यानी तेरी मौजूदगी में ख़ुदा उन्हें अ़ज़ाब न करेगा।

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ○ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۤ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ○	सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे (होने) तक नमाज़ें अदा किया कीजिए, और सुबह की नमाज़ भी, बेशक सुबह की नमाज़ (फ़रिश्तों के) हाज़िर होने का वक़्त है। (78) और किसी क़द्र रात के हिस्से में, सो उसमें तहज्जुद पढ़ा कीजिए, जो कि आपके लिए (फ़र्ज़ नमाज़ों के अ़लावा) ज़ायद चीज़ है, उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ामे-महमूद में जगह देगा। (79)

नमाज़ की पाबन्दी और एहतिमाम

नमाज़ों को वक़्तों की पाबन्दी के साथ अदा करने का हुक्म हो रहा है। "दुलूक" से मुराद ग़ुरूब है या ज़वाल। इमाम इब्ने जरीर ने ज़वाल के क़ौल को पसन्द फ़रमाया है और अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल भी यही है। हज़रत जाबिर रज़ि. कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल. की दावत की और आपसे यह भी अ़र्ज़ कर दिया कि आप अपने साथ जितने और जिन-जिनको चाहें ले आ सकते हैं। फिर आप खाना खाकर सूरज ढल जाने के बाद मेरे यहाँ से चले। हज़रत अबू बक्र रज़ि. से फ़रमाया चलो यही वक़्त 'दुलूके शम्स' का है। पस पाँचों नमाज़ों का वक़्त इस आयत में बयान हो गया। 'ग़-स-क़' से मुराद अन्धेरा है। जो कहते हैं कि दुलूक

से मुराद गुरूब है उनके नज़दीक ज़ोहर, असर, मग़रिब और इशा का बयान तो इसमें है और फ़जर का बयान 'व क़ुरआनल् फ़ज्रि' में है। हदीस से हुज़ूरे पाक सल्ल. के अक़वाल व अफ़आल से तवातुर के साथ पाँचों नमाज़ों के वक़्त साबित हैं और अल्लाह का शुक्र है कि मुसलमान अब तक इस पर हैं, हर पिछले ज़माने के लोग अगले ज़माने वालों से बराबर लेते चले आये हैं, जैसे कि इन मसाईल की तफ़सील मुनासिब मौक़े पर मौजूद है।

सुबह की तिलावते क़ुरआन पर दिन और रात के फ़रिश्ते आते हैं। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि तन्हा शख़्स की नमाज़ पर जमाअत की नमाज़ पच्चीस दर्जे ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है। सुबह की नमाज़ के वक़्त दिन और रात के फ़रिश्ते इकट्ठे होते हैं। इसे बयान फ़रमाकर हदीस के बयान करने वाले हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया- तुम क़ुरआन की इस आयत को पढ़ लोः

وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ...... الخ.

(यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि रात के और दिन के फ़रिश्ते तुम में बराबर लगातार आते रहते हैं। सुबह की और असर की नमाज़ के वक़्त उनका इज्तिमा हो जाता है। तुम में जिन फ़रिश्तों ने रात गुज़ारी वे जब चढ़ जाते हैं तो अल्लाह तआला उनसे दरियाफ़्त फ़रमाता है, इसके बावजूद कि वह उनसे ज़्यादा जानने वाला है, कि तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा? वे जवाब देते हैं कि हम उनके पास पहुँचे तो उन्हें नमाज़ में पाया और वापस आये तो नमाज़ में छोड़कर आये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि ये फ़रिश्ते सुबह की नमाज़ में जमा होते हैं, फिर ये चढ़ जाते हैं और वे ठहर जाते हैं। इब्ने जरीर की एक हदीस में अल्लाह तआला के नुज़ूल फ़रमाने और इस इरशाद फ़रमाने का ज़िक्र किया है कि कोई है जो मुझसे इस्तिग़फ़ार करे (यानी अपने गुनाहों की माफ़ी चाहे) और मैं उसे बख़्शूँ? कोई है कि मुझसे सवाल करे और मैं उसे दूँ? कोई है जो मुझसे दुआ करे और मैं उसकी दुआ को क़बूल करूँ? यहाँ तक कि सुबह तुलूअ हो जाती है। पस उस वक़्त पर अल्लाह तआला मौजूद होता है और रात के फ़रिश्ते और दिन के फ़रिश्ते जमा होते हैं।

फिर अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर सल्ल. को तहज्जुद की नमाज़ का हुक्म फ़रमाता है, फ़र्ज़ों का तो हुक्म है ही। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. से पूछा गया कि फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कौनसी नमाज़ अफ़ज़ल है? आपने फ़रमाया रात की नमाज़ जिसको तहज्जुद कहते हैं, नींद के बाद की नमाज़ को।

लुग़त में, मुफ़स्सिरीन की तफ़ासीर में और हदीस में यह मौजूद है, आपकी आदत भी यही थी कि सोकर उठते फिर तहज्जुद पढ़ते। हाँ हसन बसरी रह. का क़ौल है कि जो नमाज़ इशा के बाद हो, मुम्किन है कि इससे भी मुराद सो जाने के बाद हो। फिर फ़रमाया यह ज़्यादती तेरे लिये है, बाज़ तो कहते हैं कि तहज्जुद की नमाज़ सिर्फ़ हुज़ूर पर फ़र्ज़ थी, बाज़ कहते हैं कि यह ख़ुसूसियत इस वजह से है कि आपके तमाम अगले पिछले गुनाह माफ़ थे और उम्मतियों के भी इस नमाज़ की वजह से गुनाह दूर हो जाते हैं। हमारे इस हुक्म के पालन पर हम तुम्हें उस जगह खड़ा करेंगे कि जहाँ खड़ा होने पर तमाम मख़्लूक़ आपकी तारीफ़ें करेगी और ख़ुद ख़ालिक़े अकबर भी कहते हैं कि मक़ामे महमूद पर क़ियामत के दिन आप अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिये जायेंगे ताकि उस दिन की घबराहट से आप उन्हें राहत दें। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं कि लोग एक ही मैदान में जमा किये जायेंगे, पुकारने वाला अपनी आवाज़ उन्हें सुनायेगा, आँखें खुल जायेंगी, नंगे पाँव नंगे बदन होंगे जैसे कि पैदा किये गये थे। सब खड़े होंगे, कोई भी बग़ैर अल्लाह की

इजाज़त के बात न कर सकेगा। आवाज़ आयेगी ऐ मुहम्मद! आप कहेंगे 'लब्बैक व सअ़दैक' ख़ुदाया तमाम भलाई तेरे ही हाथ है, बुराई तेरी जानिब से नहीं। सही राह पाने वाला वही है जिसे तू हिदायत बख़्शे। तेरा गुलाम तेरे सामने मौजूद है, वह तेरी ही मदद से कायम है, वह तेरी ही जानिब झुकने वाला है, तेरी पकड़ से सिवाय तेरे दरबार के और कोई पनाह की जगह नहीं, तू बरकतों और बुलन्दियों वाला है। ऐ रब्बुल-बैत तू पाक है। यह है मक़ामे महमूद जिसका ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में किया है। पस यह मक़ाम मक़ामे शफ़ाअ़त है।

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन सबसे पहले ज़मीन से आप बाहर आयेंगे और सबसे पहले शफ़ाअ़त आप ही करेंगे। उलेमा कहते हैं कि यही मक़ामे महमूद है जिसका वादा अल्लाह करीम ने अपने रसूले मक़बूल से किया। बेशक हुज़ूर सल्ल. की बहुत सी बुज़ुर्गियाँ क़ियामत के दिन ऐसी होंगी जिनमें कोई और आपका शरीक नहीं, और बहुत सी बुज़ुर्गियाँ ऐसी मिलेंगी जिनमें कोई आपकी बराबरी का नहीं। सबसे पहले आप ही की क़ब्र की ज़मीन शक़ होगी (यानी फटेगी) और आप सवारी पर सवार मेहशर की तरफ़ जायेंगे। आपका एक झण्डा होगा कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर सबके सब उसके नीचे होंगे। आपको हौज़े कौसर मिलेगा जिस पर सबसे ज़्यादा लोग होंगे। बहुत बड़ी शफ़ाअ़त आपकी यह होगी कि अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ के फ़ैसलों के लिये आये और यह उसके बाद होगी कि लोग हज़रत आदम, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा अ़लैहिमुस्सलाम के पास हो आयें और सब इनकार कर दें। फिर आपके पास आयेंगे और आप उसके लिये तैयार होंगे जैसा कि इसकी हदीसें मुफ़स्सल आ रही हैं इन्शा-अल्लाह। आप उन लोगों की शफ़ाअ़त करेंगे जिनके बारे में हुक्म हो चुका होगा कि उन्हें जहन्नम की तरफ़ ले जायें। फिर वे आपकी शफ़ाअ़त से वापस लौटा दिये जायेंगे। सबसे पहले आप ही की उम्मत के फ़ैसले किये जायेंगे, आप ही अपनी उम्मत समेत सबसे पहले पुलसिरात से पार होंगे। आप ही जन्नत में ले जाने के पहले सिफ़ारिशी होंगे जैसा कि सही मुस्लिम की हदीस से साबित है। सूर वाली हदीस में है कि तमाम मोमिन आप ही की शफ़ाअ़त से जन्नत में जायेंगे, सबसे पहले आप जन्नत में जायेंगे और आपकी उम्मत दूसरी उम्मतों से पहले जायेगी। आपकी शफ़ाअ़त से कम दर्जे के जन्नती आला और बुलन्द दर्जे पायेंगे। आप ही वसीला वाले हैं जो जन्नत की सबसे आला मन्ज़िल है, जो आपके सिवा किसी और को नहीं मिलने की। यह सही है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म से गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रिश्ते भी करेंगे, नबी भी करेंगे, लेकिन हुज़ूर सल्ल. की शफ़ाअ़त जिस क़द्र लोगों के बारे में होगी उनकी गिनती का सिवाय अल्लाह तआ़ला के किसी को इल्म नहीं। इसमें कोई आपके जैसा और आपके बराबर नहीं।

अब मक़ामे महमूद के बारे में हदीसें सुनिये। बुख़ारी में है, हज़रत इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि लोग क़ियामत के दिन घुटनों के बल गिरे हुए होंगे, हर उम्मत अपने नबी के पीछे होगी कि ऐ फ़ुलाँ हमारी शफ़ाअ़त कीजिए यहाँ तक कि दरख़्वास्त की इन्तिहा मुहम्मद सल्ल. की तरफ़ होगी। पस यही वह है कि अल्लाह तआ़ला आपको मक़ामे महमूद पर खड़ा करेगा। इब्ने जरीर में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि सूरज बहुत नज़दीक होगा यहाँ तक कि पसीना आधे कानों तक पहुँच जायेगा। उस हालत में लोग हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से फ़रियाद करेंगे, वह साफ़ इनकार कर देंगे। फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहेंगे, आप यही जवाब देंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं। फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल. से कहेंगे आप मख़्लूक़ की शफ़ाअ़त के लिये चलेंगे यहाँ तक कि दरवाज़े का कुन्डा थाम लेंगे। पस उस दिन अल्लाह तआ़ला आपको मक़ामे महमूद पर पहुँचायेगा। बुख़ारी की इस रिवायत के आख़िर में यह भी है कि मेहशर वाले सबके सब उस वक़्त

Maktabah E Ashraf

आपकी तारीफ़ें करेंगे। बुख़ारी में है कि जो शख़्स अज़ान सुनकरः

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ........

(यानी अज़ान के बाद की पूरी दुआ) पढ़ ले उसके लिये क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त हलाल है। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन मैं नबियों का इमाम उनका ख़तीब और उनका सिफ़ारिशी हूँगा। मैं यह बतौर फ़ख़्र के नहीं कहता। इसे इमाम तिर्मिज़ी ने भी नक़ल किया है और हसन सही कहा है। इब्ने माजा में भी यह है, हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. से वह हदीस गुज़र चुकी है जिसमें क़ुरआन को सात क़िराअतों पर पढ़ने का बयान है, उसके आख़िर में है कि मैंने कहा ख़ुदाया मेरी उम्मत को बख़्श, इलाही मेरी उम्मत को बख़्श। तीसरी दुआ मैंने उस दिन के लिये उठा रखी है जिस दिन तमाम मख़्लूक़ मेरी तरफ़ रग़बत करेगी यहाँ तक कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम भी।

मुस्नद अहमद में है कि मोमिन क़ियामत के दिन जमा होंगे, फिर उनके दिल में ख़्याल डाला जायेगा कि हम किसी से कहें कि वह हमारी सिफ़ारिश करके हमें इस जगह से छुटकारा दिलाये। पस सबके सब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के पास आयेंगे और कहेंगे कि ऐ आदम! आप तमाम इनसानों के बाप हैं, अल्लाह तआ़ला ने आपको अपने हाथ से पैदा किया, आपके लिये अपने फ़रिश्तों से सज्दा कराया और आपको तमाम चीज़ों के नाम बतलाये, आप अपने रब के पास हमारी सिफ़ारिश ले जाईये ताकि हमें इस जगह से राहत मिले। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जवाब देंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ। आपको अपनी भूल याद आ जायेगी और ख़ुदा तआ़ला से शर्माने लगेंगे। फ़रमायेंगे तुम हज़रत नूह के पास जाओ, वह ख़ुदा के पहले रसूल हैं जिन्हें ज़मीन वालों की तरफ़ अल्लाह पाक ने भेजा। ये आयेंगे यहाँ से भी यही जवाब पायेंगे कि मैं इसके लायक़ नहीं हूँ। आपको भी अपनी भूल याद आयेगी कि ख़ुदा से वह सवाल किया था जिसका आपको इल्म न था। पस अपने परवर्दिगार से शर्मा जायेंगे और फ़रमायेंगे तुम अल्लाह के दोस्त इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास जाओ। वे आपके पास आयेंगे। आप फ़रमायेंगे मैं इस क़ाबिल नहीं, तुम हज़रत मूसा के पास जाओ। लोग हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आयेंगे लेकिन वह कहेंगे मुझमें इतनी क़ाबलियत कहाँ? फिर उस क़त्ल का ज़िक्र करेंगे जो बग़ैर किसी मक़्तूल के मुआ़वज़े के आपने कर दिया था। पस इस वजह से ख़ुदा से शर्माने लगेंगे और कहेंगे तुम ईसा के पास जाओ जो ख़ुदा के बन्दे, उसका कलिमा और उसकी रूह हैं। वे यहाँ आयेंगे लेकिन आप फ़रमायेंगे मैं इस जगह के क़ाबिल नहीं हूँ तुम मुहम्मद सल्ल. के पास जाओ, जिनके अगले-पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये गये हैं।

नोटः हज़रत आदम की भूल मना किये हुए पेड़ से उसके दाने खाना, हज़रत नूह अपने काफ़िर बेटे की सिफ़ारिश या अपनी क़ौम पर बद्दुआ़ करने को याद करके अल्लाह से शर्मायेंगे, हज़रत मूसा ने फ़िरऔ़न की क़ौम के एक शख़्स का ज़ुल्म देखकर उसको एक घूँसा मारा था जिससे वह मर गया था, वह अपने इस क़सूर को याद करके अल्लाह के सामने जाने की हिम्मत न कर पायेंगे। ख़्याल रहे कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की ये ख़तायें अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमा चुका है, क़ुरआन पाक में इसकी वज़ाहत है, लेकिन उनकी पाकीज़ा फ़ितरत और अल्लाह तआ़ला के मक़ाम और रौब व जलाल की आगाही देखिये अपनी माफ़ हुई ख़ताओं से इस क़द्र शर्मायेंगे। यह भी आजके इनसानों के लिये सबक़ है कि वे भी अपने गुनाहों और ख़ताओं से माफ़ी माँगें और यह सोचें कि हम गुनाहों के इन दफ़्तरों के साथ कैसे अपने ख़ालिक़ व मालिक का सामना करेंगे। जबकि हमें तो इसकी भी कोई इत्तिला नहीं कि हमारा कौनसा गुनाह माफ़ हो गया और कौनसा बाक़ी है, और जो माफ़ी और तौबा की तरफ़ भी तवज्जोह नहीं करते उनका तो अल्लाह ही हाफ़िज़ है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

पस वे सब मेरे पास आयेंगे, मैं खड़ा हूँगा, अपने रब से इजाज़त चाहूँगा। जब उसे देखूँगा तो सज्दे में गिर पड़ूँगा, जब तक ख़ुदा को मन्ज़ूर होगा मैं सज्दे में ही रहूँगा। फिर फ़रमाया जायेगा ऐ मुहम्मद! सर उठाईये कहिये सुना जायेगा, शफ़ाअ़त कीजिए क़ुबूल की जायेगी, माँगिये दिया जायेगा। पस मैं सर उठाऊँगा और अल्लाह तआ़ला की वे तारीफ़ें करूँगा जो वह मुझे सिखायेगा। फिर मैं सिफ़ारिश पेश करूँगा। मेरे लिये हद मुक़र्रर कर दी जायेगी, मैं उन्हें जन्नत में पहुँचा आऊँगा। फिर दोबारा अल्लाह की बारगाह में हाज़िर होकर अपने रब को देखकर सज्दे में गिर पड़ूँगा, जब तक वह चाहे मुझे सज्दे में ही रहने देगा। फिर कहा जायेगा कि ऐ मुहम्मद! सर उठाओ, कहो सुना जायेगा, सवाल करो दिया जायेगा, शफ़ाअ़त करो क़ुबूल की जायेगी। पस मैं सर उठाकर अपने रब की वह तारीफ़ बयान करूँगा जो वह मुझे सिखायेगा। फिर मैं शफ़ाअ़त करूँगा, तो मेरे लिये एक हद (यानी सीमा, जैसे यह कि आप इतने या इस तरह के लोगों की सिफ़ारिश कर सकते हैं) मुक़र्रर कर दी जायेगी, मैं उन्हें भी जन्नत में पहुँचा आऊँगा। फिर तीसरी बार लौटूँगा, अपने रब को देखते ही सज्दे में गिर पड़ूँगा, जब तक वह चाहे उसी हालत में पड़ा रहूँगा, फिर फ़रमाया जायेगा कि ऐ मुहम्मद! सर उठा बात कर सुनी जायेगी, सवाल कर अ़ता फ़रमाया जायेगा, सिफ़ारिश कर क़ुबूल की जायेगी। चुनाँचे मैं सर उठाकर और तारीफ़ व सना बयान करके जो मुझे वही सिखायेगा सिफ़ारिश करूँगा। पस मेरे लिये हद-बन्दी की जायेगी। मैं उन्हें भी जन्नत में पहुँचा आऊँगा।

फिर चौथी बार वापस आऊँगा और कहूँगा- बारी तआ़ला! अब तो सिर्फ़ वही बाक़ी रह गये हैं जिन्हें क़ुरआन ने रोक लिया है। फ़रमाते हैं जहन्नम में से हर वह शख़्स निकल आयेगा जिसने "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कहा हो और उसके दिल में गेहूँ के दाने के बराबर ईमान हो। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है।

मुस्नद अहमद में है, आप फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत पुलसिरात से गुज़र रही होगी, मैं वहीं खड़ा देख रहा हूँगा कि मेरे पास हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आयेंगे और फ़रमायेंगे ऐ मुहम्मद! अम्बिया की जमाअ़त आपसे कुछ माँगती है, वे सब आपके लिये जमा हैं और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि तमाम उम्मतों को जहाँ भी चाहे अलग-अलग कर दे। इस वक़्त वे सख़्त ग़म में हैं, तमाम मख़्लूक़ पसीनों में गोया लगाम चढ़ा दी गयी है, मोमिन पर तो वह एक ज़ुकाम की तरह है लेकिन काफ़िर को तो मौत ढाँप लेती है। आप फ़रमायेंगे कि ठहरो मैं वहीं आता हूँ। पस आप जायेंगे, अ़र्श के नीचे खड़े रहेंगे और आपको वह इ़ज़्ज़त व आबरू (मान-सम्मान) मिलेगी कि किसी बड़े से बड़े रुतबे वाले फ़रिश्ते और किसी भेजे हुए नबी रसूल को न मिली हो। फिर अल्लाह तआ़ला हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ 'वही' करेगा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के पास जाओ और कहो कि आप सर उठाईये, माँगिये मिलेगा, सिफ़ारिश कीजिए क़ुबूल होगी। पस मुझे अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त मिलेगी कि हर निन्नानवे में से एक निकाल लाऊँ। मैं बार-बार अपने रब तआ़ला की तरफ़ आता जाता रहूँगा और हर बार सिफ़ारिश करूँगा। यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला मुझसे इरशाद फ़रमायेगा कि ऐ मुहम्मद! जाओ मख़्लूक़े ख़ुदा में से जिसने एक दिन भी ख़ुलूस के साथ 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' की गवाही दी हो और इसी पर मरा हो उसे भी जन्नत में पहुँचा आओ। मुस्नद में है कि हज़रत बरीदा रज़ि. हज़रत मुआ़विया रज़ि. के पास गये, उस वक़्त एक शख़्स कुछ कह रहा था, इन्होंने भी कुछ कहने की इजाज़त माँगी। हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने इजाज़त दी, आपका ख़्याल यह था कि जो कुछ यह पहला शख़्स कह रहा है वही बरीदा भी कहेंगे। हज़रत बरीदा रज़ि. ने फ़रमाया- मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है, आप फ़रमाते हैं कि मुझे ख़ुदा तआ़ला से उम्मीद है कि ज़मीन पर जितने

दरख़्त और कंकर हैं उनकी गिनती के बराबर लोगों की शफ़ाअ़त मैं करूँगा। पस ऐ मुआ़विया! आपको तो इसकी उम्मीद हो और हज़रत अ़ली रज़ि. इससे ना-उम्मीद हों? मुस्नद अहमद में है कि मुलैका के दोनों लड़के रसूले अकरम सल्ल. के पास आये और कहने लगे- हमारी माँ हमारे वालिद की बड़ी इ़ज़्ज़त करती थीं, बच्चों पर बड़ी मेहरबानी और शफ़क़त करती थीं, मेहमान नवाज़ी में कोई कमी न करती थीं, हाँ उन्होंने जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के ज़माने में अपनी लड़कियों को ज़िन्दा दफ़नाया था। आपने फ़रमाया फिर वह जहन्नम में पहुँची। वे दोनों ग़मगीन व रन्जीदा होकर लौटे तो आपने हुक्म दिया कि उन्हें वापस बुला लो। वे वापस आये और उनके चेहरे पर ख़ुशी थी कि शायद अब हुज़ूर सल्ल. कोई अच्छी बात सुनायेंगे। आपने फ़रमाया सुनो मेरी माँ और तुम्हारी माँ दोनों एक साथ ही हैं। एक मुनाफ़िक़ यह सुनकर कहने लगा कि इससे इसकी माँ को क्या फ़ायदा? हम इसके पीछे जाते हैं। एक अन्सारी जो हुज़ूर सल्ल. से सबसे ज़्यादा सवालात करने का आ़दी था, कहने लगा या रसूलल्लाह! क्या उसके या उन दोनों के बारे में आपसे ख़ुदा तआ़ला ने कोई वादा किया है? आप समझ गये कि इसने कुछ सुना है। फ़रमाने लगे न मेरे रब ने चाहा न मुझे इस बारे में कोई इच्छा और तमन्ना दी। सुनो! मैं क़ियामत के दिन मक़ामे महमूद पर पहुँचाया जाऊँगा। अन्सारी ने कहा- वह कौनसा मक़ाम है? आपने फ़रमाया यह उस वक़्त जबकि तुम्हें नंगे बदन बिना ख़तना के लाया जायेगा, सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को कपड़े पहनाये जायेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- मेरे ख़लील (दोस्त) को कपड़े पहनाओ, पस दो चादरें सफ़ेद रंग की पहनाई जायेंगी और आप अ़र्श की तरफ़ रुख़ करके बैठ जायेंगे। फिर मेरा लिबास लाया जायेगा। मैं उनकी दायीं तरफ़ उस जगह खड़ा हूँगा कि तमाम अगले-पिछले लोग रश्क करेंगे और कौसर से लेकर हौज़ तक उनके लिये खोल दिया जायेगा। मुनाफ़िक़ कहने लगे पानी के जारी होने के लिये तो मिट्टी और कंकर लाज़िमी हैं। आपने फ़रमाया हाँ उसकी मिट्टी मुश्क है और कंकर मोती हैं। उसने कहा हमने तो कभी ऐसा नहीं सुना, अच्छा पानी के किनारे दरख़्त भी होने चाहियें। अन्सारी ने कहा या रसूलल्लाह! वहाँ दरख़्त भी होंगे? आपने फ़रमाया हाँ सोने की शाख़ों (टहनियों) वाले। मुनाफ़िक़ ने कहा आज जैसी बात तो हमने कभी नहीं सुनी। अच्छा दरख़्तों में पत्ते और फल भी होने चाहियें? अन्सारी ने हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि क्या उन दरख़्तों में फल भी होंगे? आपने फ़रमाया हाँ, तरह-तरह के जवाहर, उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा। एक घूँट भी जिसने उसमें से पी लिया वह कभी प्यासा न होगा और जो उससे मेहरूम रह गया वह फिर कभी सैराब (तृप्त) न होगा।

अबू दाऊद तियालिसी में है कि फिर अल्लाह तआ़ला शफ़ाअ़त की इजाज़त देगा, पस रूहुल-क़ुदुस हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम खड़े होंगे। फिर हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम खड़े होंगे, फिर हज़रत ईसा या हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम खड़े होंगे, फिर तुम्हारे नबी (हज़रत मुहम्मद सल्ल.) खड़े होंगे। आप से ज़्यादा किसी की शफ़ाअ़त न चलेगी। यही मक़ामे महमूद है जिसका ज़िक्र इस आयत में है।

मुस्नद अहमद में है कि लोग क़ियामत के दिन उठाये जायेंगे। मैं अपनी उम्मत समेत एक टीले पर खड़ा हो जाऊँगा, मुझे अल्लाह तआ़ला हरे रंग का जोड़ा पहनायेगा, फिर मुझे इजाज़त दी जायेगी और जो कुछ कहना होगा कहूँगा, यही मक़ामे महमूद है।

मुस्नद अहमद में है कि क़ियामत के दिन सबसे पहले मुझे सज्दा करने की इजाज़त दी जायेगी और मुझे ही सबसे पहले सर उठाने की इजाज़त मिलेगी। मैं अपने आगे-पीछे दायें-बायें देखकर अपनी उम्मत को दूसरी उम्मतों में से पहचान लूँगा। किसी ने पूछा हुज़ूर! और सारी उम्मतें जो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के

वक़्त तक की होंगी, उन सबमें से आप ख़ास अपनी उम्मत को कैसे पहचान लेंगे? आपने इरशाद फ़रमाया वुज़ू के असर से उनके हाथ और मुँह चमक रहे होंगे, उनके सिवा और कोई ऐसा न होगा। और मैं उन्हें यूँ पहचान लूँगा कि उनके आमाल-नामे उनके दायें हाथ में मिलेंगे और निशान यह है कि उनकी औलादें उनके आगे-आगे चल रही होंगी। मुस्नद अहमद में है हुज़ूर सल्ल. के पास गोश्त लाया गया और शाने का गोश्त चूँकि आपको ज़्यादा पसन्द था, वही आपको दिया गया, आप उसमें से गोश्त तोड़-तोड़कर खाने लगे और फ़रमाया- क़ियामत के दिन तमाम लोगों का सरदार मैं हूँ। अल्लाह तआ़ला तमाम अगलों-पिछलों को एक ही मैदान में जमा करेगा, आवाज़ देने वाला उन्हें सुनायेगा, निगाहें ऊपर चढ़ जायेंगी, सूरज बिल्कुल नज़दीक हो जायेगा और लोग ऐसी सख़्ती और रंज व ग़म में मुब्तला हो जायेंगे जो नाक़ाबिले बरदाश्त होगा। उस वक़्त वे आपस में कहेंगे कि देखो तो सही हम सब किस मुसीबत में मुब्तला हैं। चलो किसी से कहकर उसे सिफ़ारिशी बनाकर अल्लाह तआ़ला के पास भेजें। चुनाँचे मश्विरे से तय होगा और लोग हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के पास जायेंगे, कहेंगे कि आप तमाम इनसानों के बाप हैं, अल्लाह तआ़ला ने आपको अपने हाथ से पैदा किया है, आप में अपनी रूह फूँकी है, अपने फ़रिश्तों को आपके सामने सज्दा करने का हुक्म देकर उनसे सज्दा कराया है, आप क्या हमारी परेशानी देख नहीं रहे हैं? आप परवर्दिगार से शफ़ाअ़त कीजिए। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जवाब देंगे कि मेरा रब आज इस क़द्र ग़ज़बनाक (जलाल में) हो रहा है कि कभी इससे पहले ऐसा ग़ज़बनाक नहीं हुआ, और न इसके बाद कभी होगा। ख़ुदा तआ़ला ने मुझे एक दरख़्त से रोका था, लेकिन मुझसे नाफ़रमानी हो गयी, आज तो मुझे ख़ुद अपनी फ़िक्र है, नफ़्सी-नफ़्सी।

फिर लोग आयेंगे और कहेंगे कि ऐ नूह! आपको ज़मीन वालों की तरफ़ सबसे पहले ख़ुदा तआ़ला ने रसूल बनाकर भेजा, आपका नाम उसने शुक्रगुज़ार बन्दा रखा। आप हमारे लिये अपने रब के पास शफ़ाअ़त कीजिए। देखिये तो हम कैसी मुसीबत में मुब्तला हैं? हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम जवाब देंगे कि आज तो मेरा परवर्दिगार इस क़द्र ग़ज़बनाक (ग़ुस्से में) है कि न इससे पहले कभी ऐसा ग़ुस्से में हुआ न इसके बाद कभी ऐसा ग़ुस्सा होगा। मेरे लिये एक दुआ़ थी जो मैंने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ माँग ली थी, मुझे तो आज अपनी पड़ी है, नफ़्सी नफ़्सी का आ़लम है, तुम किसी और के पास जाओ। हज़रत इब्राहीम के पास जाओ। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम फ़रमायेंगे कि आज मेरा रब सख़्त ग़ज़बनाक है, कि न तो इससे पहले कभी ऐसा नाराज़ हुआ न इसके बाद कभी इससे ज़्यादा ग़ुस्से में आयेगा। फिर आप अपने झूठ याद करके नफ़्सी नफ़्सी करने लगेंगे और फ़रमायेंगे मेरे सिवा किसी और के पास जाओ। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास जाओ। लोग हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास जायेंगे और कहेंगे ऐ मूसा! आप अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह तआ़ला ने आपको रिसालत और अपने कलाम से नवाज़ा है, आप हमारे परवर्दिगार के पास हमारी सिफ़ारिश ले जाईये, देखिये तो हम कैसी सख़्त आफ़त में हैं? आप फ़रमायेंगे आज तो मेरा रब सख़्त नाराज़ है, ऐसा कि इससे पहले कभी ऐसा नाराज़ नहीं हुआ और न कभी इसके बाद ऐसा नाराज़ होगा। मैंने ख़ुदा तआ़ला के हुक्म के बग़ैर एक इनसान को मार डाला था। नफ़्सी नफ़्सी (यानी मुझे तो ख़ुद अपनी जान की पड़ी है)। तुम मुझे छोड़ो किसी और से कहो। तुम हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास चले जाओ। लोग हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास आयेंगे और कहेंगे ऐ ईसा! आप अल्लाह के रसूल, उसका कलिमा और उसकी रूह हैं जो हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम की तरफ़ भेजी गयी, बचपन में पालने में ही आपने बोलना शुरू कर दिया था। जाईये हमारे रब से हमारी शफ़ाअ़त कीजिए। ख़्याल तो फ़रमाईये कि हम किस क़द्र बेचैन हैं? हज़रत ईसा जवाब देंगे कि आज जैसा ग़ुस्सा तो न पहले था न बाद में होगा, नफ़्सी नफ़्सी। आप

Maktab E Ashraf

अपने किसी गुनाह का ज़िक्र न करेंगे। फ़रमायेंगे तुम किसी और ही के पास जाओ। देखो मैं बतलाऊँ तुम सब मुहम्मद के पास जाओ। चुनाँचे वे सब हुज़ूर सल्ल. के पास आयेंगे और कहेंगे ऐ मुहम्मद! आप रसूलुल्लाह हैं आप ख़ातिमुल-अम्बिया हैं, अल्लाह तआ़ला ने आपके तमाम अगले पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा दिये हैं, आप हमारी शफ़ाअ़त कीजिए। देखिये तो हम कैसी सख़्त बला में घिरे हुए हैं।

पस मैं खड़ा हूँगा और अ़र्श के नीचे आकर अपने रब तआ़ला के सामने सज्दे में गिर पड़ूँगा। फिर अल्लाह तआ़ला मुझ पर अपनी हम्द व सना (तारीफ़ व प्रशंसा) के वे अलफ़ाज़ खोलेगा जो मुझसे पहले किसी और पर नहीं खुले थे। फिर मुझसे फ़रमाया जायेगा ऐ मुहम्मद! अपना सर उठाओ, माँगो तुम्हें मिलेगा, शफ़ाअ़त करो मन्ज़ूर होगी। मैं अपना सर सज्दे से उठाऊँगा और कहूँगा- ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी उम्मत! ऐ मेरे रब मेरी उम्मत! खुदाया मेरी उम्मत। पस मुझसे फ़रमाया जायेगा जाओ अपनी उम्मत में से उन लोगों को जिन पर हिसाब नहीं जन्नत में ले जाओ, उन्हें जन्नत के दायें दरवाज़े की तरफ़ से पहुँचाओ, वैसे दूसरे तमाम दरवाज़ों से दाख़िले की भी उन्हें मनाही नहीं है। उस खुदा की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, जन्नत की दो चौखटों के बीच इतना फ़ासला है जितना मक्के और हमीर में या मक्के और बसरा में। यह हदीस सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में भी है।

मुस्लिम शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन आदम की औलाद (यानी इनसानों) का सरदार मैं हूँगा। उस दिन सबसे पहले मेरी क़ब्र की ज़मीन खुलेगी, मैं ही पहला शफ़ीअ़ (सिफ़ारिश करने वाला) हूँ और पहला शख़्स जिसकी शफ़ाअ़त क़बूल की जायेगी। इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर सल्ल. से इस आयत का मतलब पूछा गया तो आपने फ़रमाया- यह शफ़ाअ़त है। मुस्नद अहमद में है कि मक़ामे महमूद वह मक़ाम है जिसमें मैं अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त करूँगा। मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि क़ियामत के दिन खाल की तरह अल्लाह तआ़ला ज़मीन को खींच लेगा यहाँ तक कि हर शख़्स के लिये सिर्फ़ अपने दोनों क़दम टिकाने की जगह ही रहेगी। सबसे पहले मुझे तलब किया जायेगा। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम अल्लाह तआ़ला की दायीं तरफ़ होंगे। अल्लाह की क़सम इससे पहले उसने उसे नहीं देखा। मैं कहूँगा कि बारी तआ़ला इस फ़रिश्ते ने मुझसे कहा था कि इसे तू मेरी तरफ़ भेज रहा था। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि इसने सच कहा, अब मैं यह कहकर शफ़ाअ़त करूँगा कि खुदाया तेरे बन्दों ने ज़मीन के विभिन्न हिस्सों में तेरी इबादत की है। आप फ़रमाते हैं कि यही मक़ामे महमूद है। यह हदीस मुर्सल है।

और आप (यूँ) दुआ कीजिए कि ऐ परवर्दिगार! मुझको ख़ूबी के साथ पहुँचाइयो, और मुझको ख़ूबी के साथ ले जाइयो, और मुझको अपने पास से ऐसा ग़लबा दीजियो जिसके साथ मदद हो। (80) और कह दीजिए कि हक़ आया और बातिल गया गुज़रा हुआ। (और) वाक़ई बातिल चीज़ तो (यूँ ही) आती-जाती (रहती) है। (81)	وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ٥ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ٥

मदीना की तरफ़ हिजरत

मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल किया गया है कि नबी सल्ल. मक्का शरीफ़ में थे

Muhtaba Ashraf

फिर आपको हिजरत का हुक्म हुआ और यह आयत उतरी। इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं कि यह हदीस हसन सही है। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि मक्का के काफ़िरों ने मश्विरा किया कि आपको क़त्ल कर दें या निकाल दें या क़ैद कर लें, पस अल्लाह का यही इरादा हुआ कि मक्का वालों को उनकी बद-आमालियों का मज़ा चखा दे। उसने अपने पैग़म्बर को मदीना जाने का हुक्म फ़रमाया, यही इस आयत में बयान हो रहा है। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि मक्का से निकलना और मदीना में दाख़िल होना, यही क़ौल सबसे ज़्यादा मशहूर है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि सच्चाई के दाख़िले से मुराद मौत है और सच्चाई से निकलने से मुराद मौत के बाद की ज़िन्दगी है। और अक़वाल भी हैं लेकिन ज़्यादा सही पहला क़ौल ही है। इमाम इब्ने जरीर भी इसी को इख़्तियार करते हैं।

फिर हुक्म हुआ कि ग़लबे और मदद की दुआ़ हमसे करो, इस दुआ़ पर अल्लाह तआ़ला ने फ़ारस और रोम का मुल्क और इज़्ज़त देने का वादा फ़रमा लिया। इतना तो हुज़ूर सल्ल. मालूम कर चुके थे कि बग़ैर ग़लबे के दीन का प्रसार व फैलाव और ज़ोर नामुम्किन है, इसलिये अल्लाह तआ़ला से मदद तलब की ताकि अल्लाह की किताब, अल्लाह की हदें, शरीअ़त के फ़राईज़ और दीन को आप क़ायम कर सकें। यह ग़लबा भी ख़ुदा की एक ज़बरदस्त रहमत है, अगर यह न होता तो एक दूसरे को खा जाता, हर ज़ोरावर कमज़ोर का शिकार कर लेता।

'सुल्ताने नसीर' से मुराद खुली दलील भी है, लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा बेहतर है, इसलिये कि हक़ के साथ ग़लबा और ताक़त भी ज़रूरी चीज़ है ताकि हक़ के मुख़ालिफ़ दबे हुए रहें, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने लोहे के उतारने के एहसान को क़ुरआन में ख़ास तौर पर ज़िक्र किया है। एक हदीस में है कि हुकूमत की वजह से अल्लाह तआ़ला बहुत सी उन बुराईयों को रोक देता है जो सिर्फ़ क़ुरआन से नहीं रुक सकती थीं। यह बिल्कुल वास्तविकता है, बहुत से लोग हैं कि क़ुरआन की नसीहतें, इसके वादे वाईद उन्हें बदकारियों से नहीं रोक सकते, लेकिन इस्लामी ताक़त से मरऊब होकर वे बुराईयों से रुक जाते हैं।

फिर काफ़िरों को डाँट लगायी और धमकाया जाता है कि ख़ुदा की जानिब से हक़ आ चुका, सच्चाई उतर आयी, जिसमें कोई शक व शुब्हा नहीं, क़ुरआन ईमान नफ़ा अपने वाला सच्चा इल्म अल्लाह की तरफ़ से आ गया। कुफ़्र बरबाद ग़ारत और बेनाम व निशान हो गया, राहे हक़ के मुक़ाबले में बेजान साबित हुआ, हक़ ने बातिल को बिखेर कर रख दिया, वह नाबूद और बेवजूद हो गया।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. मक्के में आये, बैतुल्लाह के आस-पास तीन सौ साठ बुत थे। आप अपने हाथ की लकड़ी से उन्हें चोट लगा रहे थे और यही आयत पढ़ते थे और फ़रमाते जाते थे "हक़ आ चुका बातिल न दोबारा आ सकता है न लौट सकता है"। अबू यअ़ला में है कि हुज़ूर सल्ल. सहाबा के साथ मक्के में आये, बैतुल्लाह के इर्द-गिर्द तीन सौ साठ बुत थे जिनकी पूजा की जाती थी। आपने फ़ौरन हुक्म दिया कि इन सबको औंधे मुँह गिरा दो। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई।

और हम क़ुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि वे ईमान वालों के हक़ में तो शिफ़ा और रहमत है, और नाइन्साफ़ों को उससे और उल्टा नुक़सान बढ़ता है। (82)	وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

Mektab E Ashraf

शिफ़ा व रहमत

अल्लाह तआला अपनी किताब के बारे में जिसमें बातिल (झूठ और ग़लत होने) का मामूली सा शुब्हा भी नहीं, फ़रमाता है कि वह ईमान वालों के दिलों की तमाम बीमारियों के लिये शिफ़ा है। शक, निफ़ाक़, शिर्क, डेढ़ेपन और बातिल की मिलावट सब इससे दूर हो जाती है। ईमान, हिक्मत, भलाई, रहमत, नेकियों की रग़बत (रुचि और दिलचस्पी) इससे हासिल होती है। जो भी इस पर ईमान व यक़ीन लाये, इसे सच समझकर इसकी ताबेदारी करे यह उसे ख़ुदा की रहमत के नीचे ला खड़ा करती है। हाँ जो ज़ालिम जाबिर हो, जो इससे इनकार करे वह ख़ुदा से और दूर हो जाता है। क़ुरआन सुनकर उसका कुफ़्र और बढ़ जाता है। पस यह आफ़त ख़ुद काफ़िरों की तरफ़ से उनके कुफ़्र की वजह से होती है न कि क़ुरआन की तरफ़ से, क़ुरआन तो सरासर रहमत व शिफ़ा है। चुनाँचे क़ुरआन की एक और आयत में है:

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ .... الخ.

कह दे कि यह ईमान वालों के लिये हिदायत और शिफ़ा है और बेईमानों के कान बहरे हैं और उनकी निगाहों पर पर्दा है। ये तो दूर-दराज़ से आवाज़ें दिये जाते हैं। एक और आयत में है:

وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ ...... الخ.

जहाँ कोई सूरत उतरी तभी एक गिरोह ने पूछना शुरू किया कि तुममें से किसको इसने ईमान में बढ़ाया?

सुनो! ईमान वालों के तो ईमान बढ़ जाते हैं और वे ख़ुश व प्रसन्न हो जाते हैं। हाँ जिनके दिलों में बीमारी है उनकी गन्दगी पर गन्दगी बढ़ती जाती है और मरते दम तक कुफ़्र पर क़ायम रहते हैं। इस मज़मून की और भी बहुत सी आयतें हैं। ग़र्ज़ कि मोमिन इस पाक किताब को सुनकर नफ़ा उठाता है, इसे हिफ़्ज़ (मुँह-ज़बानी याद) करता है, इसे याद करता है, इसका ख़्याल रखता है। बेइन्साफ़ लोग न इससे नफ़ा हासिल करते हैं न इसे हिफ़्ज़ करते हैं, न इसकी हिफ़ाज़त करते हैं, अल्लाह ने इसे शिफ़ा व रहमत सिर्फ़ मोमिनों के लिये बनाया है।

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوْسًا ○ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ○ ع

और आदमी को जब हम नेमत अ़ता करते हैं तो मुँह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है, और जब उसको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो नाउम्मीद हो जाता है।1 (83) आप फ़रमा दीजिए कि हर शख़्स अपने तरीक़े पर काम कर रहा है, सो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उसको जो ठीक रास्ते पर हो। (84)

अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है

ख़ैर व शर, बुराई व भलाई में उमूमन इनसान की जो आ़दत है उसे क़ुरआने करीम बयान फ़रमा रहा है। इनसान माल, आ़फ़ियत, फ़तह, रिज़्क़, मदद, ताईद, कुशादगी और आराम पाते ही नज़रें फेर लेता है,

खुदा से दूर हो जाता है। जैसे कि उसे कभी बुराई पहुँचेगी ही नहीं। खुदा से मुँह फेर लेता है जैसे कि कभी की जान-पहचान ही नहीं। और जहाँ मुसीबत तकलीफ़, दुख दर्द, आफ़त हादसा पहुँचा और यह नाउम्मीद हुआ, समझ लेता है कि अब भलाई, छुटकारा, राहत, आराम मिलेगा ही नहीं।

क़ुरआने करीम एक और जगह इरशाद फ़रमाता है:

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ. وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ. اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ.

कि इनसान को राहतें देकर जहाँ हमने वापस ले लीं कि यह बिल्कुल मायूस और नाशुक्रा बन गया और जहाँ मुसीबतों से हमने आ़फ़ियतें (अमन व सुकून) दीं कि भूल गया, घमण्ड में आ गया और अकड़ने लगा कि बस अब बुराईयाँ मुझसे दूर हो गयीं। फ़रमाता है कि हर शख़्स अपने-अपने ढंग और तर्ज़ पर, अपनी तबीयत पर, अपनी नीयत पर, अपने दीन और तरीक़े पर आ़मिल (चलने और अ़मल करने वाला) है, तो लगे रहें, असल में सही रास्ते पर कौन है इसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है।

इसमें मुश्रिकों को तंबीह (डाँट और धमकी) है कि वे अपने रास्ते पर चलते हों और उसे अच्छा समझ रहे हों लेकिन खुदा के पास जाकर खुलेगा कि जिस राह पर वे थे वह कैसी ख़तरनाक थी। जैसे फ़रमान है कि बेईमानों से कह दो कि अच्छा है अपनी जगह अपने काम करते जाओ.....। बदले का वक़्त यह नहीं क़ियामत का दिन है, नेकी बदी की तमीज़ उसी दिन होगी, सबको बदले मिलेंगे, खुदा पर कोई बात छुपी नहीं।

और ये लोग आपसे (इम्तिहान के तौर पर) रूह के बारे में पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि रूह मेरे रब के हुक्म से बनी है, और तुमको बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है। (85)	وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ۝

रूह क्या है?

बुख़ारी वग़ैरह में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्ल. मदीने के खेतों में जा रहे थे, आपके हाथ में लकड़ी थी, मैं आपके साथ था। यहूदियों के एक गिरोह ने आपको देखकर आपस में काना-फूसी शुरू की कि आओ इनसे रूह के बारे में सवाल करें। कोई कहने लगा ठीक है, कोई रोकने लगा, कोई कहने लगा तुम्हें इससे क्या फ़ायदा? कोई कहने लगा शायद कोई जवाब ऐसा दें जो तुम्हारे ख़िलाफ़ हो, जाने दो न पूछो। आख़िर वे आये और हज़रत से सवाल किया। आप अपनी लकड़ी पर टेक लगाकर ठहर गये। मैं समझ गया कि 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम) उतर रही है। मैं ख़ामोश खड़ा रह गया। उसके बाद आपने इसी आयत की तिलावत की।

इससे तो बज़ाहिर मालूम होता है कि यह आयत मदनी है, हालाँकि पूरी सूरत मक्की है। लेकिन हो सकता है कि मक्का की उतरी हुई आयत से ही उस मौक़े पर मदीने के यहूदियों को जवाब देने की 'वही' हुई हो या यह कि दोबारा यही आयत नाज़िल हुई हो। मुस्नद अहमद की रिवायत से भी इस आयत का

Maktab E Ashraf

मक्के में उतरना मालूम होता है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ुरैशियों ने यहूदियों से दरख़्वास्त की कि कोई मुश्किल सवाल बतलाओ कि हम उनसे पूछें, उन्होंने यह सवाल बताया। इसके जवाब में यह आयत उतरी, तो यह सरकश (नाफ़रमान) कहने लगे- हमें बड़ा इल्म है, तौरात हमें मिली है और जिसके पास तौरात हो उसे बहुत सी भलाई मिल गयी। अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाईः

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا....... الخ.

यानी अगर तमाम समुद्रों की स्याही (रोशनाई) मिल जाये और उससे अल्लाह के कलिमात लिखने शुरू किये जायें तो यह पूरी रोशनाई ख़त्म हो जायेगी और ख़ुदा तआ़ला के कलिमात बाक़ी रह जायेंगे। चाहे फिर तुम उसकी मदद में ऐसे ही और भलाई लाओ। हज़रत इक्रिमा ने यहूदियों के सवाल पर इस आयत का उतरना और उनके इस मक्रूह (बुरे और बेहूदा) क़ौल पर दूसरी आयतः

وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ...... الخ.

का उतरना बयान फ़रमाया है। यानी रू-ए-ज़मीन के दरख़्तों की क़लमें और पूरी दुनिया के समुद्रों की रोशनाई और उनके साथ ही साथ ऐसे ही और समुद्र भी हों तब भी अल्लाह तआ़ला के कलिमात पूरे नहीं हो सकते। इसमें शक नहीं कि तौरात का इल्म जो जहन्नम से बचाने वाला है, बड़ी चीज़ है, लेकिन अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में वह बहुत थोड़ी चीज़ है।

इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. ने ज़िक्र किया है कि मक्का में यह आयत उतरी कि तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है। जब आप हिजरत करके मदीना पहुँचे तो मदीने के यहूदी उलेमा आपके पास आये और कहने लगे- हमने सुना है कि आप यूँ कहते हैं कि तुम्हें तो बहुत ही कम इल्म अ़ता फ़रमाया गया है, इससे मुराद आपकी क़ौम है या हम? आपने फ़रमाया- तुम भी और वे भी। उन्होंने कहा सुनो! तुम ख़ुद क़ुरआन में पढ़ते हो कि हमको तौरात मिली है, और यह भी क़ुरआन में है कि उसमें हर चीज़ का बयान है। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में यह भी बहुत कम है। हाँ बेशक तुम्हें अल्लाह ने इतना इल्म दे रखा है कि तुम उस पर अ़मल करो तो तुम्हें बहुत कुछ नफ़ा मिले, और यह आयत उतरीः

وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ....... الخ.

(यानी सूरः लुक़मान की आयत 27)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल किया गया है कि यहूदियों ने हुज़ूर सल्ल. से रूह के बारे में सवाल किया कि उसे जिस्म के साथ अ़ज़ाब क्यों होता है? वह तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है। चूँकि इस बारे में कोई आयत और 'वही' आप पर नहीं उतरी थी, आपने उनसे कुछ न फ़रमाया, उसी वक़्त आपके पास हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और यह आयत उतरी। यह सुनकर यहूदियों ने कहा आपको इसकी ख़बर किसने दी? आपने फ़रमाया- जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा की तरफ़ से यह फ़रमान लाये हैं। वे कहने लगे वह तो हमारा दुश्मन है। इस पर आयतः

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ....... الخ.

नाज़िल हुई। यानी जिब्राईल के दुश्मन का दुश्मन ख़ुदा है और ऐसा शख़्स काफ़िर है।

एक क़ौल यह भी है कि यहाँ रूह से मुराद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं। एक क़ौल यह भी है कि मुराद एक ऐसा अ़ज़ीमुश्शान फ़रिश्ता है जो तमाम मख़्लूक़ के बराबर है। एक हदीस में है कि ख़ुदा का

एक फ़रिश्ता ऐसा भी है कि अगर उससे सातों ज़मीनों और सातों आसमानों को एक लुक़्मा बनाने को कहा जाये तो वह बना ले। उसकी तस्बीह यह है 'सुब्हान-क हैसु कुन्-त' (ख़ुदाया तू पाक है जहाँ भी है)। यह हदीस ग़रीब बल्कि मुन्कर है।

हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि यह एक फ़रिश्ता है जिसके सत्तर हज़ार मुँह हैं और हर मुँह में सत्तर हज़ार ज़बानें हैं, और हर ज़बान पर सत्तर हज़ार भाषायें हैं, वह उन तमाम ज़बानों से हर बोली में ख़ुदा की तस्बीह करता है, उसकी हर-हर तस्बीह से अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ता पैदा करता है जो और फ़रिश्तों के साथ ख़ुदा की इबादत में क़ियामत तक उड़ता रहता है। यह रिवायत भी अ़जीब व ग़रीब है। वल्लाहु आलम।

सुहैली की रिवायत में है कि उसके एक लाख सर हैं और हर सर में एक लाख मुँह हैं और हर मुँह में एक लाख ज़बानें हैं, जिनसे विभिन्न बोलियों में वह अल्लाह की पाकी बयान करता रहता है। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद फ़रिश्तों की वह जमाअ़त है जो इनसानी सूरत पर है। एक क़ौल यह भी है कि ये वे फ़रिश्ते हैं जो दूसरे फ़रिश्तों को तो देखते हैं लेकिन दूसरे फ़रिश्ते इन्हें नहीं देखते। पस वे फ़रिश्तों के लिये ऐसे ही हैं जैसे हमारे लिये ये फ़रिश्ते।

फिर फ़रमाता है कि उन्हें जवाब दे कि रूह मेरे रब का हुक्म है, यानी उसकी शान से है। उसका इल्म सिर्फ़ उसी को है, तुम में से किसी को नहीं। तुम्हें जो इल्म है वह ख़ुदा ही का दिया हुआ है। पस वह बहुत ही कम है। मख़्लूक़ को सिर्फ़ वही मालूम है जो उसने उन्हें मालूम कराया है।

हज़रत ख़ज़िर और मूसा अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से में आ रहा है कि जब ये दोनों बुज़ुर्ग कश्ती पर सवार हो रहे थे, उस वक़्त एक चिड़िया कश्ती के तख़्ते पर बैठकर अपनी चोंच पानी में डुबोकर उड़ गयी तो हज़रत ख़ज़िर ने फ़रमाया- ऐ मूसा मेरा, तेरा और तमाम मख़्लूक़ का इल्म ख़ुदा के इल्म के सामने ऐसा और इतना ही है जितना यह चिड़िया इस समुद्र से ले उड़ी। (औ कमा क़ाल)

बक़ौल अ़ल्लामा सुहैली बाज़ लोग कहते हैं कि उन्हें उनके सवाल का जवाब नहीं दिया, क्योंकि उनका सवाल हठधर्मी और न मानने के तौर पर था, और यह भी कहा गया है कि जवाब हो गया, मुराद यह है कि रूह शरीअ़ते ख़ुदा (अल्लाह के हुक्म और क़ानून) में से है तुम्हें उसमें न जाना चाहिये, तुम उसको जानना चाहते हो कि जिसके पहचानने की कोई तबई और फ़ल्सफ़ी राह (तरीक़ा) नहीं, बल्कि वह शरीअ़त की जहत से है, पस तुम शरीअ़त को क़बूल कर लो, लेकिन हमें तो यह तरीक़ा ख़तरे से ख़ाली नज़र नहीं आता। वल्लाहु आलम।

फिर अ़ल्लामा सुहैली ने उलेमा के मतभेद को बयान किया है कि रूह नफ़्स ही है या उसके अ़लावा। और इस बात को साबित किया है कि रूह जिस्म में हवा की तरह जारी है और बहुत ही लतीफ़ (हल्की और बारीक) चीज़ है, जैसे कि दरख़्तों की रगों में पानी चढ़ता है। और जो रूह फ़रिश्ता माँ के पेट के बच्चे में फूँकता है वह जिस्म के साथ मिलते ही नफ़्स बन जाती है और जिसकी मदद से वह अच्छी बुरी सिफ़तें अपने अन्दर हासिल कर लेती है, या तो अल्लाह के ज़िक्र के साथ मुत्मईन (सन्तुष्ट) होने वाली हो जाती है या बुराईयों का हुक्म करने वाली बन जाती है। जैसे पानी पेड़ की ज़िन्दगी है, उसके पेड़ से मिलने के सबब वह एक ख़ास बात अपने अन्दर पैदा कर लेता है। अंगूर पैदा हुए फिर उनका पानी निकाला गया या शराब बनाई गयी, पस वह असली पानी अब इस सूरत में आया, अब उसे असली पानी नहीं कहा जा सकता। इसी तरह जिस्म से मिलने के बाद रूह को अभी रूह नहीं कहा जा सकता, इसी तरह उसे नफ़्स भी नहीं

Maktaba E Ashraf

कहा जा सकता, यह कहना भी उसके अन्जाम को पहचानने के तौर पर है।

कलाम का हासिल यह हुआ कि रूह नफ़्स और मादूदे की असल (जड़ और बुनियाद) है और नफ़्स उससे और उसके बदन के साथ मिलाप से मुरक्कब (तैयार शुदा) है। पस रूह नफ़्स है लेकिन एक वजह से न कि तमाम वज्हों से। बात तो यह दिल को लगती है लेकिन हक़ीक़त का इल्म अल्लाह ही को है, लोगों ने इस बारे में बहुत कुछ कलाम किया है और बड़ी-बड़ी मुस्तक़िल किताबें इस पर लिखी हैं। इस मज़्मून पर बेहतरीन किताब हाफ़िज़ इब्ने मन्दा की "किताबुर्रूह" है।

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَیْنَا وَكِیْلًا ۝ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَیْكَ كَبِیْرًا ۝ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰۤی اَنْ یَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِیْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۫ فَاَبٰۤی اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝	और अगर हम चाहें तो जिस क़द्र 'वही' आप पर भेजी है सब छीन लें, फिर उसके (वापस लाने के) लिए आपको हमारे मुक़ाबले में कोई हिमायती न मिले। (86) मगर (यह) आपके रब ही की रहमत है (कि ऐसा नहीं किया) बेशक आप पर उसका बड़ा फ़ज़्ल है। (87) आप फ़रमा दीजिए कि अगर तमाम इनसान और जिन्नात (इस बात के लिए) जमा हो जाएँ कि ऐसा क़ुरआन बना लाएँ तब भी ऐसा न ला सकेंगे, अगरचे एक दूसरे का मददगार भी बन जाए। (88) और हमने लोगों के (समझाने के) लिए हर क़िस्म का उम्दा मज़्मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इनकार किए बग़ैर न रहे। (89)

आप पर भी बस रहमत है

अल्लाह तआ़ला अपने ज़बरदस्त एहसान और अ़ज़ीमुश्शान नेमत को बयान फ़रमा रहा है, जो उसने अपने हबीब हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर इनाम की है। यानी आप पर वह पाक किताब नाज़िल फ़रमाई जिसमें कहीं से भी किसी वक़्त बातिल की मिलावट नामुम्किन है। अगर वह चाहे तो इस 'वही' (अपने नाज़िल किये हुए पैग़ाम) को वापस भी ले सकता है। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि आख़िरी ज़माने में एक सुर्ख़ हवा चलेगी मुल्क शाम की तरफ़ से यह उठेगी, उस वक़्त क़ुरआन के पन्नों में से और हाफ़िज़ों के दिलों में से क़ुरआन उठ जायेगा, एक हर्फ़ भी बाक़ी नहीं रहेगा। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की।

फिर अपना फ़ज़्ल व करम और एहसान बयान करके फ़रमाता है कि इस क़ुरआने करीम की बुज़ुर्गी (बड़ाई) एक यह भी है कि तमाम मख़्लूक़ इसके मुक़ाबले से आ़जिज़ है, किसी के बस में इस जैसा कलाम नहीं, जिस तरह अल्लाह तआ़ला बेमिस्ल बेनज़ीर बेशरीक है, इसी तरह उसका कलाम अपने जैसी किसी

Maktab E Ashraf

मिसाल व नज़ीर से पाक है। इब्ने इस्हाक़ ने नक़ल किया है कि यहूदी लोग आये थे और उन्होंने कहा था कि हम भी इसी जैसा कलाम बना सकते हैं, पस यह आयत उतरी। लेकिन हमें इसके मानने में संकोच है, इसलिये कि यह सूरत मक्की है और इसका तमाम बयान क़ुरैश वालों से है, वही मुख़ातब हैं और यहूद के साथ मक्के में आपका इज्तिमा (मज्लिस और मिटिंग) नहीं हुआ, मदीने में उनसे साबक़ा पड़ा। वल्लाहु आलम।

हमने इस पाक किताब में हर क़िस्म की दलीलें बयान फ़रमाकर हक़ को स्पष्ट कर दिया है और हर बात को पूरी तफ़सील व विस्तार से बयान फ़रमा दिया है, इसके बावजूद भी अक्सर लोग हक़ की मुख़ालफ़त (विरोध) कर रहे हैं, हक़ को ठुकरा रहे हैं और ख़ुदा की नाशुक्री में लगे हुए हैं।

और ये लोग कहते हैं कि हम आप पर हरगिज़ ईमान न लाएँगे जब तक आप हमारे लिए (मक्का की) ज़मीन से कोई चश्मा जारी न कर दें। (90) या ख़ास आपके लिए खजूर और अंगूरों का कोई बाग़ न हो, फिर उस बाग़ के बीच-बीच में जगह-जगह बहुत-सी नहरें आप जारी कर दें। (91) या जैसा कि आप कहा करते हैं, आप आसमान के टुकड़े हमपर न गिरा दें, या आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने न (ला खड़ा) करें। (92) या आपके पास कोई सोने का बना हुआ घर न हो, या आप (हमारे सामने) आसमान पर न चढ़ जाएँ, और हम तो आपके (आसमान पर) चढ़ने को भी कभी यक़ीन न करें जब तक कि (वहाँ से) आप हमारे पास एक तहरीर न लाएँ, जिसको हम पढ़ भी लें। आप फ़रमा दीजिए कि सुब्हानल्लाह! मैं सिवाय इसके कि आदमी हूँ (मगर) पैग़म्बर हूँ और क्या हूँ (कि इन फ़रमाईशों को पूरा करना मेरी क़ुदरत में हो)। (93)	وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ۝ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ۝ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ۝ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ ع ۱۰ ۹ ۱۰

बेवक़ूफ़ी के मुतालबे

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि रबीआ़ के दोनों बेटे उक़्बा और शैबा, अबू सुफ़ियान बिन हरब, बनू अ़ब्दुद्दार क़बीले के दो शख़्स, अबुल-बुख़्तरी बनी असद का, अस्वद बिन मुत्तलिब बिन असद, ज़मआ़ बिन अस्वद, वलीद बिन मुग़ीरह, अबू जहल बिन हिशाम, अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमैया, उमैया बिन ख़लफ़, आ़स बिन वाईल और बनीह व मुनब्बह सहमी हज्जाज के लड़के, ये सब या इनमें से कुछ सूरज के छुपने के बाद काबा शरीफ़ के पीछे जमा हुए और कहने लगे- भाई! किसी को भेजकर मुहम्मद को बुलवा लो

और उससे कह-सुनकर आज फ़ैसला कर लो, ताकि कोई उज़्र बाक़ी न रहे। चुनाँचे क़ासिद गया और ख़बर दी कि आपकी क़ौम के बड़े और सरदार लोग जमा हुए हैं और आपको याद किया है। चूँकि हुज़ूर सल्ल. को इन लोगों का हर वक़्त ख़्याल रहता था, आपके जी में आया हो सकता है कि ख़ुदा ने उन्हें सही समझ दे दी हो और ये सही रास्ते पर आ जायें, इसलिये आप फ़ौरन ही तशरीफ़ लाये। क़ुरैश के लोगों ने आपको देखते ही कहा कि सुनिये आज हम आप पर हुज्जत पूरी कर देते हैं ताकि फिर हम पर किसी क़िस्म का इल्ज़ाम न आये। इसी लिये हमने आपको बुलवाया है। अल्लाह की क़सम किसी ने अपनी क़ौम को ऐसी मुसीबत में नहीं डाला होगा जो मुसीबत आपने हम पर खड़ी कर रखी है, तुम हमारे बाप-दादों को गालियाँ देते हो, हमारे दीन को बुरा कहते हो, हमारे बुज़ुर्गों को बेवक़ूफ़ बतलाते हो, हमारे माबूदों को बुरा कहते हो, तुमने हममें फूट और बिखराव डाल दिया, लड़ाईयाँ खड़ी कर दीं, वल्लाह आपने हमें किसी बुराई के पहुँचाने में कोई कसर उठा नहीं रखी। अब साफ़-साफ़ सुन लीजिए और सोच-समझकर जवाब दीजिए अगर आपका इरादा इन तमाम बातों से माल जमा करने का है तो हम मौजूद हैं, हम ख़ुद आपको इस क़द्र माल जमा कर देते हैं कि आपके बराबर हममें से कोई मालदार न हो। अगर आपका इरादा इससे यह है कि आप हम पर सरदारी करें तो लो हम इसके लिये भी तैयार हैं, हम आपकी सरदारी को स्वीकार करते हैं और आपकी ताबेदारी मन्ज़ूर करते हैं। अगर आप बादशाहत की तलब में हैं तो ख़ुदा की क़सम हम आज ही आपकी बादशाहत का ऐलान कर देते हैं, और अगर वाक़ई आपके दिमाग़ में कोई फ़तूर है, कोई जिन्न आपको सता रहा है तो हम मौजूद हैं, दिल खोलकर रक़में ख़र्च करके तुम्हारा इलाज और उपचार करायेंगे यहाँ तक कि आपको शिफ़ा हो जाये या हम माज़ूर समझ लिये जायें। यह सब सुनकर तमाम रसूलों के सरदार हुज़ूर सल्ल. ने जवाब दिया कि सुनो! अल्लाह का शुक्र है मुझे कोई दिमाग़ी बीमारी या जिन्नात व आसेब का ख़लल नहीं, न हीं अपनी इस रिसालत की वजह से मैं मालदार बनना चाहता हूँ, न किसी सरदारी का लालच है, न बादशाह बनना चाहता हूँ बल्कि मुझे अल्लाह तआ़ला ने तुम सबकी तरफ़ अपना सच्चा रसूल बनाकर भेजा है, मुझ पर अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें ख़ुशख़बरियाँ सुना दूँ और डरा दूँ। मैंने अपने रब के पैग़ामात तुम्हें पहुँचा दिये, तुम्हारी सच्ची ख़ैरख़्वाही की, तुम अगर क़बूल कर लोगे तो दोनों जहान में ख़ुशनसीब हो जाओगे और अगर नामन्ज़ूर (अस्वीकार) कर दोगे तो मैं सब्र करूँगा, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला शानुहू मुझमें और तुममें सच्चा फ़ैसला फ़रमा दे।

अब क़ौम के सरदारों ने कहा कि ऐ मुहम्मद! अगर आपको हमारी इन बातों में से कोई भी मन्ज़ूर नहीं तो अब और सुनो, यह तो ख़ुद तुम्हें भी मालूम है कि हमसे ज़्यादा तंग शहर किसी और का नहीं, हमसे ज़्यादा कम मालदार कोई क़ौम नहीं, हमसे ज़्यादा कम रोज़ी हासिल करने वाली भी कोई क़ौम नहीं, तो आप अपने रब से जिसने आपको ही रिसालत देकर भेजा है, दुआ़ कीजिए कि ये पहाड़ यहाँ से हटा ले ताकि हमारा इलाक़ा कुशादा (खुला और हमवार) हो जाये, हमारे शहरों को वुस्अ़त हो जाये, इसमें नहरें, चश्मे और दरिया जारी हो जायें, जैसे कि मुल्के शाम और इराक़ में हैं। और यह भी दुआ़ कीजिए कि हमारे बाप-दादा ज़िन्दा हो जायें और उनमें क़ुसई बिन किलाब ज़रूर हों, वह हममें एक बुज़ुर्ग सच्चे शख़्स थे, हम उनसे पूछ लेंगे, वह आपके बारे में जो कह देंगे हमें इत्मीनान हो जायेगा। अगर आपने यह कर दिया तो हमें आपकी रिसालत पर ईमान आ जायेगा और हम आपकी दिल से तस्दीक़ करने लगेंगे, और आपकी बुज़ुर्गी के क़ायल हो जायेंगे।

आपने फ़रमाया मैं इन चीज़ों के साथ नहीं भेजा गया, इनमें से कोई काम मेरे बस में नहीं। मैं तो ख़ुदा

की बातें तुम्हें पहुँचाने के लिये आया हूँ तुम क़बूल कर लो दोनों जहान में ख़ुश रहोगे, न क़बूल करोगे तो मैं सब्र करूँगा, अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करूँगा, यहाँ तक कि परवर्दिगारे आ़लम मुझमें और तुममें फ़ैसला फ़रमा दे। उन्होंने कहा अच्छा यह भी न सही, लीजिए हम ख़ुद आपके लिये ही तजवीज़ (प्रस्ताव) करते हैं, आप अल्लाह से दुआ़ कीजिए कि वह कोई फ़रिश्ता आपके पास भेजे जो आपकी बातों की सच्चाई और तस्दीक़ कर दे, आपकी तरफ़ से हमें जवाब दे और उससे कहकर आप अपने लिये ही बाग़ात, ख़ज़ाने और सोने-चाँदी के महल बनवा लीजिए ताकि ख़ुद आपकी हालत तो संवर जाये, बाज़ारों में फिरना चलना हमारी तरह रोज़गार की तलाश में निकलना यह तो छूट जाये। यह भी अगर हो जाये तो हम मान लेंगे कि वाक़ई अल्लाह तआ़ला के यहाँ आपकी इज़्ज़त है और आप वाक़ई ख़ुदा के रसूल हैं।

इसके जवाब में आपने फ़रमाया- न मैं यह करूँ न अपने रब से यह तलब करूँ न इसके साथ मैं भेजा गया, मुझे तो अल्लाह तआ़ला ने बशीर (ख़ुशख़बरी देने वाला) व नज़ीर (डराने वाला) बनाया है, बस और कुछ नहीं। तुम अगर मान लो तो दोनों जहान में अपना भला करोगे और न मानो तो न सही। मैं देख रहा हूँ कि मेरा परवर्दिगार मेरे और तुम्हारे बीच क्या फ़ैसला करता है।

उन्होंने कहा अच्छा फिर हम कहते हैं कि जाओ अपने रब से कहकर हम पर आसमान गिरा दो। तुम तो कहते ही हो कि अगर अल्लाह चाहे तो ऐसा कर दे। तो फिर हम कहते हैं इसे कर दो, ढील न करो। आपने फ़रमाया यह ख़ुदा के इख़्तियार की बात है, वह जो चाहे करे, जो न चाहे न करे। मुश्रिकों ने कहा सुनिये! क्या अल्लाह तआ़ला को यह मालूम न था कि हम तेरे पास इस वक़्त बैठेंगे और तुझसे ये चीज़ें तलब करेंगे और इस क़िस्म के सवालात करेंगे? तो चाहिये था कि वह तुझे पहले से बाख़बर कर देता और यह भी बता देता कि तुझे क्या जवाब देना चाहिये, और जब हम तेरी न मानें तो वह हमारे साथ क्या करेगा। सुनिये हमने तो सुना है कि आपको यह सब कुछ यमामा का एक शख़्स रहमान नाम का सिखा जाता है, ख़ुदा की क़सम हम तो रहमान पर ईमान नहीं लायेंगे। नामुम्किन है कि हम उसे मानें, हमने आपसे अ़लैहदगी और किनारा कर लिया, जो कुछ कहना-सुनना था कह-सुन चुके और आपने हमारी वाजिबी और इन्साफ़ की बात नहीं सुनी। अब कान खोलकर होशियार होकर सुन लीजिए कि हम आपको इस हालत में आज़ाद नहीं रख सकते, अब या तो हम आपको हलाक कर देंगे या आप हमें तबाह कर दें।

कोई कहने लगा- हम तो फ़रिश्तों को पूजते हैं जो ख़ुदा की बेटियाँ हैं, किसी ने कहा जब तक तू अल्लाह तआ़ला को और उसके फ़रिश्तों को खुल्लम-खुल्ला हमारे पास न लाये हम ईमान न लायेंगे। फिर मज्लिस ख़त्म हुई और सब उठ खड़े हुए। अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमैया बिन मुग़ीरा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मख़्ज़ूम जो आपकी फूफी हज़रत आ़तिका बिन्ते अ़ब्दुल-मुत्तलिब का लड़का था, आपके साथ हो लिया और कहने लगा कि यह तो बड़ी नाइन्साफ़ी की बात है कि क़ौम ने जो कहा वह भी आपने मन्ज़ूर न किया, फिर जो तलब किया वह भी आपने पूरा न किया, फिर जिस चीज़ से आप उन्हें डराते थे वह माँगी वह भी आपने न किया। ख़ुदा की क़सम अब तो मैं आप पर ईमान लाऊँगा ही नहीं, जब तक कि आप सीढ़ी लगाकर आसमान पर चढ़कर कोई किताब न लायें और चार फ़रिश्ते अपने साथ अपने गवाह बनाकर न लायें। हुज़ूर सल्ल. इन तमाम बातों से सख़्त रंजीदा और ग़मगीन हो गये थे, आप बड़े आशावान थे कि शायद क़ौम के सरदार मेरी कुछ मान लें, लेकिन जब उनकी सरकशी और ईमान से दूरी आपने देखी तो बड़े ही ग़मगीन होकर वापस अपने घर लौट आये।

बात यह है कि उनकी ये तमाम बातें कुफ़्र व दुश्मनी के तौर पर, आपको नीचा दिखाने और लाजवाब

करने के लिये थीं, वरना अगर ईमान लाने के लिये नेक-नीयती से ये सवालात होते तो बहुत मुम्किन था कि अल्लाह तआ़ला उन्हें ये मोजिज़े दिखा देता। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. से फ़रमाया गया कि अगर आपकी ख़्वाहिश हो तो जो ये माँगते हैं मैं दिखा दूँ लेकिन यह याद रहे कि अगर फिर भी ये ईमान न लाये तो इन्हें वह इब्रतनाक सज़ायें दूँगा जो किसी को न दी हों। और अगर आप चाहें तो मैं इन पर तौबा की क़बूलियत और रहमत का दरवाज़ा खुला रखूँगा। आपने दूसरी बात पसन्द फ़रमाई। अल्लाह तआ़ला अपने रहमत और तौबा वाले नबी पर बहुत-बहुत दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाये। इसी बात और इसी हिक्मत का ज़िक्र आयतः

وَمَامَنَعَنَآاَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰیٰتِ...... الخ.

(सूरः बनी इस्राईल आयत 59) में, और आयतः

وَقَالُوْامَالِ هٰذَاالرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ..... الخ.

(सूरः फ़ुरक़ान आयत 7) में भी है कि ये सब चीज़ें हमारे बस में हैं और ये सब मुम्किन हैं, लेकिन इसी वजह से कि इनके ज़ाहिर हो चुकने के बाद ईमान न लाने वालों को फिर हम नहीं छोड़ा करते, हमने इन निशानियों को रोक रखा है, उन काफ़िरों को ढील दे रखी है और उनका आख़िरी ठिकाना जहन्नम बना रखा है। पस उनका सवाल था कि अ़रब के रेगिस्तान में नहरें चल पड़ें, दरिया उबल पड़ें वग़ैरह, ज़ाहिर है कि इनमें से कोई काम भी ख़ुदा तआ़ला पर भारी नहीं, सब कुछ उसकी क़ुदरत में और उसके फ़रमान के ताबे है, लेकिन वह बख़ूबी जानता है कि यह अज़ली काफ़िर इन मोजिज़ों को देखकर भी ईमान नहीं लायेंगे। जैसा कि एक जगह अल्लाह का फ़रमान हैः

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَايُؤْمِنُوْنَ. وَلَوْجَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُاالْعَذَابَ الْاَلِيْمَ.

यानी जिन पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है उन्हें बावजूद हर तरह के मोजिज़े देख लेने के भी ईमान नसीब न होगा, यहाँ तक कि वे एक दुखदायी अ़ज़ाब को न देख लें।

आठवें पारे की पहली आयत में फ़रमाया कि ऐ नबी! उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ अगर हम उन पर फ़रिश्ते भी नाज़िल फ़रमायें और मुर्दे भी उनसे बातें कर लें और इतना ही नहीं बल्कि ग़ैब की तमाम चीज़ ख़ुल्लम-ख़ुल्ला उनके सामने ज़ाहिर कर दें तो भी ये काफ़िर बग़ैर अल्लाह की मर्ज़ी के ईमान नहीं लायेंगे। इनमें के अक्सर जहालत के पुतले हैं।

अपने लिये दरिया की माँग रखने के बाद उन्होंने कहा अच्छा आप ही के लिये बाग़ात और नहरें हो जायें। फिर कहा कि अच्छा यह भी न सही यह तो आप कहते ही हैं कि क़ियामत के दिन आसमान फट जायेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा, तो अब आज ही हम पर उसके टुकड़े गिरा दीजिए। चुनाँचे उन्होंने ख़ुद भी अल्लाह तआ़ला से यही दुआ़ की कि ख़ुदाया अगर यह सब कुछ तेरी जानिब से ही बरहक़ है तो तू हम पर आसमान से पत्थर बरसा।

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने भी यही तमन्ना और इच्छा की थी, जिसकी बिना पर उन पर सायबान (छज्जे) के दिन का अ़ज़ाब उतरा। लेकिन चूँकि हमारे हज़रत तमाम आ़लम वालों के लिये रहमत और तौबा वाले नबी थे इसलिये आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि वह उन्हें हलाकत से बचा ले, मुम्किन है ये नहीं तो इनकी औलादें ही ईमान क़बूल कर लें, तौहीद इख़्तियार कर लें और शिर्क छोड़ दें।

आपकी यह आरज़ू पूरी हुई, अज़ाब न उतरा, ख़ुद उनमें से भी बहुत सों को ईमान की दौलत नसीब हुई यहाँ तक कि अ़ब्दुल्लाह बिन उमैया जिसने आख़िर में हज़रत के साथ जाकर आपको बातें सुनाई थीं और ईमान न लाने की क़समें खाई थीं, वह भी इस्लाम के झण्डे तले आ गये।

"ज़ुख़्रुफ़" से मुराद सोना है, बल्कि इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में लफ़्ज़ "मिन ज़-हबिन्" है। काफ़िरों का एक और मुतालबा यह था कि तेरे लिये सोने का घर हो जाये या हमारे देखते हुए तू सीढ़ी लगाकर आसमान पर पहुँच जाये और वहाँ से कोई किताब लाये जो हर एक के नाम की अलग-अलग हो। रातों रात उनके सिरहाने वे पर्चे पहुँच जायें, उन पर उनके नाम लिखे हुए हों। इसके जवाब में हुक्म हुआ कि उनसे कह दो कि अल्लाह तआ़ला के आगे किसी की कुछ नहीं चलती, वह अपनी सल्तनत और बादशाहत का तन्हा मालिक है, जो चाहे करे जो न चाहे न करे। तुम्हारी मुँह-माँगी चीज़ ज़ाहिर करे न करे यह उसके इख़्तियार की बात है। मैं तो सिर्फ़ पैग़ामे ख़ुदा पहुँचाने वाला रसूल हूँ। मैंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया, अल्लाह के अहकाम तुम्हें पहुँचा दिये, अब जो तुमने माँगा वह अल्लाह के बस की बात है, न कि मेरे बस की। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर फ़रमाते हैं कि मक्का के इलाक़े के बारे में मुझसे फ़रमाया गया कि अगर तुम चाहो तो मैं इसे सोने का बना दूँ? मैंने गुज़ारिश की कि नहीं! ख़ुदाया मेरी तो यह तमन्ना है कि एक दिन पेट भरा रहूँ और एक दिन भूखा रहूँ। भूख में तेरी तरफ़ झुकूँ तेरे सामने आ़जिज़ी करूँ, रोऊँ गिड़गिड़ाऊँ और ख़ूब ज़्यादा तेरी याद करूँ। भरे पेट होऊँ तो तेरी तारीफ़ बयान करूँ तेरा शुक्र बजा लाऊँ। तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी यह हदीस है और इमाम तिर्मिज़ी रह. ने इसे ज़ईफ़ (कमज़ोर) कहा है।

और जिस वक़्त उन लोगों के पास हिदायत पहुँच चुकी, उस वक़्त उनको ईमान लाने से सिवाय इसके और कोई (क़ाबिले तवज्जोह) बात रोक नहीं हुई कि उन्होंने कहा, क्या अल्लाह तआ़ला ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा है? (94) आप फ़रमा दीजिए कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते (रहते) होते कि इसमें चलते-बसते तो ज़रूर हम उन पर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते। (95)	وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ قُلْ لَّوْ كَانَ فِى الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ۝

हिदायत

अक्सर लोग ईमान से और रसूलों की ताबेदारी से इसी बिना पर रुक गये कि उन्हें यह समझ में न आया कि कोई इनसान भी अल्लाह का रसूल बन सकता है। वे इस पर सख़्त ताज्जुब करते रहे और आख़िर इनकार कर बैठे और साफ़ कह गये कि क्या एक इनसान हमारी रहबरी करेगा? फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने भी यही कहा था कि हम अपने जैसे दो इनसानों पर ईमान कैसे लायें? ख़ुसूसन इस सूरत में कि उनकी सारी क़ौम हमारी मातहती में है। यही दूसरी उम्मतों ने अपने ज़माने के नबियों से कहा था कि तुम तो हम जैसे ही इनसान हो, सिवाय इसके कुछ नहीं कि तुम हमें अपने बड़ों के ख़ुदाओं से बहका रहे हो, अच्छा कोई ज़बरदस्त दलील पेश करो। और भी इस मज़मून की बहुत सी आयतें हैं।

Maktab E Ashraf

इसके बाद अल्लाह तआला अपने लुत्फ़ व करम को और इनसान में रसूलों के भेजने की वजह को बयान फ़रमाता है, और इस हिक्मत को ज़ाहिर फ़रमाता है कि अगर फ़रिश्ते रिसालत का काम अन्जाम देते (यानी उनको नबी और रसूल बनाकर इनसानों में भेजा जाता) तो न तुम उनके पास बैठ-उठ सकते न उनकी बातें पूरी तरह सोच-समझ सकते। इनसानी रसूल चूँकि तुम्हारे ही हम-जिन्स होते हैं, तुम उनसे घुल-मिल सकते और उनके पास उठ-बैठ सकते हो, उनकी आ़दतों और तौर-तरीक़ों को देख सकते हो और मिल-जुलकर उनसे अपनी ज़बान में तालीम हासिल कर सकते हो, उनका अ़मल देखकर ख़ुद सीख सकते हो। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ...... الخ.

(सूरः आले इमरान आयत 164) एक और आयत में है:

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ...... الخ.

(सूरः तौबा आयत 128) एक और आयत में है:

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ...... الخ.

(सूरः ब-क़रह आयत 151) मतलब सब का यही है कि यह तो अल्लाह का ज़बरदस्त एहसान है कि उसने तुममें से ही अपने रसूल भेजे कि वे अल्लाह की आयतें तुम्हें पढ़कर सुनायें, तुम्हारी पाकीज़गी करें (यानी तुम्हें शिर्क व कुफ़्र और गुनाहों से पाक करें), तुम्हें किताब व हिक्मत सिखायें और जिन चीज़ों से तुम बेइल्म थे वे तुम्हें आ़लिम बना दें। पस तुम्हें मेरी याद की अधिकता करनी चाहिये ताकि मैं भी तुम्हें याद करूँ। तुम्हें मेरी शुक्रगुज़ारी करनी चाहिये और नाशुक्री से बचना चाहिये। यहाँ फ़रमाता है कि अगर ज़मीन की आबादी फ़रिश्तों की होती तो बेशक हम किसी आसमानी फ़रिश्ते को उनमें रसूल बनाकर भेजते, चूँकि तुम ख़ुद इनसान हो, हमने इसी मस्लेहत से इनसानों में से ही अपने रसूल बनाकर तुम में भेजे।

आप (आख़िरी बात) कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला मेरे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी गवाह है, (क्योंकि) वह अपने बन्दों को ख़ूब जानता, ख़ूब देखता है। (96)	قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۚ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ بَصِيْرًا ○

रसूल अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कहता

अपनी सच्चाई पर मैं और गवाह क्यों ढूँढूँ? ख़ुदा की गवाही काफ़ी है, मैं उसकी पाक ज़ात पर तोहमत बाँधता हूँ तो वह ख़ुद मुझसे इन्तिक़ाम लेगा। चुनाँचे क़ुरआन की सूरः अलहाक़्क़ा में बयान है कि अगर यह पैग़म्बर ग़लत तौर पर कोई बात हमारी तरफ़ मन्सूब करे तो हम इसका दाहिना हाथ थाम कर इसकी गर्दन उड़ा देते और हमें इससे कोई न रोक सकता। फिर फ़रमाया कि किसी बन्दे का हाल अल्लाह से छुपा नहीं। वह इनाम व एहसान, हिदायत व मेहरबानी के क़ाबिल लोगों को, और गुमराही व बदबख़्ती के क़ाबिल लोगों को अच्छी तरह जानता है।

Maktab E Ashraf

और अल्लाह तआ़ला जिसको राह पर लाए वही राह पर आता है, और जिसको वह बेराह कर दे तो ख़ुदा के सिवा आप किसी को भी ऐसों का मददगार न पाएँगे। और हम क़ियामत के दिन उनको अंधा गूँगा बहरा करके मुँह के बल चलाएँगे, (फिर) उनका ठिकाना दोज़ख़ है। वह जब ज़रा धीमी होने लगेगी तब ही उनके लिए और ज़्यादा भड़काएँगे। (97)	وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۭ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۝

वह जिसको चाहे हिदायत दे

अल्लाह तआ़ला इस बात को बयान फ़रमाता है कि तमाम मख़्लूक़ में क़ब्ज़ा व इख़्तियार सिर्फ़ उसी का है, उसका कोई हुक्म टल नहीं सकता। उसके राह दिखाये हुए को कोई बहका नहीं सकता, न उसके बहकाये हुए की कोई मदद कर सकता है। उसका वली और मुर्शिद (सही राह दिखाने वाला) कोई नहीं बन सकता। हम उन्हें क़ियामत के मैदान में, मेहशर के मजमे में औंधे मुँह लायेंगे।

हुज़ूरे पाक सल्ल. से सवाल हुआ- यह कैसे हो सकता है? आपने फ़रमाया जिसने पैरों पर चलाया है वह सर के बल भी चला सकता है। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। मुस्नद में है, हज़रत अबूज़र रज़ि. ने खड़े होकर फ़रमाया कि ऐ बनी ग़िफ़ार क़बीले के लोगो! और क़समें न खाओ, अल्लाह के प्यारे और सच्चे पैग़म्बर ने मुझे यह हदीस सुनाई है कि लोग तीन क़िस्म के बनाकर हश्र में लाये जायेंगे; एक फ़ौज तो खाने पीने और पहनने ओढ़ने वाली, एक चलने और दौड़ने वाली, एक वह जिन्हें फ़रिश्ते औंधे मुँह घसीट कर जहन्नम के सामने जमा कर देंगे। लोगों ने कहा दो क़िस्में तो समझ में आ गयीं लेकिन यह चलने और दौड़ने वाले समझ में नहीं आये। आपने फ़रमाया सवारियों पर आफ़त आ जायेगी यहाँ तक कि एक इनसान अपना हरा-भरा बाग़ देकर पालान वाली ऊँटनी ख़रीदना चाहेगा, लेकिन न मिल सकेगी। ये उस वक़्त नाबीना (अंधे) होंगे, बेज़ुबान होंगे, कुछ भी न सुन सकेंगे। ग़र्ज़ कि मुख़्तलिफ़ हाल में होंगे और गुनाहों के वबाल में गुनाहों के मुताबिक़ गिरफ़्तार किये जायेंगे। दुनिया में हक़ से बहरे, अंधे और गूँगे बने रहे, आज सख़्त ज़रूरत वाले दिन सच-मुच के अंधे बहरे गूँगे बना दिये गये। उनका असली ठिकाना घूम-फिरकर आने और रहने-सहने बसने ठहरने की जगह जहन्नम क़रार दी गयी। वहाँ की आग जहाँ हल्की होने को आयी कि और भड़का दी गयी, सख़्त तेज़ कर दी गयी। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا.

यानी अब सज़ा बरदाश्त करो, सिवाय अ़ज़ाब के कोई चीज़ तुम पर ज़्यादा न की जायेगी।

यह है उनकी सज़ा, इस सबब से कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया था, और (यूँ) कहा था कि जब हम हड्डियाँ और	ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا

لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ○ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ○

बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके (क़ब्रों से) उठाए जाएँगे। (98) क्या उन लोगों को (इतना) मालूम नहीं कि जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किए वह इस बात पर (और भी ज़्यादा) क़ादिर है कि वह उन जैसे आदमी दोबारा पैदा कर दे, और उनके लिए एक मियाद मुतैयन कर रखी है, इसमें ज़रा भी शक नहीं, इस पर भी बेइन्साफ़ लोग इनकार किए बग़ैर न रहे। (99)

हैरानी का इज़हार

अल्लाह का फ़रमान है कि ऊपर जिन मुन्किरों की जिस सज़ा का ज़िक्र हुआ है वे इसी क़ाबिल थे। वे हमारी दलीलों को ग़लत जानते थे, क़ियामत के क़ायल ही न थे और साफ़ कहते थे कि हड्डियाँ बोसीदा हो जाने के बाद, मिट्टी के रेज़ों से मिल जाने के बाद, हलाक और बरबाद होने के बाद दोबारा ज़िन्दा हो उठना तो अ़क्ल तस्लीम नहीं करती। पस उनके जवाब में क़ुरआन ने इसकी एक दलील यह पेश की कि इस ज़बरदस्त क़ुदरत के मालिक ने ज़मीन व आसमान को बग़ैर किसी चीज़ के पहली बार बिना किसी नमूने के पैदा किया, जिसकी क़ुदरत इन बुलन्द व बाला, विशाल और सख़्त मख़्लूक़ की पहली बार पैदाईश (बनाने) से आ़जिज़ नहीं, क्या वह तुम्हें दोबारा पैदा करने से आ़जिज़ हो जायेगा? आसमान ज़मीन की पैदाईश (बनाना) तो तुम्हारी पैदाईश से बहुत बड़ी है, वह इनके पैदा करने में नहीं थका, क्या वह मुर्दों को ज़िन्दा करने से बेक़ुदरत हो जायेगा? क्या आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) इनसानों जैसे और पैदा नहीं कर सकता? बेशक कर सकता है। उसकी सिफ़त यह है कि वह हर चीज़ का पैदा करने और बनाने वाला है, वह सब कुछ जानने वाला है, वह बेपनाह क़ुदरतों वाला है। जिस चीज़ के बारे में फ़रमा दे कि हो जा वह उसी वक़्त हो जाती है। उसका हुक्म ही चीज़ के वजूद के लिये काफ़ी वाफ़ी है। वह उन्हें क़ियामत के दिन दोबारा की नई पैदाईश में ज़रूर और निश्चित तौर पर पैदा करेगा। उसने उनके लौटाने, उनके क़ब्रों से निकल खड़े होने की मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है, उस वक़्त यह सब कुछ होकर रहेगा। यहाँ की यह थोड़ी सी देरी सिर्फ़ उस वक़्त को पूरा करने के लिये है। अफ़सोस इस क़द्र खुली और स्पष्ट दलीलों के बाद भी लोग कुफ़्र व गुमराही कों नहीं छोड़ते।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّىْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ○ ع

आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत (यानी नुबुव्वत) के ख़ज़ानों (यानी कमालात) के मुख़्तार होते तो उस सूरत में तुम (उसके) ख़र्च करने के अन्देशे से ज़रूर हाथ रोक लेते, और आदमी है ही बड़ा तंगदिल। (100)

Maktab E Ashraf

तंगदिली

इनसानी तबीयत का ख़ास्सा (एक विशेषता) बयान हो रहा है कि रहमते ख़ुदा जैसी न कम होने वाली चीज़ पर भी अगर यह क़ाबिज़ हो जाये तो वहाँ भी अपनी कन्जूसी और तंगदिली न छोड़े। जैसे एक और आयत में है कि अगर मुल्क के किसी हिस्से के ये मालिक हो जायें तो किसी को एक कोड़ी भी न दिखायें। पस यह इनसानी तबीयत है, हाँ जो ख़ुदा की तरफ़ से हिदायत किये जायें और भलाई की तौफ़ीक़ दिये जायें वे इस बुरी ख़स्लत से नफ़रत करते हैं, वे सख़ी (दान करने वाले) और दूसरों का भला करने वाले होते हैं। इनसान बड़ा ही जल्दबाज़ है, तकलीफ़ के वक़्त लड़खड़ा जाता है और राहत के वक़्त भूल जाता है और दूसरों से रोकने लगता है। हाँ नमाज़ी लोग इससे बरी हैं। ऐसी आयतें क़ुरआन में और भी बहुत सी हैं। इससे ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम, उसकी बख़्शिश व रहम का पता भी चलता है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि ख़ुदा के हाथ पुर (भरे हुए) हैं, दिन रात का ख़र्च उसमें कोई कमी नहीं लाता। शुरू से लेकर अब तक के ख़र्च ने भी उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं की।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ
فَسْـَٔلْ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ
لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى
مَسْحُوْرًا ۝ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ
هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ
مَثْبُوْرًا ۝ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ
الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ۝
وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا
الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا
بِكُمْ لَفِيْفًا ۝

और हमने मूसा को खुले हुए नौ मोजिज़े दिए, जबकि वह उन (बनी इस्राईल) के पास आए थे। सो आप बनी इस्राईल से पूछ लीजिए। तो फ़िरऔन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मेरे ख़्याल में तो ज़रूर तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। (101) (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया तू (दिल में) ख़ूब जानता है कि ये (अ़जीब चीज़ें) ख़ास आसमान और ज़मीन के रब ने ही भेजी हैं, जो कि बसीरत "यानी समझ व अ़क़्ल" के लिए (काफ़ी) ज़रिये हैं, और मेरे ख़्याल में ज़रूर तेरी कम-बख़्ती के दिन आ गए हैं। (102) फिर उसने चाहा कि उन (बनी इस्राईल) का उस सरज़मीन से क़दम उखाड़ दे, सो हमने उसको और जो उसके साथ थे सबको डुबो दिया। (103) और उसके बाद हमने बनी इस्राईल को कह दिया कि (अब) तुम इस सरज़मीन में रहो (सहो) फिर जब आख़िरत का वायदा आ जाएगा तो हम सबको जमा करके ला हाज़िर करेंगे। (104)

नौ निशानियाँ

हज़रत मूसा को तो ऐसे मोजिज़े मिले जो आपकी नुबुव्वत की सच्चाई और नुबुव्वत पर खुली दलील

Maktab E Ashraf

थे। लकड़ी, हाथ, सूखे की हालत, दरिया, तूफ़ान, टिड्डियाँ, जुएँ, मेंढक और ख़ून। ये थीं विस्तृत निशानियाँ। मुहम्मद बिन कअ़ब का क़ौल है कि ये मोजिज़े हैं। हाथ का चमकीला बन जाना, लकड़ी का साँप हो जाना, और पाँच वे जिनका बयान सूरः आराफ़ में है। और माल का मिट जाना और पत्थर।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास वग़ैरह से रिवायत है कि ये मोजिज़े आपका हाथ, आपकी लकड़ी, अकाल और फलों की कमी, टिड्डियों का तूफ़ान, जुएँ, मेंढक और ख़ून हैं। यह क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर, बहुत साफ़ और मज़बूत है। हसन बसरी रह. ने इनमें से अकाल और फलों की कमी को एक समझ कर नवाँ मोजिज़ा आपकी लकड़ी का जादूगरों के साँपों का खा जाना बयान किया है। लेकिन इन तमाम मोजिज़ों के बावजूद फ़िरऔ़न वालों ने तकब्बुर किया और अपने बुरे आमाल पर अड़े रहे, इसके बावजूद कि दिल यक़ीन ला चुका था मगर जुल्म व ज़्यादती करके कुफ़्र व इनकार पर जम गये।

पिछली आयतों से इन आयतों का जोड़ और ताल्लुक़ यह है कि जैसे आपकी क़ौम आपसे मोजिज़े तलब करती है ऐसे ही फ़िरऔ़न की क़ौम वालों ने भी हज़रत मूसा से मोजिज़े तलब किये, जो ज़ाहिर हुए लेकिन उन्हें ईमान नसीब न हुआ, आख़िर हलाक कर दिये गये। इसी तरह अगर आपकी क़ौम भी माँगे गये मोजिज़ों के पूरा हो जाने के बाद काफ़िर रही तो फिर मोहलत न मिलेगी और फ़ौरन ही तबाह व बरबाद कर दी जायेगी। ख़ुद फ़िरऔ़न ने मोजिज़े देखने के बाद हज़रत मूसा को जादूगर कहकर अपना पीछा छुड़ा लिया। पस यहाँ जिन नौ निशानियों का बयान है ये वही हैं और इन्हीं का बयानः

وَاَلْقِ عَصَاكَ........قَوْمًا فٰسِقِيْنَ.

(सूरः नम्ल आयत 10-12) में है। इन आयतों में लकड़ी और हाथ का ज़िक्र मौजूद है और बाक़ी आयतों (निशानियों) का बयान सूरः आराफ़ में है। इनके अ़लावा भी अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को बहुत से मोजिज़े दिये थे, जैसे आपकी लकड़ी के लगने से एक पत्थर में से बारह चश्मों का ज़ाहिर हो जाना, या बादल का साया करना, मन्न व सलवा का उतरना वग़ैरह वग़ैरह। ये सब नेमतें बनी इस्राईल को मिस्र शहर छोड़ने के बाद मिलीं। पस इन मोजिज़ों को यहाँ इसलिये बयान नहीं फ़रमाया कि वे फ़िरऔ़न की क़ौम वालों ने नहीं देखे थे। यहाँ सिर्फ़ उन नौ मोजिज़ों का ज़िक्र है जो फ़िरऔ़न वालों ने देखे थे और उन्हें झुठलाया था।

मुस्नद अहमद में है कि एक यहूदी ने अपने साथी से कहा, ज़रा चल तो सही इस नबी से इनके क़ुरआन की इस आयत के बारे में पूछ लें कि हज़रत मूसा को वे नौ आयतें (निशानियाँ) क्या मिली थीं? दूसरे ने कहा कि नबी न कह, सुन लेगा तो वह ख़ुश हो जायेगा (हालाँकि आप उनके मानने से नबी थोड़ा ही हैं, कोई माने या न माने अल्लाह ने आपको नबी व रसूल बनाकर भेजा है, यह उनकी हिमाक़त व जहालत थी)।

अब दोनों ने हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया। आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न करो, चोरी न करो, ज़िना न करो, किसी जान को नाहक़ क़त्ल न करो, जादू न करो, सूद न खाओ, बेगुनाह को पकड़कर बादशाह के दरबार में न ले जाओ कि उसे क़त्ल करा दो और पाकदामन औ़रतों पर बोहतान न बाँधो, या फ़रमाया जिहाद से न भागो। और ऐ यहूदियो! यह हुक्म भी था कि हफ़्ते (शनिवार) के दिन ज़्यादती (यानी अल्लाह के हुक्म का उल्लंघन) न करो। अब तो वे बेसाख़्ता आपके हाथ-पाँव चूमने लगे और कहने लगे हमारी गवाही है कि आप अल्लाह के नबी हैं। आपने फ़रमाया फिर तुम मेरी ताबेदारी

Maktab E Ashraf

क्यों नहीं करते? कहने लगे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ की थी कि मेरी नस्ल में नबी ज़रूर रहें और हमें ख़ौफ़ है कि आपकी ताबेदारी के बाद यहूद हमें ज़िन्दा न छोड़ेंगे। तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा में भी यह हदीस है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही बतलाते हैं, लेकिन है ज़रा मुश्किल काम, इसलिये कि इसके रावी अ़ब्दुल्लाह बिन सलमा के हाफ़िज़े में थोड़ी सी कमज़ोरी है और उन पर जिरह भी है। मुम्किन है नौ कलिमात का शुब्हा तो आयात से उन्हें हो गया हो इसलिये कि ये तौरात के अहकाम हैं, फ़िरऔन पर हुज्जत क़ायम करने वाली चीज़ें नहीं। वल्लाहु आलम।

इसलिये फ़िरऔन से हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि ऐ फ़िरऔन यह तो तुझे भी मालूम है कि ये सब मोजिज़े सच्चे हैं और इनमें से एक-एक मेरी सच्चाई की जीती-जागती दलील है। मेरा ख़्याल है कि तू हलाक होना चाहता है, ख़ुदा की लानत तुझ पर उतरना चाहती है, तू मग़लूब होगा और तबाही को पहुँचेगा।

"अ़लिम-त" की दूसरी क़िराअत "अ़लिमतु" भी है, लेकिन जमहूर की क़िराअत 'त' के ज़बर से ही है और इसी मायने को वज़ाहत से इस आयत में बयान फ़रमाया हैः

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ

यानी जब उनके पास हमारी ज़ाहिर और समझ व शऊर बढ़ाने वाली निशानियाँ पहुँच चुकीं तो वे बोले कि यह तो खुला हुआ जादू है, हालाँकि उनके दिलों में यक़ीन आ जाता था, लेकिन सिर्फ़ ज़ुल्म व ज़्यादती के सबब से न माना.....।

ग़र्ज़ कि यह साफ़ बात है कि जिन नौ निशानियों का ज़िक्र हुआ है यह लाठी, हाथ, सूखा, फलों की कमी, तूफ़ान, टिड्डियाँ, जुएँ, मेंढक और ख़ून थीं, जो फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लिये ख़ुदा की तरफ़ से दलील व हुज्जत थीं और आपके मोजिज़े थे, जो आपकी सच्चाई और ख़ुदा के वजूद पर दलीलें थीं। इन निशानियों से मुराद वे अहकाम नहीं जो ऊपर की हदीस में बयान हुए क्योंकि वे फ़िरऔन और फ़िरऔन वालों पर हुज्जत न थे, बल्कि उन पर हुज्जत होने और उन अहकाम के बयान होने के बीच कोई मुनासबत ही नहीं। यह वहम सिर्फ़ अ़ब्दुल्लाह बिन सलमा (हदीस के एक रावी) की वजह से लोगों को पैदा हुआ है, उसकी बाज़ बातें वाक़ई क़ाबिले इनकार हैं। वल्लाहु आलम।

यह भी हो सकता है कि उन दोनों यहूदियों ने दस कलिमात का सवाल किया हो और रावी (हदीस बयान करने वाले) को नौ निशानियों का वहम रह गया हो। फ़िरऔन ने इरादा किया कि उन्हें जिला-वतन कर दिया जाये (यानी देस-निकाला दे दे) पस हमने ख़ुद उसे मछलियों का लुक़्मा बनाया (यहाँ मुराद समुद्र में डुबो देना है) और उसके तमाम साथियों को भी। उसके बाद हमने बनी इस्राईल से फ़रमा दिया कि अब ज़मीन (यानी मुल्के मिस्र) तुम्हारी है, रहो सहो खाओ पियो। इस आयत में हुज़ूर सल्ल. को भी ज़बरदस्त ख़ुशख़बरी है कि मक्का आपके हाथों फ़तह होगा, हालाँकि यह सूरत मक्किया है, हिजरत से पहले नाज़िल हुई है। वास्तव में हुआ भी इसी तरह कि मक्का वालों ने आपको मक्का शरीफ़ से निकाल देना चाहा, जैसा कि क़ुरआन ने आयतः

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ.... الخ.

(यानी इसी सूरत की आयत 76) में बयान फ़रमाया है। फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. को ग़ालिब किया, मक्के का मालिक बना दिया और विजयी की हैसियत से आप मक्के में आये, यहाँ अपना

Maktab E Ashraf

क़ब्ज़ा किया और फिर अपनी मेहरबानी व संयम से काम लेकर मुजरिमों को और अपने जानी दुश्मनों को आम माफ़ी अ़ता फ़रमा दी। अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने बनी इस्राईल जैसी कमज़ोर क़ौम को ज़मीन के पूरब व पश्चिम का वारिस बना दिया था, फ़िरऔ़न जैसे सख़्त, घमंडी और अभिमानी बादशाह के माल, ज़मीन, फल, खेती और ख़ज़ानों का मालिक कर दिया। जैसे क़ुरआन की आयतः

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِیْٓ اِسْرَآئِیْلَ.

(सूरः शुअ़रा आयत 59) में बयान हुआ है। यहाँ भी फ़रमाता है कि फ़िरऔ़न की हलाकत के बाद हमने बनी इस्राईल से फ़रमाया कि अब तुम यहाँ रहो-सहो, क़ियामत के वादे के दिन तुम और तुम्हारे दुश्मन सब हमारे सामने इकट्ठे लाये जाओगे, हम तुम सबको जमा करके लायेंगे।

और हमने इस (क़ुरआन) को रास्ती (हक़ और सही राह) ही के साथ नाज़िल किया और वह रास्ती ही के साथ नाज़िल हो गया, और हमने आपको सिर्फ़ ख़ुशी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। (105) और क़ुरआन में हमने जगह-जगह फ़ासला रखा, ताकि आप इसको लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ें, और हमने इसको उतारने में भी दर्जा-बदर्जा और सिलसिलेवार उतारा। (106)	وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ۝

सच्ची किताब

इरशाद है कि क़ुरआन हक़ के साथ नाज़िल हुआ, यह सरासर हक़ ही है, अल्लाह तआ़ला ने अपने इल्म के साथ नाज़िल फ़रमाया है, इसकी हक़्क़ानियत (सच्चा होने) पर वह ख़ुद शाहिद (गवाह) है, और फ़रिश्ते भी गवाह हैं। इसमें वही है जो उसने ख़ुद अपनी दानिस्त (जानकारी) के साथ उतारा है। इसके तमाम अहकाम (जिन चीज़ों और बातों का हुक्म दिया गया है) और नही व मुमानिअ़त (यानी जिन चीज़ों और बातों की मनाही की गयी है) उसी की तरफ़ से है, हक़ के साथ उतारा और यह हक़ के साथ ही तुझ तक पहुँचा, न रास्ते में कोई बातिल (ग़ैर-हक़) मिला न बातिल की यह शान कि इसके साथ मिल सके। यह बिल्कुल महफ़ूज़ (सुरक्षित) है, कमी ज़्यादती से पूरी तरह पाक है, पूरी ताक़त वाले अमानतदार फ़रिश्ते के ज़रिये नाज़िल हुआ है, जो आसमानों में इज़्ज़त व सम्मान वाला और वहाँ का सरदार है। तेरा काम मोमिनों को ख़ुशी सुनाना और काफ़िरों को डराना है। इस क़ुरआन को हमने लौहे-महफ़ूज़ से बैतुल-इज़्ज़त पर नाज़िल फ़रमाया जो पहले आसमान में है, वहाँ से थोड़ा-थोड़ा टुकड़े-टुकड़े करके वाक़िआ़त के मुताबिक़ तेईस बरस में दुनिया पर नाज़िल हुआ। इसकी दूसरी क़िराअत "फ़र्रक़नाहु" है, यानी एक-एक आयत करके तफ़सीर व तफ़सील और वज़ाहत के साथ उतारा है, कि तू इसे लोगों को सहूलत के साथ पहुँचा दे, और आहिस्ता-आहिस्ता उन्हें सुना दे। हमने इसे थोड़ा-थोड़ा करके नाज़िल फ़रमाया है।

Maktab E Ashraf

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ○ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ○ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ○ السجدة

आप कह दीजिए कि तुम इस (क़ुरआन) पर चाहे ईमान लाओ चाहे ईमान न लाओ, जिन लोगों को इस (क़ुरआन) से पहले (दीन का) इल्म दिया गया था यह (क़ुरआन) जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं (107) और कहते हैं कि हमारा रब (वायदा-ख़िलाफ़ी से) पाक है, बेशक हमारे परवर्दिगार का वायदा ज़रूर पूरा ही होता है। (108) और ठोड़ियों के बल गिरते हैं रोते हुए। और यह (क़ुरआन मजीद) उनका ख़ुशू "यानी आजिज़ी" बढ़ा देता है। (109) ۞ (सज्दा)

सज्दा नम्बर - 4

السجدة ٣

ईमान लाओ या न लाओ

अल्लाह का फ़रमान है कि तुम्हारे ईमान पर क़ुरआन की सच्चाई मौक़ूफ़ नहीं, तुम मानो या न मानो क़ुरआन अपने आप में अल्लाह का कलाम और बेशक सच्चा है। इसका ज़िक्र तो हमेशा से पहली आसमानी किताबों में चला आ रहा है। जो अहले किताब नेक और अल्लाह की किताब पर आ़मिल (अ़मल करने वाले) हैं, जिन्होंने पहली किताबों में कोई तहरीफ़ व तब्दीली नहीं की, वे तो इस क़ुरआन को सुनते ही बेचैन होकर शुक्रिये का सज्दा करते हैं कि ऐ अल्लाह तेरा शुक्र है कि तूने हमारी मौजूदगी में इस रसूल को भेजा और इस कलाम को नाज़िल फ़रमाया।

अपने रब की कामिल क़ुदरत पर उसकी ताज़ीम व अदब करते हैं। जानते थे कि ख़ुदा का वादा सच्चा है, ग़लत नहीं। आज उसको पूरा होता देखकर ख़ुश होते हैं, अपने रब की तस्बीह बयान करते हैं और उसके वादे की सच्चाई का इक़रार करते हैं। अल्लाह के हुज़ूर में विनम्रता और आ़जिज़ी के साथ रोते गिड़गिड़ाते, अल्लाह के सामने अपनी ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। ईमान व तस्दीक़ और अल्लाह के कलाम और अल्लाह के रसूल की वजह से वे ईमान व इस्लाम में, हिदायत व तक़वे में, डर और ख़ौफ़ में और ज़्यादा बढ़ जाते हैं।

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ○ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

आप फ़रमा दीजिए कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर पुकारो। जिस (नाम) से भी पुकारोगे, सो उसके बहुत अच्छे (अच्छे) नाम हैं। और अपनी नमाज़ में न तो बहुत पुकारकर पढ़िए और न बिल्कुल चुपके-चुपके ही पढ़िए, और दोनों के बीच का एक तरीक़ा इख़्तियार कर लीजिए। (110) और कह

दीजिए कि तमाम ख़ूबियाँ उसी अल्लाह (तआ़ला) के लिए (ख़ास) हैं, जो न औलाद रखता है और न बादशाहत में कोई उसका शरीक है, और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और उसकी बड़ाईयाँ ख़ूब बयान किया कीजिए। (111)	الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۧ

अल्लाह के पाक नाम

काफ़िर लोग ख़ुदा की 'रहमत' की सिफ़त के इनकारी थे, उसका नाम रहमान नहीं समझते थे, तो अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ात के लिये इस नाम को साबित करता है और फ़रमाता है कि यही नहीं कि ख़ुदा का नाम अल्लाह हो, रहमान हो और बस, इनके अ़लावा भी उसके बहुत से बेहतरीन और अच्छे नाम हैं। जिस पाक नाम से चाहो उससे दुआ़यें करो। सूरः हश्र के आख़िर में अपने बहुत से नाम उसने बयान फ़रमाये हैं।

एक मुश्रिक ने हुज़ूर सल्ल. से सज्दे की हालत में "या रहमान या रहीम" सुनकर कहा कि लीजिए यह एक ख़ुदा के मानने वाले हैं? दो ख़ुदाओं को पुकारते हैं। इस पर यह आयत उतरी। फिर फ़रमाता है कि अपनी नमाज़ को बहुत ऊँची आवाज़ से न पढ़ो। इस आयत के नाज़िल होने के वक़्त हुज़ूर सल्ल. मक्का में थे (और छुपे तौर पर नमाज़ होती थी)। जब सहाबा को नमाज़ पढ़ाते और बुलन्द आवाज़ से उसमें क़िराअत (यानी क़ुरआन) पढ़ते तो मुश्रिक लोग क़ुरआन को, ख़ुदा को, रसूल को गालियाँ देते। इसलिये हुक्म हुआ कि इस क़द्र बुलन्द आवाज़ से पढ़ने की ज़रूरत नहीं कि मुश्रिक लोग सुनें और गालियाँ बकें। हाँ ऐसा आहिस्ता भी न पढ़ना कि आपके साथी भी न सुन सकें, बल्कि दरमियानी आवाज़ से क़िराअत किया करो।

फिर जब आप हिजरत करके मदीना पहुँचे तो यह परेशानी जाती रही, अब जिस तरह चाहें पढ़ें। मुश्रिक लोग जहाँ क़ुरआन की तिलावत शुरू होती कि भाग खड़े होते, अगर कोई सुनना चाहता तो उनके ख़ौफ़ की वजह से छुप-छुपाकर बच-बचाकर कुछ सुन लेता, लेकिन जहाँ मुश्रिकों को मालूम हुआ उन्होंने उसे सख़्त तकलीफ़ देनी और सताना शुरू किया। अब अगर बहुत बुलन्द आवाज़ करें तो उनके चिड़ने और उनकी गालियों का ख़्याल, और अगर आवाज़ बहुत धीमी कर लें तो वे जो छुपकर कान लगाये बैठे हैं, वे मेहरूम। इसलिये दरमियानी आवाज़ से क़िराअत करने का हुक्म हुआ। ग़र्ज़ कि नमाज़ की क़िराअत (क़ुरआन पढ़ने) के बारे में यह आयत नाज़िल हुई है।

नक़ल किया गया है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. अपनी नमाज़ में पस्त (हल्की और धीमी) आवाज़ से क़िराअत पढ़ते थे और हज़रत उमर रज़ि. बुलन्द आवाज़ से क़िराअत पढ़ा करते थे। पस हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से पूछा गया कि आप आहिस्ता क्यों पढ़ते हैं? आपने जवाब दिया कि अपने रब से सरगोशी (चुपके-चुपके कलाम करना) है, वह मेरी हाजतों का इल्म रखता है। तो फ़रमाया गया कि यह बहुत अच्छा है। हज़रत उमर रज़ि. से पूछा गया कि आप बुलन्द आवाज़ से क्यों पढ़ते हैं? आपने फ़रमाया शैतान को भगाता हूँ और सोतों को जगाता हूँ। तो आपसे भी फ़रमाया गया बहुत अच्छा है। लेकिन जब यह आयत

उतरी तो हज़रत अबू बक्र रज़ि. से थोड़ी आवाज़ बुलन्द करने को और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. से थोड़ी सी आवाज़ धीमी करने को फ़रमाया गया।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत दुआ़ के बारे में नाज़िल हुई है। इसी तरह सुफ़ियान सौरी मालिक से, वह हिशाम से, वह उर्वा से, वह अपने बाप से, वह हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत करते हैं, आप फ़रमाती हैं कि यह आयत दुआ़ के बारे में नाज़िल हुई है। यही क़ौल हज़रत मुजाहिद, हज़रत सईद बिन जुबैर, हज़रत अबू अ़याज़, हज़रत मक्हौल, हज़रत उर्वा बिन जुबैर का भी है।

नक़ल किया गया है कि बनू तमीम क़बीले का एक आराबी (देहाती) जब भी हुज़ूर सल्ल. नमाज़ से सलाम फेरते यह दुआ़ करता कि ख़ुदाया मुझे ऊँट अ़ता फ़रमा, मुझे औलाद दे, पस यह आयत उतरी। एक दूसरा क़ौल यह भी है कि यह आयत तशह्हुद (अत्तहिय्यात) के बारे में नाज़िल हुई है। यह भी कहा गया कि इससे यह मुराद है कि न तो रियाकारी करो न अ़मल छोड़ो। यह भी न करो कि खुले तौर पर तो उम्दा करके (यानी अच्छी तरह और बना-संवार कर) पढ़ो और ख़ुफ़िया (अकेले में) नाक़िस करके पढ़ो। अहले किताब चुपके से पढ़ते और उसी बीच कोई लफ़्ज़ और कलिमा बहुत बुलन्द आवाज़ से चीख़कर ज़बान से निकालते, इस पर सब साथ मिलकर शोर कर देते, तो उनकी तरह करने से मनाही हुई और जिस तरह और लोग चुपके से पढ़ते थे उससे भी रोका गया, फिर उसके दरमियान का रास्ता हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने बतलाया जो हुज़ूर सल्ल. ने मस्नून फ़रमाया (यानी अपना तरीक़ा बनाया) है।

अल्लाह की तारीफ़ बयान करो जिसमें तमाम कमालात और पाकीज़गी की सिफ़तें हैं। जिसके बेहतरीन नाम हैं, जो हर क़िस्म के नुक़सानों (यानी कमियों और ऐबों) से पाक है। उसकी औलाद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, वह एक है, तन्हा है, बेनियाज़ है, न उसके माँ-बाप न औलाद, न उसकी जिन्स का कोई और न वह ऐसा कमज़ोर कि किसी की हिमायत का मोहताज हो, या वज़ीर व सलाहकार की उसे हाजत हो, बल्कि तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ व मालिक सिर्फ़ वही है। सबका मुदब्बिर व मुक़्तदिर (इन्तिज़ाम करने वाला) वही है, उसी की मशीयत व मर्ज़ी तमाम मख़्लूक़ में चलती है। वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, न उसने किसी से भाई-बन्दी की है न वह किसी की मदद का तालिब है। तू हर वक़्त उसकी बड़ाई व व बुज़ुर्गी बयान करता रह और मुश्रिक लोग जो तोहमतें उस पर बाँधते हैं तू उनसे उसकी ज़ात की बराअत और पाकीज़गी बयान करता रह। यहूद व ईसाई तो कहते थे कि ख़ुदा की औलाद है, मुश्रिक लोग कहते थे:

لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ اِلَّا شَرِيْكًا هُوَلَكَ تَمْلِكُهٗ وَمَامَلَكَ.

यानी हम हाज़िर रहने वाले ग़ुलाम हैं, ख़ुदाया तेरा कोई शरीक नहीं, लेकिन वह जो तेरी मिल्कियत में हैं, तू ही उनका और उनकी मिल्कियत का मालिक है।

साबी (सितारों को पूजने वाले) और मजूसी (आग को पूजने वाले) कहते थे कि अगर अल्लाह के औलिया (दोस्त और मददगार) न हों तो ख़ुदा सारे इन्तिज़ाम आप नहीं कर सकता। इस पर यह आयत उतरी और उन सब बातिल-परस्तों की तरदीद कर दी गयी। नबी करीम सल्ल. अपने घर के तमाम छोटे-बड़े लोगों को यह आयत सिखाया करते थे। आपने इस आयत का नाम 'आयतुल-इज़्ज़' यानी इज़्ज़त वाली आयत रखा है। बाज़ अक़वाल में है कि जिस घर में रात को यह आयत पढ़ी जाये उस घर में कोई आफ़त

या चोरी नहीं हो सकती। वल्लाहु आलम।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल. के साथ निकला, मेरा हाथ आपके हाथ में था या आपका हाथ मेरे हाथ में था। राह चलते एक शख़्स को आपने देखा कि बहुत ही बुरी हालत में है, उससे पूछा क्या बात है? उसने कहा हुज़ूर! बीमारियों और नुक़सानात ने मेरी यह दुर्गत कर रखी है। आपने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें कुछ वज़ीफ़ा बात दूँ कि यह दुख-बीमारी सब कुछ जाती रहे? उसने कहा हाँ या रसूलल्लाह ज़रूर बतलाईये। मेरा उहुद और बदर (की लड़ाईयों) में आपके साथ न होने का अफ़सोस जाता रहेगा। इस पर आप हंस पड़े और फ़रमाया तू बदरी और उहुदी सहाबा के मर्तबे को कहाँ से पा सकता है, तू उनके मुक़ाबले में बिल्कुल ख़ाली हाथ और बेपूँजी का है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! इन्हें जाने दीजिए आप मुझे बतला दीजिए। आपने फ़रमाया अबू हुरैरह! यूँ कहोः

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَايَمُوْتُ. اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْوَلَدًاوَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا.

तवक्कलतु अ़लल्-हय्यिल्लज़ी ला यमूतु अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व लम् यकुल्लहू वलिय्युम् मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तकबीरा।

मैंने यह वज़ीफ़ा पढ़ना शुरू कर दिया, चन्द दिन गुज़रे थे कि मेरी हालत बहुत ही सुधर गयी। हुज़ूर सल्ल. ने मुझे देखा और फ़रमाया ऐ अबू हुरैरह! यह क्या है? मैंने कहा उन कलिमात की वजह से ख़ुदा की तरफ़ से बरकत है जो आपने मुझे सिखाये थे। इसकी सनद ज़ईफ़ (कमज़ोर) है और इसके मतन में भी उलेमा का कलाम है। इसे हाफ़िज़ अबू यअ़ला ने अपनी किताब में ज़िक्र किया है। वल्लाहु आलम।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः बनी इस्राईल की तफ़सीर ख़त्म हुई।

सूरः कहफ़

सूरः कहफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सूरः कहफ़ की फ़ज़ीलत का बयान

इस सूरत की फ़ज़ीलत का बयान ख़ुसूसन इसकी शुरू व आख़िर की दस आयतों की फ़ज़ीलत का बयान, और यह कि यह सूरत दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ रखने वाली है। मुस्नद अहमद में है कि एक सहाबी ने इस सूरत की तिलावत शुरू की, उनके घर में एक जानवर था उसने उछलना-कूदना शुरू कर दिया। सहाबी ने जो ग़ौर से देखा तो उन्हें सायबान (छज्जे) की तरह एक बादल नज़र पड़ा जिसने उन पर साया कर रखा था। उन्होंने हुज़ूरे पाक सल्ल. से ज़िक्र किया, आपने फ़रमाया कि पढ़ते रहो यह वह सकीना

Muftah E Ashraf

है जो ख़ुदा की तरफ़ से क़ुरआन की तिलावत पर नाज़िल होता है। बुख़ारी व मुस्लिम में भी यह रिवायत है। यह सहाबी हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि. थे जैसा कि सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में हम बयान कर चुके हैं। मुस्नद अहमद में है कि जिस शख़्स ने सूरः कहफ़ के शुरू की दस आयतें हिफ़्ज़ कर लीं वह दज्जाल के फ़ितने से बचा लिया गया। तिर्मिज़ी में तीन आयतों का बयान है, मुस्लिम में आख़िरी दस आयतों का ज़िक्र है, नसाई में दस आयतों को मुतलक़ (यानी शुरू आख़िर की क़ैद के बिना) बयान किया गया है।

मुस्नद अहमद में है कि जो इस सूरः कहफ़ का अव्वल आख़िर पढ़ ले उसके लिये पाँव से सर तक नूर होगा और जो इस सारी सूरत को पढ़े उसे ज़मीन से आसमान तक का नूर मिलेगा। एक ग़रीब सनद से इब्ने मर्दूया में है कि जुमे के दिन जो शख़्स सूरः कहफ़ पढ़ ले उसे पैर के तलवों से लेकर आसमान की बुलन्दी तक का नूर मिलेगा जो क़ियामत के दिन ख़ूब रोशन होगा, और दूसरे जुमे तक उसके सारे गुनाह माफ़ हो जायेंगे। इस हदीस के मरफ़ूअ़ होने में शुब्हा है, ज़्यादा अच्छा तो इसका मौक़ूफ़ होना ही है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. से रिवायत है कि जिसने सूरः कहफ़ जुमे के दिन पढ़ी उसके लिये दो जुमे के दरमियान तक नूर की रोशनी रहती है। बैहक़ी में है कि जिसने सूरः कहफ़ इसी तरह पढ़ी जिस तरह नाज़िल हुई है तो उसके लिये क़ियामत के दिन नूर होगा। हाफ़िज़ ज़बा मक़्दसी की किताब 'अलमुख़्तारा' में है कि जो शख़्स जुमे के दिन सूरः कहफ़ की तिलावत करेगा वह आठ दिन तक हर क़िस्म के फ़ितनों से महफ़ूज़ रहेगा, यहाँ तक कि अगर दज्जाल भी इस मुद्दत में निकले तो वह उससे भी बचा दिया जायेगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۝ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۝ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۝ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۝ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝	तमाम ख़ूबियाँ उस अल्लाह के लिए (साबित) हैं जिसने अपने (ख़ास) बन्दे पर (यह) किताब नाज़िल फ़रमाई, और इसमें ज़रा भी टेढ़ नहीं रखी। (1) बिल्कुल इस्तिक़ामत "यानी मज़बूती" के साथ मौसूफ़ बनाया ताकि वह एक सख़्त अज़ाब से जो कि अल्लाह की तरफ़ से होगा, डराए। और उन ईमान वालों को जो नेक काम करते हैं (यह) ख़ुशख़बरी दे कि उनको अच्छा अज्र मिलेगा। (2) जिसमें वे हमेशा रहेंगे। (3) और ताकि उन लोगों को डराए जो (यूँ) कहते हैं (हम अल्लाह तआ़ला की पनाह चाहते हैं) कि अल्लाह तआ़ला औलाद रखता है। (4) न तो इसकी कोई दलील उनके पास है और न उनके बाप-दादों के पास थी। बड़ी भारी बात है जो उनके मुँह से निकलती है। (और) वे लोग बिल्कुल ही झूठ बकते हैं। (5)

Maktab E Ashraf

हिदायत की किताब

हम पहले बयान कर चुके हैं कि अल्लाह तआ़ला हर मामले के शुरू में और उसके ख़ात्मे पर अपनी तारीफ़ व हम्द करता है, हर हाल में वह क़ाबिले तारीफ़ और लायक़े प्रशंसा है। शुरू व आख़िर में तारीफ़ की मुस्तहिक़ केवल उसी की पाक ज़ात है, जो हर तरह की ख़ूबियों की मालिक है। उसने अपने नबी करीम सल्ल. पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया जो उसकी बहुत बड़ी नेमत है, जिससे अल्लाह के तमाम बन्दे अन्धेरों से निकल कर नूर की तरफ़ आ सकते हैं। उसने इस किताब में वे मज़ामीन ज़िक्र किये जिनमें कोई टेढ़ कोई कसर व कमी नहीं। सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) की रहबरी वाज़ेह, स्पष्ट, साफ़ और ज़ाहिर है। बदकारों को डराने वाली, नेक काम करने वालों को ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाली। दरमियानी, सीधी, मुख़ालिफ़ों व मुन्किरों को ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब की ख़बर देने वाली यह किताब है। जो अ़ज़ाब उसकी तरफ़ से हैं दुनिया में भी और आख़िरत में भी, ऐसे अ़ज़ाब कि न वैसे अ़ज़ाब किसी के, न उसके जैसी पकड़ किसी की। हाँ जो इस पर यक़ीन करे, ईमान लाये, नेक अ़मल करे उसे यह किताब अज्रे अ़ज़ीम की ख़ुशख़बरी सुनाती है, जिस सवाब को हमेशगी और दवाम है, वह जन्नत उन्हें मिलेगी जिसमें कभी फ़ना नहीं, जिसकी नेमतें ग़ैर-फ़ानी हैं। और उन्हें भी अ़ज़ाब से आगाह करता है जो ख़ुदा की औलाद ठहराते हैं, जैसे मक्का के मुश्रिक लोग कि वे फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ बताते थे, बेइल्मी और जहालत के साथ मुँह से बोल पड़ते हैं। ये तो ये इनके बड़े भी ऐसी बातें बेइल्मी से कहते रहे। यह उनका झूठ और अल्लाह पर बोहतान बाँधना है, इसी लिये फ़रमाया कि ये झूठ बकते हैं।

इस सूरत का शाने नुज़ूल यह बयान किया गया है कि क़ुरैश वालों ने नज़्र बिन हारिस और उक़्बा बिन अबी मुईत को मदीने के यहूदी उलेमा के पास भेजा कि तुम जाकर मुहम्मद के बारे में तमाम हालात उनसे बयान करो, उनके पास अम्बिया का इल्म है, उनसे पूछो कि उनकी आपके बारे में क्या राय है? ये दोनों मदीना गये, मदीना के यहूदी उलेमा से मिले, हुज़ूर सल्ल. के हालात व सिफ़ात बयान किये, आपकी तालीम का ज़िक्र किया और कहा कि तुम इल्म रखते हो बतलाओ उनके बारे में क्या ख़्याल है? उन्होंने कहा देखो हम तुम्हें एक फ़ैसला कर देने वाली बात बतलाते हैं, तुम जाकर उनसे तीन सवाल करो, अगर वह जवाब दें तो उनके सच्चे होने में कुछ शक नहीं, बेशक वह ख़ुदा के नबी और रसूल हैं। और अगर जवाब न दे सकें तो उनके झूठा होने में कोई शक नहीं, फिर जो तुम चाहो करो।

उनसे पूछो कि पहले ज़माने में जो नौजवान चले गये थे उनका वाक़िआ़ बयान करो। वह एक अ़जीब वाक़िआ़ है। और उस शख़्स के हालात दरियाफ़्त करो जिसने तमाम ज़मीन का गश्त लगाया था, पूरब से पश्चिम तक हो आया था। और रूह की हक़ीक़त के बारे में दरियाफ़्त करो। अगर बतला दे तो उसे नबी मानकर उसकी इत्तिबा करो और अगर न बतला सके तो वह शख़्स झूठा है जो चाहो करो।

ये दोनों वहाँ से वापस आये और तीनों सवालात किये। आपने फ़रमाया तुम कल आओ मैं तुम्हें जवाब दूँगा लेकिन 'इन्शा-अल्लाह' कहना भूल गये। पन्द्रह दिन गुज़र गये आप पर न 'वही' आयी न अल्लाह की तरफ़ से इन बातों का जवाब मालूम कराया गया। मक्का वाले बहुत ख़ुश हुए और कहने लगे कि लीजिए साहिब! कल का वादा था आज पन्द्रहवाँ दिन है लेकिन वह बतला नहीं सके। इधर आपको दोहरा ग़म सताने लगा, क़ुरैश वालों को जवाब न मिलने पर उनकी बातें सुनने का और 'वही' के बन्द हो जाने का। फिर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये सूरः कहफ़ नाज़िल हुई, इसी में इन्शा-अल्लाह न कहने

पर आपको याददेहानी करायी गयी और उस घूमने वाले (पर्यटक) का ज़िक्र किया गया, और आयतः

وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ.

(यानी रूह के बारे में सवाल का) रूह के बारे में जवाब दिया गया।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ٥ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ٥ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ٥	सो शायद आप उनके पीछे ग़म से अपनी जान दे देंगे, अगर ये लोग इस (क़ुरआनी) मज़मून पर ईमान न लाए। (यानी इतना ग़म न करें कि हलाकत के क़रीब कर दे)। (6) हमने ज़मीन पर की चीज़ों को उस (ज़मीन) के लिए रौनक़ का सबब बनाया, ताकि हम लोगों की आज़माईश करें कि उनमें ज़्यादा अच्छा अ़मल कौन करता है। (7) और हम इस (ज़मीन) पर की तमाम चीज़ों को एक साफ़ मैदान (यानी फ़ना) कर देंगे। (8)

क्या आप उनको हिदायत के रास्ते पर ले आयेंगे?

मुश्रिक लोग जो आपसे दूर भागते थे, ईमान न लाते थे, इस पर जो रंज व अफ़सोस आपको होता था उस पर अल्लाह तआ़ला आपकी तसल्ली कर रहा है। जैसे एक और आयत में है कि उन पर इतना रंज न करो। एक और जगह है कि उन पर इतने ग़मगीन न होओ। एक जगह है कि उनके ईमान न लाने से अपनी जान हलकान न करो। यहाँ भी यही फ़रमाया कि ये इस क़ुरआन पर ईमान न लायें तो तू अपनी जान में घुन न लगा ले, इस क़द्र ग़म व पीड़ा, रंज व अफ़सोस न कर, न घबरा न तंगदिल हो, अपना काम किये जा, तब्लीग़ में कोताही न कर, हिदायत पाने वाले अपना भला करेंगे, गुमराह अपना बुरा करेंगे। हर एक का अ़मल उसके साथ है।

फिर फ़रमाता है कि दुनिया फ़ानी (एक दिन ख़त्म होने वाली) है, इसकी ज़ीनत (चमक-दमक) ख़त्म होने वाली है। आख़िरत बाक़ी रहने वाली है, उसकी नेमतें हमेशा रहने वाली हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि दुनिया मीठी और सब्ज़ रंग की है, इसमें अल्लाह तआ़ला तुम्हें ख़लीफ़ा (अपना उत्तराधिकारी) बनाकर देखना चाहता है कि तुम कैसे आमाल करते हो? पस दुनिया से और औरतों से बचो (यानी ऐसा न हो कि औरतों के पीछे सब कुछ छोड़ दो और उनसे फ़ायदा उठाने ही को ज़िन्दगी का मक़सद बना लो)। बनी इस्राईल में सबसे पहला फ़ितना औरतों का ही था। यह दुनिया ख़त्म होने, उजड़ने और ग़ारत होने वाली है। ज़मीन हमवार साफ़ रह जायेगी जिस पर किसी क़िस्म की पैदावार भी न होगी, न कोई चीज़ उगेगी। जैसे एक और आयत में है कि क्या लोग देखते नहीं कि हम ग़ैर-आबाद बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी को ले चलते हैं और उससे खेती पैदा करते हैं, जिसे वे ख़ुद खाते हैं और उनके मवेशी (पशु) भी। क्या फिर भी उनकी आँखें नहीं खुलतीं? ज़मीन और ज़मीन पर जो हैं सब फ़ना होने और अपने असली मालिक के सामने पेश होने वाले हैं। पस तू कुछ भी उनसे सुने, उन्हें कैसे ही हाल में देखे बिल्कुल भी अफ़सोस और रंज न कर।

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَىُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ۝

क्या आप (यह) ख़्याल करते हैं कि ग़ार वाले और पहाड़ वाले हमारी (क़ुदरत की) अजीब चीज़ों में से कुछ ताज्जुब की चीज़ थे? (9) (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकि उन नौजवानों ने (उस) ग़ार में जाकर पनाह ली, फिर कहा कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको अपने पास से रहमत (का सामान) अ़ता फ़रमाईए, और हमारे लिए हमारे (इस) काम में दुरुस्ती का सामान मुहैया कर दीजिए। (10) सो हमने (उस) ग़ार में उनके कानों पर सालों तक (नींद का) पर्दा डाल दिया। (11) फिर हमने उनको उठाया ताकि हम मालूम कर लें कि उन दोनों गिरोहों में से कौनसा (गिरोह) उनके रहने की मुद्दत का ज़्यादा जानकार था। (12)

अस्हाब-ए-कहफ़ का क़िस्सा

अस्हाब-ए-कहफ़ का क़िस्सा पहले मुख़्तसर तौर पर बयान हो रहा है फिर तफ़सील के साथ बयान होगा। इरशाद है कि वह वाक़िआ़ हमारी क़ुदरत के बेशुमार वाक़िआ़त में से एक बहुत ही मामूली वाक़िआ़ है, इससे बड़े-बड़े निशान रोज़मर्रा तुम्हारे सामने हैं। आसमान व ज़मीन की पैदाईश, रात दिन का आना-जाना, सूरज-चाँद का अपने नियम के तहत अपने काम में लगा होना, और क़ुदरत की बेशुमार निशानियाँ हैं जो बता रही हैं कि ख़ुदा तआ़ला की क़ुदरत बेअन्दाज़ा है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है, उसके लिये कोई काम मुश्किल नहीं।

अस्हाब-ए-कहफ़ से तो कहीं ज़्यादा ताज्जुब की चीज़ और क़ुदरत का अहम निशान तुम्हारे सामने दिन रात मौजूद हैं। क़ुरआन व हदीस का जो इल्म मैंने तुझे अ़ता फ़रमाया है वह अस्हाब-ए-कहफ़ की शान से कहीं ज़्यादा है। बहुत सी हुज्जतें मैंने अपने बन्दों पर अस्हाब-ए-कहफ़ से ज़्यादा वाज़ेह कर दी हैं।

'कहफ़' कहते हैं पहाड़ी ग़ार (गुफ़ा) को। वहीं ये नौजवान छुप गये थे। "रक़ीम" या तो ईला के पास की वादी का नाम है या उनकी उस जगह की इमारत का नाम है, या किसी आबादी का नाम है या उस पहाड़ का नाम है। उस पहाड़ का नाम नजलूस भी आया है। ग़ार (गुफ़ा और खोह) का नाम ख़ैरूम कहा गया है और उनके कुत्ते का नाम हुमरान बतलाया गया है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि सारे क़ुरआन को मैं जानता हूँ सिवाय लफ़्ज़ "हन्नान" और लफ़्ज़ "अव्वाह" और लफ़्ज़ "रक़ीम" के। मुझे मालूम नहीं कि रक़ीम किताब का नाम है या उस इमारत का। एक और रिवायत में आपसे मन्क़ूल है कि वह किताब है। सईद कहते हैं कि यह पत्थर की एक लौह (तख़्ती) थी जिस पर अस्हाब-ए-कहफ़ का क़िस्सा लिखकर ग़ार के दरवाज़े पर उसे लगा दिया गया था। अ़ब्दुर्रहमान कहते हैं कि क़ुरआन में है:

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ.

Maktab E Ashraf

'लिखी हुई किताब'।

पस आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ तो इसकी ताईद करते हैं और यही इमाम इब्ने जरीर का पसन्दीदा क़ौल है।

ये नौजवान अपने दीन की हिफ़ाज़त (बचाव) के लिये अपनी क़ौम से भाग खड़े हुए थे कि कहीं वे उन्हें दीन से न बहका दें। एक पहाड़ के ग़ार (गुफा) में घुस गये और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि ख़ुदाया! हमें अपनी तरफ़ से रहमत अ़ता फ़रमा, हमें हमारी क़ौम से छुपाये रख, हमारे इस काम में अच्छाई पैदा कर। हदीस की एक दुआ़ में है कि ख़ुदाया! तू जो फ़ैसला हमारे हक़ में करे उसे अन्जाम के लिहाज़ से अच्छा और भला कर। मुस्नद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. अपनी दुआ़ में अ़र्ज़ करते कि ख़ुदाया! हमारे तमाम कामों का अन्जाम अच्छा कर और हमें दुनिया की रुस्वाई और आख़िरत के अ़ज़ाबों से बचा ले। ये ग़ार में जाकर जो पड़कर सोये तो बरसों गुज़र गये, फिर हमने उन्हें बेदार किया। उनमें से एक साहिब दिर्हम लेकर बाज़ार से सौदा ख़रीदने चले, जैसा कि इसकी तफ़सील आगे आ रही है। यह इसलिये कि उन्हें वहाँ कितनी मुद्दत गुज़री इसे दोनों गिरोहों (यानी अस्हाब-ए-कहफ़ का गिरोह और उस ज़माने के बादशाह की जमाअ़त) में से कौन ज़्यादा याद रखने वाला है? इसे हम भी मालूम कर लें। 'अमद' के मायने अ़दद या गिनती के हैं।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ۝ وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ۝ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝ؕ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝

हम उनका वाक़िआ़ आपसे ठीक-ठीक बयान करते हैं, वे लोग कुछ नौजवान थे, जो अपने रब पर ईमान लाए थे और हमने उनकी हिदायत में और तरक़्क़ी कर दी थी। (13) और हमने उनके दिल मज़बूत कर दिए, जबकि वे (दीन में) पक्के होकर कहने लगे कि हमारा रब (तो वह है जो) आसमानों और ज़मीन का रब है। हम तो उसको छोड़कर किसी माबूद की इबादत न करेंगे, (क्योंकि) उस सूरत में हमने यक़ीनन बड़ी ही बेजा बात कही। (14) यह जो हमारी क़ौम है, उन्होंने ख़ुदा को छोड़कर और माबूद क़रार दे रखे हैं, ये लोग उन (माबूदों) पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते। तो उस शख़्स से ज़्यादा कौन ग़ज़ब ढाने वाला होगा? जो अल्लाह तआ़ला पर झूठी तोहमत लगा दे। (15) और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से भी, मगर अल्लाह तआ़ला से (अलग नहीं हुए) तो तुम (फ़ुलाँ) ग़ार में चलकर पनाह लो, तुम पर तुम्हारा रब अपनी रहमत फैला देगा, और तुम्हारे लिए तुम्हारे इस काम में कामयाबी का सामान दुरुस्त कर देगा। (16)

Maktab E Ashraf

वाक़िए की तफ़सील

यहाँ से तफ़सील के साथ अस्हाब-ए-कहफ़ का क़िस्सा शुरू होता है कि ये चन्द नौजवान थे जो दीने हक़ की तरफ़ माईल हुए और हिदायत पर आ गये। मक्का के क़ुरैश में भी यही हुआ था कि नौजवानों ने तो हक़ की आवाज़ पर लब्बैक कहा था लेकिन बूढ़े लोग इस्लाम की तरफ़ बढ़ने को माईल न हुए "इल्ला माशा-अल्लाह। कहते हैं कि उनमें से बाज़ के कानों में बाले थे, ये मुतक़्क़ी मोमिन और हिदायत पाने वाले नौजवानों की जमाअ़त थी, अपने रब की वहदानियत (अल्लाह के एक होने) को मानते थे, उसकी तौहीद के क़ायल हो गये थे और दिन-ब-दिन ईमान व हिदायत में बढ़ रहे थे। यह और इस जैसी दूसरी आयतों और हदीसों से दलील पकड़ कर इमाम बुख़ारी रह. वग़ैरह मुहद्दिसीन का मज़हब यह है कि ईमान में कमी और ज़्यादती (यानी घटना बढ़ना) होती है, इसमें दर्जे हैं, यह कम ज़्यादा होता रहता है। यहाँ है कि हमने उन्हें हिदायत में बढ़ा दिया, एक और जगह है:

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى...... الخ.

हिदायत वालों की हिदायत बढ़ जाती है...। एक और आयत में है:

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا.... الخ.

ईमान वालों के ईमान को बढ़ाती है.....। एक और जगह इरशाद है:

لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ.

ताकि वे अपने ईमान के साथ ही ईमान में और बढ़ जायें।

इस मज़मून की और बहुत सी आयतें हैं। बयान किया गया है कि ये लोग हज़रत मसीह बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम के दीन पर थे। वल्लाहु आलम। लेकिन बज़ाहिर मालूम होता है कि ये मसीह के ज़माने से पहले का वाक़िआ है, इसकी एक दलील यह भी है कि अगर ये लोग ईसाई होते तो यहूद इस क़द्र तवज्जोह से न इनके हालात मालूम करते न मालूम करने की हिदायत करते। हालाँकि यह बयान गुज़र चुका है कि क़ुरैश वालों ने अपने वफ़्द को मदीना के यहूद के उलेमा के पास भेजा था कि तुम हमें कुछ ऐसी बातें बतलाओ कि हम मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्ल.) की आज़माईश कर लें तो उन्होंने कहा कि तुम अस्हाब-ए-कहफ़ और ज़ुलक़रनैन का वाक़िआ आपसे मालूम करो और रूह के मुताल्लिक़ सवाल करो। पस मालूम होता है कि यहूद की किताब में इसका ज़िक्र था और उन्हें इस वाक़िए का इल्म था। जब यह साबित हो गया तो यह ज़ाहिर है कि यहूद की किताब ईसाईयत से पहले की है। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाता है कि हमने उन्हें क़ौम की मुख़ालफ़त (विरोध) पर सब्र अ़ता फ़रमाया और उन्होंने क़ौम की कुछ परवाह न की बल्कि वतन और राहत व आराम को भी त्याग दिया। बाज़ बुज़ुर्गों का बयान है कि ये लोग रोम के बादशाह की औलाद और रोम के सरदार थे। एक बार क़ौम के साथ ईद मनाने गये थे उस ज़माने के बादशाह का नाम दक़ियानूस था, बड़ा सरकश और सख़्त आदमी था, सब को शिर्क की तालीम करता और सबसे बुत-परस्ती कराता था। ये नौजवान जो अपने बाप-दादाओं के साथ उस मेले में गये थे इन्होंने जब वहाँ यह तमाशा देखा तो इनके दिल में ख़्याल आया कि बुत-परस्ती (यानी बुतों और बेजान चीज़ों को पूजना) बिल्कुल बेकार और बातिल चीज़ है, इबादतें और ज़बीहे सिर्फ़ ख़ुदा के नाम पर होने

चाहियें जो आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ (बनाने वाला) व मालिक है। पस ये लोग एक-एक करके यहाँ से सरकने लगे। एक पेड़ के नीचे जाकर उनमें से एक साहिब बैठ गये, दूसरे भी यहीं आ गये, तीसरे भी आये, चौथे भी आये ग़र्ज़ एक-एक करके सब यहीं जमा हो गये, हालाँकि एक दूसरे में परिचय न था लेकिन ईमान की रोशनी ने एक दूसरे को मिला दिया। हदीस शरीफ़ में है कि रूहें भी एक जमा-शुदा लश्कर हैं जो रोज़े-अज़ल में परिचय वाली हैं वे यहाँ मिलजुल कर रहती हैं, और जो वहीं अन्जान रही हैं यहाँ भी उनमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) रहता है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

अब सब ख़ामोश थे, एक को एक से डर था कि अगर मैं अपने दिल की बात को बता दूँगा तो ये दुश्मन हो जायेंगे, किसी को दूसरे के बारे में इत्तिला न थी कि वह भी उसकी तरह क़ौम की इस अहमक़ाना और मुश्रिकाना रस्म से बेज़ार है। आख़िर एक दाना और हिम्मत वाले नौजवान ने कहा कि दोस्तो! कोई न कोई बात ज़रूर है कि लोगों के इस आ़म शुग़ल को छोड़कर तुम उनसे एक किनारे होकर यहाँ आ बैठे हो, मेरा तो जी चाहता है कि हर शख़्स उस बात को ज़ाहिर कर दे जिसकी वजह से उसने क़ौम को छोड़ा है। इस पर एक ने कहा भाई बात यह है कि मुझे तो अपनी क़ौम की यह रस्म एक आँख नहीं भाती, जबकि आसमान व ज़मीन का और हमारा तुम्हारा ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है, तो फिर हम उसके सिवा दूसरों की इबादत क्यों करें? यह सुनकर दूसरे ने कहा ख़ुदा की क़सम! यही नफ़रत मुझे यहाँ लाई है। तीसरे ने भी यही कहा। जब हर एक ने यही वजह बयान की तो सबके दिल में मुहब्बत की एक लहर दौड़ गयी और ये सब नेक-ख़्याल ईमान वाले आपस में दोस्त और सगे भाईयों से भी ज़्यादा एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह (हमदर्द और भला चाहने वाले) बन गये। आपस में एकजुटता व इत्तिफ़ाक़ हो गया।

अब उन्होंने एक जगह मुक़र्रर कर ली, वहीं एक ख़ुदा की इबादत करने लगे। धीरे-धीरे क़ौम को भी पता चल गया। वे इन सबको पकड़कर उस ज़ालिम मुश्रिक बादशाह के पास ले गये और इनकी शिकायत की। बादशाह ने इनसे पूछा इन्होंने बड़ी दिलेरी से अपने मोमिन होने और अपना मस्लक बयान किया, बल्कि बादशाह, दरबार वालों और तमाम दुनिया को इसकी दावत दी, दिल मज़बूत कर लिया और साफ़ कह दिया कि हमारा रब वही है जो आसमान व ज़मीन का मालिक व ख़ालिक़ है, नामुम्किन है कि हम उसके सिवा किसी और को माबूद बनायें, हमसे यह कभी न हो सकेगा कि उसके सिवा किसी और को पुकारें, इसलिये कि शिर्क बहुत ही बुरी चीज़ है, हम इस काम को कभी नहीं करेंगे। यह बहुत ही बेजा बात, बेहूदा हरकत और टेढ़ी राह है। हमारी यह क़ौम मुश्रिक है, अल्लाह के सिवा औरों को पुकारती और दूसरों की इबादत में मशग़ूल है, जिसकी कोई दलील ये पेश नहीं कर सकते। पस ये ज़ालिम और झूठे हैं।

कहते हैं कि उनके इस साफ़ कहने और हक़ ज़ाहिर करने से बादशाह बहुत बिगड़ा, उन्हें धमकाया डराया और हुक्म दिया कि इनके लिबास उतार लो और अगर ये बाज़ न आयेंगे तो मैं इन्हें सख़्त सज़ा दूँगा। अब उन लोगों के दिल और मज़बूत हो गये लेकिन उन्हें यह मालूम हो गया कि यहाँ रहकर हम दीनदारी पर क़ायम नहीं रह सकते, इसलिये उन्होंने क़ौम, देस और रिश्ते कुनबे को छोड़ने का पुख़्ता इरादा कर लिया। यही हुक्म भी है कि इनसान दीन के ख़ौफ़ के वक़्त हिजरत कर जाये। हदीस में है कि इनसान का बेहतरीन माल मुम्किन है कि बकरियाँ हो जायें जिन्हें लेकर पहाड़ की खोह में और ग़ारों में रहे सहे और अपने दीन के बचाव की ख़ातिर भागता फिरे। पस ऐसे हाल में लोगों से अलग-थलग हो जाना शरीअ़त के

Maktab E Ashraf

हुक्म में है, हाँ अगर ऐसी हालत न हो, दीन की मग़लूब होने और बरबादी का ख़ौफ़ न हो तो फिर जंगलों में निकल जाना जायज़ नहीं, क्योंकि जुमे और जमाअ़त की फ़ज़ीलत हाथ से जाती रहती है।

जब ये लोग दीन के बचाव के लिये इतनी अहम क़ुरबानी पर तैयार हो गये तो इन पर रब की रहमत नाज़िल हुई। फ़रमा दिया गया कि ठीक है जब तुम उनके दीन से अलग हो गये तो बेहतर है कि जिस्मों से भी उनसे अलग हो जाओ। जाओ अल्लाह तुम्हारे काम में आसानी और राहत मुहैया फ़रमा देगा। पस ये लोग मौक़ा पाकर यहाँ से भाग निकले और पहाड़ की खोह में छुप रहे। बादशाह और क़ौम ने उनकी बहुत तलाश की लेकिन कोई पता न चला, अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये उनकी जगह का रास्ता ग़ैर-मालूम कर दिया।

देखिये यही बल्कि इससे भी ज़्यादा ताज्जुब वाला वाक़िआ़ हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. के साथ पेश आया। आप अपने ख़ास साथी और यारे-ग़ार हज़रत अबू बक्र रज़ि. के साथ ग़ारे सौर में जा छुपे। मक्का के मुश्रिकों ने बहुत कुछ दौड़ धूप की, अपनी कोशिश में कोई कसर न की लेकिन हुज़ूर सल्ल. उन्हें बावजूद पूरी तलाश और सख़्त कोशिश के न मिले, अल्लाह तआ़ला ने उनकी बीनाई (आँखों की रोशनी) छीन ली, आस-पास से गुज़रते थे, आँखें फाड़-फाड़कर देखते थे, हुज़ूर सल्ल. मौजूद हैं और उन्हें दिखाई नहीं देते। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. परेशानहाल होकर अ़र्ज़ करते हैं कि हुज़ूर! अगर किसी ने अपने पैरों की तरफ़ भी नज़र डाल ली तो हम देख लिये जायेंगे। आपने पूरे इत्मीनान से जवाब दिया कि ऐ अबू बक्र! उन दो के बारे में तेरा क्या ख़्याल है जिनका तीसरा ख़ुद ख़ुदा तआ़ला है?

क़ुरआन फ़रमाता है कि अगर तुम मेरे नबी की इमदाद न करो तो क्या हुआ, जब काफ़िरों ने उसे निकाल दिया मैंने ख़ुद उसकी इमदाद की, जबकि वह दो में का दूसरा था जब वे दोनों ग़ार में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़मगीन न हो अल्लाह हमारे साथ है। पस ख़ुदा तआ़ला ने अपनी तरफ़ से दिली सुकून व इत्मीनान उस पर नाज़िल फ़रमाया और ऐसे लश्कर से उसकी मदद की जिसे तुम न देख सकते थे। आख़िर उसने काफ़िरों की बात पस्त कर दी और अपना कलिमा बुलन्द फ़रमाया। अल्लाह इज़्ज़त व हिक्मत वाला है।

सच तो यह है कि यह वाक़िआ़ अस्हाब-ए-कहफ़ के वाक़िए से भी ज़्यादा अ़जीब और अनोखा है। एक क़ौल यह भी है कि उन नौजवानों को क़ौम और बादशाह ने पा लिया, जब ग़ार में उन्हें देख लिया तो कहा बस हम तो ख़ुद ही यही चाहते थे, चुनाँचे उन्होंने उसका मुँह एक दीवार से बन्द कर दिया कि ये यहीं मर जायें, लेकिन यह क़ौल ज़्यादा सही नहीं है। क़ुरआन का फ़रमान है कि सुबह व शाम उन पर धूप आती जाती है, वग़ैरह। वल्लाहु आलम

और (ऐ मुख़ातब!) जब धूप निकलती है तो तू उसको देखेगा कि वह उनके ग़ार के दाहिनी तरफ़ को बची रहती है, और जब छुपती है तो (ग़ार के) बाईं तरफ़ हटी रहती है। और वे लोग उस ग़ार की एक कुशादा (यानी खुली) जगह में थे। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसको अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत	وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ

Maktab E Ashraf

पाता है, और जिसको वह बेराह कर दे तो आप उसके लिए कोई मददगार, राह बताने वाला न पाएँगे। (17)	وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۝ ع

खोह की आश्चर्य में डालने वाली बातें

यह इस बात की दलील है कि उस ग़ार का रुख़ उत्तर में है, सूरज के निकलने के वक़्त उनकी दायीं तरफ़ धूप की छाँव झुक जाती है। पस दोपहर के वक़्त वहाँ बिल्कुल धूप नहीं रहती, सूरज की बुलन्दी के साथ ही ऐसी जगह से किरनें धूप की कम होती जाती हैं और सूरज के डूबने के वक़्त धूप उनके ग़ार की तरफ़ उसके दरवाज़े के उत्तरी रुख़ से जाती है, पूरब की तरफ़ से। आसमानी चीज़ों और सितारों के हालात का इल्म रखने वाले इसे ख़ूब समझ सकते हैं, जिन्हें सूरज चाँद और सितारों की रफ़्तार का इल्म है। अगर ग़ार का दरवाज़ा पूरब-रुख़ का होता तो सूरज के ग़ुरूब के वक़्त वहाँ धूप बिल्कुल न जाती और अगर क़िब्ला-रुख़ (यानी पश्चिमी दिशा में) होता तो सूरज के निकलने के वक़्त धूप न पहुँचती और न सूरज के छुपने के वक़्त पहुँचती और न साया दायें-बायें झुकता, और अगर दरवाज़ा पश्चिम के रुख़ पर होता तो भी सूरज निकले के वक़्त अन्दर धूप न जा सकती बल्कि ज़वाल (सूरज ढलने) के बाद अन्दर पहुँचती और फिर बराबर शाम तक रहती। पस ठीक बात वही है जो हमने बयान की।

'तक़्रिज़ुहुम' के मायने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने तर्क करने और छोड़ देने के किये हैं, अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने हमें तो यह बतला दिया है ताकि हम इसे सोचें समझें और यह नहीं बतलाया कि वह ग़ार किस शहर के किस स्थान में है, इसलिये कि हमें उससे कोई फ़ायदा नहीं, न उससे किसी शरई मक़सद का हुसूल होता है। फिर भी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसका कष्ट किया है, कोई कहता है कि वह ईला के क़रीब है, कोई कहता है नैनवा के पास है, कोई कहता है कि रोम में है, कोई कहता है बलक़ा में। असल इल्म अल्लाह ही को है कि वह कहाँ है, अगर इसमें कोई दीनी मस्लेहत या हमारा फ़ायदा होता तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला हमें बतला देता या अपने रसूल की ज़बानी बयान करा देता। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि तुम्हें जो-जो काम और चीज़ें जन्नत से क़रीब और जहन्नम से दूर करने वाली थीं उनमें से एक भी छोड़े बग़ैर मैंने बतला दी हैं। पस अल्लाह तआ़ला ने उसकी सिफ़त बयान फ़रमा दी और उसकी जगह नहीं बतलाई। फ़रमा दिया कि सूरज निकलने के वक़्त उनके ग़ार से वह दायीं तरफ़ को झुक जाता है और ग़ुरूब (छुपने) के वक़्त उन्हें बायीं तरफ़ छोड़ देता है, वे इससे फ़राख़ी में हैं, उन्हें धूप की तपिश नहीं पहुँचती वरना उनके बदन और कपड़े जल जाते, यह ख़ुदा की एक निशानी है कि रब ने उन्हें उस ग़ार में पहुँचाया जहाँ उन्हें ज़िन्दा रखा। धूप भी पहुँचे, हवा अभी जाये, चाँदना (रोशनी) भी रहे ताकि न नींद में ख़लल आये न नुक़सान पहुँचे। वास्तव में ख़ुदा की तरफ़ से यह भी उसकी क़ुदरत की कामिल निशानी है कि उन अल्लाह को एक मानने वाले नौजवानों की हिदायत ख़ुद ख़ुदा ने की थी, ये सही रास्ता पा चुके थे, किसी के बस में न था कि उन्हें गुमराह कर सके। इसके विपरीत जिसे वह राह न दिखाये उसका हादी (हिदायत देने और सही रास्ते पर लगाने वाला) कोई नहीं।

Maktuba Ashraf

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖ وَّ نُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَ كَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۚ لَوِاطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ○	और (ऐ मुख़ातब!) तू उनको जागता हुआ ख़्याल करता, हालाँकि वे सोते थे, और हम उनको (कभी) दाहिनी तरफ़ और (कभी) बाईं तरफ़ करवट दे देते थे, और उनका कुत्ता देहलीज़ पर अपने दोनों हाथ फैलाए हुए था। अगर (ऐ मुख़ातब!) तू उनको झाँककर देखता तो उनसे पीठ फेरकर भाग खड़ा होता, और तेरे अन्दर उनकी दहशत समा जाती। (18)

क़ुदरत के नमूने

वे सो रहे हैं लेकिन देखने वाला उन्हें बेदार (जागा हुआ) समझता है, क्योंकि उनकी आँखें खुली हुई हैं। कहते हैं कि भेड़िया जब सोता है तो एक आँख बन्द रखता है और एक खुली होती है, फिर उसे बन्द करके दूसरी खोल देता है। चुनाँचे किसी शायर ने कहा है:

يَنَامُ بِاِحْدٰى مُقْلَتَيْهِ وَيَتَّقِى ☆ بِاُخْرَى الرَّزَايَا فَهُوَ يَقْظَانُ نَائِمٌ

जानवरों, कीड़ों मकोड़ों और दुश्मनों से बचाने के लिये तो ख़ुदा ने नींद में भी उनकी आँखें खुली रखी हैं और ज़मीन न खा जाये, करवटें न गल जायें इसलिये ख़ुदा तआ़ला उन्हें करवटें बदलवा देता है। कहते हैं कि साल भर में दो बार करवट बदलते हैं, उनका कुत्ता भी अंगनाई में दरवाज़े के पास मिट्टी में चोखट के क़रीब बतौर पहरेदार के बाज़ू ज़मीन पर टिकाये हुए बैठ हुआ है। दरवाज़े के बाहर इसलिये कि जिस घर में तस्वीर, कुत्ता, नापाक और काफ़िर शख़्स हो उस घर में फ़रिश्ते नहीं जाते, जैसा कि एक हसन हदीस में बयान हुआ है। उस कुत्ते को भी उसी हालत में नींद आ गयी है। सच है भले लोगों की सोहबत भी भलाई पैदा करती है। देखिये ना उस कुत्ते की कितनी शान (रुतबा) हो गयी कि अल्लाह के कलाम में उसका ज़िक्र आया। कहते हैं कि उनमें से किसी का यह शिकारी कुत्ता पला हुआ था। एक क़ौल यह भी है कि यह कुत्ता बादशाह के बावर्ची का था, चूँकि वह भी इनके हम-मस्लक (एक ख़ुदा को मानने वाले) थे, उनके साथ अपना दीन बचाने के लिये निकले तो उनका कुत्ता उनके पीछे लग गया था। वल्लाहु आलम।

कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम के हाथों हज़रत ज़बीहुल्लाह (हज़रत इस्माईल) के बदले जो भेड़ा ज़िबह हुआ उसका नाम जरीर था। हज़रत सुलैमान को जिस हुदहुद ने मुल्क सबा की रानी की ख़बर दी थी उसका नाम अन्फ़ज़ था और अस्हाब-ए-कहफ़ के इस कुत्ते का नाम क़ितमीर था, और बनी इस्राईल ने जिस बछड़े की पूजा शुरू की थी उसका नाम यहूत था। हज़रत आदम जन्नत से हिन्द में उतरे थे, हज़रत हव्वा जेद्दा में, इब्लीस बीसान के जंगल में और साँप अस्फ़हान में।

एक क़ौल में है कि उस कुत्ते का नाम हुमरान था, तथा उस कुत्ते के रंग में भी बहुत से अक़्वाल हैं, लेकिन हमें हैरत है कि इससे क्या नतीजा? क्या फ़ायदा? क्या ज़रूरत? बल्कि अ़जब नहीं कि ऐसी बहसें वर्जित और मना हों, इसलिये कि यह तो आँखें बन्द करके पत्थर फेंकना और बिना दलील के ज़बान खोलना है।

Maktaba Ashraf

फिर फ़रमाता है कि हमने उन्हें वह रौब दिया कि कोई उन्हें देख ही नहीं सकता। यह इसलिये कि लोग उनका तमाशा न बना लें, कोई जुर्रत करके उनके पास न चला जाये, कोई उन्हें हाथ न लगा सके। जब तक अल्लाह की हिक्मत व मस्लेहत है वे आराम और चैन से सोते रहें। जो उन्हें देखता है उनके रौब की वजह से कलेजा थरथरा जाता है, उसी वक़्त उल्टे पैरों वापस लौटता है, उन्हें नज़र भरकर देखना भी हर एक के लिये मुश्किल है।

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۭ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۭ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۭ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ۝ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ۝	और इसी तरह हमने उनको जगा दिया, ताकि वे आपस में पूछताछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि तुम (नींद की हालत में) कितनी देर रहे होगे? (उनमें से बाज़ों ने) कहा कि (ग़ालिबन) एक दिन या एक दिन से भी कुछ कम रहे होंगे। (दूसरे कुछ ने) कहा कि यह तो तुम्हारे ख़ुदा ही को ख़बर है कि तुम कितनी देर रहे, अब अपने में से किसी को यह रुपया देकर शहर की तरफ़ भेजो, फिर वह खोज करे कि कौन-सा खाना (हलाल) है, सो उसमें से तुम्हारे पास कुछ खाना ले आए। और (सब काम) बड़ी होशियारी (से) करे, और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। (19) (क्योंकि) अगर वे लोग तुम्हारी ख़बर पा जाएँगे तो तुमको या तो पत्थरों से मार डालेंगे या तुमको अपने तरीक़े में फिर कर लेंगे, "यानी वापस उसी में लौट लेंगे" और (ऐसा हुआ तो) तुमको कभी कामयाबी न होगी। (20)

कुछ मस्लेहतें और हिक्मतें

इरशाद होता है कि जैसे हमने अपनी कामिल क़ुदरत से उन्हें सुला दिया था इसी तरह अपनी क़ुदरत से उन्हें जगा दिया। तीन सौ नौ साल तक सोते रहे लेकिन जब जागे तो बिल्कुल वैसे ही थे जैसे सोते वक़्त थे। बदन, बाल, खाल सब असली हालत में थे। बस जैसे सोते वक़्त थे वैसे ही अब भी थे, किसी क़िस्म का कोई बदलाव न था। आपस में कहने लगे क्यों जी हम कितनी मुद्दत सोते रहे? तो जवाब मिला कि एक दिन बल्कि इससे भी कम, क्योंकि सुबह के वक़्त यह सो गये थे और उस वक़्त शाम का समय था इसलिये उन्हें यही ख़्याल हुआ, लेकिन फिर ख़ुद उन्हें ख़्याल आया कि ऐसा तो नहीं, इसलिये उन्होंने ज़ेहन लड़ाना छोड़ दिया और एक आख़िरी बात कह दी कि इसका सही इल्म सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला को ही है।

अब चूँकि भूख-प्यास मालूम हो रही थी इसलिये उन्होंने बाज़ार से कुछ खाने पीने की चीज़ मंगवाने की तजवीज़ की। दाम उनके पास थे, जिनमें से कुछ अल्लाह की राह में ख़र्च किये थे, कुछ मौजूद थे, तो

Maktab E Ashraf

कहने लगे इसी शहर में किसी को दाम देकर भेज दो, वह वहाँ से कोई पाकीज़ा चीज़ खाने पीने की लाये यानी उम्दा और बेहतर चीज़। जैसे एक और आयत में बयान है:

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَازَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا.

यानी अगर ख़ुदा तआ़ला का फ़ज़्ल व करम तुम पर न होता तो तुम में कोई पाक न होता। एक और आयत में है:

قَدْاَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى.

वह फ़लाह (कामयाबी) पा गया जिसने पाकीज़गी की।

ज़कात को भी ज़कात इसी लिये कहा जाता है कि वह माल को पाक और स्वच्छ कर देती है। दूसरा क़ौल यह है कि मुराद बहुत सारा खाना लाने से है, जैसे खेती के बढ़ जाने के वक़्त अ़रब के लोग कहते हैं:

زَكَاالزَّرْعُ.

कि खेती बहुत हो गयी। और जैसे शायर का क़ौल है:

قَبَائِلُنَاسَبْعٌ وَاَنْتُمْ ثَلٰثَةٌ ☆ وَالسَّبْعُ اَزْكٰى مِنْ ثَلَاثٍ وَّاَطْيَب.

कि हमारे सात क़बीले हैं और तुम्हारे तीन, और सात तीन के मुक़ाबले में ज़्यादा और बेहतर हैं।

पस यहाँ भी यह लफ़्ज़ ज़्यादती और अधिकता के मायने में है, लेकिन पहला क़ौल ही सही है इसलिये कि अस्हाब-ए-कहफ़ का मक़सद इस क़ौल से हलाल चीज़ का लाना था चाहे वह ज़्यादा हो या कम। कहते हैं कि जाने वाले को बहुत एहतियात बरतनी चाहिये, आने जाने और सौदा ख़रीदने में होशियारी से काम ले, जहाँ तक हो सके लोगों की निगाहों में न आये, देखो ऐसा न हो कि कोई उसे जान ले। अगर उन्हें इल्म हो गया तो फिर ख़ैर नहीं, दक़ियानूस के आदमी अगर तुम्हारी जगह की ख़बर पा गये तो वे तरह-तरह की सख़्त सज़ायें तुम्हें देंगे कि या तो तुम उनसे घबराकर दीने हक़ छोड़कर फिर से काफ़िर बन जाओ या यह कि वे उन्हीं सज़ाओं में तुम्हारा काम ही ख़त्म कर दें। अगर तुम उनके दीन में जा मिले तो समझ लो कि तुम ईमान से दूर और ख़ारिज हो गये, फिर ख़ुदा के यहाँ की निजात तुम्हारे लिये नामुम्किन हो जायेगी।

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۭ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ○

और इसी तरह हमने (लोगों को) उन पर मुत्तला कर दिया, ताकि वे लोग इस बात का यक़ीन कर लें कि अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं। (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकि (उस ज़माने के लोग) उनके मामले में आपस में झगड़ रहे थे, सो उन लोगों ने कहा कि उनके पास कोई इमारत बनवा दो, उनका रब उनको ख़ूब जानता था। जो लोग अपने काम पर ग़ालिब थे उन्होंने कहा कि हम तो उनके पास एक मस्जिद बना देंगे। (21)

Maktab E Ashraf

क़ियामत यक़ीनी चीज़ है

इरशाद है कि इसी तरह हमने अपनी क़ुदरत से लोगों को उनके हाल की ख़बर दी ताकि ख़ुदा के वादे और क़ियामत के आने की सच्चाई का उन्हें इल्म हो जाये। कहते हैं कि उस ज़माने में वहाँ के लोगों को क़ियामत के आने में कुछ शंकायें और शुब्हात पैदा हो गये थे। एक जमाअ़त तो कहती थी कि सिर्फ़ रूहें दोबारा उठेंगी जिस्म को न उठाया जायेगा। पस अल्लाह तआ़ला ने सदियों बाद अस्हाब-ए-कहफ़ को जगाकर क़ियामत के होने और जिस्मों के दोबारा ज़िन्दा होने की हक़ीक़त वाज़ेह कर दी और आँखों से दिखाई देने वाली दलील क़ायम कर दी।

ज़िक्र किया गया है कि जब उनमें से एक आदमी दाम लेकर सौदा ख़रीदने ग़ार से बाहर निकला तो देखा कि उनकी देखी हुई एक चीज़ भी नहीं, सारा नक़्शा ही बदला हुआ है। उस शहर का नाम अफ़्सोस था, ज़माने गुज़र चुके थे, बस्तियाँ बदल चुकी थीं, सदियाँ बीत गयी थीं और यह तो अपने नज़दीक यही समझे हुए थे कि हमें यहाँ पहुँचे एक-आध दिन गुज़रा है। यहाँ ज़माने के उलट-फेर के हाथों हाल ही बदल गया था, जैसा कि किसी ने कहा है:

أَمَّا الدِّيَارُ فَإِنَّهَا كَدِيَارِهِمْ ☆ وَأَرَى رِجَالَ الْحَيِّ غَيْرَ رِجَالِهِ.

कि घर अगरचे उन्हीं जैसे हैं लेकिन क़बीले के लोग तो सब और ही हैं।

उसने देखा कि न तो शहर की कोई चीज़ अपने हाल पर है न शहर का एक रहने वाला जान पहचान का है, न यह किसी को जानें न इन्हें और कोई पहचाने। तमाम आ़म ख़ास और ही हैं। यह अपने दिल में हैरान था, दिमाग़ चकरा रहा था कि कल शाम हम इस शहर को छोड़कर गये हैं, यह अचानक क्या हो गया। हर चन्द सोचता था कोई बात समझ में न आती थी। आख़िर ख़्याल करने लगा कि शायद मैं मजनूँ हो गया हूँ या मेरे हवास ठिकाने नहीं रहे, या मुझे कोई रोग लग गया है, या मैं ख़्वाब में हूँ लेकिन कोई बात ऐसी भी नज़र न आती थी इसलिये इरादा कर लिया कि मुझे सौदा लेकर इस शहर को छोड़ देना चाहिये। एक दुकान पर जाकर उसे दाम दिये और खाने पीने का सामान तलब किया। दुकानदार ने उस सिक्के को देखकर बहुत ही ताज्जुब का इज़हार किया और उसे अपने पड़ोसी को दिया कि यहाँ देखना यह सिक्का कैसा है? कब का है? किस ज़माने का है? उसने दूसरे को दिया, उससे किसी और ने देखने को माँग लिया, ग़र्ज़ कि वह तो एक तमाशा बन गया, हर ज़बान से यही निकलने लगा कि इसने किसी पुराने ज़माने का ख़ज़ाना पाया है, यह उसमें से लाया है, इससे पूछो यह कहाँ का है? कौन है? यह सिक्का कहाँ से पाया? चुनाँचे लोगों ने उसे घेर लिया, मजमा लगाकर खड़े हो गये और उल्टे सीधे सवालात शुरू कर दिये। उसने कहा मैं तो इसी शहर का रहने वाला हूँ, कल शाम को मैं यहाँ से गया था, यहाँ का बादशाह दक़ियानूस है। अब तो सबने क़हक़हा लगाकर (ज़ोर से हंसकर) कहा भई! यह तो कोई पागल आदमी है। आख़िर उसे बादशाह के सामने पेश किया, उससे सवालात हुए उसने तमाम हाल कह सुनाया।

अब एक तरफ़ बादशाह और दूसरे सब लोग हैरान, दूसरी तरफ़ यह ख़ुद हैरान व परेशान। आख़िर सब लोग उनके साथ हुए कि अच्छा हमें अपने और साथी दिखाओ और अपना ग़ार भी दिखा दो। यह उन्हें लेकर चले ग़ार के पास पहुँचकर कहा तुम ज़रा ठहरो, मैं पहले उन्हें जाकर ख़बर कर दूँ। उनके अलग हटते ही अल्लाह तआ़ला ने उन पर बेख़बरी के पर्दे डाल दिये, उन्हें मालूम न हो सका कि वह कहाँ गया?

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला ने फिर इस राज़ को छुपा लिया। एक रिवायत में यह भी आया है कि लोग मय बादशाह के गये, उनसे मिले, सलाम दुआ़ हुई, गले मिले। यह बादशाह मुसलमान था। उसका नाम तन्दूसीस था। अस्हाब-ए-कहफ़ उनसे मिलकर बहुत ख़ुश हुए और मुहब्बत व उन्सियत से मिले-जुले, बातें कीं, फिर वापस जाकर अपनी-अपनी जगह जा लैटे, फिर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फ़ौत कर लिया। वल्लाहु आलम।

कहते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. हबीब बिन मुस्लिमा के साथ एक जंग में थे, वहाँ उन्होंने रोम के शहरों में एक ग़ार (गुफ़ा) देखा जिसमें हड्डियाँ थीं। लोगों ने कहा ये हड्डियाँ अस्हाब-ए-कहफ़ की हैं। आपने फ़रमाया तीन सौ साल गुज़र चुके कि उनकी हड्डियाँ खोखली होकर मिट्टी हो गयीं। (इब्ने जरीर) पस फ़रमाता है कि जैसे हमने उन्हें अनोखे अन्दाज़ में सुलाया और बिल्कुल अनोखे अन्दाज़ पर जगाया, इसी तरह बिल्कुल अनोखे तर्ज़ पर शहर वालों को उनके हालात से अवगत कराया ताकि उन्हें ख़ुदा तआ़ला के वादों के सच्चा होने का इल्म हो जाये और क़ियामत के आने और उसके बर्हक़ होने में उन्हें कोई शक न रहे। उस वक़्त वे आपस में मतभेद में थे, लड़-झगड़ रहे थे, बाज़ क़ियामत के क़ायल थे बाज़ इनकारी थे। पस अस्हाब-ए-कहफ़ का ज़ाहिर होना क़ियामत का इनकार करने वालों पर हुज्जत और मानने वालों के लिये दलील बन गया। अब उस बस्ती वालों का इरादा हुआ कि उनके ग़ार का मुँह बन्द कर दिया जाये और उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया जाये। जिन्हें माल व सत्ता हासिल था उन्होंने इरादा किया कि हम तो उनके इर्द-गिर्द मस्जिद बना लेंगे। इमाम इब्ने जरीर उन लोगों के बारे में दो क़ौल नक़ल करते हैं, एक यह कि उनमें से मुसलमानों ने यह कहा था, दूसरे यह कि यह क़ौल काफ़िरों का था। वल्लाहु आलम। लेकिन बज़ाहिर मालूम होता है कि इसके क़ायल मुसलमान थे, हाँ यह बात और है कि उनका यह कहना अच्छा था या बुरा, तो इस बारे में साफ़ हदीस मौजूद है, रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह यहूदियों व ईसाईयों पर लानत फ़रमाये कि उन्होंने अपने अम्बिया और औलिया (अल्लाह के नेक बन्दों) की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया। जो उन्होंने किया उससे आप अपनी उम्मत को बचाना चाहते थे। इसी लिये हज़रत अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. की ख़िलाफ़त (हुकूमत) के ज़माने में जब हज़रत दानियाल की क़ब्र इराक़ में पाई गयी तो आपने फ़रमाया कि उसे लोगों से छुपा दिया जाये और जो तहरीर मिली है उसमें बाज़ लड़ाईयों वग़ैरह का ज़िक्र है, उसे दफ़न कर दिया जाये।

سَيَقُولُونَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا ۢ بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ

(कुछ लोग तो) कहेंगे कि वे तीन हैं चौथा उनका कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे कि वे पाँच हैं छठा उनका कुत्ता है, (और) ये लोग बिना छाने-फटके बात को हाँक रहे हैं, और (कुछ) कहेंगे कि वे सात हैं आठवाँ उनका कुत्ता है, आप कह दीजिए कि मेरा रब उनकी गिनती ख़ूब (सही-सही) जानता है, उन (की गिनती) को बहुत कम लोग जानते हैं1 सो आप उनके बारे में सरसरी बहस के अ़लावा ज़्यादा बहस न कीजिए, और आप उनके बारे में उन लोगों में

से किसी से भी न पूछिए। (22)	فِيهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ۝

ع ٣ ١٥

Maktab E Ashraf

बेकार की बहसें

लोग अस्हाब-ए-कहफ़ की संख्या के बारे में कुछ का कुछ कहा करते थे, तीन क़िस्म के लोग थे, चौथी गिनती बयान नहीं फ़रमाई, दो पहले के अक़्वाल को तो ज़ईफ़ (कमज़ोर) कर दिया कि ये अटकल में हैं, बेनिशाने के पत्थर हैं कि अगर कहीं लग जायें तो कमाल नहीं, न लगें तो ज़वाल नहीं। हाँ तीसरा क़ौल बयान फ़रमाकर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमायी, उसको रद्द नहीं किया, यानी सात वे और आठवाँ उनका कुत्ता। इससे तो मालूम होता है कि यही बात सही है और वास्तव में यूँ ही है।

फिर इरशाद होता है कि ऐसे मौक़े पर बेहतर यही है कि इल्म ख़ुदा की तरफ़ उसे लौटा दिया जाये। ऐसी बातों में बावजूद कोई सही इल्म न होने के छान-बीन करना बेकार है, जिस बात का इल्म हो जाये वही मुँह से निकाले वरना ख़ामोश रहे। उनकी गिनती का सही इल्म बहुत कम लोगों को है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं उन्ही में से हूँ। मैं जानता हूँ वे सात थे। हज़रत अ़ता ख़ुरासानी का क़ौल भी यही है और यही हमने पहले लिखा था। उनमें बाज़ तो बहुत ही कम-उम्र थे, नौजवानी में थे, ये लोग दिन रात अल्लाह की इबादत में मशग़ूल रहते थे, रोते रहते थे और अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद करते थे। मन्क़ूल है कि उनमें जो सबसे बड़े थे उनका नाम मक्सलमीना था, उसी ने बादशाह से बातें की थीं और उसे एक ख़ुदा की इबादत की दावत दी थी। बाक़ी के नाम ये हैं- तमलीख़ा, मरतूनस, कश्तूनस, बेरूनस, देमूस, बतूनस और क़ालूश। हाँ इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की सही रिवायत यही है कि ये सात शख़्स थे। आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ से भी यही मालूम होता है।

शुऐब जबाई कहते हैं कि उनके कुत्ते का नाम हुमरान था, लेकिन इस नाम का सही होना क़ाबिले ग़ौर है। वल्लाहु आलम। इनमें की बहुत सी चीज़ें अहले किताब से ली हुई हैं। फिर अपने नबी सल्ल. से इरशाद फ़रमाया कि आप उनके बारे में ज़्यादा बहस व मुबाहसा न करें। यह एक निहायत ही हल्का काम है जिसमें कोई बड़ा फ़ायदा नहीं, और न उनके बारे में किसी से दरियाफ़्त कीजिए क्योंकि उमूमन वे अपने ही से जोड़कर बात कहते हैं, कोई सही और सच्ची दलील उनके पास नहीं और ख़ुदा तआ़ला ने जो कुछ आपके सामने बयान फ़रमाया है यह झूठ से पाक है, बेशक वह शुब्हे से दूर है, ईमान व यक़ीन के क़ाबिल है, बस यही हक़ है और सबसे मुक़द्दम (पहले) है।

और आप किसी काम के बारे में यूँ न कहा कीजिए कि मैं इसको कल कर दूँगा। (23) मगर ख़ुदा तआ़ला के चाहने को मिला दिया कीजिए, और जब आप भूल जाएँ तो अपने रब का ज़िक्र कीजिए और कह दीजिए कि मुझको उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (नुबुव्वत की) दलील बनने के एतिबार से इससे भी नज़दीकी बात बतला दे। (24)	وَلَا تَقُولَنَّ لِشَاىْءٍ اِنِّىْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ۝ اِلَّا اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّىْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۝

Mahtab E Ashraf

एक तंबीह

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने आख़िरी नबी सल्ल. से इरशाद फ़रमाता है कि जिस काम को कल करना चाहो तो यूँ न कह दिया करो कि "कल करूँगा" बल्कि इसके साथ इन्शा-अल्लाह कह लिया करो। क्योंकि कल क्या होगा इसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही को है जो ग़ैब का जानने वाला और तमाम चीज़ों पर क़ादिर सिर्फ़ वही है, उसकी मदद तलब कर लिया करो। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- हज़रत सुलैमान बिन दाऊद अ़लैहिस्सलाम की नब्बे बीवियाँ थीं। एक रिवायत में है कि सौ थीं, एक मैं है कि बहत्तर थीं। तो आपने एक बार कहा कि आज रात मैं उन सबके पास जाऊँगा, हर औ़रत के बच्चा होगा तो वे राहे ख़ुदा में जिहाद करेंगे। उस वक़्त फ़रिश्ते ने कहा कि इन्शा-अल्लाह कह लो मगर हज़रत सुलैमान ने न कहा। अपने इरादे के मुताबिक़ वह सब बीवियों के पास गये मगर सिवाय एक बीवी के किसी के यहाँ बच्चा न हुआ और जिस एक के यहाँ हुआ वह भी आधे जिस्म का था। हुज़ूरे पाक सल्ल. फ़रमाते हैं कि उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है अगर वह इन्शा-अल्लाह कह लेते तो उनका यह इरादा पूरा होता और उनकी तमन्ना पूरी होती, और ये सब बच्चे जवान होकर राहे ख़ुदा में मुजाहिद बनते।

इसी सूरत की तफ़सीर के शुरू में इस आयत का शाने नुज़ूल बयान हो चुका है कि जब आपसे अस्हाब-ए-कहफ़ का क़िस्सा मालूम किया गया तो आपने फ़रमाया कि मैं कल तुम्हें जवाब दूँगा, इन्शा-अल्लाह न कहा। इस बिना पर पन्द्रह दिन तक 'वही' नाज़िल न हुई। इस हदीस को पूरी तरह हमने इस सूरत की तफ़सीर के शुरू में बयान कर दिया है, यहाँ दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। फिर बयान फ़रमाता है कि जब भूल जाये तो अपने रब को याद कर। यानी इन्शा-अल्लाह कहना अगर मौक़े पर याद न आया तो जब याद आये कह लिया कर। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. उस शख़्स के बारे में फ़रमाते हैं जो हलफ़ उठाये और क़सम उठाये कि उसे फिर भी इन्शा-अल्लाह कहने का हक़ है अगरचे साल भर गुज़र चुका हो। इसका यह मतलब नहीं कि अब उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा नहीं रहेगा और उसे क़सम तोड़ने का इख़्तियार है। यही मतलब उस क़ौल का है जो इमाम इब्ने जरीर रह. ने बयान फ़रमाया है, और यही बिल्कुल ठीक है, इसी पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का कलाम महमूल किया जा सकता है। उनसे और हज़रत मुजाहिद से मन्क़ूल है कि इन्शा-अल्लाह कहना भूल जाना मुराद है। एक और रिवायत में इसके बाद यह भी है कि यह मख़्सूस है हुज़ूरे पाक सल्ल. के साथ, दूसरा कोई अगर अपनी क़सम के साथ ही फ़ौरन इन्शा-अल्लाह कहे तो मोतबर है। एक मतलब यह भी है कि जब कोई बात भूल जाओ तो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करो, क्योंकि भूल शैतानी हरकत है और ज़िक्रे ख़ुदा याद का ज़रिया है। फिर फ़रमाया कि तुझसे किसी ऐसी बात का सवाल किया जाये कि तुझे उसका इल्म न हो तो अल्लाह तआ़ला से मालूम किया कर और उसकी तरफ़ तवज्जोह कर, ताकि वह तुझे ठीक बात और हिदायत वाली राह बता और दिखा दे। इसमें और भी अक़वाल हैं। वल्लाहु आलम।

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَٰثَ مِائَةٍ سِنِينَ
وَازْدَادُوا تِسْعًا ۝ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا

और वे लोग अपने ग़ार में (नींद की हालत में) तीन सौ वर्ष तक रहे, और नौ वर्ष ऊपर और रहे। (25) आप कह दीजिए कि अल्लाह

لَبِثُوْا ۚ لَـهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ؗ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ۝	तआला उनके रहने (की मुद्दत) को ज़्यादा जानता है, तमाम आसमानों और ज़मीन का ग़ैब (का इल्म) उसी को है, वह कैसा कुछ देखने वाला और कैसा कुछ सुनने वाला है। उनका अल्लाह तआला के सिवा कोई भी मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने हुक्म में शरीक करता है। (26)

अस्हाब-ए-कहफ़ के ग़ार में ठहरने की मुद्दत

अल्लाह तआला अपने नबी को उस मुद्दत की ख़बर देता है जो अस्हाब-ए-कहफ़ ने अपने सोने के ज़माने में गुज़ारी कि वह मुद्दत सूरज के हिसाब से तीन सौ साल की थी और चाँद के हिसाब से तीन सौ नौ साल की थी। वास्तव में सूरज और चाँद के हिसाब में हर सौ साल पर तीन साल का फ़र्क़ पड़ता है। इसी लिये तीन सौ अलग बयान करके फिर नौ अलग बयान किये।

फिर फ़रमाता है कि जब तुझसे उनके सोने की मुद्दत दरियाफ़्त की जाये और तेरे पास इसका कुछ इल्म न हो और न ख़ुदा ने तुझे वाक़िफ़ किया हो तो तू आगे न बढ़, बल्कि ऐसे मामलों में यह जवाब दिया कर कि अल्लाह तआला ही को सही इल्म है। आसमान व ज़मीन का ग़ैब वही जानता है, हाँ जिसे वह जो बात बता दे वह जान लेता है। क़तादा रह. कहते हैं कि यह क़ौल कि वे तीन सौ साल ठहरे थे अहले किताब का है, ख़ुदा तआला ने इसकी तरदीद की है और फ़रमाया कि अल्लाह ही को उसका पूरा इल्म है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से भी इस मायने की क़िराअत मन्क़ूल है लेकिन क़तादा रह. का यह क़ौल ग़ौर-तलब है, इसलिये कि अहले किताब के यहाँ सूरज के हिसाब से साल का रिवाज है और वे तीन सौ साल मानते हैं, तीन सौ नौ उनका क़ौल नहीं। अगर उन्हीं का क़ौल नक़ल होता तो फिर ख़ुदा तआला यह न फ़रमाता और नौ साल ज़्यादा किये। बज़ाहिर तो यही ठीक मालूम होता है कि ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला इस बात की ख़बर दे रहा है न कि किसी का क़ौल बयान फ़रमाता है, यही इमाम इब्ने जरीर ने इख़्तियार किया है। क़तादा रह. की रिवायत और इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत दोनों मुन्क़ता (सनद में निरंतर नहीं) हैं, फिर वे अपने क़ौल में तन्हा भी हैं। जमहूर उलेमा की क़िराअत वही है जो क़ुरआनों में है, पस वह ग़ैर-मशहूर क़ौल इस क़ाबिल नहीं कि उसको दलील बनाया जा सके। वल्लाहु आलम।

अल्लाह तआला अपने बन्दों को ख़ूब देख रहा है और उनकी आवाज़ को ख़ूब सुन रहा है, इन अलफ़ाज़ में तारीफ़ का मुबालग़ा है और इन दोनों लफ़्ज़ों में तारीफ़ का मुबालग़ा (ज़्यादती) है, यानी वह ख़ूब सुनने और देखने वाला है हर मौजूद चीज़ को देख रहा है, और हर आवाज़ को सुन रहा है, कोई काम कोई कलाम उससे छुपा नहीं, कोई उससे ज़्यादा सुनने देखने वाला नहीं। सबके अ़मल देख रहा है, सबकी बातें सुन रहा है, हर चीज़ को अपने हुक्म व इरादे से पैदा करने और बनाने वाला वही है। कोई उसके फ़रमान को रोक नहीं सकता, कोई उसका वज़ीर और मददगार नहीं, न कोई शरीक और सलाहकार है, वह इन तमाम कमियों से पाक है, इन तमाम नुक़सानात से दूर है।

Maktab E Ashraf

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ۝

और आपके पास जो आपके रब की किताब 'वही' के ज़रिये से आई है, (लोगों के सामने) पढ़ दिया कीजिए, उसकी बातों को (यानी वायदों को) कोई बदल नहीं सकता, और आप अल्लाह तआला के सिवा और कोई पनाह की जगह न पाएँगे। (27) और आप अपने को उन लोगों के साथ रोके रखा कीजिए जो सुबह व शाम (यानी हमेशा) अपने रब की इबादत सिर्फ़ उसकी ख़ुशी हासिल करने के लिए करते हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक़ के ख़्याल से आपकी आँखें (यानी तवज्जोह) उनसे हटने न पाएँ। और ऐसे शख़्स का कहना न मानिए जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है, और वह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पर चलता है, और उसका (यह) हाल हद से गुज़र गया है। (28)

अल्लाह के पैग़ाम का प्रचार व प्रसार

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल सल्ल. को अपने कलाम की तिलावत और उसकी तब्लीग़ की हिदायत करता है। उसके कलिमात को न कोई बदल सकता है न टाल सकता, न इधर उधर कर सकता है, समझ ले कि उसके अ़लावा कहीं और पनाह की जगह नहीं। अगर तिलावत व तब्लीग़ छोड़ दी तो फिर बचने की कोई सूरत नहीं। जैसे दूसरी जगह फ़रमाया कि ऐ रसूल! जो कुछ तेरी तरफ़ तेरे रब की जानिब से उतरा है उसकी तब्लीग़ करता रह, अगर न की तो तूने रिसालत का हक़ अदा नहीं किया, लोगों के शर (बुराई) से ख़ुदा तुझे बचाये रखेगा।

एक और आयत में है:

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ....... الخ.

यानी ख़ुदा तआ़ला तुझसे तेरे मन्सब (ज़िम्मेदारी) के बारे में क़ियामत के दिन ज़रूर सवाल करेगा।

अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र, उसकी तस्बीह, हम्द व बड़ाई और बुज़ुर्गी बयान करने वालों के पास बैठा रहा कर, जो सुबह व शाम अल्लाह की याद में लगे रहते हैं चाहे वे फ़क़ीर हों चाहे अमीर, चाहे कम-दर्जे के हों चाहे बड़े दर्जे के, चाहे ताक़तवर हों चाहे कमज़ोर। क़ुरैश ने हुज़ूर सल्ल. से दरख़्वास्त की थी कि आप छोटे लोगों की मज्लिस में न बैठा करें जैसे बिलाल, अ़म्मार, सुहैब, ख़ब्बाब, इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) वग़ैरह, और हमारी मज्लिसों में बैठा करें। पस अल्लाह तआ़ला ने आपको उनकी दरख़्वास्त रद्द करने का हुक्म फ़रमाया, जैसा कि दूसरी आयत में है:

Maktab E Ashraf

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ..... الخ.

यानी सुबह व शाम अल्लाह की याद करने वालों को अपनी मज्लिस से न हटा।

सही मुस्लिम में है कि हम छह शख़्स ग़रीब-गुरबा हुज़ूर सल्ल. की मज्लिस में बैठे हुए थे- सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास, इब्ने मसऊद, क़बीला-ए-हुज़ैल का एक शख़्स, बिलाल और दो आदमी और। इतने में मुश्रिकों में के कुछ बड़े और सम्मानित लोग आये और कहने लगे इन्हें अपनी मज्लिस में इस जुर्रत के साथ न बैठने दो। ख़ुदा ही बेहतर जानता है कि हुज़ूर सल्ल. के जी में क्या आया, जो उसी वक़्त यह आयतः

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ..... الخ.

उतरी। मुस्नद अहमद में है कि एक वाअ़िज़ (बयान करने वाला) क़िस्सा बयान कर रहा था कि हुज़ूर सल्ल. तशरीफ़ लाये, वह ख़ामोश हो गया तो आपने फ़रमाया तुम बयान करते रहो मैं तो सुबह की नमाज़ से लेकर सूरज के निकलने तक इसी मज्लिस में बैठा रहूँ तो अपने लिये चार ग़ुलाम आज़ाद करने से बेहतर समझता हूँ। एक और हदीस में है कि आप सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं ऐसी मज्लिस में बैठ जाऊँ यह मुझे चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब (पसन्दीदा) है। अबू दाऊद तियालिसी में है कि अल्लाह का ज़िक्र करने वालों के साथ सुबह की नमाज़ से सूरज निकलने तक बैठ जाना मुझे तो तमाम दुनिया से ज़्यादा महबूब और नमाज़े अ़सर के बाद से सूरज के छुपने तक अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करना मुझे आठ ग़ुलामों के आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्दीदा है, अगरचे वे ग़ुलाम इस्माईल की औलाद से भी महंगे और क़ीमती क्यों न हों, चाहे उनमें से एक-एक की दियत बारह हज़ार क्यों न हो, जिसकी मजमूई क़ीमत छियानवे हज़ार की हुई। बाज़ लोग चार ग़ुलाम बतलाते हैं, लेकिन हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि वल्लाह हुज़ूर सल्ल. ने आठ ग़ुलाम फ़रमाये हैं।

बज़्ज़ार में है कि हुज़ूर सल्ल. आये, एक साहिब सूरः कहफ़ की क़िराअत कर रहे थे, आपको देखकर ख़ामोश हो गये तो आपने फ़रमाया यही उन लोगों की मज्लिस है जहाँ अपने नफ़्स को रोके रखने का मुझे अल्लाह का हुक्म हुआ है। एक और रिवायत में है कि या तो सूरः हज की तिलावत कर रहे थे या सूरः कहफ़ की। मुस्नद अहमद में है, फ़रमाते हैं कि अल्लाह के ज़िक्र के लिये जो मज्लिस जमा हो, नीयत भी उनकी अच्छी हो तो आसमान से मुनादी करने वाला आवाज़ लगाता है कि उठो अल्लाह ने तुम्हें बख़्श दिया, तुम्हारी बुराईयाँ भलाईयों से बदल दी गयीं। तबरानी में है कि जब यह आयत उतरी आप अपने किसी घर में थे, उसी वक़्त ऐसे लोगों की तलाश में निकले, कुछ लोगों को अल्लाह के ज़िक्र में पाया जिनके बाल बिखरे हुए थे, खालें ख़ुश्क थीं, मुश्किल से एक-एक कपड़ा उन्हीं हासिल था, फ़ौरन उनकी मज्लिस में बैठ गये और कहने लगे अल्लाह का शुक्र है कि उसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग रखे हैं जिनके साथ बैठने का मुझे हुक्म हुआ है।

फिर फ़रमाता है कि उनसे तेरी आँखें आगे न बढ़ें, इन यादे ख़ुदा करने वालों को छोड़कर मालदारों की तलाश में न लग जाना जो दीन से बरगश्ता हैं, जो इबादत से दूर हैं, जिनकी बुराईयाँ बढ़ गयी हैं, जिनके आमाल बुरे हैं, तुम उनकी पैरवी न करना, उनके तरीक़े को पसन्द न करना, उन पर रश्क (ईर्ष्या) न करना, उन पर रश्क भरी निगाहें न डालना, उनकी नेमतें ललचाई नज़रों से न देखना। जैसा कि एक दूसरी जगह अल्लाह का फ़रमान हैः

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا........ الخ.

कि हमने उन्हें जो दुनियावी ऐश व आराम दे रखा है यह सिर्फ़ उनकी आज़माईश के लिये है, तू लालच व हिर्स की निगाहों से उन्हें न देखना। दर असल तेरे रब के पास की रोज़ी बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۗ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ۗ بِئْسَ الشَّرَابُ ۗ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ○	और आप कह दीजिए कि (यह दीने) हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से (आया) है, सो जिसका जी चाहे ईमान ले आए और जिसका जी चाहे काफ़िर रहे, बेशक हमने ऐसे ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, कि उस (आग) की क़नातें उनको घेरे होंगी। और अगर (प्यास से) फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद को पूरा किया जाएगा जो तेल की तलछट की तरह होगा, मुँहों को भून डालेगा, क्या ही बुरा पानी होगा और (दोज़ख़ भी) क्या ही बुरी जगह होगी। (29)

अब तुम जो चाहो करो

जो कुछ मैं अपने रब के पास से लाया हूँ वही हक़ और सच्चाई है, शक व शुब्हे से बिल्कुल ख़ाली, अब जिसका जी चाहे माने या न माने, न मानने वालों के लिये जहन्नम की आग तैयार है, जिसकी चार दीवारी के जेलख़ाने में ये बेबस होंगे।

हदीस में है कि जहन्नम की चार दीवारी की लम्बाई चालीस-चालीस साल की दूरी की है। (मुस्नद अहमद) और ख़ुद वे दीवारें भी आग की हैं। एक और रिवायत में है समुद्र भी जहन्नम है, पस इस आयत की तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया अल्लाह की क़सम मैं उसमें न जाऊँ जब तक भी ज़िन्दा रहूँ और न उसका कोई क़तरा मुझे पहुँचे। "मुह्ल" कहते हैं ग़लीज़ (गाढ़े) पानी को जैसे ज़ैतून के तेल की तलछट और जैसे ख़ून और पीप जो बेहद गर्म हो। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. ने एक बार सोना पिघलाया जब वह पानी जैसा हो गया और जोश मारने लगा फ़रमाया 'मुह्ल' की मुशाबहत इसमें है। जहन्नम का पानी भी स्याह है, वह ख़ुद भी स्याह है, जहन्नमी भी स्याह हैं। 'मुह्ल' स्याह रंग की, बदबूदार, ग़लीज़ गन्दगी सख़्त गर्म चीज़ है, चेहरे के पास जाते ही खाल झुलस देती है, मुँह जला देती है। मुस्नद अहमद में है कि काफ़िर के मुँह के पास जाते ही उसके चेहरे की खाल झुलस कर उसमें आ पड़ेगी। क़ुरआन में है कि उनको पीप पिलाई जायेगी जो मुश्किल से उनके हलक़ से उतरेगी, चेहरे के पास आते ही खाल जलकर गिर पड़ेगी, पीते ही आँतें कट जायेंगी, उनकी हाय-वाय शोर व गुल पर यह पानी उनको दिया जायेगा। भूख की शिकायत पर ज़क़्क़ूम का पेड़ दिया जायेगा, जिससे उनकी खालें इस तरह जिस्म छोड़कर उतर जायेंगी कि उनका पहचानने वाला उन खालों को देखकर भी पहचान ले, फिर प्यास की शिकायत पर सख़्त गर्म खौलता हुआ पानी मिलेगा, जो मुँह के पास पहुँचते ही तमाम गोश्त को भून डालेगा। हाय क्या बुरा पानी है, उनको वह गर्म पानी पिलाया जायेगा जो उनकी आँतें काट देगा, सख़्त गर्म बहते हुए नाले से उन्हें पानी पिलाया जायेगा।

Maktab E Ashraf

उनका ठिकाना, उनकी मन्ज़िल, उनका घर, उनके आराम की जगह भी निहायत बुरी है। जैसे एक और आयत में है:

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا.

कि वह बड़ी बुरी जगह और बेहद कठिन मन्ज़िल है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۚ ع ٩ ١٦

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसों का बदला बरबाद न करेंगे जो अच्छी तरह काम को करे। (30) (पस) ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, उनके (ठिकानों के) नीचे नहरें बहती होंगी, उनको वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और हरे रंग के कपड़े बारीक और मोटे रेशम के पहनेंगे, वहाँ मसेहरियों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी जगह है। (31)

अच्छे अ़मल का अच्छा नतीजा

ऊपर बदकारों और बुरे अ़मल वालों का हाल और क़ौल बयान फ़रमाया, अब नेकों का आग़ाज़ व अन्जाम बयान हो रहा है जो खुदा, रसूल और अल्लाह की किताब के मानने वाले, नेक अ़मल करने वाले होते हैं। उनके लिये हमेशा की जन्नतें हैं, उनके बालाख़ानों (चौबारों) और बाग़ात के नीचे नहरें बह रही हैं। उन्हें ज़ेवरात ख़ुसूसन सोने के कंगन पहनाये जायेंगे, उनका लिबास वहाँ ख़ालिस रेशम का होगा, नर्म बारीक और नर्म मोटे रेशम का लिबास होगा। ये आराम से शाहाना शान से मस्नदों पर जो तख़्तों पर होंगे तकिया लगाये बैठे होंगे। कहा गया है कि लेटने वाले होंगे। चार ज़ानू (आलती-पालती मारकर) बैठने का नाम भी "इत्तिका" है, मुम्किन है यहाँ भी यही मुराद हो। चुनाँचे हदीस में है कि "इत्तिका" करके खाना नहीं खाता। इसमें भी यही दो क़ौल हैं। क्या ही अच्छा बदला है और कितनी अच्छी व आरामदेह जगह है। इसके विपरीत दोज़ख़ियों को देखिये कि वे कितनी बुरी सज़ा और बुरी जगह में हैं। सूरः फ़ुरक़ान में भी इन्हीं दोनों गिरोहों का इसी तरह तुलनात्मक बयान है।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۚ كِلْتَا

और आप उन लोगों से दो शख़्सों का हाल बयान कीजिए। उन दो शख़्सों में से एक को हमने दो बाग़ अंगूर के दे रखे थे, और उन दोनों (बाग़ों) का खजूर के पेड़ों से घेरा बना रखा था, और उन दोनों के दरमियान में खेती

Maktab E Ashraf

الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۝ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝

भी लगा रखी थी। (32) (और) दोनों बाग़ अपना पूरा फल देते थे, और किसी के फल में ज़रा भी कमी न रहती थी, और उन दोनों के दरमियान में नहर चला रखी थी। (33) और उस शख़्स के पास (और भी) मालदारी का सामान था, सो वह (एक बार) अपने उस (दूसरे) मुलाक़ाती से इधर-उधर की बातें करते-करते कहने लगा कि मैं तुझसे माल में भी ज़्यादा हूँ और मजमा भी मेरा ज़बरदस्त है। (34) और वह अपने ऊपर (कुफ़्र का) जुर्म क़ायम करता हुआ अपने बाग़ में पहुँचा, (और) कहने लगा कि मेरा तो ख़्याल नहीं है कि यह (बाग़ मेरी ज़िन्दगी में) कभी भी बरबाद हो। (35) और मैं क़ियामत को नहीं ख़्याल करता कि आएगी, और अगर मैं अपने रब के पास पहुँचाया गया तो ज़रूर इस (बाग़) से बहुत ज़्यादा अच्छी जगह मुझको मिलेगी। (36)

एक वाकिआ

चूँकि ऊपर मिस्कीन (ग़रीब) मुसलमानों और मालदार काफ़िरों का ज़िक्र हुआ था, यहाँ उनकी एक मिसाल बयान की जाती है कि दो शख़्स थे जिनमें से एक मालदार था, अंगूरों के बाग़, इर्द गिर्द खजूरों के पेड़ बीच में खेती सब्ज़ फल-फूल भरपूर, नुक़सान किसी क़िस्म का नहीं, इधर उधर नहरें जारी। उसके पास हर वक़्त तरह-तरह की पैदावार मौजूद।

यह मालदार शख़्स एक दिन अपने एक दोस्त से फ़ख़्र व ग़ुरूर करते हुए कहने लगा कि मैं मालदारी में, इज़्ज़त व औलाद में, रुतबे और शान में, नौकर चाकर में तुझसे ज़्यादा हैसियत वाला हूँ। एक फ़ाजिर (बुराईयों में फंसे) शख़्स की तमन्ना यही होती है कि दुनिया की ये चीज़ें उसके पास ख़ूब ज़्यादा हों। यह अपने बाग़ में गया अपनी जान पर ज़ुल्म करता हुआ, यानी तकब्बुर व ग़ुरूर, क़ियामत का इनकार और कुफ़्र करता हुआ। इस क़द्र मस्त था कि उसकी ज़बान से बेइख़्तियार यह निकला कि नामुम्किन है मेरी यह लहलहाती खेतियाँ, यह फलदार पेड़, ये जारी नहरें, ये हरी-भरी बेलें कभी फ़ना हो जायें। हक़ीक़त में यही उसकी कम-अक़्ली, ईमान से दूरी, दुनिया की ख़रमस्ती और ख़ुदा के साथ कुफ़्र की वजह थी। इसी लिये कह रहा है कि मेरे ख़्याल से तो क़ियामत आने वाली नहीं, और अगर फ़र्ज़ करो आयी भी तो ज़ाहिर है कि ख़ुदा का मैं प्यारा हूँ वरना वह मुझे इस क़द्र माल और धन-दौलत क्यों देता? तो वहाँ भी वह मुझे इससे भी बेहतर अ़ता फ़रमायेगा। जैसे एक दूसरी आयत में है:

وَلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى.

अगर मैं लौटाया गया (यानी दोबारा ज़िन्दा किया गया) तो वहाँ मेरे लिये और भी अच्छाई होगी। एक और आयत में इरशाद है:

اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا.

यानी तूने उसे भी देखा जो हमारी आयतों से कुफ़्र करता रहा है और इसके बावजूद उसकी तमन्ना यह है कि मुझे क़ियामत के दिन भी बहुत ज़्यादा माल व औलाद मिलेगी। यह ख़ुदा के सामने दिलेरी करता और अल्लाह तआ़ला पर बातें बनाता है। इस आयत का शाने नुज़ूल आ़स बिन वाईल है। इसका बयान अपने स्थान पर आयेगा इन्शा-अल्लाह।

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰكَ رَجُلًا ۝ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّىْۤ اَحَدًا ۝ وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ فَعَسٰى رَبِّىْۤ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ۝

उससे उसके मुलाक़ाती ने (जो कि दीनदार और ग़रीब था) जवाब के तौर पर कहा, क्या तू उस (पाक) ज़ात के साथ कुफ़्र करता है जिसने (पहले) तुझको मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुझको (सही व सालिम) आदमी बनाया। (37) लेकिन (मैं तो यह अ़क़ीदा रखता हूँ कि) वह (यानी) अल्लाह तआ़ला मेरा (हक़ीक़ी) रब है, और मैं उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। (38) और तू जिस वक़्त अपने बाग़ में पहुँचा था तो तूने यूँ क्यों न कहा कि जो अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर (होता) है (वही होता है, और) अल्लाह तआ़ला की मदद के बग़ैर (किसी में) कोई ताक़त नहीं, अगर तू मुझको माल और औलाद में कमतर देखता है (39) तो (मुझको वह वक़्त) नज़दीक (मालूम होता) है कि मेरा रब मुझको तेरे बाग़ से अच्छा (बाग़) दे दे, और इस (तेरे बाग़) पर कोई (तक़दीरी) आफ़त आसमान से भेज दे, जिससे वह (बाग़) देखते ही देखते एक साफ़ मैदान (होकर) रह जाए। (40) या (उससे) इसका पानी बिल्कुल अन्दर (ज़मीन में) उतर (कर सूख) जाए, फिर तू उस (के लाने और निकालने) की कोशिश भी न कर सके। (41)

मोमिन की तंबीह

उस मालदार काफ़िर को जो जवाब उस ग़रीब मोमिन ने दिया उसका बयान हो रहा है कि किस तरह उसने उसको नसीहत की, ईमान व यक़ीन की हिदायत की और गुमराही व ग़ुरूर से उस बदबख़्त को हटाना

Maktab E Ashraf

चाहा। फ़रमाया कि तू उस ख़ुदा के साथ कुफ़्र करता है जिसने इनसान की पैदाईश मिट्टी से शुरू की फिर उसकी नस्ल मिलेजुले पानी (यानी माँ-बाप के नुत्फ़े) से जारी रखी। जैसे आयतः

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ........ الخ.

में है, कि तुम ख़ुदा के साथ कैसे कुफ़्र करते हो? तुम तो मुर्दा थे, उसने तुम्हें ज़िन्दा किया, तो उसकी ज़ात का, उसकी नेमतों का इनकार कैसे कर सकते हो? उसकी नेमतों के, उसकी क़ुदरतों के बेशुमार नमूने ख़ुद तुममें और तुम पर मौजूद हैं। कौन नादान ऐसा है जो न जानता हो कि वह पहले कुछ न था अल्लाह तआ़ला ने उसे मौजूद कर दिया। वह ख़ुद-ब-ख़ुद अपने होने पर क़ादिर न था, अल्लाह तआ़ला ने उसका वजूद पैदा किया, फिर वह इनकार के लायक़ कैसे हो गया? उसके एक होने और उसके माबूद होने से कौन इनकार कर सकता है? मैं तो तेरे मुक़ाबले में खुले अलफ़ाज़ में कह रहा हूँ कि मेरा रब वही अल्लाह है उसका कोई शरीक नहीं, मैं अपने रब के साथ शिर्क करना नापसन्द करता हूँ।

फिर अपने साथी को नेकी और अच्छाई की तरफ़ तवज्जोह दिलाने और दिलचस्पी पैदा करने के लिये कहता है कि अपनी लह्लहाती हुई खेती और हरे-भरे मेवों (फलों) से लदे बाग़ को देखकर तू ख़ुदा का शुक्र क्यों नहीं करता? क्यों "माशा-अल्लाह ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह" नहीं कहता? इसी आयत को सामने रखकर बाज़ बुज़ुर्गों का मक़ूला है कि जिसे अपनी औलाद या माल या कोई हालत पसन्द आये उसे यह कलिमा पढ़ लेना चाहिये।

अबू यअ़ला मूसली में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जिस बन्दे पर ख़ुदा अपनी कोई नेमत इनाम फ़रमाये, बाल-बच्चे और घर-बार हों, उसके यार-दोस्त हों, लड़के हों फिर वह इस कलिमे को कह ले तो उसमें कोई आँच न आयेगी सिवाय मौत के। फिर आप इस आयत की तावील करते। हाफ़िज़ अबुल-फ़तह कहते हैं कि यह हदीस सही नहीं।

मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें जन्नत का एक ख़ज़ाना बतला दूँ? वह ख़ज़ाना "ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह" कहना है। एक और रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मेरे उस बन्दे ने मान लिया और सौंप दिया (यानी अल्लाह की क़ुदरत का एतिराफ़ कर लिया और ख़ुद को कमज़ोर मानकर अपने को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया)।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से फिर पूछा गया तो आपने फ़रमाया सिर्फ़ इतना पढ़ना नहीं बल्कि वह है जो सूरः कहफ़ में है, यानी "मा शाअल्लाहु ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह"। फिर फ़रमाया कि उस नेक शख़्स ने कहा- मुझे अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि वह मुझे आख़िरत के दिन बेहतर नेमतें अ़ता फ़रमाये और तेरे इस बाग़ को जिसे तू हमेशा-हमेशा के लिये समझता है तबाह कर दे, आसमान से इस पर अ़ज़ाब भेज दे, ज़ोर की बारिश आँधी के साथ आये, तमाम खेत और बाग़ बरबाद हो जाये, सूखी साफ़ ज़मीन रह जाये, गोया कि कभी यहाँ कोई चीज़ उगी ही नहीं थी। या इसकी नहरों का पानी ख़ुश्क कर दे।

और उस शख़्स के माल व दौलत के सामान को (आफ़त ने) आ घेरा फिर उसने जो कुछ उस (बाग़) पर ख़र्च किया था, उसपर हाथ मलता रह गया, और वह (बाग़) अपनी टट्टियों	وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّىْٓ اَحَدًا ○ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ○ؕ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ○ع

पर गिरा हुआ (पड़ा) था। और कहने लगा, क्या ख़ूब होता कि मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता। (42) और उसके पास कोई (ऐसा) मजमा न हुआ कि अल्लाह तआला के सिवा उसकी मदद करता, और न वह ख़ुद (हमसे) बदला ले सका। (43) ऐसे मौक़े पर मदद करना अल्लाह बर्हक़ ही का काम है, उसी का सवाब सबसे अच्छा है और उसी का नतीजा सबसे अच्छा है। (44)

अल्लाह के अ़ज़ाब की तबाही

उसका तमाम माल तमाम फल ग़ारत हो गये, वह मोमिन उसे जिस बात से डरा रहा था वही होकर रही। अब तो वह अपने माल की बरबादी पर अफ़सोस व रंज करने लगा और आरज़ू करने लगा कि काश मैं ख़ुदा के साथ शिर्क न करता। जिन पर फ़ख़्र करता था उनमें से कोई उस वक़्त काम न आया। औलाद, क़बीला ख़ानदान सब रह गया, फ़ख़्र व गुरूर सब ढह गये, न और कोई खड़ा न हुआ, न ख़ुद में ही कोई हिम्मत हुई।

बाज़ लोग "हुनालि-क" पर वक़्फ़ करते (ठहरते) हैं और इसे पहले जुमले के साथ मिला लेते हैं, यानी वहाँ वह अपना इन्तिक़ाम न ले सका। और बाज़ "मुन्तसिरन्" पर आयत करके आगे से नये जुमले की शुरूआत करते हैं। "वलायतु" की दूसरी क़िराअत "विलायतु" भी है। पहली क़िराअत पर मतलब यह हुआ कि हर मोमिन व काफ़िर अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ रुजू करने वाला (यानी लौटने वाला) है, उसके सिवा कोई पनाह की जगह नहीं। अ़ज़ाब के वक़्त कोई भी सिवाय उसके काम नहीं आ सकता। अल्लाह का फ़रमान है:

فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ........ الخ.

यानी हमारे अ़ज़ाब देखकर कहने लगे कि हम एक अल्लाह पर ईमान लाते हैं और इससे पहले जिन्हें हम अल्लाह का शरीक ठहराया करते थे उनसे इनकार करते हैं। और जैसे कि फ़िरऔ़न ने डूबते वक़्त कहा था कि मैं उस ख़ुदा पर ईमान लाता हूँ जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं और मैं मुसलमानों में शामिल होता हूँ। उस वक़्त जवाब मिला कि अब ईमान क़बूल करता है? इससे पहले तू नाफ़रमान रहा और मुफ़सिदों (ख़राबी और बिगाड़ पैदा करने वालों) में शामिल रहा।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ

और आप उन लोगों से दुनिया की ज़िन्दगी की हालत बयान फ़रमाईए (कि वह ऐसी है) जैसे आसमान से हमने पानी बरसाया हो, फिर उसके ज़रिये से ज़मीन की नबातात "यानी घास और पेड़-पौधे" ख़ूब घनी हो गई हो, फिर वह

Maktab E Ashraf

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقْتَدِرًا ○ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ○	चूरा-चूरा हो जाए कि उसको हवा उड़ाए लिए फिरती हो, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। (45) माल और औलाद दुनिया की ज़िन्दगी की एक रौनक़ हैं और (जो) नेक आमाल बाक़ी रहने वाले हैं वे आपके रब के नज़दीक सवाब के एतिबार से भी (हज़ार दर्जा) बेहतर हैं, और उम्मीद के एतिबार से भी (हज़ार दर्जा) बेहतर हैं। (46)

दुनिया की मिसाल

दुनिया अपने ज़वाल, फ़ना, ख़ात्मे और बरबादी के लिहाज़ से आसमानी बारिश की तरह है, जो ज़मीन के दानों वग़ैरह से मिलती है और हज़ारों पौधे लहलहाने लगते हैं, तरो-ताज़गी और ज़िन्दगी के आसार हर चीज़ पर ज़ाहिर होने लगते हैं। लेकिन कुछ दिनों के गुज़रते ही वह सूख-साखकर चूरा-चूरा हो जाते हैं और हवायें उन्हें दायें-बायें उड़ाये फिरती हैं। इस हालत पर जो क़ादिर था वह उस हालत पर भी क़ादिर है। उमूमन दुनिया की मिसाल बारिश से बयान फ़रमाई जाती है जैसे सूरः यूनुस की आयतः

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا...... الخ.

(सूरः यूनुस आयत 24) और जैसे सूरः ज़ुमर की आयतः

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً..... الخ.

(सूरः ज़ुमर आयत 21) में, और जैसे सूरः हदीद की आयतः

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا......الخ.

(सूरः हदीद आयत 20) में।

सही हदीस में भी है कि दुनिया सब्ज़ रंग की और मीठी है। फिर फ़रमाता है कि माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, जैसे फ़रमाया हैः

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ...... الخ.

कि इनसान के लिये ख़्वाहिशों की मुहब्बत जैसे औरतें, बेटे, ख़ज़ाने वग़ैरह लुभावनी बना दी गयी हैं। एक और आयत में हैः

اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ.

कि तुम्हारे माल, तुम्हारी औलाद फ़ितना (आज़माईश) हैं और अल्लाह के पास बड़ा अज्र है। यानी उसकी तरफ़ झुकना, उसकी इबादत में मशग़ूल रहना दुनिया के पीछे पड़ने से बेहतर है। इसी लिये यहाँ भी इरशाद होता है कि बाक़ी रहने वाले नेक आमाल हर लिहाज़ से उम्दा चीज़ है, जैसे पाँचों वक़्त की नमाज़ें और 'सुब्हानल्लाह वल्हम्दु लिल्लाह व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' और 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' और 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि' और 'अल्लाहु अक्बर', और 'ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल्

Maktab E Ashraf

अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम'।

मुस्नद अहमद में है, हज़रत उस्मान रज़ि. के गुलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान एक बार अपने साथियों में बैठे हुए थे कि मुअज़्ज़िन पहुँचा। आपने पानी मंगवाया, एक बर्तन में क़रीब तीन पाव के पानी आया। आपने वुज़ू करके फ़रमाया- हुज़ूर सल्ल. ने इसी तरह वुज़ू करके फ़रमाया जो मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू करके ज़ोहर की नमाज़ अदा करे तो सुबह से लेकर ज़ोहर तक के सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। फिर अ़सर में भी इसी तरह नमाज़ पढ़ ली तो ज़ोहर से अ़सर तक के तमाम गुनाह माफ़। फिर मग़रिब की नमाज़ पढ़ी तो अ़सर से मग़रिब तक के गुनाह माफ़। फिर इशा की नमाज़ पढ़ी तो मग़रिब से इशा तक के गुनाह माफ़। फिर रात को वह सो गया सुबह उठकर फ़जर की नमाज़ अदा की तो इशा से लेकर सुबह तक के गुनाह माफ़। यही वे नेकियाँ हैं जो बुराईयों को दूर कर देती हैं। लोगों ने पूछा यह तो नेकियाँ हुईं अब ऐ उस्मान! आप बतलाईये कि 'बाक़ी रहने वाले नेक आमाल' क्या हैं? आपने फ़रमायाः

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अक्बर, व ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम।

हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. फ़रमाते हैं कि बाक़ी रहने वाले नेक आमाल ये हैं:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, व ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह।

हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. ने अपने शागिर्द अ़म्मारा रह. से पूछा कि बतलाओ 'बाक़ियाते सालिहात' (बाक़ी रहने वाले नेक आमाल) क्या हैं? उन्होंने जवाब दिया कि नमाज़ और रोज़ा। आपने फ़रमाया तुमने सही जवाब नहीं दिया। उन्होंने कहा ज़कात और हज। फ़रमाया अब भी जवाब ठीक नहीं हुआ। सुनो! वे पाँच कलिमे हैं।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर। सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से सवाल हुआ, आपने 'अल्हम्दु लिल्लाह' को छोड़कर बाक़ी के चार कलिमात बताये हैं। हज़रत मुजाहिद रह. 'ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम' के अ़लावा बाक़ी के चारों कलिमात बतलाते हैं। हसन और क़तादा रह. भी इन्हीं चारों कलिमात को 'बाक़ियाते सालिहात' (बाक़ी रहने वाले नेक आमाल) बतलाते हैं। इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- "सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अक्बर" यह हैं "बाक़ियाते सालिहात"।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि "बाक़ियाते सालिहात" (बाक़ी रहने वाले नेक आमाल) की कसरत करो। पूछा गया वे क्या हैं? फ़रमाया मिल्लत। पूछा गया वह क्या है या रसूलल्लाह! आपने फ़रमाया 'तकबीर' (अल्लाहु अक्बर) 'तहलील' (ला इला-ह इल्लल्लाहु) 'तस्बीह' (सुब्हानल्लाह), 'अल्हम्दु लिल्लाह' और 'ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि'। (अहमद)

Maktab E Ashraf

सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह के मौला अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान कहते हैं कि मुझे हज़रत सालिम ने मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुर्ज़ी के पास किसी काम के लिये भेजा तो उन्होंने कहा सालिम से कह देना कि फ़ुलाँ क़ब्र के पास के कोने में मुझसे मुलाक़ात करें, मुझे उनसे कुछ काम है। चुनाँचे दोनों की वहाँ मुलाक़ात हुई, सलामु अ़लैक हुई, तो सालिम ने पूछा कि आपके नज़दीक 'बाक़ियाते सालिहात' क्या हैं? उन्होंने फ़रमायाः ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, और "सुब्हानाल्लाहि" और ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि।

सालिम ने कहा यह आख़िरी कलिमा आपने इसमें कब से बढ़ाया? क़ुर्ज़ी ने कहा मैं तो हमेशा से इस कलिमे को शुमार करता हूँ। दो तीन बार यही सवाल व जवाब हुआ तो हज़रत मुहम्मद बिन कअ़ब ने फ़रमाया क्या तुम्हें इस कलिमे से इनकार है? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ इनकार है। कहा सुनो! मैंने हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि. से सुना है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि आप फ़रमाते थे जब मुझे मेराज कराई गयी, मैंने आसमान पर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को देखा। आपने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि यह आपके साथ कौन हैं? जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि मुहम्मद हैं। उन्होंने मुझे मर्हबा और ख़ुश-आमदीद कहा और फ़रमाया आप अपनी उम्मत से फ़रमा दीजिए कि वह जन्नत में अपने लिये बहुत कुछ बाग़ात लगा लें। उसकी मिट्टी पाक है, उसकी ज़मीन कुशादा (खुली और लम्बी-चौड़ी) है। मैंने पूछा वहाँ बाग़ात लगाने की क्या सूरत है? फ़रमाया "ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" ख़ूब ज़्यादा पढ़ें।

मुस्नद अहमद में नोमान बिन बशीर रज़ि. से रिवायत है कि एक रात इशा की नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल. हमारे पास आये, फिर आसमान की तरफ़ देखकर नज़रें नीची कर लीं। हमें ख़्याल हुआ कि शायद आसमान में कोई नई बात हुई है। फिर आपने फ़रमाया मेरे बाद झूठ बोलने और ज़ुल्म करने वाले बादशाह होंगे, जो उनके झूठ को सच्चा करके दिखाये और उनके ज़ुल्म में उनकी तरफ़दारी करे वह मुझसे नहीं और न मैं उसका हूँ। और जो उनके झूठ को सच्चा न बनाये और उनके ज़ुल्म में उनकी तरफ़दारी न करे वह मेरा है और मैं उसका हूँ। लोगो सुन रखो कि "सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर" ये बाक़ियाते सालिहात यानी बाक़ी रहने वाली नेकियाँ हैं। मुस्नद में है कि आपने फ़रमाया-वाह-वाह पाँच कलिमात हैं जो पढ़ने में हल्के और नेकी की तराज़ू में बेहद वज़नी हैं "ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि। और वह बच्चा जिसके इन्तिक़ाल पर उसका बाप सब्र और अज्र तलब करे। वाह-वाह पाँच चीज़ें हैं जो इनका यक़ीन रखते हुए अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात करे वह निश्चित तौर पर जन्नती है। अल्लाह पर, क़ियामत के दिन पर, जन्नत दोज़ख़ पर, मरने के बाद के जी उठने पर और हिसाब पर ईमान रखे।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि. एक सफ़र में थे, किसी जगह उतरे और अपने गुलाम से फ़रमाया कि छुरी लाओ खेलें। हस्सान बिन अ़तीया कहते हैं मैंने उस वक़्त कहा कि यह आपने क्या कहा? आपने फ़रमाया वाक़ई मैंने ग़लती की सुनो! इस्लाम लाने के बाद से लेकर आज तक मैंने कोई कलिमा अपनी ज़बान से ऐसा नहीं निकाला जो मेरे लिये लगाम (यानी आख़िरत में मुसीबत) बन जाये सिवाय इस एक कलिमे के, पस तुम लोग इसे याद से भुला दो और अब जो मैं कह रहा हूँ उसे याद रखो। मैंने रसूले ख़ुदा सल्ल. से सुना है कि जब लोग सोने चाँदी के जमा करने में लग जायें तुम उस वक़्त इन कलिमात को ख़ूब ज़्यादा पढ़ा करोः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَالْعَزِيْمَةَ عَلَى الرُّشْدِ وَاَسْئَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَاَسْئَلُكَ حُسْنَ عِبَادَتِكَ وَاَسْئَلُكَ قَلْبًا سَلِيْمًا وَّاَسْئَلُكَ لِسَانًا صَادِقًا وَّاَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ.

Maktab-E-Ashraf

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकस्सबा-त फ़िल्-अम्रि वल-अ़ज़ीम-त अ़लर्रुश्दि व अस्अलु-क शुक्-र नेअ़्मति-क व अस्अलु-क हुस्-न इबादति-क व अस्अलु-क क़ल्बन् सलीमन् व अस्अलु-क लिसानन् सादिक़न् व अस्अलु-क मिन् ख़ैरि मा तअ़्लमु व अऊज़ु बि-क मिन् शर्रि मा तअ़्लमु व अस्तग़्फ़िरु-क लिमा तअ़्लमु इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल् ग़ुयूबि।

यानी ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अपने काम की साबित-क़दमी (जमाव) और नेकी के काम का पूरा इरादा और तेरी नेमतों की शुक्रगुज़ारी की तौफ़ीक़ तलब करता हूँ और तुझसे दुआ़ है कि तू मुझे हक़ को पसन्द करने वाला दिल और सच कहने वाली ज़बान अ़ता फ़रमा। तेरे इल्म में जो भलाई है मैं उसका तलबगार हूँ और तेरे इल्म में जो बुराई है मैं उससे तेरी पनाह चाहता हूँ। परवर्दिगार! हर उस बुराई से मेरी तौबा है जो तेरे इल्म में हो। बेशक ग़ैब का जानने वाला तू ही है।

हज़रत सअ़्द बिन उबादा रज़ि. फ़रमाते हैं कि ताईफ़ वालों में से सबसे पहले मैं नबी सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, मैं अपने घर से सुबह ही सुबह चल खड़ा हुआ और अ़सर के वक़्त मिना में पहुँच गया। पहाड़ चढ़ा, फिर उतरा, फिर हुज़ूरे पाक सल्ल. के पास पहुँचा, इस्लाम क़बूल किया, आपने मुझे सूरः "क़ुल हुवल्लाहु अहद्" और सूरः "इज़ा ज़ुलज़िलत्" सिखाई और ये कलिमात तालीम फ़रमायेः

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ.

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर। फ़रमाया ये हैं बाक़ी रहने वाली नेकियाँ।

इस सनद से रिवायत है कि जो शख़्स रात को उठे, वुज़ू करे, कुल्ली करे फिर सौ बार "सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, ला इला-ह इल्लल्लाहु" पढ़े उसके सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं सिवाय क़त्ल व ख़ून के, वह माफ़ नहीं होता। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि "बाक़ियाते सालिहात" अल्लाह का ज़िक्र है। और "ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि तबारकल्लाहु व ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह व सल्लल्लाहु अ़ला रसूलिल्लाहि" है, और रोज़ा, नमाज़, हज, सदक़ा, ग़ुलामों की आज़ादी, जिहाद, सिला-रहमी और तमाम नेकियाँ ये सब "बाक़ियाते सालिहात" (बाक़ी रहने वाली नेकियाँ) हैं, जिनका सवाब जन्नत वालों को जब तक आसमान व ज़मीन में रहें मिलता रहता है। फ़रमाते हैं कि पाकीज़ा कलाम भी इसी में दाख़िल है। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि तमाम नेक आमाल इसी में दाख़िल हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसे मुख़्तार (पसन्दीदा) बतलाते हैं।

और (उस दिन को याद करना चाहिए) जिस दिन हम पहाड़ों को हटा देंगे, और आप ज़मीन को देखेंगे (कि खुला मैदान पड़ा है) और हम उन सबको जमा कर देंगे, और उनमें से	وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ

किसी को भी न छोड़ेंगे। (47) और (सब-के-सब) आपके रब के सामने बराबर-बराबर खड़े करके पेश किए जाएँगे। (देखो, आख़िर) तुम हमारे पास आए (भी) जैसा कि हमने तुमको पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुम (यही) समझते रहे कि हम तुम्हारे लिए कोई वायदा किया गया वक़्त न लाएँगे। (48) और नामा-ए-आमाल रख दिया जाएगा, तो आप मुजरिमों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ (लिखा) होगा उससे डरते होंगे, और कहते होंगे कि हाय हमारी कम-बख़्ती इस नामा-ए-आमाल का अ़जीब हाल है कि बेलिखे हुए न कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा गुनाह (छोड़ा) और जो कुछ उन्होंने किया था वह सब (लिखा हुआ) मौजूद पाएँगे। और आपका रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा। (49)	اَحَدًا ۝ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ۝

ع ٦ ١٨

क़ियामत के दिन का ज़िक्र

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन की हौलनाकियों (दिल हिला देने वाले दृश्यों) का ज़िक्र फ़रमा रहा है और जो आश्चर्य जनक बड़े-बड़े वाक़िआ़त उस दिन पेश आयेंगे उनका ज़िक्र कर रहा है कि आसमान फट जायेगा, पहाड़ उड़ जायेंगे अगरचे तुम्हें जमे हुए दिखाई देते हैं लेकिन उस दिन तो बादलों की तरह तेज़ी से चल रहे होंगे, आख़िर रूई के गालों की तरह हो जायेंगे। ज़मीन साफ़ चटियल मैदान हो जायेगी जिसमें कोई नशेब व फ़राज़ (ऊँच-नीच) बाक़ी न रहेगा, न उसमें कोई मकान होगा, न छप्पर, सारी मख़्लूक़ बग़ैर आड़ के ख़ुदा के बिल्कुल सामने रू-ब-रू होगी। कोई भी मालिक से किसी जगह छुप न सकेगा, कोई पनाह या सर छुपाने की जगह न होगी। कोई दरख़्त, पत्थर, घास-फूँस दिखाई न देगा, अगले पिछले तमाम लोग जमा होंगे, कोई छोटा बड़ा ग़ैर-हाज़िर न होगा, तमाम अगले पिछले उस दिन जमा किये जायेंगे, उस दिन सब लोग हाज़िर होंगे और सब मौजूद होंगे। तमाम लोग ख़ुदा के सामने क़तार में होंगे, रूह और फ़रिश्ते सफ़ें बाँधे हुए खड़े होंगे, किसी को बात करने की भी ताब न होगी सिवाय उनके जिन्हें रहमान इजाज़त दे और वे बात भी माक़ूल कहें। पस या तो सब की एक ही सफ़ (क़तार) होगी या कई सफ़ों में होंगे। जैसा कि क़ुरआन में इरशाद फ़रमाया गया है- तेरा रब आयेगा और फ़रिश्ते क़तार की क़तार होंगे।

क़ियामत का इनकार करने वालों को वहाँ सब के सामने डाँट-डपट होगी कि देखो जिस तरह हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था उसी तरह दूसरी बार पैदा करके अपने सामने खड़ा किया, इससे पहले तो तुम इसके क़ायल न थे।

आमाल-नामे सामने कर दिये जायेंगे, जिसमें हर छोटा-बड़ा खुला-छुपा अ़मल लिखा होगा। अपने बुरे आमाल को देख-देखकर गुनाहगार डरे हुए और हैरान होंगे और अफ़सोस व रंज से कहेंगे कि हाय हमने

अपनी उम्र कैसी ग़फ़लत में बसर की, अफ़सोस बुरे कामों में लगे रहे, और देखो तो इस किताब ने एक मामला भी ऐसा नहीं छोड़ा जिसे लिखा न हो, छोटे बड़े तमाम गुनाह इसमें लिखे हुए हैं।

तबरानी में है कि हम हुनैन की लड़ाई से फ़ारिग़ होकर चले। एक मैदान में अल्लाह तआ़ला के रसूल सल्ल. ने मन्ज़िल की। हमसे फ़रमाया जाओ जिसे कोई लकड़ी, कोई घास-फूँस जो मिल जाये ले आओ। हम सब इधर-उधर हो गये, छपटियाँ छोल लकड़ी पत्ते काँटेदार दरख़्त झाड़ झंकाड़ जो मिला ले आये। ढेर लग गया तो आपने फ़रमाया देख रहे हो? इसी तरह गुनाह जमा होकर ढेर लग जाता है, अल्लाह तआ़ला से डरते रहो, छोटे बड़े गुनाहों से बचो, क्योंकि सब लिखे जा रहे और शुमार किये जा रहे हैं। जो ख़ैर व शर, भलाई बुराई जिसने किसी की होगी उसे मौजूद पायेगा। जैसे एक आयत में हैः

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ........ الخ.

(सूरः आले इमरान आयत 30) एक और आयत में हैः

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ....... الخ.

(सूरः क़ियामत आयत 13) एक और आयत में हैः

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ........الخ.

(सूरः तारिक़ आयत 9) तमाम छुपी हुई चीज़ें खुल पड़ेंगी। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर बद-अ़हद (वादे और अ़हद के ख़िलाफ़ करने वाले) के लिये क़ियामत के दिन एक झण्डा होगा उसकी बद-अ़हदी के मुताबिक़ जिससे उसकी पहचान हो जायेगी। और हदीस में है कि यह झण्डा उसकी रानों के पास होगा और ऐलान होगा कि यह फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ की बद-अ़हदी है। तेरा रब ऐसा नहीं है कि मख़्लूक़ में से किसी पर भी ज़ुल्म करे, हाँ अलबत्ता दरगुज़र करना, माफ़ फ़रमा देना यह उसकी सिफ़त है। हाँ बदकारों को अपनी क़ुदरत व हिक्मत, अ़दल व इन्साफ़ से वह सज़ा भी देता है। जहन्नम गुनाहगारों और नाफ़रमानों से भर जायेगी, फिर काफ़िरों और मुश्रिकों के सिवा तमाम मोमिन गुनाहगार छूट जायेंगे। अल्लाह तआ़ला एक ज़र्रे के बराबर भी नाइन्साफ़ी नहीं करता, नेकियों को बढ़ाता है, गुनाहों को बराबर ही रखता है, अ़दल की तराज़ू उस दिन सामने होगी, किसी के साथ कोई बुरा सुलूक न होगा..........।

मुस्नद अहमद में है, हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं- मुझे रिवायत पहुँची है कि एक शख़्स ने हुज़ूरे पाक सल्ल. से एक हदीस सुनी है जो वह बयान करते हैं। मैंने उस हदीस को ख़ास उनसे सुनने के लिये एक ऊँट ख़रीदा, सामान कस कर सफ़र किया। महीने भर के बाद शाम में उनके पास पहुँचा तो मालूम हुआ कि वह अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस हैं। मैंने दरबान से कहा जाओ ख़बर कर दो कि जाबिर दरवाज़े पर है। उन्होंने पूछा क्या जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह? मैंने कहा जी हाँ। यह सुनते ही वह जल्दी के मारे चादर संभालते हुए झट से बाहर आ गये और मुझे लिपट गये। मुआ़नक़ा (गले लगने) से फ़ारिग़ होकर मैंने कहा मुझे यह रिवायत पहुँची है कि आपने क़िसास (बदले) के बारे में कोई हदीस रसूलुल्लाह सल्ल. से सुनी है, तो मैंने चाहा कि ख़ुद आपसे मैं वह हदीस सुन लूँ इसलिये यहाँ आया और सुनते ही सफ़र शुरू कर दिया, इस ख़ौफ़ से कि कहीं उस हदीस को सुनने से पहले मैं मर न जाऊँ या आपको मौत न आ जाये। अब आप सुनाईये वह हदीस क्या है?

आपने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अपने तमाम

बन्दों को अपने सामने जमा करेगा, नंगे बदन, बिना ख़तना के, बिना सामान व असबाब के। फिर उन्हें आवाज़ देगा जिसे दूर नज़दीक वाले सब बराबर तौर पर सुनेंगे। फ़रमायेगा कि मैं मालिक हूँ, मैं बदले दिलवाने वाला हूँ। कोई जहन्नमी उस वक़्त तक जहन्नम में न जायेगा जब तक उसका जो हक़ किसी जन्नती के ज़िम्मे हो मैं न दिलवा दूँ। और न कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल हो सकता है जब तक उसका हक़ जो जहन्नमी पर है मैं न दिलवा दूँ अगरचे एक थप्पड़ ही का हो। हमने कहा हुज़ूर यह हक़ कैसे दिलवाये जायेंगे हालाँकि हम सब तो वहाँ नंगे पाँव, नंगे बदन, बिना माल व असबाब के होंगे? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हाँ उस दिन हक़ नेकियों और बुराईयों से अदा किये जायेंगे।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- बिना सींग वाली बकरी को अगर सींग वाली बकरी ने मारा तो उससे भी इसको बदला दिलवा दिया जायेगा। इस मज़मून की और भी बहुत सी रिवायतें हैं जिन्हें हमने तफ़सील के साथ आयतः

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ....... الخ.

(सूरः अम्बिया आयत 47) की तफ़सीर में और आयतः

اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ مَّافَرَّطْنَا...... الخ.

(सूरः अन्आम आयत 38) की तफ़सीर में बयान किया है।

और जबकि हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के सामने सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया, अलावा इब्लीस के, वह जिन्नों में से था। सो उसने अपने रबके हुक्म को न माना। सो क्या फिर भी तुम उसको और उसके पैरोकारों को दोस्त बनाते हो मुझको छोड़कर, हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं। ये ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदला है। (50)	وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝

हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और शैतान का क़िस्सा

बयान हो रहा है कि इब्लीस (शैतान) तुम्हारा बल्कि तुम्हारे बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का भी पुराना दुश्मन रहा है। अपने ख़ालिक़ व मालिक को छोड़कर तुम्हें इसकी बात न माननी चाहिये। ख़ुदा के एहसान व इकराम, उसके लुत्फ़ व करम को देखो कि उसने तुम्हें पैदा किया, तुम्हें पाला पोसा, फिर उसे छोड़कर उसके बल्कि अपने भी दुश्मन को दोस्त बनाना किस क़द्र ख़तरनाक ग़लती है। इसकी पूरी तफ़सीर सूरः ब-क़रह के शुरू में गुज़र चुकी है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा करके तमाम फ़रिश्तों को उनके सम्मान व ताज़ीम के तौर पर उनके सामने सज्दा करने का हुक्म दिया। सबने हुक्म का पालन किया लेकिन चूँकि इब्लीस (शैतान) अपनी फ़ितरत से बुरा था, आग से पैदा शुदा था, उसने इनकार कर दिया और फ़ासिक़ (गुमराह व नाफ़रमान) बन गया। फ़रिश्तों की पैदाईश नूर से थी।

सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गये हैं, इब्लीस भड़कती हुई आग से और आदम उससे जिसका बयान तुम्हारे सामने कर दिया गया है। ज़ाहिर है कि हर चीज़ अपनी असलियत पर आ जाती है और वक़्त पर बर्तन में जो हो वही टपकता है। अगरचे इब्लीस फ़रिश्तों के जैसे आमाल कर रहा था, उन्हीं जैसा बना हुआ था और ख़ुदा की रज़ामन्दी में दिन-रात मशग़ूल था। इसी लिये उनके ख़िताब में यह भी आ गया, लेकिन यह सुनते ही वह अपनी असलियत पर आ गया। तकब्बुर उसकी तबीयत में समा गया और साफ़ इनकार कर बैठा। उसकी पैदाईश ही आग से थी। जैसे उसने ख़ुद कहा कि तूने मुझे आग से बनाया है और इसे मिट्टी से। इब्लीस कभी भी फ़रिश्तों में से न था। वह जिन्नात की असल है जैसे कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम इनसान की असल हैं।

यह भी नक़ल किया गया है कि ये जिन्नात फ़रिश्तों की एक क़िस्म थे जो तेज़ आग से पैदा किये गये थे। इसका नाम हारिस था, जन्नत का दरोग़ा था, इस जमाअ़त के अ़लावा और फ़रिश्ते नूर के बने हुए थे। जिन्नात की पैदाईश आग के शोले से थी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इब्लीस (शैतान) सम्मानित फ़रिश्तों में से था और बुज़ुर्ग क़बीले का था। जन्नतों का दरोग़ा था, दुनिया वाले आसमान का बादशाह था, ज़मीन का भी सुल्तान था। इससे उसके दिल में कुछ घमण्ड आ गया था कि वह तमाम आसमान वालों से ज़्यादा शरीफ़ (इज़्ज़तदार और बड़े रुतबे वाला) है, वह घमण्ड पर बढ़ता जा रहा था, उसका सही अन्दाज़ा अल्लाह ही को था। पस उसके ज़ाहिर करने के लिये हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को सज्दा करने का हुक्म हुआ तो उसका घमण्ड ज़ाहिर हो गया। तकब्बुर और घमण्ड की वजह से साफ़ इनकार कर दिया और काफ़िरों में जा मिला।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि वह जिन्न था, यानी जन्नत का ख़ज़ानची था, जैसे लोगों को शहरों की तरफ़ मन्सूब कर देते हैं और कहते हैं 'मक्की' 'मदनी' 'बसरी' 'कूफ़ी'। यह जन्नत का ख़ज़ानची दुनिया वाले आसमान के कामों का प्रबंधक था। यहाँ के फ़रिश्तों का सरदार था। इस गुनाह और नाफ़रमानी से पहले वह फ़रिश्तों में दाख़िल था लेकिन रहता था ज़मीन पर। सब फ़रिश्तों से ज़्यादा कोशिश से इबादत करने वाला और सबसे ज़्यादा इल्म वाला था, इसी वजह से मग़रूर (घमण्डी) हो गया था। उसके क़बीले का नाम जिन्न था। आसमान व ज़मीन के बीच आवा-जाही रखता था। रब की नाफ़रमानी से ग़ज़ब में आ गया, शैतान मर्दूद बन गया और मलऊन हो गया। पस घमण्डी शख़्स से तौबा की उम्मीद नहीं हो सकती, हाँ तकब्बुर न हो और कोई गुनाह सर्ज़द हो जाये तो उससे नाउम्मीद न होना चाहिये।

कहते हैं कि यह तो जन्नत के अन्दर काम-काज करने वालों में था। बुज़ुर्गों के और भी इस बारे में बहुत से अक़वाल और रिवायतें मौजूद हैं, लेकिन वे ज़्यादातर इस्राईली रिवायतों पर आधारित हैं, सिर्फ़ इसलिये नक़ल किये गये हैं कि निगाह से गुज़र जायें। अल्लाह ही को उनका सही हाल मालूम है। हाँ बनी इस्राईल की वे रिवायतें तो क़तई तौर पर नकारे जाने के क़ाबिल हैं जो हमारे यहाँ के दलाईल के ख़िलाफ़ हों। बात यह है कि हमें तो क़ुरआन काफ़ी वाफ़ी है, हमें पहली किताबों की कोई ज़रूरत नहीं। हम उनसे बेनियाज़ हैं, इसलिये कि वह तब्दील व तरमीम, कमी बेशी से ख़ाली नहीं। बहुत सी ग़लत चीज़ें उनमें दाख़िल हो गयी हैं और ऐसे लोग उनमें नहीं पाये जाते जो आला दर्जे के हाफ़िज़ हों कि मैल-कुचैल दूर कर दें, खरा-खोटा परख लें, ज़्यादती और बातिल के मिलाने वालों की दाल न गलने दें। जैसे कि ख़ुदा तआ़ला ने इस उम्मत में अपने फ़ज़्ल व करम से ऐसे इमाम, उलेमा, सादात, बुज़ुर्ग, मुतक़्क़ी और पाकबाज़ हुफ़्फ़ाज़ पैदा किये हैं, जिन्होंने हदीसों को जमा किया, लिखा, सही, हसन, ज़ईफ़, मुन्कर, मतरूक, मौज़ूअ़ सबको

अलग-अलग कर दिखाया। गढ़ने वालों, बनाने वालों, झूठ बोलने वालों को छाँटकर अलग खड़ा कर दिया ताकि ख़त्मुल-मुर्सलीन सैयदुल-आलमीन नबी करीम सल्ल. का पाक और मुबारक कलाम महफ़ूज़ रह सके, झूठ व खोट से बच सके और किसी का बस न चले कि आपके नाम से झूठ को रिवाज दे ले और बातिल को हक़ में मिला दे। दुआ है कि इस तमाम तबके (यानी हदीस की ख़िदमत करने वाली उलेमा और बुज़ुर्गों की जमाअत) पर अल्लाह तआला अपनी रहमत व रज़ामन्दी नाज़िल फ़रमाये और उन सबसे ख़ुश रहे, आमीन आमीन। अल्लाह उन्हें जन्नतुल-फ़िरदौस नसीब फ़रमाये और यक़ीनन उनका मक़ाम इसी लायक़ है।

ग़र्ज़ कि इब्लीस अल्लाह की इताअत और फ़रमाँबरदारी से निकल गया। पस तुम्हें चाहिये कि अपने दुश्मन से दोस्ती न करो और मुझे छोड़कर उससे ताल्लुक़ न जोड़ो, ज़ालिमों को बड़ा बुरा बदला मिलेगा। यह मक़ाम भी बिल्कुल ऐसा ही है जैसे सूरः यासीन में क़ियामत का, उसकी हौलनाकियों का और नेक व बद लोगों के नतीजों का ज़िक्र करके फ़रमाया कि ऐ मुजरिमो! तुम आज के दिन अलग जाओ......।

मैंने उनको न तो आसमान और ज़मीन के पैदा करने के वक़्त बुलाया और न ख़ुद उनके पैदा करने के वक़्त (बुलाया) और मैं ऐसा (आजिज़) न था कि गुमराह करने वालों को अपना (हाथ और) बाज़ू बनाता। (51)	مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ۝

किसी से इमदाद नहीं ली

जिन-जिनको तुम अल्लाह तआला के सिवा अपना दोस्त बनाये हुए हो वे सब तुम जैसे ही मेरे ग़ुलाम हैं। वे किसी चीज़ के मालिक नहीं। ज़मीन व आसमान के बनाने में मैंने उन्हें शामिल नहीं रखा था बल्कि उस वक़्त वे मौजूद भी न थे। तमाम चीज़ों को सिर्फ़ मैंने ही पैदा किया है, सबकी तदबीर सिर्फ़ मेरे ही हाथ में है, मेरा कोई शरीक, वज़ीर, सलाहकार, नज़ीर नहीं। जैसा कि एक और आयत में फ़रमायाः

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ.. الخ.

जिन-जिनको तुम अपने गुमान में कुछ समझ रहे हो, ख़ुदा के अ़लावा उन सब को पुकार कर देख लो। याद रखो उनको आसमान व ज़मीन में किसी एक ज़र्रे के बराबर भी इख़्तियार नहीं, न उनकी इनमें कोई शिर्कत है, न उनमें से कोई ख़ुदा का मददगार है, न उनमें से कोई शफ़ाअ़त कर सकता है जब तक कि ख़ुदा की इजाज़त न हो जाये। मुझे यह लायक़ नहीं न इसकी ज़रूरत कि किसी को ख़ुसूसन गुमराह करने वालों को अपना मददगार और साथी बनाऊँ।

और उस दिन (को याद करो कि) हक़ तआला फ़रमाएगा कि जिनको तुम हमारा शरीक समझा करते थे, उनको पुकारो। पस वे उनको पुकारेंगे, सो वे उनको जवाब ही न देंगे, और हम उनके दरमियान में एक आड़ कर देंगे। (52)	وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۝ وَرَا الْمُجْرِمُوْنَ

और (उस वक़्त) मुजरिम लोग दोज़ख़ को देखेंगे, फिर यक़ीन करेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं, और उससे बचने का कोई रास्ता न पाएँगे। (53)	النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝

ع ١٩

Mahtab E Ashraf

आज के दिन रोना और फ़रियाद करना बेकार है

तमाम मुश्रिकों को क़ियामत के दिन शर्मिन्दा करने के लिये सब के सामने कहा जायेगा कि अपने शरीकों को पुकारो जिन्हें तुम दुनिया में पुकारते थे, ताकि वे तुम्हें आज के दिन की मुसीबत से बचा लें। वे पुकारेंगे लेकिन कहीं से कोई जवाब न पायेंगे। जैसे एक और आयत में है:

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى ....الخ.

कि हम तुम्हें अकेले-अकेले इसी तरह लाये जैसे कि हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, और जो कुछ हमने तुम्हें दुनिया में दे रखा था तुम वह सब अपने पीछे छोड़ आये, आज तो हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन शरीकों में से किसी एक को भी नहीं देखते जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराये हुए थे और जिनकी शफ़ाअ़त (यानी ख़ुदा के यहाँ उनकी सिफ़ारिश) का यक़ीन किये हुए थे। तुममें और उनमें ताल्लुक़ात टूट गये और तुम्हारे झूठे गुमान ख़त्म हो चुके। एक और आयत में है:

وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَ كُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ .....الخ.

कहा जायेगा कि अपने शरीकों को पुकारो, ये पुकारेंगे लेकिन वे जवाब न देंगे.....। इसी मज़्मून को आयतः

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ..........بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ.

(सूरः अहक़ाफ़ आयत 5-6) में बयान फ़रमाया है। सूरः मरियम में इरशाद है कि उन्होंने अपनी इ़ज़्ज़त के लिये ख़ुदा के अ़लावा और बहुत से माबूद बना रखे हैं, लेकिन ऐसा होने का नहीं, वे तो सब उनकी इबादत के मुन्किर हो जायेंगे और उल्टे उनके दुश्मन बन जायेंगे। उनमें और उनके झूठे माबूदों में हम आड़, रोक और हलाकत का गढ़ा बना देंगे ताकि ये उनसे और वे इनसे न मिल सकें। नेकराह (सही रास्ते पर चलने वाला) और गुमराह (भटका हुआ) अलग अलग रहें, जहन्नम की यह वादी उन्हें आपस में न मिलने देगी। कहते हैं यह वादी लहू पीप की होगी, उनमें आपस में उस दिन दुश्मनी हो जायेगी।

बाज़ाहिर मालूम होता है कि इससे मुराद हलाकत है और यह भी हो सकता है कि जहन्नम की कोई वादी भी हो, या और कोई फ़ासले की वादी हो। मक़सूद यह है कि इन आ़बिदों (पूजने और इबादत करने वालों) को वे माबूद (जिनको पूजा गया था) जवाब तक न देंगे, न ये आपस में एक दूसरे से मिल सकेंगे, क्योंकि इनके बीच हलाकत होगी और हौलनाक चीज़ें होंगी। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. ने कहा- मुराद यह है कि मुश्रिकों और मुसलमानों में हम आड़ कर देंगे। जैसे आयतः

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ.

(सूरः रूम आयत 14) और आयतः

Maktab E Ashraf

يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ.

(सूरः रूम आयत 43) और आयतः

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ.

(सूरः यासीन आयत 59) और आयतः

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا.

(सूरः अन्आम आयत 22) वग़ैरह में है। ये गुनाहगार जहन्नम को देख लेंगे जो सत्तर हज़ार लगामों में जकड़े हुई होगी। हर-हर लगाम पर सत्तर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे, देखते ही समझ लेंगे कि हमारा क़ैदख़ाना यही है। दाख़िल होने से पहले तसव्वुर ही से बहुत ज़्यादा रंज व ग़म और मुसीबत व परेशानी शुरू हो जायेगी। अ़ज़ाब का यक़ीन अ़ज़ाब से पहले का अ़ज़ाब है, लेकिन कोई छुटकारे की राह न पायेंगे, निजात की कोई सूरत नज़र न आयेगी। हदीस में है कि पाँच हज़ार साल तक काफ़िर इसी थरथरी में रहेगा कि जहन्नम उसके सामने है और उसका कलेजा क़ाबू से बाहर होगा।

और हमने इस क़ुरआन में लोगों के वास्ते हर क़िस्म के (ज़रूरी) उम्दा मज़मून तरह-तरह से बयान फ़रमाए हैं और (इसपर भी इनकार करने वाला) आदमी झगड़े में सबसे बढ़कर है। (54)	وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ۝

हर तरह की कोशिश

इनसानों के लिये हमने अपनी किताब में हर बात का बयान ख़ूब अच्छी तरह खोल-खोलकर कर दिया है, ताकि लोग सही रास्ते से न बहकें, हिदायत की राह से न भटकें, लेकिन इस बयान के बावजूद इस क़ुरआन से फिर भी सिवाय कामयाब और हिदायत पाने वाले लोगों के बाक़ी के तमाम निजात के रास्ते से हटे हुए हैं। मुस्नद अहमद में है कि एक रात को रसूलुल्लाह सल्ल. हज़रत फ़ातिमा और हज़रत अ़ली रज़ि. के पास उनके मकान में आये और फ़रमाया- तुम सोये हुए हो नमाज़ में नहीं हो? इस पर हज़रत अ़ली रज़ि. ने जवाब दिया कि या रसूलल्लाह! हमारी जानें अल्लाह के हाथ में हैं वह जब हमें उठाना चाहता है उठा बैठाता है। आप यह सुनकर बग़ैर कुछ फ़रमाये लौट गये, लेकिन अपने ज़ानू (रान) पर हाथ मारते हुए यह फ़रमाते हुए जा रहे थे कि इनसान तमाम चीज़ों से ज़्यादा झगड़ालू है।

और लोगों को, इसके बाद कि उनको हिदायत पहुँच चुकी, ईमान लाने से और अपने परवर्दिगार से (कुफ़्र वग़ैरह की) मग़फ़िरत माँगने से और कोई चीज़ रोक नहीं रही, इसके अ़लावा कि (उनको इसका इन्तिज़ार हो) कि अगले	وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّا اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ○	लोगों के जैसा मामला उनको भी पेश आए, या यह कि (अल्लाह का) अज़ाब उनके सामने आकर खड़ा हो। (55) और रसूलों को तो हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले (बनाकर) भेजा करते हैं, और काफ़िर लोग नाहक़ की बातें पकड़-पकड़कर झगड़े निकालते हैं ताकि उसके ज़रिये से हक़ बात को बिचला दें। और उन्होंने मेरी आयतों को और जिस (अज़ाब) से उनको डराया गया था उसको दिल्लगी बना रखा है। (56)

पहले लोगों का तरीक़ा

पहले ज़माने के और इस वक़्त के काफ़िरों की सरकशी बयान हो रही है कि हक़ वाज़ेह (स्पष्ट) हो चुकने के बाद भी उसको क़बूल करने से रुकते हैं। चाहते हैं कि ख़ुदा के अज़ाब को अपनी आँखों से देख लें। किसी ने तमन्ना की कि आसमान हम पर गिर पड़े, किसी ने कहा कि ला जो अज़ाब ला सकता हो ले आ। क़ुरैश ने भी कहा ख़ुदाया अगर यह हक़ (सच) है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई दर्दनाक अज़ाब हमें कर। उन्होंने यह भी कहा था कि ऐ नबी! हम तो तुझे मजनूँ (पागल) जानते हैं और अगर हक़ीक़त में तू सच्चा नबी है तो हमारे सामने फ़रिश्ते क्यों नहीं लाता? वग़ैरह वग़ैरह। पस ख़ुदा के अज़ाब के इन्तिज़ार में रहते हैं और उसके देखने के पीछे पड़े हैं। रसूलों का काम तो सिर्फ़ मोमिनों को बशारतें (ख़ुशख़बरियाँ) देना और काफ़िरों को डरा देना है, काफ़िर लोग नाहक़ की हुज्जतें करके हक़ को अपनी जगह से फिसला देना चाहते हैं, लेकिन उनकी यह तमन्ना कभी पूरी नहीं होगी। हक़ उनकी बातिल बातों से दबने का नहीं। ये मेरी आयतों और डराने की बातों को ख़ाली मज़ाक़ ही समझ रहे हैं और अपनी सरकशी (नाफ़रमानी) में बढ़ रहे हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۗ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ○ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۗ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا	और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसको उसके रब की आयतों से नसीहत की जाए, फिर वह उससे मुँह फेर ले और जो कुछ अपने हाथों (गुनाह) समेट रहा है, उस (के नतीजे) को भूल जाए। हमने उस (हक़ बात) के समझने से उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, और (उसके सुनने से) उनके कानों में डाट (दे रखी) है, और (इसी वजह से) अगर आप उसको सही रास्ते की तरफ़ बुलाएँ तो ऐसी हालत में हरगिज़ भी रास्ते पर न आएँ। (57) और आपका रब बड़ा मग़फ़िरत करने वाला (और बड़ा) रहमत वाला है। अगर

كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ○ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ○ ع ٨

उनसे उनके आमाल पर पकड़ करने लगता तो उन पर फ़ौरन ही अ़ज़ाब ला देता, (मगर ऐसा नहीं हुआ) बल्कि उनके वास्ते एक तय वक़्त है, (यानी कियामत का दिन) कि उससे इस तरफ़ (यानी पहले) कोई पनाह की जगह नहीं पा सकते। (58) और ये बस्तियाँ, (जिनके क़िस्से मशहूर व मज़कूर हैं) जब उन्होंने (यानी उनके रहने वालों ने) शरारत की तो हमने उनको हलाक कर दिया, और हमने उनके हलाक होने के लिए वक़्त तय किया था। (59)

आयतों से मुँह फेर लेना

वास्तव में उससे बढ़कर पापी कौन है जिसके सामने उसके पालने पोसने वाले का कलाम पढ़ा जाये और वह उसकी तरफ़ तवज्जोह तक न करे, उससे मानूस न हो बल्कि मुँह फेरकर इनकार कर जाये, और जो बुरे आमाल और गुनाह उससे पहले के हैं उन्हें भी भुला दे। इस ढिटाई की सज़ा यह होती है कि दिलों पर पर्दे पड़ जाते हैं, फिर क़ुरआन व बयान का समझना नसीब नहीं होता, कानों में भारीपन हो जाता है, भली बात की तरफ़ तवज्जोह नहीं रहती, अब लाख हिदायत करो लेकिन राह पानी मुश्किल व मुहाल है।

ऐ नबी! तेरा रब बड़ा ही मेहरबान बहुत आला रहमत वाला है। अगर वह गुनाहगारों की जल्द ही सज़ा दे दिया करता तो ज़मीन पर कोई जानदार बाक़ी न बचता। वह लोगों के ज़ुल्म से दरगुज़र कर रहा है, लेकिन इससे यह न समझा जाये कि पकड़ेगा ही नहीं। याद रखो वह सख़्त अ़ज़ाब वाला है। यह तो उसका सयंम व बरदाश्त है, पर्दा पोशी है, माफ़ी है ताकि गुमराही वाले सही रास्ते पर आ जायें, गुनाहों वाले तौबा कर लें और उसके दामने रहमत को थाम लें, लेकिन जिसने अल्लाह के इस सयंम व बरदाश्त से फ़ायदा न उठाया और अपनी सरकशी पर जमा रहा तो उसकी पकड़ का दिन क़रीब है, जो इतना सख़्त दिन होगा कि बच्चे बूढ़े हो जायेंगे, गर्भ गिर जायेंगे। उस दिन कोई पनाह की जगह न होगी, छुटकारे की सूरत न होगी। ये हैं तुमसे पहले की उम्मतें कि वे भी तुम्हारी तरह कुफ़्र व इनकार में पड़ गयीं और आख़िरकार (अंततः) मिटा दी गयीं। उनकी हलाकत का मुक़र्ररा वक़्त आ पहुँचा और वे तबाह व बरबाद हो गयीं।

पस ऐ मुश्रिको तुम भी डरते रहो, तुम तमाम रसूलों के सरदार, नबी-ए-आज़म को सता रहे हो और उन्हें झुठला रहे हो, हालाँकि पहले गुज़रे काफ़िरों से तुम ताक़त व क़ुव्वत में, सामान व संसाधनों में बहुत कम हो। मेरे अ़ज़ाब से डरो, मेरी बातों से नसीहत पकड़ो।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ○ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا

और (वह वक़्त याद करो) जबकि मूसा ने अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि मैं (इस सफ़र में) बराबर चला जाऊँगा, यहाँ तक कि उस मौक़े (स्थान) पर पहुँच जाऊँ जहाँ दो दरिया आपस में मिले हैं, या (यूँ ही) लम्बे अ़र्से तक चलता

Maktab E Ashraf

रहूँगा। (60) पस जब (चलते-चलते) दोनों दरियाओं के जमा होने के मौक़े पर पहुँचे, अपनी मछली को दोनों भूल गए और उस (मछली) ने दरिया में अपनी राह ली और चल दी। (61) फिर जब दोनों (वहाँ से) आगे बढ़ गए (तो मूसा ने) अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि हमारा नाश्ता तो लाओ, हमको तो इस सफ़र में (यानी आजकी मन्ज़िल में) बड़ी तकलीफ़ पहुँची। (62) (ख़ादिम ने) कहा, कि (लीजिए) देखिए (अ़जीब बात हुई) जब हम उस पत्थर के क़रीब ठहरे थे, सो मैं (उस) मछली (के ज़िक्र करने) को भूल गया और मुझको शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता, और (वह क़िस्सा यह हुआ कि) उस (मछली) ने (ज़िन्दा होकर) दरिया में अ़जीब अन्दाज़ से अपनी राह ली। (63) (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने यह क़िस्सा सुनकर) फ़रमाया, यही वह मौक़ा (मक़ाम और जगह) है जिसकी हमको तलाश थी, सो दोनों अपने क़दमों के निशान देखते हुए उल्टे लौटे। (64) सो (वहाँ पहुँचकर) उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे (यानी ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम) को पाया, जिनको हमने अपनी (ख़ास) रहमत (यानी मक़बूलियत) दी थी, और हमने उनको अपने पास से (एक ख़ास तरीक़े का) इल्म सिखाया था। (65)	فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۫ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۫ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ۝ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۝ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝

हज़रत मूसा व ख़ज़िर अ़लैहिमस्सलाम का क़िस्सा

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से ज़िक्र किया गया कि ख़ुदा का एक बन्दा दो दरियाओं के संगम पर है, उसके पास वह इल्म है जो तुम्हें हासिल नहीं। आपने उसी वक़्त उनसे मुलाक़ात करने की ठान ली। अब अपने साथी से फ़रमाते हैं कि मैं तो वहाँ पहुँचे बग़ैर दम न लूँगा। कहते हैं कि यह दो समुद्र एक तो पूर्वी बहर-ए-फ़ारस और दूसरा पश्चिमी बहर-ए-रोम है। यह जगह तन्जा के पास पश्चिम के शहरों के आख़िर में है। वल्लाहु आलम। फ़रमाते हैं कि चाहे मुझे ज़मानों तक चलना पड़े कोई हर्ज नहीं। कहते हैं कि क़ैस के लुग़त (भाषा) में बरस को हक़्ब कहते हैं। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर फ़रमाते हैं कि हक़्ब से मुराद अस्सी बरस हैं। मुजाहिद रह. सत्तर बरस कहते हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. लम्बा समय बतलाते हैं। हज़रत मूसा को हुक्म

मिला था कि अपने साथ नमक में भुनी हुई एक मछली ले लें, जहाँ वह गुम हो जाये वहीं हमारा वह बन्दा मिलेगा।

ये दोनों मछली को साथ लिये चले, दो दरियाओं के संगम पर पहुँच गये, वहाँ नहर-ए-हयात थी, वहीं दोनों लेटे, उस नहर के पानी के छींटे मछली पर पड़े मछली हिलने-चलने लगी। आपके साथी हज़रत यूशा अ़लैहिस्सलाम की ज़ंबील (थैली और झोली) में यह मछली रखी हुई थी और वह समुद्र के किनारे था, मछली ने समुद्र के अन्दर कूद जाने के लिये छलाँग लगाई और हज़रत यूशा की आँख खुल गयी। मछली उनके देखते देखते पानी में चली गयी और पानी में सीधा सुराख़ होता चला गया। जिस तरह ज़मीन में सुराख़ और सुरंग बन जाती है उसी तरह पानी में जहाँ से वह गयी सुराख़ हो गया, इधर-उधर पानी खड़ा हो गया और वह सुराख़ बिल्कुल खुला हुआ रहा, पत्थर की तरह पानी में छेद हो गया, जहाँ जिस पानी को लगती हुई वह मछली गयी वहाँ का वह पानी पत्थर जैसा हो गया और पूरा सुराख़ बनता चला गया।

मुहम्मद बिन इस्हाक़ मरफ़ूअ़न रिवायत बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने इस बात का बयान करते हुए फ़रमाया कि दुनिया की शुरूआ़त से लेकर उस वक़्त तक पानी इस तरह जमा न था सिवाय उस मछली के चले जाने की जगह के इर्द गिर्द के पानी के, यह निशान एक सुराख़ की तरह ज़मीन के बराबर मूसा अ़लैहिस्सलाम के वापस पहुँचने तक बाक़ी रहा, इस निशान को देखते ही हज़रत मूसा ने फ़रमाया हम इसी की तलाश में तो थे। जब मछली को भूलकर ये दोनों आगे बढ़े। यहाँ यह बात याद रखने की है कि एक का काम दोनों साथियों की तरफ़ मन्सूब हुआ है, भूलने वाले सिर्फ़ यूशा थे जैसा कि दूसरी जगह अल्लाह का फ़रमान है:

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ.

यानी उन दोनों समुद्रों में से मोती और मोंगे निकलते हैं हालाँकि दो क़ौलों में से एक यह है कि लुअ्लुअ् और मरजान (मोती) सिर्फ़ खारी पानी में से निकलते हैं।

जब वहाँ से एक मर्हला (मन्ज़िल) और तय कर गये तो हज़रत मूसा ने अपने साथी से नाश्ता तलब किया और सफ़र की तकलीफ़ भी बयान की, यह तकलीफ़ मन्ज़िल से आगे निकल आने के बाद हुई। इस पर आपके साथी को मछली का चला जाना याद आया और कहा कि जिस चट्टान के पास हम ठहरे थे उस वक़्त मैं मछली भूल गया और आपसे ज़िक्र करना भी शैतान ने भुला दिया। इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत "अन् अज़्कु-र लहू" है।

फ़रमाते हैं कि उस मछली ने तो अ़जीब व ग़रीब तरीक़े पर पानी में अपनी राह पकड़ी। उसी वक़्त हज़रत मूसा ने फ़रमाया लो और सुनो! उसी जगह की तलाश में हम थे। वे दोनों अपने उसी रास्ते पर अपने पैरों के निशान देखते हुए वापस लौटे। वहाँ हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हमने अपने पास की रहमत और अपने पास का इल्म अ़ता फ़रमा रखा था। यह हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम हैं।

सही बुख़ारी में है कि हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से कहा कि हज़रत नौफ़ का ख़्याल है कि ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम से मिलने वाले मूसा बनी इस्राईल के मूसा न थे। इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया वह दुश्मने ख़ुदा झूठा है। हमसे उबई बिन कअ़ब ने फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से उन्होंने सुना कि हज़रत मूसा खड़े होकर बनी इस्राईल को ख़ुतबा दे रहे थे कि आपसे सवाल हुआ कि सबसे बड़ा आ़लिम कौन है? आपने जवाब दिया- मैं। तो चूँकि आपने उसके जवाब में यह न फ़रमाया

कि अल्लाह जानता है, इसलिये रब को यह कलिमा नापसन्द आया। उसी वक़्त 'वही' आयी कि हाँ दो दरियाओं के संगम पर हमारा एक बन्दा है जो तुझसे भी ज़्यादा आ़लिम है। इस पर हज़रत मूसा ने फ़रमाया ऐ परवर्दिगार फिर मैं उस तक कैसे पहुँच सकता हूँ? हुक्म हुआ कि अपने साथ एक मछली रख लो, उसे तोशेदान में डाल लो, जहाँ वह मछली खो जाये वहीं वह मिल जायेंगे। आप अपने साथ अपने साथी यूशा बिन नून अ़लैहिस्सलाम को लेकर चले, पत्थर के पास पहुँचकर अपना सर उस पर रखकर दो घड़ी सो रहे। मछली उस तोशेदान में तड़पी और कूदकर उससे निकल गयी। समुद्र में ऐसी गयी जैसे कोई सुरंग निकालकर ज़मीन में उतर गया हो। पानी का चलना, बहना अल्लाह तआ़ला ने मौक़ूफ़ कर (बन्द कर) दिया और ताक़ की तरह वह सुराख़ बाक़ी रह गया।

हज़रत मूसा जब जागे तो आपके साथी आपसे यह ज़िक्र करना भूल गये। उसी वक़्त वहाँ से चल पड़े। दिन पूरा होने के बाद रात भर चलते रहे, सुबह हज़रत मूसा को थकान और भूख मालूम हुई। ख़ुदा ने जहाँ जाने का हुक्म दिया था जब तक वहाँ से आगे न निकल गये थकान का नाम तक न था। अब अपने साथी से खाना माँगा और तकलीफ़ बयान की। उस वक़्त आपके साथी ने फ़रमाया कि पत्थर के पास जब हमने आराम किया था वहीं उसी वक़्त मछली तो मैं भूल गया और उसके ज़िक्र को भी शैतान ने भुला दिया। उस मछली ने समुद्र में अ़जीब अन्दाज़ से अपनी राह निकाल ली। मछली के लिये सुरंग बन गयी और उनके लिये हैरत का कारण बन गया। हज़रत मूसा ने फ़रमाया उसी की तो तलाश थी। चुनाँचे अपने पैरों के निशान देखते हुए दोनों वापस लौटे। उसी पत्थर के पास पहुँचे देखा कि एक साहिब कपड़े में लिपटे हुए बैठे हैं, आपने सलाम किया, उसने कहा ताज्जुब है आपकी सरज़मीन में यह सलाम कहाँ? आपने फ़रमाया मैं मूसा हूँ। उन्होंने पूछा क्या बनी इस्राईल के मूसा? आपने फ़रमाया हाँ। और मैं इसलिये आया हूँ कि आप मुझे वह सिखायें जो भलाई आपको ख़ुदा की तरफ़ से सिखाई गयी है। आपने फ़रमाया मूसा आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते, इसलिये कि मुझे जो इल्म है वह आपको नहीं और आपको जो इल्म है वह मुझे नहीं। ख़ुदा तआ़ला ने दोनों को अलग-अलग तरह का इल्म अ़ता फ़रमा रखा है। हज़रत मूसा ने फ़रमाया इन्शा-अल्लाह आप देखेंगे कि मैं सब्र करूँगा और आपके किसी फ़रमान की नाफ़रमानी न करूँगा।

हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा अगर तुम मेरा साथ चाहते हो तो मुझसे ख़ुद किसी बात का सवाल न करना, यहाँ तक कि मैं ख़ुद तुम्हें उसके बारे में ख़बरदार न कर दूँ। इतनी बातें करके दोनों साथ चले, दरिया के किनारे एक कश्ती थी उसमें बैठने और पार उतरने की बातचीत करने लगे। उन्होंने हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम को पहचान लिया और बग़ैर किराया लिये दोनों को सवार कर लिया।

कुछ ही दूर चले होंगे हज़रत मूसा ने देखा कि ख़ज़िर चुप-चाप कश्ती के तख़्ते कुल्हाड़े से तोड़ रहे हैं। हज़रत मूसा ने फ़रमाया- यह क्या है? इन लोगों ने तो हमारे साथ एहसान किया, बग़ैर किराया लिये कश्ती में सवार किया और आपने इसके तख़्ते तोड़ने शुरू कर दिये? जिससे तमाम कश्ती वाले डूब जायें। यह तो आप बड़ा ही बुरा काम करने लगे। उसी वक़्त हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया देखो मैंने तो तुमसे पहले ही कह दिया था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते। हज़रत मूसा माज़िरत करने लगे कि ख़ता हो गयी, भूले से पूछ बैठा, माफ़ फ़रमाईये और सख़्ती न कीजिए। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि वाक़ई पहली ग़लती भूल से ही थी। फ़रमाते हैं कश्ती के एक तख़्ते पर एक चिड़िया आ बैठी और समुद्र में चोंच डालकर पानी लेकर उड़ गयी। उस वक़्त हज़रत ख़ज़िर ने हज़रत मूसा से फ़रमाया मेरे और तेरे इल्म ने ख़ुदा के

इल्म में से इतना ही कम किया है जितना पानी को इस समुद्र में से इस चिड़िया की चोंच ने कम किया है।

जब कश्ती किनारे लगी और साहिल पर दोनों चलने लगे जो हज़रत ख़ज़िर की निगाह चन्द खेलते हुए बच्चों पर पड़ी। हज़रत ख़ज़िर ने उनमें से एक का सर पकड़कर उसकी गर्दन इस तरह मोड़ दी कि उसी वक़्त उसका दम निकल गया। हज़रत मूसा घबरा गये और फ़रमाने लगे बग़ैर किसी वजह के इस बच्चे को आपने नाहक़ मार डाला? आपने बड़ा ही बुरा काम किया। हज़रत ख़ज़िर ने फ़रमाया देखो मैंने इससे पहले ही तुमसे कह दिया था कि तुम्हारी हमारी निभ नहीं सकती। उस वक़्त हज़रत ख़ज़िर ने पहले से ज़्यादा सख़्ती की। हज़रत मूसा ने फ़रमाया अच्छा अब अगर मैं कोई सवाल कर बैठूँ तो बेशक आप मुझे अपने साथ न रखना, यक़ीनन अब आपको इसका हक़ पहुँचता है। चुनाँचे फिर दोनों साथ चले।

एक बस्ती वालों के पास पहुँचे, उनसे खाना माँगा लेकिन उन्होंने इनकी मेहमान नवाज़ी करने से साफ़ इनकार कर दिया। वहीं एक दीवार देखी जो झुक गयी थी और गिरने के क़रीब थी, उसी वक़्त हज़रत ख़ज़िर ने हाथ लगाकर उसे ठीक और दुरुस्त कर दिया। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़्याल तो फ़रमाईये हम यहाँ आये, इन लोगों से खाना तलब किया, इन्होंने न दिया और मेहमान नवाज़ी के ख़िलाफ़ किया। और आपने इनका यह काम किया? आप इनसे उजरत (मज़दूरी) ले सकते थे।

हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह है मुझमें और तुममें जुदाई। अब मैं तुम्हें उन कामों का सबब बता दूँगा। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं काश कि हज़रत मूसा सब्र से काम लेते तो उन दोनों की और भी बहुत सी बातें हमारे सामने अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता। हज़रत इब्ने अ़ब्बास की क़िराअत में 'व का-न वरा-अहुम' के बदले 'व का-न अमामहुम' और 'सफ़ीनतिन्' के बाद 'सालिहतिन्' का लफ़्ज़ भी है और 'व अम्मलग़ुलामु' के बाद 'काफ़िरन्' का लफ़्ज़ भी है।

एक और सनद से भी यह हदीस बयान की गयी है। उसमें है कि उस पत्थर के पास हज़रत मूसा रुक गये, वहीं एक चश्मा था जिसका नाम नहर-ए-हयात था, उसका पानी जिस चीज़ को लग जाता वह ज़िन्दा हो जाती थी। उसमें चिड़िया के पानी लेने के बाद हज़रत ख़ज़िर का यह क़ौल नक़ल किया गया है कि मेरा, तेरा और तमाम मख़्लूक़ का इल्म अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में इतना ही है जितना इस चिड़िया की चोंच का पानी इस समुद्र के मुक़ाबले में....।

सही बुख़ारी शरीफ़ की एक और हदीस में है, हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास के घर में उनके पास था, आपने फ़रमाया कि जिसको जो सवाल करना हो कर ले। मैंने कहा कि अल्लाह तआ़ला मुझे आप पर फ़िदा करे कूफ़े में एक वाइ़ज़ (दीनी बयान करने वाले) हैं जिनका नाम नून है। फिर पूरी हदीस बयान की जैसा कि ऊपर गुज़री, उसमें है कि हज़रत मूसा के उस ख़ुतबे (बयान और तक़रीर) से आँखें बह निकली थीं और दिल नर्म पड़ गये थे। जब आप जाने लगे तो एक शख़्स आपके पास पहुँचा और उसने सवाल किया कि रू-ए-ज़मीन पर आपसे ज़्यादा इल्म वाला भी कोई है? आपने फ़रमाया नहीं। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आपको तंबीह की, क्योंकि उन्होंने अल्लाह तआ़ला की तरफ़ इल्म को नहीं लौटाया। उसमें है कि जब हज़रत मूसा ने निशान तलब किया तो इरशाद हुआ कि एक मरी हुई मछली अपने साथ रखो। जिस जगह उसमें रूह पड़ जाये वहीं पर आपकी उस शख़्स से मुलाक़ात होगी। चुनाँचे आपने मछली ली, ज़म्बील में रख ली और अपने साथी से कहा आपका सिर्फ़ इतना ही काम है कि जहाँ यह मछली आपके पास से चली जाये वहाँ आप मुझे ख़बर कर देना। उन्होंने कहा यह तो बिल्कुल आसान सी बात है। उनका नाम यूशा बिन नून था। "लि-फ़ताहु" से मुराद यही है।

ये दोनों बुज़ुर्ग तर जगह में एक दरख़्त के नीचे थे, हज़रत मूसा को नींद आ गयी और हज़रत यूशा जाग रहे थे कि मछली कूद गयी। उन्होंने ख़्याल किया कि जगाना तो ठीक नहीं, जब आँख खुलेगी ज़िक्र कर दूँगा। उसमें यह भी है कि पानी में जाने के वक़्त जो सुराख़ हो गया था उसे रावी-ए-हदीस अ़मर ने अपने अंगूठे और उसके पास की दोनों उंगलियों का हल्क़ा (गोल दायरा) बना करके दिखाया कि इस तरह का था जैसे पत्थर में होता है। वापसी पर ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम समुद्र के किनारे सब्ज़ गद्दी बिछाये मिले, एक चादर में लिपटे हुए थे, उसका एक सिरा तो दोनों पैरों के नीचे रखा हुआ था और दूसरा किनारा सर के नीचे था। हज़रत मूसा के सलाम पर आपने मुँह खोला। उसमें यह भी है कि हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आपके हाथ में तौरात मौजूद है, 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) आसमान से आ रही है, क्या यह काफ़ी नहीं? और मेरा इल्म आपके लायक़ भी नहीं और न मैं आपके इल्म के क़ाबिल हूँ। उसमें है कि कश्ती का तख़्ता तोड़कर आपने एक ताँत से बाँध दिया था। पहली दफ़ा का आपका सवाल तो भूले से ही था, दूसरी मर्तबा का बतौर शर्त के था, हाँ तीसरी बार का सवाल जान-बूझकर अ़लैहदा होने की वजह से था। उसमें है कि लड़कों में एक लड़का होशियार और काफ़िर था, उसे हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने लटका कर छुरी से ज़िबह कर दिया।

उस ज़ालिम बादशाह का नाम उसमें हदद बिन बदद है और जिस बच्चे को क़त्ल किया गया था उसका नाम हैसूर था। कहते हैं कि इस लड़के के बदले उनके यहाँ एक लड़की हुई।

एक रिवायत में है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुतबा दे रहे थे आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला को और उसके मामले को मुझसे ज़्यादा कोई नहीं जानता....। यह नौफ़ हज़रत कअ़ब रज़ि. की बीवी के लड़के थे, इनका क़ौल था कि जिस मूसा का इन आयतों में ज़िक्र है यह मूसा बिन मीतशा थे। एक और रिवायत में है कि हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला से सवाल किया कि ख़ुदाया अगर तेरे बन्दों में मुझसे बड़ा आ़लिम कोई हो तो मुझे आगाह फ़रमा। उसमें है कि नमक चढ़ी हुई मछली आपने अपने साथ रखी थी। उसमें यह भी है कि हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम यहाँ क्यों आये? आपको तो अभी बनी इस्राईल में ही मशग़ूलियत है। उसमें है कि छुपी हुई बातें हज़रत ख़ज़िर को मालूम कराई जाती थीं। तो आपने फ़रमाया कि आप मेरे साथ ठहर नहीं सकते। क्योंकि आप तो ज़ाहिर को देखकर फ़ैसला करेंगे और मुझे राज़ पर इत्तिला होती है। चुनाँचे शर्त हो गयी कि चाहे आप कैसा ही ख़िलाफ़ देखें लेकिन लब न हिलायें जब तक कि हज़रत ख़ज़िर ख़ुद न बतलायें। कहते हैं यह कश्ती तमाम कश्तियों से मज़बूत, उम्दा, बेहतर और अच्छी थी। वह बच्चा एक बेजोड़ बच्चा था। बड़ा हसीन, बड़ा होशियार, बड़ा ही तेज़-तर्रार। हज़रत ख़ज़िर ने उसे पकड़कर उसका सर पत्थर से कुचल कर उसे मार डाला। हज़रत मूसा ख़ौफ़े ख़ुदा से काँप उठे कि नन्हा सा प्यारा बेगुनाह बच्चा इस बेदर्दी से बग़ैर किसी सबब के हज़रत ख़ज़िर ने जान से मार डाला। दीवार गिरती हुई देखकर ठहर गयी। पहले तो उसे बाक़ायदा गिरा दिया और फिर आराम से चुनने बैठे। हज़रत मूसा उक्ता गये कि बैठे-बिठाये अच्छा धंधा ले बैठे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उस दीवार के नीचे का ख़ज़ाना सिर्फ़ इल्म था। एक और रिवायत में है कि जब हज़रत मूसा और आपकी क़ौम मिस्र पर ग़ालिब हो गयी और यहाँ आकर वे आराम से रहने-सहने लगे तो हुक्मे ख़ुदा हुआ कि उन्हें ख़ुदा के एहसानात याद दिलाओ। आप ख़ुतबे (बयान और तक़रीर) के लिये खड़े हुए और ख़ुदा के एहसानात बयान करने लगे कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ये-ये नेमतें अ़ता फ़रमायीं। आले फ़िरऔ़न से उसने तुम्हें निजात दी, तुम्हारे दुश्मनों को ग़ारत और ग़र्क़ कर दिया, फिर

Maktab E Ashraf

तुम्हें उनकी ज़मीन का मालिक कर दिया, तुम्हारे नबी से बातें कीं, उसे अपने लिये पसन्द फ़रमा लिया, उस पर अपनी मुहब्बत डाल दी, तुम्हारी तमाम हाजतें पूरी कीं, तुम्हारे नबी तमाम ज़मीन वालों से अफ़ज़ल हैं, उसने तुम्हें तौरात अ़ता फ़रमाई। ग़र्ज़ कि उन्हें असरदार अलफ़ाज़ में ख़ुदा की बेशुमार और अनगिनत नेमतें याद दिलायीं। इस पर एक बनी इस्राईल ने कहा कि वास्तव में बात यही है। ऐ अल्लाह के नबी! क्या ज़मीन पर आप से ज़्यादा इल्म वाला भी कोई है? आपने बेसाख़्ता फ़रमाया नहीं है। उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को भेजा कि उनसे कहो कि तुम्हें क्या मालूम कि मैं अपना इल्म कहाँ-कहाँ रखता हूँ? बेशक समुद्र के किनारे पर एक शख़्स है जो तुझसे भी ज़्यादा आ़लिम है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम हैं।

पस हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला से सवाल किया कि उनको मैं देख लूँ? 'वही' हुई कि अच्छा समुद्र के किनारे जाओ, वहाँ तुम्हें एक मछली मिलेगी उसे ले लो। अपने साथी को सौंप दो फिर किनारे-किनारे चल दो। जहाँ तू मछली को भूल जाये और वह तुझसे खो जाये वहीं तू मेरे उस नेक बन्दे को पायेगा। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जब चलते-चलते थक गये तो अपने साथी से जो उनका गुलाम था मछली के बारे में सवाल किया। उसने जवाब दिया कि जिस पत्थर के पास हम ठहरे थे वहीं मैं मछली भूल गया और आपसे ज़िक्र करना शैतान ने बिल्कुल भुला दिया। मैंने देखा कि मछली तो गोया सुरंग बनाती हुई दरिया में जा रही थी। हज़रत मूसा को यह सुनकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ। जब लौटकर वहाँ आये तो देखा कि मछली ने पानी में जाना शुरू किया है। हज़रत मूसा भी अपनी लकड़ी से पानी को चीरते हुए उसके पीछे हो लिये। मछली जहाँ से गुज़रती थी उसकी दोनों तरफ़ का पानी पत्थर बन जाता था। इससे भी अल्लाह के नबी को सख़्त आश्चर्य हुआ। अब मछली आपको एक जज़ीरे (द्वीप) में ले गयी...।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और हुर बिन क़ैस में मतभेद था कि मूसा के यह साहिब (साथी) कौन थे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान था कि यह ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम थे, उसी वक़्त उनके पास से हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. गुज़रे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने उन्हें बुलाकर अपनी राय का इख़्तिलाफ़ बयान किया। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुनी हुई वह हदीस बयान की जो तक़रीबन पूरी ऊपर गुज़र चुकी है। उसमें साईल (मालूम करने वाले) के सवालों के अलफ़ाज़ यह हैं कि क्या आप उस शख़्स की मौजूदगी भी जानते हैं जो आपसे ज़्यादा इल्म वाला हो?

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۝ قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا	मूसा ने (उनको सलाम किया और) उनसे फ़रमाया, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त से कि जो मुफ़ीद इल्म आपको (अल्लाह की तरफ़ से) सिखाया गया है, उसमें से आप मुझको भी सिखला दें? (66) (उन बुज़ुर्ग ने) जवाब दिया, आप से मेरे साथ (रहकर मेरे कामों पर) सब्र न हो सकेगा। (67) और (भला) ऐसे मामलों पर आप कैसे सब्र करेंगे जो आप की जानकारी से बाहर हैं। (68) (मूसा ने)

Maktaba Ashraf

फ़रमाया कि इन्शा-अल्लाह आप मुझको सब्र करने वाला (यानी बरदाश्त करने वाला) पाएँगे, और मैं किसी बात में आपके ख़िलाफ़ हुक्म न करूँगा। (69) (उन बुज़ुर्ग ने) फ़रमाया कि (अच्छा) अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो (इतना ख़्याल रहे कि) मुझसे किसी बात के बारे में कुछ पूछना नहीं, जब तक कि उसके बारे में मैं ख़ुद ज़िक्र (शुरू) न कर दूँ। (70)	اَعْصِى لَكَ اَمْرًا ۝ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْئَلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝

ع ٩ ٢١

हज़रत मूसा व ख़ज़िर अलैहिमस्सलाम की गुफ़्तगू

यहाँ उस गुफ़्तगू का ज़िक्र हो रहा है जो हज़रत मूसा और हज़रत ख़ज़िर के बीच हुई थी। हज़रत ख़ज़िर अलैहिस्सलाम उस इल्म के साथ मख़्सूस किये गये थे जो हज़रत मूसा को न था और हज़रत मूसा के पास वह इल्म था जिससे हज़रत ख़ज़िर बेख़बर थे। पस हज़रत मूसा अदब से और इसलिये कि हज़रत ख़ज़िर को मेहरबान कर लें उनसे सवाल करते हैं, शागिर्द को इसी तरह अदब के साथ अपने उस्ताद से मालूम करना चाहिये। पूछते हैं कि अगर इजाज़त हो तो मैं आपके साथ रहूँ? आपकी ख़िदमत करता रहूँ और आपसे इल्म हासिल करूँ? जिससे मुझे नफ़ा पहुँचे और मेरे अ़मल नेक हो जायें। हज़रत ख़ज़िर इसके जवाब में फ़रमाते हैं कि तुम मेरा साथ नहीं निभा सकते, मेरे काम आपको अपने इल्म के ख़िलाफ़ नज़र आयेंगे, मेरा इल्म आपको नहीं और आपको जो इल्म है वह अल्लाह तआ़ला ने मुझे नहीं सिखाया। पस मैं अपनी एक अलग ख़िदमत (ड्यूटी) पर मुक़र्रर हूँ और आप अलग ख़िदमत पर। नामुम्किन है कि आप अपनी मालूमात के ख़िलाफ़ मेरे कामों को देखें और फिर सब्र कर सकें। इस पर हज़रत मूसा ने जवाब दिया कि आप जो कुछ करेंगे मैं उसे सब्र से बरदाश्त करता रहूँगा, किसी बात में आपके ख़िलाफ़ न करूँगा। फिर हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने एक शर्त पेश की कि अच्छा किसी चीज़ के बारे में तुम मुझसे सवाल न करना, मैं जो कहूँगा वह सुन लेना। तुम अपनी तरफ़ से किसी सवाल की शुरूआ़त न करना।

इब्ने जरीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन से सवाल किया कि तुझे अपने तमाम बन्दों से ज़्यादा प्यारा कौन है? जवाब मिला कि जो हर वक़्त मेरी याद में रहे और मुझे न भुलाये। पूछा कि तमाम बन्दों में सबसे ज़्यादा अच्छा फ़ैसला करने वाला कौन है? फ़रमाया जो हक़ के साथ फ़ैसला करे और ख़्वाहिश (इच्छा) के पीछे न पड़े। मालूम किया कि सबसे बड़ा आ़लिम कौन है? फ़रमाया वह जो आ़लिम होकर इल्म की जुस्तजू में रहे, हर एक से सीखता रहे कि मुम्किन है कोई हिदायत का कलिमा मिल जाये और मुम्किन है कोई बात गुमराही से निकलने की हाथ लग जाये। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने पूछा कि क्या ज़मीन में तेरा कोई बन्दा मुझसे भी ज़्यादा आ़लिम है? फ़रमाया हाँ। पूछा वह कौन है? फ़रमाया ख़ज़िर। अ़र्ज़ किया मैं उन्हें कहाँ तलाश करूँ? फ़रमाया दरिया के किनारे पत्थर के पास जहाँ से मछली भाग निकले। पस हज़रत मूसा उनकी जुस्तजू में चले, फिर वह हुआ जिसका ज़िक्र क़ुरआने करीम में मौजूद है। उसी पत्थर के पास दोनों की मुलाक़ात हुई। इस रिवायत में यह भी है कि समुद्रों के मिलाप (संगम) की जगह जहाँ से ज़्यादा पानी कहीं भी नहीं, चिड़िया ने चोंच में

Maktab E Ashraf

पानी लिया था।

فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰىٓ اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۗ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا اِمْرًا ۝ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ۝ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ۝	फिर दोनों (किसी तरफ़) चले, यहाँ तक कि जब दोनों नाव में सवार हुए तो (उन बुज़ुर्ग ने) उस नाव में छेद कर दिया। (मूसा ने) फ़रमाया कि क्या आपने इस नाव में इसलिए छेद किया (होगा) कि इसमें बैठने वालों को डुबो दें। आपने बड़ी भारी (यानी ख़तरे की) बात की। (71) (उन बुज़ुर्ग ने) कहा, क्या मैंने कहा नहीं था कि आप से मेरे साथ सब्र न हो सकेगा। (72) (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, (कि मुझको याद न रहा था, सो) आप मेरी भूल (चूक) पर पकड़ न कीजिए और मेरे इस मामले में मुझ पर ज़्यादा तंगी न डालिए। (73)

पहली भूल

दोनों में जब शर्त तय हो गयी कि तुम सवाल न करना जब तक मैं ख़ुद उसकी हिक्मत तुम पर ज़ाहिर न करूँ तो दोनों एक साथ चले। पहले तफ़सीली रिवायतें गुज़र चुकी हैं कि कश्ती वालों ने उन्हें पहचान कर बग़ैर किराया लिये सवार कर लिया था। जब कश्ती चली और बीच समुद्र में पहुँची तो हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने एक तख़्ता उसका उखाड़ डाला फिर उसे ऊपर से ही जोड़ दिया। यह देखकर हज़रत मूसा से सब्र हो न सका, शर्त को भूल गये और झट से कहने लगे- यह क्या अ़जीब और वाहियात हरकत है?

यह सुनकर हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें उनका वादा याद दिलाया कि तुमने अपनी शर्त के ख़िलाफ़ किया, मैं तो तुमसे पहले ही कह चुका था कि तुम्हें उन बातों का इल्म नहीं, तुम ख़ामोश रहना मुझसे कुछ न कहना, सवाल न करना, उन कामों की मस्लेहत व हिक्मत ख़ुदा मुझे मालूम कराता है और तुमसे ये चीज़ें छुपी हुई हैं। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने माज़िरत की कि इस भूल को माफ़ कर दो और मुझ पर सख़्ती न करो। पहले जो लम्बी हदीस तफ़सीली वाक़िए की बयान हुई उसमें है कि यह पहला सवाल वास्तव में भूल-चूक से ही था।

فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰىٓ اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۗ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُّكْرًا ۝	फिर दोनों (कश्ती से उतरकर आगे) चले, यहाँ तक कि जब एक (छोटी उम्र के) लड़के से मिले तो (उन बुज़ुर्ग ने) उसको मार डाला, (मूसा अ़लैहिस्सलाम घबराकर) कहने लगे कि आपने एक बेगुनाह जान को मार डाला (और वह भी) किसी जान के बदले के बग़ैर, बेशक आपने (यह तो) बड़ी बेजा हरकत की। (74)

Mukta6 E Ashraf

दूसरी चूक

फ़रमान है कि इस वाक़िए के बाद दोनों साहिब एक साथ चले। एक बस्ती में चन्द बच्चे खेलते हुए मिले, उनमें से एक बहुत तेज़ निहायत ख़ूबसूरत चालाक और भला लड़का था, उसे पकड़कर हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने उसका सर तोड़ दिया। या तो पत्थर से या हाथ से ही गर्दन मरोड़ दी, बच्चा उसी वक़्त मर गया। हज़रत मूसा काँप उठे और बड़े सख़्त लहजे में कहा यह क्या वाहियात हरकत है? छोटे बेगुनाह बच्चे को बग़ैर किसी शरई कारण के मार डालना यह कौनसी भलाई है? बेशक तुम बहुत ही बुरा और नापसन्दीदा काम करते हो।

अल्हम्दु लिल्लाह पन्द्रहवें पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

क़ुरआन मजीद की तफ़सीर में इस्तेमाल किये गये कुछ अलफ़ाज़ के मायने

चार बड़े फ़रिश्ते

हज़रत जिब्राईलः- अल्लाह तआ़ला का एक ख़ास फ़रिश्ता जो अल्लाह का पैग़ाम (वही) उसके रसूलों के पास लाता था।

हज़रत इस्राफ़ीलः- अल्लाह का एक ख़ास फ़रिश्ता जो इस दुनिया को तबाह करने के लिये सूर फूँकेगा।

हज़रत मीकाईलः- अल्लाह का एक ख़ास फ़रिश्ता जो बारिश का इन्तिज़ाम करने और मख़्लूक़ को रोज़ी पहुँचाने पर मुक़र्रर है।

हज़रत इज़्राईलः- अल्लाह का एक ख़ास फ़रिश्ता जो जानदारों की जान निकालने पर लगाया गया है।

रिश्ते और निस्बतें

अबूः- बाप (जैसे अबू हुज़ैफ़ा)।

इब्नः- बेटा, पुत्र (जैसे इब्ने उमर)।

उम्मः- माँ (जैसे उम्मे कुलसूम)।

बिन्तः- बेटी, पुत्री (जैसे बिन्ते उमर)।

वज़न व पैमाईश

ओक़ियाः- चालीस दिरहम का वज़न, अंग्रेज़ी औंस के बराबर।

क़िन्तारः- एक वज़न (40 ओक़िया, क़रीब सवा सैर)।

क़ीरातः- दिरहम के बारहवें हिस्से के बराबर एक वज़न।

दिरहमः- चाँदी का एक सिक्का जो क़रीब साढ़े पाँच माशे का होता है।

दीनारः- अ़रब में सोने का एक सिक्का जिसका वज़न डेढ़ दिरहम के बराबर होता है।

फ़र्सख़ः- क़रीब आठ किलो मीटर, तीन मील हाशमी।

मुदः- एक सैर का वज़न।

मिस्क़ालः- सोने का एक सिक्का जिसका वज़न साढ़े चार माशे होता है।

साअ़ः- 234 तौले का एक वज़न।

Maktab E Ashraf

हदीस की क़िस्में

सिहाहे-सित्ताः- हदीस शरीफ़ की छह मुस्तनद और विश्वसनीय किताबें- बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, तिर्मिज़ी शरीफ़, अबू दाऊद शरीफ़, इब्ने माजा शरीफ़, नसाई शरीफ़।

हदीसः- हुज़रत मुहम्मद सल्ल. की कही हुई बातें, दिये हुए अहकाम और किये हुए काम।

हदीसे क़ुदसीः- वह हदीस है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि यह बात अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाई है।

हदीसे मरफ़ूअ़ः- वह हदीस है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक पहुँचती हो।

हदीसे मक़बूलः- वह हदीस है जिसकी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ निस्बत का दुरुस्त होना राजेह (वरीयता प्राप्त) हो।

हदीसे सहीः- वह हदीस है जिसको मोतबर और नेक रावियों ने बयान किया हो और उसमें किसी तरह की कमज़ोरी न हो।

हदीसे हसनः- वह हदीस है जिसके रावी मोतबर और नेक हों लेकिन हदीसे सही के मुक़ाबले में हाफ़ज़े (याददाश्त) में कम हों।

हदीसे मौक़ूफ़ः- वह हदीस है जो सहाबी तक पहुँचती हो। इसको **असर** भी कहते हैं।

हदीसे मक़्तूअ़ः- वह हदीस है जो ताबिई तक पहुँचती हो।

हदीसे मुतवातिरः- वह हदीस है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से लेकर आज तक इतनी बड़ी जमाअ़त नक़ल करती आई हो कि आ़दतन् उनका झूठ पर जमा हो जाने का तसव्वुर न किया जा सके।

हदीसे मशहूरः- वह हदीस है जिसको हर ज़माने में तीन या तीन से ज़्यादा रावियों ने नक़ल किया हो।

हदीसे अ़ज़ीज़ः- वह हदीस है जिसके रिवायत करने वाले किसी ज़माने में दो से कम न हों।

हदीसे मुर्सलः- वह हदीस है जिसको ताबिई ने सहाबी के वास्ते के बग़ैर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नक़ल किया हो। अगर ताबिई मोतबर और विश्वसनीय हो तो इस हदीस को भी एतिबार का दर्जा हासिल है।

हदीसे ग़रीबः- वह हदीस है जिसकी सनद के सिलसिले में किसी ज़माने में रिवायत करने वाला सिर्फ़ एक रह गया हो।

हदीसे मुअ़ल्लक़ः- वह हदीस है जिसमें रावी (हदीस बयान करने वाले) ने सनद के शुरू में से एक या चन्द या सहाबी और रसूले पाक से पहले के तमाम रावियों का ज़िक्र न किया हो। ऐसी हदीस मोतबर नहीं।

हदीसे ज़ईफ़ः- वह हदीस है जिसकी सनद निरन्तर न हो, या रावी मोतबर न हो, या रावी का हाफ़ज़ा (याददाश्त) अच्छा और विश्वसनीय न हो।

Maktab_E_Ashraf

हदीसे मुन्क़ता:- वह हदीस है जिसमें सहाबी के बाद एक या अनेक जगह से रावी का ज़िक्र छोड़ दिया गया हो।

मौज़ूअ़:- वह रिवायत है जिसकी ग़लत तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ निस्बत कर दी गयी हो।

मतरूक:- वह रिवायत है जिसके रावी पर अगरचे हदीस के मामले में झूठ बोलने का इल्ज़ाम न हो मगर दूसरे मामलात में उस पर झूठ बोलने की तोहमत लगी हो।

मुन्कर:- वह रिवायत है जिसका रावी बुरे कामों में मुब्तला हो, या रिवायत के सुनने और बयान करने में अधिक्तर ग़फ़लत व लापरवाही बरतता हो, या खुली ग़लती करता हो, या रावी ख़ुद ज़ईफ़ हो और उसकी रिवायत किसी मोतबर रावी की रिवायत के ख़िलाफ़ भी हो।

शाज़:- वह रिवायत है जिसको मोतबर रावी ने दूसरे मोतबर रावियों के ख़िलाफ़ नक़ल किया हो, यह ख़िलाफ़त हदीस के अलफ़ाज़ में भी हो सकती है और सनद में भी।

मुज़्तरिब:- वह रिवायत है जिसको परस्पर विरोधी तरीक़ों से नक़ल किया जाये, चाहे यह टकराव मतन (असल अलफ़ाज़) में हो या सनद में।

मुअ़ल्लल:- वह रिवायत है जिसकी सनद देखने में तो क़वी और मज़बूत हो लेकिन उसकी सनद या अलफ़ाज़ में कोई ऐसी ख़ामी छुपी हो जिससे अहले-फ़न ही वाक़िफ़ हो सकें।

मुताबअ़त:- किसी रिवायत के मुताबिक़ अलफ़ाज़ होना।

नोट:- हदीस की इन क़िस्मों और इनके दरजात के जान लेने के बाद यह भी जान लेना चाहिये कि जहाँ इबारत में कहीं यह है कि इस हदीस में "इरसाल" है या इस हदीस में "इज़्तिराब" है या इस हदीस में "इल्लत" है या इस हदीस में "इन्क़िताअ़" है या इस हदीस में "ज़ोअ़फ़" है या इस हदीस में "नकारत" है या इस हदीस में "ग़राबत" है या इस हदीस में "तवातुर" साबित नहीं, या इस हदीस की किसी ने "मुताबअ़त" नहीं की, तो इन सब अलफ़ाज़ से हदीस की इन्हीं हैसियतों और दर्जों की तरफ़ इशारा है।

(अलफ़ाज़ के मायनों के लिये 'फ़ीरोज़ुल्लुग़ात' 'मिस्बाहुल्लुग़ात' 'आसान उसूले हदीस' और 'मआ़रिफ़ुल-मिश्कात' से मदद ली गयी है)

(मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

❁ और ज़्यादा अलफ़ाज़ और मायने के लिये देखें

इसी तफ़सीर की पहली जिल्द के आख़िरी पृष्ठ।